

ज्यों केराके पातमें पात पातमें पात ।
त्यों गुणिजनकी बातमें बात बातमें बात ॥

हिन्दी

लोकोक्ति कोष

अर्थात्

कहावतों का बृहत्-संग्रह

हिन्दीकी प्रचलित कहावतों का बृहत्-संग्रह जिसमें संस्कृत, फारसी,
भारवाड़ी, पंजाबी, मूवी, भोजपुरी आदि भाषाओंकी
प्रसिद्ध कहावतें भी शामिल की गई हैं ।

विश्वम्भरनाथ खत्री

द्वारा

संकलित सम्पादित और प्रकाशित

६६ हरिसन रोड,

कलकत्ता

—०—

सर्व स्वतन्त्र स्वाधीन

प्रथम संस्करण }
२००० प्रति

सम्वत् १९८०

{ सादी जिल्द ३॥ }
{ सुनहरी „ ४ }

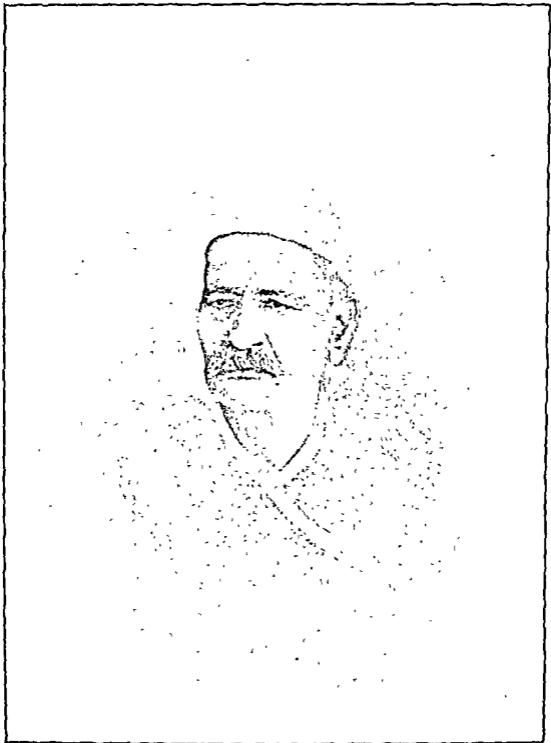
मुद्रक—

रामकुमार भुवालका

“हनुमान प्रेस”

नं० ३, भाधवे सेठ लेन,

कलकत्ता ।



स्वर्गीय बाबू छुन्नामल्लजी खत्री ।

(संग्रहकर्त्ताके पिता)



जिन्हें लोकोक्तियोंसे अतिशय प्रेम था, जो बात बातमें सूक्तियोंके प्रयोगसे
 अपने साधारण कथोपकथनको मनोरंजक और सरस बना दिया
 करते थे, जिन्होंने लोकोक्तियोंपर कहीं हुई अनूठी कहानियोंसे
 श्रोताओं पर प्रभाव डालते हुए मेरे बाल-हृदयपर इस
 कार्यमें आभिरुचि पैदा करनेका अंकुर जमा
 दिया था, आज उन्हीं परम पूज्य स्वर्गीय
 पितृदेवके चरणोंमें उन्हींकी वस्तुको
 समर्पण करनेका शुभ
 अवसर प्राप्त हुआ है ।





विश्वम्भरनाथ खत्री ।

ग्रन्थ-परिचय



लोकोक्ति भी भाषाका एक अलंकार है। पर केवल अलंकार नहीं है—अलंकारसे बहुत कुछ अधिक है। यह लोकोक्ति है—लोक विशेषके ज्ञान, अनुमान और अनुभवका “गागरमें सागर” है। लोकोक्तिके अनेक प्रकार हैं। कुछ लोकोक्तियां घटना-विशेषसे उत्पन्न होती हैं, कुछ इतिहास-विशेषके संस्कारसे निकलती हैं और कुछ नित्यके व्यवहारसे। प्रत्येक लोकोक्ति किसी न किसी कविकी ही उक्ति है, परन्तु उसमें ज्ञान अकेले उस कविका नहीं, प्रत्युत सारे समाज का होता है। समाज उस उक्तिमें अपने ही अनुभवका दर्शनकर प्रसन्न होना है और उसे सादर ग्रहण करता है। इसी बातपर अंगरेजी भाषामें एक लोकोक्ति है—“Wisdom of many and wit of one” अर्थात् बहुतोंकी अनुभूति और एककी उक्ति।

सभी भाषाओंमें ऐसी उक्तियां स्वभावतः होती ही हैं और ऐसी उक्तियोंका संग्रह सर्वत्र ही बड़े आदरकी दृष्टिसे देखा जाता है। ऐसी लोकोक्तियोंका पुस्तकरूपमें संग्रह करना साहित्यकी एक उत्तम सेवा है। हिन्दी भाषामें अत्यन्त ऐसे संग्रहकी कमी थी। नामको दो एक पुस्तकें हैं, पर वे नहीं के बराबर हैं। श्रीयुत बाबू विश्वम्भरनाथजी खत्रीने हिन्दी भाषा साहित्यकी यह कमी पूरी की है और इसलिये वे हम सयके धन्यवादके पात्र हैं। आप छिपे हुए रत्न हैं। हिन्दी साहित्यके ऐसे मर्मज्ञ और प्रेमी बहुत कम हैं। एक दुस्साध्य रोगसे आप अनेक वर्षोंसे पीड़ित हैं और उसकी दुःसह पीड़ामें आपको किसी वस्तुका प्रेम और आहाद है तो वह आपका साहित्य-प्रेम है। इसी साहित्य-प्रेमका यह निस्वार्थ फल है कि आज दीर्घ कालके प्रेमपूर्ण परिश्रमके पश्चात् आपका यह लोकोक्ति संग्रह हिन्दी साहित्य क्षेत्रमें अवेतीर्ण होता है। बाबू विश्वम्भरनाथजीने इस संग्रहमें फालनकी डिकशनरीसे बहुत सहायता ली है, इसमें संदेह नहीं, पर इस संग्रहका यह एक अंशमात्र है। अधिकतर कथावर्त आपने परंपरासे सुनी हुई लोकोक्तियोंकी स्मृतिसे ही संग्रहकी हैं। ऊपर हमने लोकोक्तियोंके प्रधानतः तीन प्रकार लिखे हैं और उनमें एक प्रकार “घटना विशेषसे” उत्पत्तिका है। बाबू विश्वम्भरनाथजीने ऐसी घटनाओंकी कहानियां भी यत्र तत्र कथावर्तके साथ ही जोड़ दी हैं, जिनसे यह संग्रह बहुमूल्य और मनोरंजक हुआ है। इस ग्रन्थका महत्त्व स्थायी है और साहित्य-सेवीमात्रके लिये इसका संग्रह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य है वह कहनेकी आवश्यकता नहीं।

लक्ष्मण नारायण गर्दें ।

लाठी उसकी मेंस ।” इसका प्रयोग एक विद्वान भी उसी प्रकार करेगा जिस प्रकार कि एक अपढ़ गंवार ।

कहावतोंमें एक खूबी यह भी है कि उनके द्वारा किसी जातिके रीति-रुम या धर्म-कर्म आदिका भी बहुत कुछ ज्ञान हो सकता है और उनसे ऐतिहासिक घटनाओंका भी सम्बन्ध हो जाता है। जैसे एक कहावत है कि “तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी वार ।” इस कहावतके दो खण्डोंसे दो भिन्न भिन्न बातोंका बोध होता है। इसका पूर्व पद तो हिन्दुओंके रिवाजको बत लाता है कि कन्याके विवाहके पूर्व जो उसके तेल चढ़ाया जाता है वह फिर दूसरी वार नहीं चढ़ता अर्थात् उसका पुनर्विवाह नहीं हो सकता। दूसरे खण्डसे एक ऐतिहासिक घटनाका पता चलता है कि महाराणा हमीर देव अपनी वानके इतने पक्के थे, कि अपना हठ रखनेके लिए उन्होंने मृत्यु ही भी परवाह नहीं की। इसी प्रकार कहावतोंमें बहुतसी व्यवसायसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुत सी कृषिसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुत-सी नीति सिखानेवाली, कितनी ही स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी और बहुत सी अनुभवसिद्ध बातोंको सूत्ररूपमें प्रगट करनेवाली होती हैं। इन सबके उदाहरणोंकी विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, ग्रन्थके अनुशीलन करनेवालोंको स्वतः प्रगट हो जायगी।

कहावतोंकी भाषा भी बड़ी गंठी और मंजी हुई होती है, जो सहजहीमें हृदयङ्गम हो जाती है। जैसे “खाली खंख यजावें दीपा पानी भोग लगावें ।” कैसे गठे हुए शब्द हैं। इसमें एक अक्षर भी भरतीका नहीं न एक अक्षर नया भरनेकी गुञ्जाइश है और थोड़े ही शब्दोंमें कितने बड़े आशय-को प्रगट करती है कि कदाचित् कोई इससे कम शब्दोंमें ऐसी भावपूर्ण बात कह सके।

यहां यह घतला देना अनुचित न होगा कि इस ग्रन्थमें बहुत सी ऐसी कहावतें छोड़ दी गई हैं जिनमें विशेष अश्लीलता, प्रामाण्यता या किसी जाति वा देश विशेषके लोगोंपर कटाक्ष हुआ हो। यदि एक भाष मसल ऐसी आ भी गई हो तो उसका विशेष प्रचलन समझकर ही दी गई है, किसीपर कटाक्षके भावसे नहीं। किसी किसी कहावतमें अश्लीलताके लिए पाठभेद भी कर दिया है और कहीं कहीं अश्लील अंश छोड़कर कहावत अधूरी ही लिखी गई है।

पाठकोंको यह बात भी ध्यानमें रखनी चाहिए कि बहुत सी कहावतें ऐसी होती हैं जिनके दो खण्ड होते हैं, जैसे “राजा करे सो न्याय, पासा पड़े सो दाँवा।” कोई तो पहले खण्डको पहिले कहता है और कोई पिछले खण्डको ही पहिले कहता है। ऐसी कहावतें कहीं कहीं तो दोनों जगह दी गई हैं, परन्तु विशेषतः एक ही जगहपर लिखी गई हैं। पाठकोंको उचित है कि यदि ऐसी कोई कहावत एक रूपमें न मिले तो उसे दूसरे रूपमें देखें, अवश्य मिल जायगी।

दिल्ली, आगरा, लखनऊ आदि शहरोंमें हिन्दू मुसलमानोंका घनिष्ठ सम्बन्ध रहनेके कारण यहांके हिन्दू भी बहुतसी मुसलमानी कहावतोंका उपयोग करते हैं। इसलिए इसमें बहुतसी मुसलमानी मसलें भी संयोजित की गई हैं। कुछ अन्य भाषाओंकी प्रचलित कहावतें भी शामिल की गई हैं, जैसे संस्कृत और फारसीकी, जिनका उपयोग पठित समाजहीमें अधिक होता है तथा रंजायी, मारवाड़ी, पूर्वी, भोजपुरी आदि जिन्हें ग्रहस्थ, व्यापारी और दिहाती लोग अधिकतर काममें लाते हैं। बहुतसी कहावतें जिनका प्रयोग शायद छियां ही अधिक करती हैं, वह जनाना की फरफे लिखी गई है।

कुछ कहावतें ऐसी हैं जिनके कई भिन्न भिन्न अर्थ होते हैं। कभी कभी तो एक ही कहावत परस्पर दो विचरीत कामोंके लिये व्यवहृत होती है जैसे “सांप मरा न लाठी टूटी”। यद्यपि यह मसल बहुधा कामकी सफलताके लिये ही कही जाती है, परन्तु मैंने कामके निष्फल होनेपर भी लोगोंको इसका प्रयोग करते सुना है। सफलताके पक्षमें तो यह अर्थ होता है कि जमीनमें धीरे-से लाठी मारी जिसके डरसे सांप भी भाग गया और लाठी भी न टूटी, अर्थात् अपना प्रयोजन सिद्ध हो गया। विफलताके पक्षमें यह अर्थ होता है कि सांपको मारनेके लिये लाठी मारी जो सांपके न लगी, वह तो साफ बचकर निकल भागा पर लाठी टूट गई, जिससे अपना काम तो सिद्ध न हुआ उल्टी हानि हो गई। ऐसी मसलें जहांपर आई हैं उनके भिन्न भिन्न अर्थ दिये गये हैं। अर्थ जो साफ साफ निकलते हैं वही दिये गये हैं। वहाँ क्लिष्ट कथनासे काम नहीं लिया गया है।

बहुतसी कहावतें आज कल अशुद्ध रूपमें प्रचलित हो रही हैं—जैसे “अकू बड़ीकी भैंस”। इसकी पुष्टिमें लोग यहांतक कहते सुने गये हैं कि “अजी अकालको लेकर क्या करे, भैंस बड़ी है जिसका दूध पीनेमें आवे। इसी तरह “अल्लादे निवह्ला” “ऊजड़ खेड़ा नाम निवेड़ा”, “मा पर पूत पिता पर घोड़ा” “हाथ पाँवके आलसी मुंहमें मूँठ जायं” इत्यादि भी हैं, जिनका कोई अर्थ ही नहीं निकलता। ऐसी मसलोंको भी जहाँतक हो सका शुद्ध रूपमें लिखनेकी चेष्टा की गई है।

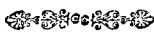
ऐसी भी बहुतसी कहावतें हैं जो व्यंगसे कही जाती हैं और जिस पर उसका प्रयोग होता है वह सुन कर मनहो मन कुछ जाना है वा लज्जित हो जाता है। परन्तु वात सत्य होनेके कारण कुछ कह नहीं सकता—जैसे, “भीखके टुकड़े बजारमें डकार”, “नया जोगी गाजरका संख” “पढ़ न लिखे नाम विद्याधर” इत्यादि। ऐसी ही कहावतें चर्चों कहलाती हैं।

मैं उन ग्रन्थकारोंको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिनके ग्रन्थोंसे मुझे इस पुस्तकके तैयार करनेमें बहुत कुछ सहायता मिली है। सबसे बड़ी सहायता डा० फालन “संप्रदीत हिन्दुस्तानी प्रामर्षस” जो कि अंगरेजीमें छपी है और उन्हीं महाशयको घनाई “हिन्दुस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी” से मिली है, जिसमें शब्दोंके उदाहरणमें बहुतसी मसलें भी दी गई हैं। इसके अतिरिक्त प्रातःस्मरणीय महात्मा तुलसीदास कृत “रामचरितमानस” (जिसमें कहावतें भरी पड़ी हैं) कविवृन्दकृत “दृष्टान्त सतसई” “विदारी सतसई” भानु कवि कृत “काव्य प्रमाकर”में लोकोक्ति हजारों राय शिवदासकृत “लोकोक्ति रस कौमुदी” (जिसमें प्रायः तीन सौ लोकोक्तिओंमें नायका भेद कहा गया है), इत्यादि ग्रन्थोंसे भी बहुत सहायता मिली है। हिन्दी तथा उर्दूके बहुतसे कवियोंके ग्रन्थोंमेंसे उदाहरण चुन चुन कर कहावतोंके साथ यथा स्थान दिये गये हैं। बहुतसे साधू, महात्मा तथा कथोश्वरोंकी वाणी ऐसी हैं जो वास्तवमें लोकोक्ति न होने पर भी बहुत लोगोंको कंठस्थ हैं और उपयुक्त समयपर उनका प्रयोग करनेसे विशेष आनन्द और शिक्षा मिलती है, इसलिये उन्हें भी इस पुस्तकमें स्थान दिया गया है। कहावतोंका विकास कहाँसे हुआ है इसकी भी खोज, जहाँ तक हो सका, की गई है और वह छोटे टाहपोंमें छपवा दिया गया है। पाठकोंके मनोरंजनार्थ बहुतसी कहावतोंके साथ उनमें फयतो छोटी छोटी कहानियाँ



हिन्दी

लोकोक्ति कोष



अ

अंगरेज

अंतर

अंगरेजकी नौकरो और बन्दर नचाना बराबर है जरा जरा सी बातमें लांछित होने तथा ठोकर खानेका भय रहता है ।

अंगरेजी राज, तनको कपड़ा न पेटको नाज— करके भारसे पीड़ित प्रजाको खाना और कपड़ा अच्छी तरह न मिलने तथा खर्च बहुत बढ़ जानेके कारण ऐसा क० अन्नके विदेश जाने और स्वदेशी कपड़ेका व्यवसाय बन्द होनेके कारण भी क० ।

अंगरेजोंने घरसाभर जमीनसे सारा हिन्दुस्तान धपना कर लिया—जब कोई मनुष्य थोड़ासा सहारा पानेपर अपनी चतुराईके बलसे सभी काम अपने वशमें कर लेता है तब क० ।

अंडा गुड़गुड़ होना—लोट पोट हो जाना । (१) भांगके मद्यमें डेहोय हो जाना । (२) गहरी घोट लगनेपर लोट पोट हो जाना । यह शब्द अङ्गरेजोंके एक जनरल आफ्टरलौनीका अपभ्रंश है । यह भारतपर दखल करनेके लिये भेजे गये थे । जब ये चढ़ाईका नकशा ठीक कर दूरबीनसे किलेकी ओर देख रहे थे, उसी समय किलेपरसे एक गोला आकर इनको लगा और ये लोट पोट होकर पञ्चत्वको प्राप्त हुए ।

अंडा सिखावे यद्येको कि चीं चीं मत कर— जब कोई छोटा बड़ेको उपदेश दे, तब क० ।

अंडुचा बैल जीका जवाल—(मा०) स्पष्ट । अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई—जब मेहनत करे कोई और लाभ हो दूसरेको, तब क० ।

अंडे होंगे तो बच्चे बहुतरे हो रहेंगे—(व्य०) पूंजी बनी रहेगी तो व्याज बहुत आजायगा । अंतड़ीमें रूप, धुकचीमें छव—(मु० ज०) पेट भरनेमें ही रूप है और अच्छे कपड़े पहननेमें ही छवि है अर्थात् बिना खाये चेहरेमें रूप नहीं और बिना बख पहने शरीरकी शोभा नहीं ।

अंत बुरेका बुरा—बुरेका अन्त बुरा ही है, जो किसीका बुरा करता है अन्तमें उसका बुरा ही होता है ।

अंत भलेका भला—भलेका अन्त भला ही है, जो सबके साथ भलाई करता है, उसकी अन्तमें भलाई ही होती है ।

खाल रिखाये जिदि तिदि मोर्षी, मधु पी राखि वादि नादि कोर्षी चतुर खोलु उलि लेदि जानै, धन भलेको भला बचानै ।

अंत मता सो गता—(ध०) अन्त समय जैसी भति रहती है वैसी गति होती है ।

अंतर घजे तो जन्तर धजे—बिना मनमें बोध हुए कोई यन्त्र ठीक नहीं पजता । गाने यजाने वालोंको क० ।

अंतर्शांका घर्षित्व्या सभा मध्ये च वैष्णवा—

(सं०) गुप्त रूपसे मद्य मांस खानेवाले, बाहर त्रिपुराड खाना धारण करनेवाले और सभामें तिलक छाप लगाकर वैष्णव बननेवाले अर्थात् जिनके मतका कोई टीक नहीं है उनपर कही जाती है।

अंदर छूत नहीं बाहर कहीं दुरदुर—मन मैला और ऊपरसे सफाई रखनेपर क०।

अंधरी नैया धर्म रखवाली—असहायका अथलम्बन ईश्वर है।

अंधा क्या चाहे दो आंखें—जिस चीजकी जरूरत हो, अगर वही चीज मिल जाय तब क०।

कई बखी लघि व्याकुल बाम, कई बेगि तो ख्याज स्याम।
बोनी खोय छक्ति आं भाई, बसरी कड़ा कई टुर भाईं।

अंधा क्या जाने बसन्तकी पहार—जिसने जो चीज देखी नहीं है, वह उसका महत्व क्या जाने।

अंधा गाय, बहरा बजाय—एक देख न सके दूसरा उन न सके। जब दोनों एक से हों तब क०।

अंधा गुरु बहरा चला, मांगे हड़ दे बहेड़ा—ऊपर देखो।

अंधा चूहा थोये धान—अंधे चूहेको खोलला अन्न मिलवा है। मूख थोड़ेहीमें फुसला लिया जाता है।

अंधाधुंध मनोहर गाइयाँ—(पं०) जब कोई देखने वाला नहीं हो, तब जो सुनी चाहे करे।

इस मसलपर एक कहानी है—एक कानि मनुष्यने पुरोहित तथा नाइ भाटकी रिगबन देकर अपने व्याहकी लिये लड़की ठीक की। जब विवाह करने गये तब बरपक्षके आज्ञाने कंबल बजाकर धीं गाया, “कानि साजन ब्याहने पाइयाँ” इसकी उत्तरमें कन्यापक्षके आज्ञाने भी कंबल बजाकर इस तरह गाया “अंधाधुंध मनोहर गाइयाँ” विवाह होनेके बाद जब सामूह पढ़ा कि लड़की अंधी है तब दोनों पक्षमें झगड़ा शुरू हो गया। बरपक्षवालीने कहा हमने पछले ही सूचना दे दी थी कि “कानि साजन ब्याहने पाइयाँ” अर्थात् काना दूल्हा विवाह करने आया है। इसपर कन्यापक्षवालीने कहा कि हमने भी “अंधाधुंध मनोहर गाइयाँ” कहकर सुचित कर दिया था कि लड़की अंधी है। तभीसे यह मसल प्रचलित हो गई है।

अंधा घगला भीचड़ खाय—अनाड़ीको निकम्मी चीज ही मिलती है।

सुनि पिय संग रति नारि कृष्ण, भोरें ही कहे बाल अनूप।
लोक छक्ति यह सबहिं लखाई, अंधरा बगना कीचहिं खाई
(धीरा धीरा। लो०र०की०)

अंधा घांटे रेवड़ी फिर फिर अपनेहीको दे—
जो मनुष्य कोई चीज चांटे और हिरफिरके अपनेही कुनवेवालोंको दे उसपर क०।

अंधा बैल घुमाके जोता जाता है—मूख सीधी बात कहनेसे नहीं समझता, लेकिन घुमा फिराकर कहनेसे समझ जाता है।

अंधा बेईमान—(१) अन्धा मनुष्य हमेशा शकी होता है। (२) बेईमान मनुष्य अन्धा होता है अर्थात् उसे अपने स्वार्थके आगे कोई भी बुराई भलाई नहीं सूझती।

इसपर एक कहानी है—किसी भोज या जलसमें एक अन्धा भादमी भी शामिल था। भोजन करते समय उसने सोचा कि इसमें सभी मनुष्य दोनों हाथोंसे खाते होंगे। इसलिये वह भी दोनों हाथोंसे खाने लगा। फिर उसने सोचा कि शायद वे थालीमें सूँह लगाकर भी खाते होंगे इसलिये वह भी ऐसा ही करने लगा। अन्तमें उसने सोचा कि लोग खाकर थाली भी अपने घर ले जाते होंगे। अतएव वह अपने आगेकी थाली लेकर नीचे ग्यारह ही गया।

अंधा बेईमान बहरा बहिएती—(सु०) अन्धा बेईमान होता है और बहिरा देवताके समान होता है, क्योंकि वह अपने कानोंसे किसी तरहकी बुरी बातें नहीं सुनता।

अंधा मुह्ला टूटी मसीद—(सु०) दोनों ही निकम्मे। जैसेको तैसा।

अंधा रस्सी बटता जाय, बछड़ा खाता जाय—
दे० “अन्धी पीसे.....”।

अंधा राजा चौपट नगरी—(व्य०) जो मालिक अपने कामको निज आंखोंसे नहीं देखता है, उसका काम नहीं चलता और साथ साथ बरबाद भी हो जाता है।

अंधा लकड़ी एक बार खोता है—क्योंकि यह बहुत हौशियार होता है।

अंधा सिपाही कानी घोड़ी, चिधिने खूब मिलाई
जोड़ी—जहां दो मनुष्योंमें मित्रता हो और दोनों
ही निकम्मे वा ऐसी हों, वहां क० ।

अंधा हादी, घहरा मुशिंद—देखो “अन्धा गुह...”

अंधियारी गई कि चोर—अंधियारी रात आने-
हीसे चोर चोरी करने निकलेगा । जब कोई खोटा
मनुष्य खोटा काम करके छिपाये तब उसे क० ।
तात्पर्य यह है कि तुम तो फिर भी ऐसा काम करोगे
क्योंकि यह तुम्हारी आदत है ।

अंधी आंखमें फाजल सोहे, लंगड़े पांवमें जूता—
(च०) दोनों ही अच्छे नहीं लगते । घेसल बात
पर क० ।

अंधी नायन आइनेकी तलाश—(च०) जब कोई
ऐसी चीज पानेकी इच्छा करे, जिसके पाने योग्य
वह न हो तब क० ।

अंधी पीसे कुत्ता खाय—जो मनुष्य अपने उपा-
र्जित धनको रखनेकी व्यवस्था न कर सके और
दूसरे उस धनका भोग करें, उसपर क० ।

अंधी मानिज पूर्तोंका मुंह कभो न देखे—स्पष्ट ।
अंधे आगे रोना अपने दीर्घ खोना—जब कोई
किसीको अपना दुःख छनावे और उनसेनाला
उसपर ध्यान न दे, तब क० ।

अंधेकी जोरूका खुदा रखवाला—(मु०) क्योंकि
उसका पति उसकी रखवाली नहीं कर सकता ।

पति विदेश भोजे तिया सप्त धामके काम ।

हे अंधरे की जीयकी, सदा सहायक राम ॥

अंधेकी लकड़ी ही आंखें हैं—क्योंकि उसीके सहारे
वह चलता है ।

अंधेके लेखे दिन रात बराबर—क्योंकि उसकी
आंखोंमें सदा अंधरा रहता है ।

अंधेके हाथ घटेर लगे—यदि किसीको अनायास
कोई अच्छी चीज मिल जाय, तब क० ।

अंधेको अंधा कहनेसे बुरा मानता है—कट्ट धचन
सत्य होनेपर भी बुरा लगता है ।

दोष भरी न उचारिये, यदपि यथारथ वात ।

कहे चयको अंधरो मान बुरो सतरात ॥ (हन्द)

अंधेको अंधरेमें बहुत बुरकी सूझी—(च०) जब
कोई मूर्ख बुराईकी बात कहे तब क० ।

अंधेको आरसी—जब किसीको ऐसी चीज दी जाय,
जो उसके काम न आये तब क० ।

मूरखकों घोषी दई नाचनकों गुन माय ।

जैसे निर्मल आरसी दई अंधके हाय । (हन्द)

अंधेको चिराग दिखाना—जब कोई मूर्खको उपदेश
करे तब क० ।

अंधेको जुआं मुआफ है—यदि भूलसे कोई रकम
लिखनेमें छूट जाय, तब लिखनेवालेको ऐसा क० ।

अंधेको न्योतो न दो जने आय—एक अन्धा दूसरा
उसका हाथ पकड़के साथ लाने वाला । ऐसा काम
न करो जिसमें दूसरी तरफदुद पैदा हो ।

अंधेने चोर पकड़ा दौड़ियो मियां लङ्गड़े—
असम्भव बात । जहां कार्यकर्ता और उसका सहा-
यक दोनों ही उस कामके करनेमें असमर्थ हों, वहां-
पर क० ।

अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके
सेर खाजा—जो राजा मूर्ख होता है, उसके नगरमें
अन्धेर होता रहता है और वहां साग तथा मिठाई
एक ही भाव विक्रती हैं । जो मूर्ख मालिक अपने
कामका इन्तजाम ठीक नहीं कर सकता और जिसके
यहां अच्छे और ईमानदार आदमियोंकी कदर नहीं
होती तथा लुचो और लफंग अपनी मनमानी
करते हैं, वहांपर क० ।

इस मसलपर भारतेन्दु हरिश्चन्द्रने एक खोटासा नाटक
बहुत अच्छा बनाया है, जिसका संराग यह है—

किसी समय एक गृह भोर उनका बेला तीर्थयात्री
बाहर निकले, एक गृहमें पड़कर गुरुने बेनेकी
पाटा लानेके लिये बाजार भेजा । बेनेने सभी चीज
एकही दरमें विक्रती देख मिठाई खरीद ली । गुरुने
सब बातें जानकर ऐसी अंधेर नगरीमें रहना पसन्द
न किया और बेनेको वहीं छोड़ वे दूसरी जगह
चले गये । अंधेर उनका बेला अंधेर नगरीमें अच्छी अच्छी
चीजें खारिज मोटा ताजा होगया । संयोगवत् उस नगरमें
किसीने खून किया । बहुत तपास करनेपर जब खून न
मिला, सब राजांने इसी मोटे बेनेकी कांसीकी पाशा दी ।
गुरुकी मान्य होनेपर वे इसे लुकाये आये और बेने कि
में दो दोषो हूँ क्योंकि मैंने ही खून किया है । गुरुकी
ब्योंकी कांसी दो जामेकी दो खोंकी पैना पिशा छटा, ये
निंदी धो हूँ, मैंने ही खून लया है । इस तरह अच्छी बह
विवाद दोनोंके वाद दोनोंकी रिवाज होयः भाषां—
जहां न्याय और न्याय वा विचार नहीं है वही अंधादि
वाश नहीं करना चाहिये ।

अंधे रसिया आइनेपर मरें—(ख०) ऐसी चीजका शौक करना जिससे अपना कुल भी धर्य न निकले। अंधेरी रैनमें जेवड़ी सांप—अंधेरी रातमें रस्सीको देखनेसे सांपका भ्रम होता है। इसका कारण मनका डर है। वेदान्ती संसारको मिथ्या सिद्ध करनेके लिये यही उदाहरण देते हैं, कि जैसे डरसे अंधेरेमें रस्सीको देखकर सांपका भ्रम होता है, इसी तरह माया-जालमें फँसे मनुष्यको संसार सत्य जान पड़ता है, जो वास्तवमें मिथ्या है।

अंधेरे घरका उजाला (वा बिराग)—यदि घरमें एक ही लड़का हो और सपूत हो जिससे कुलका नाम बना रहे उसको क०।

अंधेरे घरमें धींगर नाचे—अंधेरे घरमें भूतोंका वास होता है।

अंधेरे घरमें सांप ही सांप—अंधकारमें सदा भ्रम लगा रहता है।

अंधे हाफिज़ काने नवाव—(च०) हाफिज़ उसीको कहते हैं जिसे कुरान कंठस्थ हो। अंधे और कानेको व्यंगसे क०।

अंधोंका हाथी—जब मनुष्य ईश्वरकी आकृतिके विषयमें अपने अपने अनुभवको ही पका सेमभते हैं तब क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है—दो चार अंधोंने एक हाथीका संपूर्ण शरीर टटोला। जिसने कान पकड़ा उसे मालूम हुआ कि हाथी घुसरा होता है और जिसने पैर पकड़ा उसने कहा कि हाथी खंभेसा होता है। इसी प्रकार सबने अपने अपने अनुभवके हाथीका भिन्न भिन्न आकार स्थिर किया, किंतु यद्यपि वे सबकेसब अंधे थे, अतः किसीको हाथीकी यथार्थ आकृतिका पता न चला उदा०—अंधोंने हाथी देख करके मवाथी थे। (सुन्दरदास)

अंधोंने गाँव मारा दौड़ियो वे लँगड़े—असम्भव बातपर क०।

अंधोंमें काना राजा—यहुतसे मूर्खोंमें अगर एक कम लिखा पढ़ा हो, उसीका मान होता है अथवा मूर्ख समाजमें जब कोई अल्प बुद्धिवाला बड़ी शानकी घाते अभिमानपूर्वक कहता है तब क०।

अंधा मानुष ले गयो जन देखतकी जोय—सजाकेकी स्त्रीको अंधा ले भागा, असम्भव तथा अनोखी बातपर क०।

अकल खुरा जगसे बुरा—(हि०) अकल—अकेला, (फा०) खुरा—खानेवाला। नदीदा, स्वार्थी, जो दूसरेको न देख सके। स्वार्थी वा द्वेषी मनुष्य सबसे बुरा होता है।

अकाल नहीं है काल है—जब दीर्घ काल व्यापी अकाल पड़ता है, तब क०। क्योंकि उस समयमें बहुत मनुष्य खाने बिना मर जाते हैं।

अकाल मृत्युकी मुक्ति नहीं—आत्मघातीकी मुक्ति नहीं होती।

अकेलवा गइल मैदान फिरे लोग कहिल कि हेराय गइले—(भो०) स्त्री यदि अकेली बाहर जाय तो लोग संदेह करते हैं कि किसीके साथ चली गई। तात्पर्य यह है कि स्त्रियोंको अकेले कहीं न जाना चाहिये, क्योंकि इनपर सहजमेंही संन्देह हो जाता है।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—एक आदमी भारी काम नहीं कर सकता।

अकेला चले न बांट, भाड़ बैठे खाट—काम करनेके पहले सचेत हो जाना चाहिये, जिससे काममें विघ्न न पड़े।

अकेला पूत फमाई करे घरका करे या कचहरी करे—दोनों काम एक साथ नहीं किये जा सकते।

अकेला हँसता भला न रोता—अकेलेका हँसना और रोना दोनों ही बुरे मालूम पड़ते हैं क्योंकि ये दोनों काम अकेले करते भी नहीं करते।

अकेला हसनू रोवे कि कत्र खोदे—(मु०) दो काम एक साथ नहीं होते।

अकेली कहानी गुड़से मीठी—जबतक उसकी अपेक्षा अच्छी दूसरी न छनी जाय तब तक वही अच्छी है। जब कोई एक तरफकी बात समझकर विरवास कर लेता है तब क०।

अकेली लकड़िया न जरे न बरे न उजारा होय—(घा०) अकेलेसे कोई काम नहीं होता।

अकेली लकड़ी कहाँ तक जले—(ज०) ऊ० दे०।

अकेले दुकेलेका अल्लाह बेली—(मु०) निःसहाय और निरावलम्बके रत्नक ईश्वर हैं।

अक्रोहेन जिने कोई असाधु साधुनां जिने—
(प्रा०) क्षमासे क्रोधीको और साधुतासे असाधुको
जीतना चाहिये। यह महात्मा बुद्धका धर्म है।
अक्रुकी कुताही और सब कुछ है—(मु०) मूर्खको
क०।

अक्रुके पीछे लाठी लिन्हें—अक्रुके पीछे लाठी लेकर
घौड़ना अर्थात् अक्रुको दूर भगाना। जब कोई
मूर्खताका काम करता है तब क०।

अक्रु चिह्न कुत्तिस्त कि पेशे मर्दां विभायद—
(फा०) अक्रु कौन कुतिया है जो मर्दोंके पास आवे।
जो मूर्खतासे पायबिक बल प्रयोग करते हैं उन्हें क०।

अकलपर परदा पड़ गया—(मुहावरा) अक्रु मारी
गई या जाती रंही। जब कोई बुद्धिमान मनुष्य
मूर्खताका काम करे तब क०।

वे परदा नशर भाईं ओ कल चन्द बीबियां।

पकवर लभोंमें गैरने कौभोसे गड़ गया ॥

पूजा जब उनसे आयका परदा कहीं गया।

कहने लगे कि अक्रु परदाको पड़ गया ॥ (पकवर)

अक्रु घड़ी कि बहस—यातको समझना अशक्य है,
कूड़ी बकवाद करना अशक्य नहीं। इसी मसलको
लोग विवृता रूपमें कहते हैं—“अक्रु घड़ीकी भैंस।”
अक्रु घड़ीकी चैस—घड़ी उन्नवालेसे घड़ी अक्रुवाला
श्रेष्ठ है।

बुजुगों वचकल्पन न बचाल (मूल घाटी)।

अकलमंदको इशारा मूर्खको तमाचा (वा तगादा)

(१) बुद्धिमान जरासे समझानेपर समझ जाता है,
मूर्ख बिना मारे नहीं समझता (२) बुद्धिमान
इशारेसे ही समझ लेता है, कि यह अपना पावना
मांगता है परन्तु मूर्ख बिना तगादा किये नहीं
समझता।

अक्रु मर्दांया इशारा काफी अस्त—(फा०) बुद्धिमा-
नोके लिये इशारा ही बहुत है।

अगड़म अगड़म काठ कठंबर—कड़ा कर्कट।

अगर कोई टटले न टल्ले फकीर—पहाड़यल जाय
पर फकीर न टले।

अगला करे पिछलेपर आवे—अगलोंकी भूल
पिछलोंको सुगतनी पड़ती है।

अगला लीपा गया सराहा, अक्का लीपां आगे
आया—पहले जो काम किया सो किया, अर्थ
जो सामने है उसे करो। जो लोग अपने पहले किये
हुए अच्छे कामोंकी प्रशंसा करते हैं उनको क०।

अगली मंडली पछली, पछली परधान—(पू० ज०)
पहली पीछे पड़ गई और पिछली प्रधान बन बैठी।
अगलेको घासन पिछलेको पानी—न जीतोंको
खाना न मरोंको पानी। एवार्थी तथा कंजूसके प्रति
क०।

अगले पानी पिछले कीच—जो पहले ऊपर जाते
हैं, उन्हें पानी मिलता है और पीछे जानेवालोंको
कीचड़ हाथ लगती है। पहले जो कोई नया काम
करता है, उसे जो फायदा होता है, वह पीछे करने-
वालोंको नहीं होता। देर करनेसे नुकसान है।

अगस्तिक यात्रा—(मै०) ऐसा जाय कि फिर लौटके
न आवे। यह कथा पुराणमें प्रसिद्ध है, कि अगस्त
मुनि जब विन्ध्य पर्वतके पास पहुँचे तो उसने
मुनिको दण्डमत को। मुनि पहाड़को लांचकर कह
गये कि जब तक मैं लौटकर न आऊँ तब तक तुम
इसी तरह पड़े रहना। आजतक वे लौटकर न आवे।
विन्ध्यवाचल उसी तरह लम्बा पड़ा हुआ है।

अगिल खेती आगे आगे पाछिल खेती भागे
जोगे—(पू० क०) पहले कोई हुई खेती सफल
होता है और पीछेकी यदि हो जाय तो समझना
चाहिये कि भाग्यसे हुई है।

अगम बुद्धि वानियां पच्छम बुद्धि जाट—
वानियोंको पहले सूझती है, जाटको पीछे।

अघाना अगुला पोडिया तीत—(पू० प्रा०) पेट
भरेको अच्छी चीज भी नहीं उहाती। पेट भरे
अगुलेको समी मद्दलियां कड़वी जान पड़ती हैं।

अचारकेसे घड़े—उस मनुष्यको कहते हैं जिसकी
किस्तीसे नहीं बनती वा लोग जिसे अलग कर देते
तथा बिना जख्मके नहीं पड़ते। जिन घड़ोंमें अचार
भरा रहता है वे अलग रखे रहते हैं, जख्म पड़ने-
पर ही उनमेंसे अचार निकाल लिया जाता है।
उ०—यदि तुम सबसे मिलकर नहीं चलोगे तो ऐसे
घरे रहोगे, जैसे अचारकेसे घड़े।

अच्छा किया खुदाने बुटा किया बन्दने—(मु०)

(१) ईश्वरका किया हुआ सब काम अच्छा होता है। (२) कृतघ्नको भी कही जाती है, जो किसीका पहचान नहीं मानता।

अच्छी भई गुड़ सत्तरह सेर—जब चीज सस्ती मिलती है तब क०।

अच्छे घर वयाना दिया—अच्छेसे उलके—जब कोई अपनेसे अधिक बलवानके साथ बैर ठाने तब क०।

भली भवन अब वाहन दीन्हा,

पावहगी फल आपन कीन्हा। (तुलसी)।

वयाने के स्थान "वयाना" भी कहते हैं, जिसका अर्थ यह है, जब कोई बीगात कहींसे आती है, वी लोग उसे अपने इष्ट निमित्तमें इसलिये बांट देते हैं कि उसका पक्का लहो भी मिटता है।

अच्छे घुरमें चार अंगुलका फर्क है—(मु०)

आँल और कानमें (देखने और छननेमें) चार अंगुलका फर्क है। जबतक खुद देख न ले, दूसरेके कहनेसे किसीको घुरा न समझे।

अच्छे भये भटल, प्राण गये निकल—यह मसल मथुराके चौबेके लिये प्रसिद्ध है। पेट भर खा चुकनेपर यदि कोई कहे कि चार आने लडू देगे तो वे और भी खा लेंगे। खूब पेट भर जानेपर यदि एक रुपया लडूका लोभ दिया जाय तो वे और भी खालेंगे। जितनाही लोभ उन्हे दिया जायगा उतना ही वे खाते जायेंगे। वे समझते हैं कि यदि मिठाई खाकर प्राण भी निकल जाय तो यह अच्छा है। बहुत खाने वाले लालचीपर तागा है।

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम, दास मल्लूका कह गये सखके दाता राम—आलसी तथा संतोषी मनुष्यपर क०।

अजगर कहें भल राम विधैया—आलसी मनुष्य कहते हैं, जो अपना सब धन खो देते हैं और कहनेसे किसी कामका उद्योग भी नहीं करते।

अजगरके दाताराम—ऊ० दे०

पञ्च महावन लखि गोपाल, सुरत पाछ चित्त चञ्ची रसाल,
रैहि मग भूकि परी कोउ नाम, अजगरकी दाता है राम।

(ली० १० की०)

अजागलस्तन—(सं०) बकरीके गलेका धन, मनुष्य वा चीज कुछ काम न आवे और स्वरूप हो उसे क०।

कुल कुपुत्र किहि कामकी तिहि ग्रभ गोभा नाहि
यो बकरीके कण्ठ धन दूध न जल तिहि नाहि।

अजीरनको अजीरन ठेले, नहीं तो सिर चौखेले—(१) बलवान ही बलवानका सामना

सकता है, दुर्बल यदि बलवानका सामना करे मारा जाय। (२) बहुताका यह ख्याल है अजीरानमें दूँसकर खानेसे वह पहले खायको करता है।

अटकल पच्चू गैर मुकरर—दे० "अटकल डेड़।"

अटकल पच्चू डेड़सौ—जब किसी बातका निरा न हो, केवल अनुमानसे कही जाय तब क०।

अटकल पच्चू साढ़े घाईस—ऊपर देखो।

अटका घनिया देय उधार—(व्य०) जब कोई दूसरेको अपने मतलबके लिये कुछ दे दे यद्यपि देनेकी इच्छा नहीं है तब क०।

अटकेगा सो भटकेगा—शकी भ्रातृमाँपर क०।

अड़तेसे अड़ जाइये, चलतेसे चल दूर—जहाँ रें उलके साथ बैसाही धताँव करना चाहिये

अड़सठ तीरथ कर आई तोमड़ी, तौभी न कड़वाई—जन्मगत दोष कभी नहीं मिटता।

अड़ीधड़ी, काजीके सिर पड़ी—(मु०)

घुराई विचार करनेवालेके सिर पड़ती है।

अढ़ाई दिनकी सक्ने भी वादशाहत कर (च०) जो हाठाए एक ऊँचे पदपर पहुँचकर रोष दिखाता है उसे अंगसे क०।

अढ़ाई हाथकी ककड़ी नौ हाथकाबीज—वातपर क०

अताई नानखताई जय जीमें आई तोड़ क प्राकृतिक वस्तुका भोग इच्छानुसार हो सब

अति अगाध अति औधरो, नहीं कूप सर सोताकाँ सागर जहाँ, जाकी प्यास सु

(चिहारी) नदी, कुश्यां, तालाब या बावड़ीका जल बहुत गहिरा हो वा उयला, जहां जिसकी प्यास बुझती है उसके लिये वही समुद्र है। जहां छोटे राजा से किसीको बहुत प्राप्ति हो और बड़े से कुछ न मिले वहां क०।

विषम हयदितको दया त्रिषे मतीरनि सीधि ।

भक्ति अपार जगधनत्र मारी भूङ्ग पयोधि (चिहारी) ।

भक्ति अपार जे सरितवर, ते नृप सेतु कर्गाहिं ।

चढ़ि पिपीलिका परम लघु चिन भ्रम पारहिं जाहिं (तुलसी) बड़ेके सहारे छोटेका काम चलता है ।

भक्ति और नारायणसे वैर है—हृदसे ज्यादा कोई काम अच्छा नहीं ।

फिर क्याम संग्रहित तित जाक, ही भयने मनमें सुकुवाक कहे कदावत ज्यो हितहीकी, भक्तिकी बात न कीज कीकी।

(प्रेमसंग्रहो १००वाँ)

भक्तिका भला न बरसना, भक्तिकी भली न धुप्य भक्तिका भला न बोलना, भक्तिकी भली न चुप्य यद्यपि ये बारां बातें अच्छी हैं तो भी जरूरतसे अधिक होनेपर हानि करती हैं ।

भक्ति दर्पण प्रता लंका—बहुत अभिमान करनेसे मनुष्य अन्नतिको प्राप्त होता है ।

भक्ति दुखियाको दुख नहीं—बहुत दुख भोगनेपर वह सब हो जाता है, फिर दुखका ज्यादा कष्ट नहीं होता ।

भक्ति बड़ घरनीको घर नहीं, भक्ति बड़ सुन्दरिफो घर नहीं—जिसे जो चीज अग्रय मिलनी चाहिये वह न मिले तब ऐसा क० । ईश्वरपर आक्षेप है ।

भक्ति भक्ति चोरकां लक्षण—स्पष्ट । यह प्रसिद्ध बंगला मसल, "भक्ति भक्ति चोररे लक्षण"का अनुवाद है ।

भक्ति संघर्षण करे जो कोई, अनल प्रगट चन्दनते होई—(तुलसी) कैसाही ठंडा मनुष्य क्यों न हो, अधिक पीड़ा पहुंचानेसे उसे भी क्रोध आ ही जाता है । जैसे चन्दन बहुत शीतल होनेपर भी अधिक रगड़नेसे उससे आग निकलती है ।

भक्ति संघर्षण वर्जयेत्—(सं०) हृदसे ज्यादा कोई काम न करे, दे० "भक्तिका भला ।"

अदृष्ट चलवान है—जो अदृष्टमें रहता है वह बिना हुप नहीं टलता ।

रामइकी एरी रावन नाम चरम दिशि एक चट्ट बनी है ।

(वैशव)

अद्वीके नोनको जाऊं, ला मेरी पालकी—जब साधारण कामके लिये बड़ा सामान करे, तब क० ।

अधजल गगरी इलकत जाय—श्रोद्धा आदमी इतरा कर चलता है ।

अधिकस्य अधिक फलम्—जितना अधिक पुण्य करोगे, उतना अधिक फल मिलेगा ।

अधेला न दे अधेला दे—गंवार या कंजूसपर कही जाती है जो कहनेसे अधेला नहीं देता मगर दमेपर उसी कामके लिये अधेला देता है ।

अनकर खेती अनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय—(पू०) अशुचित वा अन्याय दलल देनेपर क० ।

अनकर चुकर अनकर घी, पांहे थापकां लागा की—(पू०) जो पराया माल बेदर्दीसे वृथा नष्ट करे उसपर क० । पांहे रसोइया प्राण्य को कहते हैं, जिसके हाथमें भंडार रहता है ।

अनकर धनपर लछमीनरायन—(पू०) पराये धनपर सेठ बननेपर क० ।

अनकर सेन्दुर देख आपन कपाड़ फोड़े—(पू०) जो दूसरेकी बढ़ती देख लल भरे उसपर क० ।

अनकर गोड़वा धोय नौनियां अपना घोवत लजाय—(पू०) नाई औरोंका पैर धोता है, अपना घोते लजाता है । जय कोई दूसरोंकोही दिना दे और आप कुछ न करे तब क० ।

अनके धनपर चोर राजा—(पू०) जब किसी अच्छी कमाई हुई दौलतपर कोई मालिक धन पैठता है तब क० ।

अन जानतेको दोष नहीं—यदि कोई बिना जाने घुटि करता है, तो वह दोषका भागी नहीं बनता ।

अन ज्ञान सुजान सदा कल्याण—परम ज्ञानी और महा मूल लोग सदैव कल्याणको प्राप्त होते हैं । अर्थानु जो बड़ा विद्वान है, वह ज्ञानवश और जो महा मूल है, वह अज्ञानवश संसारसे समदृष्टि न वध्यवहार रखता है ।

अनदेखा चोर वाप बराबर—जिस मनुष्यका चोर होनेका कोई प्रमाण नहीं, वह वापके बराबर है अर्थात् उसका अनादर नहीं किया जा सकता।

अनदेखा चोर साले बराबर—जिस चोरको नहीं जानते उसकी घरमें बड़ी आजादी रहती है। सालेसे परदा नहीं होता, वह घरमें सब जगह जा सकता है और उसे कोई नहीं रोकता है।

अनदोषीको दोष, जिसकी गति न मोप—बेकसूर-पर कसूर नहीं लगाना चाहिये।

अनविरतक विरत घमलोड़ घजाई—(मै०) जिस पुरोहितके वृत्ति नहीं होती वह फजूल हल्ला मचाता है।

अनमिलेकी कुशल है—(१) अकेला रहना अच्छा है (२) जब आदमी किसी खतरनाक जगहको बगैर खड़े पार कर जाता है तब क०। (३) जब ऐसे दो आदमी जिनका आपसमें सद्भाव न हो, एक दूसरेसे आ मिलते हैं तब भी क०।

अनमिलेके त्यागी, रांड मिले वैरागी—झीन मिले तो त्यागी, मिल जाय तो वैरागी। वैरागी गृहस्थी रखते हैं।

अनरथ करत जाहि डर नाही, सो जैहें थोड़े दिन मांहीं—(तुलसी) जो अनर्थ करनेमें भय नहीं खाता वह जल्दी तब्राह हो जाता है।

अनहोतमें औलाद—दरिद्रतामें बहुत औलाद दुख-दाई होती है।

अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार—स्पष्ट। अनाड़ीका सौदा चाराघाट—न जाननेवालेका सौदा हमेशा बिगड़ता है।

अनुजवधू भगिनी सुत नारी, सुनु सठ यह कन्या सग चारी—(तुलसी) रामचन्द्रजीका बालिके प्रति उपदेश। बालिने अपने छोटे भाई सुग्रीवकी स्त्रीको छीन लिया था, इसी दोषपर वह मारा गया। छोटे भाईकी स्त्री, भानेजी, पुत्रवधू और कन्या ये चारों बराबर हैं।

अनोखे गांवमें ऊँट आया, लोगोंने जाना परमे-श्वर आया—मूर्ख लोग बिना देवी चीजको बड़े आश्चर्यसे देखते हैं।

अनोखीके हाथ लगी कटोरी, पानी पीपी मरी पदोड़ी—जब किसी नीच आदमीको ऐसी बड़ी चीज

मिल जाती है जो उसने पहले न देखी हो तो वह बड़ा घमण्ड करता है।

अन्न धन अनेक धन, सोना रूपा कितेक धन—(पू०) अन्न ही सचा धन है, सोना चांदी उसके सामने कुछ नहीं।

अनुख घरमें नाती भतार—(पू०) अनोखे घरमें नाती ही मालिक होता है। जिसकी चले उसीको मानना।

अपना अपना कमाना, अपना अपना खाना—जब किसी समाज या कुटुम्बके आदमी मिल जुल कर नहीं रहते अथवा एक साथ काम नहीं करते, धरन् अलग अलग बर्ताव करते हैं तब क०।

अपना अपना घोलो अपना अपना पीओ—ऊपर देखो।

अपना अपना दुखड़ा सब रोते हैं—जहां सभी अपने-अपने दुखोंकी शिकायत करते हैं वहां क०।

अपना अपना लहनिया है—अपना अपना भाग्य है।

अपना उल्लू कहीं नहीं गया—(व्य०) हम किसी न किसी को ठग ही लेंगे अर्थात् हम अपना मतलब निकाल लेंगे।

अपना कुत्ता घरजो हम भीखसे वाज आये—जब कोई दूसरेके यहां अपना काम निकालने जाय वहां उरटी आपत्त गले पड़े तब क०।

अपनाफे जुरे ना अनकाके दानी—(भो० ज०) अपनेको मिले नहीं दूसरेको दान करनेको तैयार। एकमें अपनेकी सख्त मुमसिक है।

को कि पीरो के एकमें है कायान (हाली)।

अपनाके रोटी तीन गीत गौती—(पू० ज०) अपनेको एक भी रोटी मिले तो तीनका गीत गाये।

अपना शुह भोजन बराबर—अपना श्रवण भी गुण जान पड़ता है।

अपना घर अपना गहर—अपना घर अपना ही है क्या भीतर क्या बाहर।

अपना घर दूरसे सूझता है—(१) अपने अपने नफेपर सबकी आंख रहती है। (२) समय पड़ते ही अपना याद आता है।

अपना घर देखो—(घो० चा० व्य०) (१) अपना घर संभालो (२) अपने व्यवसायको देखो, कि क्या घटा और क्या नफा है।

अपना घर सत्तू ना अनका घर पेड़ा—
(पू०) मुपतखोरको क०।

अपना घर संभौत ना, अनका घर मूसरं ऐसन घाती (मै० ज०) ऊपर देखो।

अपना घर हग भर, दूसरेका घर धुकनेका डर—
अपने घरमें जो चाहो करो, दूसरेके घरमें ऐसा काम न करो जिसमें कोई कुद्द कहे।

अपना टेंटर न देखे दूसरेकी फुली निहारि—
(पू० ज०) जो अपना बड़ा ऐय न देखे, दूसरेके छोटे शोषका बखान करे, उसको क०।

अपना ठीक ना, अनकर नीक ना—(पू०) मूर्ख दूसरेकी अच्छी सलाहको नहीं मानता। जिसे छुद काम करना न आवे और दूसरेका काम भी पसंद न हो उसे क०।

अपना तोसा, अपना भरोसा—अपने निर्वाहके लिये अपनी ही कुञ्चतकी जरूरत है।

अपना दीजे दुश्मन कीजे—(व्य०) किसीको उधार देना दुश्मन बनाना है।

अपना दूरसे सूझता है—देखो "अपना घर दूर"
अपना नयना मुझे दे, तू धूम फिरके देख—
(पू० ज०) स्वार्थी मनुष्यपर क०।

अपना निकाल मुझे डालने दे—ऊपर देखो।

अपना पून पराया डर्टीगर—(ज०) अपने लड़के पर जैसा प्यार होता है, वैसा दुमरेके लड़केपर नहीं।

अपना पेट तो कुत्ता बिल्ली भर लेता है—
जो दूसरोंको न खिलावे, उसको क०।

अपना पैसा छोटा तो परलयेको क्या शोष—
यदि कोई चाहरवाला अपनोंमें बिगाड़ करा दे, तब उसे क०।

आजि निरादर पिय सुनिय, बाद कछो नहि गीव।
दाम जे खोटी आपनो, परखैवाको दीप।

(धू० ना० लो० १० कौ०)

अपना विसमिह्ला दूसरेका नौज़ विला—
अपनी २ तीजको सब सराहतें हैं।

अपना बैल कुल्हाड़ी नाथय—अपनी चीजको जैसे चाहे काममें लावे, चाहे उसका दुरुपयोग ही क्यों न होता हो। बैल सूपसे नाथा जाता है, पर हमारा बैल है, हम कुल्हाड़ीसे नाथेंगे, इसमें दूसरेका क्या।

अपना मरन जगतकी हंसी—असाधधानतापर क०।

अपना माल अपनी छाती तले—(व्य०) अपनी चीज अपनी ही हिफाजतमें रहे, तब क०।

अपना मोठ, अनकर तीत—देखो "अपना विसमि..."
अपना लाल गंवायके दर दर मांगे भीख—
फिजूलखर्चको क०।

अपना लेना क्या, पराया देना क्या—
दोनोंमें ही कोई पहसान नहीं।

अपना घड़ी जो आवे काम—जो वक्तपर काम आवे, वही अपना है।

अपना सा मुंह लेकर रह गये—जब कोई आदमी अपनी बातपर कायल हो जाता है, तब क०।

अपना सेर सवा सेरका—जब कोई आदमी अपनी बात सिरे रखता चाहे, तब क०।

अपना सो नवेड़ा, पराया सो धटकेड़ा—
जब कोई अपनी वस्तुकी प्रशंसा और दूसरेकी वस्तुका तिरस्कार करता है, तब क०।

अपना हाथ जगजाथ—जब कोई दूसरेकी चीजको आजादीसे इस्तेमाल करता है, तब क०।

अपना हारा और मेहरीका मारा कौन कहता है—
कोई नहीं कहता, सभी छिपते हैं।

अपना ही माल जाय, आपही चोर फहलाय—
स्पष्ट।

अपना ही राग अलापते हैं—जब कोई अपनी ही कहे, दुमरेकी न सुने, तब क०।

अपनी अकल और पराई दौलत बड़ी मालूम होती है—स्पष्ट।

अपनी अपनी खालमें सब मस्त हैं—स्पष्ट है।

अपनी अपनी गरजको अरज करे सब फोय—
स्पष्ट।

अपनी अपनी गरज सब बोहत करत निहोर।

बिन गरजौ बोले नहीं, गिरवरसुको मोर। (१५)

अपनी अपनी डफली, अपना अपना राग -
जहाँ कोई नियम न माना जाता हो, सब अपनी
तबीयतकी बात करें, वहाँ ऐसा क० ।

अपनी अपनी तुनतुनी, अपना अपना राग—
ऊ० दे० ।

अपनी असलपर आगया—जब कोई कुछ दिनेके
लिये सम्मानित होकर अपने पुराने हालपर आ
जाय, तब क० । जब किसीका जातिगत स्वभाव
प्रगटहो जाय, तब क० ।

कोठेपर रहने वाली औनेपर आ गई ।

रफने परने अपने कुरीनेपर आ गई ॥

अपनी इज्जत अपने हाथ है—स्पष्ट । किसीओछेसे
मुँह न लगनेके लिये क० ।

अपनी और निवाहिये, याकी वह जाने—
अपना कर्तव्य करना चाहिये । दूसरा अपनेका
जिम्मेवार है अर्थात् आप पहिले किसीसे बिगाड़
न करे ।

जो पिय तो दित घट किधी, तभी न तुम चित चाइ ।

याकी तो जाने वड़े, अपनी और निवाह ॥

अपनी करनी अपना भोग—अपने कर्मका फल
आपही भोगना पड़ता है ।

अपनी करनी पार उतरनी—ऊ० दे०

जो पार उतारि औरीकी, उसकी भी नाव उतरती है ।

जो गुर्क करे फिर उसकी भी धां दुबकीं दुबकीं करती है ।

भमशेर बबर बन्दूक बना, और अशतर तौर नहरनी है ।

धां जैसी नौही करनी है, फिर वैसे पार उतरनी है ।

(नशौर)

अपनी कोखका पूत नौसादर—अपना ही लड़का
कुलका दीपक हो सकता है, जैसे नौसादरही सोनेको
साफ करता है ।

अपनी गरजको गधा चरते हैं—मतलबके लिये
आदमी बुरा काम भी करता है ।

अपनी गरज बाघली—लोग अपनी गरजमें पागल
हो जाते हैं ।

आ गी गलीमें कुत्ता शेर—जब कोई नामद आदमी
में जाकर चिह्नाता है, तब ऐसा क० । अपने घरमें
भीतर जोर रहता है ।

अपनी गौंते ससा अहेरी—भूखके समय खरगोश
भी शिकारी बन जाता है ।

नव तिय पिय चाँड़े कहु चिर ।

जानि जानि निय भाजो किरी ॥

कहे पखानो मुमति नहरौ ।

अपनी गौंते ससा अहेरी ॥

अपनी चिलम भरनेको दूसरेका भापड़ा जलाना
जब कोई आदमी अपने थोड़े फायदेके लिये दूसरेके
बड़े नुकसानकी परवाह नहीं करता, तब ऐसा क० ।
अपनी जान सयको प्यारी है—स्पष्ट ।

अपनी टांग उधारिये आपही लाजों मरिये—
अपनोंकी बुराई करनेसे आपही लज्जित होना
पड़ता है ।

अपनी तो यह देह भी नहीं है—दुनियामें कोई
चीज अपनी नहीं है ।

अपनी दाढ़ी जलने दो, हमारा दीया बलने दो—
स्वार्थीपर क० ।

अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं—अपनी बिगाड़ी सब
सम्हालते हैं ।

अपनी नाक कटाके दूसरेका असगुन मनाना—
जब कोई दूसरेका नुकसान करनेके लिये अपना
नुकसान भी कर डालता है, तब क० ।

अपनी नौंद सोना अपनी नौंद उठना—अपने
मनकी करना ।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—अपनी इज्जत अपने हाथ
होती है ।

अपनी बला औरके सर—जब कोई अपना अपराध
दूसरेके सिर मढ़ता है, तब क० ।

अपनी बात गुड़से मीठी—स्पष्ट ।

अपनी घेरको घोलम घाला, हमारी घेरको भूखम
भाखा—स्वार्थीको क० ।

अपनी भरी थाली छोड़कर दूसरेकी जूठी पत्तल
निहारना—नदीदे या लालची आदमीको क० ।

अपनी मारी खाना—अपने हाथकी कमाई खाना ।

अपनी राधाको याद करो—जब कोई किसीका
कहना न माने तब क० । तात्पर्य यह है, कि जो

मुझे अच्छा लगे सो करो। जाओ अपना काम करो, ऐसा भाव दिलवानेके लिये भी क०।

अपनी लिट्टीपर सब आगर रखते हैं—सभी अपना स्वार्थ देखते हैं।

अपनी हुराई मराई कोई नहीं भूलता—अपनी विपत्तियोंको कोई नहीं भूलता।

अपनी हारी किससे कह—अपनी हुराई कोई नहीं कहता।

अपने ऐय सब लीपते हैं—अपनी हुराई सब छिपाते हैं।

अपने कियेका क्या हलाज—अपने किये हुए कामको कोई क्या करे। खुदकरदहरा हलाज नेस्त। फा०

अपने गिरेवानमें मुंह डालो—जब कोई दूसरेको हुराई करता है, तब क० पहले अपने ऐय देखो, तब दूसरेको कहो।

अपने घरके सच वादशाह हैं—अपने अपने घरमें सभी मालिक हैं, जो चाहे सो करें।

अपने घरमें आना किसको बुरा लगता है—सभी चाहते हैं, कि हमें धन मिले।

अपने दहीको कोई खट्टा नहीं कहता—अपनी चीजको कोई बुरा नहीं कहता।

अपने दिलकी गवाहीको सच जान—जो अन्तःकरण कहे, उसे मानना चाहिये।

अपने दूर पड़ोसी नेरे—अपने रिश्तेदारोंसे पड़ोसी बहुत काम आते हैं।

अपने पाँवों कुल्हाड़ी मारना—अपना नुकसान आपही करना।

पियेसों नित प्रति रुकी रहै,

आन पिया पिय निखिलों चहै।

सुनो कछाउत नाहें म नारी,

मारै अनिनिज घैर कृण्दापी।

अपने पास पैसा तो, पराया आसरा कैसा—स्पन्द।

अपने पूत कुं वारें फिर पड़ौसिनके फेरे—(ज०)

जो अपने घरकी भलाई न देखकर दूसरेकी ओर ध्यान देता है, उसपर क०।

अपने बच्चेके दौत हर कोई जानता है—अपनेको सभी पहचानते हैं।

अपने बावलों रोइये, दूसरोंके बावलों हैंसिये—

(ज०) अपनी बुरी शौलादपर आदमी रंज करता है, पर दूसरेकी शौलादपर हँसता है।

अपने मनसे जानिये, पराये मनकी बात—जो जैसा रहता है, वह दूसरेको भी वैसाही समझता है।

अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता—बिना अपने किये काम नहीं होता।

अपने मियाँ दर दरवार, अपने मियां चूल्हेदार—एक ही आदमी जब दो तरहके छोटे बड़े काम करता है, तब क०।

अपने मुंह धन्ना याई, } जब कोई अपने मुंहसे
अपने मुंह मियां मिठू— } अपनी बड़ाई करे, तब
क०।

अपने मुँह तुम आपनि करनी।

बार अपनेक भाँति बड़ करनी ॥ (तुलसी)

अपने मुँह शादी सुवारिक—ऊपर देखो।

अपने लगे तो देहमें, औरके लगे तो भीतमें—मनुष्य अपने साधारण दुःखको बड़ा और दूसरेके बड़े दुःखको साधारण समझता है।

अपने सुई भी न जाने दें, दूसरेके भाले घुसेड़ दें—ऊपर दे०।

अपनेसे बचे तो और को दें—स्वार्थीपर क०।

कंजूसको भी क०।

अपनेसे विगाने भले—जब दुःखमें अपना कोई काममें न आवे, गैरोंसे मदद मिले, तब क०।

अपने हुरामजादेको समझा, नहीं तो तेरे शरीयको खा लूंगी—जब बलवानपर जोर नहीं चलता और उसके बदले नियल सताया जाता है, तब क०।

इसपर. एक कहानी यों है—किसी मनुष्यके दो लड़के

थे। एक गरीब और दूसरा बड़ा उत्पत्ती था। यह उत्पत्ती लड़का शीतलाके ध्यानपर आकर सब बड़ाया

या जाता और शीतलाका बहुत अपमान करता था। एक

दिन रातमें उसकी बापकी स्वप्न शीतलाने म्रत की पर उक्त बात कही।

अपने हाथसे अपने पेटमें छुरी नहीं मारी जाती—

अपना नुकसान आप नहीं किया जाता।

अपनोंकी आड़ कोई नहीं उठाता—अपने रिश्ते-
दारोंका पहचान जल्दी कोई नहीं लेता ।

बरगवित धारा सफलता वासः, बरगवित सिखा बरगुणवासः ।
बरगवित घोरे बरके पतनम्, न च धन गवित त वास्यधरंशम् ।

अफलातूनके नाती बने हैं—जो बहुत अभिमान
करता है, उसपर व्यङ्गसे क० ।

अफसोस दिल गढ़में—जब मनुष्यको बहुत कष्ट
आ पड़ता है, तब क० ।

अफीमकी तीन मञ्जिलसे पहिचाना जाता है—
स्पष्ट ।

अफीम या खाय अमीर या खाय फकीर—
क्योंकि येही दोनों स्वतन्त्र रहते हैं । अफीम
महंगी होती है इसलिये अमीर खरीदकर और फकीर
मांगकर खा सकता है ।

अयकी चढ़ी कामान को जाने फिर कब चढ़े—
अयकी गयी बात न जाने फिर कब हाथ आवे ।

अयकी छईकी निराली घातें—नये झोकड़ोंकी नई
घातें ।

अयकी धार, घेड़ा पार—बस एक धार और हिम्मत
करो ।

अयके बच्चे तो सब घर रचे—अयकी आफतसे
बचना मुमकिन है ।

अयके मारे तो जानूँ—डरपोकको, विशेषकर धनियों-
को क० । इसी जोड़की बज्जलाकी प्रसिद्ध मसल
है, “मारली तो मारली एबार मार देली ।”

अयके साहे हम न व्याहे फिट्ट पड़ो घड़ साहे—
जो धीज अपने काममें न आवे वह किसी कामकी
नहीं ।

अय तो पत्थरके नीचे हाथ दया है—(व्य०)
अय कोई किसीके फन्दमें फँस जाय वा किसीको
रकम किसीके नीचे दय जाय, तब क० ।

तब सौ तन सौ धौय निभाये,

अथका होत नाम पक्षितायि ।

दुनि प्रविष्ट यह जगमे गाथ,

निकसे कौं पाथर तर फाय ॥

अय तो रुपयेकी जात है, } खपेसे ही सब
अय तो रुपयेकी माया है } होता है ।

अय पछताये होत क्या, जो चिड़ियाँ चुग गईं
खेत—समय निकल जानेपर पछताना वृथा है, पूरा
दोहा यह है—

बाके दिन पाके गये हरिभौं किथा न हेत ।

अब पछताये होत क्या, जो चिड़ियाँ चुग गईं हेत ।

अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिन्डेपर भारी है—
(मु०) विगड़े पर भी मेरी हालत तुमसे अच्छी है ।
अबराको जोक सबकी भौजाई—(भो०) गरीब-
को सब दया लेते हैं ।

अबराकी भैस बियाइल, सगरा गांव मेठिया ले
धाइल—(भो०) बेवकूफका धन दूसरा ही भोग
करता है ।

अब सतवंती होकर वैठी लूटकार संसार—
(ज०) जो आजन्म बुरा काम कर अन्तमें अच्छे
काममें लग गया हो, उसे व्यङ्गसे क० ।

अबवरके हम जबवर हैं और जबवरके हम दास—
डरपोकको क० ।

अबवल खेश वाधू दरवेश—(फा०) पहले आपको
पीड़े पकीरको ।

अबवल ताम वाधू कलाम—(फा०) पहले लाओ
पीड़े घात करो । शत विहाय भोक्तव्यम् ।

अबवल मरना, आखिर मरना, फिर मरनेसे क्या
है डरना—स्पष्ट ।

अव्यवस्थित चित्तानां, प्रसादोपि भयंकरः ।
क्षणै रूपा क्षणै तुष्टा, रूष्टा तुष्टा क्षणै क्षणै ॥
(सं०) जिसका चित्त स्थिर नहीं; उसकी कृपा भी
अच्छी नहीं; क्योंकि उसको न क्रोधित होते देर न
प्रसन्न होते देर लगती है ।

अमी एक चनेकी दो दाल भी नहीं हुई—
अमी शामिल हैं, अलग नहीं हुए ।

अमी के दिन, के रात—जब कोई थोड़ा मिलनेसे ही
इतराने लगता है और यह समझता है, कि मेरी सदा
ऐसी ही बेंगेगी, तब क० ।

अमी तो तुम माका दूध पीते हो—जब कोई
जान बूझकर अज्ञान बन जाय, तब क० ।

अमी तो तुम्हारे दूधके दाँत भी नहीं टूटे हैं—
जब कोई लड़का होकर बड़प्पनकी घातें करे, तब क० ।

अभी तो तुम्हारे होठोंका दूध भी नहीं सूखा—
ऊ० दे० ।

अभी तो घेटी बापकी है—(१) अभी लड़कीका
विवाह नहीं हुआ । क्याहसे पहिलेही यदि समधी-
से कुछ कहा-छनी हो, तब क० (२) अब भी कुछ
हो सकता है ।

अभी दिल्ली दूर है—जो थोड़ा ही काम करके समझ
ले, कि मैंने सब कर लिया, उसपर क० । यह फारसी-
की मसल “हनोज दिल्ली दूर अस्त” का तर्जुमा है ।
अभी सेरमें पूती भी नहीं कती— ऊ० दे० ।

अभ्यास स्तारिणी विद्या—अभ्यासले विद्या
आती है ।

करत करत अभ्यासके, गडमति फीत सुमान ।

रसरी आवत ज्ञानने, सिद्धपर परत निमान ॥ (३८)

अमरौती खाकर कोई नहीं आया—कोई अमर
नहीं होता, सबको मरना है ।

अमानतमें ख्यानत—धरोहरमें बेईमानी करना ।

अमीरका उगाल गरीबका आधार—अमीरको
जो चीज फेंक देनेमें कोई कष्ट नहीं, गरीबके लिये
वही बहुत कामकी है ।

अमीरको जान प्यारी, फकीरको एकदम भारी—
अमीरको अपनी जान प्यारी होती है, लेकिन गरी-
बको नहीं, क्योंकि वे बहुत कष्टने समय बितते हैं
और जीनेसे मरना ही अच्छा समझते हैं ।

अमीरने पादा-सेहत हुई, गरीबने पादा वेअदवी
हुई—जिस कामके करनेसे थड़े आदमीकी तारीफ
होती है उसी कामके करनेसे गरीबकी निन्दा
होती है ।

अय मेरे अगले, मनमाने स्रो कर ले—(ज०) जब
कोई छी अपने अत्याचारी पति द्वारा सताई जाती
है, तब ऐसा क० ।

अरजां बहल्लत, गिरां यहिकमत—(फा०)
सस्ती चीज खराब होती है, महंगी अच्छी ।

अरब खरबलौं लच्छमी, उदय अस्तलौं राज ।
तुलसी हरिकी भक्ति बिन, ये आवैं किहि काज ।
ईश्वरकी भक्तिके बिना यह सब बूधा है ।

अरहरकी टट्टी और गुजराती ताला—

जब कमकीमती चीजकी ज्यादा होशियारीकी जाय,
तब क० ।

सियन सुहाब न टाट पटोरे (तुनची)

अरे हंस या नगरमें, जैयो आप विचारि ।

कागनसों जिनि प्रीति करि, कोयल दुई बिडारि ॥
(बिहारी) सुखोंके गांवमें यदि कोई जाया चाहे,
तब क० ।

अर्क तरुकी डारसे कहुं गज बांधे जायं—छोटे
आदमी वा छोटे सामानसे बड़ा काम नहीं हो
सकता ।

अर्द्ध रोग हरे निद्रा, सर्व रोग हरे क्षुधा—जब
रोगी को नींद आवे तो उसका आधा रोग
अच्छा हो गया, और जब भूख लगे, तब उसे
बिलकुल आराम हो गया, समझना चाहिये ।

अलफलीलुल फितरतुन, अलतवीलुल अह-
मकुन—(फा०) नाट फितरती और लंबे अहमक
होते हैं ।

अलख पुरखकी माया, कहीं धूप कहीं छाया—
ईश्वरकी माया अपार है, अपवा ईश्वरकी माया
जानी नहीं जाती, कोई खो है कोई दुखी है ।

अलखामोशी नीमरजा—(फा०) चुप रहना आधी
रजामन्दी है । मौन सम्मति लक्षणम् ।

अल गई बल गई, जलवेके बक टल गई—
(मु० ज०) जरूरतके बक काम न थानेपर क०

अलफरबः ख्वाहमख्वाह मदें आदमी—मोटा ताजा
आदमी देखनेमें भलामानस मालूम पड़ता है ।

अलयल खुदायल—ईश्वरका बलही बल है ।

अलबेलीनें पकाथी खीर, दूधकी जगह डाला
नीर—(ज०) मूर्ख औरतका किया काम बिगड़
जाता है ।

अला बला बन्दरके सिर—कमजोरके सिरपर दोष
मढ़ा जाता है ।

अला लूँ, बला लूँ, सहनक सरका लूँ—(मु० ज०)
स्वार्थी वा कपटीको क० ।

अलिफके नाम वे नहीं जानते—हिन्दीमें कहते हैं
“निरन्तर भट्टाचार्य हैं ।” वेपड़ेलिखे आदमीको
ऐसा क० ।

अलीलकी राय अलील—बीमार आदमीकी राय मानने काबिल नहीं होती ।

अली हिम्मत सदा मुफलिस—कवाड़िया हमेशा फकीर रहता है ।

अल्पाहारी सदा सुखी—धोड़ा खानेवाला कभी बीमार नहीं होता ।

अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह—(मु०) किसी कामके निर्विघ्न पूरा होनेपर कहते हैं।

अल्लाह करे बांका पकड़ा जाय, लाल खांके लकड़ेसे जकड़ा जाय—(मु० ज०) एक वदुआ है ।

खुदा करे खुरेको सजा मिले ।

अल्लाहका दिया सिरपर—(मु०) दूमानी है—१।

ईश्वरका दिया अर्थात् चिराग सिरपर है (चान्दसे मुराद है) (२) जो कुछ परमात्माने दिया है, सर माथे है अर्थात् थाइज्जत कबूल है ।

अल्लाहका नाम लो—(मु०) भूठ बोलनेवालेसे कहा करते हैं, “अजी अल्लाहका नाम लो ।”

अल्लाह दे अल्लाह दिलावे, चन्दादे मुराद पावे—(मु०) देता दिलाता खुदा है, आदमी देता है मुराद पानेके लिये ।

अल्लाह दो सींग देवे तो वह भी कबूल है—(मु०) हुखीको जो परमात्मा दे उसीमें सन्तोष करना चाहिये ।

अल्लाह यार है तो बेड़ा पार है—(मु०) ईश्वर मदद देगा तो सब काम पूरा हो जायगा ।

अल्लाह रे! दीदेकी सफाई—(मु० ज०) जिस औरतकी आँखें चंचल हों, उससे ऐसा क० । चंचल नेत्रवाली स्त्री कुचलनी होती है ।

अल्लाहकी चोरी नहीं तो बन्देका क्या डर है—किसी काममें आदमीका डर करना व्यर्थ है; क्योंकि ईश्वर सब देखता है ।

पिना भी भागकारा हमकी किसकी साकिया चोरी खुदाकी जब नहीं चोरते तो फिर बन्देकी क्या चोरी। (जौक) उस्ताद जौक दुर्बलताके कारण रमजानमें रोकी नहीं रखते थे । पर आदमीके कारण वे किसीके सामने पागौ तक नहीं पीते थे । जब कभी उन्हें दवा या पागौ पीना होता तो चंदर जाकर पी आते थे । एक दिनका जिक्र है, कि गरमी

बहुत थी; तीमरे पहरका वक्त था, भीकरने शरबत नीलो-फर कटोरमें घोलकर तैयार किया और उनको भीतर चलनेका इशारा किया । प्रोफेसर आज्ञा दे उभर समथ भाँजू दे । उनकी तरफ देखकर उन्होंने कहा—“ये हमारे यार हैं, हमसे क्या खिपाना । उसी समय उन्होंने उठ खीर कहा । (२) आहिद गराय पीने दे मसजिदमें बैठ कर, या वह जगह बता कि जहाँपर खुदा न हो ।

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्—(सं०) अच्छे या बुरे जैसे काम किये हों उनका फल भोगना ही पड़ेगा ।

अशरफियां लुट्टे और कोयलोंपर छाप—फिजूल खर्च करनेवालेको क० । अशरफियां तो खर्च हो जायें फिर भी पैसे पैसेकी होशियारी की जाय ।

अस नहीं भयउ न होवन हारा—(तुलसी) न ऐसा हुआ और न होगा । वशिष्ठजीने भरतसे दशरथकी मृत्युके समय कहा है ।

न भूतो न भविष्यति । (सं०)

असबायमें असबाव एक चंग एक रबाव—जो कुछ हमारा असबाव है वही है—एक चंग एक रबाव (रबाव एक बाजा है)

असलसे खना नहीं, कमअसलसे चप्पा नहीं—अच्छी पैदायशवालोंसे धोखा और बुरी पैदायश वालोंसे बफादारी नहीं होती ।

असीलकी मुर्गीं टके टके—(मु०) गरीब आदमीकी चीजकी कुछ कीमत नहीं ।

असौजमें बरसे दाता, नाज नियारका रहे न घाटा—असौजमें पानी बरसनेसे फसल अच्छी होती है ।

अस्लीकी आमद चौरासोका खर्च—जहाँ आम-दनी कम और खर्च ज्यादा हो, वहाँ ऐसा क० ।

अस्ली बरसकी उमर, नाम मियां मासूम—(च०) गुण या अवस्थाके विरुद्ध नाम रहनेपर क० ।

अस्ली लस्ली—अस्ली बरसकी उमर हो जानेसे आदमी निकम्मा हो जाता है ।

अहंकारीका सर नीचा—घमण्ड करनेवालेका सर नीचा रहता है ।

अहमकसे पड़ी वात, काढ़ो पेंटा तोड़ो दांत—बेवकूफ आदमीसे सक्तीसे काम लेना चाहिये ।

अहमदकी दाढ़ी बड़ी या मुहम्मदकी?—जब कोई काम करना ही है, तो संकोच कैसा ।

अहीरका क्या जिजमान और लपसीका क्या पकवान—जैसे लपसी अच्छे भोजनमें नहीं है, वैसे ही अहीरका पुरोहित होना लाभदायक नहीं है।
अहीरका पेट गहिर वामनका पेट मदार—अहीर और माखण ये दोनों खानेमें भगहूर हैं।
अहीरकी दहीड़ी मटिया सुर्खरू—काम करनेवालोंकी कीमत उनके हथियारसे अधिक है।
अहीर गाड़ी, जात गाड़ी, नाई गाड़ी कुजात गाड़ी,—अपने समाजसे विपरीत व्यवसाय करनेवालोंपर क०।

अहीर देख गड़रिया मस्ताना—अपने ऊँचे दर्जेके आदमीको कुराहकी धोर जाते देख नीचे दर्जेके आदमी भी उन्हींका अनुकरण करते हैं।

अहीरसे जय गुन निकले, जय बालूसे घी—निर्गुणसे गुण चाहना उतना ही असम्भव है जितना बालूसे घी निकालना अर्थात् धुरसे भलाईकी उम्मेद नहीं होती।

अहीरोंके छांटल बहुरी?—अहीरोंके लिये बिना छांटा हुआ ही अन्न उपयुक्त है।

आ

आई गई पार पड़ी—जो हो चुका सो हो चुका।
गुजरी हुईपर सोच करनेवालोंसे क०।
आई तो रमाई नहीं तो फुक चारपाई—न कुछसे कुछ अच्छा है।
आई तो रोजो नहीं तो रोजा—(मु०) कमाना तो खाना, नहीं तो रोजा मनाना।
आई न गई कौले लग गाभिन भई—किसी पुरुषका संसोग न किया तो क्या खंभेसे गाभिन हुई? जो बचलन न्नी अपने किये हुए घुरे कामको छिपाती है, उसे व्यङ्गसे क०। (२) जिसने कोई कत्तर न किया हो, और बिना कारण दोषी गिना जाता हो, उसे भी क०। (३) यह पहेली भी है, जिसका अर्थ 'रोटी' होता है। कौला=कोयला।
आई न गई छो छो घरहीमें रही—(मु० ज०) जो सदा घरमेंही रही, घरसे बाहर कभी न निकली हो, उसपर क०।
आई यह आया काम, गई यह गया काम—आदमीके साथ काम घटता बढ़ता है।
आई बातका रखना, कुन्द जहन होना—मुहमें आई बात कह डालना अच्छा है, मनमें रखना अच्छा नहीं।
आई बात रुकती नहीं—जो बात दिलमें असर कर गई हो, बिना कहे नहीं रहा जाता।
उ ईमाई को काजर नहीं, चिलाईको भरमांग—(९० ज०) जिसे अंजस्त है, उसे कुछ नहीं, जिसे अज्ञान नहीं, उसे सब कुछ हो, तब क०।

भरमांग=(१) मांगभर सेंदूर (२) जितना मांगे उतना देना।

बाई मौज फकीरकी, दिया भोपड़ा फूंक—विरक्त मनुष्यके लिये कहा है।

बाई सनुभनकी बहार, बालम मूछें मुड़ा बालो—क्योंकि सनुआ मूछोंमें लग जाता है।

बाई है जानके साथ, जायगी जनाजेके साथ—जो आफत मरते दम तक न छोड़े, उसपर क०।

गाउ दरिद्र कान चढ़ बैठ—जान बूककर आफत मोल लेना।

आओ जाओ घर तुम्हारा, खाना मांगे दुश्मन हमारा—भूटी खातिर करनेवाले ऐसा क०।

आओ पड़ोसी हम तुम लड़ें—लड़के आदमीको कहते हैं जो बिना कारण लड़े।

आओ पीर घरका भी ले जाव—पीरोंका काम देना है, न कि, लेना। जय लाभके स्थानमें उलटी हानि हो तब क०।

आओ पूत सुलच्छने, घरहीका ले जाव—धुरे लड़कोंसे, जो घरकी दौलत बिगाड़ते हों, ऐसा क०।

आओ वे पत्थर पड़ मेरे पांव—अपने हाथों दुःख मोल लेना।

कथो जू दीय तुम्हें न उम्हें

इय, आपुही पर पौ बायर पारो. (आकर)

आंख पकी नहीं कजरीटी दस टाई—(५० ज०) निष्प्रयोजन आइम्बर दिखानेपर क०।

आंख ओझल, पहाड़ ओझल—आंखकी आड़में करनेसे पहाड़ भी आड़में हो जाता है। आंखके घामे कोई चीज रखनेसे पहाड़ भी छिप जाता है।

आंखका अंधा गांठका पूरा—मूख धनवानको क०।

आंख कानमें चार अंगुलका फुर्क है—बिना देखे विश्वास नहीं करना चाहिये।

आंख=देखना, कान=सुनना

आंखकी भौंहके सामने—किसीके मित्रसे उसकी घुराई छिप नहीं सकती; जैसे भौंहसे आंख।

आंखके आगे नाक, सूंके क्या खाक—अपना पंथ बढ़ानेके लिये ऐसा कहा जाता है।

इस मसलका निष्कास एक कहानीमें है—किसी समय एक नकटने अपना पंथ बढ़ानेके लिये लोगोंसे कहा कि मुझे ईश्वरका दर्शन होता है। तब लोगोंके कहा कि हमारे भी तो पाछे है, हम लोगोंको ईश्वर क्यों नहीं देख पड़ते? इसपर नकटने एक मसल कही। अन्तमें उसकी बातमें पड़कर नाकबलोंके नाक कटा देनेपर भी जब लम्बे ईश्वर न दिखे, तबने भी लज्जावश उसीकी नाई कहने लगे। भा०—जो भोखेपग दूसरे पयमें आ जाता है, बड़ भी अपनी सख्या बढ़ानेकी कोशिश करता है।

आंख गड्डू नाक मडू नाम सोहनी—रूपके विरुद्ध नाम होनेपर क०।

आंख चौपट अंधेरे नफरत—आंखसे न देखते हुए अंधेरे से नफरत करना।

आंख न दीदा, काढ़े कसीदा—(च०) देखो “आंख एकौ नहीं.....”

आंख तु नाक, बुनो चाँदसी—(च०) जय नामके अनुसार सूरत न हो, तब क०।

आंख नहीं पर कांजल दीन्हें—(च०) देखो “आंख एकौ नहीं.....”

आंख नाक मुंह मूँद के, नाम निरजन ले। भीतरके पट जय खुलें, जब बाहरके दे ॥ उपदेग।

आंख फड़के दहिनी, मैया मिले कि घहिनी—(ज०) स्पष्ट।

आंख फड़के चाई, मैया मिले कि साई—(ज०) स्पष्ट।

आंख फूटेगी, तो क्या, भौंहसे देखेंगे—

- (१) आंखके रहते ही भौंहकी घोभा है। (२) खीके मर जानेपर सालेका सत्कार नहीं होता। (३) पुत्रके मर जानेपर बहूका आदर नहीं होता।

आंख जब तक है तो रुग जाती है भी।
बंखही फूटी तो कब जाती है भी।

आंख फूटी पीड़ गई—किसी तकसोफते ज्यादा व्यथित होनेपर ऐसा क०। जिससे बराबर कष्ट मिले उसे त्यागना ही अच्छा है।

मुरति योगने जनि चहुआने। चोरे दुखने बड़ सुख पावे लोग पवानों मनमें लाय, फुटे आंख पीर जय आय।

आंख फेरे तोतों की सी, बातें करे मैना की सी—बदचलन खीके लिये क०।

आंख घची माल दोस्तों का—अपनी चीजकी खबरदारी रखनी चाहिये। जय असावधानतासे किसीकी चीज चोरी जाय, तब क०।

चिड़ियाके देख कीड़ा, गाफ़िर इधर घसीटा।
कीबेग बत पाकर, चिड़ियाका पर घसीटा।
चीनीने मार पंजे, कीबेका सर घसीटा।
जो जिसके-छाय चाया, लसमें ही धर घसीटा।
इश्वर आर जानी, बच दल है उर्गाका।
या टुक निगाइ चूकी, पीर भाय दोस्तोंका।

आंख विरानी खोभरो, मानो भुसमें जाय—दूसरेको तकलीफ देनेसे देनेवालेको कोई तकलीफ नहीं होती। खोभरो=कांटा। पराई आंखमें, कांटा चुभाया मानो भुसमें चुभाया।

आंख में फुल्लो नाम कमल नयन—(च०) नामानुसार गुण नहीं होनेपर क०।

आंखमें मील और इसमें मील नहीं—बहुत छन्दर खीको क०।

आंखमें लोर दांत निगोर—भदी शकलको क०।
आंखसे दूर सो दिलसे दूर—दूर रहनेसे मुहब्बत नहीं रहती।

बेकार है शिकयये तगाफ़िल रघूर।
हीता-है किसे ख्याली याद मइज़ूर।
क्या तुम सुनो नहीं ये मशहूर मसल,
जो आंखीसे दूर है-बड़ है दिलसे भी दूर।

आँखें अंजन, दाँते मंजन, नित दे नित दे नित दे
काने लकड़ी, नाके उंगली, मत दे मत दे मत दे
आँखोंमें अंजन और दाँतोंमें मंजन रोज लगाना
चाहिये, पर कानमें लकड़ी और नाकमें उंगली कभी
नहीं डालनी चाहिये।

आँखें हुईं चार, तो मनमें आया प्यार,
आँखें हुईं ओट, तो जीमें आया छोट । देखेकी
मुहब्बत होती है, पीठ पीछेकी नहीं।

अप तब रहे दूर तुम नजर से पार।

करते रहे रंझको नदों में प्रणार ॥

थप छप जुलाईके रखादार नहीं।

चार आँखें हुईं तो दिखमें भी आया प्यार (रंझर)

आँखें हैं या भैंसके सूतड़—जो सामनेकी चीज न
देख सके उसे ताना मार कर कहते हैं।

आँखोंका अन्धा नाम नैनसुख—गुणके विरुद्ध
नाम हो तब क०।

आँखोंका काजल चुराता है—बहुत चालाक आ-
दमीको कहते हैं।

आँखोंका तारा—छिछ चीजको ज्यादा मुहब्बतकी
नजरसे देखा जाता है, उसे क०। बहुधा लड़कों-
पर ही क०।

आँखोंका देखा दूर कर, भले मानसका कहना
कर—भले मनुष्यके कहनेके सामने एक दफा आँखों
देखी बातको भी भूल जाना चाहिये।

आँखोंका नूर दिलकी ठंडक—पुत्रके लिये क०।

आँखोंकी सुइयाँ निकालना धाकी है—जब किसी
कामका अधिक भाग हो जाय, केवल थोड़ाही करना
धाकी रहे, तब क०। यह ममल देहाती औरतोंपर
कही गई है। उनका विरवास है, कि यदि आँटकी
कोई मूर्ति बनाकर उसमें बहुवसी सुइयाँ चुभा दी
जाय और उसे मरघटमें रख छोड़े, तो उनका यशु
उसी तरह सुईकी वेदनासे प्राण त्याग कर सकता
है। उनका यह भी विरवास है, कि यदि जादू द्वारा
उसमेंसे सुइयाँ निकाल ली जाय, तो उसका प्राण
फिर पलट आ सकता है।

इसपर एक कहानी है कि उपर्युक्त रीतिसे एक दुष्ट स्त्री-
ने अपने स्वामीको मार डाला। बाद उसे फिर जिन्दगी-
के लिये उसने आँखोंकी सुइयाँ छोड़कर प्राण सभ्यी

सुइयाँ निकाल डालीं। उसी समय उस स्त्रीकी दाहीभी
पड़ च गई। उसने आँखोंकी सुइयाँ निकाल लीं और ऐसा
करनेके साथही माणवायु फिर पलट आई। वह मनुष्य
यह समझकर दाहीपर प्रसन्न हुआ, कि उसने मीठी आग
बचाई है। अन्तमें उसने दाहीके साथ ब्याह कर अपनी
स्त्रीको निकाल दिया।

आँखों देखी चेतना, मुँह देखे व्योहार—देखनेसे
विश्वास और परिचय होनेसे व्यवहार होता है।

आँखों देखी कानों सुनी—जब किसी कामका नि-
श्चय होना प्रतीत हो जाय, तब क०।

आँखों देखी मानूँ, कानों सुनी न मानूँ—
देखी हुई बातपर विश्वास किया जाता है, सुनी हुई
पर नहीं।

सुनि पिय गुन लिय अनि भङ्गवादे,

कहन पखानो जग इनि गाई।

श्रीनों लखों न भपने जैन,

तीनों पतिवापी गदि भैन।

आँखोंपर डीकरी रखना—किसी बातको जान शूक
कर न देलना। चेशमकी भी क०।

आँखों पै पलकोंका थोम्ब नहीं होता—अपनी
चीज किसीको भारी नहीं मालूम पड़ती।

आँखोंमें छाक डालना—धोखा देना।

आँखोंमें चर्चों छाई है—अहङ्कारीके प्रति ऐसा क०।
तोरे आँखमें चर्चों छाई माल न चाप्यो गीजर।

(हरिश्चन्द्र)

आँखोंमें मेंहदी छाई है—ऊ० दे०।

आँखोंमें सरसों फूलना—बहुमस्तीकी हालतमें क०।
जब मैं लख पीत पटधारी, तबतें शीर न भावत धारी।
कहे पखानो जंग रस ऐन, फूल रहे सरसोंही भैन।

आँखोंमें हरियाली छाई है—जिसको दुःखका ज्यादा
अनुभव न हो, उसे ऐसा क०।

आँखों सुख फलेजे ठंडक—पुत्रके प्रति क०।

आँखोंसे सुखी नाम हाफिज़जी सुसलमानोंमें बहुधा
अन्वेषको हाफिज़जी कहते हैं।

आँत भारी तो मांघ भारी—पेट भरा हो, तो आलस
आता है। अधिक भोजन करनेसे सिरमें दर्द
होता है।

भाँता तीता दांता नोन, पेट भरनको तीन ही फोन, आँखें पानी काने तेल, कहे घाघ वैदाई गेल—कड़ई चीज खाना, दाँतोंमें नमक लगाना, कम खाना, आँखोंसे पानी लगाना और कानमें तेल डालना, वैद्यको जरूरत नहीं रखते, ऐसा घाघ कहते हैं।

आँधर कूकर यतासे भूँके—(१)अंधा कुत्ता हवाकी आहटसे भी भौंकता है। (२) मूख मनुष्य जरासी बातके लिये ही लड़ बेधते हैं।

आँधर कूटे, बहिर कूटे, चावलसे काम—(५०)
(१) चाहे अंधेने कूटा हो या बहरेने, चावलसे काम।
(२) कोई भी करे काम होनेसे मतलब।

आँधर गई भुंजावे, खोपड़ी फूटि लगली गावे—
स्पष्ट।

आँधरी घोड़ी खोखले चना—मूख गुणकी पहिचान नहीं कर सकता।

आँधी आवे बैठ जाय, मेह आवे भाग जाय—
आँधी आनेपर बैठ जाना और पानी बरसनेपर भाग जाना चाहिये।

आँधीके आगे चनेकी यतास—(१)आँधीमें पंखा फलना श्रुया है। (२)अनावश्यक कार्यपर क०।

आँधीके आम—(१) सस्ती चीजपर क०। (२) जो चीज बहुत दिन न रहे, उसपर भी क०।

आँधी घाटे जेवरी पाछे बकरी खाय—दे० “अंधी पीसे कुत्ता खाय”।

आंसू एक नहीं कलेजा टूक टूक—दिखौवा रोनेपर क०।

आकास बाँधे पाताल बाँधे, घरकी टट्टी खुली—
जो दूसरोंका दोष दिखाते हैं, पर अपना नहीं देखते उनपर क०।

आकिला पैरची ए नुकत न कुनन्द—(मु०) पढ़ लिखे नुकतोंकी परवाह नहीं करते। फारसीमें जो गिरिस्ता लिखते हैं वे अक्सर नुकते लगाना छोड़ देते हैं, उनपर व्यंगसे क०।

आखिर अपनी ज्ञातपर आगया—अन्तमें जिस नीच मनुष्यकी नीचता प्रगट हो जाय, उसपर क०।
दे०, “अपनी असल पर”

आग और पानीको कम न समझे—इनको बढ़ते देर नहीं लगती।

आग और फूसका वैर है—खियोंका संग न करनेके लिये क०।

आग और वैरीको कम न समझे—इनको बढ़ते देर नहीं लगती।

‘आग’कहते मुंह नहीं जलता—खाली गाम सेनेसे ही उसका असर नहीं होता।

आगका जला आदमी आगहीसे अच्छा होता है—
जैसा आदमी देखना वैसा बचाव करना।

प्रथम समागम दुख दरवाजे,
बहुरी ही द्विथ सुख सरवाजे।
लोक उक्ति मन मने मणि क्यधि,
आगि दृष्टी अंग आगि निराधि ॥
(को० २० को०)

आगके आगे सब भस्म है—आगका परिणाम भस्म है।

आग खायगा सो अंगारा होगा—डूरे कामका बुरा फल होगा।

आग खाये मुंह जरे, उधार खाये पेट जरे—
स्पष्ट।

आग, जवासा, आगरी, चौथा गांडीवान।

ज्यों ज्यों चमके बीजरी, त्यों त्यों तजे पिरान ॥
पानी बरसनेसे इन चारोंकी हानि होती है। आगरी= नोनिया; जवासा=एक प्रकारकी काँटेदार झाड़ी जो प्रथम घृष्टिके ही बाद भरजाती है। बिजली चमकना वर्षा होनेकी सूचना है।
बरसत में दे देह सरसत अइ पह, भरसत। देह जैसे जरात जवासी है (पद्माकर)।

आग पानी का वैर है—विपरीत वस्तुओंका मेल नहीं होता।

आग बिना धुआँ नहीं—बिना कारण लड़ाई नहीं होती।

आग में मूत या मुसलमान हो—यह मसल मुगलोंकी अमलदारीके समय चली है, जब हिन्दुओंको जबरदस्ती मुसलमान बनानेके लिये ऐसा कहा जाता था; क्योंकि हिन्दू अग्निको देवता समझकर मूतनेको रोजी नहीं होते थे।

भागरेके, लाला पेट भरा मुंह काला— भागरे वाले छानेके जितने यौकोन होते हैं, पहिननेके उतने नहीं ।

भाग लगन्ते भ्रौंपड़ा, जो निकले सो सार— जब सब चीजें नष्ट होती हों, तब उनमेंसे जो बच सके वही सार है ।

धर्म कर्म करिक कहुँ अरा करत तन दाह ।

भाग लगनो भ्रौंपरो, जो निकसे सो साह ॥

भाग लगाय तमाशा देखना—स ई कगड़ा करा देनेवालोंपर क० ।

भाग लगाय पानीको दौड़ना—जो लड़ाई करा कर मेलका उद्योग करे, उससे क०; क्योंकि उसका सिद्धान्त धुराई करनेका है, केवल दिखानेके लिये भलाई करता है ।

धातनहीं मोहि रिच सपनाई ।

दियनों कहे जु नेहु मनाई ॥

भाग सो जो माया गावै ।

भाग लगाइ दगिनी जावै ॥

अधमाहृति । (खी० १२०० की०)

भाग लगे कह पैये मेह—भाग लगनेपर पानी कहा मिलता है ।

बोली व्याकुल बिरचिन बार, पिय धनग्राम मिलै इहि बार ।

अपखानी ज्यों अग कहि देख, सने भागि कहुँ पैये मेह ।

(खी० २० की०)

भाग लगे तो धुझे जलसे, जलमें लगे तो धुझे कैसे—यदि संयोगवय कोई छोटा काम करने जाय, तो समझायेते मान सकता है, परन्तु जिसकी जन्मसे ही श्राद्ध खराब है, वह कैसे मान सकता है ?

भाग लगेपर कुआं खोदना—काम बिगाड़ जानेपर सचेत होना ।

जो पड़लै कौजे यतन, सो पीछे फनदाय,

लाय सने खोई कुआं, कैसे भाग बुझाय ।

भाग लगे पर विल्लीकाम मूत डूंदना—उपस्थित विपत्तिते बचनेके लिये ऐसा उपाय यतना जो हो न सके ।

भाग लगे मट्टे, चन्न पड़े घरात—आप देना है ।

भागो मोरंकी दाई, सब सीखी सिखाई—अच्छोंको मोकर भी अच्छे ही मिलते हैं ।

भागे जागरा पीछे लाहोर—उल्टे रास्ते चलनेवालों पर क० । कोई मनुष्य लाहोर जानेके लिये भागरे की तरफ मुंह करके चल पड़ा था ।

भागे भागे गोरख जाने—देखो “भागो चलकर गुल.....”

भागिका गिरते ही पीछेका होशियार—एकको टोकर खाते देखकर दूसरा सचेत हो जाता है ।

भागे कुआं पीछे खाई—जब दोनों ओर विपत्ति दिखाई दे, तब क० ।

भागो चलकर गुल खिलेगा—(यो० चा०) जब भविष्यमें किसी बातका गुप्त भेद खुलनेका या किसी कामका धुरा परिणाम होनेका निरचय हो जाय, तब क० ।

(१) इतिहासके एक, है रोता है क्या,

भागो चलकर देखती होता है क्या ॥

(२) नहिं पराग नहिं मगुर रच, नहिं बिकाइ इहि काल ।

अली ककोरी सो दिख्यो भागे कौन सबाल । (बिहारी)

भागो चलते हैं पीछेकी खंघर नहीं—असावधान होनेपर क० ।

भागो जाय घुटने टूटें, पीछे देखे :आखें फूटें—(ज०) दे० “भागो कुआं.....”

भागो दौड़, पीछे चौड़—जब नया काम करता जाय और पिछला बिगड़ता जाय, तब क० ।

भागो नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार—का गद्दा—जिसका कोई न हो, उसे क० ।

भागो पग रखे पत बढ़े, पाछे पग रखे पत जाय—उन्नतिते इज्जत बढ़ती और अवनतिते घटती है ।

भागो पीछे सब चल बसेगे—सबको एक दिन मरना है ।

भागो फरक पीछे घात, जिसका नाम फरका-बाद—फरकवादीयोंपर ध्यंग है ।

भागो राह बर्तायके, पीछे गोता दे—धोखेबाज श्राद्धनीपर कही जाती है ।

भागो रोक, पीछे ठोक—जब दोनों तरफसे भागनेका रास्ता न मिले, तब क० ।

भागो हाथ, पीछे पात—(ज०) बहुत गरीबसे कही जाती है, जिसके पास तन ढकने तकको कपड़ा न हो ।

आजकलकी कन्या अपने मुंहसे वर मांगती हैं—समयके प्रभावपर क० । तात्पर्य यह है कि योग्यता बढ़ती जाती है ।

आजकल तुम्हारे ही नाम कमान चढ़ी है—
नवरदस्तसे क० ।

आजका काम कलपर मत छोड़ो—जो काम सामने थावे उसे तुरन्त कर डाले ।

करने जो कुछ तुम्हें है कर लो किल्लहान ।

काम में किसी के फालने इतकपाल ॥

मेरी ये नसीहत आदि खरबे लिखले ।

जो आजका काम हो उसे कलपर न टाल ॥ (रघु)

आज किधरका चांद निकला है—जब कोई बहुत दिन बाद मिलता है, तब क० ।

आजकी आज, आजकी वर्ष दिनमें—आदतपर निर्भर है, चाहे आजका आज करे चाहे वर्ष दिनमें ।

आजकी आजके साथ, कलकी कलके साथ—
(व्य०) जब कोई आजका काम कलके लिये रख छोड़ता है, तब क० ।

आजके थापे आज नहीं जलते—आजके सिखाये आज ही काम नहीं कर सकते । आजके थापे उपले आज नहीं जलते, उन्हें सुखनेके लिये कुछ समय चाहिये ।

आजके घनिये कलके सेठ—जिसकी अवस्था बढ़लती रहे, उसे क० ।

आज तक पड़े हींग हगतें हैं—अभीतक आराम नहीं हुआ ।

आज नपूती कल नपूती, टेसू फूला सदा नपूती—
(ज०) निराश अवस्थापर क० । आज भी नपूती कल भी नपूती, टेसू फूला तोभी नपूती । सब धूलोंका पतझड़ हो जाता है, तब टेसू फूलता है ।

आज नहीं कल—(व्या०) टालमटोल करनेवालेपर क० ।

यह मसख एकाकहर मुसलमानके प्रति कही गई है, जो प्रति दिन रातके समय एक घंटेके नीचे ईश्वरकी कारागार इस तरह किया करता, "खुदा अपनी मुसलमानों के नामों पर एक रातकी रात्री के कुरबाने बैठे हुए किसी मसखरेके रस्वीकी कसरती नीचे गिराकर उन मसखकी

जिपर आनेके लिये कहा । वह पाखंडी मसख भयसे घिब्ला उठा "आज नहीं कल, भवान् आज तुम्हें मत खींचिये, कल अवश्य आजगा" किसीकी संख्या या असत्यता तबतक जानी नहीं जाती, जबतक उसकी परीचा न की जाय ।

आज बसेरवा नियर, कल बसेरवा दूर—(प०) आजका घर पास है । कलका घर दूर है । इसलोक और परलोकपर क० ।

आजमायेको आजमावे, नामाकूल कहावे—जिसे कई बार आजमा चुके फिर उसे आजमाना मूल्यता है ।

आज सुए कल दूसरा दिन—जिसकी कोई याद करने वाला न हो, उसे क० ।

आज मेरे मंगनी कल मेरे व्याह, परसों लॉडियाको कोई ले जा—भविष्यका कुछ ठीक नहीं ।

आज में, कल तू—विपद समीप पड़ती है, आज हमपर है, तो कल तुमपर भी पड़ेगी

आजसे कल नरे है—आजसे कलका दिन ही पास है ।

आज हमारी कल तुम्हारी, देखो लोगो फेरा फारी—देखो, "आज में कल त ।"

आज है सो कल नहीं—अवस्थाके परिवर्तनपर क० ।

आजादी खुदाकी निबामत है—स्वतन्त्रता ईश्वरकी देन है ।

आटा नहीं तो दलिया जय भी हो जायगा—

गैह पीसनेसे आटा नहीं तो दलिया अवश्य हो जायगा । काम करनेसे ही सफलता होती है । यदि पूरी नहीं तो थोड़ी अवश्य ही होती है ।

आटा नियड़ा, चूचा सटका—मुफ्तखोरकी जय कुछ नहीं मिलता तब वह साथ छोड़ देता है ।

आटेका चिराग, घर रखलू तो चूहा खाय, बाहर रखलू तो कौवा ले जाय—(ज०) जब दोनों तरहसे सुरिकल हो, तब क० । देवीकी ज्योतके लिये आटेका दीया बनाया जाता है ।

आटेके साथ घुन पिसा—दोपीके संग रहनेसे जब किसी निर्दोपीकी हानि होती है, तब क० ।

भाटे दालका भाव } जो गृहस्थीके फेरमें
भाटे दालका फिक } पड़ता है, वही जानता है।

क्या सबहर क्या गनौ क्या घोर भी क्या बालका,
सबके दिनके फिक है दिन रात भाटे दालका। (नजीर)

भाटेमें नोन, सचमें झूठ—झूठ इतनी खप सकती
है जितना भाटेमें नमक। बहुत भठ न बोलना
चाहिये।

मान दिखार इतक परमान, आसि मिटे न रस मिटान।

रस सिद्धारमें ऐसे भावै, भाटे भांडे क्षीन जौं नावै ॥

(क्षी० र० कौ०)

भाठ कठौती मठा पिये, सोलह मकुनी खाए,
उसके मरे न रोहिये, घरका दलिहर जाय—जो
बहुत खाता हो, उसपर क०।

भाठ कनौजिया नौ चूल्हे—कनौजियोंमें खाने पीने-
का विचार बहुत है, कोई किसीका दुआ नहीं
खाता। नाइतफाकीपर क०।

भाठ गांवका चौधरी, चारह गांवका राय,
अपनेकाम न आय सौ, अपनी ऐसी तैसीमें जाय-

जब किसी बड़े आदमीसे सहायता न मिले, तब क०।

भाठ जुलाहे नौ हुका, जिसपर भी थुकांम थुकां-
जुलाहोंकी मूर्खतापर कही जाती है।

'आठ-टकेके गोहूँ मंगाये, पीसेगी के नाहरे ?'

'नाहूँ मेरे भोरे सइयां, पीसा नहीं जायरे ?'

'पीस पोयके आंगे रखवा, खायगीके नाहरे ?'

'हौं रे मेरे भोरे सइयां, खाऊंगी चोँ नाहरे।—

जो छी काम नहीं करतो और खानेको मुस्तैद
रहती है, उसे क०।

भाठ धार नौ दयोहार—हिन्दुओंमें त्योहार बहुत
होते हैं। यह कहावत कुछ अशुद्ध सी जान पड़ती है,
क्योंकि धार सात ही होते हैं, परन्तु इसी रूपमें
सर्वत्र कही जाती है।

भाठ हाथ लकड़ी, नौ हाथ चैली—असम्भव
यातपर क०।

भाठों गांठ कुम्भेत—बड़े चालाक आदमीसे कहते हैं।
कुम्भेत घोड़ा बहुत मेहनती और फुलीला होता है।

भाठों पहर कालका डंका सिरपर बजता है—
मौत हर बक सिरपर है।

भाड़े हाथों लेना—(१) किसीको जलील करना।

(२) पुरा भला कहना।

आता है हाथीके मुँह, जाता है च्यूँटीके मुँह—

आता सुशिक्षित है और जाता सहजमें है। धन
पर क०। आतेको सब देखते हैं, जातेको कोई नहीं
देखता।

आता हो उसे हाथसे न दीजे, जाना हो उसका
गम न कीजे—आई चीजको न छोड़े और गईका सोच
न करे।

आती यह जनमता पूत—यह सबको प्यारे लगते हैं।

आती लक्ष्मीको लात मारना ठीक नहीं—साम
छोड़ना अच्छा नहीं है।

आते आओ, जाते जाओ—(१) यह एक महाव्रता है।

(२) आना हो तो आओ, जाना हो तो चले जाओ।
लापरवाही जाहिर करती है।

आतेका नाम सहजा, जातेका नाम मुका—
दुःख आवे तो उसे शान्तिपूर्वक सहना चाहिये,
क्योंकि उसके चले जानेसे मोक्ष है।

आते जाते मैना न फंसी, तू क्यों फंकारे कौवे—
सीधे आदमीसे सयाना आदमी ही अधिक धोका
खाता है।

आत्मवत् सर्वभूतानि—(सं०) सबको अपनी बरा-
बर समझना चाहिये।

आत्मामें पड़े तो परमात्माकी सूझे—दंड भरा
हो तो ईश्वर याद आवे।

आत्मासुखी, तो परमात्मा सुखी—ऊ० दे०।

आदम आया, दम आया—आदमसे सृष्टिका प्रार-
म्भ है।

आदमी अनाजका फीड़ा है—आदमी अनाजसे
जीता है।

आदमी अपने मतलबमें अंधा है—स्पष्ट।

आदमी अशरफुल मखलूकात है—मनुष्य सब
जीवोंमें अश्रेष्ठ है।

आदमी आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर—
सब आदमी एकसे नहीं होते।

आदमी का शेतान आदमी है—आदमीको आदमी
ही पुरा रास्ता बताता है।

आदमीकी कदर मरेपर होती है—स्पष्ट ।

आदमीकी कसौटी मुआमला है— आदमीकी जांच काम पड़नेसे होती है ।

आदमीकी दवा आदमी है—आदमीको आदमी ही उधारता है ।

आदमीकी पेशानी दिलका आईना है—आदमीका मुंह देखनेसे, उसके अन्दरका हाल जाना जा सकता है ।

आदमी कुछ खोकर सीखता है—बिना आये टाकुर नहीं होता ।

आदमीको अढ़ाई गज कफन काफ़ी है—हिन्दुओंकी मसल है, लहायको ढांकनेके लिये अढ़ाई गज कपड़ा लगता है ।

आदमीको अढ़ाई गज ज़मीन काफ़ी है—(मु०) कर्मके लिये ।

खूँके दरिया बड़ गधे, खालम तहोबाला हूँए,
रे विकन्दर किस लिये, दो गज, ज़मींके भाषे ।

आदमीको आदमियत लाज़िम है—गनुज्यमें मनुष्यत्व होना चाहिये ।

आदमीको आदमीसे सौ दफ़ा काम पड़ता है—स्पष्ट ।

आदमी क्या है, आवनूसका कुन्दा है—बहुत काले आदमीसे क० ।

आदमी चनेका मारा मरता है—मौत आनेपर छोटीसी चोट भी मारनेके लिये काफ़ी है । जीवनकी अस्थिरतापर क० ।

आदमी जाने बसे, सोना जाने फलसे—आदमी पास रहनेसे जाना जाता है ।

आदमी ठोकर खाकर समझलता है—दे० “आदमी कुद खोकर.....”

आदमीने आखिर कधा शीर पीया है—मनुज्यकी दुर्बलतापर क० ।

आदमी पानीका बुलबुला है—आदमी नायवान है पागोका बुलबुला है इन्सानकी इयात,

हरगिज नहीं इससे बंदके इसको है सधात ।

‘वो इस धुनमें कि दूँ रकीवोंकी निकल ।

‘थोर मौत इम फिकमें कि दूँ इसको सात ॥ (रघूर)

आदमी पेटका कुत्ता है—आदमी पेटका गुलाम है ।

आदमी मानके लिये पहाड़ उठाता है—मनुज्य प्रतिष्ठाके लिये शक्तिसे बाहर काम करता है ।

आदमी मालकी खातिर पहाड़ सरपर उठाता है—फायदेके लिये आदमी सब काम करता है ।

आदमी मुश्किलसे मिलता है—अच्छा आदमी न मिलनेपर क० ।

आदमी सा पखेरू कोई नहीं—क्योंकि यह बहुत दूर देशोंमें घमा करता है ।

आदमी है कि घनचक्र—आवारा आदमीको क० ।

आदमी है या बिजली—बहुत तेज़ आदमीको क० ।

आदमी होना बहुत मुश्किल है—जिसमें इनसानियत नहीं होती, उसे क०—

‘इमने माना हो फ़ारिशतइ शेख़श्री, (पर)

आदमी होना बहुत दुश्वार ।

आदमी हो या बेदालके बूदम—मूर्खसे कही जाती है । फारसीमें बूदमसे (दाल) निकाल लेनेपर ‘बम’ रह जाता है; जिसका अर्थ उरलू है ।

आदमी हो या संगे वेनून—फारसीमें ‘संग’मेंसे नन निकाल लेनेपर ‘संग’ रह जाता है, जिसका अर्थ कुत्ता है आदर न भाव, झूठे माल खाव—झूठ मूठका सत्कार करनेपर क० ।

आदर बढ़ल गजाधर—ब्रह्मके—बड़े आदमीकी खीका बहुत आदर है ।

आद हिन्दू बाद मुसलमान—पहिले हिन्दू पीछे मुसलमान ।

आदीके चन्दन लिलार चरचराय—(प०) स्पष्ट । चन्दनकी जगह अदरक पीसकर भाषेमें लगाई जाय तो भाषा चरचराने लगेगा ।

आदी मिरचार्इका कौन साथ—अदरक मिरचका क्या साथ ?

आध सेरके पात्रमें, फैसे सेर समाय—जब किसी छोटे आदमीको धन मिल जाता है और वह उसे धुरी तरह खर्च करता है, तब ऐसा क० ।

आधा आप घर, आधा सब घर—लालचीको कहा जाता है ।

आधा तजे पंडित, सर्वस तजे गँवार—समय पड़नेपर बुद्धिमान थोड़ा ध्यय करके शेषको बचा लेता है ।

आधा तीतर, आधा घटेर—बेतुकी बात कहना,
जिसका ठीक मतलब न हो।

आधा मियां शेर शरफुद्दीन, आधा सारा गाँव—
यड़े आदमीको जब सबसे ज्यादा हक दिया जाय
तब क०।

आधीको छोड़ सारीको धावे, } ज्यादा लालच
पैसा डूबे थाह न पावे। } करना अच्छा
आधीको छोड़ सारीको धावे, } नहीं; जो मिले
आधी रहे न सारी पावे— } उसीमें सन्तोष
आधी रातको जैमाई आय, शामसे मुँह } करना कत्तब्य है।
फैलाय—बेवक्तका काम करनेपर क०।

आधो रोटी यस, कायध है कि पस—कायस्थ
लोग कम खानेवाले होते हैं।

आधे अपाढ़ तो बैरीके भी घरसे—आधे अपा-
ढ़में जरूर बर्षा होती है।

आधे फ़ाज़ी कह, आधे धाया आदम—(मु०)
ज्यादे धौलादवालेको ऐसा कहते हैं। कहते हैं, कि
फ़ाज़ी कह के ७० लड़के थे।

आधे गाँव दिवाली आधे गाँव फाग—जहाँ
इत्तफ़ाक़ (मेल) नहीं होता, वहाँ ऐसा क०।

आधे माधे, कामरि कांधे—(१) आधे माघमें जाड़ा
कम होनेके कारण कमलको कंधेपर रख लेते हैं।

(२) आधे माघसे वे लोग कामर उठाते हैं जो प्रया-
गसे जल लाकर वैधनाथकी शिवरात्रिके दिन चढ़ाते
हैं, क्योंकि वहाँसे बीस पचीस दिनका रास्ता है।

आनक पहिरिक साजो बड़, छीन लेलक त
लाजो थड़—(म०) पराई चीज पहिरनेमें जैसी थोभा

होती है, छिन जानेपर वीसी ही लज्जा भी होती
है। जो मँगनीकी चीज पहिनकर आन शौफ़त
दिखाते हैं उनको क०।

आन बनी सर आपने, छोड़ पराई आंस—
अपने ऊपर आ पड़े तो दूसरेकी आया नहीं करनी
चाहिये।

आनसे मारे, तानसे मारे, फिर भी न मरे तो
रौनसे मारे—औरतपर कही जाती है; पहिले यातोंसे
फिर आँसोंसे, उसपर न मरे तो जाँघोंसे मारती है।

आप करे मोहि दोप लगावे, ऐसा स्वामी नाहिं
सुहावे—स्पष्ट।

आप करे सो काम, पल्ले पड़े सो दाम—हाथका
काम पासका दाम काम आता है।

आप काज महा काज, } काम आप करनेसे
आप काम महा काम— } ही ठीक होता है।

कहो दाम प्रति मोहन मोत, सरस चैतमें रस विपरीत,
सुनो पखानो लोक समाज, आप काज कोरें मङ्गलाज।
(लो० २६ वी०)

आपको लापसी पराई सो खुशकी—अपनी चीज
अच्छी, दूसरेकी बुरी बताना।

आपके पीसेका क्या छानना—(व्य०) अपने
किये कामकी बड़ाई करे, उससे पैसा क०।

आपको न चाहे (च माने), ताके आपको न
चाहिये—(च मानिये) स्पष्ट।

(१) दाता कड़ा घर कड़ा सुन्दर मुजान कड़ा,
आपको न चाहे ताके आपको न चाहिये। (मो० १०)

(२) हँ पधौन पिय हितके नाम।
सेवकको नित पाठों नाम ॥
लोग पखानो यह सुन लीजें।
चाह करे ता चाह करीजें ॥

आपको फ़ज़ीहत ग़ैरको नसीहत—दे० “ख़दरा
फ़ज़ीहत।”

आप खाय, बिलाई बताय—आप करे दूसरेका
नाम बतावे, तब क०।

आप खुरादी आप मुरादी—जो केवल अपना ही
फ़िक्र रखवे उसको क०।

आप गये और आंस पास—आप भी बरबाद हो
और साथमें पड़ोसियोंको भी बरबाद करे, तब क०।

आप गये अरु औरि चाहिये। (तुलसी)

आप चले तो चिट्ठी काहेकी—व्यर्थ काम करनेपर
क०।

आप चले भुरयां शेखी गाड़ीपर—शेखीबाज़को
क०।

आप जिन्दाह, जहान जिन्दाह—जबतक आप जीता
है, तबतक दुनियाँ है।

आप डूबा तो डूबा, औरको भी ले डूबा—
अपनी हानि हुई, दूसरोंकी भी हानि की।

आप डूबे तो जग डूबा—जब अपनी ही हानि हो,
तब दूसरोंकी हानिका क्या विचारना।

आप डूबे यामना जिजमाने ले डूबे—आजकलके
मालखोप क०।

आ पड़ोसिन मुझ सी हो—(ज०) जो दूसरोंको
अपनीसी ही अर्थस्थामें देखना चाहे, उसपर क०।

आ पड़ोसिन हम तुम लड़ें—लड़ाकी औरतपर क०।

आपत्ति काले मर्यादा नास्ति—(स०) विपत्तिमें
मर्यादा नहीं रहती।

आप तो मियां हफतहजारी, घरमें रोवे कर्मों
मारी—आप घनाठना रहे, घरवाली दुःख पावे। तबक०।

आप धनी तो जग धनी—जब कोई अपने जैसा
सभीको धनी समझे, तब क०।

किन्ही नाईके पास एक अशरफी और एक भंस घी। वह
केवल अपने मनमें ही नहीं समझता था, बल्कि सबसे
कहा करता था, कि गाँवके सभी मनुष्योंके पास एक एक
अशरफी और भंस है।

आप न जावे सासुरे, औरोंको सिख दे—
आप न करे औरोंको सिखावे।

बाँधन सीत जो कहति है, सुधि करि रोस; निकित,
जाति आप नाहं गावरे, औरनको सिख दैत।

(मध्यममान लो० २० की०।)

आपनी जरूर जा जरूर जाइयतुहै—अपनी जरूरत
के लिये पाखानेमें भी जाना पड़ता है। जब गरज

वश कोई निन्दित काम किया जाय वा नीचकी
खुशामद करनी पड़े तब क०।

तालेवरोंके घरमें सरापा गृहर है, जाना पडा जरूर तो
जावे जरूर है। सरापा = गिरछे पैरतक, अर्थात् बड़त।

आप पांडेजी बैंगन खावे, औरोंको परमोध
बतावे—देखो "पर उपदेश कुयल".....

आप बीती कहूँ या जग बीती—मैं अपना दुखड़ा
छानाऊँ अथवा सभीका।

आप बुरा तो जग बुरा—बुरा आदमी सबको बुरा
समझता है।

आप भला तो जग भला—(१) भलेको सब भले
ही दीखते हैं। (२) भलेके साथ सभी भलाई करते हैं

प्रिय बीले कैसी नहिं नाउ, हीं काइकी धरी न नाउ।
मो खलि निधरक कर कीउ छला, आप भले तब सब
जग भला। (लो० २० की०।)

आप भूले उस्तादको लगाय—जब कोई अपनी भूल
दूसरोंके सिर मढ़े, तब क०।

आपम धाप कड़ाकड़ बीते, जो मारे सो जीते—
जल्दी मार, जो पहिले मारेगा सो जीतेगा।

आप मरे जग परलै—जानसे जहान है।

आप मरे सब मर गई दुनियां—ऊ० दे०।

आप मियां सूवेदार, घरमें वीची भोके भाइ—
दे० "आप तो मियां हफत".....

आप मिले सो दूध बराबर, मांग मिले सो
पानी। फकीर कहें वह रक्त बराबर जामें ऐंचा

तानी—स्पष्ट। गले पड़कर किसीसे नहीं मांगना
चाहिये।

आप रहें उत्तर काम करें दक्खिन—जो अनाड़ीपन
वा मूर्खताका काम करता है, उसपर क०।

आप राह राह दुम खेत खेत—जिसका काम बहुत
फैला हो उसपर क०।

आप लगावे आप बुझावे, आपही करे बहाना,
आग लगा पानीकी दाँड़े, उसका कान ठिकाना-

स्पष्ट।

आप लिखें खुदा चांचे—जब अपना लिला न पढ़ा
जाय, तब उसे व्यंगसे क०।

आप सुने रागसे, फकीर सुने भागसे—आप
पैसा खर्च कर गाना सुनते हैं, फकीर अपने भागसे
सुनता है।

आपसे आवे तो शाने दो—इस मसलका निकास
दो कहानियोंसे है—

(१) एक कहर सुसलमान सुरतीका भांस नहीं खाता
था। एक दिन उसको लीन एक बड़े सुरतीकी मारो

और बड़त था, ची-मसाका देकर उसका भांस प्रकाया।
जब लीन अपने सामनेही खानेका आग्रह किया, तो

वह राजी न हुआ। बहुत हठ करनेपर वह केवल उसका शोका खातेपर राजी हुआ। जब शोका खाद उसे अच्छा लगा, तब उसने अपनी स्त्रीसे कहा, कि शोकाके साथ यदि मांसकी टुकड़े आपसे-आप आजाय तो पाने दे। स्त्री तो यह चाहती ही थी, वह ज्ञान-प्राप्तकर बहुतसे टुकड़े शोकाके साथ गिराती गई, यहाँ तक कि वह सबका सब मांस खा गया।

(१) एक कष्टर मन्त्राण पण्डित सबको उपदेश दिया करते थे, कि वैगन खाना हिन्दुओंके लिये निषिद्ध है। एक दिन किसीने एक टोकरा भर वैगन लाकर उन्हें दिये। जब उन्हें लेना स्वीकार न किया, तब उनको स्त्रीने कहा, जो बीजू आपसे आवे उसे पाने दीजिये। इसपर वह राजी हो गये और वैगनसे भरे टोकरेको लेकर घरमें रख आये, (भाव०) लालच मनुष्यको भ्रम बना देता है, जिसके घरमें होकर उसे अच्छे बुरेका ज्ञान नहीं रहता।

आपसे गया जहानसे गया—(१) जो अपनेसे गया सो जहानसे गया। (२) खुदामदी आदमी भी कहा करते हैं, अर्थात् जिसको आपके यहाँ आश्रय नमिला उसको कहीं भी आश्रय न मिलेगा।

(३) जो आप सो गया उसके लेखे जहान सो गया।

आपसे भला खुदासे भला—जो अपनी निगाहमें भला है, वह ईश्वरके सामने भी भला है।

आपसों न बोले ताके वापसों न बोलिये—दे० “आपको न चाहे”

आप हारे, चहूको मारे—जो अपना गुस्ता घेकसूरपर उतारे, उसे क०।

आप ही अपनी कत्र खोदते हैं—जो अपनी खराबी अपने हाथोंसे करे, उसे क०।

आप हीकी जूतियोंका सदका है—किसी बड़ेके सामने अपनी अधीनता दिवानेके लिये क०।

इस मसखपर एक कहानी इस तरह प्रसिद्ध है—किसी एक सुसलमान मसखरेने सुत्रतके उपसर्धमें अपने बंधु बांधवोंको निमन्त्रित किया। जब वे खानेको गये, तब उसने अपने नौकरसे उनके सब जूते बीच डालनेको कहा। नौकरने भी उसके कयानुमार जूते बीचकर उसे दाम दे दिये। धाते समय आत भाइयोंने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा ‘भाई साहब! आपने बड़े तकलीक की?’ इसपर मसखरेने हृद्य जोड़ बिनीत भावसे

कहा, ‘सब आपही को जूतियोंका सदका है, मैं खुद होकर आपजोगोंको क्या सेवा कर सकता?’

आप ही नाक चोटी गिरपतार है—(मु० ज०) खुद सुसोवतमें पड़े हैं।

आप ही मियाँ मंगते, वाहर खड़े दरवेश—जो खुद दूसरोंको मदद चाहता है, वह किसीकी मदद क्या कर सकेगा?

आपा तजे, तो हरको भजे—अभिमान छोड़नेसे ईश्वरकी उपासना होती है।

जब हम तर्क हरि नाहिं हैं, जब हरि तह हम नाहिं। प्रेमगरी, भक्ति साकरी, रहिमान हैन समहिं।

आफँसेका मामला है—जब कोई आदमी देव संयोगसे ऐसी संगतमें आ जाय, जहाँ उसे अपनी इच्छाके विरुद्ध उन लोगोंको खुश करनेके लिये कोई काम करना पड़े, तब क०।

आफँसे भाई आफँसे—ऊ० दे०।

इसपर एक कहानी इस तरह है—कोई हिन्दू सुहरं-सकी दिनोंमें यात्रिये देखने गया और सुसलमानोंके बीचमें जा फँसा। सुसलमान जो उस समय कातो पीट रहे थे, उससे कहने लगे, कि तुम्हें भी हमारा साथ देना होगा। वह हिन्दू भी लाचार होकर उन्हें साथ कातो पीटने लगा। कातो पीटते समय सुसलमान तो कहते थे ‘हाय हुसैन, हाय हुसैन’ और वह हिन्दू कहता था “आ कसे भाई आ कसे।”

आफुतायपर थूकनेसे अपने ही मुँहपर पड़ता है—जो अच्छेकी निन्दा करे, उसीकी निन्दा होती है।

शाय आवकर मर गया, सिरहाने रहा पानी—फारसी बोलनेवालोंपर व्यङ्ग्य है। जो लोग अपने घरमें विदेशी भाषा बोलते हैं और घरवाले समझ नहीं सकते, उनपर कही जाती है।

इस कहावतका निकास इस तरह है—कोई फारसी पढ़ा लिखा मनुष्य एक समय बीमार पड़ा। जब व्याधके मारे उसका गला सूखने लगा तो वह ‘आप! आप!’ कहकर बिह्वाने लगा। यद्यपि पानी उसके सिरहाने रखा था, परन्तु घरवाले उसकी बीबी न समझ सके और व्याधके मारे उसकी प्राण बागु लड़ गई। पूरी कहावत इस तरह है, “कानुन गये सुगुल हो चाये, बीने चटपट बागो। आप आकर आप निजम गये, पणधर राहा पानी।”

आ बड़े बापकी घंटी है तो पंजा कर ले—

(ज०) जो अपने बलका अभिमान करे उसे क० ।

आवत हाही जावत संतोप—धनपर कही जाती है ।

जब धन आता है, तो खुशी होती है, और जब निकल जाता है, तो संतोष हो जाता है ।

“जात जात बित होत है, ज्यों जियमें संतोप ।”

घोत घोत जो होय तो, होय घरोंमें मोष ।” (विहारी)

आय न दीवह, मौजह कशीदह—(फा०) बिना पानी

मोजा उतारना, बिना बातके आपसे बाहर होना ।

आधरू जगमें रहे तो जानजाना पश्र है—

इज्जतके सामने जान कोई चीज नहीं । यह दुमानी है “आधरू” और “जानजाना” नामके दो गोपर खलनऊमें हो गये हैं । दोनोंमें आपसमें बहुत छेड़छाड़ रहती थी । यह शेर “आधरू” का कहा हुआ है, जिसमें “जानजाना” पर कटाक्ष है । पूरा शेर इस तरह है :—जो सती सतपर चढ़े, तो पान खाना रस्म है । आधरू जगमें रहे तो जानजाना पश्र है ।

आ यला गले लग—जान बूझकर आफत बुलाना ।

आवे न जावे चतुर कहावे (वा घृहस्पत कहावे)—

(घ०) स्पष्ट ।

आम इमलीका साथ है—दोनों ही खट्टे हैं ।

आम ईख नीबू बणिक, गारे ही रस दैत—आम,

ऊख, नीबू और बनियां इनको दवानेसे ही रस मिलता है । यह प्रायः बनियोंपर कही जाती है, जो बिना दवावके जल्दी किसी देश-हितकर कार्योंमें रुपये नहीं देते ।

भांवा नोडू बनियां गर बापे रस दैत,

कायथ कोआ करहटा मुखाह हीं लेत ।

आमके आम गुठलीके दाम—किसी वस्तु या काममें दुहरा लाभ हो तब क० ।

‘पहिले कर मन इच्छित भोग, पाछे लेहु द्रव्य सुख भोग, कहे पखानो ज्यों बुधि आम, आम आम गुठलीके दाम ।’

(सामान्य, लो० र० कौ०)

आमके चूमे मुँह भर लाल—संगतका फल होता ही है ।

आम खानेसे काम, पेड़ गिननेसे फना काम—

जब कोई मतलबका काम न कर किञ्चल यातें करे, तब क० ।

‘कहूँ मनाई का तुम्हें, करौँ किल अभिराम ।’

आम खानसों कामका, पेड़ गिनसों काम ।’

(लो० र० कौ०)

आम भूड़े पताई, लड़का रोवे दाई दाई—

अभी बौरही भड़ा है कि लड़का आमके लिये रोने लगता ।

आमदनीके सिर सेहरा है—धनसे ही प्रतिष्ठा होती है ।

आमने सामने घर करूँ, और बीच करूँ मैदान—

(ज०) घेराम औरतको क० ।

आम फले तो नब चले, अरंड फले इतराय—

अच्छेके पास धन होनेसे वह नत्र हो जाता है और ओछेके पास होनेसे इतराने लगता है ।

आम फले पत राखके, महु फले पत खोय—

श्लेष है, जब नये पत्ते निकल आते हैं, तब आम फलता है, और पतकड़ हो जानेपर महुआ फलता है । अच्छे लोग इज्जत रखके काम करते हैं ।

आम वो आम खाओ, इमली वो इमली खाओ—

जैसा करो वैसा पाओ ।

आमा फले तो नीचा नये—बुद्धिमानोंके पास धन

होनेसे वे और भी नत्र हो जाते हैं ।

आमों की कामाई नीबूमें गँवाई—जब एक कामकी

आमदनी दूसरे काममें खर्च हो जाती है, तब ऐसा क० ।

आय तो जाय कहाँ—क्या परिणाम होगा उसका

निश्चय न हो, तब क० ।

आया कर तू जाया कर, टट्टी मत खड़काया कर—

(ज०) स्पष्ट ।

आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा—

जब किसी मनुष्यका ध्यान एक ही तरफ रहता है, और दूसरी तरफसे उसका नुकसान हो जाता है तब क० ।

इस कथावतपर अभीर सुगरीकी एक कविता है । एक दिन अभीर सुगरी प्यासि एक झण्ड पर गये । वहाँ चार औरतें पानी भर रही थीं । उनमेंसे एक इनकी पहिचानकर बोली, कि यही सुगरी है, जो गायरी करता है । अब सुगरीने उनसे पानी पीनेकी मांग, तो उन्होंने कहा, कि जो तुम इनारी चौकीपर कुछ कविता बना दो

तो पानी पिलावे। एक बोली 'मेरे घर आज खीर हुई थी, इसपर कुछ कछो; दूसरी बोली 'मेरे घर खीर पर कुछ कछो'; तौसरी बोली 'सामने भी कुछा खड़ा है, इसपर कुछ कछो'; चौथीने कहा 'मेरे टोलपर कुछ कछो।' खुशरी भी बहुत ध्यासे थी, बोल उठे 'खीर पकारें यतनसे, चरखा दिया जवा। कुछा आया खागया, तू भी टोल बजा, ला पानी पिला।' इसपर सब बहुत खुश हुईं और उनको पानी पिला दिया।

आया तो नोश, नहीं फुरामोश—(मु०) मिला तो खालिया, नहीं चुप रहे।

आया मंगसिर, जाड़ा रंगसिर—मंगसिर वा धगहनमें जाड़ेपर रंग रहता है।

आया रमज्ञान भागा शैतान—(मु०) स्पष्ट।

आया राजा पोह, जाड़ेको बढ़ा छोह—
पूसमें जाड़ेका जोर रहता है।

आया है सो जायगा, राजा रंक फकीर—
गरीब धर्मोर सभीको भरता है।

आये कनागत फूलो काँस, वामन उछलें नौ नौ
याँस—कनागत वा पितृ-पुत्रमें प्राणियोंको निर्मग्रण
यहुत मिलते हैं, इससे वे बहुत खुश रहते हैं। इसी-
का उक्तराव यह है 'गये कनागत टूठी आस, वामन
रोचें चूहे पास।' कनागत याद फिर न्योते नहीं
मिलते, इसीलिये हाथसे पकाले हैं और रोते हैं।
निर्मग्रण-सोलुप मादण्योंको क०।

आयेकी शादी न गयेका गुम—सन्तोषी मनुष्यको
क०।

आये चैत सुहावन, फूहड़ मैल छुड़ावन—
फूहड़ खियोंपर कहते हैं, जो जाड़ेमें सरदीके भयसे
नहीं गहरती।

आये थे हरिभजनको ओटत लगे कपास—
जिस कामके लिये जाय, वह न कर दूसरे ही काममें
फस जाय, तब ऐसा क०।

आये मीर भागे पीर—मीरके पहुंच जानेपर दूसरे
पीर भाग जाते हैं।

यह मसल इस तरह मसल है—चमरोईमें शिखर छो
 -वा मीर/जी नमका एक आदमी रहता था। यद्यपि इसे
 किसी विषयमें पूरा प्रवेग न था, सोभी वह अपनेको एक
 निपुण ज्योतिषी और भविष्यवाता कहा करता था। एक

दिन एक जीतते समय खेतमें उसे एक चौधवा दीवा
 मिला। यह दीवा पूर्व समयके किसी प्रसिद्ध जादूगरका
 बनाया हुआ था। उसमें चार बगियां लगी थीं। दीवेंमें
 विगेषता यह थी, कि जो कोई उसे मासता, उसीके सामने
 चार अन्न उपस्थित होकर उसको इतनाक पाशावा। माहन
 करनेमें तयार हो जाते थे। पहिले पहिल जय शिखर-सदो
 ने उस दीविको बाला, सो अपने सामने चार जिन्नोको
 देख वह भयभीत हो गया और दीविको बुतनेकी कोशिस
 करने लगा। जिन्नोने कहा, कि जबतक चमरोई कीर्त काम
 करनेकी पाशा न मिलेगी, तबतक वे इस स्थानसे नहीं
 टलेंगे। शिखर कामी प्रकय था। उसने जिन्नोसे एक खुरफत
 औरत लानेकी कहा, जिसे उसने किसी दूर स्थानमें देवा
 था। यह काम जिन्नोने तुरत कर आवा। यह औरत एक
 कुलीन घरकी थी। इस घटनाको देख वह बहुत पीर
 भयभीत हो गई। जिन्नोमेंसे एकने शिखरसे कहा 'इस
 लीज सभीयक आपकी सेवा भलीभांति करेंगे, जबतक
 आप सुराहपर चलेते। कुपयगामी कोनेसेही चाव मारे
 जायेंगे।' शिखरने प्राय मानेके भयसे उस समय तो श्रीकी
 छोड़ दिया और जिन्नो द्वारा उसे अपने स्थानपर पहुँ-
 चवा दिया। इसी तरह उसने कई बार किया। जबकि
 जब उससे न रहा गया, तब एक दिन उस श्रीकी मुभा-
 कर उसके साथ बनाकार किया और उसी घण जिन्नोने
 उसे मारडाला। एक प्रसिद्ध प्यात्रि कहकयये मानेके कारण
 उसको एक दरगाह चमरोईमें स्मारक रूपमें बनाई
 गई। वहां अभीतक बहुत लोग जिघारत करने आया
 करते हैं। ऐसा कहा जाता है, कि मजूके बाद वह एक
 नई प्रयागी जिन्नो हो गया। जब सभी वह मनुष्यके
 नियंत्रण; निर्बोके सिरपर आता है, तो और दूसरे पीर
 कींसे माहदरिया, जूनकं. नद मिथी बगैर भी दो
 ब्यारह होजाते हैं। तापयं यह है, कि वहाँके सामने
 छोटीका प्रभाव कम पड़ता है और वह अपना स्थान
 लम्बोके लिये छोड़ देते हैं।

आरत कहा न करति फुकरमू—(गुप्यी) दुःखी
होनेपर मनुष्यको अच्येद शुरेका विषय नहीं रहता।
आरतके त्रित रहै न चैनू—(गुनमी) दुःखित
मनुष्यको सदा किंक लगा रहता है।

आरी फेरि चलायनो, नहीं चंद्रको काम—
आरी चलाना चंद्रका काम नहीं। सापधानीका
काम चलत मनुष्य नहीं कर सकते।

मान्यप्रतीक स्नानी, घांटे आम न चढ़े पानी—
घोंटिगलेयके आगत कानमें लोमोनि बहुत बट
पाना ना, उगीमा उगीर है।

आत्मम निद्रा और जंभाई, यह तीनों ही फालके
भाई—ल्यट।

आत्मसी सदा रोगी—ल्यट।

आत्मा दे निवाला—दे आत्मा ! तू हमें एक कर
रोटी दे।

इस मनुष्यन एक कहानी इस तरह है :—कोई राजा
एक मिथुनिक यूप्युत लड़कीको देवा मोहित हो गया
और उसमें मदी कर भो। धनो परमि काकर भी उस
लड़कीको भीय भोगनेको चाहत न हुटी। लखे वह
सकाके घरमें आई, लखीमें ओ कुछ बट गाली, उसे
कचो तरह न पपला। इसका कारण पूरा चयामके
हुट जंदिने भिना और कुछ न था। राजने पनगी नप-
विरादना लोको बदासनामें देव कचो २ चिकित्सको-
को बुधाया, पर कोई भी उसे चहा कर न सका। बाद
एक समयपर बुधा नैप, ओ लड़कीका पूरा भीरतवहित
कलना पर, सादरवायमें कला, और उसमें लानीको इस
भायमें गुन करकेको इतिहास को। उस बुडे नैपने
दीपारके चारे (लय) में बहनेमें रोटीके टुकड़े रख
लड़कीमें चहा, बि दुम नित इति चलेके काम काकर
'काला दे दिवना' ऐसा कहकर उसमेंमें एक टुकड़ा
निकल भिना। फिर का था। लड़कीको भीय भोगनेको
चदन पन्ट आई, और इसके दूसरे ही दिन वह खती
हो गई। (मय) काय कोनिक कनिदर भी बिभीकी
बुधने कपत नहीं हुटी है। कचो मयन विगत दपमें
'बहा दे निरहा, कचो लोके चयाम ईवर घांटेकी
देव है।

आरिहम यह क्या भयम न हो जिनका कित्ताप-
पर—जिनपर पदमेंका कुछ अमर न हो, पर पिधान ही
वेना।

आलो दिम्मान सदा मुकुटिजम—कारकेयान सदा
सोय रहते हैं।

आय सदा, आदा गया, गया सुशापी पान,
ही सुगर्ही टांटे मरे, सुगर्ही मरे अजमान—अजम-
को अजमानपदसेन कर।

आयन ही आदर नहीं, जान न सगयो हयन

ते दोनों भूतों मरें, पण्डित और गृहस्थ-
(१) घाते समय आदर नहीं और जाते समय
कुद हाथ न लगे, तो पण्डित भूले मरते हैं। (२)

आदां नक्षत्रके प्रारम्भमें और हस्त नक्षत्रके अन्तमें
यदि वषां न हो, तो गृहस्त्री या खेती बूच जाती है।

आशाका मरे निराशाका जिये—आशामें अश-
न्तोय और निराशामें संतोय=आजाता है।

आशिकुको खुदा जर दे, नहीं कर दे जमीनके परदे—
उदारको या तो ईश्वर धन दे या उसे जमीनमें
दिया दे।

आशिकी, और मामाजीका डर—दोनों काम एक
साथ नहीं सध सकते।

करना बांधे आशिकी और स्वामाजीका डर (मागरीदार)
आसकनी गिरा कुपमें, कहा यहीं चैन है—

आससियोंपर कः। आसकनी आसली

आस पास घरसे, दिल्ली पड़ी तरसे—जिते जरू-
रत हो, उसे न मिलकर दूसरोंको कोई चीज मिले,
तय कः।

आस थिरानो यह तके, जो जीवत मर जाय—
उद्योगियोंका कहना है।

आसमानका धूका सुंहर आता है—(१) जो
यंत्रोंकी निम्ना करते हैं, उनपर कही जाती है। (२)
दुस्साहसके काममें आनी गुराई होती है।

आसमानकी चील, जमीनकी असील—
(सु- लः) आसमानमें चील और जमीनमें असीली
हुई लौंटी दोनों ही तराय हैं।

आसमान जमीनके कुलाधे मिलाने हैं—जब कोई
आसमन काम करना चाहे, तय कः।

दुगनई चर्के सः न सुकेना बिभी तरह,
एक चाकनी लुभोमें निकला न कावना। (शय)

आसमानने टाला धरनीने भेन्टा—देवास्त्री आद-
मीको पहने हैं जिनकी कोई ल्यर वेभेयसता नहीं।

आसमान पट्टे लो कदांतक थिगली लगे—
पोड़ा किमना दुभां काम धरा जाता है, उन बहुत
विगः जाय, तय नहीं खरत मरना।

आसमानमें थिगली लगाना—जो काम कोई न कर
सके, वह काम करना।

आसमानसे गिरा धनुसमें भटका—(१) जिनमें

बड़े बड़े काम किये हों और साधारण काम न कर सके, उसको क०। (२) जो बड़ी धनधामसे कामका आरंभ करे और थोड़ा ही याकी रहनेपर उसे छोड़ दे, तब भी क०। (३) जब किसी मनुष्यको किसी धनीसे पुरस्कार मिले और बीचके कारिन्दे उसे दया बैठे, तब भी कही जाती है।

आसमानसे बातें करना—इतराना। बहुत ऊँची चीजपर भी कही जाती है, जैसे उसका मकान आसमानसे बातें करता है।

आस्तीनका सांप—द्विधा हुआ दुस्मन या धरका घेरी।

आह-इ-मर्दान न ऊह-इ-जना—(फा० मु०) न मर्दान

इ

इँचा खिँचा वह फिरे, जो पराये वीचमें पड़े—किसीके भंगड़ेके बीच न पड़ना चाहिये। बीचवालेकी धरायी होती है।

इंदर राजा गरजा, महारा जोया लरजा—(मार०) बनिर्वाका कहना है, जो लाभके लिये बहुत धन जमा करके रखते हैं। यादल गरजनेसे उनको भय होता है, कि वृष्टि होगी तो धनका दाम गिर जायगा।

इंद्रजीत सन जो फछु भाषा, सो सब जन पहिले करि राखा—(तु०)—बहुत होशियार था। मोको क०, जो कहनेके पहिले काम कररखता है। इकते एक दर्ईके छाल—एकते एक पुरुष-रत्न ईश्वरकी सृष्टिमें पड़े हैं।

एक-एकसे एक-एककी बद्ध बना दिया।
दारा किरी किरीको सिकन्दर बना दिया ॥

इक तो बुद्धिया नाचनी दूजे घर भा नाति—एक तो बुद्धिया पहिलेसे ही नाचनेवाली थी, जब उसके पोता हुआ, तब वह कैसे नाचनेसे बाजु था सकती। जब खुयीपर खुयी हो, तब क०।

इक दूरर भर दीय अपाड़—एक तो ऊँट दुबला दूसरे दो अपाड़। ऊँटको बरसातमें बहुत कष्ट होता है।

इक नागिन भर पंख लगाई—जब कोई भयंकर चीज और भी भयंकर हो जाय, तब क०।

कीसी आह न औरतकीसी ऊह। दरपोक मनुष्यको क०।

आहार चूके वह गये, व्यवहार चूके वह गये। दरवार चूके वह गये, ससुरार चूके वह गये—स्पष्ट।

आहारे व्योहारे लज्जा न कारे—भोजन और लेन देनमें शर्म नहीं करनी चाहिये।

- (१) कौलों कीन नहीं मुखशाल, तजौ नेक भई महा विद्याल। लोक पखानो लग परचार, लज्जा नहिं बहार व्योहार ॥ (मध्या० लो० १० कौ)
- (२) आहारे व्यवहारिच व्यक्तलज्जासदा भवेत् (धापक)

रचि विपरीत रूप गुन भरी, गान वृत्त करि धन सन हरी। कहे उक्ति ज्यों बुध पद गाई, एक नागिन भर पंख लगाई ॥ (सामान्या)

इकरारे जुर्म इसलाहे जुर्म—(फा०) दोष स्वीकार करनेसे आधा रह जाता है।

इक लख पूत सवा लख नाती, जिस रावणके दीया न घाती—जब किसीके घुरे दिन आते हैं और नित प्रति हानि होती जाती है, तब क०। हिन्दुधर्ममें मनुष्यके मरते समय उसके हाथपर दीया रखना जाता है। रावणका इतना यज्ञ कुनवा होनेपर भी उसके मरते समय कोई न चबा था। बड़े कुनयेपर गर्व न करना चाहिये। यदि ईश्वरका कोप हो, तो सब उसके सामने ही मर जा सकते हैं।

इका, धकील, गधा, पटना शहरमें सधा—(प०) ये तीनों चीजे पटनेमें बहुत हैं।

इके चढ़के जहाँ जाय, वैसे देके धके खाय—इक की सवारीको कोई इज्जत नहीं।

इज्जतकी आधी मली, वेइज्जतकी सारी बुरी—स्पष्ट।

इतना भूँठ बोले जितना आटेमें नोन—कठ इतना बोले जितना खप सके।

इतना नफा खाओ जितना आटेमें नोन—(व्य०) बहुत नफा न खाना चाहिये।

इतनी तो कमाई नहीं जितनेका लँहगा फट
गया—(ज०) जय लाभसे हानि अधिक हो, तब क० ।

इतनी तो राई होगी जो रायतेमें पड़े—अपने
कामके लिये हमारे पास काफी चीज है ।

इतनी सी जान, गज भरकी ज़बान—जो लड़का
होकर लंबी चौड़ी बातें करे, उसको क० ।

इत्तफ़ाक़हीमें कुञ्जत है—(मु०) एकतामें ही
बल है ।

इधर फाटा उधर पलट गया—सांपकी तरह चालाक
आदमीको क० ।

इधर क़िबले-कुतब, उधर खतीजा, मूतू किधर—
(मु०) दोनों तरह मुमकिल । मुसलमान मक्के और
खतीजेकी तरफ़ मुंह करके पेशाब नहीं करते ।

इधरके रहे न उधरके रहे—जब कोई दोनों तरफ़-
से जाय, तब क० ।

नये दोनों जहासे खुदा की कसम,

न इधरके रहे न उधरके रहे । (अमानत)

इधर गिरूँ तो कुआँ, उधर गिरूँ तो खाई—जब
कोई असमंजसमें पड़ता है, तब क० । अथवा जब
कोई मनुष्य अपने ही आत्मीय जनोंके भगड़ेमें
पड़ता है और किसीसे भी बुरा नहीं बना चाहता
तब क० ।

बुराई है आज बोलनेमें न बोलनेमें भी है बुराई;

खड़ा है ऐसी निकट जगहपर इधर कुं भा है उधर है खाई ।
(बेताब)

इधर न उधर यह बला किधर—न मरे और न
भाराम हो ऐसे ही मौकेपर क० ।

इनकी नाकपर गुस्सा रखला ही रहता है—
जिसको जरासी बातमें क्रोध आ जाय, उसे क० ।

इनके चाटे रुख नहीं जमते } जो बहुत दग और
इनके चाटे रोंगटे नहीं जमते } दगावान् होते हैं,
उनको क० ।

इनको पत्थर मारे मौत नहीं—बेहयाको क० ।

इनको भी लिखो—भूलको क० ।

इस मसलपर एक कहानी इस तरह है—एक दिन
शकवर बादशाहने बीरबलसे पूछा, कि संसारमें अश्वीकी
संख्या अधिक है वा चाण्डालोंकी ? इसपर चतुर बीरबल-
ने उत्तर दिया 'धर्मावतार ! संसारमें अश्वी ही बहुत ।'

बादशाहने आश्चर्यमें आकर कहा, कि जतनक इस बात-
की प्रमाथित कर न दिखाओगे, तबतक हम इसे नहीं
मान सकते । इस बातको सिद्ध करनेके लिये बीरबल
अपने साथ एक सुंशीकी लेकर घरसे निकले और
रास्तेमें कंकड़ चुनने लगे । जो कोई उस राहसे आता
जाता था, वह बीरबलको कंकड़ उठाते देख पूछता था
'बीरबल ! यह क्या कर रहे हो ?' इसपर बीरबल अपने
सुंशीसे कहते जाते "इनको भी लिखी ।" अर्थात् इनका
भी नाम अश्वीमें लिखी, क्योंकि ये दंतल रहे हैं, कि मैं
कंकड़ उठा रहा हूँ, तौभी पूछते हैं, कि क्या करते
हो ? जब लौटकर बीरबलने बादशाहको अश्वीकी सूची
दिखाई, तो वह उनकी बुद्धिमत्ताकी प्रशंसा करने लगे ।
इन तिलों तेल नहीं निकलता—कंगूसोंपर क० ।
अर्थात् यहांसे कुछ मिलनेकी आशा नहीं है ।

कान्हर घोरीकी मिस ठानि,

सुख कुच मौड़व पर तिय जानि ।

लोग पखानो मनमें लैये,

ऐसे तिलन तेल नहिं पैये ॥

ऐसे तिलोंसे तेल नहीं निकलता अर्थात् सुख और
कुच सबनेसे वह जो रस है सो न मिलेगा ।

(बेह गोपना लो० २० कौ०)

इन दोनोंका आजकाल खूब कारूरा मिल
रहा है—दोनों एक हो रहे हैं ।

इन नयनोंका यही विशेष, वह भी देखा यह भी
देख—जब अच्छी अवस्थाके बाद बुरी अवस्था
आती है, तब ऐसा क०, अर्थात् वह सुखके दिन भी
देखे, अथ यह कष्टके दिन भी देखने पड़ते हैं ।

इन विचारोंने हींग कहां पाई, जो बगलमें लगाई—
पेते अच्छे मनुष्योंसे ऐसा दुष्कर्म कैसे हो
सकता है ।

इनशा अलजाताला, बिल्लीका मुंह काला—
जो तुच्छ बातोंके लिये लालायित हों उनको, क० ।
इनसान फया न जो दिले दिलवरमें घर करे—वह
मनुष्य ही क्या जो किसीके मनमें न घुस सके ।

कौड़ा जरासा भीर वह पत्थरमें घर करे,

इनसान क्या न जो दिले दिलवरमें घर करे—(जीक)

इनसान ही तो है—जब किसीसे भूल हो जाती है,
तब क० ।

इन्सानियत और इल्ममें बहुत फर्क है—मनुष्य-
त्व और विद्यामें बहुत अन्तर है। विद्या पढ़नेसे
आती है, पर मनुष्यत्व बिना सत्संगके नहीं प्राप्त
होता। उदा०

बादमीयत और भी है इज है कोई और चीज,

साख तोते की पढ़ाया फिर भी हैवां ही १४।

इनायते शाही किसीकी मीरास नहीं—राजाका
अनुग्रह किसीकी बर्पाती नहीं है।

इराकीपर जोर न चला, गधीके कान अमेडे—
जब बलवानपर जोर नहीं चलता और गरीबपर
गुस्ता उतारते हैं, तब क०।

इल्मका परखना लोहेके चने चयाना है—विद्वान-
की जांच करना मुमकिन है।

इल्म थोड़ा गुरूर ज्यादा—विद्या थोड़ी अहंकार
बहुत।

इल्म दर सीना ना दर सफाीना—(फा०) विद्या
हृदयमें रहती है पुस्तकमें नहीं।

इल्लत जाय धोये धाये, आदत कहां जाय—पेय
छूट जाता है, टंवे नहीं छूटती।

इत्तिदासे इन्तिहा तक—(मु०) आरम्भसे शेषतक,
तिरसे पैर तक।

इश्कके कूचेमें आशिककी हजामत होती है—
क्योंकि जहां दिल लगता है वहां सर्वस्व अर्पण
कर देता है। हजामत बनना सफाई होनेका क०।

इश्कके शौक्रीन खर्चके कोताह—जब कोई आदमी
नाम और आराम तो बहुत चाहता है पर पैसा
नहीं खर्च किया चाहता, तब क०।

इश्क छिपानेसे नहीं छिपता—प्रेम छिपाये नहीं
छिपता।

इश्क, मुश्क, खांसी खुश्क, खून खराबा छिपता
नहीं—प्रेम, कस्तूरी, खूबो खांसी और खून ये छिपा-
नेसे नहीं छिपते।

इश्कमें शाह और गुदा बराबर—प्रेममें बादशाह
और कंगाल बराबर हैं।

इश्क या करे अमीर या करे फकीर—प्रेम अमीर
या फकीर दो ही कर सकते हैं।

इश्क मजाजीसे इश्क हकीकी हासिल होती

है—मनुष्यसे प्रेम करते करते ईश्वरसे प्रेम हो जाता है।
इसका दुख दिखावे मुख—मुंह देखनेसे दुःख जान
पड़ता है।

इस कान सुनी, उस कान उड़ाई—किसीकी बात
न सुनना या उसपर ध्यान न देनेपर क०।

इसके पंटेमें दाढ़ी है—यह लड़का होनेपर भी
सयाना है।

इस घरका बाबा आदम ही निराला है—इस घर-
की सभी बातें अनोखी हैं।

इसमें भी कुछ मेद है—जस्त्र कोई बात छिपी
हुई है।

इस हाथ देना उस हाथ लेना—तत्काल फल
मिलना।

‘कलरुग नहीं कररुग है यद्य,
यहां दिगकी दे और रात ले।
का खूब सीदा नकूद है,
इस हाथ दे उस हाथ ले ॥ (नजीर)

इसलाम कुली पांडे—आपे हिन्दू और आपे
मुसलमान। जो हिन्दू होकर मुसलमान वा ईसाई
पोगाक पहिनेते हैं और कुछ चिन्ह हिन्दुओंके भी
रखते हैं, उनपर व्यङ्ग है, जैसे हैट कोट पहिने और
त्रिपुण्ड लगाये।

इसपर एक कहानी इस तरह है—एक मुसलमान
फकीरने देखा, कि मुझे केवल रोटियां ही मिलती हैं
और हिंदू ब्राह्मणोंकी पूरियां और मिठारे मिलती है,
इससे ब्राह्मण बनना अच्छा है। उसने एक पीती पहिन
ली, गलेमें अनेक डाल लिया, भायेंमें लिखक लगा लिया
और बगलमें पोथी दबायो। ऐसा भेष बना वह एक
ब्राह्मणके यहां गया, जहां ब्राह्मण भोजन ही रहा था।
वहां पंडितकार उसने कहा “पीती बिबी”, पोथी
बिबीं दर गुल कुन्नार, इसलाम कुली पांडे मनमू पूरियां
वियार।” अर्थात् मैंने पीती पहिन ली है, पोथी लेली है,
गलेमें अनेक भो डाल लिया है, और इसलामसे बदबकर
मैं पांडे कीगया हूँ, अब मेरे बाकी पूरियां लाओ।

इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं, } (तुलसी) जब
जो तर्जनि देखत मर जाहीं— } कोई किसी-
को भूटा रोब }
दियाकर डराना चाहता है, तब क०। यह बात सरमण-
जीने परशुरामजीसे कही थी, कि यहां कोई कोई-

उठते ही टांग टूटी—चदनसीव आदमीको कहते हैं, जो कोई काम करने जाय और पहिले ही उसमें विघ्न पड़े।

उठाऊका माल घटाऊमें जाय—मुफ्तमें मिला हुआ माल वा जिस मनुष्यके रहनेका ठीक ठिकाना न हो, उसका माल यों ही लुट जाता है।

देत हरख परकौया जानि, तनि बहुलावत द्विय दित मानि ।
कहे उक्ति न्यों भगत खटाक, होर घटाक माल सुटाज ॥

(श्लो० १० कौ०)

उठाऊ चूढ़ा—उस मनुष्यको कहते हैं, जिसके रहनेका कोई पक्का ठिकाना नहीं।

उठाओ मेरा मकाना, मैं घर संभालू अपना—(सु० ज०) जो नहीं विवाहिता स्त्री ससरालमें आते ही मालकिन बनना चाहे, उसे क०।

उठा थूला प्रेमका, तिनका चढ़ा अकास, तिनका तिनमें मिल गया, तिनका तिनके पास—

मृत मनुष्यकी आत्माके विषयमें क०। जब शरीरका नाश होता है तो देह पंचतत्वोंमें मिल जाती है और आत्मा जहांसे आई है वहीं चली जाती है।

उठी पैठ आठवें दिन—(व्या०) आजकी उठी हाट फिर आठ दिनपर लगेगी, इससे जो कुछ लेना हो सो आज ही ले लो। तात्पर्य यह है, कि मौकेको हाथसे न जाने देना चाहिये।

उड़ चल पंछी पीके देश—(ज०) विरहिणी स्त्री पतिके वियोगपर क०।

उड़ता गप्पा—अचानक कहींसे धोक रकम बिना परिश्रम मिल जाय, तब क०।

उड़ती उड़ती ताक चढ़ी—जब कोई अफवाह पकी हो जाती है, तब क०।

उड़ती चिड़िया परखते हैं—बुद्धिमान मनुष्यपर कही जाती है, जो आदमीका चेहरा देखकर ही मनका हाल जान जाय।

उड़तेके पर काटते हैं—ऊपर दे०। बहुत चाला आदमीको क०।

उड़द कहे मेरे माथे टीका, मो दिन व्याह न होवे नौका—हिन्दुओंके यहाँ विवाहमें उरदको बहुत जस्त पड़ती है। माथे टीका कहनेसे मत-

लव यह है, कि मैं भी एक प्रधान चीज हूँ। उरदके मुँहपर सफेद छीटा भी होता है।

उड़द फहें मैं सबसे नौका, सब पंचों मिल दीनां टीका। जब मेरे हों उड़दी बड़े, गवरू खा जाय खड़े खड़े—(ग०) स्पष्ट।

उड़दी उड़दोंकी भली, रसकी आछी खीर, लाज जो राखे पीवकी, वह भी आछी खीर—

(ग०) थड़ी उरदकी और खीर दूधकी अच्छी होती है। वह खी भी बहुत अच्छी है जो अपने स्वामीकी इज्जत रखती है।

उड़ी जात कितहू गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ—

गुड़ी चाहे किसी तरफ उड़कर क्यो न चली जाय, तौमी उसकी डोर उड़ानेवालेके हाथमें रहनेसे यह सर्वदा उसके ही अधीन रहती है। जब कोई किसीके अधीन रहे और जिस रास्ते वह चलावे उसी रास्ते चलना पड़े, तब ऐसा क०।

कहा भयो की बीछरे, नो मन तो मन साथ।

उड़ी भात कितहू गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ ॥ (विहारी)

उतको भूल न जा रे भाई, जित होती हो मार पिटाई—(उप०) जिधर मार पीट होती हो, उधर न जाना चाहिये।

उत मत गेहूँ बुधा रे चेले, जित हों थल और पाथर ढेल—(कृ०) जिस जमीनमें ढोंके और पत्थर हों, वहाँ गेहूँ न बोना चाहिये।

उत मत रो अपना दुःख जाकर, जित आवें वैरी उमड़ाकर—(उप०) स्पष्ट।

उतर गई लोई, तौ क्या करेगा कोई—जब इज्जत ही नहीं रही, तो दर किसका ? लोई=कंबल, उतर जाना=नंगे हो जाना=इज्जत उतर जाना।

उतरा कचोर सरायमें, गठकतरके पास। जस करसी तस पावसी, तू क्यो भयो उदास—स्पष्ट

उतरा घाटी, हुआ माटी—(१) जयतक अन्न गलेसे नीचे नहीं उतरता, तब तक वह भोजन कहाता है, परन्तु जब गलेसे नीचे उतरा कि मट्टी हो गया। जब कोई पदार्थ वा मनुष्य कार्य हो जानपर निरर्थक हो जाय, तब उस पदार्थ वा मनुष्यके लिये ऐसा क०। (२) मृत शरीरपर भी

कही जाती है; जहां श्रमानमें पहुँचा और मही हुआ।

उत्तर रावन इत राम दुहाई, जयति जयति जय पड़ी लड़ाई—(लसी) जब दोनों तरफका जोड़ बराबर होता है, तब क०।

उत्तरा सहना मर्दक नाम—जब मनुष्य अपने उच्च स्थानसे गिर जाता है, तब उसका प्रभाव भी घट जाता है। जो श्रमला वा गुमारता अपने काम-परसे हटा दिया गया हो और लोग उसका पहिले जसा सम्मान न करते हों, तब ऐसा क०।

(१) तिय तन भवको जोवन भूप, चरयो चइत सिंसाईरप कइ पठा गी के बुधिधाम, उतछी सहना मर्दक नाम ॥

(ली० र० की) सहना—कीतवाली, मर्दक—नामर्द; कर्दात् कीतवाली कुटनेसेही नामर्द नाम पड़ा, ऐसीही लड़कपन आते ही अथान नाम पड़ा।

(२) सदा न निभे कपट व्यवहार,
कहू दिन यदपि सुभत संसार।
भेद छव निरदा सष ठाव,
उत्तरा सहना मर्दक नाँव ॥

उतरे जीसे चीज़ जो, चाकी सार न होय।
तू ऐसा मत कीजियो, जगत बिसारे तौय—
जो चीज़ मनसे उतर जाती है, उसका कुछ मूल्य नहीं रहता। इसलिये तुम भी ऐसा काम न करो जिससे लोग तुमसे घृणा करें।

उतसे अन्धा आय है, इतसे अन्धा जाय।
अन्धेसे अन्धा मिलां, कौन बतावे राय—
स्पष्ट। जहां काम करानेवाले और करनेवाले दोनों ही उस कामको न समझते हों, तो वह काम कभी पूरा नहीं उतर सकता। ऐसी जगहपर इसका प्रयोग होता है।

उताचला सो बाचला, धीरा सो गंभीरा—
जलदबाज, आदमी पागलके तुल्य होता है और उसका काम सफल नहीं होता। जो गम्भीरता-पूर्वक धैर्यके साथ काम करता है, उसका मनोरथ अवश्य पूरा होता है।

उतारो नाथ पार मोरी नैया—संकटके समय ईश्वर-से प्रार्थना है।

उत्तम खेती मध्यम वान, नीच नौकरी भीख निदान—खेती करना सबसे अच्छा काम है, व्यापार करना मध्यम है, पराई सेवा करना बुरा काम है और भीख माँगना तो सबसे बुरा है।

उत्तम गाना मध्यम चजाना—स्पष्ट।

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीचपे होय,
पसो अपावन ठौरमें, कञ्चन तजे न कोय—
(धृन्द) स्पष्ट।

विपादयथत वाद्यममेध्यादपि काचनम्।

नौषादयथ तमां विद्यां स्त्री रत्नं दुःखजादपि ॥ (वाणश)

उत्तरकी हो इस्तरी (स्त्री), दक्खिन ब्याही जाय,
भाग लगावे जोग जय, कुछ ना पार बसाय—
जहां जिसका संयोग होता है, वहां जाना पड़ता है।
हिन्दुओंको परदेश जाना कष्टकर होता है।

उत्तर गुरु दखन माँ चेला, कैसे विद्या पढ़े
अकेला—स्पष्ट।

उत्तर जाव कि दक्खन, वही करमेंके लक्खन—
स्पष्ट।

उत्तर रहे बतावे दक्खन, चाके आछे नाहीं
लक्खन—जो रहे कहीं बतावे कहीं, उसपर क०।
भठेका विश्वास नहीं।

उत्तर हर जो बरपा होवे; काल पिछोकर जाकर
रोषे—(कृपी) यदि उत्तरमें बर्षा हो, तो अकाल पड़नेका डर नहीं रहता।

उथली रकायो फुल फुला भात, लो पञ्चो
हार्यो हाथ—कंजस आदमी वा भूजा भइया दिसाने-
वालोंपर क०।

उथले कहिके गहिरें यौरें—जो किसीको धोखा दे
सहज बताकर कठिन काममें फंसा दे, उसपर क०।

उदधि पिता तरु चन्द्रको, धोय न सकयो फलङ्ग-
(धृन्द) किसीके दोषको कोई सामर्थ्यवान पुरुष
भी नहीं छिपा सकता।

उदधि रहै मर्यादमें, वही उलटि नद नीर—
(धृन्द) जो गम्भीर है, वह अपनी मर्यादा नहीं
छोड़ता, परन्तु ओछा इतराता फिस्ता है।

उदर निमिच्छं बहु रूप वेपा—(सं०) पेटके लिये
आदमी बहुत तरहके स्वांग रचता है।

उदासीन धन, धाम न जाया—जो. त्यागी हैं, वे धन, घर और सीसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते। उद्यम किये दिल्हूर भागे—उद्योग करनेसे दरिद्रता जाती रहती है।

उद्योगिन पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी—(सं०) उद्योगी पुरुषोंके पास लक्ष्मी सदा उपस्थित रहती है।

उधली बहू धलेडे सांप दिखावे—(ज०) चंचल बहू छप्परमें सांप दिखाती है, अर्थात् बहाना करके घरसे बाहर निकलना चाहती है। जो कटा बहाना करके अपना मतलब साधा चाहे, उसे क०।

उधारका खाना और फूसका तापना बराबर है—जैसे फूसकी आग ज्यादा देरतक नहीं ठहर सकती, वैसेही उधार लेकर खाना भी अधिक दिनोंतक नहीं चल सकता।

उधारका खाना कोई नहीं भूलता—स्पन्द। (अश्लीलताके कारण इस कहावतका कुछ अंश छोड़ दिया गया है।)

उधार काढि व्ययहार चलावे, छप्पर डारै तारो। सारके संग यहिनी पठवे, तीनउका मुंह कारो—(घाय) स्पन्द।

उधार छाये बैठे हैं—तैयार बैठे हैं।

उधार दिया गाहक खोया—(व्य०) जिल ग्राहकको माल उधार दिया जाता है, वह देनेके उरसे जल्दी नहीं आता।

उधार देना लड़ाई मोल लेना है } (व्य०) जब
उधार दीजै दुश्मन कीजै, } तुम अपना
गोगे सभी बिगाड़ होगा। } पावना माँ-

उधार घड़ी हत्या है—(व्य०) किल्लीका देनदार होना बहुत बुरा है।

उधियाइल सनुभा पितरनके दान—(पू०) जो सत्त उड़ गया वा नष्ट हो गया, वह पितरोंके लिये समझा गया। जब कोई किल्लीको पेसी बीज देकर पृहसान किया चाहे जो अपने काममें न आवे, तब क०।

नके पेशावमें चिराग जलता है—प्रतिष्ठित और दबाववाले मनुष्योंको क०।

उन्नीस बीसका तो फर्क होता ही है—(व्य०) संसारमें दो चीजें बिलकुल एकसी नहीं होतीं, कुछ न कुछ फर्क रहता ही है।

उपजहिं एक सँग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं—(तुलसी) कमल और जोंक दोनों ही एक साथ जलमें पैदा होते हैं, परन्तु अपने अपने गुण और दोषके कारण वे भिन्न भिन्न हो जाते हैं। इसी तरह सभी मनुष्योंको ईश्वरने उत्पन्न किया है, लेकिन अपने अपने गुण और दोषकी वजहसे वे भले बुरे गिने जाते हैं। दो सगे भाई जब विपरीत आचरणके होते हैं, तब उनपर क०।

यदपि सधीदर होय तव, प्रकृति औरकी भीर।

विष गारै न्याने सुधा, उपजै एकहि ठौर ॥ (इन्द्र)

उपले थापती आइयां, हाथ पोंछै दरियाइयां—(पं०) जब कोई गरीब घरकी लड़की धनवानके यहाँ व्याही जाय और अपनी पूर्व अवस्थाको भूल जाय, तब ऐसा कहते हैं। दरियाई कनावेजकी तरहका रेशमी कपड़ा होता है, जो पंजाबमें तैयार होता है।

उपास भलाकी पतोहका जूठ—दोनों ही बुरे हैं। कोई पहिलेको और कोई दूसरेको कुछ अच्छा समझता है।

उमरा जो कहे रात तो हम चाँद दिवा दे—सुयामद्री आदमीको क०।

उमा दारु योपितकी नाई, सबहिं नचावत राम गुसाई—(तुल०) ईश्वर कष्टपुतलीकी तरह सबको नचाता रहता है।

उरभेसे सुरभे भले, जो प्रभु राखे टेक—स्पन्द।

उर वैजन्ती माल सुमिरनी श्यामकी, भोजन दूनो जून कृपा हो रामकी, साधु सन्तका सङ्ग तीर्थका डोलना, इतना दे करतार तो फिर क्या बोलना—वैष्णव चाहते हैं।

उलभ जायगा तो सुलभ ही रहेगा—(१) व्याह हो जायगा तो सम्हल जायगा। (२) किल्ली काममें लग जायगा तो छहर जायगा। आबारा आदमीको क०।

उलभना आसान सुलभना मुश्किल—किसी कगड़े में पड़ जाना सहज है परन्तु उसे निपटाके साफ निकल आना मुश्किल है।

उल्टा चोर कोतवाले डाँटे—जब कोई मनुष्य अपराध करके उल्टे उसी मनुष्यको फिटक फिटककर यातें कहे जिसका सुकसान हुआ हो, तब क०।

खलि सशय कबू कचो न बाल, सौ तुम्ह रुचि रही ही चाल।
रसिक नाम काँचेकी भाँड़े, खलि चोर कोतवाले के जाँड़े।

(मान। लो० १० कौ०)

उल्टा चोर वैकुण्ठे जाय—जब दोषी होकर भी प्रतिष्ठाको प्राप्त हो, तब क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है—किसी चोरने फडिला पाकर एक स्त्रीको लूटा। जब उसने उसकी घरकी सभी चीजों से खों, तब उसके गहने भी बदनाम उतार लिये। एक छद्म उसको सँगलोंमें फँस गया था, चोरने बहुत जोर किया, पर वह न चतरा। इसपर स्त्री बोली, कि तूने सब चीजें तो ले खों, यदि एक छद्म न लेगा तो क्या होगा। यह सुनकर चोर बोला, कि इस एक कल्ले से मैं चार साधुओंको खिलाऊँगा। उसकी ऐसी साधुचोर भाँति देख साक्षात् विष भगवान वहाँ प्रगट हुए चोर उस चोरकी सदृश मैकुण्ठ से गयी।

उल्टा नाम जपत जग जाना, वाल्मीक भये ब्रह्म समाना—(तुल०) रामका नाम उल्टा चाहे सीधा जिस तरहसे लिया जाय, उससे मुक्ति ही होती है। वाल्मीक रामके बदले मरा मरा कहते सिद्ध हो गये थे, यह कथा सबको विदित है।

उल्टी अंतही गलेमें भाई—गये थे छलकने उल्टे बलक गये।

उल्टी खोपड़ी भन्धा ज्ञान—(१) फकीरोंका कहना है। तात्पर्य यह है, कि सिर नीचा करनेसे (नम्र होनेसे) गुप्त ज्ञान प्राप्त होता है। (२) जिस आदमीको कहा जाय कुछ और समझे कुछ, उसे भी क०।

उल्टी गंगा पहाड़को चली—कोई असम्भव घटना हो, तब क०।

उल्टी गंगा बहाना—जो काम तुम्हें दूसरेके साथ करना चाहिये, वही काम यदि दूसरा तुम्हारे साथ करे, तब क०।

उल्टी टांगे गले पड़ी—देखो 'उल्टी थंठड़ी'।

उल्टी माला फेरना—किसीको धाप देना या किसीका बुरा चाहना।

उल्टी सैफरी पढ़ना—(मु०) ऊपर दे०। इसमें एक गंगी तलवार खड़ी की जाती है और जिससे घनुता हो उसका नाम लेकर तथा कुछ पढ़कर उसपर फूँकते हैं।

उल्टे छुरसे मूड़ना—गानेपर वा आसामी उतारनेपर क०।

उल्टे बांस बरेलीको—(१) जब कोई विपरीत काम किया जाय, तब क०। बरेलीके चारों तरफ बांस बहुत पदा होता है। इसलिये उसका नाम बांस-बरेली पड़ा है। वहाँसे आसपासके दिशाओंमें बांस चलान होता है। दूसरी जगहसे बांस वहाँ भेजना मूल्यता है। (२) बरेली का बड़े से उस लम्बी सक्कीको कहते हैं जो छप्पर छानेके लिये सबसे ऊपर दी जाती है। उसीपरसे दलयां बांस दोनों तरफ बिछाये जाते हैं। बड़े सेपर बांस उल्टे रखे जाते हैं अर्थात्, बांसका मोटा भाग ऊपर और पतला नीचे किया जाता है।

उल्लूकी दुम फाखुता—मूर्खको क०। जहाँ बेजोड़ काम हो, वहाँ क०।

उल्लू खिलाना—(मु० ज०) अपने वयमें फर लेना। यहाँकी स्त्रियां, विशेषकर मुसलमान, ऐसा समझती हैं, कि जो उल्लूका मांस खाता है, वह स्त्रीके वयमें हो जाता है।

'जोदने उसकी उसकी छे छे खिला दिया।

छे उस इरामखोरको उल्लू बना दिया।' (अफ़र)

उघासी यमका संदेश—जम्हाई आना अच्छा नहीं है।

एक भनीरकी जब जम्हाई जाती थी, तो उसके हुआचन घुटकी बजाते थे। एक बीबेजी भी सुवाचनोंमें गये भरती हुए। उन्होंने सबसे पूछा, कि जम्हाई जानेपर तुम भीग घुटकी क्यों बजाते हो ? सुवाचनेने कहा, कि जम्हाई यमका संदेश है अर्थात् जब यमके दूत खीने आते हैं, तब जम्हाई जाती है। उनको डरानेके लिये हम भीग घुटकी बजाते हैं। दूसरे दिन जब उस भनीर

को जम्हाई पायी, तो चौबिजी उसकी हातीपर चढ़ बैठे और उसकी सुँहपर सोटा रखकर बोले, कि चुटकी बजाइने से ये सारे यमके दूत नाहिं भाँगे, याते मैं इनकी सोटाहीं खबर लेऊँगे।

उसकी टाँगे उसीके गलेमें—जो अपनी ही करतूतसे विपदमें फँसे, उसे क०।

उसकी तूती बोल रही है—जिस मनुष्यकी खब बढ़ती हो या कारवार खूब चलता हो, उसे क०।

उस कूकरसे बचकर रहे, जाको जगत् फटखना कहे—(उप०) जिसे सब कोई घुरा कहते हों, उससे बचकर रहे।

उसके कानपै जू नहीं रेंगती—वह किसीका कहना नहीं सुनता।

उसके भाग बड़े अलबेले, जो दौलतमें खावे खेले—जो धनवानके घर पैदा होते हैं, वे बड़े भाग्यवान हैं।

उसको सीख न दो कमी, जो हो कट्टर नीच, लोह मेख नाहीं धंसे, कबहूँ पाथर बीच—(उप०) स्पष्ट।

उस जातकपर प्यार जताओ, मातपिता बिन जिसको पाओ—(उप०) स्पष्ट।

उस जातकसे करो न यारी, जिसकी माता हो कलहारी—(उप०) स्पष्ट।

उस दिन भूलें चौकड़ी, बली, नयी और पीर, लेखा लेवे जिस दिना, कादर पाक कदीर—

(सु०) जिस समय ईश्वर विचार करने बैठेगा, उस समय किसीकी भी नहीं चलेगी।

उस नरको ना सीख सुहावे, नेह फंदमें जो फंस जावे—स्पष्ट।

उस नरसे तुम मिलो न कोई, जांको देखो कपटी धोई—स्पष्ट।

उस पुखवाका नाहिं भरोसा, जो ले चाँजु दिखावे ठोसा—जो लेके दे नहीं, उसका विश्वास मत करो।

उस बस्तीमें तू कमी, ना कीजो विश्राम, जो हो नामी देशमें, ठग चोरनका ग्राम—जहां ठग और चोर रहते हों, वहां न ठहरना चाहिये।

उस बूँदसे भेंट नहीं—जब कोई मनुष्य समयपर सामान्य बातके लिये चक जाय और पीछेसे अपनी भूल छिपानेके लिये अनेक उपाय करे, तब क०।

इस कहावतकी उत्पत्ति इस कहानीसे है। एक गंधो बहुत सा इत ले कर किसी राजाके पास बेचने गया।

इस दिखाते समय उसकी एक बूँद फर्गपर गिर पड़ी। राजाने उसे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

राजाने उससे चट उँगलीसे पीक कर घूँघा और भूँहोमें खगा लिया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया। राजाका भोजन देख गंधो मुस्कराके रह गया।

ऊँ

ऊँघतेको ठेलतेका बहाना--दूसरेका जरासा दोष देखकर अपना सब दोष उसके सिर मड़ देनेपर क० ।

ऊँघनेते तो गिरा, पर बहाना दूसरेको धक्का देनेका लगा दिया ।

ऊँघ निवास नीच करती, देख नसकहिं पराइ विभूती--(हुलसी) हुप्योको क० ।

ऊँघ नीचमें बोई फपारी, जो उपजी सो भई हमारी--जो थोड़ी उपजेगी सो ही मिलेगी । बेकामदे काम करनेपर सफलता नहीं होती ।

ऊँघ बढ़ेही खोखर बांस, ऋण खेलौं वारह मास (पू०) वारहों महीने उधार लेकर खाया थोथे बांसकी यह डीके हुल्य है, जो जल्दी टट जाती है ।

ऊँघी दूकानको फीकी मिठाई } जहाँ खाली
ऊँघी दूकान फीका पकवान } दिवावदी काम
हो, वहाँ क० ।

कहा ठीक है यह मकू खा किचोका ।

कि दूकान ऊँघी है पकवान फीका ॥

ऊँघे चढके देखा, तो घर घर येही लेखा--सब घरोंमें यही हाल है ।

ऊँघ ऊँघ किदारा गाथें--जय एक प्रकृतिके दो वा अधिक मनुष्य मिल जाते हैं तो बहुत खुशी मनाते हैं । दो भूख एक राय होकर अपना ही राग अलापें, तब क० ।

सुकिया सुन्दरि सोनहिं मीत, चति छपपसो चतिस मीत ।
सोग छति सांघो दरसावै, ऊँघहिं ऊँघ किदारा गाथे ॥
(पृष्ठ १०० र० कौ०) ऊँघ ऊँघ मिलके जै से किदारा राम गाथें ॥

ऊँघका पाद न आसमानका न ज़मीनका--
निक्रममे आदमीके अघरे काम तथा व्यर्थकी बात-पर क० ।

छती न जिहिं हरि भक्ति, नहिं, लये विपयके स्वांद ।
यो नहिं जिमि आकाशको, भयो ऊँघको पाद ।
(नागरीदास)

ऊँघका मुँह न जाने किधर उठे--उदरइ आदमी न जाने क्या कर बैठे ।

ऊँघ किस करवट वैटे } न जाने क्या फसला
ऊँघ किस फल वैठता है } हो । जब दो मनुष्यों

में विवाद होता है और किसकी जीत होगी यह जाननेके लिये लोग उत्सुक होते हैं, तब क० ।

इसपर एक कहानी इस तरह है--किची कुम्हार और घसियारने एक ऊँघ किराये किया । एक तरफ कुम्हार के बरतन रखले गये और दूसरी तरफ घसियारकी घास । जब ऊँघ घास खाने लगा, तब कुम्हार खुश हुआ और कहने लगा, कि मेरा यह कुछ तुक्यान नहीं कर सकता है । इसपर घसियारने कहा, देखिये ऊँघ किस करवट बैठता है । जब ठिकानेपर पहुँचे, तब ऊँघ छस करवट बैठ गया जिधर कुम्हारके बरतन थे, जिससे वे सबके सब चूर हो गये ।

ऊँघकी चोरी और भुके भुके--बड़े काम छिपकर नहीं होते ।

ऊँघकी चोरी सिरपर खेलना--जोखिमका काम है; क्योंकि इतना बड़ा जानवर छिपाये नहीं छिप सकता ।

ऊँघकी पकड़ कुत्तेकी भ्रष्ट--ईश्वर दोनोंसे पचाये; क्योंकि दोनों ही भ्रष्ट हैं ।

ऊँघकी घरसातमें खराबी--दे० "एक द घर....."

ऊँघके ऊँघ ही रहे--ज्योंकिंत्यों घने रहे, अर्थात् कुछ भी न सीखे । मूर्खको क० ।

पर काज करि दुल सई, सेत न हरि रस घूटे ।

भार घडीतत श्रीको, भाप ऊँघके ऊँघ । (नागरीदास)

ऊँघके गलेमें थिल्ली--किसी काममें ऐसा झड़गा लगा देना जिसमें वह काम न हो सके ।

इस कहानीका निकास इस कहानीसे है--एक समय किची बादसोका ऊँघ खी गया । उसने प्रतिज्ञा की, कि यदि ऊँघ मिल जाय, तो उसे चार पैसोंमें बेच डालूंगा । जब ऊँघ मिल गया, तब उस धूतने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेके बहानेसे ऊँघके गलेमें एक थिल्ली बांध दी । उसने थिल्लीका दाम लतना ही रक्का श्रितना उस ऊँघ और थिल्ली दोनोंके दाम मिथाकर छोड़े थे । अब यह यह कहना किरता था, कि चार पैसोंमें ऊँघ खरी-दनेवाले को थिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी । जब इस बात पर कोई ऊँघ खरीदनेपर राजी न हुआ, तब उसका ऊँघ छवीके पास रह गया और उसकी बात भी रह गई ।

ऊँघके मुँहमें जीरा--बहुत खानेवालेको थोड़ीसी चीज दी जाय, तब क० ।

दान दीन कइ दौज, धनिहि दिये धन हीज ।
 समझइ ती गति धीरा, "ऊँटके मुं ङ मँ जीरा ॥"
 (ली० ६०)

ऊँटको किसने छप्पर छाये है—गरीबके धाराम-
 का कोई ब्याल नहीं करता।

ऊँटको दगते देख मेड़कीने भी टांग फँलाई—
 जब कोई छोटा आदमी बड़े का अनुकरण करे, तब क०।

ऊँट गये सींग मांगने, कान भी खो आये—
 जब किसी मनुष्यको कुछ मिलता हो और वह उतने-
 से संतुष्ट न हो और ज्यादा मांगे, फिर उसे वह भी
 न मिले, तब क०। ऊँटके कान उसके शरीरकी
 सुलनामें बहुत छोट होते हैं।

ऊँट घोड़े वहे जाय, गद्दा फहे कितना पानी—
 जब किसी कामको सामर्थ्यवान् पुरुष भी न कर
 सके, उसे एक असमर्थ मनुष्य करनेका साहस करे,
 तब क०।

ऊँट चढ़के घूँट मांगे—जो असम्भव काम किया
 चाहे, उसे क०। ऊँट बहुत ऊँचा होता है और
 घूँट वा चनेका गाछ बहुत नीचा होता है।

ऊँट चढ़े कुत्ता काटे—जब कोई मनुष्य अपनेको
 विपत्तिले सब प्रकारसे घचाता रहे, पर फिर भी उस-
 पर विपत्ति पड़े, तब क०।

(१) भा विधिना प्रतिकूल जब,

तब ऊँट चढ़े पर झूकर काटत।

(२) जापर हरि कइ कतइ रिसाही,

साहि निरापद थल कइ गही।

हुधिल हास सकल विधि घाटे,

"ऊँट चढ़े पर झूकर काटे" ॥

ऊँट जबतक पहाड़के नीचे नहीं जाता तब ही
 तक जानता है "मुझसे ऊँचा कोई नहीं"—
 जो अहंकारी मनुष्य अपनेसे ज्यादा किसीको न
 समझता हो, उसपर क०।

ऊँट जब भागे तब पच्छिमको—सभीको अपना घर
 प्यारा है। राजस्थान और अरबकी मरुभूमि जो
 ऊँटका निवासस्थान है पश्चिमकी ही ओर पड़ती

ऊँट डूबे खघर थाह ले } जो काम बड़े बड़ों
 ऊँट डूबे मेड़की थाह ले } न हो सके, उसे तु
 फरे, तब क०। } मनुष्य करनेका साह

ऊँट डूल्हा गधा पुरोहित—जब किसी नीच मनुष्य
 की प्रशंसा पैसाही कोई मनुष्य करता है, तब क०

ऊँट घराता हो लड़ता है—ऊँट जब लाड़ा जाता
 तब घराता रहता है। जब मनुष्य काम न किया च
 और उससे जबरजस्ती काम कराया जाय, तब क०
 काम करनेकी इच्छा न रहनेसे उसके मारे काम न
 करता जाता है और बड़बड़ाता भी जाता है।

ऊँट ब्रूल बलानेसे लड़ता है—ऊँट जब लड़ता
 तब बलबलानेसे लड़ता है। जहाँ लड़ाई होती है वहाँ घो
 गुल होता है।

ऊँट यहा जाय गद्दा थाह ले—जो अनुचित साह
 करता है, उसपर क०।

ऊँट बिलाई ले गई, हांजी हांजी कहना—
 खुरखुराती कहना। जब एक बड़ा आदमी कु
 असम्भव बात कहे और कोई मनुष्य खुशामदवा
 उसीकी सी कहने लगे, तब क०। जब बड़े आदमी
 ने कहा, कि ऊँटको बिल्ली उठा लेगई जो बिलकु
 असम्भव है, तब खुशामदनीने जवाब दिया, "हाँ, मैं
 भी देखा था।" जहाँ अपनी इच्छाके प्रतिफल सब
 का साथ देनेके लिये कोई काम किया जाय, वह
 भी क०।

ऊँट कहे सन जाटनी, यधी गांभमें रहना।

ऊँट बिलैया ले गई, हांजी हांजी कहना ॥

ऊँट बुझ्दा हुआ, पर मूतना न आया—
 जिस मनुष्यकी उम्र तो बहुत हो जाय, पर उसे बुद्धि
 कुछ भी न हो, उसे क०।

ऊँट मक्कोको भागता है—मक्का पश्चिमकी तरफ है।
 देखो, 'ऊँट जब भागे तब पश्चिमको।'

ऊँट मक्कीको भी हांकाता है—शत्रु चाहे कैसा
 ही तुच्छ क्यों न हो, उसे पास न आने दे।

ऊँट मरा कपड़ेके सिर—जब किसी सौदागरका
 ऊँट मरता है, तब उसका दाम वह अपने मालपर

ऊँट रे ऊँट, तेरी कौन सी कल सीधी—
जिस मनुष्यमें किसी तरहकी भी भलाई न हो,
उसको क० । वेडौल आदमीपर भी क० ।

ऊँटसा कूद तो बढ़ा लिया पर शऊर ज़रा भी
नहीं—स्पष्ट ।

ऊधसे गंडेरी प्यारी, गुड़से प्यारा गांड़ा ।
मा बहिनसे जोरू प्यारी, जिससे होय गुज़ारा—
जिस चीजसे अपना मतलब निकले, वही अच्छी
लगती है ।

ऊजड़ खेड़ा, नाव न वेड़ा—जिस ऊजड़ गाँवमें न
नाव हो और न वेड़ा ही हो, कोरा नाम ही नाम हो,
उसे क० । इसी मसलको लोग अपभ्रंश रूपमें 'ऊजड़
खेड़ा नाम निवेड़ा' कहते हैं ।

ऊजड़ गाँवमें मुरार महतो—उजाड़ गाँवमें कोल्हू
ही सरदार हैं, बहुत भारी होनेके कारण यह दूसरी
जगह जल्दी नहीं जा सकता है ।

ऊजड़में तो गुजर नाचे, ढाक देख बैरागी !
खीर देखके चामन नाचे, तन मन होगया राजी
अर्थ स्पष्ट है । गुजर एक जाति है—जिसका काम
गोचारण और गोपालन है । ढाक एक पवित्र घृत
है और ब्राह्मणोंकी गिरान्न-प्रियता प्रसिद्ध ही है ।

ऊजड़ हो घर सासका, घैर करे हर घर ।
पीहर घर सूखस बत्ते, जब लग है संसार ॥

(ज०) इस देशमें सास बहुओंमें प्रायः अगवन्
रहती है; इसीसे खियोंको पीहरमें रहना अच्छा
लगता है ।

ऊतके नित्यानवे, वारह पंजे साठ—मूर्खोंपर कही
जाती है, जो हिसाब कुछ नहीं समझते । उनके सेरे
नित्यानवे और साठ एकसे हैं ।

ऊतर पातर, मैं मियाँ तू चाकर—लड़के खेलमें जय
बढ़ा लुका देते हैं, तब क० ।

ऊथोका लेन न माथोका देन—स्वाधीन मनुष्य
कहता है, जिसे किसीका देना लेना नहीं है ।

ऊथो तुम्हें धारिका जाना—आखिर तुम्हें यह
काम करना ही है ।

ऊथो बनिआयेकी बात—ऐसे मनुष्यके विषयमें
कही जाती है, जिसे आयातीत लाभ होता है ।

मोहि मोहि हरि मधुर भार्क ।

मिनि कृपना मोहि ओग पडाई ॥

लोग उक्ति न्यौ जन विख्यात ।

ऊथो बनि आयेकी बात ॥

(भोपित पतिका । लो० र० कौ०)

ऊपरका घड़ भाई, और नीचेका अल खुदाई—
कपटी मनुष्यको कहते हैं जो ऊपरसे भाईके जैसा
स्नेह दिखाता है, पर भीतर उसके क्या है, ईश्वर
जानते हैं ।

ऊपर गोरे भीतर काले—ऊ० दे० ।

ऊपरसे राम राम, भीतरसे फसाईका काम—
ऊ० दे० ।

ऊसर खेतमें केसर—नालायक, पिताका लायक
लड़का ।

ऊसर घरसे तृण नहीं जामे—ऊसर जमीनमें वषां
होनेपर भी घास नहीं उगती । मूर्खको उपदेश देनेपर
भी कुछ असर नहीं होता ।

ए

एक अंडा वह भी गंदा—जिसका एक ही लड़का हो
और वह भी निकम्मा हो, तब क० ।

एक अकेला, दोका मेला—स्पष्ट ।

एक अकेला, दोसे ग्यारह—जब दो आदमी मिल
जाय, तब ग्यारहका काम करते हैं ।

एक अनार, सौ धीमार—एक काम खाली होनेपर
सौ उम्मेदवार पड़े हो जाय, तब कही जाती है ।

एक अस्तामी सौ अरजियां—ऊ० दे० ।

एक अहीरकी एकी गाय, ना लागे तो छुट्टी
जाय—जिस मनुष्यके एक ही लड़का हो और जिस
दिन वह कुछ उपार्जन कर न सके, उस दिन भूषा
रहना पड़े, ऐसे मौकेपर क० ।

एक अहारी सदा ब्रती, एक नारी सदा यती—
स्पष्ट ।

एक आँव फूटती है, तो दूसरीपर हाथ रखते
हैं—कहीं दूसरी भी नहीं फट जाय, इसलिये बचते हैं ।

एक आँखमें लहर बहर, एक आँखमें खुदाका कहर—कानेको क० ।

एक आँखसे रोवे, एक आँखसे हँसे—चालाक आदमीको क० । रंज और खुशी एक साथ होनेपर भी क० ।

एक आमकी दो फाँके—जब दोनों एकते ही होते हैं, तब क० ।

एक आवेके वरतन हैं—एकही कुनवेके हैं । एक सी चीजोंपर भी क० ।

एक इतवारके व्रतसे जन्मका कोढ़ नहीं जाता—थोड़ेसे उद्यमसे जन्मभरकी दरिद्रता नहीं जाती । एक दफे दवा खानेसे पुराना रोग नहीं जाता ।

एक ओर चार बट्टे एक ओर चातुरी—स्पष्ट ।

एक और एक ग्यारह होते हैं—एक जीके दो आदमी मिल जायँ तो वे ग्यारहका काम करते हैं । संघमें बड़ी शक्ति है । (११) ग्यारहसे भी मतलब है ।

एक करे सब लाजै—जब घरका एक आदमी बुरा काम करता है, तो सबको नीचा देखना पड़ता है ।

एक कहो न दस सुनो—न किसीको एक गाली दोगे, न यह तुम्हें दस गाली देगा ।

एकका तीते तीनों तीत—(भो०) एक चीज कड़वी होनेसे तीनों कड़वी हो जाती हैं । बुरेकी संगत करनेसे बुरा कहलाता है ।

एक कान बहरा फरो, एक कान गूँगा—उस असमर्थ मनुष्यसे कही जाती है जो किसीसे अपनी बुराई छुनकर उससे बदला न ले सके ।

एक कान सुनी, दूसरे कान उड़ाई—जब कोई किसीकी बातपर ध्यान न दे, तब क० ।

एकका मुँह शकरसे भरा जाता है, सौका मुँह खाकसे भी नहीं भरा जाता—जब दाताकी इच्छा एकको देनेकी हो और लेनेवाले सौ आ जायँ, तब क० ।

एककी दारू दो, दोकी दारू चार—कैसा ही मनुष्य मजबूत क्यों न हो, दोकी बराबरी नहीं कर सकता, न दो चारकी कर सकते हैं ।

एककी सैर, दोका तमाशा, तीनका मेला,

सफरमें बहुत आदमियोंका संग करना अच्छा नहीं, सभी अपने अपने मनकी किया चाहते हैं, जिससे प्रायः उनमें झगडा हो जाता करता है ।

एककी सैर, दोका तमाशा, तीनकी फिट फिट, चारका स्यापा—ज० दे० ।

एकके दूनेसे सौके सवाये भले—(व्य०) थोड़ा मुनाफा करनेसे माल बहुत बिकता है और बरकत होती है । थोड़े व्याजपर खया लगानेसे खया बचनेका डर नहीं रहता ।

एकको दे है कतबये आली, एकको दे है खुरपा जाली—ईश्वर अपने इच्छानुसार किसीको धनवान करता है और किसीको कंगाल ।

एकको साई एकको घघाई—जब कोई मनुष्य एकको देनेकी प्रतिज्ञा करे और दूसरेको दे दे, तब क० । एकका आते वक्त आदर करे और दूसरेका जाते वक्त। संघलता और अस्थिरतावश एकको देनेकी चीज दूसरेको दे दे ।

एक कौड़ी गांठी, चूड़ा पहिरुं कि माठी—(पू० ज०) जिसकी पूंजी तो बहुत थोड़ी हो, परन्तु सभी कामोंमें ज्यादा खर्च करना चाहता हो, उसे क० ।

एक खता, दो खता, तीसरी खता मादर बखता—(मु०) एकया दो भूल भूल समझी जाती हैं, इससे अधिक भूलें तो आदर समझनी चाहिये ।

एक खाय दूध मलीदा, एक खाय भुल—अपना अपना भाग्य है, किसीको अच्छी चीज मिलती है किसीको बुरी ।

एक गरीबको मारा था तो नौ मन चरबी निकली थी—एक श्वर मनें तुम्हारे ही जैसे गरीबको मारा था, तो उससे नौ मन चरबी मिली थी । उन लोगोंसे कही जाती है, जो देनेके डरसे जान बचकर गरीब बनते हैं और बिना पीड़ा पहुँचाये रकम हाथसे जल्दी नहीं छोड़ते ।

एक गाँवमें नकटा बसे, छिनमें रोवे छिनमें हँसे—घड़ी घड़ी रंग बदलनेवालेपर क० ।

एक गुक्के बालके—एक उस्तादके घेले । जहाँ दोनों

एक घड़ीकी ना, सारे दिनका उद्धार—एक बार नहीं कर देनेसे धारधारका तगादा छूट जाता है।

एक घड़ीकी वैहयार्ड, सारे दिनका आधार—लज्जाहीन मनुष्योंसे क०। वैश्याओंके प्रति भी क०।

एक चना दो दाल—एक चनेकी दो ही दाल होती है।

एक चना बहुतेरी दाल—एक चना रहेगा तो बहुत सी दाल हो जायँगी, क्योंकि साधित चना ही बोया जाता है (१) यदि मालिक रहेगा तो लड़केवाले बहुत हो जायँगे। (२) एक साधित चना उसके बहुतेसे डुकड़ोंसे अच्छा है। बहुतेसे सिपाहियोंकी जान बचानेसे एक अफसरकी जान बचाना अच्छा है।

एक चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—अकेला धादमी कुछ कर नहीं सकता।

एक चनेकी दो दाल—एक बापके दो लड़के।

एक चुप सत्तर घला टाले—स्पष्ट।

इनसानकी लिये गो है ज्वान एक निशामत,

लिकिन है फ़ज़ू लगी है एक बंद आदत।

इनसानपर 'पाफ़ने' बंध लाती है मगर,

टलती है एक चुपसे सत्तर आफ़त ॥ (रंजूर)

एक चुप हज़ारको हराय—जो मनुष्य चुप रहता है, उससे हज़ार धोलनेवाले हार जाते हैं।

एक चुप हज़ार चुप—यदि लड़ाईमें एक भी टंडा पड़ जाय वा गम खा जाय, तो लड़ाई मिट जाती है।

एक छौनीके आंचलमें नीन, घड़ी घड़ी रुटे मनवि कौन—स्पष्ट।

एक जना घर सुरदा भेल, चार जना मिल खटिया लेल, आप आपके समी मालुक, चार उखाड़े

सुरदा हालुक—(प०) किसी घरमें एक मनुष्य भर गया। चार धादमी उसकी खटिया उठाने आये।

सुरदेको हलका करनेके लिये उन्होंने उसके घाल मूँड़ दिये, पर सुरदा हलका न हुआ।

एक जनेसे दो भले—कहाँ मुमाफ़िरीमें जाना हो, तो अकेले न जाकर किसीके साथ जाना अच्छा है।

एक जान दो काटिय—जब दो मनुष्य एक जीके हों, तब क०।

एक जान हज़ार अरमान—एक जान, और आयाय बहुत, कहाँतक पूरी हों।

एक जोरुकी जोरु, एक जोरुका खसम, एक जोरुका सीसफूल, एक जोरुकी पशम—अर्थ स्पष्ट है। स्वयं मनुष्योंको क०।

एक जोरु सारे कुनवेको घस है—एक स्त्री सारे कुनवेको संभाल सकती है। जिस घरमें एक ही स्त्री और कई पुरुष होते हैं और स्त्रीका बरिब्र अच्छा नहीं होता, वहाँपर भी क०।

एक जौकी सोलह रोटी, भगत खाय भगतानी मोटी—भगतजी तो एक जौकी सोलह रोटियां खाते हैं, और उनकी स्त्री मोटी हाँती जाती है।

एक भूठके सयूतमें सत्तर भूठ धोलने पड़ते हैं—स्पष्ट।

एक डर दो तरफ़—जब दो मनुष्य आपसमें लड़ते हैं, तब डर दोनोंको होता है। जहाँ दो पण्डित आपसमें विवाद करते हों या दो पहलवान कुती लड़ते हों या दो मनुष्योंका आपसमें मुकदमा चलता हो या दो राजाओंमें युद्ध ठना हो, वहाँपर क०।

एक डूबे तो जग समझावे, सब जग हुआ जाय—जब एक धादमी छुराहपर चले तो उसे छुराहपर ला सकते हैं, पर यदि सब डूबे हो जायँ तो उन्हें संभालना मुश्किल है।

एक तगदुरुस्ती, हज़ार न्यामत—घनते आतोगयता अच्छी है।

(१) तगदुरुस्तीकी निपट फ़ज़ूने इनाही बुकिये,

पाबद जगमें रई, तो नादग्राही बुकिये। (मज़ीर)

(२) जितने स.सुन है, सबमें, यही है स.सुन दृष्टत।

जग्राह चापदने रकडे और तगदुरुस्त ॥ (मज़ीर)

(३) जो गरबे लाख दौलते, बीमारके कने ।

और ग्यामतीके डेर सगे हों बने उने ॥

बेहतर है सुफ़ानिरीके मिषा चापदने चने।

जो तगदुरुस्त है वही इग़ा है और बने ॥ जितने स.सुन

है सबमें..... (मज़ीर)

एक तरफ़राके तीर—जब सभो एकते होते हैं, तब क०।

एक तरफ़की घात गुडसे मीठी—जबतक दूसरी तरफ़की घात न सनी जाय, तबतक जो पहले एनी है उसीपर विश्वास रहता है। जब दो मनुष्योंमें लड़ाई होती है और उनमेंसे एकको घात हमर फोरे तीसरा मनुष्य उसका पता ग्रहण करे, उसको क०।

एक पापी सारी नाचको डुबाता है—
यदि घरमें एक मनुष्य नीचा काम करे, तो घर
भरको नीचा देखना पड़ता है।

एक पाव गया उड़न पुड़न, एक पाव गया पन।

एक पाव गया घुन लपेटा, एक पाव लिया हम—
जब कोई मनुष्य उलटा सीधा समझाके हिसाबको
पूरा कर दे, तब क०।

एक पूत जनि जनियो माय, घर रहे कि बाहर
जाय—एक आदमी दोनों काम नहीं कर सकता।

एक पेड़ हरे, सगरे गाँव खाँसी—देखो, 'एक
अनार सौ धीमार' माल कम और गाहक
बहुत।

एक फूअड़ फूअड़के गई, जा कुठलासी ठाड़ी भाई
(भा०) जब किसी अनाड़ी आदमीको किसीके
पास कुछ कहनेको भेजा जाय, और वह उसके पास
जाकर टूँसा खड़ा हो जाय, और कुछ कहे न, तथा
वह भी उसका मतलब न समझ सके, तब क०।

एक वखिया मोरे पल्ले, कौन पिनाते होके चल्ले—
(पू० ज०) जो अपनी जरा सी चीजपर इतराता है,
उसे क०।

एक वणिक बिन काहधौं, लनि हैं नाहीं हाट ? —

क्या एक बनिया न होगा तो हाट न लगेगी ? जब
कोई मनुष्य अपने यहां कार्यमें किसीको बुलाने
और वह अनुनय विनय करनेपर भी मोरे मिजाजके
न आये, तब क०। कहनेका तात्पर्य यह है, कि
तुम्हारे न जानेसे भी मेरा काम छटकेगा नहीं।

एक चार योगी, दो चार भोगी, तीन चार रोगी—
योगी दिनमें एक चार और भोगी दो चार पाखाने
जाते हैं, इससे अधिक चार जाय तो उसे रोगी सम-
झना चाहिये।

एक घोटी सौ कुत्ते—देखो, 'एक अनार सौ धीमार'।

एक घोली तीन काम—बहुत चालाक आदमीके
विषयमें कही जाती है, जिससे एक कामको कहे
और तीन कर आये।

एक घोली दो घोली, मेरी नकटी संटासट घोली—
(ज०) जो निडर लड़की एक बात कहते ही, दूस-
रनाये उसे क०।

एक भवानी, कुल गाँव बन्धा, किसे किसे
आँख दें—देखो "एक अनार सौ....."

एक मछली सब जलको गदला करती है—
यदि घर या संगतमें एक मनुष्य भी बदनाम हो, तो
सबकी बदनामी हो जाती है।

सुनरो सवि उषपति रस पागी,
सकियन दीप जु खायन खागी।
नीग पखानी चित नहि धरे,
एक मछरी सब मन बिय करे ॥ (मो०२०की०)

एक मास ऋतु आगे धावै—(छ०) ऋतुका आग-
मन एक महीने पहिलेसे जाना जाता है।

एक मुंह दो घात—जो मनुष्य दो तरहकी परस्पर
विपरीत बातें कहे, उसे क०।

एक मुरगी नौ जगह हलाल नहीं होती—
(१) एक काम नौ ज़ुदी जगह नहीं हो सकता।
(२) एक आदमी एक ही समय नौ जगह काम नहीं
कर सकता।

एक मुश्किलकी, हज़ार हज़ार आसान है—
एक रोगकी सौ सौ दवायें हैं। कैसा ही मुश्किल
काम क्यों न हो, यदि जीसे किया चाहे, तो आ-
सानीसे हो सकता है।

मुश्किलें नैस कि आसान न शबद।

मई बायद कि, परेशा न शबद ॥ (शेख सादरी)

एक मेरे घर अन्ना, दूसरा खन्ना—(मु० ज०)
मेरे घर एक लौंडी तो है ही, दूसरा एक खवास भी
है। अपना बड़ा आदमीपन दिखाना अन्ना—दार्द;
खन्ना—लड़का नौकर जो अन्दर महलमें रहता है
और बाजारमें सौदा खरीदनेके लिये रफ़्ता जाता है।
तबक ६ मेरा पुराना खन्ना,

यह सब ६ खन्नाका नामा खन्ना। (रहीन)

एक में दूसरा मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई—
उस मनुष्यको कही जाती है, जिसे निमन्त्रण दिया
जाय, और वह अपने सख और भी कई आदिमि-
योंको बिना बुलाये ले जाय।

इसपर एक कहानी है, कि एक नानि किसी विवाहमें
अपने नेगका एक हिस्सा खेनेसे इनकार किया था,
और प्रथम प्रथम नामसे तीन हिस्से मांगे थे, जो यद्य-
पि उसकी मिलते थे

जब कोई मनुष्य अन्यायसे धनना हिस्सा अधिक चाहता हो, तब भी क० ।

एक स्थानमें दो तलवारें नहीं रहतीं—एककी जगह दोका अधिकार नहीं हो सकता। जहां दो मनुष्य किसी काम या धरके मालिक बनते हैं, और दोनों ही धनना धनना पूरा अधिकार चाहते हैं, वहां क० ।

एक स्थानमें दो छुरी—ऊ० दे० । जहां एक स्त्रीके

साथ दो पुत्र रहते हैं, वहां भी क० ।

अति अहुत देखी तोहि गौध,

अधि बढी एक निशि हँ पौध ।

श्रीति रीति काहेको भाई,

एकहि स्थान माहँ हँ खाड़े ॥ (कलटा । लो०२०००)

एक रती धि । नहिं रतीका—(१) जिस मनुष्यका

पानी उतर गया; ग्रह कौड़ी कामका भी नहीं, (२)

कामियोंके लिये बिना रतिके मनुष्य-जन्म घृथा

है। रति=धन, प्रतिष्ठा; रती=घृथवी या गुंजा जो

वजनमें बहुत हलकी होती है; स्त्रीसहवास ।

मानिनि मान मान मह नाहिं,

सब शोभा प्रीतम हित भाई ।

सुनो पखानो अतिही नीकी,

एक रती विनु एक रतीकी ॥

एक रोटीके दो टुकड़े—एकसे आदमियोंको या

वरावरवालोंको कही जाती है ।

एक दोर मारता है, सौ लोमड़ियां खाती हैं—

एक मनुष्य कमाता है, दस मुत्तमें खाते हैं ।

एक सिर हज़ार सौदा—जब एक आदमीपर बहुत

सा काम सौंपा गया हो, तब क० ।

एक सुहागन नी लौंडे—जब एक चीज़के कई चाहक

हों, तब क० ।

एकसे एक दोसे ग्यारह—एक अकेला ही रहता है, पर

दो एक साथ मिलनेसे ग्यारहके समान हो जाते हैं ।

एकसे दो भले—यदि याहरजाना हो, तो किसीके

साथ जाना अच्छा है ।

एकसे ले एकको दे—ईश्वर एकसे मेना है, तब

दूसरेको देना है ।

एक हम्माममें सब नंगे—(मु०) सभी एक सा काम करते हैं । जब कोई किसीके ऐसे कामकी धुराई करे, जो सभी करते हैं, तब क० ।

एक हाथ ज़िक्रपर, दूसरा हाथ फ़िक्रपर—

एक हाथसे माला जपता जाय, दूसरेसे काम करता

जाय ।

एक हाथ लेना, एक हाथ देना—(व्य०) नगद युगतान ।

का खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले ।

(नज़ीर)

एक हाथसे ताली नहीं धजती—जब दो मनुष्य

आपसमें झगडा करते हैं, तब क० । यदि दोनों

लड़ाके न हों, तो कभी लड़ाई न हो ।

(१) डिंग गुन गारि, निरखि घनग्राम ।

करी विपन देखे हिन राम ॥

कई पखानो सापु सु भाली ।

एक हाथ बाजै नहिं ताली ॥ (विदग्धा)

(२) दोक चाई मिलनको तो, मिलाप निरधार ।

कबहूँ नाहि न भाजिहँ, एक हाथसे तार ॥

एक ही लकड़ीसे सचको हाँकना—सबके साथ

एक सा व्यवहार करना । जब कोई बड़े और विद्वानका

आदर नहीं करता, और अच्छे धुरे सब मनु-

ष्योंसे एकसा बरताव करता है, तब क० ।

एक हुनर और एक ऐय सब आदमियोंमें होता है

गुण दोपसे खाली कोई नहीं ।

एक हुल आदमी, हज़ार हुल कपड़ा । लाख

हुल जेवर, करोड़ हुल नखड़ा—स्पष्ट । शानदार

जियों विशेषतः धैर्याग्रिक प्रति क० ।

बाज सखी सुभ सज्यो सिंगर, सोमित मुखदा दप चशार ।

भोग लति ज्यो जग परकास, एक गुन दप सधन गुन बास ॥

एकान्त वास्ता, भगड़ा न साँसा—एकान्तमें रह-

नेसे कुछ खटका नहीं रहता । न्यागी तथा बितक

सोग कहते हैं । छड़े मनुष्य जिन्हें किसीका साथ

पसन्द न हो, वे भी कहते हैं ।

एकादशीके घर शिवरात—भूयेंके घर भूया पास,

तब क० ।

एका बड़ी चीज़ है—एकतामें बड़ा पल है ।

चार जना चारङ्ग दिशा तें चारों कौन गदि,
चाहे जो सुसैरकी खखारें तो खखरि जाय (ठाकुर)
ए कूकर तू दूयर काही, दस घरकी आवाजाई—
(५०) किसीने कुत्तेसे पूछा, 'तू दुबला क्यों है ?'
जवाब मिला, 'पेटके लिये दस घर जाना पड़ता है,
इसीलिये।' जो मनुष्य अपने स्वार्थके लिये घर
घर दौड़ना फिर्ता है, उसकी इजाजत नहीं रहती और
वह कुत्ते के तुल्य है।

एकै साथे, सय साथे सय साथे सय जाय—
एक कामको अच्छी तरह करे, तो वह पूरा होता है
और कई काम एक साथ करे तो सभी बिगड़
जाते हैं।

ऐतवार जय जानिये जय हट्टी लीपें वानिये—
(५०) पश्चिमोत्तर देग तथा पंजायमें इतवारके दिन
जिनकी कच्ची दूकानें होती हैं, वह उसे लीपते हैं।

ऐचन छोड़ घसीटनमें पड़े—खींचने गये थे, उल्टे
आप ही घसीट गये। जय कोई आदमी एक काम
सलभाने जाय और उल्टा आप ही उसमें उलभ
जाय, तब क०।

ऐव करनेकी भी हुनर चाहिये—पापका काम कर-
नेमें भी कुशलता चाहिये। बिना बुद्धिके कोई काम
नहीं होता। जय कोई बुद्धिमान मनुष्य घुरा काम
करे, और अपने बुद्धिबलसे उसे छिपा ले, तब
अपनी चड़ाई करनेके लिये कहता है।

वू रीस जो साइबोकी करता है थार,
करते हैं तुमको बन्दरोंमें जो थमार।
लेकिन आसान नहीं है नज़ारी भी,
करनेकी ऐव भी हुनर है दरकार ॥ (रंजूर)

(२) ऐव यह है कि करो ऐव हुनर दिखलाओ।

वर्ना धां ऐव तो सब फर्दें बहर करते हैं। (हाली)

ऐ मेरे करम, जहां टटोलो वहां नरम—
जय किसी काममें नसीब साथ नहीं देता, तब क०।

ऐरे गैरे नह्यु खैरे } ऐसा मनुष्य जिसकी कर्हीं
ऐरे गैरे पचकल्याण } पद्ध न हो; उसको कहते हैं।
ऐरे गैरे फ़सल बहुतेरे } जो जातिमें हीन हो, उसे

परोके चेरों नौआके घराहिल—गुलामकी गुलामी
करना और नाईके पैर दायना। जय दुर्भाग्यवश
किसी नीचकी सेवा करनी पड़ती है, तब क०।
अत्यन्त नीच मनुष्योंको भी कहते हैं।

एवज़ मावज़ गिला, नदारद—(फा०) बदला चुका
देनेपर शिकायत न करनी चाहिये।

एहसान लीजे जशानका, ना एहसान लीजे
शाहबहानका—दुनियाका कनौड़ा हो, पर ईश्वरका
कनौड़ा न होना चाहिये, अर्थात् उनकी आज्ञाका
उलंघन न करे।

ऐ

ऐसन बुड़बक कौन है, जो खात नहीं अघाय—
(५० वा०) मूलसे मूल मनुष्य भी पेट भर जानेपर
और नहीं खाता।

ऐसन सुहाग मोरा, नित उठ होला—(५० ज०)
ऐसाही शुभ दिन हमेशा आता रहे।

ऐसा काम हमेशा कर, जिसमें न होवे कुछ
भी डर—हर काम समझकर करो।

ऐसा किया दिल गुरदा, कि रुपया किया
खुरदा—(मु०) ऐसी उदारता दिखाई कि रुपया मुना
झाला। कंजूस आदमीको क०।

ऐसा चाटा, कि धोयेका चाचा—(च०) एक दम
सफ़ाई कर दी। (१) जय कोई मनुष्य किसी धन-
वानका सब धन खा जाय और कुछ भी न छोड़े,
तब क०। (२) जय कोई मनुष्य खाते समय
धालीकी सब चीजें पोंछकर खा जाय और थाली
धोईसी जान पड़े, तब भी क०। चाचा थोछको
कहते हैं, धोयेका चाचा—धोयेसे बढ़कर, धोयेके
धोयेसे भी अधिक सफ़ेद।

ऐसा जैसे रुपयेके टके भुना लिये—जय कोई
काम सहजमें बन लिया जाय, तब कही जाती है।
रुपयेके पैसे भुना लेना बहुत सहज है।

ऐसी ऐसी छटी बल बल जाँय, नौ नौ पतरी
भटाइन खाँय—(५० ज०) ऐसीऐसी छटी रोज हुथा करें

ऐसी करना नकल, न चले किसीकी अकल--
नकल ऐसी करनी चाहिये जो असल जान पड़े।

ऐसी कही कि धोये न छूटे--ऐसी बात कहना कि
मनसे न हटे। जब कोई किसीको ऐसी लगती बात
कहे कि उसके जीमें चुभ जाय, तब क०।

ऐसी कहो न बात, कि सबका हिले हाथ ---
ऐसी बात न कहो जिसमें कोई उँगली उठाये।

ऐसी गाढ़ी पीजिये, ज्यों मोरीकी कीच।

घरके जाने मर गये, आप नदीके बीच--
भांग पीनेवालोंपर व्यंगसे कही जाती है।

ऐसी तेरे हो तले गंगा बहे है ?--(ज०) जो बहुत
अहंकार कर उसे क०।

ऐसी बहू सयानो, कि पैंचा मांगे पानी--
कंजस नई बहूपर क०। ऐसी सयानी है, कि पानी
भी उधार मांग लेती है।

ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई--जब एक
मनुष्यको दूसरेसे उकसान पहुंचता है, तब क०।

ऐसी लटकी, कि भुईंमें पटक--(ज०) ऐसी
नीचा देखा कि, जमीनमें धँस गई।

ऐसी होती कातनहारी, तो क्यों फिरनी मारी
मारी--(ज०) जो काममें सचड़ न हो उस औरतको
क०। कातनहारी--कातनेवाली।

ऐसे आदमीके दीदेमें साठीकी पीच पसा
दीजिये--जिस आदमीकी नजर घुरी हो, उसे क०--
साठीकी पीच=चावलका मांड।

ऐसे ऊत रिवाड़ो जायं, प्राटां विचें गाजर खायं--
ऐसे मनुष्यको रिवाड़ी भेज दो जो आटेके थदलेमें
गाजर खरीदे। रिवाड़ीवालोंपर व्यंग है। रिवाड़ीमें
गेहूँ बहुत पैदा होता है, इससे गायद वहांवाले
उसको कुछ कदर नहीं करते हैं।

ऐसे गये जैसे महफिलसे जूता--जब कोई चुपकेसे
चला जाय, और उसका जाना किसीको मालूम न
पड़े, तब क०।

ऐसे गये जैसे गद्देके सिरसे सांग--ज० दे०
गधेके सिरमें सांग होते ही नहीं, इसलिये उस
जगह बिल्कुल सफाई रहती है। महफिलमें जानेके

पहिले जूते बाहर उतार दिये जाते हैं, इसलिये अकू-
सर पे घोरी जाते हैं।

ऐसे चूतिया शिकारपुरमें रहते हैं--जब कोई
किसीको बेवकूफ बनाकर अपना मतलब निकालना
चाहे, तब क०। शिकारपुरके लोग किसी समय मूखें
समझे जाते थे।

ऐसे जंगलमें चावल--इसमें जरूर कुछ भेद है।
जब कोई असम्भन्न बात देखनेमें आये, तब कहते हैं।
किसी जंगलमें कबूतरोंका एक गिरोछ उड़ता हुआ
आया। मैदानमें चावल बिखरे हुए देखकर सब नीचे
उतरने लगे। एक बूढ़ा कबूतर बोला 'ऐसे जंगलमें चावल?'
इसमें कुछ धोखा है, पर और कबूतरोंने उसको बात
गर्ची मानी और सबके सब नीचे उतर पड़े। चावल
किसी बड़ेजिबेने खीर दिये थे और उसपर जाल बिछा
दिया था। जालमें सब कबूतर जालमें फँस गये। तात्पर्य
यह है, कि जब कोई असम्भन्न बात देख पड़े, तब उस-
पर विश्वास न करे और बुद्धिसे काम ले।

ऐसे जीनेसे मर जाना अच्छा--जब आदमी बहुत
सुखी होता है, तब क०।

'गुजरकी जग न हो सरत, गुजर जाला ही नै इतर है।
इई जग जिन्दगी दुयाग मर नापा ही नै इतर है ॥'
(अकबर)

ऐसे बूढ़े बैलको कौन बांध भुस देय--जब मनुष्य
बूढ़ा हो जाता है, किसी कामका नहीं रहता और
उसको खिलाना भारी पड़ जाता है, तब क०। पूरी
मसल यह है :-

'दांत किर और खर धिरे, पीठ बोध ना लेख।

रहे बूटे बैलको, कौन बांध भुस देय ॥'

ऐसे मियां रंगरेज होते तो अपनी ही दाढ़ी न
रंगते--जब कोई अपना काम न कर सके और दूसरेका
करने जाय तौनी न कर सके, तब कहते हैं। यदि
काम करने लायक होते तो अपना ही न कर लेते।

ऐसे सुहागसे रंडाया भला--जिस स्त्रीका पति
अत्याचारी हो और उसका भरण पोषण अच्छी
तरह न कर सके, या जो सदा विदेशमें रहे, उसपर क०।

ऐसे ही तुमने सोंठ बेची है--ऐसे मनुष्यको कही
जाती है जो चिना कुछ किये ही किसीसे कुछ मांगे
और ऐसे मांगे मानो उसका पावना है।

ऐसे होते कंत, तो काहे जाते अंत--यदि हमारे
कामके होते, तो दूसरी जगह क्यों जाते।

चार

चाहे भी

ए कृकर तू

(पू०) कि

जवाब मिला,

हसीलिये !

घर दौड़ना फिता

बह कुत्ते के हुल्य

एकै साथे, सब साथे

एक कामको अच्छी

श्रौर कई काम एक

जाते हैं ।

ऐ तवार जव जानिये जव

(पं०) पश्चिमोत्तर देय तथा

जिनकी कची दूकानें हांती

ऐ चन छोड़ घसीटनमें पड़े

आप ही घसीटे गये । जव

छलभाने जाय श्रौर उरटा

जाय, तव क० ।

ऐव करनेको भी हुनर चाहिये

नेमें भी कुशलता चाहिये । कि

नहीं होता । जव कोई बुद्धिमान

करे, श्रौर अपने बुद्धि-बलसे उ

अपनी वड़ाई करनेके लिये कहता है ।

तू रोस जो साहवांकी करता है वा

करते हैं तुम्हको बन्दरोमें चो गुमार

लेकिन आसान नहीं है नफाभी भी

करनेको ऐव भी हुनर है दरकार ॥ (२)

(२) ऐव यह है कि करो ऐव हुनर दिखलाओ ।

बनो या ऐव तो सब फाँदें भर करते हैं ।

ऐ मेरे करम, जहां टटोलो वहाँ नरम

जव किसी काममें नसीब साथ नहीं देता, तव क०

ऐरे गीरे नत्वू खैरे
ऐरे गीरे पचकल्यान
ऐरे गीरे फ़सल बहुतेरे

ऐसा मनुष्य जिसकी क
पूछ न हो, उसको कहते
जो जातिमें हीन हो,

भी क० । सफलियोंको भी क० ।

मसर

किसी बनिधिने एक लड़का गोद लिया। लड़का बनिधिका नहीं है, यह कहकर उसके कुटुम्बियोंने उसे ज्ञातिभ्रुत करना चाहा। निरर्थक लिये सुकृदमा राजाकी पास गया। राजाने लड़केसे कहा, "तू बनिधा न सीकर बनिधि को गोद बैठ गया, इसलिये तुम्हें मज्जा ही जाती है। नील, सली दूँ कि फाँसी?" लड़केने कहा "शौत पड़े सो काम करो।" राजाने फौसजा किया कि, यह निश्चय बनिधिका ही लड़का है, क्योंकि फाँसीके समय भी यह नफ़ी मुक़सानको भाव सोचता है। तात्पर्य यह है, कि बनिधिका लड़का सभी कामोंमें फ़ायदा देखाता है।

ओनामासी धं, मुखकी टूटी टंग—जो छोटे लड़के पढ़ते नहीं, उनको क०।

ओनामासी धं, मुख गये पतङ्ग।

पतङ्गमें लगी भंग, मुख गये भाग ॥

ओनामासी धं, घाप पड़े ना हम—ऊ० दे०।

ओसो चाटे प्यास नहीं बुझनी—देखो 'ओठके चाटे प्यास नहीं बुझती'।

(१) जो पति रस भी तर्प न बान,

कहा सो तपिहै चपपति काम।

कहे पद्मानी जग सुब दाघ,

भोसहि चाटे प्यास न जाय ॥ (लो०र०कौ०)

(२) लालचह ऐसी भवै, जामों पूरै चास।

चाटिह कहै भोसके, मिटै काङ्की प्यास ॥ (हम्)

औ

औंधा खाय लौंडा—जो कमसम्भ होता है, वही चकता है। शक्ति बाहर प्रयत्न करगा।

औंधे घड़ेका पानी, मूरखकी कही कहानी—
किसी कामकी नहीं।

औंधे मुंह विराम पाँव—उलट पुलट हो जाना।
जब कोई किसीका बुरा सोचता, है तब क०। औंधे मुंह गिरना और पाँव तले चिरामका होना ये दोनों एक तरहके धाप हैं।

औंधे मुंह दूध पीते हैं—(च०) अभी बिल्कुल बचे हैं। जो बहुत भोला भाला बनता हं, उसको क०।

औंधे मुंह शैतानका धक्का—शैतानके धक्केसे औंधे मुंह गिरता। यह भी ध्राप है। किसीके बुरे सोचनेपर ऐसा क०।

औघट चले न चौपट गिरे—न टेढ़े रास्ते चलोगे,
न नीचा देखोगे।

औंधी खोपड़ी उठती मत—बुरे आदमीका बुरा विचार होता है। मूर्खको क०।

औरकी खुटाई, अपने आगे आई—दूसरेकी बुराई करोगे, तो तुम्हारे आगे आवेगी।

औरकी फूली देखते हैं, अपना टेंटर नहीं निहाते—जो मनुष्य अपनेमें दोष होते हुए भी, दूसरेमें ऐव दुँडता है, उसपर क०।

औरकी भूक न जाने, अपनी भूक धाटा खाने—
(ज०) स्पष्ट। हमारी मनुष्यपर कही जाती है,
अर्थात् अपने लिये करें, दूसरेका ख्याल न करें।

औरकी बुराई अपने आगे आई—(१) जय कोई दूसरा मनुष्य दोष करता है और उसका फल अपनेको भुगतना पड़ता है, तब क०। (२) जो दूसरेकी बुराई करता है उसीका बुरा होता है।

औरत और कंकड़ीकी वेल जल्दी बढनी है—
स्पष्ट०।

औरत और थोड़ा रान तलेका—जो चीज अपने अधिकारमें रहे, वही अपनी है।

औरतका क्या इतवार—स्त्रीकी बातका विगवास नहीं।

विवास पाव न किमति ? नारी (मडरा०)

औरतका खसम मरद, और मरदका खसम रोज़गार—बिना रोज़गारका मरद वैसा ही है, जैसे बिना खसमकी स्त्री।

औरतकी अङ्गु गुद्दी पीछे होती हैं—औरतको पीछे ज्ञान होता है।

औरतकी ज्ञात भेचफा होती हैं—स्त्रियां अपने मतलबकी हैं।

औरतको नादारीमें जांचे—औरतकी परीक्षा गरीबीमें होती है।

औरत धर्म मित बन नारी, भापद काल पखिबे चारी।

(तुलसी)

औरतको सिर न चढ़ावे—स्त्रियोंका बहुत दुलार न करना चाहिये।

पाँचकी जूती है वृ न इसकी सिंर चटा।

खोजड़े पीटे तेरी जोरु खसम हो जायगी ॥ (राहत)

औरत मर्दका जोड़ा है—स्त्री और पुरुषका साथ है।

औरत रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे थापसे—

(१) यदि स्त्री चाहे तो अपने आप घरमें रह सकती है, नहीं तो अपने थापके सम्हाले भी नहीं रह सकती (२) यदि स्त्री पतिव्रता है, तो वह अपने थाप रहेगी, नहीं तो वह अपने सगे थापके भी साथ निकल जायगी।

औरतकी नाक न होती तो गू खार्ती—(१)

यदि दुर्गन्ध न आती तो गू भी खा लेती (२) यदि नाक कटनेका डर न रहता तो खुल खेलती। पहिले दुश्चरित्र स्त्रियोंकी नाकें काट ली जाती थीं। ऐसा कोई धुरा काम नहीं है जिसे स्त्रियां न कर सकें।

और बिनों खीर पूरी, पर्यके दिन दांत निपोरी—

जिसे सब लोग कर रहे हैं, उसे न कर अपने मनकी करना।

सब दिन चहरे खीरके दिन नहें।

और यात छोटी, सही दाल रोटी—दाल रोटी ही सब बातोंमें मुख्य है।

और मज़ाक भूल गये, मेरे पास आइयो—(सु०)

स्त्री पुरुषके प्रति कहती है। "सारी दिखगी भूल गये। जब पीटना होता है तो मुझे अपने पास बुलाते हो"।

और रंगका गिलहरा—अस्वाभाविक परिवर्तनपर क०।

औरहि लुकरी शकुन बतावे, आपुहिं कुकुरनसों चिधवावे—जो दूसरोंको उपदेश करे, किन्तु स्वयं अपने कार्योंके लिये दूसरोंसे अपनी दुर्गति करावे, उसके प्रति क०।

औलातीका पानी मंगरेपर नहीं चढ़ता—असंभव बात नहीं होती। औलाती=ओलती (छप्पर) मंगरा=छप्परके ऊपरकी मेंड़।

औपधि जाहूवी तोयं वैद्यो नारायणो हरिः— (सं०) दवाको गंगाजल और वैद्यको साक्षात् विष्णु भगवान समझना चाहिये। तात्पर्य यह है, कि बिना विश्वासके रोग आराम नहीं होता।

औसरका चूका आदमी, और डालका चूका वन्दर नहीं संभलता —स्पष्ट।

औसर चूकी डोमिनी, गावेताल वेताल—गानेवाली जव घरसे चूक जाती है, तो घेउरी होकर गाने लगती है। जव कोई मनेके उच्चोजित होनेपर अश्रद्धा काम करने लगें, तब क०।

यदि संकेत दिंग लावकी गर्दे न ब्याकुल बाध।

औसर चूकी डोमिनी, गावे ताव वेताल ॥

(अनुसंधान। खी० २० की०)

क

कंजूस मक्खीचूस—सूमको कहते हैं।

कंठी बांधे हरि मिलै, तो चंदा बांधे कुन्दा—

कंठी बांधनेसे यदि मुक्ति हो तो मैं गलेमें कुन्दा बांध लू। कुन्दा काठके बड़े टुकड़ेको कहते हैं और कंठी काठके छोटे छोटे दानोंकी बनती है। जो मनुष्य ऊपरसे तो तिलक माला धारण किये हुए हो, पर ध्यान्तरिक ईश्वर-भक्ति न रखता हो, उसपर क०। 'नीकी नीकी बात कही, हक नाहक करते दुन्दा। कंठी बांधे हरि मिलै, तो चंदा बांधे कुन्दा ॥ (५०)

कंत न पूछे बात, मेरा धना सुहागन नाम (ज०) जो मूठमूठ मालिकका विश्वास न होने दावा करता है, उसपर क०

चहे न पति नित कलह सों, तज्जं मानिनी नाम।

कन वात नहिं बूझई, धरौं सुहागिनि नाम ॥

(खी० २० की०)

कहँ काशी कश्मीर कहँ, खु रासान गुजरात।

तुलसी वहाँ तो जीवको, परालवध ले जात— प्रारब्ध मनुष्यको बड़ी बड़ी दूर ले जाती है।

ककड़ीके खोरकी गर्दन नहीं मारी जाती— सामान्य अपराधपर कड़ी सजा नहीं दी जाती।

चाहिं कडोरत। परशौर जधो,

काकरीके ह। रियतु है।

फाटे घरको

है जिसमें कुज

होत

कचहरीका दरवाजा खुला है—जाग्रो नालिय कर दो। जब कोई बहुत तगादा करनेपर भी किसीका देना न दे और थडालतका भी भय न करे, तब क०।

कचौड़ीकी घू भभीतक नहीं गई—जो नीच घादमी थोछे थोहदेपर पट्टु च जानेपर भी थपनी नीचता नहीं छोड़ता, उसपर क०।

कच्चा दूध सवने पिया है—भूल समीसे होती है। कच्चा मीत कचौरी मांगे, पूरा मांगे पूरा। नोन मिर्च तो कायध मांगे, वामन मांगे वूरा—स्पष्ट।

कच्ची कली कचनारकी, तोड़त मन पछिताय—क्योंकि यह किसी काममें नहीं आती। जब मनुष्यकी इच्छा भी पूरी न हो और चीज भी नष्ट हो जाय, तब क०।

कच्ची पेंदी दस्तरख्वानका ज़रार—(मु०) जिस बरतनकी पेंदीमें छेद रहता है उससे दस्तरख्वान (टेबुलकी चादर) खराब हो जाता है। जब लड़का कच्ची उमरमें विगड़ जाता है, तब पीछे उससे कुछ भी उपकार नहीं होता।

कच्ची शीशी मत भरों, जिसमें पड़ी लकोर। वालेपनकी आशकी, गले पड़ी ज़ंजीर—अर्थ स्पष्ट है। लड़कपनसे ही भोग विलासमें लगा रहना मानो जीवनको नष्ट करना है।

कच्चे बाँसको जिधरको नवाओ नव जाय, पक्का कमी न टेढ़ा हो—वालकोंकी बुद्धि कोमल होती है, उस समय उन्हें जैसी शिक्षा दी जाय, वैसी मान लेते हैं। बड़ी उमर होनेपर आदत नहीं बदलती।

कज़ाके आगे इक्कीम अहमक—(मु०) मौतके आगे वैद्यकी नहीं चलती।

कज़ाके तीरको ढालकी हाजत नहीं—क्योंकि यह किसीके रोके रूक नहीं सकती।

कटेगा काऊका, सीखेगा नाऊका
कटेगा यटाऊका, सीखेगा नाऊका
कटे खिर काऊका, बेश सुधरे नाऊका
दूसरेका लाभ, हो तब क०।

कटेपर नमक छिड़कना—जलेको जलाना। जब कोई दुखी मनुष्यको लगती बात कहकर और भी उसका जी दुखावे, तब क०।

एकवो पियपर नियहित मानि, दूजे वू बोडति रिचबानि। भोग छानि चाची दरसावे, जी काटेपर लोन लगवै ॥
(मध्यममान। खो०र०कौ०)

कड़ाफड़ धजें थोथे वाँस—खोलले वाँसमें आवाज बहुत होती है। जो आदमी निकम्मा है, वह बोलता बहुत और करता कम है।

कड़ुआ स्वभाव,डूधती नाव—दोनोंही खतरनाक हैं।

कड़ुपसे मिलिये, मीठसे डरिये—कड़ुआ कड़नेवाला खरा और मीठी बातें करनेवाला खुशामदी होता है।

कढ़ीका सा उवाल आया और चला गया—जब किसी मनुष्यको जरा सी बातमें गुस्सा आवे और थाप ही जल्दी उतर जाय, तब क०।

कढ़ीमें कीयला—जब किसी अच्छी चीजमें बुरी चीज मिल जाय, तब क०।

कएटकेनैव कएटकम्—(स०) कांटेसे कांटा निकाला जाता है। शत्रुको शत्रु द्वारा ही नष्ट करना चाहिये।

कतल मूजी कदल अजीजा—(मु० ज०) काटनेसे पहिले ही सांपको मार डालना चाहिये।

कतहं सुधरहु ते बड़ दोप—(तुल०) कभी कभी खड़ मनुष्यसे भी बड़ी भूल हो जाती है।

कद्र उल्लूकी उल्लू जानता है, हुमांक कय सुराद पहिचानता है—उल्लू उल्लूको ही पहिचानता है, हुमांक कया जाने? मूर्ख बुद्धिमानको नहीं पहिचान सकता।

कद्र लो देता है हरवारका आना जाना—किसीके यहां बार बार जानेसे मान नहीं रहता।

कद्रदांके खुदा पाँयते विठाय, बेकद्रके सिरहाने भी न विठाय—स्पष्ट।

कद्रे आफ़ियत कसे दानद कि बमुसीयते गिरिपुत्र आयद—(फा०) जो कभी दुःख उठा चुका हो वही खलका मूल्य समझ सकता है।

कनक कनकते सौगुना, माद्रकता अधिकाय। यह खाये यौरात है, यह पाये यौराय—(विहारी) सोनेमें धतूरेसे सौगुना अधिक नया है, उससे खानेसे मनुष्य पागल हो जाता है, परन्तु हमके

जब एक-
की हानि
होते हुए-

पांचकी मूती है नू न इसकी सिर चढ़ा।

खोजड़े पीटे तेरी जोड़ खसम हो जायगी ॥ (राहत)

औरत मर्दका जोड़ा है—स्त्री और पुरुषका साथ है।

औरत रहे तो आपसे, नहीं जाय सगे वापसे—

(१) यदि स्त्री चाहे तो अपने आप घरमें रह

सकती है, नहीं तो अपने बापके सम्हाले भी नहीं

रह सकती (२) यदि स्त्री पतिव्रता है, तो वह अपने

आप रहेगी, नहीं तो वह अपने सगे बापके भी

साथ निकल जायगी।

औरतोंके नाक न होती तो गू खार्ती—(१)

यदि दुर्गन्ध न आती तो गू भी खा लेतीं (२) यदि

नाक कटनेका डर न रहता तो झुल्ल खेलतीं। पहिले

दुश्चरित्र स्त्रियोंकी नाकें काट ली जाती थीं। ऐसा

कोई बुरा काम नहीं है जिसे स्त्रियां न कर सकें।

और बिनो खीर पूरी, पर्वके दिन दांत निपोरी—

जिसे सब लोग कर रहे हैं, उसे न कर अपने मनकी

करना।

सब दिन चढ़े खीरके दिन नहीं।

और वात खोटी, सही दाल रोटी—दाल रोटी ही

सब बातोंमें मुख्य है।

और मज़ाक भूल गये, मेरे पास आइयो—(मु०)

स्त्री पुरुषके प्रति कहती है। “सारी दिहगी भूल

गये। जब पीटना होता है तो मुझे अपने पास

भुलाते हो”।

और रंगका गिलहरा—अशुभाभाविक पति

क०।

औरहि लुकरी शकुन बतावे, आपुहिं उकुपनसह

चिथवावे—जो दूसरोंको उपदेग करे, किन्तु स्वयं अपने

कार्योंके लिये दूसरोंसे अपनी दुर्गति कराये, उसके

प्रति क०।

औलातीका पानी मंगरेपर नहीं चढ़ता—असंभव

बात नहीं होती। औलाती=ओलती (छप्पर)

मंगरा=छप्परके ऊपरकी मेंड़।

औपधि जाहूवी तोयं वैयो नारायणो हरिः—

(सं०) देवाको गंगाजल और वैद्यको साक्षात् विष्णु

भगवान समझना चाहिये। तात्पर्य यह है, कि बिना

विश्वासके रोग आराम नहीं होता।

औसरका चूका आदमी, और डालका चूका

बन्दर नहीं संभलता—स्पष्ट।

औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल वेताल—गाने-

वाली जब घरसे चूक जाती है, तो बेचरी होकर गाने

लगती है। जब कोई मनेके उच्चेजित होनेपर अंडबंड

काम करने लगे, तब क०।

बदि संकेत दिग लालकी गई न व्याकुल बाण।

औसर चूकी डोमिनी, गावे ताल वेताल ॥

(अनुसधाना। लो० २० की०)

क

कजूस मखीचूस—सुमको कहते हैं।

कंठी बांधे हरि मिलै, तो बंदा बांधे कुन्दा—

कंठी बांधनेसे यदि मुक्ति हो तो मैं गलेमें कुन्दा बांध

लूँ। कुन्दा काठके घड़े टुकड़ेको कहते हैं और कंठी

काठके छोटे छोटे दानोंकी बनती है। जो मनुष्य

ऊपरसे तो तिलक माला धारण किये हुए हो, पर

आन्तरिक ईश्वर-भक्ति न रखता हो, उसपर क०।

‘नीकी नीकी बात कही, चकू नाहकू करते दुन्दा।

बन्धी बांधे हरि मिलै, तो बन्दा बांधे कुन्दा ॥ (कबीर)

कंत न पूछे बात, मेरा धना सुहागन नाम—

(ज०) जो भूठभूठ मालिकका विश्वासपात्र होनेका

दावा करता है, उसपर क०

चहे न पति नित कलह सों, तऊ भागिनी बाग।

कन बात नहिं भूभई, धखी सुहागिन नाम ॥

(लो० २० की०)

कहँ काशी कश्मीर कहँ, खुरासान गुजरात।

तुलसी वहाँ तो जीवकी, परालवध ले जात—

प्रारब्ध मनुष्यको बड़ी बड़ी दूर ले जाती है।

ककड़ीके चोरकी गर्दन नहीं मारी जाती—

सामान्य अपराधपर कड़ी सजा नहीं दी जाती।

चाहिये कठोरता न एतौ चरजीर जधी,

काकरीके चोरन कटारी साविधनु है।

कचरी खाये दिन वहलये, कपड़े फाटे घरको

आये—जब मनुष्य ऐसा काम करता है जिसमें कुछ

लाभ नहीं होता, तब क०।

जिस जगह किसी कामके लिये बहुतसे लोग आते जाते हैं, वहां कहते हैं।

कमला मुँह भाँककर प्राये हैं—(मु०) कालके मुँहसे बचकर आये हैं।

कमलें पैर लटकाये हैं—(मु०) मरनेको बैठे हैं, बहुत थूड़े आदमीको क०।

कमलें भी तीन दिन भारी होते हैं—(मु०) सुलतमानोंका विश्वास है कि कमलें गाड़े जानेके बाद तीन दिनतक उन्हें अपने जिन्दगीभरके कर्मोंका लेखा देना पड़ता है।

कमल पर कम नहीं बनती—(मु०) (१) कमल पर कम बनानेका नियम नहीं है। (२) एक घरमें दो मनुष्योंकी राय एक सी नहीं होती। (३) कोई विधवा पुनर्विवाह करे, उसे भी लांछना देनेके लिये क०। (४) फिजूलखर्चमें जय कमल पर कम चढ़ता जाय, तब भी क०।

कमलके दिन चढ़े, कमलीकी रात बड़ी—कमी तुम्हारा दौंव, कमी हमारा।

कमी घी घना, कमी मुट्टी चना, कमी वह भी मना—जो कुछ ईश्वर दे, उसीमें सन्तुष्ट रहना चाहिये।

कमी न कमी टेसू फूलै—जो मनुष्य सदा बुरे काम करता आया है और कदाचित् कोई अच्छा काम कर बैठे, तब क०।

कमी न गाँड़ रन चढ़े, कमी न बाजी बम—कायर कमी लड़ाईमें भी न गये, और न उन्होंने कमी शुकाउ बाजा ही एना। कायरोंको क०। भाट लोग जिससे अपना उचित प्राप्य नहीं पाते, उसे क०। इसपर गंग कविका एक दोहा है जो उन्होंने मरते समय कहा था और फिर वह हाथीके पर तले कुचलवा डाले गये थे। दोहा यह है:—कमी न गाँड़ रन चढ़े, कमी न बाजी बम, सरल समाकी राम राम, धिदा होत कवि गंग।

कमी न सोई साँथरे, सुपने बाई छट्ट—(प०) दे० “जनम न देखा बोरिया”।

कमी नाव गाड़ोपर, कमी गाड़ो नावपर—जब भिन्न भिन्न प्रकारके दो मनुष्य आपसमें एक दूसरेकी सहायता करें, तब क०। समयपर एकको दूसरेकी सहायताकी आवश्यकता पड़ती है। नाव

जो सूखेमें बनाई जाती है उसे लटेपर लादके दरयावमें ले जाते हैं, और लड़ा जब दरयाके पार उतरा जाता है, तब नावपर चढ़ाके।

कमी रज्ज, कमी गज्ज—कमी दुःख और कमी खल, जैसा श्रान पड़े भोगना ही पड़ता है।

कम खर्च वालानशीन—(व्य०) (१) जिस चीजका दाम तो कम लगे और देखनेमें भड़कीली और टिकाउ हो, उसपर क०। (२) जिसका खर्च कम होता है, वही धनवान हो जाता है।

कम खाना, गम खाना, और किनारेसे चलना—(नीति) कम खानेसे शरीर आरोग्य रहता है, गम खानेसे किसीते शत्रुता नहीं होती और किनारे होकर चलनेसे किसी तरहकी विपत्ति पड़नेका भय नहीं रहता।

तकनीन गिजांमं ही पीपरमेष्ट वही है।

कर जवत् इविष मेलक गवनमेष्ट वही है (पञ्चतर)

तकनील=कम। इविष=वासना।

कम जोर, मार खानेकी निशानी—निबलता बुरी होती है।

कमयवत्तु गये हाट, न मिला तराजू न मिडे बाट—कमनवीव मनुष्योंको क०।

कमवल्तीकी निशानी, जो सूल गया कुपका पानी—ऊ० दे०।

कमवल्तीमें धाटा गीला—जब विपत्तिपर विपत्ति पड़े, तब क०।

कमलीही नहीं छोड़ती—जब कोई मनुष्य या काम ऐसा पीछेलग जाय, कि छोड़नेपर भी न छड़े, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है—किरी नदीमें एक रीक तैरता चला जाता था। एक मनुष्यने उसे कथब समझकर जाल पकड़ा। रीक भी उससे बिपट गया। उसके मुँहमें, जो किनारेपर खड़े थे, प्रकार का कड़ा, “बधा, कमलीको छोड़ दे,” धिलेने उतर दिया, “बाधा थी। मैं तो कमलीको छोड़ता हूँ, पर कमली ही मुझे नहीं छोड़ती”।

(२) दृष्टि दित ह्य मंत्रं श्रीं करो मे म विथ इच्छ।

भवे भरन सुख दुःख मन, कामरि कौं सो रिच्छं ॥

(पूर्वपुराण। को०र०की०)

पानसे ही पागल हो जाता है । धनगर्वित मनुष्य-
को क० ।

कनखजूरेके कौ पाँव टूटेंगे—कनखजूरे (गोजर)
के चरणमें पाँव होते हैं, यदि दो चार टट भी जायें
त। उसे चलनेमें कष्ट नहीं होता । जो मनुष्य धन-
वान है, उसका यदि थोड़ा लुकसान भी हो जाय,
तो उसे नहीं श्रमता ।

धनिया लड़का गाँव गुहारो—लड़का अपनी
गोदमें और उसे गाँवमें खोजता फिर । जब कोई
चीज पास ही रखी हो और उसे इधर उधर खोजता
फिरे, तब क० ।

हरि हिरदै दूँदत फिरै, जल घन प्रतिमा वान ।

ज्यो कंधे सरिकः लिवे, देव द्विद्वोरान यान ॥

धनीड़ी विह्ली चूहोंसे कान कटावे—जब बलवान-
को निरबलसे दबना पड़े, तब क० । जब कोई उच्च
कर्मचारी कुछ दोष करे और उसके अधीनस्थ कर्म-
चारी उसे जानते हों, तब वह उसे दबता रहता है,
इस डरसे कि शायद वे उसका भेद न खोल दें ।

पटके मच्छड़ोंको धूनी देना— व्य०) धनी देनेसे
मच्छड़ भाग जाते हैं । जब दूकानदार यह समझता है,
कि दूसरे दूकानदारकी नजर लग गई, इसलिये माल
नहीं विकता, तब क० ।

पटकी प्रीत, मरनकी रीत—कपटीसे मित्रता
करना मौतके रास्तेमें जाना है ।

दुहा भाष्यां, गठं भित्तं शल्यगुञ्जीपरदायकः

ससपेच गइ वारी शल्युरेव न संभयः । (चापव्य)

कपड़ा कहें तू मुझे कर तह, मैं तुझे करूँ शाह—
जो कपड़ेको इज्जतसे रखता है, कपड़ा भी उसकी
इज्जत बना देता है ।

कपड़े फटे गरीबी आई—(१) जब गरीबी आती
है, तब कपड़े भी जल्दी फटते हैं (२) फटे कपड़े
देखनेसे गरीबी हालत जान पड़ती है । (३) जो
श्राद्धमी बहुत फटे कपड़े पहिनता है उसे जानो धन
द्विदि हो जायगा ।

कपूत घेठा मरा भला—कपूतका मरना ही अच्छा ।
कहा भी है—श्रीः पुत्रे न ज्ञानेन न विधानेन न मर्तिक-
याम्, किं तथा क्रियते धेन्वा या न पुत्रे न दुग्धदा ।
पज्ञात शन भूखं भ्यो मृतायासी सुती वरं ।
यतन्वी श्रद्धः प्राय श्रावज्जीव जपो दहेत् । (द्वितीपदेश)

कफून सिरमें बांधे फिरता है—मरनेको तैयार
है या मरनेसे नहीं डरता ।

कवके धनिया कवके सेठ—कल आटा दाल बेचता
थे, आज सेठजी बन गये । जिसकी नई बढ़ती होती
है, उसे क० ।

कव दादा मरेंगे, कव बेल बंटेंगी } जब कोई
कव दादा मरेंगे, कव बेल बंटेंगे } किसीसे
मिलनेकी आशा लगाये बहुत दिन तक बैठे रहे,
तब उँकताके क० । बेल एक तरहका नेग है जो
शादी गमीमें नाई भाटोंको बाँटा जाता है । बेल
बंटनेका तात्पर्य हिस्सा बंटनेसे है । जिस बूढ़के
पास कई बेल हों और उसके मरनेपर उसके पोते
उनको बाँट लें ।

कव मरे कव कीड़े पड़े } देखो 'कवके धनिया'
कव मरे कव राक्षस हुए }
कवसे राजा ईश्वर भये, कोशोंके दिन बिसर
गये—देखो 'कवके धनिया'.....

कवहूँ भगै न स्यारपर, वर भूखो मृगराज—
(घृन्द) सिंह भूखा रह जाता है, मगर सियारपर
नहीं दौड़ता ।

कवहूँ भेक न जान ही, अमल कमलकी वास—
(घृन्द) बुरा अच्छेका गुण नहीं जान सकता ।

कयाड़ीके छप्परपर फूस नहीं—जो कबाड़ा करता
है, उसके पास कुद नहीं रहता ।

कथीरदासकी उल्टी बानी, आँगन सूखा घरमें
पानी—जो ज्ञानी हैं, वे इस लोकमें खल नहीं भोगते,
परलोकके लिये संभय कर रखते हैं ।

कथीरदासकी उल्टी बानी, वरसे कव्य भोजे
पानी—इस संसारमें प्रायः सज्जन दुःख पाते और
असज्जन खल भोगते देख पड़ते हैं ।

कथीरदासकी उल्टी बान, मूते इन्दी बांधे कान—
संसारकी यह रीति है, कि दोष एक करता है और
भुगतना दूसरेको पड़ता है ।

क्यूतरका सूतक—कहातक माना जाय, रोज ही
पैदा होते हैं और रोज ही मरते हैं ।

क्यूतरखानिका सा हाल है, एक आता है एक
जाता है—जिस जगह बहुत श्राद्धमी काम करते हों वा

मांगने आया। स्त्रीने उससे कहा,—‘एक मनुष्य मेरे घरमें मर गया है, यदि तू उसी दरियावमें बहा पाये, तो मैं तुम्हें एक भयंरपी दूंगी।’ इसपर वह राज्नी छो गया। उसने एक लास धरसे निकाल कपड़ोंमें लपेट कर उसे दे दी। जब वह सुदेकी बहाकर आया और भयंरपी मांगी, तब वह स्त्री बोली, कि वह सुदां तो फिर लौट आया। ‘यह कहकर दूसरी लास उसी घरसे निकाल कर दी। इसी प्रकार जब वह चौथे सुदेकी डुबा चुका, तब वहां खड़ा रहा। वह जानता था, कि सुदां थोड़ी देर बाद ऊपर उठेगा। उसी समय एक जुलाहा दरियावमें नहाने गया था। उसे तैरनेका बहुत शोक था और बहुत देरतक योता लगाये रहता था। क्योंकि उसने पानीमेंसे सिर निकाला, कि उस फूकीरने उसकी सिरमें जोरसे डण्डा मारा और कहा, कि जब पाषाणों वार में तुम्हें बहा न जाने दूंगा। वह जुलाहा भी उससे लिपट गया और पकड़की हाकिमकी पास ले गया। जब दोनोने अपना हाल कह सुनाया, तब हाकिम बोला,—‘करघा कांड नहाने जाय, नाएक चोट जुलाहा खाए।’

करघा बीच जुलाहा सोहे, हलपर सोहे हाली,
फौजन बीच सिपाही सोहे, यागन सोहे माली—
जिसका जिस जगह स्थान है, वह वही शोभायमान होता है।

पान पीक सोहे पधर, गैमन काजर जोग।

करछी हाथ सैलाने हीको करते हैं—करछी केवल हाथकी रत्नाके लिये ही बनाई गई है। जब कोई अपने सहायकसे कहे, कि हमने प्रारामके लिये ही तुम्हें नियुक्त किया था, पर तुम कुछ भी इसका ध्यान नहीं रखते, तब क०।

करतयकी विद्या है—विद्या अभ्यास करनेसे आती है, कोई काम हो, करनेसे ही आता है।

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द—जो काम करता रहता है, वही गुरु है और जो नहीं करता, वही शिष्य है, क्योंकि जो करता रहता है, वह जानता है, इसीलिये गुरु है और जो नहीं करता, उसे सीखनेकी जरूरत रहती है, इसीलिये शिष्य है।

कर तो डर, न कर तो खुदाक गुज़ायसे डर—कोई धुरा काम करे तो डरे, न करे तौभी ईश्वरके कोपसे डरता रहे।

एक जगह दो साधू रहते थे। एकने कहा,—‘कर तो डर, न कर तौभी डर।’ दूसराबोला—‘यदि मैं न करूँ तो क्यों डरूँ?’ एक दिन चोरीने राजाके यंत्रां चोरी की। उस चोरीके मालमेंसे एकने सोनेकी माला निकालके दूसरे साधुके गलेमें डाल दी। साधु ध्यानमें मग्न था, भवत उससे इस बातकी कुछ भी खबर न थी। दूसरे दिन जब लीगोंने साधुके गलेमें माला देखी, तब वे उसी राजाके पास पकड़ ले गये। राजाने उसीही धोर समझ कर फाँसीका इकम दिया। जब लोग उसे फाँसी देने ले चले, तब उसका मित्र पहिला साधु मिला और उससे बोला, जब तूने चोरी की ही नहीं, तब तुम्हें फाँसी क्यों होती है, इसीलिये मैं कहता था, कि “कर तो डर, न कर तो भी डर।” तात्पर्य यह है, कि ईश्वरसे सदा डरते रहना चाहिये।

करदनी छोश, धामदनी पेश, न को हो तो कर देख—जैसा करोगे वैसा पाओगे। यदि न किया हो तो करके देख लो।

करना है सो भाज कर, कल कल मतना कर,
चलता फिरता आदमी, छिनमें जाये मर—
अच्छा काम करना हो, सो कलके लिये न छोड़कर आज्ञाही कर लेना चाहिये; क्योंकि जिन्दगीका कुछ भरोसा नहीं।

(१) कबिरा जो दिन प्राज है, सो दिन पाई काय।

चेन सके तो चितियो, मोच परी है प्यान ॥

(२) तुनसो बिलम्ब न कोअिये, भज लीगं रघुवीर।

तन तरकसतं जान है, सास सार सो तीर ॥

करनी करे तो धर्यो डरे, करके धर्यो पछिताय,
रोपेपेड़ धयलके, धाम कहांसे वाय—जब किसीको उसके किये हुए धुरे कामांका फल मिले और उसपर वह पछताने लगे, तब क०।

करनां खाकको, वात लाखकी—जो करेकुछ नहीं और सभी चीझों वातें करे, उसे क०।

करनी ना करतूत, चलिओ मेरे पूत—क० दे०।

करनी ना करतूत, लड़नेको मड़ापूत—निकम्मे आदमीको क०।

करनी ना धरनी, नाम गुलबिया—ज० च० जो स्त्री घरका काम धंधा न कर सकें, उसे क०।

कमर टूटे रँडोकी, भड्डुचे ओढे दुशाला —
जो वास्तवमें मेहनत करे, उसे तो कुछ न मिले और
जो कुछ न करे उसे सब कुछ मिले, तब क० ।

कमर न घूना, साँभे सूता—(पू०ज०) निखट्टू आदमी-
पर क० । थालसी वा नपुंसकों भी क० ।

कमरमें तोसा, घड़ा भरौसा—जो धन अपने पास
है, उसीका पका भरौसा है ।

कमरमें लँगोटी, नाम पीताम्बरदास—(च०) गुण
अथवा हैसियतके विरुद्ध नाम हो, तब क० ।

कमरिज़की यहन हँ वे रिज़का कोई नहीं—कम
श्रामदनीके मनुष्य बहुत हैं, बिना श्रामदनीका
कोई नहीं ।

कमल नालके तंतु सों, को बाँधे गजराज —
सामान्य वस्तुसे बड़ा काम नहीं सरता ।

कमली ओढ़नेसे फ़कीर नहीं होता—स्पष्ट ।

कमाई न धमाई, मोंके भूँजभूँज खाई—(पू०ज०)
जो पति वा लड़का निखट्टू वा थालसी हो, उसे क० ।

कमाऊ आवे डरता, निखट्टू आवे लड़ता —
(ज०) स्पष्ट । निखट्टू लड़के लड़केको क० ।

कमाऊ खलम किसने न चाहे—(ज०) सभी
औरतें चाहती हैं, कि उन्हें कमाऊ पति मिले वा
कमाऊ पतिको सभी स्त्रियाँ चाहती हैं ।

कमाऊ पूत, कलेजे सून—(पू०ज०) कमाऊ
लड़का माको बहुत प्यारा लगता है ।

कमाऊ पूतकी दूर बला—कमाऊ मनुष्यसे विपत
भागती है ।

कमाऊ पूत किसकी अच्छा नहीं लगता—
काम करनेवालेको सब चाहते हैं ।

कमानसे निकला तोर और मुँहसे निकली बात
फिर हाथ नहीं आती—जब कोई किसीको कोई
बात कहनेसे रोके, तब क० । जब बात मुँहसे
निकल जाती है, तब फिर पीछे नहीं आती ।

कमानो न पहिया, गाड़ी जोत मेरे भैया—(पा०)
जब कोई ऐसी चीज़की फ़रमाइश करे जिसका सामान
तैयार न हो, तब क० ।

कमावें खान खाना, उड़ावें मियाँ फ़हीम—(मु०)
मालिक कमाने और नौकर उड़ावे वा चाप कमाने
और घंटा उड़ावे, तब क० ।

कहा जाता है, कि बहराम खाँ खान खाना (अकबर
वादशाहके आमात्य और संचालक) के पास एक फ़हीम
नामका ग़लाम था जो बहुत उदार और शाहखर्च था ।

कमावे धोतीवाला, उड़ावे टोपीवाला—(१) हिन्दु
कमाता है और अङ्गरेज उड़ाते हैं । धोती हिन्दु-
ओंका पहिरावा है और टोपीसे तात्पर्य हैटका है ।
यहां यूरोपियन हिन्दुस्थानियोंके ही धनसे मौज
उड़ाते हैं । (२) मेहनती कमाता है और शौकीन
उड़ाता है ।

कर खेती परदेशको जाय, बाको जनम अका-
रथ जाय—(कृपी०) स्पष्ट ।

करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट विचारा
खाय—जो मनुष्य अपना काम छोड़के व्यर्थके भग-
ड़में पड़ता है और उससे हानि उठाता है, उसको
क० । यह मसल और भी कई तरहसे कही जाती है,
जैसे; करघा छोड़ तमाशे जाय, नाहक चोट जुलाहा
खाय, वा, करघा छोड़ नहाने जाय, नाहक जुलहा
मारा जाय ।

इसपर एक कहानी यों है—एक कुलटा स्त्री सदा यही
चाहती थी, कि मेरा पति अन्धा हो जाय । वह रोज
कुत्रिलानमें जाकर पीरोसे यही मंशा करती । जब उसके
पतिको यह बात मालूम हुई, तब एक दिन वह एक टूटी
कुत्रके भीतर पहिले से ही जा बैठा । जब स्त्रीने जाकर
वही दुःखा मांगी, तब वह कुत्रमेंसे बोला—'अच्छा, वा तू
अपने पतिको एक महीने तक खूब बढ़िया बढ़िया माल
बनाके खिला । जब महीना पूरा होगा, तब तेरी इच्छा
पूरी हो जायगी ।' वह स्त्री इसी किसी पीरकी बानी जान
कर बहुत खुश हुई और रोज अपने पतिको नई नई
अच्छी चीज़ें बनाकर खिलाने लगी, उसका पतिभी रोज
कहता, कि मेरी आँखें रोज बरोज कमजोर पड़ती जाती
हैं । जिस दिन महीना पूरा हुआ, वह अन्धा बन गया,
पीर कहने लगा, कि अब मुझे कुछ भी दिखाई नहीं
पड़ता । जब दुष्टने समझ लिया, कि अब यह बिलकुल
अन्धा हो गया, तब उसने अपने चार धारोंको बूझाया,
और उनके साथ खूब शराब पी । जब पाँचों नशेमें बेहोश
हो गये, तब उसकी पतिने तलवारसे चारोंको काट डाला
और फिर अन्धा बनकर उसी तरह पड़ा रहा । जब स्त्री
होशमें आई, तब यह हालत अपनी आँखोंसे देखकर
बहुत डरी । वह यही सोचती थी, कि किस तरह इस
बातको डिपाक । इतनेमें एक फ़कीर उसके यहाँ भीख

मांगने आया। स्त्रीने उससे कहा,—‘एक मनुष्य मेरे घरमें भर गया है, यदि तू उसे दरिदारमें बड़ा भव्ने, तो मैं तुम्हें एक अयरकी टूंगी।’ इसपर वह राजी हो गया। उसने एक लाभ घरसे निकाल करपड़ेमें छपेट कर उसे दे दी। जब वह सुर्देकी बधाकर भावा और अयरकी मांगी, तब वह स्त्री बोली, कि वह सुर्दा तो फिर छीट आया। यह कहकर दूसरी लाभ उसे घरसे निकाल कर दी। इसी प्रकार जब वह चौथे सुर्देकी दुबा चुका, तब वहां खड़ा रहा। वह जानता था, कि सुर्दा घोड़ी देर बाद ऊपर उठेगा। उसी समय एक जुलाहा दरिदारमें बहाने गया था। उसी वरनेका बहुत थोका था और बहुत देरतक गीता लगाये रहता था। क्योंकि उसने पानीमेंसे सिर निकाला, कि उस फकीरने उससे सिरमें जोरसे डण्डा मारा और कहा, कि अब पाषाणों वार में तुम्हें बंधा न जाने दूंगा। वह जुलाहा भी उससे छिपट गया और पकड़के हाकिमके पास ले गया। जब दोनोंने अपना हाल कह सुनाया, तब हाकिम बोला,—‘करघा का कहना है, नाहक पीट जुलाहा खाय।’

करघा घीच जुलाहा सोहे, हलपर सोहे हाली,
फौजन घीच सिपाही सोहे, बागान सोहे माली—
जिसका जिस अंगह स्थान है, वह वही शोभायमान होता है।

पान पीक सोहे अथ, नैशन काजर ओग।

करछी हाथ सैलाने हीको करते हैं—करछी फेयल हाथकी रत्ताके लिये ही बनाई गई है। जब कोई अपने सहायकसे कहे, कि हमने आरामके लिये ही तुम्हें नियुक्त किया था, पर तुम कुछ भी इसका ध्यान नहीं रखते, तब क०।

करतयकी विद्या है—विद्या अभ्यास करनेसे आती है, कोई काम हो, करनेसे ही आता है।

करता उस्ताद, ना करता शागिर्द—जो काम करता रहता है, वही गुरु है और जो नहीं करता, वही शिष्य है, क्योंकि जो करता रहता है, वह जानता है, इसीलिये गुरु है और जो नहीं करता, उसे सीखनेकी जरूरत रहती है, इसीलिये शिष्य है।

कर तो डर, न कर तो खुदाक गुजबसे डर—
कोई बुरा काम करे तो डरे, न करे तोभी ईश्वरके कोपसे डरता रहे।

एक लकड़ हो साधू रहते थे। एकने कहा,—‘कर तो डर, न कर तोभी डर।’ दूसरा बोला—‘यदि मैं न कर तो क्यों डर।’ एक दिन चोगेने राजकी मर्चा चोरी की। उस चोरकी मालमेंसे एकने सोनेकी माला निकालके दूसरे साधूकी गलेमें डाल दो। साधू ध्यानमें मग्न था, अतः उसे इस बातकी कुछ भी खबर न थी। दूसरे दिन जब लोगोंने साधूके गलेमें माला देखी, तब वे उसे राजाके पास पकड़ ले गये। राजाने उससे चोर समझ कर फाँसीका इत्तन दिया। जब लोग उसे फाँसी देने ले चले, तब उसका मित्र पहिला साधू मिला और उससे बोला, जब तूने चोरी की ही नहीं, तब तुम्हें फाँसी क्यों दीती है, इसीलिये मैं कहता था, कि “कर तो डर, न कर तो भी डर।” तात्पर्य यह है, कि ईश्वरसे सदा डरते रहना चाहिये।

करदनी होश, आमदनी पेश, न करे हो तो कर देख—जैसा करोगे वैसा पाओगे। यदि न किया हो तो करके देख लो।

करना है सो आज कर, कल फल मतना कर,
चलता फिरता आदमी, छिनमें जाये मर—
अच्छा काम करना हो, सो कलके लिये न छोड़कर ध्यानही कर लेना चाहिये; क्योंकि जिन्दगीका कुछ भरोसा नहीं।

(१) कबिरा जो दिन आज है, सो दिन गाँवों काज।

बैत सके तो चेतियो, मोच परी है ख्याल॥

(२) तुलसी विलम्ब न कोत्रिये, भज लोत्रे रघुवीर।

तन तरकसतें जात है, खास सार सो तौर॥

करनी करे तो क्यों डरे, करके क्यों पछिताय,
रोपेपेड़ बयूलके, आम कहांसे खाय—जब किसीको उसके किये हुए घुरे कामोंका फल मिले और उसपर वह पछताने लगें, तब क०।

करनां खाककी, चात लाखकी—जो करेकुछ नहीं और लयी बौड़ी बातें करे, उसे क०।

करनी ना करतूत, चलिओ मेरे पूत—उ० दे०।

करनी ना करतूत, लड़नेको मड़ावूत—निकम्मे आदमोको क०।

करनी ना धरनी, नाम गुलबिया—(ज० च०) जो स्त्री घरका काम घंघा न कर सके, उसे क०।

करनेको चाकरी, सोनेकी घर—(पू०) जो मनुष्य बाहर जाकर कोई व्यवसाय करनेका उद्योग न करे, उसपर ताना है ।

कर पानी न मुंह पानी—गंदे आदमीको कहते हैं, जो न हाथ धोता है, न मुंह धोता है ।

कर भला हो भला, अंत भलेका भला—जो दूसरेके साथ भलाई करता है, अन्तमें उसका भला ही होता है ।

करम रेख ना मिटे, करे कोई लाखों चतुराई—जो कर्ममें लिखा है, वह अवश्य होगा ।

करमहीन खेती करे, मरे वैल या सूखा पड़े—(कृषी) कर्महीनके कोई काम सिद्ध नहीं होते ।

करम हीन जय होत हैं, सभी होत हैं धाम । छाँह जान जहँ बैठते, तहाँ होत है धाम—ऊ० दे०

करमहीन सांगर गये, जहाँ रतनका ढेर । कर छूअत घोंघा भये, यही करमका फेर—

कमनसीब आदमी यदि सोनेमें भी हाथ डाले, तो वह मट्टी हो जाता है ।

कर ले सो काम, भज ले सो राम—काम करनेवालेको आलस नहीं करना चाहिये ।

कर सेवा, खा मेवा—गुरु वा बड़ोंकी सेवा करो, उसका अच्छा फल मिलेगा ।

करा और कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती—(ज०) जो खी किसी दूसरे पुरुषके प्रेममें फँसकर विपत्तिमें पड़े, उसपर कोई चतुर खी कहती है ।

करिया घाहान गोर चमार, तेकरा संग न उतरिये पार—काला ब्राह्मण और गौरा चमार दोनों खोटे होते हैं, इनका विश्वास न करना चाहिये ।

करिये अपने मनकी और सुनिये सबकी—जब किसी काममें बहुतसे मनुष्य तरह तरहकी राय दें, तब क० । सबकी छन लो, पर जो तुमने अपने मनमें निश्चय कर रखा है, वही करो ।

करे फल्लू, भरे लल्लू—देखो, “करे दाढ़ीवाला पकड़ा.....”

करे खेती भरे दण्ड—खेती करनेवालोंपर लगान बहुत लगता है, इसीसे क० ।

करें परपंच, कहलाये पंच—जो अपनेको न्यायी कहके अन्याय करे, उसे क० ।

करे एक भरे सब—अन्याय विचारपर क०; जहाँ एक मनुष्य दोष करे और घरभरको दण्ड हो ।

करेगा सो भरेगा—जो करेगा उसीको भुगतना पड़ेगा ।

करे दाढ़ीवाला, पकड़ा जाय मूछोंवाला—कसूर कोई करे और सजा किसीको मिले । जिसकी लम्बी दाढ़ी होती है, वह माननीय समझा जाता है और खाली मूछवालेकी उतनी इज्जत नहीं समझी जाती ।

करे बुराई सुख चहै, कैसे पावे कोय । रोपै पेड़ बबूरका, आम कहाँसे होय—(कवीर) बुरे कामोंके बुरे ही फल मिलते हैं ।

करो खेती बोवो वैल—(कृ०) यदि खेती करना हो तो पहिले अच्छे बैल उत्पन्न करनेकी फिक्र करो ।

करो तो सवाब नहीं, न करो तो अजाब नहीं—जिस कामके करनेमें कोई लाभ नहीं और न करनेमें कोई हानि नहीं होती, उसपर क० ।

कर्ज काढ़ मेहमानी की, लौंडों मार दिवानी की—(मु० ज०) कर्ज लेकर तो मेहमानी की, इसपर भी लड़कोंने पागल कर मारा । गरीब आदमी जो मेहमानका खर्चा मुश्किलसे उठा सके और घरके लड़के ही उन चीजोंको मांगने लगें, जो उसने मेहमानके लिये बनाई हैं, तब क० ।

कर्जदार छातीपर सवार—जिसका पावना होता है, वह देनदारकी छातीपर सवार रहता है ।

कर्जा काढ़ करै व्यवहार, मेहरीसे जो रूठे भतार, वे बुलाबल चोले दर्वार, ये तीनों पशमके धार—(पू०) स्पष्ट ।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा, जो जस करे सो तस फल चाखा—(तुलसी) कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है । फल करे सो आज कर, आज करे सो अज । पलमें परले होयगी, घहुरि करेगा कय—देखो, “करना है सो आज कर ।”

कलका लीपा देव बहाय, आजका लीपा देखो
थाय—(ज०) जो काम हो गया, उसे भूल जाओ,
जो सामने उसे करो।

कल किसने देखी है—भविष्यतकी कौन जान
संता है। जो काम जल्दी करना होता है, उसके
लिये भी क०।

कलके जोगी पैरतक जटा—जय कोई कम उमरका
आदमी पुराने जमानेकी घातें हांक्ता है, तय क०।

कलबारीकी अगाड़ी और कसाईकी पिछाड़ी—
कलवार अच्छी शराय पहिले बेचता है; इसीलिये
उसके पास पहिले, और कसाई अच्छा मांस पीछे
बेचता है; इसीलिये उसके पास पीछे जाना चाहिये।

कलहारी कलकाल करे, छोड़ारी छो होय,
अपनी अपनी दानसे, कभी न चूके फोय—कोई
अपनी आदत नहीं छोड़ता।

कलालकी दूकानपर पानी भी पीओ, तो शरा-
वका गुमान होता है—बुरी जगह बैठनेसे ही कलक
सगता है।

मदिरा मागत है अगत, दूध कवाओ हाय। (इन्द)

कलालकी घेटी डूबने चली, लोग कहें मंतवाली—
जब किसीके दुःखमें कोई दर्द न करे और उल्टी
उसकी हंसी उड़ावे, तय क०।

कलियुगमें दो भक हैं, वैरागी अरु ऊँट।

वे तुलसी घन काट हों, इन किय पीपर टूँट—
वैरागी जो बड़े बड़े तुलसीके दानोंकी माला पहि-
नते हैं, उनपर ताना है। तुलसी और पीपल दोनों
ही विष्णुके प्रिय हैं; इसलिये ये दोनोंही इनके
घन हैं।

कलौके बाहान मसखरे, कयहुँ न कीजे दान।

कुट्टम सहित नरकहिँ चले, संग लिये जज-
मान—(कबीर) जो माहण्य अपने धर्मसे च्युत हैं
और जिनको दिया हुआ दान बुरे कामोंमें लगता
है, उनपर क०।

कहुरका खेत, कपटीका हेत—(कृषी) ऊसरकी
खेती ऐसी है जैसे कपटीकी मित्रता, जो ठहरती नहीं।
कहुर खेत रहे जिस पास, बाके होय नाज ना
घास—(कृ०) स्पष्ट।

कवित सोहे भाटने और खेती सोहे जाटने—
(मा०) कवित पढ़ना भाटोंको ही शोभा देता है
और खेती करना जाटोंको अर्थात् जिसका जो काम
है, वही उसे कर सकता है।

कश्मीरी वे पीरी, लज्जत न शीरी—कश्मीरी बड़े
बेमुरच्छत और ताताचम होते हैं, इसलिये क०।
कश्मीरीसे गोरा सो कोढ़ा—कश्मीरियोंका रङ्ग
बहुत गोरा होता है, इसलिये क०।

कसम और तरकारी खाने हीके लिये हैं—
जो लोग कठी कसम खाया करते हैं, उनको
व्यंगसे क०।

कसाईका कुत्ता—जब कोई मुफ्तखोर आदमी बहुत
मोटा हो जाता है, तय क०। कसाईके यहां कुत्तेको
बहुत सा मांस खानेको मिलता है, इसलिये वह
जल्दी मोटा हो जाता है।

यह बकह नहिँ बुरे होत, रसोईके विष कसाईके कूरर।

कसाईका खूँटा और खालो रहे—कोई न कोई
आही मरता है।

कसाईका बच्चा, कभी न सच्चा, जो सच्चा तो
हरामीका बच्चा—कसाईकी सन्तान कभी सच नहीं
बोलती। यदि वह सच कहे तो समझना चाहिये,
कि यह कसाईकी सन्तान ही नहीं।

कसाईकी घासको फतहा खा जाय ?—कसाईका
खेत पाड़ा नहीं खा सकता। बलवानका कोई
अनिष्ट नहीं कर सकता।

कसाईकी घेटी दस वर्षकी उम्रमें बच्चा जनती
है—जब किसी दयंग आदमीके कहनेसे दो दिनका
काम एक दिनमें हो जाय, तय क०।

कसाईके भरोसे शिकरा पालना—अपने बूतेपर
कार्य न कर जब दूसरेके बलपर कोई मनुष्य कार्य
करता है, तय क०। शिकरा अर्थात् बाज पत्नीको
अपना आहार आप ढ ढना चाहिये।

कहँ कुम्भज कहँ सिन्धु अपारा, सोखेउ सुयश
सकल संसारा—(तुल०) तेजवान पुरुष छोटा होने-
पर भी बड़ेको मात कर सकता है।

कहत रहे थोड़े दिन, तो याद रहे बहुत दिन—
 अकाल थोड़े ही दिनोंतक रहता है, किन्तु उसका
 प्रभाव मनुष्यके हृदयपर इतना पड़ता है, कि वह
 बहुत दिनोंतक लोगोंको स्मरण रहता है। थोड़े
 दिनकी मुसोबत भी बहुत दिनतक याद रहती है।
 कहते हैं, करते नहीं, मुँहके बड़े लयार।
 आखिर धक्के खात हैं, साहबके दरवार—दोष
 करनेवाला परमात्माके यहां दोषी ठहराया जाता है।
 कहना आसान, करना मुश्किल—किसी बातकी
 प्रतिज्ञा करना जितना सहज है, उसका पूरा करना
 उतना ही कठिन है।
 कहरे दरवेश, घर जाने दरवेश—गरीबका गुस्ता
 गरीबपर ही उतरता है।
 कहवैया ते चाहिये, सुनवैया हुशियार—कहने-
 वालेसे सुननेवाला होशियार होना चाहिये।
 कह सुनाय विधि काह सुनावा, कह दिखाइ
 चह काह दिखावा—जब आशाके विपरीत कार्य
 हो, तब क०।
 कहां भगड़ा पिजावेका, निकाला वागका
 कागज—बिना औसर और बेहूदी बातपर क०।
 कहां वीवी, कहां वांदी
 कहां बुद्धिया, कहां राजकन्या
 कहां राजा भोज, कहां गंगा तेली
 (व्य०) इनमें
 समानता नहीं।
 तीनों कहावतें
 धेमेल चीजों-
 पर व्यवहृत होती हैं।
 साम वाम ससिमुख लिये नाम,
 साम हास किये लखि बड़ वाम।
 कद्यो पखानो सुन्यो न ईलो,
 भोजराज कह गहा तेली ॥ (मदहाज)
 कहा न अथला करि सकै, कहा न सिन्धु
 समाय। कहा न पावकमें जरै, काल काहि
 नहिं खाय—(सभाविलास) अर्थ स्पष्ट। इसके उत्तर-
 में किसीने कहा है—उत्त नहिं अथला करि सकै,
 मन नहिं सिन्धु समाय। धर्म न पावकमें जरै, नाम
 काल नहिं खाय।
 कहानी जैसी भूठी नहीं, बात जैसी मीठी नहीं—
 बड़े बड़े लड़कोंको कहानी सुनाकर अस्तमें यह
 कहते हैं।

कहीं कहीं गोपालकी, गई चौकड़ी भूल,
 काबुलमें मेवा कियो, ब्रजमें कियो बयूल—जहां
 जिस वस्तुकी आवश्यकता है, वह वहां न हो और
 अन्यत्र हो, तब क०।
 कहींकी ईंट कहींका रोड़ा, भानुमतीने कुनवा
 जोड़ा—जब कोई अनावश्यक बातोंको एकत्रित कर
 एक व्यर्थकी चीज तैयार करता है, तब क०।
 कहीं डूबे भी तरे हैं?—(१) जो बिगड़ जाते हैं वे
 नहीं छपते। (२) जो डूब जाते हैं, वे नहीं तैर
 सकते।
 कहीं तो सृहा चूनरी, औ कहिं डेले लात—
 विवाहिता स्त्रीके भाग्यके सम्बन्धमें क०।
 कहीं नाखून भी गोश्तसे जुदा हुआ है?—जब
 दो घनिष्ठ सम्बन्धियोंमें बिगाड़ हो जाता है, और
 दोनोंमें किसीके यहां कोई शुभागुणकार्य आ पड़ता
 है, तब समझानेवाले इते कह दोनोंको मिला
 देनेका प्रयत्न करते हैं।
 कहीं सूखे दरखत भी हरे हुए हैं?—बिगड़े हुए
 कमी नहीं छपते।
 कहू रहीम कैसे निभे, वैर कैरको संग
 वे भूमत रस आपने, इनके फाटत अंग—अच्छे
 सुरोंका साथ नहीं निभ सकता।
 कदली वैर टिग पकतात, पवन परसन हलत लीं लीं,
 गइत कण्ठक गात। (नागरीदास)
 कहू कहू गुण दोष तें उपजत दुःख शरीर,
 मधुरो बानी बोलके, परत पींजरे कीर—(शुन्द)
 कभी कभी अच्छा काम करनेपर दुःख होता है,
 जैसे मीठी बोलती बोलनेवाला तोता पींजरेमें बन्द
 किया जाता है।
 कहू तो मा मारो जाय, नहीं तो चाप कुत्ता खाय—
 जब मनुष्य बड़े संकटमें पड़ जाता है, तब क०। दो
 बातोंमें एक भी नहीं कर सकता।
 कहा जाता है, कि एक स्त्रीने भूखी बकरेकी गोशूतकी बदले
 कुत्ते का मांस अपने पतिके लिये पकाया था, और लड़के-
 को यह बात मालूम पड़ गई थी। जब वह मनुष्य खाने
 बैठा, तब लड़केने सोचा, कि यदि मैं कहता हूँ, तो मा
 मारी जाती है और नहीं कहनेसे पिता कुत्ते का मांस

खाता है। भतः वह बहुते असमंजसमें पड़ गया। तभीसे यह कड़ावत प्रवर्धित है।

कहें कवीर यह जमाना खोटा हुये और मांजे लोटा—दे० 'कवीरदासकी उल्टी'...

कहें खेतकी सुने खलिहानकी—जब बात कही जाय कुछ और समझी जाय कुछ, तब क०। देखन हीं वजकी मुगधन मयो धीं कड़ा, खेतकी कष्टे खरिदानकी समझतीं। (अकुर)

कहेंसे कुम्हार गधेपर नहीं चढ़ता—आदमी जो काम सदैव करता आया है, वही काम जब कहनेसे नहीं करता, तब क०। जिही मनुष्य अपनी खुशीसे काम भले ही करे, पर कहनेसे नहीं करता। कुम्हारकी जगह कोई कोई धोवी भी कहते हैं।

कहेंसे कोई कुएंमें नहीं गिरता—कोई किसीके कहनेसे अपनेको जान बूझके खतरेमें नहीं डालता। कहें हैं श्रुति स्मृतिन सो, यहै सयाने लोग, सौत दयावत निलकही, राजा पातक रोग—(विहारी) राजा, पाप और रोग ये तीनों निर्मलको ही दबाते हैं, ऐसा वेद, धर्मशास्त्र और सयाने लोग कहते हैं। राजा पराक्रमहीनको, पाप ज्ञान-बलहीनको और रोग देह-बलहीनको दबाता है।

कहें कवीर दो नाचें चढ़िये, एक डूबे तो एक रहिये—कवीर कहते हैं, कि दो नाचपर सवार रहना चाहिये, यदि एक डूब जाय, तो दूसरीपर रहकर बच सकता है। इसीको कहते हैं, "दो घोड़े सवार रहना।" परन्तु उसके लड़के कमालने इसका ठीक उल्टा कहा है। वह कहता है, "कहै कमाल दो नाच न चढ़िये, फटे जांच उतान हो पड़िये।" कमालने अपने पिताके कहनेका खण्डन बहुत किया है, इसी लिये कवीरने भंभला कर कहा है, "बूडा वंश कवीरका, उपजे पूत कमाल।"

कहें ज़मीनकी सुनै आसमानकी—दे० 'कहें खेतकी' काँखमें लड़का शहरमें टेर—दे० 'कनिया लड़का'...

काँचें रंग ज्यों धूपमें, भटक चटक उड़ि जात—कच्चा रंग धूपमें उड़ जाता है, इसी तरह भूठी बात वा भूठी प्रीति जांचनेपर नहीं रहती।

काँटा घुरा करीलका, और बदलीकी धाम, सौत घुरी है चूनकी, और साभेका काम—स्पष्ट।

काँटकी स्त्री तोल—बिलकुल ठीक बातके लिये क०। परे और बेगी जेहि भार, तेहि और लघक सुकुमार। लोग वक्ति ज्यो जग बिलगत, काँटेकोसी तोल लखात। तरांजकी काँटसे ही तौल ठीक दील पड़ती है।

काँटसे काँटा निकाला जाता है—दे० 'कगटके नैव'... काका काहूके न भये—चाचा किसीके सगे नहीं होते।

काका काहूके नहि मीत—ऊ० दे०। काकाकी भैसी, भतीजकी तौद—दूसरेके धनसे अपनी पुष्टि करनेपर क०।

काका ना करे साका—चाचा अक्सर भतीजेको गोद ले लेते हैं, मगर उनके विवाहादिमें उतना स्वर्च नहीं करते. जितना कि खास अपने लड़कोंके विवाहादिमें करते हैं।

कागुंजीकी नाथ आज न डूवी कल डूवी } (ब०) कागुंजीकी नाथ नहीं चलती— } जो चीज

ज्यादे दिन नहीं रहती, उसपर क०। बेईमानीका काम अधिक दिन नहीं रहता।

भूठकी टपनी कामी चलती नहीं, नाइ कामुंजीकी कामी चलती नहीं ॥

कागुंजीके घोड़े दौड़ाते हैं—(ब०) जो हाथकी डुंवी बहुत लिखता हो, उसपर क०।

काग न कोयल है सके, जो विधि सिखवै वाय—कैसा ही गुरु कथां न मिले, मूल्ले ज्ञानवान नहीं होता।

(१) फूले फले न वैत, यदपि सुधा बरसहि जगद। मूरख हृदय न चेत, जो गुरु भिक्षहि विरधि सम। (ग०)

(२) जो मूरख उपदेमके, सोते जोग जगान। डूवीं धन कड़े मोधि किन, भाये ध्याम सुमान। (ह०)

कागा काको धन हरे, कोयल काको देइ। मीठे बचन सुनायके, जग अपनी करि लेइ—सी । दोलनेके लिये क०।

सुलसी मीठे बचन तै, सुख उपजत बड़ कीर। बशीकरन एक मन्त्र है, तजदई बचन कठोर ॥

कागा कौवा और खरगोस, ये तीनों नहिं मरने पोस—स्पष्ट। काग और कौवेमें अन्तर होता है। काग बिलकुल कांसा होता है और कौवेकी गर्दन भूरी होती है।

कागा बोले, पड़ गये रौले—जब कौनै बोलते हैं,
तब सारी दुनियां जाग जाती है ।

कागा रौले—जब बहुतसे लोग इकट्ठे होकर जोर
जोरसे बातें करते हैं, तब क० ।

कागे कागा न भिखारी भीख—सूमको क० । कागा-
को बलि देना और फकीरको चटकी देना हिन्दू
मात्रका धर्म है ।

का चुप साधि रहा बलवाना—(तुल०) उच्चैः श्रुत्वा
देनेके लिये क० ।

काछे काछ और, नाचै नाच और—एक कामकी
तैयारी कर दूसरा काम कर बैठे, तब क० ।

किय सिंगार हित नेहको, हिन मङ्ग फिरगी शौर ।

कदौ काह कहु शौर ही, नचौ नाच कहु शौर ॥

(लो० १० की०)

काजल कजलौटी और फूलोंका हार—(च०)
रंग कजलौटी जैसा और पहननेको फूलोंका हार
चाहिये । वदयफल जब शृंगार करे, तब क० ।

काजलकी कोठरीमें, कैसोह सयानो जाय,
एक रेख काजलकी, लागि है पै लागि है—काजल-
की कोठरीमें जायगा तो धन्धा लगेहीगा । बुरेके
पास बैठनेसे कुल न कुल बुराई अवश्य होगी ।

सखे रङ्ग सुख मचनके, परत पराक्रम जानि ।

क्यौं सधि काजर कोठरी, लगै रेख निदान ॥ (शौर) ।

(लो० १० की०)

काजल तो सब लगाते हैं पर चितवन भांत
भांत—(ज०) स्पष्ट ।

(१) कछो सखो कह चतुरई, करै न बस प्रिय मान ।

काजर दीबो सखल है, चितवन माह विधान ॥ गुणवर्तिता

(२) कनियारि दीरघ नयन, किती न तकि समान ।

वह चितवन शौरै कहु जिदिष होत सुजान ॥ (विहारी)

काज़ीका न्याय—(व्य०) आधम-आध फौसला
करना । जब दो मनुष्योंके हिसाबमें कुछ फरक हो
और आधी आधी फसर दोनोंको दी जाय, तो
काज़ीका न्याय कहलाता है ।

काज़ीका प्यादा घोड़े सवार—काज़ीका प्यादा भी
अपनेको घुड़सवार समझता है । अदालतके अम-
लोंकी जवदस्तोपर क० ।

काज़ीकी घोड़ी क्या घी मूतती है ?—क्या काज़ी-
की घोड़ीका भी आदर होना चाहिये ?

काज़ीकी मूँज—जब कोई चीज एक बार दी जाय
और देनेवालेका दावा उसपर सदा बना रहे, तब क० ।

इसपर एक कहानी है । एक समय कोई नये शासक
किसी जिल्लेमें आये । एक दिन उन्हें मूँजकी रम्बी-
की झरत पड़ी । काज़ीने तुरत ही एक रम्बी खा दी ।
यद्यपि चीज बहुत सामान्य थी, तौभी उसको कौमत्
खातेमें लिखकर काज़ीके नामपर जमा कर दी गई ।
कौमत् तो दी न गई लेकिन उसका जमा प्रति वर्ष
खानेमें आता रहा ।

काज़ीको लौंडी मरे सारा शहर जाय, काज़ी
मरे कोई न जाय—जब कोई आदमी अपनी इच्छा-

से काम न करके केवल दूसरेके दयाव दालनेसे करता
है, तब क० । जब काज़ीकी लौंडी मरती है, तो शहर
के सब मनुष्य सिर्फ उन्हीं खुश करनेके लिये ही
जाते हैं, काज़ीके मरनेपर कोई नहीं जाता, यह
समझकर, कि जिसको दिखाना था वे तो अर्थ रहे
ही नहीं, अर्थ जानेसे क्या लाभ ?

काज़ीके घरके चूहे भी सयाने—जब घरके सब
आदमी चालाक होते हैं, तब क० ।

काज़ीके मरनेसे क्या शहर सूना हो जायगा ?—
एक मनुष्यके मर जानेसे समाजमें किसी प्रकारकी
हानि नहीं पहुंच सकती ।

काज़ीके मूसलमें नाड़ा—(मु०) नाड़ा इजारतदको
कहते हैं । मूसलमें इसका कुछ भी प्रयोजन नहीं
पड़ता । जब कोई बड़ा आदमी अशुचित कामको
भी उचित करनेके लिये अपने अधीनस्थको कहता
है, तब क० ।

काज़ीजी अपना आगा तो ढकें, पीछे किसीको
नसीहत करें—जो मनुष्य अपना दोष न देखकर
दूसरेका दूँध निकालता है, उसे क० । पहले आप
करो, पीछे दूसरेको करनेको कहो ।

काज़ीजी खाना आया, हमें क्या ? तुम्हारे ही
लिये है, फिर तुम्हें क्या ?—(१) स्वार्थी मनुष्यके
लिये ऐसा क० । (२) जब कोई किसी काममें
लवलीन रहता है, तब भी क० ।

काजीजी दुबले क्यों ? शहरके अदेशेसे—
जब कोई अपना सोच न करके संसार भरका सोच करता है, तब क० ।

काजी व-दी गवाह राजी—(स०) दो गवाह मिल-
नेसेही अदालत खूब हो जाती है ।

काठनेवालेको थोड़ा, घटोरनेवालेको बहुत—
(क०) जब एक मनुष्यको अधिक मेहनत करनेपर थोड़ी मजदूरी मिले और दूसरेको थोड़ी मेहनत करनेपर अधिक मजदूरी मिले, तब क० ।

काटा और उलट गया—कहा और पलट गया
अर्थात् और भी बुरा किया, जैसे सांप काटकर उलट
जाय, तो उसका जहर बहुत बढ़ता है ।

काटे फटे न मारें मरें—जित चीजसे किसी तरह
भी पिण्ड न छूटे, तब उसपर ।

काटे वार नाम तलवारका, लड़े फ़ौज नाम
सरदारका—काम अधीनस्थ कर्मचारी करते हैं, पर
नाम अफसरका होता है । जब काम तो कोई और
करे, पर प्रयास उससे सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे
मनुष्यकी को जाय, तब क० ।

काटे पै फदली फरे, फोटि यतन कर. सींच
बिनय न मान खगेश सुन, डांटे पै नवनीच—
केला काटनेसे ही फलता है, सींचनेसे नहीं । इसी
तरह नीच ताड़नासे ही मानता है, सम्भानेसे
नहीं ।

काटो तो खून नहीं—जो मनुष्य डरके मारे सन्न हो
जाय, उसे क० ।

काठका उल्लू—मूर्खको क० ।

काठका घोड़ा नहीं चलता—मड़ड़ आदमी काम
नहीं कर सकता ।

काठका घोड़ा लोहेकी जीन, जिसपर बैठे लंगड़
दीन—लाठी या बैसाखीको कहते हैं, जिसके सहारेसे
लगड़े चलते हैं ।

काठकी तरवार क्या घाम करेगी—गड़ली बीज.
काम नहीं देती ।

काठकी हाँड़ी बार बार नहीं चढ़ती ?—(व्य०)
जब कोई मनुष्य एक बार टगाया जाकर होयियार
हो जाय, तब वह कहता है, कि अद्य मैं दूसरी बार

नहीं टगाया जाऊँगा । काठकी हाँड़ी धामपर
चढ़ानेसे ही जल जाती है, उसे दूसरी बार चढ़ानेकी
नौबत नहीं आती ।

फिर न हँड़े कपट बों, जो कोवै ब्योपार ।

जैसे हाँड़ी काठकी, चढ़े न दूनी बार ॥ (इन्द्र)

काठके घोड़े दौड़ते हैं—हवाके पुल बांधते हैं ।

काठ छीलो तो चिकन, घात छीलो तो रूखी—
स्पष्ट ।

काढ़े नीर पतालतें, जो गुण युत घट होय—
(इन्द्र) बुद्धिमान् और उद्योगी मनुष्यको क० ।
यदि लोहमें लंबी डोरी होगी, तो कितना ही नीचा;
कुआँ क्यों न हो, उसमेंसे पानी निकाल ही लेगा ।
इसी तरह बुद्धिमान् वा परिश्रमी मनुष्य जिस
कामके पीछे पड़ेगा, उसे कर ही लेगा । गुण युत=
गुणवान, रस्सी सहित ।

कातक कुतिया माह विलाई, चैन बिडैआ सदा
लुगाई—कुतिया कातिकमें, बिछी माघमें, चिड़िया
घतमें और खी वारहो महीने बचा जनती है ।

कातक जो धांवर तर खाय, कुटुम सहित वैकुंठे
जाय—कातिकमें धांवला बड़ा पुनीत माना जाता है,
विशेषकर छदी ६ और ११, अर्थात् धांवला नौमी
और देवोत्थान एकादशीको ।

कातक, घात कहा तक—कातिक महीना घात
कहते बीत जाता है, क्योंकि इस महीनेमें त्यौहार
बहुत होते हैं और खुरीके दिन जाते मालूम नहीं
पड़ते ।

कातकमें जो सीतको, पिये सो लामा पाय,
भादोंमें जो कोई पिये, तो देवे ताप चढ़ाय—
कातिकमें मट्टा पीनेसे लाभ है और भादोंमें हानि ।

काता और ले दौड़ी—(ज०) सूत काता और उसी
दम पाजारमें बचनेको ले दौड़ी, जिसे समय न हो
और सब कामकी जल्दी हो, उसे क० । जिसके
पेटमें घात न पचे, उसे भी क० । अर्थात् घात छनी
और सबको खुर पहुंचा दी ।

कान कहत नहिं वैन ज्यों, जीम सुनत नहिं वैन—
(इन्द्र) जिसका काम उसीसे होता है ।

मद्य पनाये मन रछे, ते फिर और बनै न ।

कान कहत नहिं वैन ज्यों, जीम सुनत नहिं वैन ॥

कान छिद्राय सो गुड़ खाय—जो कष्ट उठावेगा उसीको आराम मिलेगा ।

रति दुख लहि यह सो भनिहार, भूपन बसन रतन जड़ तार ।
योग लकि चांची दरसारे, कान छिद्राय सो गुड़ खाय ॥

कान तो फुएडल नहीं, फुएडल तो कान नहीं—
जब धन हो और औलाद न हो अथवा औलाद बहुत हो और धन न हो, तब क० ।

कानपर जूं तक नहीं चलती—(ज्ञा०) जब कोई किसीका कहना न सुने, तब क० ।

कान प्यारे तो बालियाँ, जोरू प्यारी तो बालियाँ—स्पष्ट । जब मूल वस्तुसे स्नेह होता है, तभी उसके उपकरण भी अच्छे मालूम पड़ते हैं ।

कानमें ठेंठियां दे ली हैं } कुछ सुनते ही नहीं ।
कानमें तेल डाले बैठे हैं } जब कोई किसीकी सलाह न माने वा किसीके कहनेसे कोई काम न करे, तब क० ।

काना कुत्ता पीच हीसे आसूदा—काना कुत्ता माँड़ पाकर ही खुश हो जाता है, क्योंकि उसे और अधिक पानेकी थाया नहीं रहती । एक तो काना ही अशुभ है तिसपर भी कुत्ता, यदि उसे माँड़ जो फर्क दिया जाता है वही मिले, तो बहुत है ।

काना कौवा—बाले और बदशकल आदमी अथवा निन्दकको भी क० ।

काना टट्टू बुद्धू नफर—काना घोड़ा और मूख नौकर दोनों ही दुखदायी हैं । जिसका सामान दिगड़ा रहता है, उसपर क० ।

काना मुक्कको भाय नहीं, काने धिन सोहाय नहीं—(ज०) जो स्त्री अपने पतिको नहीं चाहती, उसका कहना है । जब कोई धीज, अच्छी भी न लगे और छोड़ी भी न जाय, तब क० ।

काना, याना, लाड़ला, तीनों हठकी खान, अंधा, गूंगा, कायर, हैं पूरे शैतान—काना, अयाना (छोटा लड़का), लाड़ला (दुलारा) ये तो हठी होते ही हैं, परन्तु अंधे, गूंगे और कंजी आँखवाले पूरे शैतान होते हैं ।

कानो अपने मने सुहानी—जो मूख अपनेको ही बुद्धिमान समझे, उसे क० ।

कानी आँख मटरका वीया, वह भी आँख भयानी लीया—(ज०) एक तो मटरके धरावर छोटी

आँख थी, वह भी शीतलामें जाती रही । जब किसीका एक मात्र पुत्र मर जाय, तब क० ।

कानी आँख, दिखे कुछ नहीं, दुःखे तो अच्छीसे ज्यादा—घरके जिस मनुष्यसे सहायता तो कुछ भी न मिले और कष्ट बहुत मिले, उसपर क० ।

कानीके व्याहको सौ जोखों—यदि बरवाले देखले तो विवाह न हो । जिस कामके होनेमें शंका बहुत हो, उसमें विघ्न भी बहुत पड़ते हैं ।

धिर धनयेः बहुली भवति ।

कानीको काना प्यारा, रानीको राना प्यारा—अपनी अपनी चीज सभीको अच्छी लगती है ।

कानीको कौन सराहे ? कानीका मियाँ—ज० दे० । मियाँकी जगह बाबा वा मया भी कहते हैं । कानी गायके अलगे बथान—(पू०) क्या कानी गौके रहनेके लिये स्थान अलग होता है ! जब किसी मनुष्यको साधारण बोपके लिये उसके साथवाले छोड़ दें, तब क० । मैं उनके समान नहीं हूँ तो क्या समाजसे बाहर किया जाऊँगा ?

कानूनगोकी खोपड़ी मरी भी दगा दे—काननगो किसानोंको पूसा चकरमें डालते हैं, कि वे पुस्त दर-पुस्त भोगते हैं । जब किसान धररा जाता है, तब क० ।

कानेके एक रग सिवा होती है—कानमें एक गुण विशेष होता है, वह है कुटिलता ।

काने, खोरे, कूबड़े, कुटिल कुचाली जान—स्पष्ट ।

काने चोट, कनीड़े भेंट—(व्य०) चोटपर ही चोट लगती है और जिससे मुँह छिपाया चाहो उससे अवयव भेंट होती है ।

चलौ जोन्ह निधि सजि सित वास, परी जु दोठ दूरते सास ।
कई पखानो सुधि बुधि डेट, काने चोट कनीड़े भेंट ॥
(लो०र०कौ०)

काने यनिये गुड़ दे, वड़े सुनावल बोल—(भो०) जब कोई किसीसे याचना भी करे और कठोर बचन भी करे, तब क० ।

कापर करूँ सिंगार, पिया मोर आँधर—(ज०) जब कोई पुरुष कार्य करता है और उसकी कार्य-तत्परताकी प्रशंसा नहीं होती, तब क० । कोई कोई स्त्री अपने कर्त्तव्य स्वभावके पतिके सम्बन्धमें भी इसे व्यवहार करती है ।

मयन बिहोने भर्ष रि लाबखनिव खन्नवाचीणाम् ।

(१) जीपै ननु घञ्च माघ भिषे,

तो करी क्षति गरि दिगार एनावे ॥ (पद्यो)

काबुल गये मुगल वन आये, बोलन लागे बानी
आव आव कर प्राण निकल गये; सिंरदाने
रखा पानी—दे० 'शाय आव कर—'

काबुलमें क्या गये नहीं होते—जानकारोंमें जब
कोई मर्ल होता है, तब क० ।

काबुलमें मेघा भये, वृजमें भयो फरोल—

दे० 'कहीं कहीं गोपाल.....।'

काम करेगी बेटी, सुखसे छायेगी रोटी—माकी
यिन्ना लड़कीके प्रति ।

काम करे नथवाली, पकड़ी जाये चिरकुटवाली—

(पू० ज०) जब बड़े का दोष गरीबके गले पड़ता है,
तब क० ।

कामकान काजका, दुश्मन अनाजका } निकम्मे
कामका न काजका, ढाई संरनाजका } और
निटले मनुष्यपर क० ।

कामके बेले सो गई, परनादके बेले जागी—

काम न करे और खानेको तैयार हो, तब क० ।

कामको अँहँ, और खानेको हाँ—कामको नहीं
और खानेके लिये हाँ । ज० दे० ।

कामको काम सिखाता है—काम करनेसे ही
थाता है ।

काम फोड़ी मुँह थज्जर—कार्य करनेके समय फोड़ी
बनना अर्थात् असमर्थता प्रकट करना और भोजनके
समय सब कुछ खानेको तैयार रहना ।

काम क्रोध मद लोभकी, जौ लौं मनमें खान,
का पण्डित का मूरखा, दोऊ एक समान—स्पष्ट ।

काम चोर, निवाले हाज़िर—दे० 'कामके बेले...।'

काम जो आवे कामरी, छा ले करे किमांच—
यदि छोटी चीजसे काम निकले, तो बड़ी चीजकी
सलाह क्यों करे। जब किसी निम्न कर्मचारीसे काम
निकल जाय, तो ऊँचे अहससके पास क्यों जाय ।

का माया का संकलन, भान बाइये संघ ।

काम जो आवे कामरी, का ले करे किमांच ॥ (तुलसी)

काम न धंधा, तीन रोटी बंधा—(सं) 'दे० कामके बेले'

काम परेही जानिये, जो नर जैसो होय—

(वृन्ध) मनुष्यकी परीक्षा काम पड़नेपर ही होती है ।

काम प्यारा है, काम प्यारा नहीं—(१) काम

प्यारा है सूरत नहीं । जब कोई नौकर मन भाफ़िक
काम नहीं करता, तब क० । (२) बमड़ेको छूनेसे
सब कोई घृणा करते हैं, पर जब उसका जता, बँग,
बक्स आदि कामकी चीजें बनती हैं, तब सभीको
प्यारी लगती हैं ।

काम रहे तक फ़ाज़ी, न रहे तो पाजी—मतलबसे
आदर होता है ।

काम सरा दुख बीसरा, छाछ न देत अहीर—

काम निकल जानेपर अहीर भी छाछ नहीं देता ।
वृद्ध मनुष्यको क० ।

कामिनि तो चोही भली, जो परघर कामी न जाय ।

भय राखे यों नाहका, ज्यों गलकटसे गाय—

अर्थ स्पष्ट है । जो स्त्री दूसरोंके घर बहुत जाती है
उसे रोकनेके लिये क० ।

कायथका बेटा, पढ़ा भला या मरा भला—

कायस्थ प्रायः बेपढ़े नहीं होते, इसलिये क० ।

कायथका हथियार क़लम है—ज० दे० ।

कायथसे काला सो कौवा—कायस्थ प्रायः काले

होते हैं, इसलिये क० ।

कायथोंका छोटा और भांडोंका बड़ा, दोनोंकी

खराबी—कायस्थोंमें जो छोटा होता है, उसीको
घरका काम बहुत करना पड़ता है और भांडोंमें जो
बड़ा होता है उसीको नक़ल अच्छी करनी आती है,
इसलिये उसे ही अधिक परिश्रम करना पड़ता है ।

काया कष्ट है, जान जोखों नहीं—जीमारीके समय

रोगीको बाइस देनेके लिये क० ।

काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा—कपटीसे

कोही अच्छा ।

काया मायाका क्या भरोसा—जान और धनका

कुछ भरोसा नहीं, न जाने कब निकल जाय ।

काया रखे धर्म, पूजा रखे व्यवहार—शरीर बना

रहनेसे ही धन हो सकता है और पूजा पनी रहने-
सेही कारभार चल सकता है ।

रविक कौन यह केलि बदेच, कामि सुधि बिहरावे देच ।

नीति सुनि रच उलि बखानो, काया राखे धर्मसु जानो ॥

(मो०र०की०)

कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर । समय पाय तद्वर फलै, फैनक सींचे नीर—(वृन्द) काम अपने समयपर होता है, इसके लिये अघोर नहीं होना चाहिये। चाहे कितना ही क्यों न सींचा जाय, बिना समयके पेड़ भी नहीं फलता ।

काल कड़ाऊ, किसानका खाऊ—(कु०) अकाल और कर्जा लेना दोनों ही किसानके लिये मौत हैं ।

काल करते आज कर, आज करते अथ—दे० 'कल करोसो.....!'

कालका मारा, सब जग हारा—मौतसे सब हारे हैं ।

कालके जोगी कलींदेको खप्पर—कोई कम उमरका आदमी पुराने जमानेकी बातें कहे, तब क० ।

(१) ताँकों बड़ाई करो कोऊ जाने न कालके जोगी

कलींदेको खप्पर । (देव) कलींदा = तरबुज ।

(२) 'ये सब सतह भावे' सिवा पर कालके जोगी कलींदेको खप्पर । (मूषण)

कालके जोगी माई माई—ऊ० दे० पाखंडियोंको क० ।

भापन चरित सुधरत नाहीं,

जग कर्ष उपदेशत न खजाहीं ।

धिक पण्डितपन धिक् बनुभाई,

"कालिङ्कके जोगी माई माई ॥" (लो० सं०)

कालके हाथ कामान, बूढ़ा धचे न जवान—काल किसीको नहीं छोड़ता ।

काल गया पर फहावन रह गई—घक निकल जाता है, पर बात रह जाती है ।

काल टले, कलाल न टले—शराबियोंको क० ।

काल दण्ड गहि काहु न मारा, हरे प्रथम चल बुद्धि चिचारा—(हल०) स्पष्ट ।

काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक—मौतके सामने जैसा राजा वैसा फकीर ।

काल पड़े पै कुदवाँ मोठ—अकालमें कोदो भी मोटा लगता है । भूखमें बुरी चीज भी अच्छी लगती है । जब मनुष्य बिलकुल निरावलंब हो जाता है, उस समय यदि कुछ भी सहारा मिले, तो गनीमत समझता है । ऐसे ही समयपर क० ।

कालस्य कुटिला गतिः—(सं०) कालकी गति जानी नहीं जाती ।

काला अक्षर भैंस बराबर—अपढ़को क० ।

काला बालून गोरा शूद्र, इन दोनोंसे कांपे खू—दे० ' करिया बालून.....'

काला मुंह करीलके दाँत—बदशकल काले आदमीको, क० ।

काला मुंह नीले हाथ पाँच—जब किसी चीजपर घृणा प्रकाश की जाय, तब क० । किसीको धाप देनेपर भी क० ।

काली कुत्ती मरनेवाली, बन्देको यश—जब काम थाप ही हो जाय और उसके करनेका यश मुत्तमें मिले, तब क० ।

काली घटा डरावनी, और धौली बरसनहार—जो गरजते हैं सो बरसते नहीं । असली और दिखावटी चीजमें बहुत फर्क होता है ।

काली जुमेरातका वादा करना—(सु०) जब कोई हम्वा वादा करे, तब क० । काली जुमेरात कृष्य पत्तके शेष गृहस्पतिवारको कहते हैं, जो मुसलमानी महीनेके अन्तमें पड़ती है ।

काली भली न सेत—(१) यदि दो बुरोंसे काम पड़ जाय तो उचित है कि दोनोंको ही त्याग दे ॥

(२) यदि काली वस्तु (बुरी चीज) सेत ही (बिना मोल ही) मिले तौभी अच्छी नहीं ।

(१) इस मसलका निकास इस कहानीसे है । एक राजाके दो रानियाँ थीं । दोनों दुखरिब और जादूगरनी भी थीं । एक दिन दोनों आपसमें बोल बनकर लड़ रही थीं, एकका रक्त सफ़ेद और दूसरीका काला था । एककाल राजा भों अपने मन्त्री सहित उस स्थानपर आगये और जान गये कि ये दोनों मेरी ही स्त्रियाँ हैं । राजाने मन्त्रीसे कहा कि, ' इस समय हमको सागनेमें खीरपाका पाप भी नहीं छोगा, क्योंकि ये बोलके रूपमें हैं । कहे, कालीको माह या सफ़ेदकी । मन्त्री जो दोनोंको ही बुरा समझता था मोला, " काली भली न सेत, दोनों मारो एकसे खेत । " इसपर राजाने दोनोंको मार बाधा ।

(२) दोनों घटा सुहावनी, को विरहिनेके हैत । कच्ची कहावत ना सुनै, कादी भली न सेत ॥" काली घटा सुहावनी होती है, पर विरहिनेके लिये बन्धी नहीं ।

काली मुरगी सफ़ेद अंडा—बुरे मनुष्यकी अच्छी भौलादपर क० ।

इधर एक कहानी है—लखनऊमें खोदी फ़ीनाद नाम-
की एक रईस रहते थे। वह बड़े धनी थे और उनका रह
बहुत काला था। एक दिन वह हरा दुगाना भोटे बरा-
भदमें बैठे थे, तबनेमें कोई सुधरा (नानकयाही फ़कीर)
उनके पास आ पहुँचा और बोला, “क्यों भाई, हरे खेत-
की कीड़े! कुछ फ़कीरोंसे भी हाथ भिन्नावेगा।” इधर
वह चिढ़कर बिना कुछ जवाब दिये धरके भीतर चले गये
और खोदी देर बाद एक पौना दुगाना भोटे फिर उसी
जगह आ बैठे। घुमता फिरता वही सुधरा फिर उनके
समीप आकर बोला, “क्यों भाई, बहाने की मैना! कुछ
भिलेगा?” इस समय उन्होंने उसी एक रूपया दिया।
जाते समय उस फ़कीरने कहा, “सुधरा है तो काली,
‘मगर भया सफ़ेद देवी है।”

काली हंडी पीछे—पुरानी हंडी पीछे फेंक दी जाती
है। जब कोई मर जाता है तो उसके घरकी पुरानी
हंडी फोड़ दी जाती है। जब कोई अत्याचारी
हाकिम बिदा होता है, तब भी ऐसा क०।

कालेका काटी पानी नहीं मांगता—जैसे काला
साँप काटे वह नहीं बचता। कपटी मनुष्य वा
खोटी सलाह देनेवालेको क०। उसके कहनेमें धाया
और मारा गया।

कालेके आगे चिराग नहीं जलता—प्रलयानके
सामने किसीकी नहीं चलती। काले सर्पके मण्डि
होती है, जिसके प्रकाशके आगे दीया नहीं जलाया
जाता।

‘हज मोहन पिय मोहन काज, किये यसन तिथ बहु राजि
लाज। बगै न खों भवान जग करे, कारे भागे दीपक
बरे। (रूपगविता)। इसका दूसरा अर्थ यह भी होता
है कि हज मोहनको वय करनेके लिये बहुत स्त्रियोंने
लज्जा कीडकी यत्र किया, परन्तु उनका सब यत्र निष्फल
हुआ, जैसे काला पुष्प अपनी आग्निमा छिपानेके लिये
अपने आगे दीपक जलावे और उससे और भी आग्निमा
प्रगट हो, उसी प्रकार उन स्त्रियोंके यत्रसे और भी उन-
की छुपता प्रगट हुई।

कालेके काटेका जन्तर न मन्तर—काले साँपका
विष किसी अन्य मन्त्रसे नहीं उतरता। दे०, काले
का काटा...

काले कोसों—बहुत दूरको क०। इतनी दूरकी यात्रा
जहाँ सवेरेसे चलते चलते अन्धेरा या रात हो जाय।

काले मुंह अन्धेरे—बड़े सवेरे। यह मसल दुमानी
है इसमें गाली भी निकलती है, जैसे “काले मुंह
अन्धेरे चिड़िया बोलतीके आना।”

काले सिरका एक न छोड़ा—कुलदा छियोंको
क०। काले सिरका=युवा पुरुष।

काले सिरकी जो न करें सो थोड़ा—छियां सब
कुद कर सकती हैं। जब कोई स्त्री इधरकी उधर
लगाके आपसमें विवाद करा दे, तब क०।

का बर्पा जव कूपी सुखाने, समय चूक पुनि का
पछताने—(तुलसी) औसरपर काम करनेसे ही
सफलता होती है। जब किसीको सहायता करनेकी
तत्काल ही आवश्यकता होती है, तब क०।

(१) छेतियां जलकर हुईं यारोंकी खाक।

अत्र है विरकर इधर आया अबस ॥ (हाली)

(२) दीवो अबसरको भलो, आखों सुधरे काम।

छेती रखे बरविबो, धनको कौने काम ॥ (हन्)

कासा दीजे, यासा न दीजे—खिला दे, मगर धरमें न
रखे। अपरिचित विदेशी मेहमानपर क०। कासा=
थाली बाला=घर।

कासामर खाना, आसामर सोना—भ्रान्दी
जीवपर क०।

काहे तुम धमधूसर मोट, धनकी फ़िराग न रन-
की चोट—बेफ़िकरीमें आदमी मोटा हो जाता है।

किमाश्चर्यमत; परम्—(सं०) इससे अधिक आश्चर्य
और क्या होगा।

किया कराया, सब गुड़ माटी—किया कराया कान
जब दिगड़ जाता है, तब क०।

किया कराया, यश नहि पाया—सब कुद करनेपर
भी जब निन्दा होती है, तब क०।

किया चाहे चाकरी, सोया चाहे घर किया
चाहे आशिर्वादी, वाजूजीका डर—दोनों दाम एक
साथ नहीं हो सकते।

किसको माने धौंसा खाया है—जब किसीको
चुनौती देनी होती है, तब क०।

किस खेतकी मूली है
किस खेतका बथुआ है
किस गलीका कुत्ता है।

नगण्य मनुष्यको क०।

किस विरतेपर तत्ता पानी—(ज०) जब किसी मनुष्यकी मांग उसको करतूतते अधिक होती है, तब क०।

(१) 'खुशम निखट्टू जोय निमानी, किस विरतेपर तत्ता पानी ।'
माताका कइमा निखट्टू पुवके प्रति । निमानी=सुकुमार ।

(२) बहुत दिनांपर बढमा आवे, क'बो अटारिया सेज विहाये ।
बलमा रई पीठ दे सोय, लेना एक न देना दीय ।
भोर भये पिय छडे रिसाय, तत्ता पानी देइ चढ़ाय ॥
असल दे तिरिया सुसकानी, किस विरतेपर तत्तापानी

कीका कइमा अपने नपुंसक पतिके प्रति ।

(३) आरं निधि पिय सों करि मान, भोरहि चहत नीर असनान ।
भोग उक्ति नहिं मनमें ठानी, किस विरतेपर तत्ता पानी । (श्लो० २० कौ०)

किस प्रतपर गरम पानी चाहती है अर्थात् नायकसे तो मान किया अब किस गुनसे स्नानके लिये पानी चाहती है (श्लो० २० कौ०)

(४) नहिं सौखत मतगुन करि नेमा, निज हट तजि न प्रचारत प्रेमा ।
तापर सुख चाहत अज्ञानी, किस विरतेपर तत्ता पानी । (श्लो० सं०)

किसीका आवा घिगड़े, इनका खदानेका खदाना घिगड़ गया—(१) जब किसी मनुष्यकी थोड़ी हानि होती है और दूसरेकी बहुत, तब क०। खदाना उस स्थानको कहते हैं, जहाँसे कुम्हार मिट्टी खोदकर लाता है। (२) किसीके घरका एक आदमी खराब होता है और इनके घरके सबके सब घिगड़ गये हैं।

किसीका घर जलें गुंडे हाथ सेकें } जब कोई
किसीका घर जले, कोई तापे } मनुष्य दूसरेकी विपत्तिपर हंसता है या उससे लाभ उठायता चाहता है, तब क०।

किसीका मुँह चले, किसीका हाथ—कोई गाली देता है, कोई मार घंठता है।

अप पुटकियां श्री भोगि, सो हम देश गानियां,
प्यारे किसीका हाथ, किसीकी जुवां चले । (शमानत)

किसीका लड़का कोई मन्नत माने—स्पष्ट ।
भगविकार चर्चापर क०।

किसीकी कुछ नहीं चलती, कि जब तकदीर फिरती है—भाग्यके सामने किसीका बग नहीं।

किसीके पौ चारह, किसीके तीन काने—जब किसीको लाभ और किसीको हानि होती है, तब क०

किसीकी भेंड़—जब कोई खुदगुरुज आदमी किसी दूसरेकी चीज ईमानदार बनकर हड़प लेनेकी स्वाहिय करता है, तब क०।

इसपर एक कहानी इस तरह है:—कोई खुदगुरुज सुझाये। उन्होंने किसीकी भेंड़ कहीं पायी। उनके मुँहमें पानी भर आया। वे भेंड़की अपनानेकी ताकमें लगे गये। लेकिन इस तरह किसका माल ले लेना गुनाह समझ अजा देनेकी ठहराई। फिर आप सभियदके कंगुरेपर चढ़ गये और अजा देने लगे। 'किसीकी' तो जोरसे चिल्लाते थे और 'भेंड़' बड़ो धीमी आवाजमें कहते थे। इस तरह तीन बार अजा देकर सुझा साहब भेंड़की हड़प गये।

किसीको तवेमें दिखाई देता है, किसीको आरसीमें—जब किसीकी बुद्धिमत्ता दूसरेसे अधिक भलकती है, तब क०। आरसीमें तो सभी अचना मुँह देखते हैं, परन्तु उसीकी बुद्धि सराहनीय है, जो तवेमें अचना मुँह देख सके।

किसीको बैगन वायले, किसीको बैगन पत्य—जब एक ही चीज पुरूके लिये हितकर और दूसरेके लिये अहितकर हो, तब क०।

(१) सौतिहि सुख सखि टुखद मोहि, सखि सारथके गथ ।
काह बैगन वायलो, काहकी है पथ ॥

(२) एक बहुत गुन होत है मित्र प्रकृतिके भाय ।
भटा एककी पित करत करत एककी वाय । इन्द ।

किसीने यह भी नहीं पूछा, कि तुम्हारे मुँहमें कै दाँत हैं—जब किसीके दुःखमें कोई खड़ा न हो, तब क०।

कीजे कहा पयोधिको जाते प्यास न जाय—
दे० 'काम जो आवे.....।'

फुआं बेचा है, फुएँका पानी नहीं बेचा—जब कोई बेघातके लिये दूसरेसे भगड़े, तब क०।

फुएँका व्याह, गीत गावे मसीदका—बेमौके वात कहनेपर क०। मसीद=मस्जिद ।

कुर्पकी मिट्टी कुर्प हीमें लगती है—जिस चीजकी कमाई उसीमें लग जाय, तब क० ।

कुर्पमें भांग पड़ी है—जहां सबकी श्रद्धा मारी जाय, यहां क०, अथवा जहां सभी मूर्खताकी यातें करते हैं, यहां भी क० ।

(१) एक ओर होय तो प्रान सिखावये,

कुर्पमें यहाँ भांग परी है । (हरिश्चन्द्र)

(२) मिय सदीवको दीप न धरै, मोसों आरु छपालव्य करी।

कई पखानो ज्यो जग गाय, कुर्प भांग परी दरसाय ॥

(शोर०कौ०)

कुर्पमेंकी मेढ़की, करै सिन्धुकी घात—जब कोई तुच्छ श्राद्धको लम्बी चौड़ी घातें करे, तब क० ।

कुर्पमें घांस डलवा दिये—बहुत खोजा । जब कोई मित्र बहुत तलाश करनेपर मिले, तब ध्यंगसे कहते हैं ।

कुंजड़नकी अगाड़ी, और कसाईकी पिछाड़ी—यदि तरकारी श्रद्धी चाहते हो, तो कुंजड़के पास पहले जायो, क्योंकि उस समय तुम्हें चीज तामी मिलेगी । यदि मांस श्रद्धा चाहते हो, तो कसाईके पास पीछे जायो, क्योंकि वह श्रद्धी चीज रोपमें बेचता है ।

कुंजड़ी अपने वेरोंको खट्टा नहीं कहती—अपनी चीजको कोई छुरी नहीं कहता ।

कच न गोयद कि दोगु मन तुयंपका ।'

कुयकट पनही घतकट जोय, जो पहलौठी विटिया होय, पातर छापि धीरहा भाय, कहैं घाघ दुख कहां समाय—फुनगी कटा हुआ जता, घात काटनेवाली स्त्री, पहलौठी लड़की, हलकी खेती और पागल भाई ये सब बहुत दुखदायी हैं । कुचाल संग फिरना, आपमृतमें गिरना—बुरोंकी संगत दुखदायी होती है ।

कुचाल संग हांसी, जीव जानकी फांसी—(ज०) ज० दे० ।

कुछ कमान भुके, कुछ गोसा—(व्य०) कमान घोर गुन जब दोनों ही भुक्ते हैं, तब तीर छूटता है । जब हिसाबमें फर्क पड़ जाय, तो उसे निपटानेके लिये कुछ न कुछ दोनोंको घाटा सहना पड़ता है । कुछ भुक्के वह सोने लगे, कुछ भुक्के मैं सोने लगा ।

कुछ खोहीके सीखते हैं—बिना ठोकर खाये मनुष्यकी श्रद्धा नहीं बढ़ती ।

कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे—जब एक दूसरेकी आन्तरिक इच्छा समझ जाता है, तब क० ।

इसपर एक कहानी यी है—कोई पविक बिरपर एक गठरी लिये कर्षीं जा रहा था । गरनीका दिन था, गठरी भी भारी थी । इसलिये वह एक गाइके तले बैठ रहा । संयोगवश एक सवार उसी राहसे जा रहा था । पविकने कहा, 'भाई ! मिरा मोफ भारी है, इसलिये तुम इसे अपने घोड़ेको पीठपर रख लो, मैं भागे सुकामपर पहुँचकर लूँगा ।' सवार उसकी बात भनसुनी करके चला गया । पविकने सोचा, कि अच्छा हुआ, यदि वह मेरी गठरी लेकर भाग जाता, तो मैं क्या करता । इधर सवारने अपने मनमें कहा, 'तुमने घर आई लक्ष्मी माफक बोझी ।' यह सोचकर वह खौट पड़ा और हुआकिसी मोला, 'सुके तुमपर दशा था गई, खा मैं वेरो गठरी पड़वाई ।' इसपर पविकने जवाब दिया, 'जायो भाई ! कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे । अब गठरी तुम्हें नहीं मिलती ।'

कुछ तो खरबूजा मोठा, और ऊपरसे कन्द—मिथैपर मोठा ।

कुछ तो खलल है कि जिससे यह खलल है—जब कोई गुस्तरहस्यहोनेका संदेह हो, तब क० ।

कुछ तो गेहूँ गीली, कुछ जिंदरी ढोली—जब दोनों तरफ कुछ खोट होता है, तब क० ।

कुछ तो चावली कुछ भूतों खदेड़ी—(ज०) बिल्ली खियोंको क० ।

कुछ डालमें काला है—जब किसी घातमें संदेह उपस्थित होता है, तब क० ।

(१) रतमानो संग मन्डुकार, सोई जौत मदी डगचार ।
सोच पखानो विश्रवाचोये, कजु दारमि कारो दोष ।
(शोर०कौ०)

(२) बाएजु है खून मिरा दिखो माला,
बलजाये किसे भीरको आला वाला ।
ये डुगूर ए गनीनो छसकी बेवजह मदी,
इह दालमें है लुहर बाजा काला । (रंजूर)

कुछ बसन्तकी भी खबर है ?—(१) जो बसन्तमें खुशी नहीं मनाते, उनको क० । (२) जो मनुष्य दुःखके समय खुशी मनाये, उसे भी ध्यंगसे क० ।

(३) जब घसल घात न मालूम हो, तब क० ।

कुछ मूमल नहीं बदलाना है—जब आदमीकी गरज निकल जाती है, तब पीछेसे क० ।

इसका विकास इस कदमीसे है। किसी समय एक मुसाफिरने लुटेरोंके भयसे मूसलमें अशरफिया भरके यात्रा आरम्भ की। रातके समय वह किसी गाँवमें एक बुढ़ियाके घर ठहरा। जब वह सो गया, तब उस बुढ़ियानि यात्रीके मूसलकी अच्छा देखकर उससे अपना मूसल बदल लिया। सुबेरे जब मुसाफिर उठा, तो उसी मालूम हुआ, कि मूसल बदला गया। उसने भेद न खुलनेके भयसे कुछ भी न कहा, वरं उसी बुढ़ियाका मूसल लेकर चल दिया। आगे जाकर किसी गाँवमें उसने अच्छे मूसल बनवाये और फिर उसी गाँवमें जाकर रास्ते रास्ते घूम घूमकर कष्टने लगा, 'जिसे पुराने मूसलसे भय बदलना ही वह लाये।' इसी प्रकार कुछ मूसल उसने बदले। जब उस बुढ़ियाको भी यह झाल मालूम हुआ, तो उसने यात्रीवाला मूसल जो कुछ पुराना सा था, लाकर बदलाया। जब मुसाफिरकी अखी मूसल, जिसके लिये वह प्रपञ्च रचा गया था, मिल गया, तो और लोगोंसे भी मूसल बदलानेकी खडे धे, कहा, कि अब हमें मूसल नहीं बदलाना है।

"कुछ लेते हो?" कहा "अपना काम क्या है"

"कुछ देते हो?" कहा "यह शरारत बंदीको नहीं आती"—स्पष्ट। स्वार्थीपर क० ।

कुछ लोहा खोटा, कुछ लुहारखोटा—जब दोनों तरफ कुछ छोट हो, तब क० ।

कुछ स्वार्थी कुछ परमार्थी—कुछ ईश्वर निमित्त कुछ अपने हेतु ।

'दी तुम नोत निधान लना परनारथ स्वारथ साधत दीज ।
(गुलाब)

कुटनीसे तो राम घचावे, प्यारी होकर पत उतरावे—(ज०) स्पष्ट ।

कुतिया चोरों मिल गई, पहरा किसका दे—

जब रक्षक ही भ्रष्ट हो जाता है, तब क० ।

करे न कोई सोचि सखि, रहे जो सौतहि नेह ।

कुतिया चोरों मिल गई, पहरा काको देह ॥

कुत्ताके धाटा होय, तो लिट्टी लगाके स्ताय—
(५०) स्पष्ट ।

कुत्ता घसीटीमें पड़ना—जब कोई ऐसे काममें फँस जाय जिसमें ज़िह्द उठानी पड़े, तब क० । आप तो कामको छोड़े, पर काम उसे न छोड़े, तब क० ।

कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें—यदि खर्च न हो, तो सभी शौक कर लें ।

कुत्ता चौक बढ़ाये, चपनी चाटन जाये—नीचका कितना भी आदर करो, मगर वह अपनी डुरी आदत नहीं छोड़ता ।

कुत्ता देखेगा, न भौंकेगा—छिपाकर रख दो, न कोई देखेगा न मांगेगा, ऐसे ही मौकेपर क० ।

कुत्ता निज पीरां मरे, मांगे मियाँ शिकार—जो आप ही कष्टमें पड़ा है, उससे कोई अपना मतलब निकालना चाहे, तब क० ।

कुत्ता पाय तो सवा मन खाय, नहीं तो दीया ही चाटकर रह जाय—स्पष्ट ।

कुत्ता पाले वह कुत्ता, मामा घर भांजा कुत्ता, वहन घर भाई कुत्ता, सासरे जमाई कुत्ता, सब कुत्तोंका वह सरदार जो सौरा रहे जमाई द्वार—स्पष्ट । इन लोगोंकी कदर नहीं होती ।

कुत्ता भी बैठता है, तो दुम हिलाकर बैठता है—जब कोई सफाई न रखे, तब क० ।

कुत्ता भौंके फ़ाफ़ला सिधारे—अपना काम किये जायों, बकनेवालोंको बकने दो ।

कुत्ता मुंह लगानेसे सिर चढ़े—नीचको मुंह नहीं लगाना चाहिये ।

कुत्तेका मगज़ खाया है—बड़े बकबादीको क० ।

कुत्तेकी नौद—कम सोनेवालेको क० । कुत्तेकी नौद ज़रासे खट्टेमें खुल जाती है ।

कुत्तेकी टुम बारह चर्पे नलवेमें रखो तौमी टेढ़ीकी टेढ़ी—जिस आदमीकी डुरी आदत किसी तरहसे भी न जाय, उसे क० । कुत्तेकी पूंछ यदि ज़मीनमें सीमी करके गाड़ी जाय, तौमी निकालनेपर टेढ़ी ही हो जायगी ।

कुत्तेकी मौन मरना—धेमौत मरना अथवा डुरी तरह मरना । जब कोई आदमी चारों तरफसे विपत्तिमें पड़ जाय और उससे किसी तरह भी छुटकारा पानेका रास्ता न मिले, तब क० ।

कुत्तेके पैर जाना, गिल्लीके पैर धाना—जल्दी ही जाना और जल्दी ही धाना हो, तब क० । कुत्ता

और चिल्ली ये दोनों ही जल्दी चलते हैं। दूने पैरों जानेके लिये भी कही जा सकती है, क्योंकि दोनों हीके चलनेमें आवाज नहीं होती।

कुत्तेके भौंकनेसे हाथी नहीं डरते—इन्दिमान् और गम्भीर मनुष्य आदिके तानोंसे नहीं डरते।

कुत्तेको घी नहीं पचता—(१) आँद्रेके पेटमें घात नहीं पचती। (२) आँद्रेके पास यदि धन हो जाय, तो वह उसे छिपा नहीं सकता।

कुत्तेको मस्जिदसे क्या काम—(मु०) जब कोई नीच सत्पुरुषोंके समाजमें जा बैठे या कोई पापी पुण्य करनेका ढोंग रचे, तब क०।

कुत्तेको मौत आवे, तो मस्जिदमें मृत आवे—(मु०) क्योंकि वहाँ मृतनेसे ही उसे बहुत मार पड़ेगी।

कुत्ताको हड्डी भली लगती है—गन्देको गन्दी चीज ही अच्छी लगती है। हिन्दू लोग मांसाहारियोंको व्यंगसे क०।

कुत्ते तेरा मुँह नहीं, तेरे साँईका मुँह है—कुत्तेके भौंकनेपर कोई कहता है, यह भौंकना तेरा नहीं तेरे मालिकका है। जब कोई सामान्य मनुष्य किसी पड़ेकी शब्द पाकर चमकता है, तब क०।

कुनवेवालेके चारों पल्ले कीचड़में है—जिसका कुटुम्ब बड़ा होता है उसपर हर वस्तु, विपत्ति पड़नेकी संभावना रहती है। जब कोई गृहस्थ दूसरेके घरके ऐव दिखाता है, तब उसे क०।

कुम्हारका गधा जिसके चूतड़में मिट्टी देखे उसीके पीछे—क्योंकि उसीको वह अपना मालिक समकता है।

कुम्हार फहसे गधेपर नहीं चढ़ता—दे० 'कहते कुम्हार...'

कुम्हारके घर चक्कीका दुख } जहाँ ऐसी चीज-
कुम्हारके घर घासनका काल } का अभाव हो
जो वहाँ न होना चाहिये, वहाँ क०।

कुम्हारसे पार न बसाय, गधेके कान धमेंटे—जब कोई बलवानपर धाया हुआ गुस्ता गरीबपर उतारे, तब क०।

कुस्तीका बहमक—(१) मूर्ख बड़े आदमीको क०। कुर्सीपर धनी मानी लोग ही बैठते हैं। (२) कुर्सी

अवधमें एक झोटासा शहर है। वहाँके लोग मूर्खताके लिये प्रसिद्ध हैं।

कुरानपर कुरान रखनेका क्या डर है—(मु०)

कुड़ नहीं, परन्तु दूसरी कोई चीज कुरानपर नहीं रखी जा सकती। जहाँ बराबरीका दावा हो, वहाँ क०।

कुलका दीपक पुत्र है, मुखका दीपक पान, घरका दीपक इसतिरी, धड़का दीपक प्रान—स्पष्ट।

कुलेलमें गुलेल—खुशीमें रंज। जब उसके समय एकाएकी विघ्न पड़ जाय, तब क०।

कुल्ला करे न दाँतन फेरे, फिर कैसे हों दाँत निखरे—स्पष्ट।

कुल्हियामें गुड़ नहीं फूटता—बड़े काम छिपाये नहीं जा सकते। गुड़ बहुत बड़े और मजबूत बरतनोंमें रखा जाता है, क्योंकि इसके बड़े बड़े ढाँके और चक्के बनाये जाते हैं।

सुरत खेद लखि नार नवीन, कछो बंगसे पनि परवीन।
नेकु क्षिपि नधि' लाख बिपाई, कुल्हियामें गुफ कूटि नाई ॥

(लक्षिता)

कुरातह कुरातह मीकुनद—(का०) कुयता आदमीको मार भी डालता और बलवानभी करता है। कुयता धातु घटित औपधिते बनता है जिसे हकीम और पैय रोगियोंको देते हैं।

कुसमय पड़े दुश्मनसे हेत—(नीति) आपत्ति घानेपर शत्रुसे भी मित्रता करनी चाहिये।

इसपर एक कहानी इस तरह है—एकचूहा रात्रिके समय खानेकी मनषमें जिससे बाहर निकला। एक चूहने, जो एक बचपनी बालपर बैठा था, उससे देख पाया। उसी समय एक नेवलेने देखा, कि चूहने चूहेकी घातमें बैठा है और चूहा उसके करीब अपने बिलमें घुसा चाहता है। वह नेवला बिलके मुँह पर आ बैठा, जिससे चूहेके पाने की लसि पकक से। देखात उसी समय एक बिल्ली भी वहाँ लसेके जालमें लगी जगह फँस गई थी। चूहने अपने ली दोनों गधुओंसे घिरा ज्ञान तीसरे शत्रुबिल्ली के जालमें प्रवेश किया। उसने बिल्ली से कहा, "मेरी ज्ञान तुम्हारे पास है। यदि तुम मुझे न मारो तो मैं तुम्हें बचा दूँ। इधमें दोनोंकी ही जान बच जायगी!" जब बिल्ली अपने जालको देखने पाया, तो उसके करीब चूहा और

नेवला भाग गये और चूड़ने जान काटकर विज्ञीको भगा दिया, तथा आप भी भागकर अपने बिलमें चला गया। दूसरे दिन विज्ञी चूड़के पास आई और बोली, "आधो भिव। हम तुम दोनों मिलने।" चूड़ने कहा, "कुसुमका पढ़ने से ही दुश्मनके साथ हीन करना चाहिये, सब समय नहीं।" क्योंकि वह जानता था कि बिलके बाहर निकलते ही विज्ञी उसे खा जायगी।

कुसुमका रङ्ग तीन दिन, फिर बदरङ्ग—जो चीज स्याई न हो, उसपर क०।

कुजे ढलें कि माट—कोई नहीं कह सकता, कि पहले यूँ मरेगा या लड़का। जब किसी बूढ़ेको मरनेके लिये कहा जाय, तब वह चिढ़कर कहता है। "पहिले घड़ा फटे कि मटकैना" भी क०।

कूटनवारी कूटी गई, सास पतोह एकी भई—जब दो आदमीकी लड़ाईमें तीसरेकी हानि हो जाय और वे दोनों एक हो जाय, तब क०।

कूटो तो चूना, नहीं खाकसे दूना—चना जितना कूटा जाय उतना ही उसमें लस होता है, नहीं तो मट्टीके बराबर है।

कूड़ीके इस पार या उस पार—आलसी मनुष्यपर क०। किसी कामका बारा न्यारा करनेपर भी क०।

कूड़ेपर फूलेल डालना—(१) चीजकी बरवादी करना (२) कूटनके साथ नेकी करना।

कूत थोड़ा मंजिल चड़ी—जो काम सामर्थ्यके बाहर हो, उसपर क०।

कूद कूद मलली घगुलेको धाय—उल्टे जमानेपर क०।

कूदते कूदते नचैया हो जाता है—अन्यास करनेसे कुशलता धाती है। गाते गाते कलावत या कीर्तनिया हो जाता है।

कूद मुप कूद, तेरी नलियोंमें गूद, निकल गया गूद, तो रह गया मरदूद—(मु० ज०) स्पष्ट।

कूदे फाँदे नाड़े तान, ताको दुनिया राखे मान—जब गुणकी कदर नहीं होती, तब क०।

कूप भेक जाने कहा, सागरको विस्तार—(कूद) स्पष्ट। भेक=मैंटक।

कूवत थोड़ी मंजिल भारी—दे० 'कूत थोड़ा'

केऊके लेखे जेठ पूत केऊके लेखे कनचा—जो घरवालोंके लिये तो बहुत कामका हो, पर बाहरवाले कम उमर जानके उसे पचा ही समझते हैं, उसे क०। केकर केकर धरों नाम, कमरी ओढ़ले सारो गाँव—(प०) किसका किसका नाम लिया जावे, सारा गाँव कंवल थोड़े है। जिस मण्डलीमें सबके सब खराब हों, वहाँ अलग अलग किसका नाम लिया जाय?

के करनी करे केकरा सिरि चोते—(प०) काम करे कोई, मगर उसका उत्तरदायी कोई दूसरा हो, तब क०।

केकर खेती केकर गाप, घरवस कोई मारा जाय—जब कोई निर्दोषी मनुष्य किसी अन्य दोषीके कारण कष्ट पावे, तब क०।

कोई आइनेमें देखे तो कोई आरसीमें—स्पष्ट। कोई ओढ़े शाल दुशाला, मोरा पियवा ओढ़े कालीकमरिया—कोई तो शाल दुशाला ओढ़ता है, पर मेरे स्वामी काले कम्बलमें ही मस्त हैं। जब किसीके पास दुनियाभरकी ऐश अस्सतका सामान मौजूद रहनेपर भी उसे सादगी ही पसन्द हो, तब क०।

कोहरीके गाँवमें घोधी पटवारी—(१) जैसा मालिक होता है, वैसा उसे कारिन्दा मिलता है। मूर्खको मूर्ख ही भाता है। (२) कोहरीसे घोधी हिसाब रखनेमें चतुर होता है, इसलिये क०। जैसे अन्धोंमें काना राजा।

कोई आँखका अन्धा, कोई हियेका अन्धा—जब कोई समझानेसे भी नहीं समझता हो, तब क०।

कोई कहके दिखाय, हम करके दिखायें—कोई तो केवल किसी कामके करनेको कहकर ही रह जाता है, पर मैं कार्यको सम्पूरातः समाप्त करके ही छोड़ता हूँ।

कोई काम करे दामसे, हम दाम करे कामसे—कोई पूँजी लगाकर रोजगार करता है, हम परिश्रम करके पूँजी पैदा करते हैं।

कोई खींचे लांग लंगोटी, कोई खींचे मूळरियां, फाँटे चढ़के दी दुहाई, कोई मत करियो दो जनियां—दो ब्याहवालोंपर व्यंग है।

कोई दमका दमामा है—मनुष्यके जीवनपर क० ।

क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है ।

कोई दमका मेहमान है—थोड़ी देरतक रहनेवाला मेहमान । जब कोई आदमी मर रहा हो, तब क० ।

कोई भी माके पेटसे लेकर नहीं निकला—काम सीखनेसे ही आता है, जन्मकालसे नहीं आता ।

कोई मरे कोई जीये, सुधरा घोल बतासे पोये }
कोई मरे कोई मलहार गावे—

स्वार्थीको क० । जब कोई दूसरेकी विपत्तिपर हंसता है, तब क० ।

कोई मालमें मस्त, कोई श्यालमें मस्त—कोई सम्पत्ति पाकर ही खुश रहता है, चाहे वह उसे काममें लाये या न लाये और कोई सम्पत्तिको अच्छे कामोंमें लगाकर ही खुश होता है ।

कोई मुझे न मारे तो मैं सारे जहानको मार आऊँ—एरपोक आदमीको क० ।

कोई हाल मस्त कोई माल मस्त—कोई अपनी वैफिकीमें मस्त रहता है और कोई, अपने मालमें ही मस्त रहता है ।

क्यों समझे तबहरोंको हम बालादस्त ।

क्या उनको हमारे भागे है दूद भी हम ।

किस बातमें रघु र हम उगरी काम है ।

बो शालमें मस्त है हम श्यालमें मस्त है ।

कोउ न काहु दुख सुखकर दाता, निजशक्त फर्म भोग स्वयं आता—(तुलसी) इस संसारमें दुःख सुख देनेवाला कोई नहीं है । मनुष्य अपने पूर्वजन्मके किये हुए कर्मोंको ही भोग करते हैं ।

कोउ नृप होहु हमें का हानी, चेरि छोड़ि नहिं होउव रानी—(तुलसी) जब कोई नौकर अपने मालिककी भलाईके लिये ही उन्हें कुछ कहता है मगर उसकी बात अनगुनी कर दी जाती है, तब क० ।

को फडि सके धड़न सों, छोट चड़ीए भूल । दीने दर्द गुलाबकी, दन डारन ये फूल—बड़ोंमें भी दोष पाया जाता है । यद्यपि गुलाब अच्छा फल है, तौ भी उसकी डालमें काँटे होते हैं ।

कोखकी आंच सही जाती है, पेड़की आंच नहीं सही जाती—(ज०) (१) प्रसन्न-वेदना सही

जाती है परन्तु पेठका दर्द सहा नहीं जाता । (२) सन्तानकी मृत्यु सही जाती है, पर पत्तिकी मृत्यु नहीं सही जाती । (३) सन्तानकी मृत्यु सही जाती है किन्तु भूखकी ज्वाला नहीं सही जाती ।

कोटि जतन कोऊ करे, परे न प्रवृत्तिहिं धीच । नल धल जल ऊँचो चढ़े, अन्त नीचको नीच—

जब कोई नीच मनुष्य ऊँचे पदपर बैठकर भी नीच काम करे, तब क० । कोटि उपाय करनेपर भी किसीका स्वभाव नहीं बदलता, जैसे नलके जोरसे फुहारेका पानी ऊँचे चढ़ता है, अन्तमें नीचे ही आ जाता है । उसी तरह नीच ऊँचा होनेपर भी नीच ही रहता है ।

कोटिन दाख खवाह मरो, पर अँटहिं काठ कठेरोइ भाचे—ज० दे० ।

कोटिन रङ्ग दिखावत है, जब अङ्गमें आवत भङ्ग भवानी—भंगेदियोंका कहना है ।

कोठी कुठलेको हाथ न लगाओ, घरघार सय तुम्हारा—(१) जो खी अपनी बहूको घर नहीं सौंपा चाहती, उसपर क० । (२) थोड़ी पातिदारी अथवा कठी पातिदारीपर क० ।

(१) जूना न बीजु कोई घर भर है सय तुम्हारा ।

(२) जो कछु है सो निधारी है, पै इनामको नाम रचि मत कीजिये ।

कोठी धोये कीच हाथ लगे—पुरा काम करनेसे धुराई ही हाथ लगती है ।

कोठीमें चाउर घरमें उपास—(पू० ज०) मूर्ख और सुमर क० ।

कोठीमेंसे मोठी नहीं निकली—(१) जब पूंजी, बिना लूच ज्योंकी त्यों बनी रहे, तब क० । (२) जो युवक प्रवचनसे रहे, उसे क० ।

कोठेकी रहनेवाली, जूनि पै आगई, रफ्तै रफ्तै अपने फरीने पै आगई—जब कोई मनुष्य उच्च स्थान प्राप्त कर पुनः अपने निम्न स्थानपर आ जाये, तब क० ।

कोठेवाला रोये, छपरवाला सोये—धनीमें निधन वैफिक होता है ।

कोठेसे गिरा सम्हलता है, नज़रोंसे गिरा नहीं सम्हलता—जब कोई चार आदमियोंकी निगाहसे उतर जाता है, तब क० ।

कोढ़में खाज—जब दुःखपर दुःख पड़ता है, तब क० ।

कोढ़ीके जू नहीं पड़ती—क्योंकि उसका खून खराब होता है ।

कोढ़ीको दाल भात कमासुनको फुटहा—(पू०) स्पष्ट । फुटहा=भुनी हुई ज्वार ।

कोढ़ी डराये धूकसे—एक तो कोढ़ी, दूसरे उसका थक, इसलिये लोग उससे डरते हैं ।

कोढ़ी मरे संगती चाहे—जो अपना सा बुरा दूसरोंका भी चाहे, उसे क० ।

कोतवालाको कोतवाली ही सिखाती है—कामको काम सिखाता है ।

कोता गर्दन तड़पेशानी, हरामज़ादेकी यही निशानी—स्पष्ट ।

कोता गर्दन दुम दराज़, फंजी आँख फवूतर-वाज़ । सौमें एक, सहस्रमें काना, सवा लाखमें ऐं'चा ताना । ऐं'चा ताना करी पुकार, गंजेसे रहियो हुशियार । जाकी छाती एक न चार, वह मानव सबका सरदार—स्पष्ट । यह सब बुरे समझे जाते हैं ।

कबिकाना भवेत् साधुः ।

कोढ़ोंका भात किन भातनमें, भौर ममियां सास किन सासनमें—(पू०) स्पष्ट ।

कोढ़ों देके पड़े हो !—कम पढ़े लिखेपर क० ।

को बड़ छोट कहत अपराधू, सुनि गुनि भेद समुंभि हैं साधू—(तुलसी) जब दो वस्तुओंमें किसीको भी अच्छी बुरी कहते नहीं, बनता, तब क० ।

कोयल, काले कौबेकी जोरू—जब दोनों बराबर बुरे होते हैं, तब क० ।

कोयला होय न ऊजला, सी मन साबन लाय—नीच लाख उपाय करनेपर भी अपनी आदत नहीं छोड़ता ।

कोयलेकी दलालीमें हाथ काले—संगतका फल

कोरे गजें बून्द न एक—जो आदमी यकता बहुत और करता कुछ नहीं, उसपर क० । (२) जब बुरा काम करनेसे बदनामीके सिवा कुछ हाथ नहीं आता, तब अथवा कोई काम करनेमें व्यर्थ परिश्रम होता है और बदनामी मिलती है, तब क० ।

कोलीका घर जले, कलन्दर गांडा मांगे—जो केवल अपना ही स्वार्थ देखे और दूसरेकी हानिपर कुछ भी परवाह न करे, तब क० ।

कोल्हका वैल—जो दिन रात काम करे, उसको क० । कोल्हके वैलको घरमें भी पचास फोस—जो मनुष्य घरमें रहकर दिन रात मेहनत करे, उसपर क० ।

फिरति थकी ही रहति नहिं, मानिनि मानसबास, ज्यों कीनुत्रके वैलकी घर ही कीस पचास । (लो० र० की०)

कोल्हसे खल उतरी, भई वैलों जोग—बूढ़े मनुष्यको, या जो मनुष्य अपने पदपरसे हटा दिया जाय, उसपर क० । जिस तरह तिलमेंसे तेल निकाल लेनेपर वह खल हो जाती है, उसी तरह बूढ़ा मनुष्य भी धलहीन होनेसे निकम्मा हो जाता है । कोस चली न बाबा प्यासी—जो मनुष्य थोड़ी ही मेहनतसे थक जाय, उसे क० ।

कोसे जियें, असीसे मरें—जिते कोसा जाय वह जीये और जिते आशीर्वाद दिया जाय, वह मर जाय, तब क० । कलियुगमें दुनियांकी उल्टी रीति-पर क० ।

कौआ अपने शिशुन फों, सबतें जानत सेत—अपने बच्चे सभीको छन्दर लगते हैं ।

इसपर एक कहानी है :—एक रानीने अपने हाथसे भोजियोंकी टोपी बनाई । रानीके कोई लड़का न था । इसलिये उसने अपनी दासीसे कहा, कि गहर भरमें जो लड़का सबसे ज़ बहुरत हो उसे ले आ, मैं अपने हाथसे उसे यह टोपी पहनाऊँगी । दासी अपने लड़केकी जो काला, काना और चेचक मुँह दाग था, ले आई, और कहा । इससे सुन्दर लड़का और कोई मेरी निगाहमें नहीं आया ।

कौआ कान ले गया—जो मनुष्य बिना सोचे विचारे दूसरेकी बातका दृढ़ विश्वास कर लेता है, उसको क० ।

ले गया" वह मूट कौबिके पीछे दौड़ा। जब भीगने इसका कारण पूछा तो वह बोला कि "मेरा कान कौआ ले गया है इसीलिये उससे कौननेके लिये लकड़के पीछे दौड़ता हूँ।" इसपर एक आदमीने कहा, "कान तो तुम्हारे दोनों हैं सीधरा कहांसे भाया, जो कौआ ले जाता।" जब उसने अपने दोनों कान हाथसे टटोलेके देख लिये, तो वह बहुत लजित हुआ।

कौआ चला हंसकी चाल, अपनी चाल भी भूल गया—जो मनुष्य अपनी चाल छोड़कर बड़े आदमीकी नकल करता है और उससे उसकी हानि होती है, उसपर क०।

कौआ टरटराता ही है, धान सूखते ही हैं—(पू० ज०) जब अपना काम अच्छी तरहसे होता जाय और फालतू लोगोंके अड़इना डालनेसे उसमें कुछ भी विघ्न न पड़े, तब क०।

कौआ पिंजड़ेमें परे, चोलत नहीं सुकयानी—कौआ यदि पिंजड़ेमें रखकर पाला भी जाय, तो वह तोतेकी सी धोती नहीं धोलेता।

कौआ सों मेल गेल्ह बुधियार—(मे०) मेथिली भाषामें 'गेल्ह' चिड़ियोंके छोटे बच्चेको कहते हैं। इसका मतलब यह है, कि कौबिके उसका बच्चा ही होयियार होता है।

इसपर एक कहानी इस तरह है—किसी कौबिके अपने बच्चेको सिखलाया कि जब कोई ईंट उठाकर तुम्हें मारने दौड़े, तो तुम्हें छड़ आना नहीं तो पीट लीयो। इसपर बच्चा बोला, कि यदि वह पहलेसे ही हाथमें ईंट धिपाये रखे, तो मैं कैसे जानूँगा। यह सुनकर कौबिके बच्चा, "सुभसे तुम्ही होयियार निकला।" जब बापसे बेटा अधिक बुद्धिमानीको शल करे, तब क०।

कौएकी डुममें अनारकी फली—(च०) जब कोई काला या बदशरणा आदमी लाल रङ्गकी या बड़िया पोशाक पहने, तब व्यंगसे क०।

कौड़ीके तीन तीन—बहुत सस्ती चीजपर क०। जिसकी कुछ कदर नहीं होती, उसे भी क०।

कौड़ीके सब जहानमें नकली नहीन हैं।

कौड़ी न हो तो कौड़ीके फिर तीन तीन हैं ॥ (नज़ीर)

कौड़ी कौड़ीको मुहलाज—बहुत गरीबी हालतपर क०।

कौड़ी कौड़ी जोड़के, निधन होत धनवान। अक्षर अक्षरके पड़े, मूल्य होत सुज्ञान—स्वप्न, स्वप्नान्त है। कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी करवातें छलकी, मारी योम्न धरा सिर ऊपर किस विध हो छलकी—स्वप्न।

कौड़ी न रख कफ़नको विजजूकी शकू बन रह—फैलसफ़को क०।

कौड़ी नहीं गांठमें, चले यागकी सैर—जब मनुष्य बिना सामानके किसी कामके लिये तत्पर हो जाय, तब क०।

कौड़ी न हो पास, मेला लगे उदास—स्वप्न।

कौड़ी नहीं पास, पड़ी अफ़ीमकी चाट—एक तो अफ़ीम महँगी दूसरे उसपर तर माल पानेको चाहिये।

कौड़ीपर खून नहीं होता—सामान्य चीजपर कोई नियत नहीं किगाइता।

कौन अभागो राम न भावे—स्वप्न।

कौन किसीके आये जावे, दाना पानी खँच लावे—अन्न जल मुख्य है।

कौन गिने उड़गन आफ़ाश—अकाशके तारे किसने गिने हैं।

कौनों गुनगन गनो गुज्ञान,

जीहि विधि भेन परे भी मान।

कहि उक्ति व्यौं बुद्धि प्रकाश,

कौन गने उड़गन आफ़ाश ॥ (बी० र० कौ०)

कौनसा दरफ़त है जिसे हवा नहीं लगी—समीचे थोड़ा बहुत कष्ट होता है।

जिमे तावे हमर न शर्मा ही हवा,

ऐसा दुनिधोमें कीई मजदारी नहीं ॥

कौनसी चक्कीका पीसा खाया है—बहुत मोटे आदमीको क०।

प्या आग लेते आये थे ?—जब कोई थान और तुरत चला जाय, तब क०।

प्या उधारकी मा मारी गई है ?—(ब्य०) जब बर्ज़ नहीं मिलता, तब क०।

प्या कौयलोंकी नाय डूय जा रागी—कौन ऐसी मारी हानि होगी। जब बिनाको बहुत कम कामकी चीज खोई जाती है, तब क०।

क्या खूब सौदा न बंद है, इस हाथ दे उस हाथ ले—जब कोई बुरा काम करे और उसका फल तत्काल मिल जाय, तब क० ।

'कलियुग नहीं करयुग है ये, साँ दिनकी दे और रातले ।
क्या खूब सौदा न कूद है, इस हाथ दे उस हाथ ले ॥'
(नजीर)

क्या गोमतीका पानी पिया है ?—जिस पुरुषमें जनानापन हो, उसे क० । लखनऊवालोंको तानेसे क० ।
क्या घोड़े बेचके सोये हो ?

क्या लड़कीका विवाह कर सोये हो ? } पर क० ।

'जगे रैन दम्पति हित काम, पीड़े लपटि पाक्षि याम ।
कहै पखानो बुद्धि उजागर, घोड़े बेच सोये सौदागर ॥'
घोड़े बिक जानिपर सौदागर सुखसुंघोले है ।

क्या जाने गँवार घुँघट्याका यार—(ज०) गँवार देहातीपर क० । क्योंकि येभे मकी कदर नहीं जानते ।

क्या पानी मथनेसे घी निकलता है ?—सूमके प्रति क० ।

क्या मकखीने छींक दिया ?—जब कोई मनुष्य काम करते करते छोड़ दे, तब क० ।

क्या मुँह और क्या मसाला—जब कोई मनुष्य ऐसी बात कहे वा वैसा काम करे जिसके कहने वा करने लायक, वह न हो, तब क० ।

क्या मुँहसे फूल भड़ते हैं—जब कोई मुखसे कटु वचन निकालता हो, तब उसे व्यंगसे क० ।

'बोलत वचन भरत अनु फूला' (तुलसी)

क्या साँपका पाँव देखा है ?—जब कोई असम्भव बात कहे, तब क० ।

क्या साँप सूँघ गया ?—जिसे साँप काटता है, वह बोलने लायक नहीं रहता । जब कोई बातका जवाब न दे, तब क० ।

क्या सासूजी अटको मटको, क्या मटकाओ कूला । डोलीपरसे जब उतरूंगी, जुदा करूंगी चूल्हा—गड़े भगड़ाल यह साससे कहती है ।

क्या सोवे राजाका पूत, क्या सोवे योगी श्वधूत—दो ही छलसे सोते हैं ।

क्या सौ रूपयेकी पूंजी, क्या एक बेटेकी मौलाद—थोड़ी पूंजी जल्दी खर्च हो जाती है और एक

क्या हाथ पैरोंमें मेंहदी लगी है—खालसी मनुष्यपर क० ।

क्या ही पिदड़ी, क्या ही पिदड़ीका शोरवा—किसी दुच्छ वस्तु वा मनुष्यपर क० ।

क्योंकर री तू उतरी पार ? क्योंकर री तू चाली घाट, क्योंकर री तूने यह घर जाना,

क्योंकर री तूने मुझे पहचाना ?—किसी चीजसे एकको नफरत होती है और दूसरा उसे प्यार करता है, तब क० ।

इसका निकास एक कहानोसे इस प्रकार है—किसी स्त्रीका रोज़ कढ़ी खाते खाते जो ऊब गया था । इस लिये वह मदीके उस पार अपने किसी रिश्तेदारके यहाँ चली गई । दुर्भाग्यवश उसे वहाँ भी कढ़ी ही खानेकी मिली, जिसे सन्तोषन करके उसने उपरोक्त बातें कहीं ।

क्यों कहीं और क्यों कहाई ?—जब कोई किसीको एक कहे और दूसरा चार सनावे, तब क० ।

क्यों काँटोंमें घसीटते हो ?—जब कोई बड़ा आदमी किसी युवकका सम्मान करे, तो वह शर्मिन्दा होकर कहता है ।

हर कदम पाँव पर रखते हैं खार-ए-सर-ए दस्त, ऐ जन्म ! तूने तो काँटों पर घसीटा हमको ।

क्योंतू लाइसमें कदम कदमपर काँटि अपना चिर हमारे पाँवपर रखते हैं । तू हमें क्यों काँटों पर घसीटता है ? मतलब यह है कि हम इस प्रतिष्ठाके पात्र नहीं, हमें यह प्रतिष्ठा देना मामों काँटोंपर घसीटना है ।

क्यों बहिश्तमें लात मारते हो ?—(१) जो मनुष्य भोग विलासमें बहुत लगा रहता है, उसे क० । (२) भूटेको भी क० ।

क्यार कासा भड़हा, आया बरसा चड़हा—(पं०) जिस मनुष्यको एकाएकी क्रोध आवे और शान्त हो जाय, उसपर क० । आश्विनकी वर्षा बहुत देरतक नहीं ठहरती ।

क्यार जाड़ेका द्वार—आश्विन माससे जाड़ा आरम्भ होता है ।

क्यारी खाय रोडियाँ, ब्याही खाय बोडियाँ—(पं०) क्यारी लड़की केवल रोटी ही खाती है, लेकिन ब्याहीको हर त्योहारमें कुछ न कुछ देना ही

ख

खग जाने खगही की भाषा— (तुलसी) जो जिस सङ्गमें रहता है, वह उसीका हाल जानता है ।

खट्टन गये कमाऊ, कुछ खट्ट मी लाये, शक्कर चाँटो घीघी, मियाँ जो घर फिर भाये—निखट्टू-को क० ।

खड़े पीरका रोज़ा रक्खा है क्या ?—(सु०) जब कोई आदमी किसी मजलिस वा सभामें जाता और वहाँ खड़ा ही रहता है, तब उसे व्यंगसे क० ।

खूता करे घीघी, पकड़ी जाय चाँदी—जब कसूरकरे कोई, और उसका दयाड पावे दूसरा, तब क० ।

खत्रीसे गोरा सो पिण्ड रोगी—स्पष्ट । जब कोई अरनेसे अधिक बुद्धिमानको दुःखमेंको घेष्टा करे, तब क० । खत्री जाति रंगरूपके लिये प्रसिद्ध है ।

खरको गड़ न्हवाइये, तऊ न छड़े छार—(वृन्द) किसीका जाति-स्वभाव नहीं छूटेता ।

खर गुड़ एक ही भाव—जहां भलेबुरेका कुछ विचार न हो, वहां क० ।

भले बुरे जड़े एकही, तहां न बसिये जाय ।

व्यो भयावपुरमें बिकै, खर गुड़ एकै भाय ॥ (वृन्द)

खरबूजा चाहे धूपको, और आम चाहे मेह । नारी चाहे ज़ोरको, और बालक चाहे नेह—स्पष्ट ।

खरबूजेको देखकर खरबूजा रङ्ग पलटता है—जब कोई देखदेखी शोक करे तब, या एकको देखकर दूसरा क्रिडाई, तब क० ।

खरसा प्यारा बीजना, स्याले प्यारी आग । वर्षा प्यारी तीन चीज़, कंबल छाया राग—स्पष्ट । खरसा=गरम श्वेत; बीजना=पंखा; स्याले=जाड़ा; छाया=छप्पर । राग=गाना ।

खरा खेल फरकावादी—खरे आदमीको कहते हैं, जो किसीके देने लेनेमें नहीं रहता । किसी समय फर्हावादामें बहुत खरी चाँदीका खया बनता था, उसीपर इस मसलका निकास है ।

खरादीका काठ फाटे हीसे कटता है—खण्डनेसे ही चुकता है, वा काम करनेसे ही होता है ।

खराब खस्ता, नाज सस्ता—भाग्यहीनको क०, उसे लोग सस्ते नाजकी तरह त्याग देते हैं । संस्ता=कम दामका, जैसे कोदो मड़ुआ बगैरह ।

खरीस्ती कुतिया और मखमलकी भूल—(च०)

जब बद्सूरत आदमी शब्दी पोशाक पहने, तब क० ।

खरी कहैया दाही जार—सच कहनेवाला बुरा समझा जाता है ।

खरी कि होय सुरघेनु समाना—(तुलसी) गधी कामधेनुकी बराबरी नहीं कर सकती । नीच साधुके तुल्य नहीं हो सकता ।

खरी मजूरी चोखा काम—नगद मजूरी देनेसे काम शब्दा होता है ।

जई राखन चाइइ व्यवहार, अधिक रखइ तई व्याव विचार ।

लेइ न भूलि सकुच कर नाम, “खरी मजूरी चोखा काम”

खर्च घना और पैदा थोड़ी, किसपर बाँधूँ घोड़ा घोड़ी—स्पष्ट ।

खर्च बड़ा और काम रजगार, मनई घरके सव सुकुमार ; टटिया घरमें लौका बरे, वही घर कुशल विधाता करै—स्पष्ट ।

खलकका हलक किसने बन्द किया—दुनियाके सुँहको कौन बन्द कर सकता है ?

खलीलख़ाँ फ़ाख़ता उड़ा गये—अगहोनी बात हर घड़ी नहीं होती । दिल्लीमें एक खलीलख़ाँ हो गये हैं, जिन्होंने कबतरकी जगह फ़ाख़ता उड़ाई थी ।

खल्ककी ज़वान खुदाका नकारा—जगताकी रायको ईश्वरका हुकम समझना चाहिये ।

‘बना कहे जिसे आत्म, चर्च बना समझी ।

जवान खलककी नकार-ए. पुदा समझी ॥ (जौक)

खल्क खुदाकी मुल्क बादशाहका—सृष्टि ईश्वरकी और जमीन बादशाहकी है ।

खस काम जहां पाक—(१) पापी मनुष्यपर क० (२) जिस चीजमें जितना ही पूड़ा करस्ट कम रहता है, वह उतनी ही शुद्ध रहती है ।

पै कर भायें बिजगत ओ गाइरुंमार ।

कहें मिलके “राम काम जहां पाक” सारे । (इफो)

खसम औरतकी ढाल है—औरत खसमकी मौज-
दागीमें कोई नीचा काम भी कर बैठे, तो उसका
बचाव हो जाता है ।

खसमका खायँ, भाईका गायँ—(ज०) हिन्दू
स्त्रियाँ भाईपर बहुत स्नेह करती हैं और यही चाहती
हैं जिससे उनकी उल्ल्याति हो ।

खसम किया सुख सोनेको, कि पाटी लग लग
रोनेको—(ज०) अभागि लड़की जिसकी शादी बूढ़े
पुरुषसे हुई है, कहती है। अथवा जिसका पति
घरमें नहीं रहता, उसका कहना है ।

खसम देवर दोनों एक सासके पूत, यह हुआ
चा वह हुआ—(ग्रा० ज०) जाट जातिकी स्त्रीके प्रति
कही जाती है, क्योंकि वह देवरके साथ रहनेमें कोई
दोष नहीं समझती । (२) खसम और देवर दोनों
एक ही माके लड़के हैं, इसलिये दोनोंका सम्मान
धरावर है ।

खसमसे छूटे तो यारोंके जाय—स्पष्ट । व्यभिचा-
रिणी स्त्रीको क० ।

खाइये मन भाता, पहनिये जगभाता—अपनेको
रुच्ये सो खाना चाहिये और सबको पसन्द आवे यह
पहनना चाहिये ।

खाई करे कमाई, कपड़ करे सिद्धार—अससे जान
बचती और कपड़से बदन सजाया जाता है ।

खाई भली, कि माई भली—खाना मासे प्यारा है ।

खाई मुगलकी ताहरी, फहाँ जायगी वाहरी—
मुसलमान बहुत उमदा खाना खाते हैं, उसीपर इस
मसलका निकास है ।

खाओ न पीओ, युग युग जीओ—कृष्णपर क० ।

खाऊँ तो गेहूँ, न तो रहुँ पहेँ—जो खानेके शौकीन
होते हैं, उनपर क० । जिह्दीको भी क० ।

कौ हंसा मोती चुगि कौ लंघन कर जाहिं ।

खाँड़ और राँड़का यौवन रातको—स्पष्ट ।

खाँड़की रोटी, जहाँ तोड़ो वहाँ मीठी—अच्छी
चीजपर क० ।

लखी जु भंग भंग नवनार, भजनकात कडा रूप रङ मार ।

कहे कहावत ज्यों सुख गौर, रोटी खाइ मधुर मधु डीर ॥

खाँड़ खारीका एक भाव है—अन्धेरेहो, तब क० ।

खीनी और खारी नमक एक मोल विकता है ।

खाँड़ खूँदेगा सो खायगा—जो परिश्रम करेगा,
उसीको मिलेगा ।

खाँड़ भरे भुस खात है, विन गुरुके उपदेश—
स्पष्ट ।

खाँड़ विना सब राँड़ रसोई—स्पष्ट ।

खाँड़ा बजे रण पड़े, और दांता बजे घर पड़े—
लड़ाईमें तलवार चलती है और घर भगड़में धुका
फनीहत होती है ।

खा कचौड़ी ओढ़ दुशाला, हो बैठेगा दम्भो-
वालाला—जो आदमी दूसरेसे कर्ज लेकर खाय खरचे,
उसपर क० । दिवालियेको भी क० ।

खाक छानते, घेर विनते—व्यर्थ परिश्रम करनेवा-
लोंपर क० ।

खाक डाले चाँद नहीं छिपता—कीर्त्तिवान् मनु-
ष्यकी निन्दा करनेसे उसकी कीर्त्तिमें बढा नहीं
सगता ।

खाक न धूल, धकाइनके फूल—तुच्छ मनुष्यको
या तुच्छ धातोंपर क० ।

खाकी अण्डेकी पैदाइश } खोखले या निरस
खाकी अण्डेमें बच्चे नहीं होते } मनुष्यपर क० ।

खाके जल्दी चलिये कोस, मरिये आप दैवके
दोस—खाकर तुरत नहीं चलना चाहिये ।

खात नियौरी दाख बताने—जो अपने खानेकी
भठी प्रशंसा करता है, उसे क० । लखनऊमें ऐसे
बहुतसे लिफाफिये रहते हैं जो अङ्गरेजकी जेबसे
चने निकालकर खाते जाते हैं परन्तु दिखानेके लिये
हाथमें थोड़ी सी रेचडियाँ रखते हैं, जब कोई उनसे
पूछे कि आप क्या खाते हैं? तो कहते हैं कि खुटियाँ
खा रहा हूँ ।

खाता भी जाय, वराता भी जाय—स्पष्ट ।

वराताकी जगह गुरांता भी कहते हैं, जिसका अर्थ
है, खाय और खाँख दिखावे ।

खाते पीते जग मिले, औसर मिले न कोय—
खसमें ही सब साथी होते हैं, दुःखमें कोई नहीं ।
मित्र बही है जो विपत्तिमें काम आवे ।

दीस भी दामम कि गौरद दकी दीस।
 दर परेशां हाकी व दरमांदगी ॥
 खाते रहो, कमाते रहो—स्पष्ट।
 खाद पड़े मो खेत, नहीं भूडका रैन—(क०)
 खेतमें खाद देनेसे उपज अच्छी होती है। तात्पर्य
 यह है, कि बिना विद्याका मनुष्य पशुके समान है।
 खान देश खुदसे डूबा, दक्षिण डूबी दानेसे।
 मारवाड़ मनखूवे डूबा, पूरव डूबी गानेसे—
 खान देशकी अवनति नये नये सिकोंसे, दक्षिणकी
 अकालसे, मारवाड़की मनखूवेसे और बंगालकी
 अवनति गानेसे हुई है।
 खाना और पेड़ना—खालसी मनुष्यपर क०।
 खाना न कपड़ा, सेंटका भतरा—(५० ज०)
 निखट पतिको क०।
 खाना पराया है, पेट तो पराया नहीं है—
 मु.पतका माल देखकर बहुत न खानेके लिये क०।
 खाना पीना गांठका, निरी सलाम आलेक—
 भठी शिष्टाचारीपर क०।
 खाना मनं भाता, पहनना जग भाता—जो अपने-
 को खे बही खाना और जो सबको अच्छा लगे
 वही पहनना चाहिये।
 खाना वहां खाओ, तो पानी यहां पीओ—
 जल्दी चले आओ।
 खाना शराकृत, रहना फराकृत—मिलजुल कर
 रहो, मगर हिसाब साफ रखो।
 खानेकी सुध न पीनेका होश—जो आदमी काममें
 बहुत व्यस्त रहता है, उसे क०।
 न खानेकी सुध, और न पीनेका होश,
 भरा दिलमें दसके सुखमेंका जोश। (मीरजगन)
 खानेके दांत और, दिखानेके और—ऊपरसे शिष्टा-
 चार और भीतरमें कपट। जब कोई कहे कुछ और
 करे कुछ, तब क०।
 खानेको ऊन कमानेकी मजदू—निकम्मे मनुष्यपर
 क०।
 खानेकी पीछे नहानेकी पहले—खानेके पहले नहाना
 चाहिये।

खानेको बिसमिल्लाह, कामको अस्तग फुरकल्लाह-
 निकम्मे मनुष्यपर क०।
 खानेको महुआ, पहननेको अमौआ—(१) जो
 खाते कुछ नहीं, पर बढ़िया पोशाक पहनते हैं, उनपर
 क०। (२) भूठी भड़क दिखानेवालेपर भी क०।
 खानेको सेर कमानेको धकरी—जो खाय बहुत,
 पर काम थोड़ा करे, उसपर क०।
 खानेमें चटनी, पलंगपर नटनी—स्पष्ट। शौकीनों-
 पर क०।
 खानेमें शरम क्या, और घूसोंमें उधार क्या—
 खानेमें शरमाना नहीं चाहिये और मारका बदला
 उसी समय मारसे चुका लेना चाहिये।
 खाय चने कहे खुंटियां—लखनऊवालोंपर क०। दे०
 “खात निचौरी”
 खाय तो घीसे, नहीं जाय जीसे—दे० “खजं तो
 गेहूँ”
 खाय भीम, हरो नकुल—करे कोई भोगे दूसरा, तब क०।
 खाय कासा भर, चले आसा भर—खालसी और
 पदाथं पर क०। कासा=याली; आसा=झड़ी।
 खाय बढ़ियाँ, टांग रहे खडियां—(५०) बढ़ियाँ-
 की तारीफ है।
 खाय चना, रहे घना—(क०) चना पुष्ट है, इसीसे क०।
 खाय न खिलाय, खाला दीदो आगे पाय—
 (५० ज०) चाची न आप खाय, न मुझे खानेको
 दे, इससे उसकी आँख और पैर दोनों बेकाम हो
 जायें। आप है।
 खाय पान, टुकड़ेको हीरान—जो बितके बाहर
 शौक करे, उसपर क०।
 खाय धकरीकी तरह, सुखे लफड़ीकी तरह—
 जो बहुत खानेपर भी दुबला रहता है, उसपर क०।
 खाय मूंग रहे अंग—(क०) मूंग हलका और कम-
 जोर नाज होता है, इसीलिये क०।
 खाय मोट तोड़े कोट—मोट बहुत गुल्पाक और पुष्ट
 होता है।
 खाय सो पछताय, न पाय सो पछताय—
 जो चीज ऊपरसे भड़कदार और भीतरसे पाराय है,

खेती पाती यीनती, औ घोडेका तड़, अपने हाथ संवारिये, चह लाखों हों संग—स्पष्ट।

अच्छा काम चाहो, तो अपने हाथसे करो।

खेती राज रजाय, खेती भीख मंगाव—(क०)

यदि फसल अच्छी हुई तो धनवान, नहीं तो कंगाल।

खेती गिल्लो अन्तको पेड़ ही तले आती है—

गिल्लो=गिलहरी। वेकार मनुष्य अन्तमें धूम धाम कर घरको ही फिर आता है।

खेप हारी, जनम नहीं हारा—उद्योगी पुरुष कहता है, इस खेपमें नुकसान हुआ तो क्या? जीते रहेंगे तो फिर कर लेंगे।

खेल खिलाड़ीका, पैसा मदारीका—खेलनेवाला

खेल दिखाता है, पैसा मदारीको मिलता है। काम कर्मचारी करते हैं नाम अफसरका होता है।

तमाशा खतम, पैसा इजम।

खेल खिलाड़ीका, भगत भैयाजीकी—ऊ० दे०।

भगत एक शौकिया मराडली होती है जो भांडोंकी तरह मक्लका तमाशा दिखाती है। तमाशा तो खिलाड़ी दिखाते हैं, नाम संचालकका होता है।

खेलत मरे सो सुत क्यों जनै—स्पष्ट।

सुरति समय लखि व्याकुल बाल, हास उजि बोले यो काल।
सुनो पखानो ज्यो जय भगै, खेलत मरे सो सुत क्यों जनै।
(हास)

खेल न जाने मुरगीका, उड़ाने लगा वाज—

जो सहज काम न कर सके और कठिन काम करने जाय, उससे क०।

खेलोगे कुदोगे होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे होगे

नवाब—लड़कोंको पढ़नेके लिये क०।

खैरका घेड़ा पार है—स्पष्ट।

खैरकी जूती, खैरातका नाड़ा, पढ़दे मुह्ला अकद

उधारा—(मु० ज०) मांगेकी जती और मांगेका ही

पैजामा है, इसलिये मुह्ला व उधार (बिना कुछ लिये ही) व्याह भी करा दे।

गई जधानी फिर नहिं लौटे, लाख मलीदा खाय—

स्पष्ट।

दुनियामें सब भोज आती व आती देखो,

खैर खून खांसो खुशी, चैर प्रीत मधुपान
रहिमन दावे ना दवे, जाने सकल जहान—
स्पष्ट।

खैरातके टुकड़े वजारमें डकार—(च०) जब को

मंगनीकी चीज लेकर सर्वसाधारणको अपनी का कर दिखावे, तब क०। डकार पेट भरनेपर आता है। बाजारमें डकार लेनेसे सबको जान पड़ा कि खब खाकर आये हैं, पर वास्तवमें भीखके टुकड़े खाये हैं।

खैरायादी बड़े फिसादी, नोन तेल पै घेचें दाद

खैरायादी लड़ाके और कंजस होते हैं, इसलिये क०

खोगीरकी भरती—जब वेकार चीजों वा मनुष्यों

जगह भरी जाय, तब क०। जहां बहुतसे नौकर ऐं हों जो कुछ काम न करते हों, वहां क०।

खोटा वेटा और खोटा पैसा भी समयपर काम

आता है—किसी चीजको वेकार समझकर मत फेंको

किसी समय वह भी काम आ सकती है।

खोदा पहाड़ और निकली चुहिया—जब बहुत

परिश्रम करके सामान्य लाभ हो, तब क०।

क्यों करिये प्रापति फलय, आमै, यम शक्ति होय।

कीम नु गिरवर खोदि कौ, च छो कादौ गीय ॥ (इन्द्र)

खोन पाक, खोनपोश पाक, खोलके देखो, तो

खाक ही खाक—(मु० ज०) जहां ऊपरकी भइ

और भीतर कुछ न हो, वहां क०।

खोन बड़ा खोनपोश बड़ा, खोलके देखो तो

आधा बड़ा—(मु० ज०) ऊ० दे०। आधा बड़ा=

आधा टुकड़ा बड़ेका।

खोल खीसा, खा हरीसा—दाम खचेंगा सो

खायगा।

खोरहे सिरपर मखमलकी पगिया—(च०) वे

जोड़ चीजपर वा जहां बंदगकल आदमी अच्छी

पोशाक पहने, वहां क०। खोरहा=गंजा।

ग

को लाने न चाय वह जगानो देखो,

भी भी आकि न जाय वा बुदापा देखा।

गई मांगने लड़की, खो आई भरतार—जब कोई

कुछ लेने जाय, वह तो न मिले पर गांठका भी खो
आये, तब क० ।

गई सो गई अथ राखू रहीको—जो यीत गई उसे
भूल जाओ, जो मौजूद है उसे संभालो ।

बौतत आये हया रस भोग, पहिले ई सुमिले कप जोग ।

चेतो भाजावेद कहीकी, गई सो गई चय राखू रहीकी ॥

गऊके मुहमें दूध है—गऊको जितना जियादा
खिलाओगे, उतना ही जियादा दूध देगी ।

गंगा आवनहार भागीरथके सिर पड़ी—
जब काम तो थापही हो जाय और मुफ्तमें किसी-
को उसके करनेका पया मिले, तब क० ।

गंगा कर गौर गरीयनकी—गंगासे विनती है ।

गंगा किसकी खुदाई है—भूखोंका प्रश्न है । जहां
सबका समान अधिकार रहता है, वहां क० । दे०
“खुदाकी खुदाई ।”

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास—
जिसके पास जाना उसीकी सी कहना ।

गंगा गये मुझाये सिद्ध— } गंगा अथवा किसी
गंगा गये मुझाये सिर— } दूसरे तीर्थस्थानमें
जानेसे सिर मुझाना पड़ता है । जब कोई मेलता
देखने या परदेश जाता है तो वहांसे कुछ सौगात
लाता ही है, ऐसे मौकेपर क० ।

गंगाजीकी धारा, पाप काटनेको धारा—
स्पष्ट ।

गंगाजीको पैरियो, विप्रनको व्यवहार । इय
गये तो पार है, पार गये तो पार—स्पष्ट । जब
किसी ब्राह्मणके पास दयाया इय जाय, तब क० ।

गंगा नहाना—(१) सब भूमंडोसे छूट जाना । (२)
दिवाला निकल जाने बाद, इनसालवन्तीमें चले
जानेपर क० ।

भूमसे कहीं नजात मिले बँन पाये इम,

दिल खूनमें नचाये तो गंगा नचाये इम । (दाग)

गंगा नहाये क्या फल पाये, मूँछ मुझाये घरको
आये—स्पष्ट ।

गंगा नहाये मुक्त होय, तो मेंढक मच्छियां,
मूँछ मुझाये सिद्ध होय, तो मेंढे कपटियां—
भास्तिकोंका कहना है, कि यदि गंगानहानेसे मुक्ति

मिलती हो, तो मेंढक और मच्छियां भी मुक्ति पा
सकती हैं और सिर मुझानेसे मोक्ष मिले, तो भेड़,
मेमने इत्यादि भी मोक्ष लाभ कर सकते हैं ।

गंगा बही जाय, फलवारिन छात्री पीटे—
गंगाका पानी निष्फल बहते हुए देखकर कलवारिन
पश्चात्ताप करती है, क्योंकि उसे मंदिरामें पानीका
बहुत प्रयोजन पड़ता है । सूखोंपर क० ।

गंज घेरंज नहीं—बिना कपटसे धन नहीं मिलता
अथवा परिश्रमके बिना सफलता प्राप्त नहीं होती ।

गंजा मरा खुजाते खुजाते—स्पष्ट ।

गंजी कवूतरी और महलमें डेर—जब कोई
प्रयोग्य आदमी उच्च पदको पाता है, तब क० ।

गंजी पनिहारी और गोखरूका इंडुवा—
(१) विपदपर विपद पड़नेपर क० । गोखरूमें कांटे
बहुत होते हैं । इंडुवा उसे कहते हैं जिसपर फलसी
रखी जाती है (ऐंहुरी) । (२) (च०) गंजी
पनिहारीको गोखरूका इंडुवा । गोखरू गोटे या
बादलेका बनारस और लखनऊमें बनता है, जो
ज्याह शरदोमें बढ़िया कपड़ोंपर लगाया जाता है ।

गंजी यार किसके ? दम लगावे तिसके—
जो जिसका साथी और समान गुणवाला होता है,
वह उसीसे प्रीति करता है ।

गंजी सत्ती, ऊत पुजारी—जैसेको तैसा ।

गंदी थोटीका गंदा शोरवा—(मु०) कपूतका पैदा
कहल होता है ।

गंदुमनुमा जौफरोश—(फा०) गेहूँ दिखते हैं और
जौ बेचते हैं । ठगको क० ।

मैंने इमं चाखोई ऐ बादज निवासे बाजमें,
जौफरोश करत देखे ई बहुत गंदुमनुमा । (हाकी)

गंधारका हांसा, तोड़े पांसा—स्पष्ट ।

गंधारको पापड़—जो जिस चीजके योग्य नहीं उसको
वह चीज देना ।

गंधारको पैसा दीजे, पर अण्ड न दीजे—स्पष्ट ।

गंधार गांडा न दे, भेली दे—स्पष्ट ।

गंधार गाँका यार—गंधार भी अपना मतलब देखता है ।

गगत चड़े रज पवन प्रसंगा, फीचहिं मिले नीच
जल संगी—(तुलसी) सगतके फलपर क० ।

गगरी दाना सूद उताना—घोड़ा थोड़े बैभवसे इतरा जाता है।

चादिये सम्पादिति सनोधा, चतुरं सो गृही ज्ञ संचय कोया ।
यथा लाभ सन्नुष्टं यथाभा, गगरी दाना सूद उताना ॥

(श्लो० सं०)

गज भर लुखड़ी, नौ गज पूंछ—वेहदा पहनावेपर क० ।

गठरी बांधी फूलकी, रही पवनसे फूल,

गांठ जतनकी खुल गयी, अन्त धूलकी धूल—

(१) भक्तिपत्रमें मानवशरीरपर क० । (२) जय कोई बालाकी करे और उसकी पोल खुल जाय, तब क० ।

गड़सीकी सगाई, खुरपीका व्याह—(१) जैसा

काम वैसा उपचार । (२) दे० 'कहां भगइना पिजावेका'

गड़ाधम माथेपर चमकता है—जमीनका गड़ा धन

गाड़नेवालेके माथेपर भस्मकता है ।

युवा भोजक मधि मिश्रता धाम, लसतु भाजु सी लखिये खाम ।

यह उपखानो योग्य विचार, धमो धराधन दिपै-दिलार ॥

(वैस संघिता । श्लो० रं० कौ०)

गढ़े कोयले उखाड़ना—

गढ़े मुदें उखाड़ना—

भूली हुई यात याद
'दिलाना; जय कोई

पुरानी यातें कहकर लड़ना चाहे, तब क० । (२)

किसीके छिपे हुए दोषके प्रकाय करनेपर भी क० ।

यहुतेरे 'गड़ी ईंट उखाड़ना' भी कहते हैं ।

गढ़ तो चितौर गढ़, और गढ़ गढ़ैया है—स्पष्ट ।

गढ़के पानीमें सुं ह धो भावो—जाओ अपना काम

करो । किसीको श्रयोग्य वा श्रसमर्थ समझकर क० ।

गढ़े कुम्हार, भरे संसार—जय एकके कामसे बहुत-

से लोग लाभ उठावें, तब क० । कुम्हार गगरी

बनाता है और सब लोग उससे पानी भरते और पीते हैं ।

गधा खरसामें मोटा होता है—(खरसा=गरम

शुद्ध) स्पष्ट । बरसातमें चारों तरफ़ डरी घास देख-

कर ही गधा तृप्त हो जाता है और खाता नहीं; गरम

शुद्धमें जो हृद्य सूखी घास पाता है वही खाता है

और उसीसे मोटा होता है ।

गधा खेत जाय, जुलाहा मारा जाय—एक कसूर

करे, दूसरा दंड भोगे, तब क० ।

गधा गिरे पहाड़से और मुर्गीके टूटे कान—

श्रसम्भव यातपर क० ।

गधा घोड़ा एक भाव—(व्य०) (१) जय श्र

बुरी चीजका एक ही दाम लगावे, तब क० ।

'खर गुड़ एक भाव ।'

गधा पीट्टे घोड़ा नहीं होता—(१) गधेको मा

घोड़ा नहीं हो जाता । तात्पर्य यह है, कि

ताड़ना करनेसे भी नहीं सघरता ।

गधा धोयेसे घलड़ा नहीं होता—यनानेसे प्र

नहीं बदलती ।

गधा मरे कुम्हारका, धोबिन सत्ती होय—

कोई श्रादमी ऐसे काममें पड़े जिससे उसका

सम्बन्ध न हो, तब क० ।

गधेकी आँखमें मोन दिया, उसने कहा

आँखें फोड़ीं—गधेकी आँखमें नमक आराम हो

लिये दिया गया, उसने कहा, मेरी आँखें फोड़ ड

कृतज्ञ मनुष्यपर क० ।

गधेकी यारी लातकी सनसनाहट—बुरेकी

तसे धानि होती है ।

गधेके खिलाये न पुन न पाप—वृत्तफले

नेकी करना व्यर्थ है ।

गधेको अंगुरी धाम—

गधेको खुशका—

गधेको गुलकन्द—

गधेको जाफुरान—

गधेको हलुआपुरी—

गधेको गधा ही खुजाता है—ओछोंकी

ओछोंके ही साथ होती है ।

कामको काम मराल मरालकी कांथ गधाको गधा

लावे । (लघु)

गधासे हल चले तो धैल कौन बिसाय—

छोटसे बड़ोंका काम होय, तो बड़ोंको कौन

जय किसी मनुष्यको ऐसा काम दिया जा

उससे न हो सके, तब क० ।

गप्पीका पूत गपकड़—जैसा थाप वैसा वेठा ।

गम न दारी-युज बखर—(फा०) अमर तुम

तरह की चिन्ता न हो तो बकरी खरीद ले ।

'पालने में बेफिक्र श्रादमी फिक्रमंद हो जाता

गया गाँव जहाँ ठाकुर हैसा, गया रूख

बगला बसा, गया ताल जहाँ उपजी काई, गया
कूप जहाँ भई अघाई—स्पष्ट ।

गया पिंडे, प्रयाग मुंडे, काशी हुंडे—गयामें पिंगड-
दान, प्रयागमें मुंडन और काशीमें घूमनेका माहा-
त्म्य है ।

गयां वक्षत फिर हाथ आता नहीं, सदा दौर
दौरा दिखाता नहीं—समयपर न चकना चाहिये ।

रंजूर छे क्यों चाह जु पाँपर साता,
क्यों चपने किवीपर चाम छे नू पड़ताता ।
जो होना था हुआ सब चामे हो मोच,
जो बल गया वो फिर नहीं हाथ आता । (रंजूर)

गया मर्द जिन खाई खटाई, गई नारि जिन खाई
मिठाई—स्पष्ट । खटाई खानेसे मनुष्यका पुरुषत्व जाता
है और मिठाई खानेसे औरतका चरित्र बिगड़
जाता है ।

गये ऊनके लेनको, धाये वाल मुड़ाय—जब कोई
कमाने जाय और धरका भी खो धाये, तब क० ।

गये फटक, रहे अटक—जब किसीको कहीं कामके
लिये भेजते हैं और वह वहाँ देर लगाता है, तब क० ।

गये घे रोज़ा छुड़ाने नमाज़ गले पड़ी—
जब कोई छलके लिये जाय और दुःख पाने, तब
क० ।

गयो जमानो तीरको, अय आई बन्दूक—
स्पष्ट ।

गुरजका घाबला अपनी गावे—गर्ज मन्द अपनी ही
कहता है ।

गरमी जाय जीरेसे, सरवी न जाय हीरेसे—
स्पष्ट । वैद्यकी बात है ।

गरमी सबज़ह 'गोसे और घरमें भूनी भांग नहीं—
पास कौड़ी नो नहीं और सुन्दर वेयाओपर मन
चने । औकातके बाहर काम करनेकी इच्छा रखने-
वालोंपर क० ।

गरीबकी जयानी, गरमीकी धूप, और जाड़ेकी
चाँदनी अकारण जाय—स्पष्ट ।

गरीबकी जोरु और उमदाखानम नाम—
(मु० च०) यह नाम वेगमोंका होता है ।

गरीबकी जोरु सबकी भावी } गरीब और
गरीबकी लुगाई, सबकी भौजाई } सीधे आदमी-
को लोग प्रायः दुआया करते हैं, इसलिये क० । बड़े
भाईकी खासे हंसी करनेका हिन्दुओंमें रिवाज है ।
गरीबको निबल पाकर सब उसकी खासे हंसी
करते हैं ।

सुफलिषके साथ छपके तईं बे छिनावी है,
सुफलिषकी जोरु सब छे कि छां सबकी भाभी छे ।

(नजीर)

गरीबकी हाथ धुरी है—गरीबको सताना न चाहिये ।

'तुवकी हाथ गरीबकी, कभी न खाली जाय ।

सुप चामको खावने, चार मख हँ जाय ।'

गरीबको सब कोई फहते हैं, बड़े आदमीको
कोई नहीं कहता—जब गरीब आदमीकी सामान्य
चूकके लिये निन्दा की जाय और बड़े आदमीको
उससे अधिक चूक करनेपर भी कोई कुल्ल न कहे,
तब क० ।

धम चाह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम ।

बह कुल्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती ॥

गरीब तेरे तीन नाम, झूठा, पाजी, बेईमान—
स्पष्ट । गरीबकी लोग वैधुङ्क इन विशेष्योंसे
अलङ्कृत कर देते हैं और बड़ा आदमी यदि ऐसा हो
भी, तो उसे कोई डरसे नहीं कहता ।

गरीबने रोज़े रखे, दिन भी बड़े हुष—(मु०)
गरीबको सभी दुखदाई होते हैं । गर्मीमें दिन बड़ा
होनेके कारण रोज़ा रखना कष्टकर हो जाता है ।

गर्चे कंदीले सबू नको मड़ लिया तो भया हुआ,
ढाँचकी तो है यही अगले घरसको तीलियां—
जब कोई पहले कही हुई बातका रूप पलटकर उसे
नये रूपमें प्रगट करे, तब क० । किसी पुराने कबिकी
उत्तिको नये शब्दोंमें कहे, तब क० ।

गर्जे घन्दे नू गर्जे आन पैदी गलियां दे कबख
सुगांवदे—(पं०) जब गर्ज, आन पड़ती है, तो
गलियोंके कंकड़ चुनने पड़ते हैं ।

गर्म धाय, ठंडा नहाय, ओसमें वसै, उसके
सामने वैद बैठा हंसी—गर्म गर्म खानेसे, ठण्डे पानीसे
नहानेसे और ओसमें सोनेसे रोग होते हैं, ऐसी
हालतमें वैधको हुलाना पड़ता है ।

गर्म नहाय, ठंडा घाय, ओस घचाके सोचे,
उसके पिछवाड़े घैद वैठा रोवे—गरमजलसे नहाय,
ठंडा करके भोजन करे, औंर ओसमें न सोवे, तो
बीमार न पड़े, इसलिये वैद्यको धुलानेकी कभी
जुस्त न पड़े ।

गर्म लोहेको ठंडा लोहा काटता है—क्रोधीको
शान्त प्रकृतिवाला मनुष्य जीत लेता है । जब दो
मनुष्य क्रोधित होकर आपसमें लड़ें, तब एकको
ठंडा करनेके लिये क० । दे० “अक्रोहेन.....”

गलत-उल आम फ़सीह—जिस भूलको सारी
दुनियां करती हो, उसे भूल न समझना चाहिये ।
जिस पापका जनता अनुमोदन करे, उसे पाप न
समझे । जो बोलचाल साधारणमें प्रचलित है, वह
व्याकरणसे अशुद्ध होनेपर भी शुद्ध समझी जाती है ।

गले पड़ी ढोलकी बजाये सिद्ध—चाहे जैसी विपद्
आ पड़े, भेलेगी ही पड़ती है । जैसी संगतमें पड़
जाय वैसा ही व्यवहार करे । जब कोई मनुष्य
मजबूर होकर कोई काम करे, तब क० ।

गवाह सुस्त मुद्दे सुस्त—उन गवाहोंपर कही जाती
है जो स्थित लेकर झूठी गवाही देनेके लिये अदा-
लतमें सुस्त रहते हैं ।

गांजा पिये गुरुज्ञान घटे, और घटे तन अंदरका,
खोंखत खोंखत...फटे, मुंह देखो जैसे बंदरका—
गंजेड़ियोंपर क० ।

गांठका पूरा मतिंका हीन—(व्य०) मूर्ख धनीको
क० । दे० ‘आंखका अन्धा.....’

गांठ न मुट्टी, फड़फड़ाय उट्टी—(पू० ज०) किसी
चीजके खरीदनेको मन चले पर प्राप्त पैसा न हो,
तब क० ।

गांठमें जमा रहे, तो खातिर जमा रहे—
‘पास धन रहनेसे फिक्र नहीं रहती ।

खानेको हमा रहे न काहको गमा रहे,
सगांठमें जमा रहे तो खातिर जमा रहे । (बवाल)

गांठमें दाम ना, पतुरिया देख रुलाई आवे—
(पू०) दे० ‘गरमी सबजह रंगोसे...’

गांठमें पैसा नहीं, बांकीपुरकी सैर—(च०)
स्पष्ट ।

गांठसे दे पर अक़ल न दे—मूर्खोंको अपने पाससे
पैसा दे, पर बुद्धि न दे ।

गांवके गँवले, मुँहमें खाक-पेटमें ढेले—गंवाराकी
मंली सकल और मोटे खानेपर क० ।

गांव बसते भूतने, शहर बसते देव—गांवमें रहने-
वाले भूतोंके और शहरमें रहनेवाले देवताओंके
समान हैं । दे० ‘गांवके गँवले—’

गांवमें घर न जंगलमें खेती—जिसके कुल नहीं
होता, वह कहता है ।

गांवमें धोयीका छैल—गांवमें धोयीका लड़का ही
शौकीन बना फिरता है, क्योंकि उसका बाप जो
शहरवालोंके कपड़े धोनेको लाता है, उन्हें वह पहनता
है, जो गांववालोंको नसीब नहीं होते ।

गांवमें पड़ी मरी, अपनी अपनी सबको पड़ी—
स्पष्ट ।

गांव सदा गंवारनको—स्पष्ट ।
गाओ बजाओ, कौड़ी न पाओ—स्पष्ट । सूमको क० ।

गाओ बजाओ, वन्नेके लोलो ही नहीं—जिसके
लिये आह्वय किया जाय वही न हो, तब क० ।

गाऊँ न, गाऊँ तो बिरहा गाऊँ—(ज०) या तो
कुल करे ही नहीं, यदि करे तो वह काम जो न
करना चाहिये । बिरहा भरमदार औरियोंको न गाना
चाहिये ।

गागरमें सागर भरना—जब कोई बात तो छोड़ी
कहे, पर उसका मतलब बहुत हो, तब क० ।

गाछमें कटहल, होंठमें तेल—जब कोई समयके पहले
ही तैयार हो जाय, तब क० । कटहलका दूध हाथ
या होंठमें लगा जानेसे तेल लगाकर छुड़ाया जाता
है, यह बँगला कहावत “गाछ काँटाल गोंप तेल”
का अनुवाद है ।

गाजरकी पूंगी बजी तो बजी, नहीं तोड़ खाई—
ऐसे कामपर कही जाती है जो हो जाय तो अच्छा,
न हो, तो भी अच्छा ।

गाजी मियां दम मदार, खिचड़ पका हम तैयार—
(मु०) दोनों पीरोंकी कसम, मैं खिचड़ी खानेको
तैयार हूँ ।

गाडर आनी ऊँ

सामके लिये काम करे और उसमें हानि हो, तबक०
गाड़ीको देख लाडीके पैर फूले—सब कोई आराम
चाहते हैं। गाड़ीको देखकर लौंडीके पैरमें भी दर्द
होने लगता है।

गाड़ी तो चलती भली, ना तो जान कवाड़—
थले तो गाड़ी, नहीं तो वह कड़ी (काठके टुकड़े)
के समान है।

गाते गाते फलावंत (फीर्चनिया) हो जाते हैं—
स्पष्ट। अभ्यास करनेसे ही आदमी निपुण हो
जाता है। जब कोई नया काम करे और उससे करते
न थके वा कोई आदमी काम जल्दी सीखना चाहे
और उससे न हो सके, तब उससे क०।

गाना और रोना किसको नहीं आता—सबको
आता है।

गाना उत्तम बजाना मध्यम—स्पष्ट।

गाना न बजाना, पाद पादके रिभाना—जब
किसीको कोई काम करना न आवे और वह भद्दी
हंसी मजाक करके समय बिताने, तब क०।

गायका दूध, सो मायका दूध—गऊका दूध मांके
दूधके बराबर है।

गायका बछड़ा मर गया, तो खलड़ा देख पन-
हाई—जब किसी मनुष्यका किसी प्रियजनसे वियोग
होता है, तो उसकी प्रतिमा देखकर मनमें शान्ति
होती है; जैसे श्रुत मित्रकी तलवीर। इसीकी पुष्टिके
लिये उक्त मसल क०। गऊका बछड़ा जब मर
जाता है तो उसकी खालमें भूसा भरके रप लेते हैं।
दूधनेके समय उसीको गऊके सामने कर देते हैं
जिसे वह अपना जीता बछड़ा समझकर दूध देने
लगती है।

गायको अपने स्तंग भारी नहीं होते—अपने परि-
वारके लोगोका किसीको बोझ नहीं लगता।

गाय न आवे बचवे लाज—(पू०) माको बेटेकी
शरम नहीं होती।

गाय न बाछी नींद आवे आछी—(मा०) बेफिकरी-
में नींद अच्छी आती है।

गाय न हो तो वैल दूहो—कुछ न कुछ करते रहो।

गाल फट जाय, पर चावल न उगले—जो हानि
होनेपर भी हठ न छोड़े, उसपर क०।

गाल बजायेह करे, गौरी कंत निहाल—(वृन्द)
जो उदारहृदय होते हैं, वे सहजमें ही सन्तुष्ट हो
जाते हैं।

(१) वड़े "पघाकर" लौं गालके बजाये तें,
काज करि दैत जन जाचक जरहे को।

(२) वड़े सज्जही बात सों, रीक दैत बकसीस।
तनवी दल तो पिण्ड न्यौं, चाक धरै रस ॥ (वृन्द)।

(३) जे उदार ते दैत हँ, रोहत जिहिं तिहिं बाल।
गाय बजायेह करे, गौरीकल निहाल ॥ (वृन्द)

गाली और तरकारी खाने हीके वास्ते हैं—
गाली छनकर क्रोध न आवे, इसलिये क०। खानेके
दो अर्थ हैं, भोजन करना और सहना।

गाली मत दे किसीको, गाली करे फसाद,
गालीसे लाखों हुप, लड़ लड़के बरबाद—
(उप०) स्पष्ट।

गाले हाथ गोपालक माय—(पू०) (१) जो खी
सदा खुश रहे, उसे क०। स्त्रियां प्रायः गानेके समय
गालपर हाथ रखती हैं। (२) चिन्ताके समय भी
गालपर हाथ रक्खा जाता है।

गाहक और मौतका ठीक नहीं कय आवे—
(व्य०) स्पष्ट।

गिन पोई, समहाल खाई—(ज०) जो कमाना सो
खा लेना, कलके लिये न छोड़ना। मस्त आदमीको
क०।

गिनी गायमें चोरी नहीं हो सकती—स्पष्ट (व्य०)
संभालके रखी हुई चीज घट बढ़ नहीं सकती।

गिनी रोटी नपा सुखवा—(१) जो आदमी सदा
एक तरहसे चलता हो, उसको क०। (२) जिसे
उतनी ही तनख्वाह मिलती हो जितनेमें उसकी
सुखिलसे गुजर होती हो, उसपर क०। (३)
जिस कर्मचारीको तनख्वाहके थलावा ऊपरी कुछ
भी पैदा न हो, उसे क०। (४) जो मितव्ययितासे
चलता हो, उसको भी क०।

गिने गिनावे, टोटा पावे—(व्य०) अन्धविश्वास,
बहुतोंकी ऐसी धारणा है, कि रोज रोज मालके
समहालनेसे उसमें घाटा हो जाता है।

गिने, पूये, समहाल आवे—३० "गिन पोई..."

चेला पिटता है, क्योंकि वही भीख मांगने जाता है। (२) गुहसे पहले चेला माल उड़ाता है, क्योंकि वही भीख मांगकर लाता है।

गुहसों कपट मित्रसों चोरी, या हो निर्धन या हो फोड़ी—स्पष्ट।

गुलामकी ज्ञातसे वफ़ा नहीं—नौकरोंका विश्वास नहीं करना चाहिये।

गुलाम साथ, तो भी नाथ—गुलाम अक्सर भाग जाया करता है, इसलिये साथमें रहनेपर भी उसकी नकेल अपने हाथ रखे।

गुस्ता बहुत जोर धोड़ा, मारखानेकी निशानी—स्पष्ट।

गूंगा अंधा चुगदहिया और काना, कहे कवीर सुनो भाई साधो इनको नहि पतियाना—स्पष्ट।

गूंगी जोरु भली, गूंगा नारियल न भला—जब नारियल (हुका) पीनेसे मोले नहीं, तब क०।

गूगेका गुड़ खाया है—जब कोई मौन साथ लेता है, तब क०।

गूगेका गुड़ न खट्टा न मिट्टा—क्योंकि वह मुहसे बोल नहीं सकता। जब किसी बातका भेद न खुले, तब क०, या जो बात कहते न धने, उसपर भी क०।
क्यों गूगे भोटे फलको रस चकर गति हो भायें।
(सूदास)

गूगेकी गत गूंगा जाने या जाने उसके घरके—गूगेकी बात गूंगा ही समझ सकता है।

हुई चलक खलि बाल सुलाख, बनिता बंगी गरी रसाख, कहे पखामों ज्वी दुधिरन, गूंग लई गूगेकी खे।
(को०२०बी०)

गूगेने सपना देखा, मन ही मन पछताय—क्योंकि किसीसे कह नहीं सकता।

गूका कीड़ा गूहीमें खुश रहता है—जब किसीको बुरी संगतसे निकालके अच्छी संगतमें बैठा दे और वहां उसका मन न लगे, तब क०।

गूकी दाह मूत और मूतकी दाह गू—बुरेका हलाज भी बुरा ही होता है।

गूके फीड़ेको गुलावजलमें डाली तो मर जाय—दे० गुका फीड़ा.....

गूके पूत नौसादर—(१) क्योंकि वह पेटको साफ करता है। (२) ऊँट आदि जानवरोंको विष्ठासे बनाया जाता है। इस मसलका प्रयोग तुलसीदास जीने भी किया है, यथा—

राम नाम की बाँइके, चोर करी जी बाप।

तुलसी ताके सूँइमें, नौसादर को बाप ॥

जब किसी कृपणका लड़का भी कृपण हो, तब क०।

गूदडमें गिंदौड़ा—जब कोई धनवान् मलिन घरमें रहे या अन्नपढ़के घरमें कोई लड़का पढ़ा लिखा और बुद्धिमान हो, तब क०।

गूदर गू, मुरगीका गू—सबसे खराब चीजको क०।

गू नहीं छो छो—एक ही बातपर क०।

गूपर रोज़ा खोलना—धोड़ी चीजके लिये ईमान बिगाड़ना, जब कोई आदमी सामान्य रिश्तत लेकर किसीको हानि कर दे, तब क०।

गूममें ईंटा फेंको न छोटा पड़े—जब कोई नीच मनुष्यसे तक्रार या हंसी ठ्ठा करता हो, तो उसे मना करनेके लिये क०।

गूममें कौड़ी गिरे तो दांतसे उठाले—बड़े कंजसको क०।

गूममें गोते खाये—बहुत जलील हुए। जब कोई थपनेसे बहुत नीचे घरमें सम्बन्ध कर लेता है, तब क०।

गूलडका पिट क्यों फाड़ते हो—जब कोई छिपी बातको जाहिर करता है, तब क०।

गूलडका फूल, पीपलका मूद, घोड़ीकी जुगाली, फभी न पावे, और पावे तो रैन दिवाली—

ये सब होते ही नहीं तो लोग देखें कहांसे। कहते हैं, कि जो दिवालीकी रातको गूलडका फल देख ले, वह राजा हो जाय।

गेहूँ अच्छा महरका, और चावल अच्छा डहरका—

(क०) गेहूँ गहरके किनारेका और चावल नीची जमीनका अच्छा होता है। डहर मिट्टीके घड़े घड़ेको भी कहते हैं, उसमें भी लोग चावल भरके रख छोड़ते हैं।

गेहूँ कहे सुनो रे वीर! मैं हूँ संय नाजनका मीर—(क०) संय अन्नमें गेहूँ अच्छे है।

गेहूँकी बाल नहीं देखी—अनाहीको क०।

ती रोटीको फ़ौलादका पेट चाहिये—
हूँ देरमें हजम होता है, इसलिये क० । धन पाकर
नेरभिमाम होना सुखिल है । गोहंकी रोटी गरी-
योंको नहीं मिलती ।

के साथ घुन पिस गया—जब दोषियोंके साथ
हकर कोई निर्दोषी भी कष्ट पावे, तब क० ।

हा सिर फहूँ घराघर—पराई चीजका दर्द नहीं
होता । जब कोई दूसरेकी चीज खराब कर दे,
तब क० ।

पंजीरी और ही खायँ, जच्चा रानी पड़ी
गायँ—जब कोई चीज जिसको मिलनी चाहिये
से तो न मिले और उपरवासे ही उसे खा जायँ,
तब क० ।

ल गाँवको पैड़ो न्यारो—जित घर या गाँवकी
केति निराली हो, वहाँ क० ।

(१) "सुन्दर" कोच न जान सकै,
यह गोकुल गाँवको भौँकोइ न्यारो ।

(२) प्रभुको नर नखनन्दन जाने,
दारा इरि रति उपपति मानै ।
भगत नु समति उक्ति जग सारो,
गोकुल गाँवको पँकोइ न्यारो ।

ए सुतर न आसमानका न ज़मीनका—
'ऊँटका पाद.....'

का घाव, रानी जाने या राव—(ज०) द्विपी
शतको हरएक जान नहीं सकता ।

का बिलयाया गोदमें नहीं रहता—स्पष्ट ।

का छोड़के पेटकी आश—जब कोई वचनमान
श्रेष्ठकर भविष्यकी आशा करे, तब क० ।

में बैठके आँखमें उँगली } कृतम मनुष्यको
में बैठके दाढ़ी नोचे } क० ।

में लड़का शहरमें डिंदोरा—दे० 'कनिया
लड़का.....'

में लिये फिसले पड़ते हैं—जब कोई मनुष्य
मानानेपर और भी दूना पेटता जाय, तब क० ।

ज्यों ज्यों पिया करदि भति धार, ज्यों ज्यों रोस बढ़ावे गार ।
तोम उक्ति यह साँकी करै, लेते गोद धरनिमें परै ॥

(मान । लो० २० को०)

गोदीका लड़का मर जाय पेट आग बुझाय—

(ज०) (१) जब गोदका लड़का मर जाता है, तो
पेट उसके दुःखको भुला देता है अर्थात् भूखके अग्ले
लड़केका दुःख भी जाता रहता है । (२) गोदका
लड़का मर जाता है और पेटमें जो लड़का है उसकी
आशासे भी दुःख कम हो जाता है ।

गोधन गजधन कनकधन, रतन खान बहु खान,
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान—
स्पष्ट ।

गोधन तू हरखयो फिरै, धरि इक लेश पुजाय,
समुझि परैगी सीसपर, परत पशुनके पाय—
(विहारी) कोई छोटा मनुष्य ऊँचा पद पाकर
अपनेको पुनवावे, तब क० ।

गोनूभाक लड़का—(मै०) निकम्मे आदमीको क० ।
इसपर एक कहानी इस प्रकार है—गोनूभाके एक
लड़का था । एक दिन किसीने उनसे पूछा, कि भाई !
सुन्दर कै लड़के हैं ? उन्होंने जवाब दिया, कि लड़का
गो एक है पर खानेके लिये दो आदमीका खाना खाता
है, सोनेके बत्त तीन आदमीको जगह धरता है और
काम एक आदमीका भी नहीं करता, इसलिये हम तो
समझते हैं कि हमारे लड़का ही नहीं है ।

गोबरकी सांफ़ी भी पहिरे ओट्टे अच्छी लगती है—
स्पष्ट । सजावट बड़ी चीज है ।

गोबर गणेश—मौदू आदमीको क० ।

गोबर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—(व्य०)

जब कोई देनदार रुपये देनेके समय किसी तरहकी
अलसैठ डाल देता है, तब क० । क्योंकि लेनदार-
को अपना रुपया लेनेके लिये कुछ न कुछ कसर
खानी ही पड़ती है । गोबर जब जमीनमें गिरता है,
तो जमीनकी कुछ मट्टी ही लेकर उठता है ।

गोर चमाइन गरमे मातल—(५०) गोरी चमारी
अपने रूपके गर्वमें पागल रहती है । सीच पैभव
पाकर हलरा जाता है ।

गोरमें छोटे बड़े सब वरावर—स्पष्ट ।

गोरीका योधन सुटकियोंमें जाय—(१) जो
मनुष्य अपना सब धन दूसरोंको खिला दे, उसपर
क० । छन्दर लड़कियोंको सब कोई दुसारेसे सुटकी

मरते हैं। (२) अच्छी चीज चुटकी चुटकी ही में समास हो जाती है।

मौज गाल कुच करी बिछान, यामि कछा रसिकरं लाय।
सांच पखानो गवे सु गाय, गोरी मांस चिष्टटनि जाय ॥
(लो० २० कौ०)

गोरी तेरे संगमें, गई उमरिया घांत, अघ चाली संग छोड़के, यह ना रीत पिरौत—

अपनी आत्माके प्रति मरते समयका कहना है।

गोरी मत कर गोरे रंगका गुमान, यह है कोई दिनका मेहमान— जो अपने रूपका अभिमान करे, उसे क०।

गोला बारूद कहीं जाय तलघसे काम—
आलसी नौकरको क०। तलयकी जगह धमाका भी कहते हैं।

गोश्त खाये गोश्त बढ़े घी खाये यल होय, साग खाये ओम्ह बढ़े तो बल कहांसे होय—

मांस खानेसे मांस बढ़ता है, घी खानेसे बल बढ़ता है और साग खानेसे केवल पेट बढ़ता है बल नहीं होता। मांसाहारियोंका कथन है।

गोश्त खाये गोश्त बढ़े साग खाये ओम्हरी—
ऊ० दे०।

गोश्त खा लेते हैं हड्डियां फेंक देते हैं—
मतलयकी चीज ले लेनी चाहिये, घेमतलयकी छोड़ देनी चाहिये।

गौ निकल गई आंख बदल गई—मतलय निकल जानेपर आदमीकी निगाह बदल जाती है।

“देखि लाग मधु कुटिल किरातो।

जिमि 'गवं तक' लैड' केहि भातो' ॥” (तुलसी)

गौरा रुठेगी तो अपना सुहाग लेंगी, भाग तो न लेंगी—(ज०) जब किसीका मालिक नाराज होकर नौकरी छोड़ा देनेकी धमकी देता है, तब नौकर अपनी स्वाधीनता जाहिर करनेके लिये कहता है।
गौवां देवां घांस, मलीदा कुत्तियां—(प०) ईश्वरकी इच्छापर क०। योग्यकी कदर नहोकर अयोग्यकी हो, तब क०।

ग्रह विन हानि भेद विन चोरी, बहुत नहीं तो थोरी थोरी—स्पष्ट।

ग्वार खायं गँवार—स्पष्ट। ग्वार (जिसकी फली होती है) मारवांड देगमें बहुत होती है।

ग्वालन अपने दहीको खट्टा नहीं कहती—
अपनी चीजको कोई बुरा नहीं कहता।

ग्वालेका दही महतोंकी भेंट—जब मेहनत करे एक आदमी और फल दूसरेको मिले, तब क०।

ग्वेंठा जले गोवर हंसे—मूर्खको कही जाती है, जो दूसरेका दुःखदेखकर खुशी होता है और यह नहीं समझता, कि मेरा भी यही हाल होनेवाला है।

ग्वेंडा खेती, सीखा सांप, माई भय फारन, बांदी बाप—गाँवके पासका खेत, मनुष्यभन्ती सांप, भयावनी मा और भगड़ाइल बाप, ये सब दुःखदायी होते हैं।

ग्वेंडे आई बरांत, बहुको लगी हंगास—
जरूरी कामके वक्त जब कोई कुलबहाना कर बैठता है वा गैरहाजिर हो जाता है, तब क०। बहुकी जगह समधिन भी कहते हैं।

घ

घंटेपरके गरुड़—लुंज आदमीको क० जिसका हाथ पांव न चले। जो खाली बैठे रहे कुल भी काम न करे, उसे क०। घंटेके ऊपर गरुड़की मूर्ति हाथ जोड़े बैठी रहती है।

घटत छिन छिन, बढ़त पल पल, जात ना लागत धार, कहत कवीर सुनो भाई साधो, सपना है संसार—स्पष्ट।

घड़ी भरकी वेशरमी सारे दिनका धाराम—
(१) जिस कामके करनेमें खुद असमर्थ है, उसके

लिये सिर्फ “ना” कह देनेसे यद्यपि दूसरेको कुछ देरके लिये तुरा लगता है, पर तकलीफसे बचाव हो जाता है। (२) घेर्याओंके लिये भी क०।

घड़ी महीना पल पखवाडा, चौघड़ियेकासाल, जिसको लाला कल कहें, उसका कौन हवाल—
नादेहन्दको क०।

आज जो कहे तो पाठ मास लों न खावे ठीक,
काल जो कहे तो मास सोलह चलावही।

घड़ीमें औलिया घड़ीमें भूत—जिसका मिजाज

घड़ी घड़ी बदलता रहता है, उसपर क० ।

घड़ीमें घड़ियाल—(१) थोड़ी देरमें कुछका कुछ हो जाता है भविष्यका कोई ठीक नहीं कि क्या होगा ।
(२) जब दिन खोटे धाते हैं, तब अनहोनी बात भी होने लगती है, जैसे—घड़ोंमें घड़ियालका निकलना ।

घड़ीमें घर जले नौ घड़ी भद्रा—(१) जब कोई जख्मके पक्क, टालमटोल करता है, तब क० । (२) ज्योतिषियोंकी हँसी करनेके लिये भी क० ।

नौरी तो हाँची उतै नहिं धोरज,

नौ घरी भद्रा घरीमें जरै घर । (हरिचन्द्र)

घड़ीमें तोला घड़ीमें माशा—अव्यवस्थित चित्त-वालेको क० ।

निजाज क्या है कि एक तमाशा, घड़ीमें तोला घड़ीमें माशा ।

घड़ेसे घड़ा नहीं भरा जाता—(व्य०) ऐसा करने-से बहुतसा पानी गिर जाता है ।

घमंडीका सिर नीचा—अहंकारी सदा नीचा देखता है ।

तकनु र क्या बुरी मे है जो पौरन टट जाता है ।

हुवाने बहरकी देखा तो क्याही सर चडाता है ॥

घयेकी मेरी, तघेकी तेरी—(ज०) स्वार्थी मनुष्य-को क० । घया=अंगारा ।

घर आई लक्ष्मीको लात मारना—(१) मिलता धन छोड़ देना । (२) जब कोई सगाई-सम्बन्ध होते हुंए भी उसको छोड़ देता है, तब क० । (३) जो मिलती हुई नौकरीको नहीं करता, उसे भी क० ।

घर आये कुत्तेकी भी नहीं निकालते हैं—जब कोई किसीको अपने घर आनेपर आश्रय नहीं देता, तब क० ।

घर आये जिजमान, बीबी गई करौं दे खान—समयानुसार काम न करे, या कामके पक्क, यहाना करके टल जाय, तब क० ।

घर आये नाग न पूजे, बाँधी पूजन जाय—मौकेको हाथसे न जाने देना चाहिये । जब यासानीसे काम होता हो, तब न करके फिर उसी कामको कठिन परिश्रमसे करनेपर क० ।

'पिय आवे मानी नहीं, पनी चाप पडिताय,

आयो नाग न पूजिये, दानी पूजन आय ।'

(कलहनिरता । श्लो० २० श्लो०)

घर आये बैरीको भी न मारिये—स्पष्ट ।

घर आवे सो साला, घर जाय सो साला—जो दूसरेके घर जाता है उसे और जो अपने घर आता है, उसे दबना ही पड़ता है ।

घर कर घर कर सत्तर बला सिर कर—व्याह करनेमें और घर बनवानेमें बहुत सी प्रापत्तोंका सामना करना पड़ता है ।

घरका आंटा कौन गीला करे—(१) अपनी चीजको कौन बिगाड़े और कौन धनाकर खिलाने ।

घरका और मनका भेद हरएकके सामने न कहे—स्पष्ट ।

घरका खेत न खेतीवारी, कहे मियां मेरी नम्य-रदारी—(क०) श्रेणीवाजको क० ।

घरका घरवाहा कर दिया—घरका नाग कर देने-पर क० ।

घरका द्वार खुसमके हाथ—क्योंकि वह जो चाहे सो कर सकता है ।

घरका परसैया, अंधेरी रात—जब कोई मनुष्य सब तरहसे दूसरेकी चीज अपने काममें कर ले और जैसे चाहे उसे अपने काममें लावे, तब क० । एक तो अंधेरी रात, दूसरे परोसनेवाला अपना, जितना चाहे लोखो और उठा ले जायो, कोई देखनेवाला नहीं ।

देवि घडाता सुन्दरि बान, करो किय दुरि भिसि संगलान ।

सखि सखि कपुो पखानो जपनी, निसिकारी परसैया

पपनी ॥ (परकीया । श्लो० २० श्लो०)

घरकी आधी भली, बाहरकी सारी कुछ नहीं—स्पष्ट । आलसी आदमी कहते हैं, जिनसे परदेश जाकर कुछ रोजगार नहीं होता ।

घरकी खांड किरकिरी, बाहरका गुड़ मीठा—येयाके यहाँ जानियेलेपर क० । जिसे बाजारके दोनकी घाट पड़ जाती है, उसे भी क० ।

घरकी खेती—बालोंको क० । जब चाहे रप सो, जब चाहे कटा सो ।

घरकी जोरुकी चौकसी कहांतक—स्पष्ट ।

घरकी जोरु चयैना लाय, रणडी लाय यताशा—स्पष्ट ।

रकी पुटकी घासी साग-डोंग हांकनेवालोंको क० ।

रकी फूट घुरी—स्पष्ट ।

फूटें नरद वड जात बाजो चौमरको,
घाघरके फूटें बाहो कीनको भलो भयो । (गडा)

रकी विल्ही घर हीमें शिकार—जब घरका आदमी
घरवालोंको ही घोखा देता है, तब क० ।

रकी घीघी हांडनी घर कुत्तों जोगा—(ज०)
जिस घरकी मालकिन बाहर घूमती रहती है, वह
घर कुत्तोंके लायक हो जाता है ।

रकी मुरगी दाल बराबर—घरकी चीजकी कदर
नहीं होती । वह सुष्ठु दाखिल है ।

रकी मूँछें ही मूँछें हैं—(व्य०) विना पूंजीवाले
मनुष्यको क० । जो कोरी टांग मारता है, उसे
भी क० ।

रके खीर खाये, और देवता भला मनार्ये—
हिन्दुओंके प्रति श्रद्धा धर्मावलम्बियोंका आक्षेप
है, क्योंकि वे देवताको भोग लगाकर खाते हैं ।

रके घर ही न समार्ये और डर्टींगर पाहुने—
जब किसीके घरमें ही इतने आदमी हों कि जिनका
निवाह होना मुश्किल हो, तिसपर भी बाहरके
लोग आ जावें, तब क० ।

रके जले वन गये, और वनमें लगे आग । घर
बेचारा क्या करे, जो कर्मों लगे आग—
जब कर्महीन मनुष्य बहुत प्रयत्न करनेपर भी सफल-
मनोरथ नहीं होता, तब क० ।

रके जोगी जोग ना, आन गांवके सिद्ध—
घरमें किसीकी कदर नहीं होती ।

(१) बाँड़ि सुपति सपति सिध तिध, जानत ऐ सुभ वड ।

घरकी जोगी जोग ना, आन गांवको सिद्ध ।
(ऊदा । लो० २० की०) जोग ना = बाँड़ि नहीं ।

(२) गुलघी वषां न जाइये, जहां अनमकी ठाम ।

गुन भीगन जाने नहीं, धरे पाखो नाम ॥

रके पीरोंको तेलका मलीदा—(मु०) जब बाहरके
आदमीसे श्रद्धा बर्ताव किया जाय और घरवालोंसे
धुरा, तब क० ।

रके रोवें बाहरके खायें, दुआ देत कलंदर जायें-
दे० ' घरके पीरोंको तेलका मलीदा'

घर खीर तो बाहर खीर—(१) यज्ञे आदमीका

सब जगह आदर होता है । (२) जो दूसरेको खीर
खिलाता है, दूसरेके घर उसे भी खीर खानेको
मिलती है । जैसा दोगे वैसा पाओगे, नेकीका
बदला नैक है ।

घर खोवें और भास पास, तिनका नाम धर्म-
दास—जो लोग अपना और दूसरोंका काम बिगाड़ते
फिरते हैं और अपनेको सज्जन कहते रहते हैं, उग-
पर क० ।

घर खोदे ईंधन बहुत—घर खोदनेसे काठ कित्ना
बहुत मिल जाता है । जब कोई घर बिगाड़नेपर हो
तो उसे खर्च करनेको बहुत मिलता है ।

घर घरका, साथ नरका—किरायेके मकानमें न रहे
और खियोंका साथ न करे ।

घर घरके जाले बुहारती फिरती है—(१) जो
औरत घर घर फिरा करती है (२) जो मनुष्य नित्य
घर बदला करता है और (३) जो मनुष्य हरएककी
खुशामद करता फिरता है, उसपर क० ।

घर घर डोलत दीन है, जन जन जांचत जाइ ।
दिये लोभ चशमा नखनि, लघु पुनि वडो
दिखाइ—(विहारी) हे मन ! तू दीन होके घर घर
फिरता है और जने जनेसे मांगता है । लोभका
चश्मा आँखोंमें लगाये है इससे तुझे छोटा आदमी
भी बड़ा दिखाई पड़ता है । लोभीको क० ।

घर घर पीत न कोजे, तो गाँव गाँव तो कीजे—
स्पष्ट ।

चड़े लु खाद सिंगर रस, बड़ पुरुपनि सों प्रीत ।

घर घर पीत न करि सकै, गाँव गाँव इक सीत ॥

(कुलटा । लो० २० की०)

घर घर मटियाले चूल्हे—(ज०) सब घरोंमें एक
ही हाल है । जब कोई किसीके घरकी धुराई करता
है, तब क० ।

कोतिथ करे नहीं रस रोग, ही ही करे कड़ा नर प्रीत ।

लोग पखानों मभमें जलूँ, घर घरमें मटियाले चूल्हे ॥

(परकीया । लो० २० की०)

घर घर यही लेखा—(ज०) ऊ० दे० । पूरी मसल
यह है—“ऊचे चढ़के देखा, घर घर येही लेखा”

घर घर शादी घर घर गम—दुःखसबसे घरोमें
होता है ।

घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनोंका दाम खड़ा खड़ी—
(व्य०) घर, घोड़ा और गाड़ी इन तीनोंका दाम
नगद ले लेना चाहिये ।

घर घोड़ा, नखास मोल—(व्य०) घरमें तो घोड़ा
बंधा है और बाजारमें उसका मोल करते हैं । जब
कोई दिना माल दिखाये ही उसका दाम कहे, तब क०
घर चैन तो घाहर चैन—स्पष्ट ।

घर जल गया तब चूड़ियां पूर्छीं—जब कोई काम
बिगड़ जानेपर छह लेता है, तब क० ।
इसपर एक कहानी है । किसी मूर्ख स्त्रीने नई चूड़ियां
बनवाकर पहिनीं । उसकी पत्नी इच्छा रखती कि सब
कोई उसकी चूड़ियोंकी प्रशंसा करें । किसीका ध्यान
उसपर न आते देखकर, एक दिन उसने अपने घरमें
आग लगा दी । जब वहां बहुत भीड़ जमा हो गई तब
उस स्त्रीने अपना हाथ उठाकर घरकी तरफ इशारा
करके लोगोंकी आग बुझानेकी कष्ट । ईसा करनेपर
ऊँच लोगोंकी निगाह उसकी गई चूड़ियोंपर पड़ी और
किसीने पूछा—“क्या यह चूड़ियां तुमने नई बनवाईं
हैं ?” तब उस स्त्रीने उपरोक्त मसल कही ।

घर जले घूर घुतावे—जब जरूरतका काम न करके
फिजूल काम किया जाने, तब क० ।

घर जले तो जले चाल न बिगड़े—लकीरके फकी-
रोंपर क० ।

घर तड़, यह जबरजड़—जब निर्धन घरमें शाहखर्च
औरत होती है, तब क० । जिस घरमें आदमी बहुत
हो और रहनेकी जगह थोड़ी हो, वहां भी क० ।

घर न वार, मियां मुहल्लेदार—(च०) नामके
अनुसार काम न हो, तब क० ।

घर फूंककर विरा मारना—(प०) जब कोई थोड़े
फायदेके लिये बहुत दुःखान कर बैठे, तब क० ।

घर फूंक तमाशा दिखना—जो फैलसूफीमें अपना
घर बिगाड़ देता है, उसपर क० ।

घर फूटे गंवार लूटे—स्पष्ट ।

घर बैठे आधा भला—(व्य०) बिना परिधम थोड़ा
भी मिले तो अच्छा ।

घर बैठे गंगा आई—बिना परिधम काम सफल हो,
तब क० ।

घर व्याह, यहू कंडोंको डोले—जब कोई कामके
समय बेपरवाही करे, तब क० ।

घर भी बैठे और जान भी खाओ—निष्ठक को क० ।

घर भाड़े, हाट भाड़े, पूंजीको लागे व्याज, मुनीम
बैठा रोटियां भाड़े, दिवाला कांटे काई लाज—
(व्य० मा०) स्पष्ट । बिना पूंजीवालेको क० ।

घर मटकी तो वाहर माठा—जिसके घरमें कुछ
होगा, उसे वाहरसे भी मिल जायगा ।

घर मिलता है तो घर नहीं मिलता, घर मिलता
है तो घर नहीं मिलता—स्पष्ट । जब लड़कीके
बिवाहका कहीं ठीक नहीं होता, तब क० ।

घरमें आई जोय, टेढ़ी पगिया स्तीधी होय—
(१) व्याह होनेसे पेंडन निकल जाती है । (२)
व्याह होनेसे मनुष्यकी इज्जत हो जाती है । टेढ़ी
पगड़ी सौहदे पहनते हैं और स्तीधी इज्जतदार ।

घरमें खर्च नहीं, ड्योढ़ीपर नाच—भूठी भड़क
दिलानेवालेपर क० ।

घरमें घर, लड़ाईका डर—(ज०) पास रहनेसे
लड़ाईका डर रहता है ।

घरमें चनेका चून नहीं, गेहूँकी दो पो लाइयो—
(च०) भूठी भड़क दिलानेवालेको क० । घना गेहूँसे
सस्ता होता है ।

घरमें चिराग नहीं, वाहरमें मशाल—भूठी भड़क
दिलानेवालेपर क० ।

घरमें चूहे डंडौत करते हैं, (वा एकादशी करते
हैं)—जिसके यहां खानेको न हो, उते क० ।

घरमें जोरुका नाम यहू वेगम रख लो—अपने
घरमें जो खुशी चाहे, सो करो ।

घरमें दवा, हाय हम मरे—मूर्खोंपर क० । जो चीज
रहते हुए भी उसको काममें न लाकर इधर उधर
भटकते फिरते हैं ।

घरमें दीया न धाती, मुंडों फिर इतराती—
(ज०) भूठी भड़कपर क० ।

घरमें दीया तो मस्जिदमें दीया—(मु० ज०) पहले
अपना घर सम्भालना चाहिये, फिर वाहर ।

घरमें देखो चलनी न छाज, वाहर मियां तीर-
न्दाज—(ज०) भूठी भड़कपर क० ।

धन स्त्रिपर ऋण—जब कंजस आदमी पैसा
स राहते हुए भी दूसरेका कर्ज नहीं चुकाता,
क० ।

धान न पान, वीथीको बड़ा गुमान—
(ज०) जब किसी गरीब औरतको घमंड हो जाता
तब क० ।

नहीं तागा, अलयेला मांगे पागा—
दिखावेपर क० ।

नहीं तिनका, धिजली मेहमान—गरीबके घर
मेहमान आये, तब क० ।

नहीं दाने, बुढ़िया चली भुगाने—(ज०)
दिखावेपर क० ।

नहीं घूर, घंटा मांगे मोतीचूर—हैसियतसे
मादा चाहनेवाले पर क० ।

बिलौटा बाघ—घर बैठे जो अपनी वीरता
जाता है, उसपर क० ।

जूजी भांग नहीं और बाहर न्योते सब—
कोई ऐसा काम करे जिसके करनेमें वह बिल-
असमर्थ हो, तब क० ।

हे न तोरथ गये, मूड़ मुड़ाकर जोगी भये—
अपने चलते कामको छोड़कर दूसरा काम करना
कर दे और वह भी पूरा न हो सके, उसपर क० ।

हे न तोरथ गये, मूड़ मुड़ाय फज़ीहत भये—
आधा काम करके उसको पूरा नहीं कर पाता,
सुकमान उठाना पड़ता है ।

रके, पूत भतारके—व्यभिचारिणी सियोंपर
।

घरको छाया, बाहर रहे बाहरको छाया—
लसी या मुफ्तखोरको क० ।

न तीरथ गये, मूड़ फोड़ते मर रहे—
देकाने रहकर दुःख पाना ।

देका एक घर बिघरेके सौ घर—छड़े मनु-
को क० । जिसकी गृहस्थी नहीं, वह जहां चाहे
सकता है ।

के मर्द हैं—इरफोक आदमीको क० ।

में वेद, मरे कैसे—जब प्रबन्धकर्ताके रहते
घरका बन्दोबस्त ठीक न हो, तब क० ।

घाट गये मुर्दे लौटके नहीं आते—(व्य०) जो माहक
चला जाता है, वह फिर लौटकर नहीं आता ।

घाट घाटका पानी पीया है—बहुत चतुर आदमी-
को अथवा जो अनुप्य बहुत तनुवैकार होता है,
उसको क० ।

घायँ घायँ तोरा, मनहा बाजे मोरा—(पू० ज०)
भीतसे तो तेरा है दिवानेके लिये मेरा है । जब
किसीका पति दूसरेको चाहता है और ऊपरसे उस-
पर प्रेम करता, तब एक स्त्री दूसरी स्त्रीसे ताना
देती है ।

घायलकी गत घायल जाने—जिसपर बीतती है
वही जानता है ।

घासके गंजका कुत्ता, खाय न खाने दे—
दुष्टोंपर क० ।

घी कहां गया खिचड़ीमें—अपनी चीज जब अपने
ही काम आ जाय, तब क० ।

सुनि निज बारि वीति बर बाल,

कछो हिय धरि हपे बिगाल ।

लोग पखनि सुन्यो सुनिधि,

पखी घोब तो खिचड़ी मारि ॥ (श्लो० २० कौ०)

घो कहां गया ? खिचड़ीमें, खिचड़ी कहां गई ?
प्यारोंके पेटमें—ऊ० दे० ।

घोका लड्डू टेढ़ा भी भला—स्पष्ट । (१) विशेषतः
लड्डूकोपर क०, यदि वह बदनकूल और मूल भी
निकले तौभी उससे पिण्डदानकी आशा की जाती
है । (२) रूप देखकर गुण नहीं पहिचाना जा सकता ।
घोके कुप्पेसे जा लगा है—बड़े आदमीसे सम्यन्ध
रखनेवालोंपर क० ।

घी खाया है वापने, सूँघो मेरा हाथ—दूसरेकी
की हुई कीर्तिपर रींग मारनेवालोंपर क० ।

घो खिचड़ी हो रहे हैं—दोगोंका गृह एक हो रहा है ।

घो गिर गया “मुझे रूखी भाती है”—लाचारी
अवस्थापर क० ।

घो जाटका, त्रिल हाटका—घी गांवका और तेल
दुकानका अच्छा होता है, क्योंकि गांवके घीमें
मिलावट नहीं होती और दुकानका तेल पुराना
होनेसे साफ रहता है ।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रखो—इन्द्रजित
सँभालकर खर्च करो ।

घी संवारे काम, बड़ी बहूका नाम—(ज०) स्पष्ट ।

'नी शुभ घघो सतिय बघो कचे कछाउत खोइ,

घी संवारे सावनहि नाम बहूकी छोइ ।' (खो०२०की०)

घुटने नवेंगे तो पेट हीको—जब कोई धरवालोंको
तरफदारी करता है, तब क० ।

घुसिया हाकिम खुसिया चाकर—रियवत खाने-
वाले हाकिम, रुठे हुए नौकर इन दोनोंसे भय रहता है ।

घूसोंमें उधार क्या—(१) वस्तेका बदला उसी समय
दिया जाता है । (२) घस या रियवत देनेमें उधार
नहीं होता ।

घोघेमें पकाया सीपीमें खाया—जो आदमी अपने
हिसाबसे चले, उसपर क० ।

घोकन्त विद्या, खोदन्त पानी—विद्या घोकनेसे
और पानी खोदनेसे मिलता है ।

घोड़ा अड़ा क्यों, पान सड़ा क्यों, रोटी जली क्यों ?—
फेरा नहीं गया । (धामीर लुयरू) । तीन प्रश्नोंका
एकही उत्तर ।

घोड़ा घाससे यारी करे तो खाय क्या—
(व्य०) (१) मिहनताना मांगनेमें लिहाज नहीं
करना चाहिये । (२) जो जिस चीजका व्यापार
करता है, यदि उसमें मुनाफा न करे, तो उसका
खर्च कैसे चले ।

घोड़ा घुड़साल हीमें थिकता है—(व्य०) जहां-
की चीज, वहाँ थिकती है ।

घोड़ेका गिरा संभल सकता है, नज़रोंका गिरा
नहीं संभलता—ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिसमें
किसीकी नजरसे उतर जाय ।

घोड़ेकी हुम बड़ेगी तो अपनी ही मखिखयां
उड़ायेगा—जब किसीकी ऐसी बड़ती हो जिससे
किसीका मतलब न निकले, तब क० ।

घोड़ेकी सवारी चलता जनाजा—(१) घोड़ेपर
चढ़े तो धीरे धीरे हाँके जैसे जनाजा चलता है ।
(२) घोड़ेकी सवारी खतरनाक है । जनाजा=अर्थी;
चलता जनाजा=जीतेका जनाजा इसलिये कहा,
कि जनाजा मुर्देका ही होता है ।

घोड़े गरे दलालन परे—(व्य०) जब कोई दो आद-
मियोंका झगड़ा मिटाने जाय और उसीके सिर
आफत आय, तब क० ।

कीन नीति यह करल प्रवीन,

थियके पलटें मोहि नहि लीन ।

बयन कछाउति जग चित चरे,

घरे गरे दबालन परे । (खो० २० की०)

घोड़ोंको घर कितनी दूर—कारण यह है, कि उनकी
चाल तेज होती है । काम करनेवालोंको काम
करते देर नहीं लगती ।

च

चंचल नारकी चाल छिपे नहीं, नीच छिपे ना
बहुपण पाये—स्पष्ट ।

चंचल नार छीलसे लड़ो, छन अन्दर छन बाहर
खड़ी—स्पष्ट ।

चंडाल चौकड़ी—दुष्टोंकी समाजको क० ।

चंडो घर लीपेगी ? नहीं निगोड़े खोदूंगी,
चंडो घर खोदेगी ? नहीं निगोड़े लीपूंगी—
कलहप्रिय स्त्रियोंपर क० ।

चंदनकी चुटकी, न गाड़ी भरकाठ—अच्छी चीज
थोड़ी ही अच्छी है, निकम्मी बहुतही हो तो भी
अच्छी नहीं ।

चंदन पड़ा चमारके, नित उठ कूटे चाम । रोरो
चंदन महि फिरे, पड़ा नीचसे काम—स्पष्ट ।
चंपाके दस फूल, चमेलीकी एक फली,
मूरखकी सारी रात, चतुरकी एक घड़ो—स्पष्ट ।
चकवा चकवो दो जने, इत मन मारो फोय ।
यह मारे फरतारके, रैन बिछोया होय—यह बात
प्रसिद्ध है, कि चकवा चकवीका रात्रिके समय वियोग
हो जाता है । एक चंदी या तालाफके इम पार रहता
है दूसरा उस पार । जब कोई सतायेको सताता है,
तब क० ।

चकमक दीदा खाय मलीदा—(ज०) फण्याको क० ।

चकी तले घर तेरा, निकल सास घर मेरा—

(ज०) जयदस्त बहुको क० । गरीब आदमियोंमें
तिवाज है, कि जब लड़केका ब्याह हो जाता है, तो
मा उसके लिये भीतरका घर छोड़ देती है और बाहर
घरमें अपना डेरा डालती है जिसमें चकी रहती है ।

चकीपर चकी, मेरी सोंगद पकी— हठीले आदमी-
को क० ।

चकीमें कौल डालोगे, तो चून पाओगे—बिना
पैसेके कोई काम नहीं होता ।

चल डाल माल धनको, कौड़ी न रख कफनको ।

जिसने दिया है तनको, देगा वही कफनको—
स्पष्ट । मस्त आदमीका कहना है ।

संठकमें ओ जूर है चचकी भी ले गंवादे ।

मयके बहाने नाले गयलोंको खड़ खड़ादे ।

कोठे मकां हवेली सब खोदके खिजादे ।

कड़ियों तलक जड़ादे इंटों तलक उड़ादे ।

दिलकी खुशकी खातिर चख माल धनको ।

गर मर्दे है तो आशिक कौड़ी न रख कफनको ।

(नजीर)

चचेरे ममेरे, वड़ तले बहुतेरे—मालदारोंके सब-
मातेदार बन जाते हैं ।

चटक न छांडत घटतह, सज्जननेह गंभीर । फीको
पर न करू घट्टे, रंगो चोल रंग चीर—सज्जनका
नेह ऐसा गहिरा है, कि सम्पत्ति-हीन होनेपर भी
मनोरंजनता नहीं छोड़ता, जैसे मजीठसे रंगे हुये
कपड़ेका रङ्ग जीर्ण होनेपर भी फीका नहीं पड़ता ।

चट मगनी पट ब्याह, टूट गई टंगड़ी रह शया
ध्याह—(ज०) अनिश्चित कामपर तथा होनहारपर क० ।

चट मगनी पट ब्याह } तुलत फुलत जो काम हो,
चट रोटी पट दाल } उसपर क० ।

चटोरा कुत्ता अलोनी सिल—चटोरे आदमीको जो
मिल जाय वही खा लेता है ।

चटोरा खावे अपना घर, चटोरा खावे दोनों घर—
चटोरा अपना घर खाता है पर मुफ्तदोरा अपना
और पराया दोनों ही घर खा लेता है ।

चटोरी जयाम दौलतकी दान—ऊ० दे० ।

चट्टे चट्टे लड़ाना—इधरकी बात उधर करना ।

चढ़ती कला जागती जोत—देवतापर कही जाती
है और आशीर्वाद भी है ।

चढ़ते पित्त उतरते बाई, ताते गोरख भूनके
खाई—भांगपर क० ।

चढ़ते वरसे आर्द्रा, उतरत वरसे हस्त, कितना
राजा दण्ड ले, रहे मनन्द गृहस्थ—(क०) आर्द्रा
नक्षत्रके चढ़ते और हस्तके उतरते यदि बरसा हो,
तो राजा कितना ही दण्ड क्यों न ले तो भी किसान-
नको फायदा रहता है ।

चढ़े रङ्ग तीसरो धारके बोरे—तीसरी बार रंगनेसे
रङ्ग अच्छा होता है ।

पक्षिभी रति, दुति, प्रीत लखात,

सब दिन हौते हगन सुहात ।

लोत छलि क्या कहत प्रसंग,

तोभी वीर चढ़े बहु रग ॥ (मन्था । लो० र० कौ०)

चतुरको चौगुनी, मूरखको सौगुनी—(१) दूस-
रेके धनका परिमाण चतुरोंको चौगुना और मूर्खोंको
सौगुना दीखता है । (२) चतुरका धन लोगोंको
चौगुना और मूर्खका सौगुना दीखता है ।

चतुर नार नर कूड़से, ब्याह हुप पछिताय,
जैसे रोगी नीमकों, आंख मीच पो जाय—स्पष्ट ।

चतुर शत्रु उपाय ही नासे—चतुर शत्रु उपायसे
ही नष्ट होता है वा मारा जाता है ।

चतुराई सब विद्यामूल—सब विद्या चतुराईसे
प्राती है ।

लखी श्रौदारि परभीन, नैन सैनमें पिय सब कौन ।

कहे पखानो रस चतुरकूल, चतुराई सब विद्यामूल ॥

(मीठा । लो० र० कौ०)

चना और चुंगल मुँह लगा छूटता नहीं—खाने
और छननेमें पहले आनन्द और पीछे कष्टदेते हैं ।

चना कहे मेरी ऊंची नाक, एक घर दलिये दो
घर हाँक । जो खावे मेरा एक टूक, पानी पीवे सौ
सौ छूट—स्पष्ट । चना खानेसे प्यास बहुत लगती है ।
चना चबैना गड़गड़ जल जो पुरवै करतार । काशी
कयहुं न छांडिये विश्वनाथ दरवार—काशीकी
प्रयागमें क० ।

चना खाकर हाथ चाटना—नदी आदमीको क० ।

बना पकत है चैतमें, अरु गेहूँ बैसाख । कातिक
पाके धाजरा; दंगसिर पाके उवार—(क०) स्पष्ट ।
चना मर्द नाज है—चना बहुत पुष्ट होता है ।
चने चिरौंजी हो गये, गेहूँ हो गयीं दाख ।
घरमें गहने तीन हैं, चरखा पीढ़ी खाट -
कुसमय पड़नेपर क० ।

चपनी लिखकर सिरपर धरी, निकल पड़ा या
निकल पड़ी—(मु० ज०) स्त्रियोंका विश्वास है, कि
इस मसलके साथ शेख फरीदका नाम एक चपनीपर
लिखकर प्रसूतिके सिरपर रख देनेसे लड़का या लड़की
सहजमें हो जाती है ।

चप्पे जितनी कौठरी, मियाँ मुहल्लेदार—
(च० पं०) डींग हाँकनेवालेपर क० ।

चमगीदड़के घर महमान आये, हम भी लटक
तुम भी लटको—जैसी संगतमें पड़े बैसा करो ।

चगहो जाय पर दमड़ी न जाय—कंजलोंको क० ।

चमड़ेकी जूयान हैं—भूल चक हो ही जाती है । जब
कोई भूलकर कुड़का कुड़ कह बैठे, तब क० ।

चमरन कोसे दोर न मरहीं—चमारोंके कोसनेसे
प्यु नहीं मरते ।

चर्ची छाई आंखनमें, नाचन लागी आंगनमें—
(मु०) वेशम आदमी क्या नहीं करता ? मदी-
न्मत्त औरतोंपर क० ।

चमारकी छोकरी चन्दन नाम—(च०) गामा-
नुसार गुण न हो, तब क० ।

चमारको अर्शमें भी वेगार—दुलियाको हर जगह
दुःख ही मिलता है ।

चमार चमड़ेका यार—(१) मतलबी आदमीपर
क० । (२) चमारको गुजर चमड़ेसे होती है, इस-
लिये वह उसीको थपना यार समझता है । (३)
चमार जतेसे ही मानता है, बातसे नहीं ।

चमेली चावमें आई, घड़तावर रेवड़ियाँ पांटे—
सुम खुशीमें आकर जब पर्व करने लगता है, तब क० ।

चमेली चाचमें आई, वलितयारै साथ लाई—
(मु०) जब एक आदमीको आदर करनेपर वह घर
भरको से आता है, तब क० ।

चमोटो लागे चमचम विद्या आवे भ्रमभ्रम—
लड़के जब गुरुके यहां पढ़ते हैं, तब क० ।

चल जाय अत्तारी, भ्रक मारे चकलेदारी—
दवा बेचनेवालेको मुनाफा बहुत होता है ।

चलत फिरत धन पाइये बैठे देगा कौन ?—
उद्यम करनेसे धन मिलता है, बैठे रहनेसे नहीं ।

चलता चरखा—जिसका रोजगार अच्छी तरह चलता
हो, उसपर क० ।

चलता पुरजा—घालाक आदमीको क० ।

चलता फिरता ना मरे बैठा ही मर जाय—
(प०) मेहनती भूषा नहीं मरता, आलसी ही
मरता है । होनहारपर भी क० ।

चलतीका नाम गाड़ी, गाड़ीका नाम उखड़ी—
दुनियाँकी उल्टी रीतिपर क० । जो चलती है उसे
- तो गाड़ी कहते और जो गड़ी हुई है उसको उखड़ी
कहते हैं । उखड़ी=उखली ।

चलती गाड़ीमें रोड़ा बटकाना—चालू काममें
- विघ्न डालना ।

चलती चर्जी देखके, दिया कथीरा रोय,
दो पाटनके बीचमें स्थापित रहा न कोय—
संसारकी अनित्यतापर क० । यासमान और ज्यो-
नके बीचमें जो आदिगा, उसे मरना ही पड़ेगा ।

कह रहा है आसमा, यह सब मया कुछ भी नहीं ।
पीच दंगा एक गरिबमें नाश कुछ भी नहीं ।

चलतीमें कौन कसर करता है ?—हरएक आदमी
अपनी उन्नतिकी चेष्टा करता है ।

चलते चोर लंगोटी लाभ—चोर भागते समय जो
हाथ पड़ता है, वही ले जाता है ।

चलते घैलके चूतड़में लकड़ी करना—जब कोई
काम करते हुए आदमीको छिड़ता है, तब क० ।

चलते हाथ पांव उठा लो—इंगरसे प्रार्थना करना
जिसमें पचाहज होकर न मरे ।

चलना ही रहता नहीं, चलना चिप्ये घोस,
देसे सद्दज सुदागपर कौन गुंघाये सीस—
स्पष्ट । सद्दज सुदाग=धोड़ी देरका उदाग ।

चलनीमें गाय हुई, कपारेको दोष दें—ज्ञान एक-
पर हुता काम बरे और तबदीको दोष दे, तब क० ।

चलनो भलो तो फोसको, दुहिता भली तो एक मांगन भलो तो बाप सों, जो मांगेपर देत—
स्पष्ट ।

चलयो भलो न फोसको, दुहिता भली न एक, मांगन भलो न बाप सों, जो विधि राखे टेक—
स्पष्ट । ऊपस्का उल्टा ।

चल मरघटको लफड़ी सस्ती हैं—(च०) कंजस वनियेको क० ।

चल मेरे चरखे चरखचूँ, कहांकी बुद्धिया कहांका तू—अपने ही मनकी कहे जाना दूसरेकी न समना ।

इसपर एक कहानी है जो अकर कोटे लड़कोंका मन बहलानेके लिये कही जाती है । किसी नागरिकमें एक बुद्धिया शेर, भालू आदि हिंसक जन्तुओंसे घिर गई । जब वे उसे मारनेपर उतारू हुए, तो बुद्धिया बोली, "भाई ! इस समय मैं बहुत दुर्बल हूँ । मैं अपनी लड़कीके यहां जा रही हूँ । तुम लोग कुछ दिन ठहरो, जब मैं खापीकर खूबमोटी ताजी चोकर लौटूंगी तब तुम मुझे खा लेना, तो तुम्हारा पेट भी भरेगा ।" सबने बुद्धियाकी बातका विश्वास करके उसे छोड़ दिया । जब वह बुद्धिया लौटी, तो अपने साथ एक चरखा लेती आई और उसीके भीतर बैठ गई । जब कोई जानवर उसे कहता कि 'बा बुद्धिया । अपना वादा पूरा कर' तभी वह चरखेके भीतरसे उबाव देती, कि "चल मेरे चरखे चरखचूँ, कहांकी बुद्धिया कहांका तू ।" यह सुनकर वह समझता, कि यह बुद्धिया नहीं, कुछ और बला है, तब डरके मारे बहासी भाग जाता । इसी तरह बुद्धियाने अपनी जान बचा ली । इसमें शिका यह है कि बलसे बुद्धि बड़ी है ।

चला चलीकी राहमें, भला भली कर लेहु—
मृत्युसोकरमें आकर कुछ भलाई कर लो ।

चली चली आई सौतेके पीहर—(ज०) जब कोई परमादीकी राहपर चले, तब क० ।

चली चली धी माखो आई—जब कोई अफवाह उड़ते उड़ते यहांतक सी पहुंच जाय, तब क० ।

चले जाहु यहां को करे, हाथिनको व्योपार ।
जानत नहीं यहि पुर वसें, धोयी आँड कुम्हार—
(बिहारी) चले जाओ, यहां कौन हाथीको मोल

लेता है ? तुम नहीं जानते, कि इस नगरमें धोयी, धेलदार और कुम्हार रहते हैं । तात्पर्य यह है कि वहां गधोंके गाहक हैं । कोई गुणी ऐसे स्थानमें रहा चाहे, जहां उसकी कदर न हो, तब क० ।

चले जाँक जिमि बक्र गति, यद्यपि सलिल समान—
(तुलसी) स्पष्ट । नीच अपनी प्रकृति नहीं छोड़ता ।

चलै न जाने आंगन टेढ़ा—(पू० ज०) मूल कारीगर अपने औजारोंके ही दोष बताता है । जब किसी कामके करनेकी युक्ति तो न जाने और सामानको दोष दे, तब क० ।

चलै न पावै कूदन नाम—नामके अनुसार गुण न हो, तब क० ।

चलै बहुत सो वीर न होई—स्पष्ट ।

चलै रांडका चरखा और चलै बुरेका पेट—
रांड दुखियारी पेटके लिये सदा चरखा चलाया करती है और बुरे मनुष्यका बदपरहेजीके कारण सदा पेट चला करता है । जब कोई किसीसे चलनेके लिये कहता है और वह नहीं जाया चाहता, तब उपरोक्त मसल कहता है; जैसे "हम क्यों चलें चलै रांडका चरखा" इत्यादि ।

चवोकड़ सो लड़ोकड़—हंसीसे ही लड़ाई होती है ।

चश्म बड़ दूर आंखें मोती चूर—इन सुंदर आंखोंपर किसीकी बदमिगाह न पड़े । आशीर्वाद है ।

चश्मे मा रौशन दिले मा खुश—(फा०) लड़केके लिये क० । इसीकी हिन्दी है, "आंखों सुख कलेजे टावक ।"

चसका दिन दसका, पराया खसम किसका—
(ज०) स्पष्ट । पराया अपना नहीं होता ।

चहार चीज अस्त तोहफये मुदतान, गर्द, गर्मा, गदा, ओ गोरिस्तान—(फा०) धल, गरमी, फकीर और कर्मोंके लिये मुलतान मशहूर है ।

चहार शम्बह नदरद—(फा०) चहार शम्बह फारसीमें बुधवारको कहते हैं और हिन्दीमें बुध अक्लको कहते हैं । जब किसीको ध्यंगसे मूल बनाना हो, तब क० ।

चांदको भी ग्रहण लगता है—जब किसी सचरित्र मनुष्यकी कीर्तिमें अंधा लगे, तब क० । जब स्त्री

पुरुषमें एक सुन्दर और दूसरा कुरूप हो; तब भी. क०।

चांद चढ़े कुल आंलम देखे—बात खुल जानेसे सभीको मालूम हो जाती है।

चांदपर खाक डालनेसे नहीं छिपता—गुणीको दोष लगानेसे नहीं लगता।

चांदमें मैल और इसमें मैल नहीं—यहुत सुन्दर स्त्रीको क०।

बाम पर नंगी न जाओ, तुम शर्ब महतावमें।

चांदनी पीड़े आयगी, मैला वदन हो जायगा—बाम=कत।

चांदीका चश्मा लगाते हैं—रिखत लेते हैं।

चांदीका जूता सिरपर—रूपसे सब कुछ हो सकता है।

चाक कुनम, गिरह कुनम देखो, मेरा हुनर—मैं काट भी सकता हूँ, सी भी सकता हूँ। चतुरको क०।

चाकरके आगे कूकर, कूकरके आगे पेशखे मा—जब मालिक अपने नौकरको किसी कामके करनेकी याज्ञा दे, पर वह स्वयं न करे और किसी दूसरेको कर देनेके लिये कहे, तब क०।

चाकरको उन्न नहीं, कूकरको उध्र है—नौकाको मालिकके हुकमकी तामील करनी ही पड़ती है।

चाकरसे कूकर भला, जो सोवै अपनी नाँद—जब नौकर आठों पहर काम करते करते तज्ञ हो जाता है, तब कहता है।

चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर—ऊ० दे०।

चाकरीमें ना फरी क्या?—नौकरको मालिकका हुकम बजाया ही पड़ता है।

चाकी फेरी, हुई चूनकी डेरी—(या० ज०) स्पष्ट।

चाचहिं चाचा किमि कहे सगे याप नहिं वाप—जो अपनेका ही सम्मान नहीं करता वह दूसरोंका कैसे करेगा।

चाचा चोर भतीजा काजी, चाचाके घर नौयत बाजी—जब कोई काम तो घुरा करे और आपसवाले दूसरोंके सामने उसकी तारीफ करे, तब क०।

चातक चाहे स्वांतिकी बूंद—जिसकी जिससे लौ लगी हो, वह उसके मिलनेकी इच्छा करता रहता है।

प्रिय भावत मिथय मिथ जान, सजि सिद्धार करै मग जानि।
सखी न लोग चलि व्यो कहे, चातक स्वांती बूंदहिं चहे ॥
(श्लो० २० की०)

चातुरका काम नहीं पातुरसे अटके। पातुरका काम यही लिया दिया सटके—जो लोग घुनर होते हैं, वे केर्याके फंदेमें नहीं पड़ते; क्योंकि केर्याका काम द्रव्य खींचकर अपनी और कर लेनेका है।

चातुरका कर्ज मनमें निस्तार—चतुरकी कर्जां देनेसे रुपये इयनेका डर नहीं रहता, क्योंकि वह कमाकर धरदा कर सकता है।

चातुरकी चेरी भली, मूरखकी नारसे—मूर्खकी स्त्री होनेसे चतुरको लौंडो होना अच्छा।

चातुर तो वैरी भला, मूरख मला न मीत, साथ कहें हैं “मत करो कोई मूरखसे प्रीत”—स्पष्ट।

चामका चमोटा कूकर रखवाल—जब कोई अपने जानी दुग्मनके हाथमें पड़ जाता है, तब क०।

चामके दाम—यहुत सस्ती चीजपर क०। दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुगलकने १३३० ई० में चमड़ेका सिका चलाया था। उसी विषयको लेकर यह मसल क०।

चार अफ़ामी और तीन हुक्का—जब जस्तसे चीज कम होती है, तब क०।

चार कानकी बात ब्रह्मा भी छिपा नहीं सकता—जो बात दो श्रादमियोंको मालूम हो, वह छिप नहीं सकती।

चारगोडवा बांधा जाय, दोगोडवा न बांधा जाय—पशुको जहां चाहो बांध रखलो, मनुष्य नहीं बांधा जा सकता।

चार घर चौ-श्रैया, तेकरा बीचमें भोलन मैया—(पू० ज०) चार भाई चारों घरमें रहते हैं जिनमें एक भिलमज्ञा है। तात्पर्य यह है कि सभ श्रादमी एकसे नहीं होते।

चार सूड़े चार चमार, दो चुगल, चार चण्डाल, इन चौदहका बांधा धड़ा, जिसका नाम चौधरी पड़ा—जातिके चौधरियोंको ब्यंगते क०। क्योंकि यह कभी कभी श्रन्याय कर बैठे हैं।

चार चोर चौरासी बनिये, एक एक फरफे लूटा-
चार चौरांने चौरासी बनियोंको एक एक करके लूट
लिया, इसकी कहानी इस तरह है :-
किसी समय चार चोरोंने रास्ते में चौरासी *बनियोंको
जाते देखा । बनिये स्वभावतः डरपोक होते थे और
विपत्ति आनेपर एक दूसरेकी मदद नहीं करता । जब
चोरोंने वनमेंसे एकको लूटा तो बाकी उधकी मदद न
कर बचग से गये । इसी चोरोंको और भी सुभीया हो
गया । आखिर चार चोरोंने सब बनियोंको लूट लिया ।
भाव यह है, कि एकता ही धल है । अगर चोरोंकी
नाई बनियोंमें भी मेल होता, तो चौरासी बनियों-
को चार चोर नहीं लूट सकते ।

चार जने चारहु दिशातें चारों फोन गहि, चाहे
जो सुमेरुको उखारें तो उखड़ जाय—(ठाकुर)
एकतासे कठिनसे कठिन काम भी हो सकता है ।

चार ज्ञात गाधें हर भोग, अहिर, उफाली,
धोयी, डोम—ये चारों हर धक, गाते रहते हैं ।

चार दिनका रङ्ग चङ्ग, छोड़ देईजरवा मोरा
सङ्ग—(प० ज०) स्पष्ट ।

चार दिनकी आइयां और सोंठ बिसाहन जाइयां-
(प० ज०) व्याह हूए तो चार दिन हूए और जायेके
लिये सोंठ लेने चली ।

चार दिनकी चमार चौदह है—देखो, 'चार दिनकी
चांदनी.....'

चार दिनकी चान्दनी, फेर अन्धेरी रात—
जब कुछ दिन खल होकर फिर दुःख पड़ता है, तब,
शयनवा जब कोई आदमी अचछा बसीला पाकर
धमएड करने लगता है, पर कुछ दिगमें वह दुःखी
हो जाता है, तब क० ।

(१) बरख पन्द्रह या कि सोलहका दिन ।

सुरादोंकी रातिं जवानोंके दिन ॥

कहां यह जवानी कहां फिर यह दिन ।

मसल है कि है चांदनी चार दिन ॥ (नीरहसन)

(२) मन मोहनकी हिलिबो मिलवी,

दिना चारकी चांदनी है गईरी । (ठाकुर)

(३) कफो परोसिनघों तिया, निरखि सखी मुखदेन ।

चार दिनाकी चांदनी, बडरि अंधेरी नैन ॥

चार पांचका घोड़ा चौंकता है, दो पांचका
आदमी क्या बला है ?—आदमीके चौंकनेपर क० ।

चार महीने हालका, चार महीने तालका, चार
महीने पालका—बरसातमें ताजा, जाड़ेमें तालाबका
और गरमीमें रक्खा हुआ पानी पीना चाहिये ।

चार साल बुरा हवाला—घोड़ेपर क० । क्योंकि
चार वर्ष घोड़ेके लिये घुरे होते हैं ।

चार हाथ पांच सबके हैं—स्पष्ट । जब लड़ाई होती
है, तब क० ।

चारू सां भारू—(घा०) जो बहुत खाते हैं वे भार
भी बहुत ज्यादा उठाते हैं ।

चारों रास्ते मोकले—आजाद मनुष्यको क०, जिसके
चारों रास्ते खुले हैं ।

चालीस वर्षका रेजा—मूर्खको क० ।

चिह्न साल चर्मे अजीजत गुजग,

मिजाजे तु अजु झाल तिफुनी न गल । (शिवशादी)

चालीस सेरा ऊत—पूरे मूर्खको क० ।

चालीस सेरी घात कहते हैं—पकी या गुली हुई
घात कहते हैं ।

चाव घटे नितके घर जाये, भाव घटे कुछ मुखसे
मांगे, रोग घटे कुछ औपधि पाये, ध्यान घटे
कुसङ्गत पाये—स्पष्ट

चाह करू, प्यार करू, चूतर तले भंगारू, धरू,
जल जाय तो मैं क्या करू—(ज०) जब कोई किसीका
भूडा दुलार करता है, तब क० ।

चाह चमारी चूहरी सब नीचनकी नीच—सोभ
सबसे बुरा है ।

चाहतकी चाकरी कीजे, अनचाहतका नाम न
लीजे—जो अपमान सम्मान करे, उसकी गुलामी करना
अच्छा, पर जो अपमान करे उसका नाम भी न
लेना चाहिए ।

(१) दावा कहां गए कहां, सुन्दर सुगान कहां,

आपको न चाहे ताकि आपको न चाहिए । (बोधा)

(२) रहिगन मोहि न सुहाय, अमी पियये वान विग ।

बह विव दीय बुलाय, भाग सचिन मरिदी मकी ।

चाहनेके नाम गधी भी छेत धाना छोड़ देती है—

लगन बुरी होती है। मनुष्योंकी कौन कहे, पशु भी लगन लगनेसे बेचैन हो जाते हैं।

चिंता सापिन कादि न छाया, को जग जादि न व्यापी माया—(तुलसी) चिन्ता किसीको नहीं छोड़ती।

चिकना घड़ा हो गया है—उस बेधर्म आदमीपर कही जाती है, जिसपर उपदेश कुछ काम न करे।

चिकना देख फिसल पड़े—(ज०) किसीकी छन्द-रतापर मोहित हो जानेपर क०।

चिकनियां फूझीर मलमलका लंगोट—(प०ज० च०) फूझीर होनेपर भी शौक न जाय, तब क०।

चिकनी होत मज्जेदार चिकनी होत खतरनाक—स्पष्ट।

चिकने गलवा मलवाके—मालवालेके गाल चिकने होते हैं।

चिकने गाल तिलिनियांके और जरे बरे भुर-जिनियांके—(प० ज०) स्पष्ट।

चिकने घड़ेपर पानी नहीं उहरता—जब कोई बेधर्मको शर्मिन्दा किया चाहे और उसपर उसका कुछ असर न हो, तब क०।

चिकने मुंहको सय सूमते हैं—जब कोई घड़े आदमीकी हांमें हां मिलावे, तब क०।

चिकने मुंह पेठ खाली—खाली दिखावट करनेपर क०।

चिड़ी न परवाना, मार खाय मुल्क वेगाना—जब कोई बिना कहे छने पराई चीज हथिया ले, तब क०।

चिड़ा मरन गंवार हांसी—जब एककी हंतीमें दूसरेका सुकसान हो जाता है, तब क०। सुरगा, बुलबुल, वीतड़, बटेर आदि चिड़ियोंको लड़ाने-वालोंको भी क०।

व्याकुलताके मोहि निहार, हरिति साख मोह मन धारि।
सुनो पखानो नादिन बास, धिरियन मरन मिकारी हास ॥
(भीड़ा। लो०र०कौ०)

चिड़िया करे धोंवा चिड़ा करे नौचा—जब स्त्री संघय करनेवाली और पुरुष शाहूचर्चहोता है, तब क०।

चिड़ियाकी जान गई, लड़केका बिलौना—स्पष्ट।

चिड़ीमारटोला, भांत भांतका पंछी खोला—

(१) चिड़िमारेके मुहल्लेमें तरह तरहकी चिड़ियोंकी आवाज उनाई देती है। (२) शहर आगरेमें चिड़ीमारटोला नामका एक बाजार है, जहां सब तरहके आदमी शामको दिखाई पड़ने हैं और बहुत चहल पहल रहती है। जिस सभा वा कमेटीमें सभीकी राय खुदी खुदी हो, वहां क०।

चिराग गुल पगड़ी गायब—(फा०) जिस जगह इन्तजाम ठीक नहीं होता, वहां क०। लुचोके समाजमें जब भलेमानुषको थोड़ी सी असावधानीके कारण हानि पहुंचती है, तब क०।

चिराग जला, दाय गला—चोरके लिए क०।

चिराग राले अन्धेरा—जहां विशेष विचारका स्थान हो और वहां ही अन्धेरा हो, तब क०। जैसे कोतवालीके पास चोरी होना, किसी बड़े विद्वानसे साधारण भूल होना, किसी पुण्यवान् मनुष्यका पाप कम करना इत्यादि।

एक दिन शकवर बादशाह बोरबलके साथ अपने महश्वर बैठे मुक्कके इन्तजामकी बातें कर रहे थे। वह इस बातसे बहुत खुश थे, कि उनके राज्यमें चोरी और राक्षसोंकी बहुत कम होती है। इतनेमें ही उन्हें महलके नीचे औरगुल होते सुनाई दिया। दर्याफ्त करनेपर मालूम हुआ, कि एक बटोहीको एक लुटेरेने अभी वहीं जगह पर खूट लिया और उसका माल लेकर भाग गया। बादशाहको बहुत मोह आया और वह बोले, 'मेरे महलके नीचे और मेरी ही आंखोंके सामने यह चपेरा औरबलके कहा, "इन्जूर। चिराग तने भांधेग होता ही है।"

चिरागमें घंती और आंखमें पट्टी—जो संघ्यासे ही सो रहे, उसे क०।

चिरागसे चिराग जलता है—यह मसल उस समयकी बनी है, जब दियासलाईका आविष्कार नहीं हुआ था और दोपेसे ही दीया जलाया जाता था। इसका अर्थ यह है, कि मनुष्यसे मनुष्य पैदा होता है अथवा पुत्रसे वंशकी रत्ता होती है।

चिल्लड़ मारे कुत्ता छाया—जो थोड़ी सी चीजके लिये अपनेको निलोभ बतावे और बड़ी चीज हड़प जाय, उसे क०।

चींटा मारे पानी हाथ—बेफायदेका काम करनेपर क०।

चींटियोंके घर नित मातम—चींटियां बहुत मरती हैं, इसलिये क० ।

चींटीकी आवाज़ अर्शपर—गरीबकी पुकार ईश्वर-तक पहुंचती है ।

चींटीके पर निकले और मौत आई—जब कोई सामान्य धन वा विद्या पाकर इतराने लगे, तब क० । दाची इतर चली पिय प्यार, समता करन लागी सवुनार । कइ पखान खान बुधि भासैं, चींटी मरे पंख परकासैं । (लो० २० कौ०)

चींटीको किनका, कुत्तेको टुकड़ा, हाथीको मनभर जिसे जितनी चीजकी जरूरत होती है, उसे उतनी ही मिलती है । जिहिं जितो जनमान तिहिं, तैती रिजक मिलाय । कनकीही कृकर टुकार, हाथी मनभर ग्वाय । (इ२)

चींटी चाहे सागर धाई—जब कोई सामान्य मनुष्य बड़ा काम किया चाहे जो उसके करने लायक न हो, तब क० ।

चीरे चार घघारे पांच—चतुर मनुष्यपर क० । सास अपने चतुर बहूको कहती हैं, कि यह चार चीज बनाती है और पांचमें घघार देती है । (२) व्यंगसे उस मनुष्यको कही जाती है, जो कहता है अधिक, पर करता है थोड़ा ।

चीलका मूत ढूंढना—ऐसी चीज मांगना जो किसी तरह न मिल सके ।

चीलके घर पारस होता है—चीलके घोंसलेमें सोना मिलता है । ऐसी किम्वदन्ति है, कि चील सोनेका गहना उठा ले जाती है और उसे अपने घोंसलेमें इसलिये रखती है कि जबतक सोना पास न हो उसके बच्चे थालें नहीं छोलेते ।

चीलके घर मांस कहां ?—चीलके घरमें मांस नहीं बचता, क्योंकि यह सब खा जाती है । जब कोई किसीके यहांसे ऐसी चीज पानेकी आशा करे, जिसका यहां पूरी तरहसे अभाव हो, तब क० ।

(१) बर्च न बड़ो सबील ह, चीलके घोसुबा मांस । (विहारी)

(२) गर्द रहो पिय पै नव बाल,

बची नहीं किहिं चाल विहाल ।

सुनो पखानो नाचिन खास,

ह घोसुबा बचै न मांस । (० २० कौ०)

(१) दिरमो दाम अपने पास कहां ? चीलके घोसलेमें मांस कहां ? उक्त शेर मिरजा गुलिवने उस समय कहा था जब उनको एक दोटे बच्चेने उनसे मिठाईके लिये पैस मांगे थे । उस समय वास्तवमें उनके पास कुछ न था ।

चील सा मंडराया और कबूतर सा बीजता फिरता है—जो मनुष्य इस प्रकारमें रहे, कि जो मिले वही उठा ले, उसपर क० ।

चुकतेका खाइये उकटेका न खाइये—(उप०) ऐसेका खाय जिसे थाप खिलाया हो वा खिला सके; ऐसेका न खाय जो खिलाके ताना दे कि मैंने तुम्हें खिलाया है । कोई कोई “चुकतेका खाइये” कहते हैं, जिसका अर्थ गरीब आदमी है ।

चुका चायदा कि दिखाया फायदा—(व्या०) काम निकल जानेपर जब कोई बेमुरब्बत हो जाता है, तब क० ।

चुकी दाढ़ी गाल पचकी, नहीं छातीमें चार, लंबी टंगड़ी होवे जिसकी, ये चारों हत्यार—स्पष्ट ।

चुगल खोरका मुंह सांप डसे—जो दूसरेकी चुगली करे, उसे क० ।

चुगलखोर खुदाका चोर—ऊ० दे० ।

चुगल खोर चुगली खाय, धोच बज़ारमें जूते खाय—ऊ० दे० ।

चुगला बैठा नीमपै, दे सालेके तीन सै—ऊ० दे० ।

चुटियाको तेल नहीं, पकौड़ोंको जी चाहे—(ज० व्य०) स्पष्ट ।

चुडैलपर दिल आ जाय तो परी क्या चीज़ है—स्पष्ट ।

चुनिये खुदिये पासलों धोया, आइल दमाद ले गइल धोया—(मागधी ज०) लड़कीको खिला पिलाकर पाला पोसा, दामाद आया और ले गया ।

चुप आधी मरजी—द० “अल खामोशी नीमरजा” भौनं सम्मति लज्जणम् ।

चुपकी दाद खुदा देगा—जो मनुष्य दूसरेके दिये कष्टोंको चुपकेसे सह लेता है उसका बदला ईश्वर उसको देता है ।

चुपड़ी और दो दो—बढ़िया माल और बहुत सा
मीठा और भर कड़ीती। प्रायः उस मनुष्यको कही
जाती है जिसका भ्रूल्यार भी हो और तनख्वाह
भी बहुत हो।

चुरावे नथवाली, नाम लगे चिरकुटवालीका—
(५० ज०) जब कोई बड़ा भ्रादमी दोष करे और
नाम गरीबका हो, तब क०। चिरकुट=चीथड़ा।
खुल्लू खुल्लू साधेगा। दरवाजे हाथी बांधेगा—
जो थोड़ा थोड़ा संघ करेगा उसके द्वारपर हाथी
बंध सकता है। भांग पीनेवाले भी इसको क०।
खुल्लू पानी, तड़ ज़िन्दगानी—जिसे बहुत अर्थ-
कन्ट होता है, वह कहता है।
खुल्लू भर पानीमें हूय मरो—जब किसीको बहुत
शर्मिन्दा किया जाय, तब क०।
बूभ मरो कौ न छन्न बिन्न भर पानीमें।
खुल्लूमें उल्लू लोटमें गड़गप—भांग पीनेवालेको क०।
टुकड़ा ची बहुत है इमें पूरा न चादिये,
चुन्न है छन्नचोंकी भरुा न चादिये।
क भजानेसे परे, याधें गांठ सयान—
(१) भ्रतानके दोषसे सयाना बांधा जाता है। छोटे
दोष करते हैं बड़ोंको भोगना पड़ता है। (२)
छोटेसे बूक होती है तो सयाना होयियार हो जाता
है। गांठ बांधना=याद रखना।
क गये धुनियत है स्तिस—बूक जानेपर जब कोई
पह्लावा करे, तब क०।
गुम मानी नहिं पिया मगये, पबका घेत धाम पख्ताये।
कड़े।पखामो बिना बीस, चूक गये धुनियत है बीस ॥
(कथधंतरिता। शो० २० की०)
का और गया } जो चूकता है उसीकी खतापी
का और मरा } होती है।
चियोंमें हाड़ टटोलना—(ब्य०) जहां जो चीज
रहनेकी सम्भावना न हो, वहां उसे तलाय करना।
जब कोई गाहक उस मालका दाम और भी कमना
चाहे जिसमें कम करनेकी गुंजाइय न हो, तब दूकान-
नदार कहता है।
इसे कान गांठना—जो मनुष्य भरोखेमें कान
लगाकर दूसरोंकी बातें उने या जो किसी बातका
सेर परे एक किया चाहे, उसे क०।

चूतिया मर गये औलाद छोड़ गये—जब कोई
मूर्ख किसी कामको गड़बड़ कर देता है वा समझा-
नेसे भी नहीं समझता, तब उसे क०।
चूना और चमार फूटेपर ठीक रहता है—
स्पष्ट।
चूना चूची दही ये घंगाला नहीं—स्पष्ट।
चूनी कहे मुझे धीसे खा—छोटा भ्रादमी भी
चाहता है, कि मेरी हजत हो। जब कोई योग्यतासे
बढ़कर दावा करे, तब क०।
(१) चैरो चीतिन दीख सिंगार। कसी गुवाल इवां धारि।
सांघु पधानो कझो लखाउ। चूनी कहे चीउ सों खाव।
(चब संभोग दुःखिता) (शो० २० की)
(२) एक जुरा हटके बँटी, सुं ह बनबाधो,
कहे चूनी भी, "सुभको," पीसे खाधो। (शौक)
चूम चाटके खा लिया—जब कोई किसीको बिल्कुल
बर्पाद कर देता है, तब क०।
चूरा भाड़ खामो, लडू न तोड़ो—(ब्य०) ब्याज
या मुनाफा खा लो, पूंजीको न दिगाड़ो।
चूल्हा छोड़ भरसाईमें जाभो—जब किसीसे किसी
तरहका मतलब न रखना हो, तब क०।
चूल्हा भोंके छापर हाथ—जैसा काम वैसी प्राप्ति।
दे० "कोयलेकी दलाली....."
चूल्हे भाग न घड़े पानी—(मु० ज०) दे० "भास-
मगीर सानी।"
चूल्हेका फूफना और दाढ़ीका रखना—
दोनों काम नहीं निभ सकते।
चूल्हेका राय लाय ही लाय पुकारे—पेटक वा
बहुत खानेवालेको क०।
चूल्हेकी ना चक्कीकी—(ज०) जो स्त्री खाना बनाना
न जाने और घरका काम धंधा न करे, उसे क०।
चूल्हे चक्की सय ही काम पकी—(ज०) पकी गृह-
स्थिनको क०।
चूहा बजाये चपनी और जात घटावे अपनी—
कामसे जात जानी जाती है।
चूहा बिल न समा सके कानों बांधा छात्र—
(ज०) जो अपना पेट भरने लायक भी न उपाजंन
कर सके और ब्याह करे, तब क०।

चूहेका बच्चा बिल ही खोदेगा—जाति स्वभाव
नहीं छूटता ।

चूहेका बिल दूढ़ना—कहीं घुस जाने वा छिप
जानेकी कोशिश करना ।

चूहेके चामसे कहीं नगाड़े मड़े जाते हैं ?—
छोटसे बड़ा काम नहीं हो सकता ।

कैसे छोट नरनहीं, सरे बड़नको काम ।

मयो दमामा जात को, ले चूहेके चाम । (पिछारी)

चूहेके हाथ लगी हलदीकी गांठ, पसारी ही बन
पैठा—(ज०) चूहेको एक हलदीकी गांठ मिल गई वही
लेकर वह अपनेको पसारी ही समझ बैठे । जो
थोड़ी सी पूंजीसे अपनेको सेठ समझता है वा
थोड़ी सी विद्यासे अपनेको विद्वान समझता है,
उसे क० ।

“हरद गांठ चूहे किछी पंसारी ह वैठ ।”

चेना जीका लेना चौदह पानी देना, घयार चाले
तो लेना ना देना—(क०) चेनेकी खेती अधिक
परिश्रम लेती है । इसे चौदह पानी देना होता है ।
जब गर्म धातु चलने लगती है, तो फिर इसमें
अधिक परिश्रम करनेकी आवश्यकता नहीं रहती ।
चेनेके वंशमें सपूत भये माढ़ा—(पू०) जब अपने
बापसे कहीं बड़ बड़कर गुण रखनेवाला पुत्र हो,
तब क० ।

चले लावें मांगकर बैठा खाय महंत, राम
भजनका नाम है पेट भरनका पंथ—स्पष्ट ।

चोट लगी पहाड़की, और तोड़ै घरकी सिल—
(ज०) जो दूसरेका गुस्सा अपनी छीपर उतारता
है, उसपर क० ।

चोट्टी कुतिया जलेदियोंकी रखवाली—जो भक्तक
हो वही रक्तक बनाया जाय, तब क० ।

चोर उचक़ा चौधरी कुटनी भई परधान—
जब नीच मनुष्योंको चलती हो, तब क० ।

चोर और मोट कसके धांघ्रके चाहे—(पू०)
स्पष्ट ।

चोरका कोई हिमायती नहीं—चोरका साथी कोई
नहीं होता ।

चोरका जी कितना—चोरकी हिम्मत नहीं होती ।

चोरका भाई गठकटा—गठकटा=गिरहकट, पाकिट
मार । जब दो बुरे आदमी घापसमें मिलकर एक
दूसरेकी सहायता करें, तब क० ।

चोरका मन बुकचेमें—चोरकी नजर गडरीपर रहती है ।

चोरका माल चण्डाल खाय—जब कोई आदमी
बेईमानीसे धन उपार्जन करे और उसे दूसरे सुबे
लफ़ी खा जाय, तब क० ।

इसपर एक कहानी है । चार चोर कहींसे बहुत सा
धन चुराकर लाये । एक गांवकी यादर घांठकर उन्हेंनि
कहा, कि आज बहुत माल मिला है । खूब मिठाई खानी
चाहिए । उनमेंसे दो तो गांवमें मिठाई खाने गये और
दो दो बचे वे घापसमें कइने लगे, कि हम लोगोंने
जन्मभर चोरी करी पर कहाल हो रहे, आजका धन
बहुत है, यदि उन दोनोंको मार डालें तो आधा आधा
धन दोनोंके हाथ लगे । उधर मिठाई खानेवाले भी वही
यात सोचकर मिठाईमें विप मिला लाये । जैसे वे मिठाई
लेकर पड़ें कि इन दोनोंने उन्हें तलवारसे काट
डाला । फिर इन दोनोंने मिठाई खाई और उसकी
विषय वे पंचलको प्राप्त हुए । जब किछीने चार आदमि-
योंको मरे देख गांवमें खबर दी, तब डीमड़ीको मला-
नेकी आज्ञा दी गई और उन्होंने चोरोंका सब माल
लेकर घापसमें बांट लिया ।

चोरका माल सब कोई खाय, चोरकी जान
अकारथ जाय—ज० दे० ।

चोरका मुंह चांद सा—(१) क्योंकि वह चेहेरेसे
अपनेको निर्दोष साबित करता है । (२) क्योंकि
उसके चेहेरेमें चांदकी तरह स्याही रहती है, अर्थात्
उसके चेहेरेसे उसका घोर होना साबित होता है ।

चोरका शहीद चिराम—रोयनी चोरके लिए अहित-
कर है ।

चोरका सिर नीचा—चोर किसीके सामने आंख
नहीं उठा सकता ।

चोरकी ज़मानत नहीं होती—(१) चोरकी कोई
ज़मानत नहीं करता । (२) चोरके मामलेमें ज़मा-
नत नहीं ली जाती ।

चोरकी जोरू कोनेमें मुंह देकर रोवे—अपनेकी
धुराईसे आदमी मन ही मनमें दुखी होता है ।

ऐसेठ पीर विहमि तदि गोई ।

चोर मारि जिनि प्रगट मारीं ॥ (मुलसी)

चोरकी दाढ़ीमें तिनका—जब किसी मनुष्यमें कोई श्रवणुण होता है और कोई श्रपरिचित मनुष्य भी उसके सामने उस श्रवणुणकी समालोचना करता है, तो वह अपने ही ऊपर समझकर उससे लड़ने लगता है । ऐसे ही समयपर यह कहावत क० ।

इसका तिकास इस कहावती है । एक काजी किसी चोरीके मामलेमें विचार कर रहा था । जिन मनुष्योंपर संदेह था सभी वहां खड़े थे । जब काजीकी ओरका कुछ पता न था, तो उसने कहा चोर वर है जिसकी दाढ़ीमें तिनका है । सब तो ज्योंके ज्यों खड़े रहे, परन्तु जो चोरया वर अपनी दाढ़ीपर हाथ फेरकर देखने लगा कि कहीं मेरी ही दाढ़ीमें तो तिनका नहीं है । यह देख काजीने उसीको चोर ठहराया और उसके ही पाससे चोरीका माल भी बरामद हुआ ।

चोरकी मा कयतक खैर मनावे—क्योंकि एक न एक दिन वह पकड़ा ही जायगा ।

चोरके ख्वायमें चुकचे—दे० “चोरका मन चुकचेमें”
चोरके घरमें छिछोर—बड़े चोरोंका माल छोटे चोर चुराते हैं ।

चोरके घरमें मोर—जब कोई अपना ही धादमी धोका दे, तब क० ।

इस कहावतका सम्बन्ध उस कहावतीसे है जिसमें एक चोरका द्वार चसका मोर निगल गया था जो वर रागीके घरसे चुराकर लाया था ।

चोरके पेटमें गाय, बाप ही आप रंभाय—जब कोई अपनी बातोंसे अपना धूसर सावित कर दे, तब क० ।

चोरके पैर नहीं होते—चोर खड़ा नहीं रहता अर्थात् भाग जाता है । दोषी जांच करनेपर नहीं ठहरता ।
“चोरके पैर कितने” भी क० ।

चोरके मनमें चोरी घसे—चुरके मनमें चुराई ही रहती है ।

दुरे इंसति मियसों नव मारि,

लखि सखि बछो धन्य यह मारि ।

बोली उडधि गाध जग नवै,

चोरके मन चोरी बसै । (लो० २० को०)

चोरके हाथमें दीया—उसे मदद भी पहुंचा सकता है और पकड़ा भी सकता है ।

चोरको अंगारी मीठ—(भो० ज०) चोरको जलता अज्ञारा भी मीठा ही लगता है । किसी समय यह प्रथा थी, कि जब किसीपर चोरीका सन्देह होता था तो उसे अपनी निर्दोषिता दिखानेके लिये अज्ञारा मुंहमें रखनेके लिये दिया जाता था । यदि चोर होता तो उसकी जीभ जल जाती । जो अपने घुरे कामोंको भी भला समझे, उसे क० ।

चोरको अन्धियारी प्यारी—क्योंकि उसका मत-लब उसीमें सिद्ध होता है ।

लखि सखि पावस घन भंधियारि,

मिलि आज बहू सुन्दरि मारि ।

कसो कहावत जग विख्यात,

चोर बसै भन्धियारी रात ।

(अभिसारिका । लो० २० को०)

चोरको चोर पहिचानता है—चोर चोरको जरदी पकड़ता है ।

सुनी जगमें उपखान प्रसिद्ध है चोरनकी गति जानत चोर
(रघुनाथ)

चोरको चोर ही सूझे—जैसा जो होता है वह दूसरेको भी बैसा ही समझता है ।

चोरको चौकीदार करना—भक्तकको रक्त बनाना ।
चोरको पकड़िये गांठसे, छिनालको पकड़िये खाटसे—नहीं तो प्रमाण करना मुश्किल हो जाता है । गांठसे=माल सहित । खाटसे=विद्वानेपर ।

चोर गठरी ले गया बेगारियोने छुट्टी पाई—जब वेमनके कामसे किसी कारणवश छुटकारा मिल जाय, तब क० ।

चोर चकार चूके लेकिन चुगल न चूके—चुगलखोरको क० ।
बान जिरवानको चलेया पूरी चूकि जात एक नहीं चूकत है चुगलनारीके.....

चोर चुरावे गर्दन हिलावे—चोर चुराकर मुकतता है ।

चोर चोर मौसेरे भाई—एक पेशे वा स्वभाववाले मनुष्य आपसमें जरदी मिल जाते हैं । एकही मूट बातको जब दूसरा पुष्ट करता है, तब क० ।

चोर चोरीसे गया तो क्या हेराफेरीसे भी गया—

किसीका जातीय स्वभाव बिलकुल नहीं छूटता। यदि वह सत्संगवश अपने कुत्र्यसनोंको छोड़ भी दे तो भी कुछ चेष्टा उसके अनुकूल किया ही करता है। एक चोरने कई बार पकड़े जाने और सजापानेके कारण चोरी करना छोड़ दिया और साध हो गया। भला, साधुओंके पास चुरानेको क्या रखा। या इसलिये उसे चैन न पड़ती। उसने उमकी चोजीके लपट पकड़ करनेसे ही अपने मनको शांत करना ठहराया। जब सब साधु ही जाते तो वह एकके सिरके नीचेकी गठरी निकालके दूसरेके सिरके नीचे रख देता और दूसरेकी पदिलेके। एक दिन साधुओंको पता लग गया, कि यही मनुष्य हमसंगीको चोजीको बदल बदल कर देता है। जब उससे पूछा गया, कि तू ऐसा क्यों करता है ? तब उसने कहा, कि मैं पदिले चोर था, यद्यपि मैंने चोरी करना छोड़ दिया है तो क्या हेराफेरी भी न करूँ ? चोर जाते रहे कि अंधियारो—दे० 'अंधियारी गई कि चोर' ।

चोर जाने चोरका सार (वा हाल)—चोर ही चोरका हाल जानता है ।

चोर जाने मंगनीके वासन—उसे तो चुरानेसे काम, वह क्या जाने तुम्हारे अपने हैं या मंगनीके ।

चोर जुआरो गटकटा, जार और नार छिनार ।
सौ सौगन्धें खाय जो, भूल न कर इतवार—
स्पष्ट ।

चोर दोर दोनों हाजिर हैं—प्रमाण सहित चोरी पकड़नेपर क० ।

चोरको पगई दूरसे सून्हे—क्योंकि उसीसे यह पीटा जायगा। जब कोई छोटा काम करने जाता है तो उसका चुरा गतीजा उसे पहिले ही नजर आता है।

चोर लाठी दो जने, हम चाप पूत अकेले—जब कोई अपने धयावके लिये अर्थयथ बात कहे, तब क० ।
चोर और लाठी दो भादमी थे और हम चाप घंटे धकेले थे इसलिये उसका मुकाबला कैसे कर सकते ।
चोर ले, न साधु पूंटे—चोरको चोरीसे काम, चाहे चीज किसी साधकी क्यों न हो ।

चोर ले न, शाह तके—। व्य० । जायदाद वा मन्ना-
हको रहते हैं, जिसे चोर चुरा नहीं सकता और

साहूकारके पास भरम बना रहता है ।
चोरसे कहे चोरी करो शाहसे कहे जागते रहो—
उस धीचगाले मनुष्यको कही जाती है जो किसी ऋग्नेमें दोनों तरफके लड़नेवालोंको उसकाता रहता है ।

चोरहि चाँदनी रात न भाषा—(तुलसी) चोरका मतलब अन्धेरी रातमें सधता है इसलिये उसको चाँदनी अच्छी नहीं लगती ।

खाम साज सजि तजि यह नारि ।
पियये चली हरिय मन धारि ॥
योग छकि व्यो कहे उज्यारी ।
चोरनको सुख रैन बंध्यारी ॥

(को० २० की०) लक्ष्मिभारिका

चोरी और मुंहजोरी—जब कोई चोरी भी करे और जवाब भी दे, तब क० ।

चोरी और सीनाजोरी—कसूर भी करे और जवरई भी दिखावे, तब क० ।

चोरी करे और आंख दिखावे—ऊ० दे० ।

चोरीका गुड मीठा—चोरीकी चीजपर ममता बहुत होती है । विषयी लोभोपर क० ।

जो पति तपन महा दुःखिमान, ये उपपति रस सरस सुमान ।
योग कहाउत बहु मन पागे, चोरीकी गुड मीठी लागे ।
(परकीया । को० २० की०)

चोरीका धन मोरीमें जाय—बुरे कामकी कमाई बुरे ही काममें खर्च होती है ।

चोरी वेधांग नहीं होती—बगैर मिले चोरी नहीं होती ।

चोरी बेसुराग नहीं निकलती—विना ज्ञान श्रीमके चोरीका माल नहीं बरामद होता ।

चोरी सा रोजगार नहीं जो मार न होवे । जूप सा व्योपार नहीं जो हार न होवे—स्पष्ट । जब कोई जूपमें हार जाता है, तब क० ।

चोरों कुतिया मिल गई पहरा किसका दे—
जो रत्नक हो वही भत्तक हो जाय, तब क० ।
करे न जोई सोख नलि रहे सो भौतिदि गिह ।
कुतिया चोरहि मिश गई पहिराकारी दे० (को० २० की०)

चोटी दामनका साथ—एकसे दूसरा थलग नहीं हो सकता । निष्क सम्बन्धीको क० ।

चौबे गये छव्ये होने दुब्बेही रह गये—जय लाभ-
के लिये कोई काम किया जाय और उसमें उल्टी
हानि हो, तय क० ।

ये केकको फिजमें से रोटी भी गई ।

पाही धो बड़ी धो छोटी भी गई ॥

बादजूकी नबीहत की न माने चाखिर ।

पतभूनकी ताकमें खंगोटी भी गई ॥ (पकवर)

चौबे मरें तो बन्दर हों, बन्दर मरें तो चौबे हीं-
मथुराके चौबों पर ध्यंगसे क० । मथुरामें चौबे और
बन्दर दोनों ही यात्रियोंको बहुत तन्न करते हैं ।

छ

छछूँकरके सिरमें चमेलीका तेल—जिस मनुष्यको
भाग्यवश ऐसी चीज मिल जाय जिसके लायक वह
न हो, उसे क०

(१) "बज्र तैरी कुदरत, बज्र तैरा खेल ।

छछूँदरके सिरमें चमेलीका तेल ।

(२) सो कुवरी कुष कोर चढ़े कीं चमेलि फुल्लि

छछुन्दरके सिर । (छ० प०)

छछूँदर छोड़ना—लड़ाई लगानेको क० ।

छज्जेकी बैठक घुरी, परछांचनकी छाँह । धोरेका
रसिया घुरा, नित उठ पकड़े धाँह—छज्जेकी
बैठक, दूसरेकी छाँह और पासका रसिया घुरा
होता है ।

छटाँक चून चौबारे रसोई—भटा भड़म्या दिखाने-
वालेको क० ।

छटाँक सतुआ मथुरामें भंडार—ऊ० दे० ।

छटीका दूध याद आ गया—बहुत मेहनत करनेपर
या बहुत कष्ट उठानेपर क० ।

छटीके पोतड़े अथतक न धुले—(च०) अभीतक
पचा ही है ।

छट्टी न चिल्ला हरामका पिछा—हरामके लड़केके
संस्कार नहीं किये जाते ।

छड़ी लागे चट, बिद्या आवे पट—दे० "चमोटी
लागे"

छत्तीस प्रकार के भीजन में सत्तर दो बहत्तर
रोग भरे रहते हैं—अनेक प्रकार के व्याधि भोजन
करनेसे रोग होने की संभावना होती है ।

छत्रपती घटे पाप बढ़े रती—यद्योकि छींकेनेपर क०

छत्रोका भगत, मूमलका धनक—जैसे मूलका
धनुष नहीं दग सखा उसी प्रकार छत्रो कभी भगत
गहों हा सखा ।

छत्तीका सोहदा, कायथका घोदा, ब्राह्मणका
बैल, धनियेका ऊत—चारों जातिके गुण कहे
गये हैं ।

छदाममें लड़ाई पैसमें सुघड़ भलाई—धोड़ेमें ही
काम बिगड़ जाता है और धोड़ेमें ही यात बन
जाती है ।

छप्परपर फूस नहीं ड्योढ़ीपर नयकारा—
(च०) शोबीयाज्ञोपर क० ।

छप्परपर फूस नहीं रहा—विषकुल दिवालिया
हो गया ।

छय गठरीमें यौवन रक्षाथीमें—(सु० ज०) ख-
सूती अच्छी पोशाकसे होती है जो गठरीमें धंधी
रहती है और यौवन अच्छे भोजनसे होता है जो
रक्षाथीमें परोसा जाता है ।

छाजा बाजा केश, तीन बङ्गाले देश; चूना चूंची
दही, तीन बङ्गाले नहीं—स्पष्ट ।

छातीपर बाल नहीं भालूसे लड़ाई—(प०) जब
कोई शक्तिसे घाघर काम करना चाहता है, तय क० ।
छातीपर बाल होना मर्दुमीकी निशानी है ।

छातीपर मूंग दलना—जब कोई ऐसा काम करता
है, कि जिससे अपनेको कष्ट पहुंचे, तय क० ।

मिश्रते ही दिवाकर फमें गुरोंके गधेसे ।

का फायदा कातो पे मरे मूंग दलेसे ।

छातीपर रखकर कोई नहीं ले गया—धनके लिये
क० । सूमको भी क० ।

छातीपर सांप लोट गया—ईशं वा मनमें जलम
होनेपर क० ।

पति व्याकुल हो टोसी बाम, मेट भवे कहुं सुन्दर काम ।

बड़ी रज नीं भो करि दिश, उतिधार काकारिगया ॥

(मनिता । भो० २० को०)

छागाया क्या घद, और मेटकका क्या डर—स्पष्ट ।

छाया हुआ घर पाया और बांधी पाई चट्टी,
दूसरेका जन्मा लड़का पाया, चुम्मा लें कि चट्टी-

जो मनुष्य विधवा विवाह करता है, उसपर क०।

छाया घड़ी माया है—आश्रय बड़ी चीज़ है।

छावत में डुबा गावत गीत, पिया धिन लागत
सब अनरीत—(पू० ज०) स्पष्ट।

छिद्रे पन्नर्था बहुली भवन्ति—(सं०) जहां एक
दोपने घर कर लिया हो वहां सूत्रम दृष्टिसे देखनेसे
बहुत दोष दिखाई देते हैं।

छिनालका वेदा ववुआरे ववुआ—(पू० ज०)
छिनाल औरतके लड़केको सभी छेड़ते हैं।

छिनाल लुगाई, चतुर सिपाही—ये अपनेको छिपा
नहीं सकते।

छिली छिलाई तैयासी—घुटी हुई पांदाको क०।

छींकत नहाइये, छींकत खाइये, छींकत रहिये
सोय। छींकत परवर न जाइये चाहे सर्व
सोनेका होय—स्पष्ट।

छींकतेकी नाक नहीं काटी जाती—यद्यपि
छींकना अपराधन होता है, तोभी छींकनेवालेकी
कोई नाक नहीं काट लेता।

छुआ और मुआ—दुष्ट मनुष्यको क०।

छुपे रुस्तम—ध्यंगसे बरपोकको क०।

छुरी खरबूज़ पर गिरी तो खरबूज़ का जरर
खरबूज़ा छुरीपर गिरा तो खरबूज़ का जरर—
जब दोनों ही तरहसे थपना नुकसान होते दीखता
है, तब क०।

छुरी तले दम लो—शेषतक वदांगत करो।

छूअत मरें धायके काटै का जानें परपीरा,
धुख दैनेको दोऊ जन्म लें, कायथ अरु खटकीरा
—कायस्थोंकी स्वार्थपरता और खटमलोंके काठने
पर क०।

छूछाका संग न साथी, भइला द्वारे भूमले हाथी
(भो०) जब मनुष्य गरीब रहता है तब उसका कोई
साथी नहीं होता, पर वही जब धनवान हो जाता
है, तब उसके द्वारपर हाथी भूमने लगते हैं।

छूछा कोई न पूछा—गरीबको कोई नहीं पूछता।

छूछी हांडी बाजे टनटन—बुद्धिहीन बहुत बोलता है।
छूछे फटके उड़ उड़ जायँ—कम बुद्धिवाला मनुष्य
जांचमें नहीं बहर सकता।

छूट भलाई सारे गुन—(ज०) बुरे आदमीको क०।

छूटा बाज न आवे हाथ—गई चीज़ फिर हाथ नहीं
आती।

पिय विदेश तिय करत बदेश, कौसे मिलै बहुरि प्राणैग।
यहै प्रसिद्ध लोगमें गाथ, कूझी बाज न आवे हाथ।

(चिना। लो० र० कौ०)

छूटी बोड़ी भूसौले खड़ी—जिसे और कहीं ठिकाना
न हो और घूम फिर कर उसी जगह आ जाय,
उसे क०।

छूटे मल कि मलहिके घोघे, घृत कि पाव कोउ
वारि बिलोये—(तुलसी) मैलसे घोघे जानेपर मैल
नहीं छूटता और पानीके मथनेसे घी नहीं निकलता
छूना न चीज़ कोई, घरभर है सब तुम्हारा—
जो भूठी लहो चप्पो दिखाते हैं, उनपर क०।

छै चावल नौ पखाल—जब छोटे कामके लिये बहुत
सा सामान होता है, तब क०।

छैल छींट बगलमें ईंट—ऊपरी भइया दिखानेवा-
लेको क०। जो अपनेको मोटा ताजा दिखानेके
लिये बगलमें ईंट दबाये फिरेते हैं।

छोटा घर बड़ा समधियाना } (ज०) बेजोड़
छोटा मुंह बड़ा निवाला } बातपर क०।

छोटा सो छोटा—नाया आदमी खराब स्वभाववाला
होता है।

छोटा सो मोटा—ठिगना आदमी मजबूत होता है।

छोटी ननद अंगियाका धन्द, बड़ी ननद बिजली
वसन्त—(ज०) स्पष्ट। क्योंकि छोटीको प्यार करती
है और बड़ीसे डरती है।

छोटी मोटी कामनी, सब ही विपकी बेल
वैरी मारे दाँवसे, ये मारें हँस खेल—स्पष्ट।

छोटी सी गौरैया चाघोंसे नजारा—(पू०) कोई
भामूली आदमी किसी बड़ेसे मुकाबिला करे,
तब क०।

छोटीसी बछिया पड़ी ली हत्या—जो अपराध

बड़ी गायके मारनेसे होता है वही छोटीसी बछियाके मारनेसे होता है।

छोटे मियां सो छोटे मियां, बड़े मियां सुमान अल्लाह—जब छोटेसे भी बढ़कर बड़े में ऐय हो, तब क०।

छोटे मुंह बड़ी यात—जब कोई मनुष्य अपनी योग्यतासे बढ़कर यात करता है, तब क०।

मरे खानेसे यह चूकीं दिखायात,

कहावत है कि छोटा मुंह बड़ी यात (वेताप)

छोटेसे गाजी मियां बड़ीसी दुम—येमेल यातपर क०।

छोड़ चले बंजारकी सी आग—जब कोई धादमी मतलब निकल जानेपर किसीका साथ छोड़ देता है, तब क०

छोड़ जाट, पराई खाट—अत्याचार वा अन्याय

करनेसे वाज धानेके लिये क०।

छोड़ भाड़ मुझे डूबने दे—(ज०) पे भाड़! मत पकड़, मैं जरूर डूबूंगी। जब कोई धादमी अपनी इच्छाके विरुद्ध दूसरोंसे चिढ़कर कोई काम करता है और पीछे कोई बहाना कर अपनी बेवकूफी छिपाता है, तब क०।

इसपर एक कहानी इस प्रकार है—एक छोटी घरमें लहाड़े भगडा ही आनेके कारण तावाकमें डूबकर चाल-चला करनेकी इच्छा की। वह तावाकमें डूब तो पड़े, पर भाषणके भयसे उसने एक भाड़ी पकड़ ली थीर बहाना कर बीनी, भाड़ी ही मुझे डूबने नहीं देती।

छोड़े गाँवसे नाता क्या ?—जिससे कुछ प्रयोजन ही न हो, उसकी चर्चा क्यों करे ?

ज

जंगल जाट न छेड़िये, हट्टी बीच किराड़।

भूखा तुरक न छेड़िये, हो जाय जीका भाड़—

जङ्गलमें जाटको, दूकानमें दूकानदारको और भूखे तुरकको नहीं छेड़ना चाहिए, नहीं तो ये जानके ग्राहक हो जाते हैं।

जंगलमें मंगल वस्तीमें फड़ाका—स्पष्ट । उल्टी बातपर क०।

जंगलमें मोर नाचा किसने देखा—जब कोई गुण्यी अपना गुण्य ऐसी जगह दिखावे, जहां उसका सम-भनेवाला कोई न हो, तब क०।

जख्मी दुश्मनोंमें दम ले तो मरे, न ले तो मरे—स्पष्ट।

जंग जीता मोरी कानी, घर ठाह होय तब जानी—जब दोनों ही तरफ़ खोद हो, तब क०।

इसपर एक कहानी है :—किसी पुरोहितने धोका देकर एक कानी खड़कीका ब्याह किची युवा पुदयके साथ ठोक किया। जब बरपघकी सालूम हुआ, कि यह खड़कीके पितासे दण्डसे लेकर दमकीगोकी उमना चाहता है, तो वे एक लंगड़ेकी दूल्हा बना बरात सजाकर ले गये। जब विवाह हो गया तो पुरोहितने कहा, “जंग जीता मोरी कानी।” जिसके जवाबमें वर पक्षके एक मनुष्यने कहा, “वर साद होय तब जानी”

जंग जानी देश यखानी—जिस यात वा श्रीकी सब

बाँड़े जानते हों और उसकी तारीफ़ करते हों, उसपर क०।

जगत जनायो जिहिं सकल, सो हरि जान्यो नाहिं। ज्यों आंखिन सब देखिये, आंख न देखी जाहिं—(विहारी) जिसने संसारको उत्पन्न किया, उस हरिको न जाना, जैसे आंखोंसे सब देखते हैं, पर आंखें नहीं देखी जाती।

जगदर्शनका मेला है—स्पष्ट।

जगन्नाथका भाटा जिसमें भगडा न भाटा—जैसे जगन्नाथजीका प्रसाद जिसके लेनेमें किसी तरहका भगडा नहीं, क्यों कि वहां जाति विचार नहीं है।

जगन्नाथके भातको जगत पसारे हाथ—क० दे०। प्रसादकी महिमाके लिये भी क०।

जगमें देखतहीका नाता—जगतक मनुष्य जीता है, तभीतक नाता है।

जगमें सांचे दो जने, एक राम और दाम एक दाता हैं मोक्षके, एक सुधारै काम—स्पष्ट।

जट्टी-रोये यारोंको, लेटे. नाम भिराबोंका—(पं०) जाटनी भीतरसे तो यारोंके लिये रोती है, पर दुनियांको दिवानेके लिये भाइयोंका नाम लेती जाती है। जब कोई दिवानेकी दूगरोंके लिये,

जय दाँत न थे तब दूध दियो, जय दाँत द्ये का
अन्न न देई है ?—(चहार दस्ये) शरीर आदमीको
ईश्वरपर भरोसा रखनेके लिये क० ।

जय दिया दिल तो फिर अन्देश-ए ससवाई
क्या ?—जब किसीसे प्रेम किया, तब बदनामीसे
क्या डरना ।

गात और कुजात कड़ा हिन्दू और मुसलमान

“जाँते कियो नेह फेर ताँते भजको कहा ?” (स्वाल)

जय देगा तब छप्पर फाड़कर देगा—ईश्वर जय
देता है तब हरएक रास्तेसे देता है । जय कोई मनुष्य
उद्यम तो कुछ भी न करे और लक्ष्मी उसके पास
आप ही आ जाय, तब क० ।

इसपर एक कहानी है—किसी मनुष्यने यह प्रण किया है

“इस काम कुछ भी न करेगे, जब ईश्वरको देना होगा,
तब छप्पर फाड़कर देगा ।” ऐसी प्रतिज्ञा कर वह

घरकी बन्द करके लौट रहा । दो तीन दिनोंके बाद जब
उसे पाखानेकी आज्ञा हुई, तो गया और जब दस्त न

उतरा तो उसने एक भाड़की पकड़कर दस्त निकालनेका
उपाय किया जिससे यह भाड़ जड़से खड़क पड़ा ।

उसके नीचे दो चक्के अमरफियाँके भरे पड़े थे, पर उसने
उन्हें न उठाया और प्रतिज्ञापर हड़ रहकर आ लौटा ।

जब रातको और आये और दीवार खोदने लगे, तो
उसने कहा—“कों व्यर्थ परियम करते हो, यदि धन

चाहो, तो पाखानेमें असुर स्थानसे उठा लाओ ।” जब
वे बर्षा गये, तो देखते क्या है, कि उनघड़ीमें साँप

बिच्छू भरे हैं क्यों कि यह धन उनके भाग्यका न था ।
चोरोने क्रीधित होकर उन साँप बिच्छू भरे घड़ोंकी

छप्पर काटकर उसके ऊपर डाल दिया । उसके भाग्यका
वह धन था, इसलिये गिरते ही अमरफियाँ हो गईं, तब

उसने प्रतिज्ञासुसार धन पाकर अपने घरमें रखवा ।

ज्वरदस्त मारे, और रोने न दे—स्पष्ट ।

ज्वरदस्त सबका जमाई—वलवानसे सभी दयते हैं ।

जब लग पैसा गांठमें, तबलग उसके यार ।

साईं इस संसारमें, स्वारथका व्योहार—स्पष्ट ।

जब लगे चाट, तब सूभी हलवाईकी हाट—

घटोरे आदमियोंपर क० ।

जय लौं जाकी अवधि है, पूजा नहीं करार । तब

लौं ताको माफ है, औगुन करे हज़ार—स्पष्ट ।

जय लौं निवही तब लौं खाव, नाहिं .तो अपने
घरकों जाव—जो आदमी कुछ जानता नहीं, केवल
दूसरेको टगकर अपना काम चलाता है, उसे क० ।

इसपर एक कहानी इस प्रकार है—कोई निरघर

पण्डित विपुल लगाये, माता पादि गलेमें लटकाये, किसी
राज दरबारमें पहुँचा । उसने राजासे प्रार्थना की, “धर्म-

वतार । मैं एक प्रसिद्ध पण्डित हूँ । इस प्रालम्भ ऐसा
कोई नहीं है जो मेरा नाम न जानता हो ; यतः

आपसे निवेदन है, कि आप मुझे कोई पुरस्कारका भाग
दें ।” राजाने उससे देवालयमें जाप करनेकी कृपा ।

पण्डितकी तो अचरका भी ज्ञान न था, इसलिये बर्षा
जाकर “जाप लयी भाई जाप लयी” इसी मन्त्रसे जाप

करने लगे । दूसरे दिन पहिले सरीखा एक और पण्डित

राज दरबारमें आया और उसे भी राजाने देवालयमें जाप
करनेकी भेज दिया । वह बेचारा डरता हुआ देवालय

गया क्योंकि अगर बर्षा कोई विज्ञ पण्डित होता तो उसकी
पोल खुल जाती । बर्षा जाकर पहिलेकी भी अपने ही सा

जान वह “तुहूँ लयी सो दमूँ लयी” इसी तरह जाप
करने लगा । तीसरा पण्डित भी उसी तरह जाकर “यह

अर्थे कब लौं निवही” कहकर जाप करने लगा । चौथा

पण्डित भी मन्दिरमें जाकर “जय लौं निवही तब लौं
खाव” जपने लगा । अन्तमें पहिलेके जैसा पाँचवाँ पण्डित

भी राजासे जाप करनेकी आज्ञा पाकर देवालय पहुँचा
वर्षा अपने सरीखे सबकी जान, तथा एक दूसरेका अचर

देता देखकर, वह भी चौथे पण्डितके अचरमें “नाहिं
तो अपने घरकी जाप” कहने लगा । संयोगवश एक

दिन जब राजा मन्दिरमें गये, तो उन बेचारे पण्डितोंकी
पोल खुल गई । राजाने उन्हें ‘धोड़ी धोड़ी दक्षिणा दे

विदा किया ।

जय सब पन हारी तो पनहारी फहाई—जब सब
काम फरेके थक गयी, तब पनहारीका काम उठा

लिया ।

जबसे उगे घाल, तबसे यही हवाल—(ज०)
चपनसे यही हाल है । अक्सर घुरे कामोंके वास्ते

ही क० ।

ज्ञानके धागे लगाम नहीं—जब कोई धनकहनी
घात कहे, तब क० ।

ज्ञानके नीचे ज्ञान है—जो दो तरहकी बातें
करता है, उसे क० ।

जुबान क्या चली दो हल चल गये—जो विना
धिचारे घात करे, उसे क० ।

जुबान जने एकवार, मां जने बार बार—एक-
बार कहकर उससे कभी न फिरे ।

जुबान तुर्की व तुर्की—मुंहतोड़ जवाब देनेपर क० ।

जुबान शीरीं, मुल्क गीरी, जुबान टेढ़ी मुल्क
धांका—मीठी बोलीसे भाद्रमी सरको वयमें कर लेता
है और शत्रुवचन योलनेवालेके सयशत्रु हो जाते हैं ।

जुबानसे घेटा घेटी पराये हो जाते हैं—जिते
जुबान देते हैं उसीके साथ व्याह करते हैं, जब कोई
कहकर गटने लगता है, तब क० ।

जुबान ही लाल है जुबान ही मुरदार है—जुबा-
नसे ही न्याय धन्याय दोनों धातें निकलती हैं ।

जुबान ही हाथी चढ़ावे जधान ही सिर फटावे
स्पष्ट । दे० “धातों हाथी पाइये” ।

जुबानी जमा शर्च करना—जो कहता है बहुत और
करता कुछ नहीं, उसे क० ।

जमना किनारे घर किया, कर्ज़ फाड़के खाय
जब आवे कोई मांगने गड़प जमनामें जाय—
दगला भगतको वा जो देनेके डरसे साधू बन बैठे,
उसे क० ।

जमसे धुरी जनेत—स्पष्ट ।

जमाई जमका भाई—हिन्दुओंमें प्रायः जमाई सख-
रालवालोंको कट दिया करते हैं, इसलिये उगको
यमका भाई क० ।

जमात करामात—संगठन ही बल है ।

जमा लगे सरकारकी, ओर मिरजा खेले फाग-
जो दूसरेके सिर मौज उड़ाते हैं, उनपर क० ।

जमींदारको किसान, बच्चेको मसान—जमींदारके
लिये किसान ऐसा है जैसे बच्चोंके लिये भूत प्रेत ।

जमीन सख्त और आसमान दूर है—भैं कहां
जाऊं । जब कोई बहुत मुसीबतमें पड़ता है, तब क०

जुरका जोर पूरा है, ओर सब अधूरा है—धनबल
ही बड़ा बल है ।

जुरके दिवसे पीर और ललाद नम हो,

जुरके सबचचे दुग्मने नागाद नम हो ।

जो शोबी सब दिन है, परीजाद नम हो ।

जुर वह है जिसको दिखके, फीजाद नम हो । (नजोर)

जुरका ज़ायल करना, जीते जी है मरना—
धनको खरबाद करना जीतेजी मरना है ।

जुरको जुर ही खींचता है—(व्य०) दे० “खय्ये-
से खया पैदा होता है” ।

जुर गया जुरदी छाई, जुर आया सुरखी भाई—
स्पष्ट ।

सबसे जिवादा इच्छके उलफतका दाम है ।

जुर वह है जिसका इच्छ भी चदना गुलाम है ॥

जुर, ज़मीन, ज़न, भगड़ेको जड़ हैं—जब भगड़ा
होता है, तो खया, ज़मीन और खी इन्हीं तीन
चीज़ोंके लिये होता है ।

जुर, जोर, खुदा दाद है—धन और बल ईश्वरकी
देन है ।

जुरदारका सौदा है, बेज़रका खुदा हाफ़िज़ ।
परदार पड़े उड़ते हैं वे परका खुदा हाफ़िज़—
स्पष्ट ।

जुर दीजे हज़ार मगर दिल न दीजे । उलफ़त
धुरी बला है किसीसे न फीजे—स्पष्ट ।

जुर नेश्त इश्क टें टें—विना पैसे इश्क नहीं होता ।

जुर फैलाया, और फार धराया—खया खर्चा और
काम हुआ ।

जुरबल न जोर बल—न धनबल न शरीर बल ।

जुरदज़ार ज़ेब लगा है बेज़र विगड़ा नज़र
आता है—स्पष्ट ।

जुर है तो घर है नहीं तो खंडर है
जुर है तो नर है नहीं तो पूरा खर है
जुर है तो नर है नहीं तो पंछी वे पर है

विना द्रव्यके कोई नहीं पड़ता ।

जुरा जुरा सा कर लिया, और अपना पहा भर
लिया—स्पष्ट ।

जुरा न जुरार गांठ मेरी भरपूर—पास कुछ नहीं
और कंधे में मालदार हूँ ।

जुरा सा खावे बहुत बताने, यह ही वह सुबड़ेली ।

बहुता खावे कम बतलावे यह बहुअड़ विगड़ेली—
स्पष्ट ।

जरा सा मुंह घड़ा सा पेट—पेटार्थ या द्वेष रखने-
वाले लड़केको क० ।

जलकी मछली जलहीमें मली—जहाँकी चीज़ वहाँ
शरबी रहती है ।

जलते की जाई, गरीबके गले लगाई—कम नसी-
यकी लड़की गरीबको ब्याह दी । जैसेको तैसा
मिलता है ।

जलदीका काम शैतानका और देरका काम
रहमानका—स्पष्ट । जय जल्दी करनेसे कोई काम
बिगड़ जाय, तय क० ।

जलमें खड़ी पियासों मरे—(ज०) चीज़ होते कष्ट
पावे, तय क० ।

जलमें मछली नौ नौ कुटिया बखरा—जय कहीं
कामकी सिद्धिका पता निगान न हो और हिस्से-
दार लोग हिस्सा लगा लें, तय क० ।

जलमें बसे कुमोदनी, चन्दा बसे अकाश ।
जो जन जाके मन बसे, सो जन ताके पास—
स्पष्ट ।

जलमें रहकर मगरसे घेर—जिसके आश्रयमें रहे
उसीसे घेर करे, तय क० ।

फेंचें निज है निज क्य करि सभजनसां गैर,

जैसे बसि छागर विषै करत मगरसों घेर । (इन्द्र)

जलानेको फूस नहीं तापनेको कोयला—अंधी
आकांक्षावालेको क० ।

जलेको जलाना नमक मिर्च लगाना—कष्ट पाते
हुपको और कष्ट पहुंचाना ।

जले घरकी थलेंडी—जिसके घरके सबमनुष्य उसके
सामने ही मर जाय, उसे क० ।

जले पराई धी, और हंसें घटाऊ लोग—
फिसीका नुकसान हो और कोई हंस, तय क० ।

जले पांयकी चिल्ली—(मु० ज०) जो खी दूसरोंकी
बुराई साक्षी फिरे, उसे क० ।

जले फफोले फोड़ते हैं—जय कोई एकका गुस्सा
दूसरेपर उतारे, तय क० ।

जवान जाय पतार, बुढ़िया मांगे भतार—
पतार=पाताल । जवान तो मरी जाती है और
बुढ़िया ब्याह किया चाहती है । उल्टी बातपर क० ।

जवान गंड वूढ़े सांड—ज० दे० ।

जवानीमें गधोपर भी योवन आता है—स्पष्ट ।

भायते पौडमे बपें भिल्लनी भयति सुखरी ।

जवानोंको चला चली बुढ़ियाको ब्याहकी पड़ी-
दे० “जवान जाय पतार ।”

जधावे जाहिलां वाशद खमोशी—(फा०) मूर्खकी
यातका जवाय चुप हो जाना है ।

जस किया तस पावा—जैसा किया वैसा फल
मिला ।

जस जस सुरसा धवन यड़ाया, तासु दुगुन
कवि रूप दिखावा—(तुलसी) स्पष्ट ।

जस दूल्ह तस धनी धराता—(तुलसी) जैसा
आदमी हो, वैसे ही उसके साथी हों, तय क० ।

जस पस तस बंधना—जैसा पशु हो वैसी ही उसे
बंधनेके लिये रस्सी चाहिये ।

जस मनई तस पनही—जैसा आदमी देखे वसा
व्यवहार करे ।

जस मुकुन्द तस पावल घोड़ी, विधना आन
मिलावल जोड़ी—स्पष्ट ।

जहं जहं चरन पड़े सन्तनके तंह तंह बंटाधार
करै—सबजड़दम अथवा मगहंस आदमीको क० ।

जहांका पावे पानी, वहाँकी थोले चानी—
(१) जिसका साथ उसीकी सी थोले (२) जिस
देशमें रहे वहाँकी बोली बोले ।

जहांकी मिट्टी वहाँ ले जाती है—जहां मरना बदा
रहता है काल वहाँ खींचकर ले जाता है ।

जहांके मुरदे वहाँ गड़ते हैं—(व्य०) जहांकी
चीज़ वहाँ बिकती है । जहांके भगडू वहाँ तै होते
हैं ।

जहां खर्च नहीं वहां हरएक गांठका पूरा—
जहां खर्च नहीं होता वहां धन जमा हो जाता है ।
जहां खर्चकी जरूरत नहीं, वहां सबकी जेब भरी
रहती है और जहां जरूरत होती है वहां खाली हो
जाती है ।

जहां खाना वहां सबका ठिकाना—जहां खानेको
मिले वहां सबका निवाह हो जाता है ।

जहां गंग वहां रंग—जहां गंगा है वहां आनन्द है ।

जहां गंज वहां रंज—बिना कष्ट उठाये लाभ नहीं होता ।

जहां गढ़ा होगा वहां पानी मरेगा—जहां पानी मरेगा वहां कीचड़ होगी ।

(१) अनाइ कीच तहां जई पानी । (गुलसी)

(२) पानी वहाँ मरेगा जहाँपर नमीष की ।

जहां गाय तहां गायका बच्चा—जहां मा वहां बेटा ।

जहां गुड़ होगा वहां चींटे होंगे—जहां गुण होगा वहां उसके चाहनेवाले होंगे । जहां धन होगा वहां मंगते पहुंचेंगे ।

कैसे सुखियन घरकी जाऊँ,

लोग दृष्टि ते कुटन न पाऊँ ।

सुनो पखानो नादिन लीड,

वहाँ मगुड़ तहं माखी छेय ।

जहां गुल होगा वहां खार भी होगा—गुलाबमें कांटा जरूर होता है ।

जहां चार वासन होंगे वहां खड़केंगे—जिस घरमें चार आदमी होंगे वहां भगड़ा भी जरूर होगा ।

जहां जाय भूखा वहां पड़े सूखे—दुःखीको सब जगह दुःख है । कमनसीब आदमीपर क० ।

जहां जाय मूसर वहां खेत ऊसर—मूसर=मूर्ख जहां जाता है, वहां बनी बनाई बातको बिगाड़ देता है । मूसर=चूहा लग जानेपर खेत उजाड़ हो जाता है । मूसर=लड़ चलने अर्थात् आपसकी लड़ाईसे रोजगार बिगड़ जाता है ।

जहां जायें धालेमियां तहां जाय पूंछ—पड़े आदमीके साथ पुछला जरूर जाता है ।

जहां जिसके सींग समायें, वहां निकल जायें—

जहां जिसका गुजारा हो वहां चले जाओ, ऐसा फनाय देनेपर क० ।

जहां डर, वहां दमारा घर—निडर आदमीको क० ।

जहां ढाक वहां डाकू—ढाकके जंगलमें डाकू ज्यादा रहते हैं ।

जहां तमा हैं वहां आदमियत फहां ?—क्रोध आनेपर मनुष्यकी बुद्धि जाती रहती है ।

जहां तुम्हारा पसीना गिरे वहां हम खून गिरावें—हमदर्दी बिटानेवाला वा जो तनलगु मित्र होता है,

वह कहता है ।

जहां दल, तहां वादल—जहां आदमियोंकी मोड़ होती है वहां धलका वादल उठता है ।

जहां देखी रोटी, वहां मुड़ाई चोटी—हफ्ते पाते ही जो आदमी हरएककी तरफ़दारी करने लगता है, उसपर क० ।

जहां देखे तवा परात, वहां गांवे सारो रात }
जहां देखे गुत्ता पूरो, वहां जाय लूढ़ी लूढ़ी }

(पू० ज०) मालदारोंके पास सभी जाते और खुशामद करते हैं ।

जहां न जाय सुई वहां भाला घुसेहुते हैं—जहां गुंजायय नहीं, वहां ज्यादाकी थापा करते हैं, तब क० । जब कोई बात हो बहुत बढ़ाकर कहे, तब भी क० ।

जहां न जाको गुण लहे, तहां न ताको टांव, धोयी बसकर बना करे, दिग्गम्रोंके गांव—जहां अपनी प्रतिष्ठा न हो, वहां न रहना चाहिए । बिना प्रयोजन भी कहीं न रहना चाहिए । दे० “चलेजाहु”

जहां न पहुंचे रय, वहां पहुंचे फय—(१) जहां सूर्यकी भी पहुंच नहीं, वहां कविकी कल्पना पहुंच जाती है । (२) जहां सूर्य नहीं पहुंचता वहां और कौन पहुंच सकता है । फय=कवि; किस समय ।

जहां न माका जाया, वह सय ही देश पराया—जहां भाई नहीं है वहां परदेय ही समझना चाहिये ।

जहां पड़े मूसल, वहां खेम-कुशल—(१) तनहां या मस्त आदमी जहां रहता है वहां उसको आनन्द है । (२) जहां अनाज फूटनेके लिये मूमल चलता है, वहां भी खेम-कुशल होती है । (३) मार पड़नेसे भगड़के शान्ति हो जाती है ।

जहां पुप्य तहं वास है, जहां घास तहं भौर—जहां धन होगा वहां साहबर्षी होगी और जहां साहबर्षी होगी वहां गुणी पहुंचेंगे ।

जहां वड़ी सेवा वहां भोछा फल—जहां ज्यादा खुशामद होती है, वहां नतीजा अच्छा नहीं निकलता ।

जहां बहूका पीसना वहां ससुरकी पाट—अनुचित काम करनेपर क० ।

जात पांत पूछे नहिं कोई, हरिको भजे सो हरिका
होई—स्पष्ट ।। व्यंगसे दोषालोंको क० ।

एक दिन अकबर बादशाहके यहां पांच साधू आये ।
तब उनको जात पूछो गई, तो उन्होंने जवाब दिया कि
साधुओंकी जात क्या ? अकबरने वीरबलसे कहा,
'इनकी जातका पता लगाओ ।' वीरबलने उन साधुओंसे
कहा कि, "इसके विषयमें अपनी अपनी कुछ कविता
आप लोग सुनाइये" पढ़लिये कहा—“राम नाम कहूँ
गोपाल नाम धी, हरका नाम मिथी नू धोल धोल पी ।
वीरबल बोला, 'यह ब्राह्मण है ।' दूसरने कहा—“राम
नाम शमशेर पकड़ ले कण कटारा बांध लिया । दया
धर्मकी ढाल बना ले यमका शरा जगत लिखा ।” वीरबलने
इसे खतिय समझा । तीसरेने कहा—साहब मेरा खानियां,
सड़क करे खोपार । बिन इच्छे दिन पालडे, तोले जग
गंघार ।” वीरबलने इसे वैद्य ठहराया । चौथेने कहा—
“राम भरोखे बैठके सनका सुगरा लेय । जैसी जाकी
चाकरो वैसा बाकी देय ” वीरबल बोले—“यह यदु है
राधेने कहा—“जात पांत पूछे नहिं कोई । हरिको
भजे सो हरिका होई ।” वीरबलने इसे बर्षाशर
ठहराया । जब साधुओंसे पूछा गया, तो उन्होंने भी अपनी
अपनी वही जात बताई जो वीरबलने कही थी । बाद-
शाहने वीरबलसे पूछा, कि तुम्हें इनकी जातका पता
कैसे लगा । तब वीरबल बोले, कि जातीय स्वभाव
किसीका नहीं छूटता । यद्यपि सभी साधु हैं और कविता
भी सबकी ईश्वरके विषयपर है, तोभी इससे इनके चार्म
भयकते हैं । ब्राह्मण खानिके लालची होते हैं, इसलिये
अपनी कवितामें लड्डू धी मिथी ले भाये, जो खतिय है
यह ढाल तलवार ले भाया, वैद्य इच्छी तराजू चोर यदु
चाकरी ले भाया और यह महात्मा भिनकी जातका ठीक
नहीं, बर्षा भेदकी कोई जरूरत ही नहीं समझते ।

जात पांत पूछे नहिं कोई, जनेऊ पहिनके ब्राह्मण
होई—स्पष्ट ।

जातमें कौन बड़ा कौन छोटा—सब समान हैं ।

जातमें तुस्क, और बाजेमें हुडुक—बहुत हल्ला मचा-
नेवाले होते हैं ।

जात स्वभाव न छुटते, टांग उठाकर मुत्तते—
कुत्तेको क० । जो अपनी धुरी खादत नहीं छोड़ता,
उसे क० ।

जानका सदका माल, इज्जतका सदका गला-
माल देकर जान बचे और जान देकर इज्जत बचे
तो पचाना चाहिये ।

जानके लाले पड़ गये—जीना मुश्किल हो गया ।

जानके साथ जेवड़ा—जेवड़ा=रस्ता । जबतक जान
है, यह फांसी मेरे गलेसे न डूरेगी । जब किसीकी
खी वा पति बहुत दुखदाई हो, तब क० ।

जान जाय, पर माल न जाय—कृपाको क० ।

जानता चोर गाँव उजाड़े—स्पष्ट ।

जानतेका दिल, अजानतेका कलेजा—(ज०)

बुद्धिमानका दिल और मूर्खका कलेजा कहलाता है
जान न पहिचान बड़ी घोषी सलाम—बिना पहि-
चानके जब कोई किसीसे सम्बन्ध जोड़कर बात
घोट करता है, तब क० ।

जाननवाले जानिये मूरख मन पछिताय, फरनीं
भूली आपनी औरों दोष लगाय—स्पष्ट ।

जान बची और लाखों पाये—आलसी आदमीपर क० ।

जानवरोंमें कौआ और मनुष्योंमें नौआ—किसी
आदमीकी चालाकी प्रगट करनेके लिये, उदाहरण
रूपसे क० । जानवरोंमें कौआ और मनुष्योंमें गाई
धूत्तं होता है ।

जान बूझकर कुपमें गिरता (या ढकेलना)—

(१) जब कोई अपनेको भंगमटमें फंसाता है, तब
क० । (२) जब कोई लड़कीको अयोग्य घरके हाथ
सौंप देता है, तब क० ।

जान मारे धानियाँ, पहिचान मारे चोर—बनिये
जान पहचानवालोंको ही अधिक उगते हैं क्योंकि
वह मुलाहिजेते कुछ नहीं कहते और चोर भेद
मिलनेसे ही चोरी करता है ।

जान सबको प्यारी है } स्पष्ट । जब कोई किसी
जान सधमें यरावर है } जीवको सताता है तब
उसको उपदेश देनेके लिये क० ।

जानसे जहां है } दुनियांकी तमाम केहि-
जान है तो जहां है } यत जानके साथ है ।
मर जानेपर फिर किसी

से कुछ सम्बन्ध नहीं रहता ।

आज मित्रतो जहान मिले,

नहिं जान मिथे तो अज्ञान कदाकी । (पोथा)

जानसे हाथ धो बैठे हैं—जीनेकी उम्मेद नहीं।

जाना अपने घर, आना पराये घर—जाना, जब जी चाहे, तब हो सकता है; आना, तभी हो सकता है, जब दूसरा आने दे।

जाना है रहना नहीं, मोहिं भंदेशा और।
जगह बनाई है नंदीं, बैठोगे किस ठौर—
श्रद्धा काम करके परलोकके लिये पुण्यरूप-स्थान सबको बना लेना चाहिए।

जानि न जाय निसाचर माया—जब किसी दुष्ट मनुष्यका भेद न जान पड़ कि यह क्या करेगा, तब क०।

जाने ऊख मिठासको, जब मुख नीम चवाय—
जो दुःख भोग लेता है, वह छलका अनुभव कर सकता है।

जानेका आना है—तुम किसीके घर जाओगे तो वह भी तुमारे घर आयेगा। जो मनुष्य मादी गमीमें किसीके घर नहीं जाता, उसके यहां यदि कुछ काम हो और लोग न आये, तब क०।

जानेकी चिलम जिनका पर चढ़ेले अंगारी—
(पू०) जिसपर विपत्ति पड़ती है वही उसकी वेदनाको जानता है।

जानेवालेके हज़ार रास्ते, दूँदनेवालेका एक—
भागनेवाला न मालूम किस रास्तेसे गया होगा; पर दूँदनेवाला एक ही रास्ता देखता है।

जापके बिरते पाप—जो पुण्यके बलपर पाप करता है, उसपर क०। धर्मकी श्रोतमें पाप करना।

जाफ़र जटह्रीने पेसा किया, पिस्सूको मल मल-
के भैंसा किया—जो ज़रासी बातको बढ़ाकर कहता है, उसपर क०। पिस्सू—छोटा मच्छड़।

जा मन हीय मलीन सो न सहै पर सम्पदा—
जिसका मन मैला होता है, वह दूसरेके वैभवको नहीं देख सकता।

जामाता दशमोब्रह्मः—(सं०) जैसे नौ ब्रह्म विमुख होनेपर मनुष्यको कष्ट देते हैं, वैसे ही जमाई भी दसवाँ ब्रह्म है। जब कोई दामादसे कष्ट पाता है, तब क०।

जामिन दुनियां पाप है, तिरिया महापाप,

दोनोंको तू फूंक दे, नाम निरंजन जाप—
स्पष्ट। दुनियांमें निष्कलङ्क रहनेके लिये जामिन उपदेश देते हैं।

जामिन दे या दिलाये—जब किसीकी ज़मानत दे, तब आप देनेकी सामर्थ्य रखे वा दूसरेसे दिला दे। ज़ामिन मत हो चोरका, और सींग पकड़ मत ठोरका—स्पष्ट।

ज़ामिन मत हो वापका, भला जो चाहे आपका—
स्पष्ट।

ज़ामिन होना, धनका खोना—स्पष्ट।

जाय ईमान रहे सब कुछ—(१) ईमान सत्य जाता है और सब कुछ यहीं छूट जाता है। (२) ईमानके जानेसे अगर सब कुछ बच जाता है, तो जाने दो ईमानको।

जायगा साहूका, रहेगा साहूका—जब कोई मालिकके काममें बेपरवाही करता है, तब क०।

जाय जान, रहे ईमान—स्पष्ट।

जाय लाख, रहे साख—(व्य०) टोटा होनेपर भी यदि बात बनी रहे तो रोजगार चलता रहता है।

कहन सगी सखि नधि बड़वार,
भतिहिं सराहतियि तब थ्यार।

सोकी लीग गये इनि भाव,
जाहू लाख जो रहै सुसाख। (सुदिता)

जार खावे मार—परछीसे गुप्त प्रेम करनेवालेकी दुर्दशा होती है।

ज़ालिमकी उम्र कोता—अत्याचारीकी उमर थोड़ी होती है, क्योंकि मालूम नहीं उसे लोग कब मारें बालें।

ज़ालिमकी रस्ती दराज़ है—ज़ालिम (अत्याचारी) मनुष्य अधिक दिनतक जीता रहता है।

जासु दूत बल धरणि न जाई, तिदि पुर भाये
फौन मलाई—(तुलसी) स्पष्ट।

जासु राज प्रिय प्रजा दुलारी, सो नृप अवसि
नरक अधिकाारी—(तुलसी) जिस राजाकी प्रजा कष्ट पसती है, वह अत्यय नरकगामी होता है।

जा सूलीपर चढ़ जा—किसीको खतरनाक काममें भेजनेपर क०।

जासे जाको काम, सोई ताको राम—जितका
गमक खाय उसको ईश्वरतुल्य समझे ।

जासों निचहै जीविका, करिये सो अभ्यास ।

वेश्या पालै सील तौ, कैसे पूरै आस—(वृन्द)
स्पष्ट ।

जाही तें कछु पाइये, करिये ताकी आश—
(वृन्द) स्पष्ट ।

जाही विधि राखै राम ताही विधि रहिये—
दुखीको धैर्य देनेके लिये क० ।

आजके जमानों सबहीमें मिल जानों आप,

आनतें विरानों तब पाव काके रहिये ।

दोप भाँड़ि दोपतकी दोप कर्म आपनेकी,

मग आपनेकी विद्या काइसों न कहिये ॥

जबलग दीनानाय कृपाइ न करे नैक,

तबलग कर्म नीच सबहीकी रहिये ।

हारिये न हितत विचारिये न हरिनाम,

जाही विधि राखै राम ताही विधि रहिये ॥

जिठानीका भैसा अगड़ धों धों—जिठानीका
लड़का हमेशा मोटा ताजा रहता है, क्योंकि घरमें
जिठानीकी ज्यवा चलती है ।

जितना ऊपर उतना नीचे—खालाक आदमीको
क० ।

जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा—

जितनी ज्यवादा लागत लगाई जायगी उतनी ही

चीज़ अच्छी मिलेगी और जितनी ज्यवादा मजूरी

ही जायगी उतनी ही चीज़ अच्छी बनेगी । जब

कोई थोड़े दाममें बढ़िया चीज़ लेना चाहता है,

तब क० ।

अधर मधुर है प्रथम हँ, बानी मधुर समीय ।

जो तो मीठा करिये तेतो मीठो होय ।

जितना छानो उतना ही किरकिरा—जितना
जांचोगे उतने ही ज्यवादा ऐब निकलेंगे ।

जितना छोटा उतना ही खोटा—स्पष्ट ।

सुगंध वैसरति मोदति माने, बिन ब्याधे उपपति रति ठाने,

कई बड़ावत अगमं मोटी, तेतो छोटी तेतो छोटी ।

(चन्द्रा लो० २० कौ०)

जितना देगा, उतना पायेगा—दिया निष्फल नहीं
जाता ।

जितना पानी पिलावे उतना पीये—जब कोई सब
तरहसे किसीके अधीन हो जाता है, तब क० ।

जो पानी पिलाना तो पीना चरि,

गुरु गुरु रके हाय जीना चरि । (नीरचसन)

जितना बड़ोने पुण्य किया उतनी लड़कोने भीख
मांगी—जब किसी इज्जतदारका लड़का बदनामीका
काम करे, तब क० ।

जितना मैंने दूध पीया है उतना तुम्हें पानी भी
न मिला होगा—बड़ोंका लड़कोंके प्रति कहना है ।

जितना रला सो चुग लो—(प०) जो तुम्हारा है
सो ले लो, और उसीमें संतोष करो ।

बापी रूप सरिता भरै है सात सागर पै,

तू तो तेरे वासन-समान पानी भर से । (देवीदास)

जितना सस्ता उतना खराब—स्पष्ट ।

जितना सांप लम्बा उतनी ही गोह चौड़ी—
जब दो चीज़ की तुलनाकी जाती है, तब क० ।

जितना स्याना, उतना दीवाना—जो ज्यवादा स्याना
होता है वह उतना ही वहमी होता है ।

जितनी आमद उतना लोभ
जितनी आमदनी उतना खर्च } स्पष्ट ।

जितनी गंगा नहाई उतना फल पाया—(ज०)

जब कोई किसीके साथ नेकी करे और वह उसको
न माने, तब क० । कहनेका मतलब यह है, कि
जो कुछ किया सो किया और आगे न करूँगी ।

जितनी चादर देखो उतने ही पैर पसारो—
समाईके भीतर खर्च करनेके लिये क० ।

(१) एतो टांग पसारिये, तेतो लम्बी सोर । (वृन्द)

(२) पिय सुभाव पित धारिकै, सोनि निमान विचार ।

जेतो धारै जानिये, तेतो पाय पसार ।

(गिवा । लो० २० कौ०)

जितनी दौलत उतनी ही मुसीबत—स्पष्ट ।

जितने काले उतने मेरे चापके साले—(१) जब

कोई दूसरेकी चीज़को अपनी बतताता है, तब क० ।

(२) काले सभी बुरे होते हैं । जिसका रंग काला वा
जो पेटका काला होता है, उसे क० ।

(१) जघो कारे सब ही बुरे (सरदास)

(२) सबौरो छाम सबै एक सार,

मीठ बचन सुहाये मीलत अन्तर आरमहार ॥

भर करंग काक भइ कोजिब कपटिनको सरदार ।

(सरदार)

(३) सखीरौ खाम कहा छित जानै ।

एएदास सरवष जो दीजै कारो जतजि न मानै । (एएदास)

जितने घने, उतने भले—जितने लड़के हों उतना ही अच्छा ।

जितने मुंड, उतने पिएड—सभी लड़कोंको पिएड-दान देना चाहिये ।

जितने मुंह उतनी ही बातें—जब एकसे दूसरेकी बात न मिलती हो, तब क०। अफवाह यों ही उड़ा करती है ।

जिधर जलता देखें तिधर तापें—मतलबी आद-मियोंपर क० ।

जिधर मौझा, उधर आसफुउद्दौला—कोई आदमी कितना ही परिश्रम क्यों न करे, पर उसे उतना ही मिलता है जितना उसके तर्कदीरमें बदा है ।

इसका निकास इस कहागोसे है ;—लखनऊके नवाब आसफुउद्दौला बड़े ही दानी थे । एक दिन किसी फुक्कीरने आकर उनसे एक हजार रुपये माँगे । इसपर नवाबने उसको दस रुपये देकर कहा कि "तुम्हारे भाग्यमें इतना ही बदा है" । जब फुक्कीरने रुपये लेनेसे इनकार किया, तब नवाबने कहा, कि "कल आना ।" दूसरे दिन फुक्कीरके आनेसे पहले ही नवाबने एक रुप-योंकी और एक पैसोंकी घँची भरवाकर रख दी । फुक्कीर आया और रुपये मांगने लगा । नवाबने उन दो घँचियोंमेंसे एक छठा लेनेकी कहा । दुर्भाग्यवश फुक्कीरने पैसोंकी ही घँची उठा ली । नवाबने कहा, "तर्कदीरमें था, ही मिल गया ।

जिधर रथ, उधर सब—जिसका ईश्वर साथी है, उसके सभी साथी हैं ।

जिनको धोलीमें दगा, उनके दिलमें क्या दगा न होगी—पढ़ानोंपर क० । क्योंकि वे दगा दगा बहुत कहा करते हैं ।

जिनके लाड़ घनेरे, उनके दुख बहुतेरे—जिन लड़कोंका दुलार बहुत होता है उनको दुःख भी बहुत होते हैं ।

जिनको चाव घनेरा, उनको दुख बहुतेरा—जिनको जितनी ज्यादा आकांक्षा होती है उनको

उतना ही ज्यादा दुःख होता है ।

जिन जाये, उनहीं लजाये—कृपात्र या मालायक लड़केपर क० ।

जिन दूँदा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ ।

मैंघौरी डूबन डरी,रही किनारे बैठ—(व्य०) लाभ तभी होता है, जब कुछ जोखिम और मेहनत उठारि जाती है । ईश्वरके विषयमें भी क० ।

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सो धीत थहार, अब अलि रही गुलाबमें, अपत फटीली डार—(विहारी) जिन दिनोंमें फूल देखे थे वह थहारके दिन गये । हे भौरे ! अब गुलाबके पेड़में यिन पत्तोंकी कटि मरी ढालियां रह गई हैं । जब कोई धनहीन, यौवनहीन वा रूपहीन हो जाय, तब क० ।

जिन पाये पनहीं नहैं, तिन्हें देत गजराज ।

विप देते विषया मिले, साहब गरिव निवाज—ईश्वरकी कृपा होनेपर निवारी भी राजा हो जाता है ।

इस मसलका निकास इस कहागोसे है ;—एक कंगूच धनाब्य सीदागरके पास कोई बिखारी इमिया भोख मांगने आया करता था । एक दिन सीदागरने एक भिखनसे तब होकर अपने अड़तियेकी बिख भेजा कि "इसे बिख यानो बिख दे दो" विषया उस अड़तिये की लड़कीका नाम था । उसने सीतजीकी सभ्ति पाकर उस बिखारीको अपनी कन्या ब्याए टी और हाथोंपर चदाकर विदा कर दिया । जब सीतजीने यह हाल पूरा, तो उन्होंने एक मसल कही ।

जिन मोलों आई, उन्हीं मोलों गंवाई—जिन दामोंमें ली उन्हीं दामों मेंषे ही ।

जिन मोहि मारा तेहि में मारा—(हुलसी) बयला चुकाने पर क० ।

जियत न देहौं कौरा, मरे डुलेहौं चौरा—नीचेदेखो ।

जियत पितासे दंगम दंगा, मरे पिता पङ्घा वहि गंगा । जियत पिताको पूंछ न यात, मरे पिताको दूध और भात—इसाइयोंका कहाया हिन्दु-ओंके प्रति । आइके विषयमें कृपात्रको भी क० ।

जियत मइये हम जैवेना कागा मरे हाइ लै जाय-जीते जी मइयेको जाऊंगी नहीं, मरनेपर कौवे भले ही हमारी दइी मइयेको पहुँचा देवें ।

जिय विन देह, नदी विन धारी, वैसेहि नाथ,
पुरुष विन नारी—(तुलसी) विना पुरुषके स्त्रीकी घोभा
नहीं ।

जियास्ते बु जुर्गा, कफारहे गुनाह—(फा० मु०)
घड़ोंका सम्मान करना पापोंका प्रायश्चित्त है ।

जिये सो खेले फाग, मरे सो लेखे लाग—
होली खेलनेवाले कहते हैं । वसन्त ऋतुमें चेषक
आदि रोगोंके कारण बहुतसोग मरते हैं, इसलिये क०
जिसका आंडू बिके वह बधिया क्यों करे—
(व्या०) जो माल जिस अवस्थामें है उसी तरह
बिक जाय, तो उसका स्थान्तर करके ब्रेचनेका कष्ट
क्यों उठाया जाये ।

जिसका खाइये अन्न पानी, उसकी कीजिये
भायादानी—(ज०) स्पष्ट ।

जिसका खाना उसका गाना—जिसका अन्न पानी
खाय उसीका पन्न ले ।

जिसका खून उसीकी गर्दन पर—खन करनेका
पाप खन करनेवालेको ही होता है ।

जिसका गुश्यां नहीं उसका कूकर गुश्यां—
(ज०) जिसका कोई मित्र नहीं उसका कुत्ता ही
मित्र है ।

जिसका चिकना देखा फिसल पड़े—स्वार्थी
भौर ठकुरउहाती कहने वालों पर क० ।

जिसका चूपगा, सो छया लेगा—स्पष्ट ।

जिसका चुन्न, उसका पुन्न—चुन्न=आटा पुन्न=
पुराण । दानमें जिसका धन खर्च होगा, पुराय उसीका
होगा ।

जिसका जाचे, वही चोर कहावे—पुलिसवालोंको
क० । क्योंकि जब ये चोरका पता नहीं लगा सके,
तो जिसका जाता है उसीको चोर धनते हैं ।

जिसका डर, वही नहीं घर—(ज०) जब पति घरमें
नहीं है, तो जो चाहे कर संकती है ।

जिसका तेज, उसका भेज—(क०) . यलवान ही
मालगुनारी वसूल कर पाता है ।

जिसका दूब बिकेगा, वह दही क्यों जमावेगा—
(व्य०) दे० "जिसका आंडू बिके" ।

जिसका पहा, भारी वही भुके—जितके पास धन

होता है, वही दे सकता है । इज्जतदार हीको
द्वयना पड़ता है ।

उठा रहवा ऐ-कंचा कम बज्ज पझा. सराजू का ।

जिसका पाप, उसका बाप—पाप मनुष्यका बाप
है उसके अनुसार चलना पड़ता है अर्थात् भोगना
पड़ता है ।

जिसका फिक, उसका जिक—जो यात मनमें रहती
है । वही ज्ञानपर भी रहती है ।

जिसका यनियां यार, उसको दुद्रमन क्या दर-
कार—स्पष्ट । यनियोंपर ताना है ।

जिसका व्याह उसका गीत—स्पष्ट । समयानुकूल
काम करनेके लिये क० ।

जिस कारन मूंड मुड़ाया, सो दुःख आगे भाया-
जब कोई मनुष्य कोई दुःखसे दूरनेके लिये हाति
सहके अन्य उपाय अवलम्बन करे, फिर भी वह
दुःख उसका पीडा न छोड़े, तब क० ।

कोई भावना मनुष्य मजदूरी करके जीविका निर्वाह
करता था । तब प्रति कठिन परिश्रम करके खाना उसे
दुखदाई जान पड़ा, इसलिये वह सिर-मुड़ा कर साधु
बो गया । वह जानता था, कि साधु होनेमें उच्च परि-
श्रम न करना पड़ेगा । परन्तु जब उसे दरवाजे दरवाजे
भोखके लिये घूमना पड़ा, तब उसने यह मसल कही ।

जिसकी आंख नहीं, उसकी साख नहीं—
(१) अंधा बेईमान होता है । (२) जो चीज आंखसे
न देखी हो उसका पतवार नहीं ।

जिसकी आंखमें तिल, वह पड़ा बेसिल—आंखमें
तिलवाला निर्दयी होता है ।

जिसकी खइये चँदिया, उसकी रहिये वँदिया—
जिसका खाय उसकी तोषेदारी करे । चँदिया=चाँदी,
स्पया । वँदिया=बाँदी ।

जिसकी गोदमें बैठे, उसकी दाढ़ी नोवे—
कृतज्ञको क० ।

जिसकी जीभ चलती है उसके नौ हर चलते हैं—
श्रीग हांकेवालेको या बड़बोलेको क० ।

जिसकी जूनी उसीका सिर—उसीके मुंहसे उसीको
भूडा बनानेपर या उसीका पैसा खर्च कराके उसीकी
दावत करनेपर क० ।

जिसकी जोरु अन्दर, उसका नसीवा सिकन्दर-
मेहतर लोग ध्यापसमें कहा करते हैं। तात्पर्य यह है,
कि जित मेहतरकी जोरु अज्जरेज्जेके घर धाया बन-
कर घुस गई उसकी तकदीर यही है।

जिसकी तरफ़ रथ, उसकी तरफ़ सव—जिसपर
ईश्वरकी कृपा है उसके सव साथी हैं।

जिसकी तेग़, उसकी देग़—दे० “जिसकी लाठी”।
तेग़=तलवार।

जिनकी धाली खोई जाती है, वह कलसोंमें
हाथ डालकर देखता है—जिसकी चीज़ खो जाती
है उसकी अक़ल ठिकाने नहीं रहती है।

जिसकी देग़ उसकी तेग़—जिसके पास खानेको
है, उसीके सिपाही फ़तह करते हैं।

जिसकी बंदरो वही नचावे—जिसका काम है वही
कर सकता है। ज़र पक़का काम कोई दूसरा करने
लगे और उससे न हो सके, तब क०।

जिसकी बहिन अन्दर, उसका भाग सिकन्दर-
जिसकी बहिन यड़े आदमीके घर बैठी हो उसका
आदर बहुत होता है।

जिसकी बालदः बोलैगी, उसका क्रियलेगाह
क्यों न बोलैगा—बालदः माको और क्रियलेगाह
बापको कहते हैं। थोड़ा पढ़कर विदेशी भाषा बोलने
लागते हैं पर उसका अर्थ नहीं समझते उनपरताना है
किसे मूखंने एउ ओइ। फ़ारसी बोलेंगी थी, उसमें भी
उसने धमसे बालदःका अर्थ औरत और क्रियलेगाहका
अर्थ मटं समझ लिया। एक दिन किसी पढ़ीसिमरी
उसकी स्त्रीकी लबाई हुई, तो वह भी बीचमें बोल उठा।
इतनेमें पढ़ीसिमरी मरंने कहा—“नसूरतोंकी लहाईमें
मदीं कै बोलनेका क्या काम ?” उसमें उस मूखंने कहा
“जिसकी बालदः बोलैगी उसका क्रियलेगाह क्यों न
बोलैगा ?” इसपर सब कोई हंस पड़े।

जिसकी बीबीसे काम उसकी लौंडीसे फना
काम ?—जब बड़ोंतक पहुंच है तब छोटीकी सुशामदन
करनी चाहिये।

जिसकी महलमें मैया, मांगे पैसा मिले रुपैया-
दे० “जिसकी बहन।”

जिसकी लाठी उसकी भैंस—बलवान आदमीको
ही विजय प्राप्त होती है।

(१) रकमिदि हर ख्यायि हरि देख,

कियो युह सब बरन बिसेख,

को रजपूत बुंदैलै बैस,

जिसकी लाठी उसकी भैंस । (ख० २० कौ०)

(२) उन्हींकी भैंस है भाई कि जिनकी लाठी है।

उन्हींका गांव है अकबर लो बन सके ठाकुर ॥ (अकबर)

जिसके कारण जोगिन भई, वह सइयां परदेश-
जिस चीज़को लालचमें आकर सब कुछ छोड़ बैठे
और वही चीज़ न मिले, तब क०।

जिनके घर भोज उसको भात नहीं—क्योंकि वह
आदर सत्कारमें लगा रहता है।

जिसके घरमें माई उसकी राम बनाई—
जिसके घरमें मा है, उसे किसी बातका दुःख नहीं।

जिसके चार मैया, मारे धौल छीन लें रुपैया-
पकता ही शक्तिको बढ़ाती है।

जिसके धी नहीं उसकी देहली धी—जिसको
लड़की नहीं है उसे देना हो तो जो दरवाज़ेपर आये
उसे ही देवे।

जिसके पल्ले हिमियानी, वही रज स्यानी—
(पं०) जिसके पास पैसा है वही स्याना है।
हिमियानी=कमरसे बांधनेकी पतली रुपयोंकी
थैली।

जिसके पास दिबुआ, वही मोर घुआ—
(ज०) जिसके पास धन है उसकी सव सुशामद
करते हैं।

जिसके पास नहीं पैसा, वह भलामानस कैसा ?—
पैसेसे ही भलमनसाहत है।

जिसके पेटमें होय गायका गोदत, वह क्या
होय हिन्दूका दोस्त—स्पष्ट है। मुसलमानोंकोक०।

जिसके पेटमें वान, उसका गुरु शैतान—स्पष्ट।

इसका निकास इस प्रकार है—एक दिन बादशाह अक-
बरने बीरबनसे कहा, “जिनके पेटमें “वान” आता है,
वे सब शैतान होते हैं, जैसे कीबवान, फ़ौलवान, यतर-
वान वगैरहें।” इसपर बीरबनने जवाब दिया “जो
हां गैदरवान !”

जिसके पैसा नहीं हो पास, उसको मेला लगे
उदास—क्योंकि मेलेमें पैसेका ही खर्च है।

जिसके चारह बीघा बाँगा उसकी कमरमें नहीं
तागा—(घा०) बाँगा=कपासका खेत । कंजूस आद-

मियोंपर क० ।

जिसके मा चाप जीते हैं वह हरामका नहीं
कहलाता—जब कोई मनुष्य किसीको कुछ दोष

लगावे और उसका प्रमाण नहीं रखता हो, तब क०।

जिसके लिये चोरी की वही कहे चोर—जब कोई
किसीके लिये बुरा काम करेऔरवही उसको बुरा

काम बतावे, तब क०। यह मसल बंगलाकी इस मस

लसे बनी है—“जार जन्य चूरी चोरी सेई बले चोर !”

जिसके वास्ते रोये उसकी आँखोंमें आँसू नहीं—
कृतज्ञको क० ।

जिसके सबब लड़ाई हो वह आदमी नहीं,
कांटा है घरमें सीका या गुल कनेरका—

सी=सेई । जिसके कारण घरमें लड़ाई हो वह

कनेरके फल या सेईके कांटेकी तरह होता है ।

जिसके सिर पड़ती है वही जानता है—
स्पष्ट ।

जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई—
डोई=कलड़ी । धनवानकी सब खुशामद करते हैं ।

कोई किसीका और किसीका न कोई है,

सब कोई है उधोका जिस हाथ डोई है । (मजूर)

जिसके होवें अस्सी, वह करे खस्सी—(मु०)
रुपया पास होनेपर सब काम होता है ।

जिसको खुदा बचाये, उसपर कभी न आफत
भाये—दे० “जाको रखे साइयाँ ।”

जिस घर नारी फूड़ी, वह घर जानो फूड़ी—
जिस घरमें औरत फूड़ है उस घरकी कभी उन्नति

नहीं होती ।

जिस घर बढ़े न घुड़िभये, दीपक जुरे न सांभ ।
सो घर ऊजड़ जानिये, जिनकी तिरिया बांभ—
स्पष्ट ।

जिस घर बूढ़ा न बड़ा वह घर डिग्गम डिग्गा—
बुजुर्ग आदमीके बिना घरका धन्दोवस्त ठीक नहीं

रहता ।

जिस घर होय कुचलिया नारी, सांभ भोर हो

उसकी इवारी—यदचलन औरतसे जलदी घर बिगड़
जाता है ।

जिस घर होवे पुरुष कुचलिया, उस घर होवे
खीरका दलिया—दे० “जिस घर होय कुचलिया ।”

जिस डालीपर बैठे उसीको काटे—जिसकी बदा-
लत अपनी गुजर हो उसीका अमिष्ट करना । कृतज्ञ

आदमीपर क० ।

जिस तरफ लाडू उस तरफ हम—जब खुशामदी
आदमी जिस तरफ दो पैसैकी आमदनी देखते हैं

उसी तरफ चापलूसी और लज्जो चप्पो करने पहुंच

जाते हैं, तब क० ।

जिस दरख्तकी छांहमें बैठे उसीकी जड़ काटे—
कृतज्ञको क० ।

जिसने को शर्म, उसके फूटे कर्म—मुलाहिजा
करनेवालोंको मुकसान उठाना पड़ता है ।

जिसने कोड़ा दिया, वह घोड़ा भी देगा—
ईश्वरपर भरोसा रखनेवाले ऐसा कहते हैं । आलसी

आदमी भी कहता है ।

जिसने चीरा वही नोरगा—जिसने पैदा किया वही
खानेको देगा । आलसी कहता है । जब कोई अर्थ

संकटमें पड़ता है, तब उसे दावस देनेके लिये क० ।

जिसने दिया उसने पाया—जिसने उस जन्ममें
दान दिया है वही इस जन्ममें पाता है ।

जिसने न देखा हो बाघ, वह देखे थिलाई
जिसने न देखा हो ठग, वह देखे कसारा }
स्पष्ट ।

जिसने न देखा हो जम वह देखे जमाई—
हिन्दुओंमें प्रायः जमाइयोंसे बहुत कष्ट मिलता है,
इसलिये क० ।

जिसने न देखी हो कन्या वह देख ले कन्याका
भाई—भाई वहिनकी सूरत अकसर मिलती है, इस-
लिये क० ।

जिसने न पी गांजे की कली, उस लड़केसे लड़की
भली—गंजेड़ियोंका कहना है ।

जिसने घेटी दी उसने सब कुछ दिया—स्पष्ट ।

जिसने रंडीको चाहा उसे भी जवाब और जिसको रंडीने चाहा उसकी भी तबाही—स्पष्ट ।

जिसने लगाई वही बुझावेगा—जिसने काम छोड़ा वही उसको पूरा करेगा ।

जिसने सालिग्राम भूजे उसे भाटा भूनते क्या देर—जो बहुत कठिन काम कर चुका है उसे साधारण काम करते क्या देर लगती है ।

जिस वन सुवा न सांवरा, वहां कागा खाया कपूर—जहां कोई विद्वान नहीं होता, वहां साधारण आदमीकी ही पूजा होने लगती है ।

जिस धरतनमें खाना उसीमें छेद करना—कृत-मको क० ।

जिस बहुअड़की बहरी सास, उसका कधी न हो घर यास—स्पष्ट ।

जिस मुंहसे पान खाइये, उस मुंहसे कोयले न चयाइये—जिसे अच्छा कह चुके उसकी बुराई न करनी चाहिये ।

जिस राह हीं नहीं चलना उसके फोस क्यों गिनना—जो काम ही नहीं करना उसका जिक्र क्यों करना ।

जिस शहरमें फूल बिछाइये, वहां धूल न उड़ाइये—जहां हज्जत हो, वहां बदनामीका काम न करना चाहिए ।

जिस हंडीमें खाय, उसीमें छेद करे—कृतमको क०
जिस हंडीमें साभा नहीं वह चढ़ते ही फूटे—जिस काममें अपना स्वार्थ नहीं है, वह चाहे बने चाहे बिगड़े ।

जिसे कर उसे दर—(१) जिसे अपना बनाये रखना हो उससे दरता रहे । (२) जिसे कर देना पड़े उसे दर लगा रहता है ।

जिसे खानेको मिले यों, वह कमाने जाय क्यों—आलसी वा निश्चय को क० ।

जिसे खुदा रखले, उसे कौन चकले—स्पष्ट ।

जिसे पिया चाहे वही सोहागन, क्या सांघरी क्या गोरी—जिसपर मालिककी निगाह होती है वही ऊंचे दरजेपर पहुंच जाता है ।

जिसे हया नहीं, उसे ईमान नहीं—चेयमं बेईमान होता है ।

जिहि घर जिते बधावनो, तिहि घर तितनो सोग—जहां खुशी बहुत होती है वहां ही दुःख भी बहुत होता है ।

जिहि पितु देहि सो पावहि टीका—(तुलसी)जिस राज-पुत्रको पिता तिलक दे वही राजा होता है ।
दे० “जिसे पिया चाहे वही सोहागन” ।

जो कहीं लगता नहीं, जय जो कहीं लग जाय है—स्पष्ट ।

जो कहो, जो कहलाओ—दूसरेकी खातिर करो मुन्हारी भी खातिर होगी ।

तू मरा हाजी योगेयम मन्तुरा हाजी गयो ।

जीका वैरी जी—जीवका भन्नक जीव है ।

जीके बदले जी—(१) जानके बदले जान लेना (२) (व्य०) जब कोई रुपया उधार लेकर प्यजमें माल रख देता है, तब क० ।

जी चलता है पर टट्टू नहीं चलता—बुढ़ापेमें विलासी मनुष्य कहता है ।

जी जलानेसे हाथ जलाना वेदतर है—स्पष्ट ।

जीजाके मालपर साली मतवाली—(ज०) भटा दावा ।

जी जाय, घो न जाय—कंजूसको क० ।

जीतकी हया भी अच्छी—स्पष्ट ।

जीता सो हारा, और हारा सो मरा—(व्य०) मुकद्दमें बाजोंको क० ।

जीती मखली नहीं निगली जाती—(१) जानकूक कर कोई विष नहीं खाता (२) जानकूककर कोई आपत्ति नहीं उठाता । (३) जानकूककर कोई भठ नहीं बोलता ।

जीते आसा, मुए निरासा—स्पष्ट ।

जीते चाव चाय, मुए दाव दाघ—जीते जो तो चाव रहता है मरनेपर गाड़नेकी फ्रिक पड़ जाती है ।

जीते जीका नाता है—जब कोई किसी आत्मीय जनकी मृत्युपर बहुत शोक करता है, तब उसे घैर्य देनेके लिये क० ।

जीते जीका मेला है—जबतक ज़िन्दगी है तभीतक मिलना है फिर तो थकेले जाना है।

जीते जी खांव खांव, मर गये तो हाय हाय—स्पष्ट।

जीते तो हाथ काला हारे तो मुंह काला—जुआरियोंको क०।

जीते बात न पुच्छियां, मुए धड़ाधड़ पिच्छियां—(प०) (१) कुतम औलादको क०। (२) आदमीको क्रूर मरे पीछे जानी जाती है।

जीतेसे दूर मरनेसे नज़दीक—एक पैर क्रममें लटकाये हैं।

जीते हैं न मरते हैं, सिसक सिसक दम भरते हैं—ऊ० दे०।

जीना थोड़ा आशा बहुत—स्पष्ट।

जीभ जली, न स्वाद आया—जब किसीको बहुत थोड़ी सी चीज़ खानेको दी जाय, तब क०।

जीभ बड़ी जुवाना नाम, जिसपर जीता सारा गांव—बड़वोली खीको क०।

जीयेंगे तो भीख मांग खायेंगे—आलसी आदमियों पर ताना है।

जीये न माने पित्र और मुये करे श्राद्ध—ईसाई लोग हिन्दुओंको कहते हैं। कुपात्रको भी क०।

जीव किसीका मत सता, जबलग पार बसाय—भरसक किसीको न सताना चाहिए।

जीवनके दिन सफल जो, यीतें सहित हुलास—खरीमें ज़िन्दगी कटे यही अच्छा है।

जीव भी प्यारा पीव भी प्यारा किरिया फाकी खांव—जब दोमेंसे एक काम भी करते न बने, तब क०।

जीवसे जीविका प्यारी—जानसे भी रोज़गार प्यारा होता है।

जीवे मेरा भाई, गली गली भौजाई—भाई रहेगा तो भौजाई बहुत मिल जायंगी।

जुआ बड़ा रोज़गार जो इसमें हार न होवे—दे० “बोरीला.....।”

जुआ युद्ध व्यापार, फिर फिर करे तो पावे पार—एक दफ़े हारने वा जुकसान देनेसे निस्तसाह न होना चाहिए।

जुआरी आया जित्त, मझे चार ज्वारी इक।

ज्वारी आया हार, मंभा इका ज्वारी चार—

(प०) जुआरीकी अवस्थापर क०। जीता जुआरी ऐसा फूल जाता है कि उसके सोनेके लिये चार खाटें चाहिये और हारे जुआरी चार मिल कर एक खाटमें सो सकते हैं।

जुआरीको अपना ही दांव सूझता है—स्वाधी पर क०।

भारत कहहिं विचार न काज,

मूक जुआरिहिं आपन दाजें। (तुलसी)

जुआरी हमेशा मुफलिस—जुआरी सदा कंगाल रहता है।

जुएमें वैल भी हारा है—जुआ खेलनेवालेके लिये उपदेग है।

जुएमें हार मीठी होती है—जुआरी हारनेपर भी वार वार खेलता है।

अदम्य रोग सुरतिमें पाई, मार मारतें सुख खरसाई।

कछो पखानो ज्यों चित धारि, जूआमें है मीठी हार।

जुग जुग जीओ, दूध बतसा पीओ—आशीर्वाद भी है और मुहचक्की बोली भी है।

जुग टूटा नर्द मरी—जबतक एका है तभीतक बल है, अलग हुए और मारे गये। चौसरमें जुग वा दो गोदियां एक साथ होती हैं तो उसे कोई नहीं मार सकता।

(१) फूटे ते नर्द छट जात राजी चौपड़की,

आपसके फूटे कछो कौनकी भली भयी। (गङ्ग)

(२) चाहे जो भिन्दगौ तो न हो यारसे जुदा।

चौपड़में जुग जो टूट गया नर्द मर गरं ॥ (पक्षीर)

जुड़तो नाहीं धुरकी टूटी, धरी रहै सब दाक बूटी—जब आयु पूरी हो जाती है, तब कोई देवा काम नहीं फरती।

जुत जुत मरें वैलवा घेठे खांय तुरंग—(क०) कर्मचारी खटते हैं और अफसर घेठे खाते हैं। शरीर मेहनत करके खाता है और धनवान घेठे के।

जुलाहा जाने जी काट ?—जुलाहा क्या जाने जी काटना।

इसपर एक कहानी है—किसी जुलाहेपर कुछ बड़त हो गया था उसके मजानमने उससे मेहनत लेकर रुपये

बस्य करनी चाहे। जुलाहा राजी होकर खेतमें जी काटने को गया, तो बघ औ काटनेके बदले उसके भुकी हुए भागीकी इस तरह मुक्ताने लगा कि जैसे महीन मृतको सुन्नताते हैं।

जुलाहका वेगारी पठान—उल्ही या धनहोनी बात हो, सब क०। क्योंकि जुलाहा बहुत साधारण और पठान बलवान होते हैं।

जुलाहकी जूती, सिपाहीकी जोय, धरी धरी पुरानी होय—जुलाहकी जूती और सिपाहीकी खी, दोनों काम न आनेके कारण बिगड़ जाती हैं।

जुलमकी टहनी कभी फलती नहीं, नाव कागजकी कभी चलती नहीं—अन्यायसे उपाजन किया हुआ धन उसी तरह दूब जाता है, जिस तरह कागजकी नाव दूब जाती है।

जूंके डरसे गुदड़ी नहीं फेंकी जाती—साधारण तफलीफके लिये अपना काम नहीं छोड़ा जाता। नाम धरे चपपति हित नाम, इत बचनन सों नाहीं काम। लोक पछानो, ऐसो भज कू भनिके डर कपरी। तज्ज। (कुलटा लो० २० की०)

जूठा खाय मीठेके लालच—स्वार्थके लिये नीच काम भी किया जाता है।

“जूठी खाय सुभीठको, यहे नाल ठिक ठाल। (उदाहर)

जूता पहिने नरीका, फया भरोसा करीका—नरीका=धरुकीके समझेका। करीका=रक्खी औरतका। घटिया दामके जूते और रखेली औरतका कोई भरोसा नहीं, न जाने कय ये घोखा दें।

जूता पहिने साईका, चड़ा भरोसा ज्पाहीका—फरमायय देकर धनवाया हुआ जूता और धिवाहिता स्त्रीका विश्वास करना ठीक है, क्योंकि ये दो काम आते हैं।

जेकर पुरखा न देखल पोय, तेका घर खुर्वंदी होय—(भो०) जिसके पुरखोंने कोईका साम भी नहीं देया, उसके घर घोड़ा बंधता है। नये बड़े आदमी पर और जिसने अपने पुरुषार्थसे धन कमाया हो उसपर क०। यह मसल, कोई कोई हंस प्रकार कहता है। ‘जेकरे बाप न देखल पोय, ओकरे पुत खंडुबंदी होय’।

जेकर मैया पूआ पकावे, तेकर धीया लिलफे—(पू०) जिसको मा पूआ बनावे उसीकी लड़की तरसे, जैसे मोचीकी लड़कीको जता और दर्जीकी लड़कीको अच्छे अच्छे कपड़े पहिरनेको नहीं मिलते।

जेकरी जोय तेकरे पास, देखनहारा ताके आस—(पू०) जिसकी खी है उसीको छल मिलता है दूसरा ताकता रहता है।

जेकरे घुड़वां वैठिन, तेकर आंडू दागिन—जिसका खाय उसीका मुकमान करे। कृतज्ञको क०। जे गरीबपर हित करे, ते रहीम यड़ लोग, कहां सुदामा वापुरे, कृष्ण मिताई जोग—(रहीम) स्पष्ट।

जेठके भरोसे पेट—निलट्ट छोटे भाईकी खीपर क०। **जेठ जिठानी देचरा, सब मतलबके मोत। मतलब बिन तो कोई भी, राखै नाहीं भीत**—स्पष्ट।

जेठे जेठे भपाड़ हेटे—जेठमें मौसम अच्छा रहता है पर भपाड़में खराब हो जाता है।

जेठ तपत हो चर्या गहरी, हँसें बांगरू रोखें नहरी—जेठ ज़ोरसे तपनेपर वर्षा ज़्यादा होती है जिससे ऊँची ज़मीनवाले खेत अच्छी होनेके कारण हंसते और नीची ज़मीनवाले खेतमें पानी जम जानेसे रोते हैं।

जे डरे भिन्न मेली, सेह परअ यखरा—(स०) जिस डरते जुदे हुए बही हिस्सेमें आया।

जेती सम्पति रूपणकी तेती तू मत जोर, बढ़त जात ज्यों ज्यों उरज त्योँ त्योँ होत कठोर—(विहारी) रूपणपर क०। जितनी सम्पत्ति सूमके है उतनी तू मत इकठ्ठी कर। जितना धन बढ़ता जाता है उतना ही वह और भी रूपण होता जाता है, जैसे कुच जितने बढ़ते हैं उतने ही कठोर होते जाते हैं।

जे न मित्र दुख होंहिं दुखारो, तिनहिं धिलोकत पातक भारी—(तुलसी) जो मित्रके दुःखमें साथ नहीं देते उनका मुंह न देखना चाहिए।

जे पाँडेके पत्रामें, ते पंडियाइनके अंचरामें—

(पू० ज०) जब पुरुषसे स्त्री चतुर होती है, तब क० ।

जे पूत परदेशी भैले, देव पितर सबसे गैले—

(पू० ज०) जो देशान्तरको चले जाते हैं उनका धर्म नष्ट हो जाता है ।

जेवढेसे नाडा घिसना है—दे० “गले पड़ी ढोलकी”

गलेमें रस्सी पड़नेपर सिवा उससे गला घिसनेके और कोई उपाय नहीं । गाय भैंस आदि पालतू जानवर और स्त्रियोंपर क० ।

जैसन देखे गांवकी रीत, तैसन करे लोगसे प्रीत—
स्पष्ट ।

जैसा अन्न वैसी बुद्धि—जैसा अन्न खाद्योगे वैसी बुद्धि होगी ।

यादृग्ं भक्षयेद्द्रव्यं बुद्धिर्भवति तादृशी ।

दीपो भक्षयते धर्वात् कञ्जलं च प्रसूयते ॥

मनुष्य जिस प्रकारका अन्न खाता है उसकी उपज (बुद्धि) भी वैसी ही होती है । दीपक अंधकारको खा जाता है इसलिये कञ्जल उत्पन्न करता है ।

जैसा ऊंट लंबा वैसा गधा खवास—एक सी

जोड़ी मिल जाय, तब क० । लम्बा आदमी अहमक समझा जाता है ।

जैसा कन भर, वैसा मन भर—हांडीका एक चावल

ट्योलनेसे मालूम हो जाता है किगल गया वा नहीं ।

जैसा करेगा, वैसा पायेगा—कर्मका फल अवश्य मिलेगा ।

सुनि अनरस पत्नी प्रिय प्राण, भीषी अनभावति सुख साग।
योग उक्ति यह सब जग गावे, नैसी करे सी तैसी प्रावे ॥

जैसा काछ काछे, तैसा नाच नाचे—समाई

मूजिव काम करे अथवा जैसा वेप हों उसीके अनुसार काम करे ।

(१) ऊधो सुनो यह प्रीतकी रीत

जु काखिये काछ सुई नचिये (ठाकर)

(२) सज्यो साज पिय हैम जौं, धरो द्विये हठ सांच ।

जैसे कखिये काछकौं तैसो नचिये नाच ॥

(वासकसञ्जा)

जैसा कारन, तैसा कारज—जैसा सामान रहता है उसीके अनुसार काम करना पड़ता है ।

जैसो कारन झोत है, तैसी कारज थाप ।

कर सर धनु प्रानी इनत, कर माला हरि जाप (बन्द)

जैसा किया, वैसा पाया—जब किसीको बुरे कामका फल मिलता है, तब क०

कर्म प्रधान विश्व करि राखा ।

जो बस करै सो तस फल चाखा (तुलसी)

जैसा जामन, वैसा दही—वीर्यका अस्तर होताही है ।

जैसा तेरा खोट रुपैया, वैसा मेरा खोखर पैसा

जैसा तेरा धूंधर वीया, तैसी हींग हमारी—

जब किसी आदमीके बुरे बर्तावके बदले बुरा ही बर्ताव किया जाता है और इसलिये वह उलहना देने लगता है, तब क० ।

जैसा तेरा देना लेना, वैसा मेरा गाना बजाना—

उ० दे० ।

जैसा तेरा नोन पानी, तैसा मेरा काम जानी

उ० दे० ।

जैसा दाम, वैसा काम—जैसी मजदूरी दोगे वैसा ही काम होगा ।

जैसा दुद्ध, वैसी बुद्ध—जैसी माका दूध पीयो वैसी बुद्धि होगी ।

तिक्लमं वृथाये क्या मां वापके अतवार की ।

दूध तो उब्बका है, तालीन है सरकार की ॥ (प्रकाश)

जैसा दे वैसा पाय, पूत भतारके आगे आय—

एक स्त्रीने दो रोटियोंमें विष मिलाकर किसी साधुको दिया । उसने उन रोटियोंको खजाकर अपनी कुटीमें रख छोड़ा । देवात् उसी स्त्रीका पति और लड़का उस स्थानपर कहींसे गये हुए था पड़ने और उन्होंने साधुसे पानी पीनेकी मांगा । साधुने बड़ी दोनों रोटियां उन दोनोंको खिला दीं और पानी पिला दिया ।

जैसा देश, वैसा वेपे—जब कोई एक देशते जाकर

दूसरे देशमें रहने लगे पर व्यवहार वहाँके अनुसार न करे तो वहाँके लोग उसको हंसते हैं उन्हींके शिक्षार्थ यह मसल क० । जिस देशमें रहे वहाँकी रीति ग्रहण करे ।

जैसा बीज, वैसा गाछ—जब वापका गुण धैरेमें भी मिले, तब क० ।

उत्पाथी बीज रूप करि जाग, वाही ते रस हीइ प्रमान ।

कहे पखानो बुधिवर ऐसो, जौसो बीज हच गुन तैसो ॥

(स्थायीभाव)

जैसा योगेगा, वैसा काटेगा—कर्मके अनुसार फल भोगना पड़ेगा ।

जैसा मन हराममें, वैसा हरिमें होय । चला जाय, वैकुण्ठको, रोक सके ना कोय—स्पष्ट ।

जैसा मान, वैसा दान—मानके अनुसार दान दिया जाता है ।

जैसा मुंह, वैसा तमाचा—जैसा आदमी देखे वैसा ही व्यवहार करे । जितना धोम उठा सके उतना ही लादे । उपयुक्त ढंड देने वा मुंहतोड़ जवाब देनेपर भी क० ।

जैसा राजा वैसी प्रजा—स्पष्ट ।

जैसा लीकड़ा भर, वैसा ठीकरा भर—हराय काम हराय ही है जैसा थोड़ा किया वैसा बहुत ।

जैसा सांचा, वैसा ढांचा—जैसा सांचा होता है वैसी ही चीज ढलकर निकलती है ।

अपनी ही यह खता है, हमनी तो खूब जांचा ।

लड़के टले हैं वैसी, जैसा बना या सांचा । (अकबर)

जैसा साजन पाय, तैसी सेज विछाय—स्पष्ट ।

जैसा सूई चोर, वैसा बज्जर चोर—चोरी सब ही बुरी है क्या थोड़ी क्या बहुत ।

जैसा सूत तैसा फेटा, जैसा वाप तैसा वेटा—जैसेके तैसे ही होते हैं ।

जैसा सूत वैसी फेटी, जैसी मा वैसी वेटी—ज० दे० ।

जैसा खोता वैसी धारा—ज० दे० ।

जैसी ओढ़ी कामली, वैसा ओढ़ा खेश—संतोषोका वा मर्द आदमीका कहना है ।

गुर उचने उदया तो लिया मोद दुशाला,

कामल जो दिया तो बही कंधे पे छे आना ।

चांदर जो उदाई तो बही जो गई बाला,

व धवाई लंगोटी तो बही हंसके संभाला ।

पोशाकमें दस्तामें हमालमें, सुग हैं,

पूरे हैं बही मर्द जोहर हालमें, सुग हैं ॥ (मजीर)

जैसी करनी, वैसी पार उतरनी } कर्मानुसार भो-
जैसी करनी, वैसी भरनी— } गना पड़ता है ।

रोय कियो ज इया मंगनाल, अब पकतावति है पयो' बाज ।

सुनो छलि क्यों अगमत बरनी, नौंही तानी तैसी भरनी ।
दे० "अपनी करनी पार उतरनी ।"

जैसी गई धीं वैसी आई, हक महरका बोरिया लाई—(सु० ज०) कमनसीवीपर क० । उम्मेद करके जाय और कुछ न मिले ।

जैसी भूँटी घघाई, वैसी फडुई मिठाई—बदला चुकानेपर क० ।

जैसी तेरी आव भगत वैसा मेरा आशिर्वाद—स्पष्ट ।

जैसी तेरी तानो बानी, वैसा मेरा चुनना—दे० "जैसी करनी ।"

जैसी तेरी तिलचावरी, वैसे मेरे गीत—जैसी मजूरी वैसा काम ।

जैसी तेरी फाफड़ कोदो वैसी मेरी हाँग—दे० "जैसा तेरा घूबर बीया ।"

जैसी दाईं आव छिनार, वैसी जाने सब संसार—(ज०) जो जैसा होता है वैसा ही सबको समझता है ।

जैसी देखे गांवकी रीत, तैसी उठावे अपनी भीत—स्पष्ट ।

जैसी देवी शीतला तैसे याहन खर—संस्कृत—'या-ह्यी शीतला देवी तादृशो वाहनो खरः' का अनुवाद है । दे० "जैसा ऊंट लम्बा"

जैसी नोयत वैसी घरकत—स्पष्ट ।

राजा होय, राव होय, कैसा उमराव होय,

अँभो होत, नैति तैमो होत बरकति है ।

जैसी फूभड़ आव छिनार, तैसी लगावे कुल व्यवहार—(ज०) दे० "जैसी दाईं"

जैसी वन्गी वैसा इनाम—दे० "जैसी तेरी थाप भगत"

जैसी घई दयार, पीठ तय तैसी दीजे—(गिर-धर) एत देखकर काम करनेके लिये क० ।

जैसी माई, वैसी जाई—(ज०) जैसी मा वैसी बंदी ।

जैसी रुह वैसे फुरिश्ते—(सु०) जैसी जीवार्त्ता होती है वैसे ही यमके दूत उसे लेनेके लिये आते हैं । जोड़ मिलानेपर क० । अस्तर घुरे भावपर क० ।

जैसी लम्बो घंदरिया वैसी मनवाँ भाँड़—ज० दे० ।

जैसी संगत करो तैसी इज्जत मिले—स्पष्ट ।

जैसी संगत तैसिये इज्जत मिलि है भाय,

धिरपर मखमल सेहरे पनही मखमल भाय (हन्द)

जैसे अन्नकी तैसा डकार—जब जैसे आदमीको
वैसा ही संगी मिल जाय, तब क० ।

जैसे उर्दई तैसे भान, उनकी चुटिया न इनके
कान—जब दोनों एकसे ही निकम्मे हों, तब क० ।

जैसे कंधा घर रहे वैसे रहे विदेश—जितसे पास
रहनेपर भी किसी तरहकी सहायता न मिले, उसे
क० । निकम्मे आदमीका घर और बाहर रहना
एकसां है ।

कवड़ न सेज सवार के मीथी काम कलिय,

जैसे कंठां घर रहे वैसे रहे विदेश ।

जैसे काग जहाजको, सूभक्त और न ठौर—
जब किसीको एकके सिवा दूसरा ठिकाना न हो,
तब क० ।

नित प्रति-पिय भैठो रहे, संयो करे सुख गौर ।

ज्यों जहाजके कामकी, सूभक्त और न ठौर ।

(स्वाधीनपत्रिका । लो० र० कौ०)

जैसेकी सेवा करै तैसी आशा पूर—स्पष्ट ।

जैसेको जैसा, परखनेको पैसा—सवालका
जवाब । पैसा परखनेके ही वास्ते है ।

जैसेको तैसा मिलै, सुनियो राजा भील ।

लोहा चूहा खा गया, लड़का ले गई चील—

जो जैसा करे उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना
चाहिये ।

यह मसल इस कहानीसे निकली है :—एक आदमी कुछ
लोहेके टुकड़े अपने एक मित्रको सौंपकर परदेश चला
गया । जब कई वर्ष बाद वह आया, तो उसने अपनी
अमानत मांगी । उसके मित्रने कहा, कि तुम्हारा लोहा
सब खूँड़े खा गये । यह सुनकर वह गुप रह गया, पर
इसका बदला लेनेका अवसर टूटने लगा । एक दिन
उसने अपने उसी मित्रके एक छोटे लड़केको घरमें दिवा
रक्खा । जब उसका भिव लड़केकी खोजता हुआ उसके
पास आया और पूछा, कि तुमने लड़केकी देखा है ? तो
वह बोला, कि हां ! उसे तो चील ले गई । मित्रने
कहा, कि चील लड़केको ले जाय यह असंभव है । तब
उसने उत्तर दिया, कि यह कब संभव है कि लोहा चूहा

खा जाय ? यह सुनकर उसका भिव बहुत खिन्न
हुआ ।

जैसेको तैसा—(१) जो जैसा करता है उसे वैसा ही
फल मिलता है । (२) जो जैसा होता है उसे वैसा
ही देखता है ।

(१) पीय सदीय कछो टुखदाई, भौह कुटिल क्यौकरी बतारै ।
बोली सत्य चिन्ति जग गाई, जैसेकी तैसी दरसाई ।
(अधोरा लो० र० कौ०)

(२) जो जैसी तिहिं तैसिये, करिये नौति प्रकास ।

काठ कठिन भेई अमर, यहु भरविन्द निवास ॥ (हन्द)

जैसेको तैसा, चावूको भैंसा—जैसा आदमी देखे,
वैसा सम्मान करे । राजाको भैंसा भेंट करे, जो
गौसे अधिक मूल्यवान है ।

जैसेको तैसा मिले, ज्यू धामनको नाई, इसने
कही आशीर्वाद, उसने आरसी फाट दिखाई—
ब्राह्मणको आशीर्वाद देनेसे दक्षिणा दी जाती है
और नाईको आहना दिखानेसे क्रुद्ध दिया जाता है ।

जैसे देवता वैसी पूजा—स्पष्ट ।

जैसे नीमनाथ, वैसे चकायननाथ—जब दोनों एक
से हों, तब क० ।

जैसे पानी वह गये सेतुबंध केहि काम—समय
निकल जानेपर होखियार होना किस कामका ।

पयो गते किं खलु सेतुबन्धः ।

जैसे पीड़ित कीजिये, ऊल तऊ रस देत—
सज्जन सताये जानेपर भी भलाई ही करते हैं ।

जैसे एक सोहत नहीं, हंसमंडली मांहीं—
पंडितोंकी मंडलीमें मूर्खका बैठना भी शोभा नहीं
देता ।

सभामध्ये न शोभते हंसमध्ये षको यथा । (चाणक्य)

जैसे माने दूध सब, सुरा अहीरी पास—संगतका
फल है । अहीरीके पास यदि घरा भी रहे तो लोग
उसे दूध ही समझते हैं, क्योंकि उसका पेशा दूध
वेचनेका ही है ।

जैसे मारकंडे वैसे कंडेमर—जहां दोनों एक ही
से हों, वहां क० ।

जैसे मियरां काठ वैसी सनकी दाढ़ी—ठीक जोड़
मिले, तब क० ।

जैसे मुदेंपर सौ मन मट्टी वैसी हज़ार मन—
क्योंकि उसे कुछ थोक नहीं जान पड़ता ।

जैसेमें तैसा मिले मिले नीचमें नीच । पानीमें
पानी मिले, मिले कीचमें कीच—स्पष्ट ।

जैसे सांपनाथ, वैसे नागनाथ—जब दो आदमी
एक से हों, तब क० । दोनों नामका अर्थ एक है ।

जैसे सांप नाथा वैसे नाग नाथा—जब दोनों काम
करनेकी क्रिया एक हो, तब क० ।

जैसे हरगुन गाये, तैसे गाल बजाये—जिसके
नीचे चार आदमी काम करते हैं और वह कामकी
देख रेख न रखकर भले घुरे सबको एक दृष्टिसे देखता
है, तब क० । गाल बजाना सिर्फ़ शिवकी पूजामें
होता है ।

जैसे हसन, वैसे हुसेन—(मु०) जब दो आदमी
एक से माने जाते हैं, तब क० । क्योंकि हसन और
हुसेन दोनों एक पिताके पुत्र होनेसे दोनों एक से
पूजे जाते हैं ।

जैसेमें तैसे, आप जैसेके तैसे—जब कोई हर एक
तरहके आदमियोंमें मिलकर भी अपने रंगमें कायम
रहता है, तब क० ।

जैसोंको तैसा मिले, तब पूरा संग्राम—बराबरीके
जब मिल जाते हैं, तब क० ।

जैसो घर है तैसो फरिका, जैसो घाय तैसो
लड़िका—स्पष्ट ।

जो अति आतप व्याकुल होई, तब छाया सुख
जाने सोई—(तुलसी) स्पष्ट ।

जो अपने काम न आय, सो चूल्हे भाड़में जाय—
मल्लवी आदमी और भूकटसे बचनेवाले लोग
पैसा कहते हैं ।

जो आके न जाय वह बुढ़ापा देखा, और जो
जाके न आय वह जवानी देखी—क्योंकि बुढ़ापा
आकर जाता नहीं और जवानी जाकर लौटती नहीं ।

रहती है कब बहारे जवानी, तमाम उष ।

मानन्द दूधे गुल, इधर चाई उधर गई ॥

जो जाकर न आवे, वह जवानी देखी ।

जो आकर न आवे, वह बुढ़ापा देखा ॥ (दाम्)

जो ईश्वर किरपा करें तो खड़े हिलावे कान
अरहुड़के खेतमें—ईश्वर जब देता है तब अनायास
देता है ।

इसपर एक कहानी है—एक दिन राजाका खज़ाना
गर्धोर नदकर जा रहा था । संयोगवश उनमेंसे एक
गधा भरदरके खेतमें घुस गया और चरने लगा । दूसरे
दिन खेतके मालिकने आकर देखा, कि एक गधा खेतमें
खड़ा कान हिला रहा है । पास आकर देखा तो उसपर
रुपये लदे पाये । उसने सब रुपये तो लेकर अपने घरमें
रख लिये और गधेको मार भगाया । इसपर उसने उक्त
मसल कही ।

जो कथीर काशीमें मरि हैं, रामहिं कौन निहोरा—
(पू०) हिन्दुओंका ऐसा वि्वास है, कि कामीमें
मरनेसे मुक्ति होती है, उसमें ईश्वरका कोई पहरान
नहीं । जब कोई आदमी किसीसे कुछ कामके
लिये सहायता मांगने जाय और वह “इसमें क्या
है तुम हीं कर लोगे” ऐसा कहकर टाल दे तब यह
मसल इस अभिप्रायसे कही जाती है कि “अगर
मुझसे ही हो जाता तो तुमारे पास क्यों आता ।”

जो फरनी समुझे प्रभु भोरी, नहिं निस्तार कल्प
शत कोरी—ईश्वरके प्रागे अपनी अधीनता प्रगट
करना है ।

जो करे लिखनेमें शलती, उसकी धैली होगी
हलकी—(व्य०) रोकड़ लिखनेमें शलती न करनी
चाहिये ।

जो काम हिकमतसे निकलता है वह हुकमतसे
नहीं निकलता—स्पष्ट ।

जो कोई कलपाय है, सो कैसे कल पाय है?—
जो दूसरोंको सताता है उसे भान्ति नहीं मिलती ।
जो औरको कल देवेगा, वह भी सदा कल पावेगा,
कल देवेगा कल पावेगा, कलपायेगा कलपायेगा ।”

(प्रचौर)

काह कलपाय है सो कैसे कल पाय है (यम चानन्द)

जो कोई खाय चनेका दूँक, पानी पीवे सो सो
घूँट—चने खानेसे प्याम बहुत लगती है ।

जो कोई खाय निवाहके ज्वार, मूल घने वह मूढ़
गँवार—जो जन्म भर ज्वार खाता रहता है वह सदा
गँवार बना रहता है क्योंकि ज्वार बहुत मोटा
अनाज होता है ।

जो क्लोसत वैरी मरें, मन चितये धन होय,
जलमें घी निकसत लगे, तो रूखी खाय न कोय-
सब काम यदि अनायास हो जाय तो उसके लिये
कोई परिश्रम न करे ।

जो खुशामद करे खलक उससे सदा राज़ी है ।
सच तो यह है कि खुशामदसे खुदा राज़ी है—
(नज़ीर) खुशामद बड़ी चीज है और तो क्या
खुशामदसे ईश्वर भी राज़ी हो जाता है ।

जो गँवार पिंगल पढ़े, तीन वस्तुके हीन । बोली
चाली बैठकी लीन बिभ्राता छीन—जब गँवार
श्रादमी व्यवहारकुशल नहीं होता, तत्र क० ।

जोगमें भोगकी आस—वेजोड़ कामपर क० ।

अनमिनती कीर्ति करत ताहीको चपचास,

जैसे जोगी जोगमें करत भोगकी आस । (इन्द)

जो गरजते हैं सो घरसते नहीं—डींग हांकनेवालों-
से काम नहीं होता ।

तुम कहते तो होके सुसूलके कीम हैं हम,

लेकिन मालूम है तुम्हारा दम खम ।

सच है यह मसूल जरा नहीं शक इसमें,

जो अन्न गरजते हैं बरसते हैं कम । (रंजूर)

जो गिरा खाईके अन्दर सो पड़ा फेरीमें—जो
भंगमटमें पड़ता है वह मुक्किलसे निकलता है ।

जोगीका लड़का खेलेगा तो सांपसे—संपरेका
लड़का सांपसे ही खेलता है ।

जोगी किसके मीत और पातुर किसकी नार—
ये दोनों अपने नहीं होते ।

जोगी किसके मीत कलन्दर केहिके साथ—
हिन्दू साधुओंको जोगी और मुसलमान फकीरोंको
कलंदर क० । ये दोनों किसीके साथी नहीं होते ।

(१) सुसाफ़िरने कीर्ति भी करता है मीत,
मसन है कि जोगी हुए किसके मीत ?" (नीरहसन)

(२) तजै मोड़ समता घर लाअ,

फिरै सुवारि बारि हित काअ ।

तामै निबधै नादिन रीत ।

जोगी फड़ो कवनके मो । (छट नायक)

(लो० २० की०)

जोगीकी सी फेरो—गुहब्यती श्रादमी जय कम
आने जाने लगता है, तत्र क० ।

जोगीको पैल बला—जोगीको पैल दिया जाय तो
उसके लिये वह बला हो जाता है ।

जोगी-जुगत जानी नहीं, कपड़े रंगे तो क्या
हुआ ?—विना गुण सीखे केवल भेष बनानेसे काम
नहीं चलता ।

जोगी जोगी लड़ें खप्पोंको हानि—(१) क्योंकि
उनके पास और है ही क्या । नज़्ज़ोंकी लड़ाईमें
विशेष हानि नहीं होती । बड़ोंकी लड़ाईमें गरीबकी
हानि होती है ।

खल: करोति दुर्बलं नूनं फलति साधुः । (सं०)

जोगी था सो उठ गया आसन रही भभूत—
जोगी=आत्मा । श्रादमीके मरनेके पीछे उसकी
कीर्ति रह जाती है ।

जोगी बड़े तो तूँया घोवै—जिस चीजका अभाव
होता है, लोग उसीको पैदा करनेकी चेष्टा करते हैं ।

खलि घन चपवन पति किरसान,

काटि करै तहँ खेती धान ।

नारि सोच कछो सोच सुघोवै,

जोगी बड़े तो तूँबा घोवै । (चतुसपना)

(लो० २० की०)

यह देखकर कि जो घना जङ्गल था उसी किरसानका
पति खेती करनेवाला काटकर वहाँ धानकी खेती करता
है । फिर सोचकर कहने लगे कि सच बात है जहाँ
जोगी लोग बहुत बढ़ जाते हैं वहाँ लोग तूँबाकी ही
बोते हैं । यहाँ पहला वाक्य तो सूचन कराता है कि
घना जङ्गल कटनेसे संकेत स्थान मट ही गया इसलिये
उसी चिन्ता हुई कि अब नायककी कहाँ समागम होगा ।
दूसरा वाक्य धैर्यावलम्बनके लिये है ।

जोगी मारे छार हाथ—गरीबके मारनेसे कोई लाभ
नहीं ।

जो गुड़ खाय सो कान छिदाय—कान छिदावते
समय लड़कोंको क० ।

जो गुड़ दीन्हें ही मरे, क्यों बिप दीजे ताहि—
दे० "गुड़-दिये मरे"

जो चढ़ेगा, सो गिरेगा—जो काम करेगा तो कभी
हानि भी होगी । जब कोई नुकसान देता है तो उसे
हिम्मत बंधानेके लिये क० । जानकारसे ही भूल
होती है अनाड़ीसे नहीं । साधारणतः कहा जाता

है कि जो चढ़ेगा वही गिरेगा, जो लिलेगा वही भूलेगा, जो कुम्ती लड़ेगा वही पछड़ा जायगा ।

गिरते हैं सब सवार ही मैदाने जङ्गमें,

वह तिलक का गिरिगा ओ घुटनों के बल चलें ।

जो चप चपकर आंखें भ्रूपावे, वह क्या रणमें सेल चलावे — ब्यालसी आदमियोंपर क० ।

जो खोरी करता है, वह मोरी भी रखता है—

जब दुरा काम करनेवाला अपने वधावके लिये भूट योत्ता है, तब क० ।

जो जल पाइ लगत ही बरसे, नाज नियार विन कोई न तरसे—(क०) अथाइके प्रारंभमें पानी बरसनेसे फसल अच्छी होती है ।

जो जाय कलकत्ते वह खे खाय अलबत्ते—

खे=(१) विष्ट । (२) नावका खेना । (१) जो कलकत्ते जाता था उसे ग श्रवय्य खाना पड़ता था, क्योंकि पहिले जब कलकत्तेमें पानीकी कल नहीं थी तब तमाम शहरका मैला गंगामें बहाया जाता था और वही पानी सबको पीना पड़ता था इसलिये यह मसल बनी है (२) कलकत्ते जाता है तो कमा खाता है क्योंकि यह बड़े व्यापारकी जगह है ।

जो टका देगा, उसका लड़का खेलेगा—

इसपर कहानी है—कोई मनुष्य परदेश जाता था, उसे सबने फारनाइय दी और एक बादमीने दो पैसे (टका) देकर कहा, 'इसका भुनभुना खे भाना' । उसने कहा "तेरा ही लड़का खेलेगा" ।

जो टट्टू जीतें संग्राम, तो क्यों खरखें तुरकीके

दाम—जब कोई छोटे कर्मचारीके जरिये अफसरका काम कराया जाय और वह न कर सके, तब क० ।

जोड़ जोड़ मर जायंगे, माल जमाई खायंगे,

जमाई भी न होगा तो खालसे लग जायंगे—

(पं०) कँजूस आदर्मापर क० । महाराज रणजोतसिंहके समयमें जब कोई बेवारिस मरता था, तब उसका धन खालसा सरकारमें जप्त हो जाता था ।

ओ जो बड़ीव कुट्टम जर ओइके मरेगा,

'या खाविया जमाई या खालसे लयेगा' ।

तेरा तो है वही ओ राई, सुदामे देना,

खाता खिलाता चंघता नू भी सदा रड़ेगा ।

दिलकी खुशीके खातिर चख डाल माल धनकी
गुर मर्द है तो भागिक कौड़ी न रख कफूनकी"।

(मजीर)

जो तिल हदसे ज़्यादा हुआ तो मस्ता हुआ—

हदसे ज़्यादा धर्म करनेसे भी अधर्म होता है ।

चेहरेपर तिलका होना अच्छा माना जाता है और मस्ता होना बुरा है ।

जोतिसी ग्रह पीड़ा कहे, वैद वतावे रोग—

जिसका जो काम है वही करता है ।

जो तू ही राजा हुआ अपना सुख मत ठान, फगाड़

और फ़ज़ीरके दुख सुखपर कर ध्यान—स्पष्ट ।

जो तैरेगा, सो डूवेगा—जो कुछ काम करेगा उसीसे

मूल भी होगा ।

जो तोको कांटा चुचे, ताहि योइ तू फूल । तोहि

फूलको फूल है, चाको हैं तिरशूल—बुराई करने-

वालेके साथ भलाई करनेके लिये क० ।

जो तोलों कम, सो मोलों कम—जो चीज़ तौलमें

कम होती है उसका दाम भी कम होता है ।

जो दिन जात अनन्दसों जीवनको फल सोय—

देखो, 'जीवनके दिन' ।

जो दूसरेके लिये कुआं खोदे उसके लिये खाई

तैय्यार है—स्पष्ट । औरोंका बुरा करनेवालोंका स्वयं

बुरा होता है ।

श्वन सुन्धी नयनन लखी, धामें संगय माहिं ।

शुभ ओ खोदे बानहीं, परे बागु तेहि माहिं । (हन्द)

जो देखा, सो पेखा—दोनों एक ही बात है ।

जो धन जाता देखिये, तो आधा दीजे घांट—

नष्ट होती हुई संपत्तिमेंसे एकचत्तके बचा लेना चाहिये

बनि भावे निरधर करि, तिय हीतिन सौ घाट ।

ओ धन जाते जानिये, सो धन दीजे घांट । गिधा ।

(ली० २०, की०)

जो धरतीपर आया, उसे धरतीने खाया—

जो पृथ्वीपर जन्म लेता है वह पृथ्वीपर ही मरता

है, इसीसे इसका नाम मृत्युलोक है ।

सुख पाके भर गया, कोरे दुःख पाके भर गया ।

जीता रचा न कोरे, पर एक भाके भर गया । (मजीर)

जो धावे सो पावे, जो सोवे सो खोवे—जो मेहनत करेगा वही कमावेगा और जो आलस्य करेगा वह धरका भी खोवेगा।

जो नहिं करहिं रामगुन गाना, जीह सो दादुर जीह समाना—(तुलसी) स्पष्ट।

जो निकले सो भाग धनीके—(व्य०) जो कुछ मिले सो मालिकका भाग अर्थात् हमें उससे क्या ? जो नौकर तनसग नहीं होता, वही यह मसल कहता है।

जो परनाला सोई मोरी—दोनों एकसे ही हैं। जब दोनों चीज़ें खराब हों, तब क०।

जैसे निबरल वैसे टोरी, जो परनागा सोई मोरी।
दोनों का ही पंग अचोरी, होली है भई चीनी है।

(बाणभक्तानन्द गुप्त)

जो पहिले मारे सो मीर—पहिले मारता है सो जीतता है।

जो पारससे कांचन उपजे सो पारस है कांच, जो पारससे पारस उपजे सो पारस है सांच—महात्मा वही है जो दूसरेको अपने समान कर ले।

जो पियाज़ काटेगा सो आप रोवेगा—जो दूसरेको कष्ट देगा उसका फल उसीको भोगना पड़ेगा। प्याज़में भांक बहुत होती है, आंख तक पहुंचनेसे आंखोंसे पानी निकल आता है।

जो पूत दरवारी भये, देव पितर सबसे गये—जो सरकारी नौकरी करते हैं वे देव पित्रोंके कामके नहीं रहते अर्थात् अज्ञानोंकी सोहबतसे उन्हें अपने धर्मपर निष्ठा नहीं रहती; ऐसा ही कहर हिन्दुओंका स्थाल है।

जो पैसेकी हंडिया लेता है, सो भी ठोक बजाकर लेता है—(व्य०) जांचकर माल लेनेपर क०।

जो फल चखा नहीं वही मीठा है—जो चीज़ नहीं मिलती उसीपर जी चलता है।

जो फलेगा सो भड़ेगा, जो वलेगा सो बुतेगा—दुनियांके स्वभाव तथा ज़िन्दगीके उतार चढ़ाव पर क०।

धरका स्वभाव यही तुलसी

नी फरा सी भरता भी मरा सो बुवाना। (तुलसी)

जो बरसेगी स्वांत बिसांत, चले न चरखा बजे न तांत—स्वांत नज़्जमें वर्षा होनेसे रईकी खेती नष्ट हो जाती है—“जो बरसेगी स्वांती, रहंटा चले न तांती” ऐसा भी क०।

जो बहुत करीब सो ज़्यादा रफ़ीव—घर हीके लोग दुरमन होते हैं।

जो वामनकी जीभपर सो वामनकी पोथीमें—जब द्राघाण लोग अपने मतलबकी जैसी चाहें वैसी व्यवस्था शास्त्र देखकर देते हैं, तब क०।

जो वामनकी पोथीमें सो यारोंकी ज़वानपर—ऊ० दे०।

जो बिंध गया सो मोती, रह गया सो सीप—जो काम पूरा हो जाय वही काम है जो अधूरा रह जाय सो कुछ नहीं।

जो बिन सहारे खेले जूआ, आज न मूआ कल मूआ—स्पष्ट। जुआरियोंपर क०।

जो बिल्ली पहिरे दस्ताना तो चूहेको पकड़े कौन—जब किसी काम करनेवालेके काममें ऐसा अडग लगे कि उसका काम रुक जाय, तब क०।

जो वैरी हों बहुतसे अरु तू होवे एक। मीठा बनकर निकल जा यही जतन है नेक—स्पष्ट।

जो घोले, सो कुंडा खोले—जो पुकारनेसे बोलता है वही कुंडा खोलता है। जब घरके मर्द बाहर चले जाते हैं तब खियां भीतरसे कुंडा बंद कर लेती हैं, जिसमें कोई चोर न घस आवे, जब मर्द बाहरसे आता है तो पुकारता है, जो पहिले उसका जवाब देती है वही प्रायः कुंडा खोलने जाती है, जो सोई या मटिआये, पड़ी रहती हैं, उन्हें नहीं जाना पड़ता। जो काम बनानेकी सलाह दे उसीसे वह काम करनेको कहा जाय, तब क०।

जो बोले सो घोको जाय—ऊ० दे०। जो सलाह दे उसी के सिंर पड़े।

इस मसलपर कई कहानियां हैं। (१) एक दिन चार मनुष्योंने मिलकर साममें खिचड़ी बनाई। जब वे खाने बैठे तो एकने कहा कि बिना घोके खिचड़ीमें खाद नहीं होता। इसपर तीनों बोल उठे, कि आप ही घो ले आइये तो डाल दें। यह सुन उसने चंपरोदा मसल

कही। (२) चार सूत्रों ने एक साथ मिलकर रमोई बनानेकी ठाणी। चारोंमेंसे धी कौन लावेगा, इस बातपर आपसमें झगड़ा होने लगा। उन्होंने यह नियम किया, कि जो पहले बोलीगा उसीको धीके लिये जाना पड़ेगा। जब वे चारों मौन राधे बैठे थे, एक पहरेवालने उनसे पूछा, "तुम लोग कौन हो, कहांसे भाये हो और क्या करते हो?" अपने प्रश्नका उत्तर न पाकर सिपाहोंने उन लोगोंको गिरफ्तारकर चालान कर दिया। अदालतमें मजिस्ट्रेटके पूछनेपर भी जब उन्होंने कुछ जवाब न दिया, तो उन्हें कोड़े लगानेका हुक्म हुआ। उनमेंसे एक, जो कोड़ोंकी मार न सह सका, झोरसे रोने लगा। 'तब बहू लोगो' बोल लडके कि तुम्हेंकी धीके लिये जाना पड़ेगा। जब यह हाल हाकिमको मालम हुआ तो उन्होंने उनको मूर्ख और पावसी जानकर छोड़ दिया।

जो भादोंमें घरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय—(क०) भादोंमें वर्षा होनेसे अकाल पड़नेका डर नहीं रहता।

जो मासे सिवा चाहे सो डायन—सबसे अधिक स्नेह माताका ही होता है। जब कोई उचितसे अधिक चाहना दिखावे तो समझना चाहिए कि कुछ दालमें काला है।

जो मेरे सो तेरे, काहे दांत निपोड़े—जब कोई किसीका ऐय देखकर हसे और वही ऐय उसमें था उसके घरवालोंने भी हो, तब क०।

इसपर एक कहानी है। एक दिन कोई भारतीय रमची खुले स्थानमें गंगी छोकर खान कर रही थी। एक यूरोपियन उसी देख देखकर बहुत खुश होता था। इसपर उस स्त्रीने उक्त मसल कही, जिसका अभिप्राय यह है, कि जो चीज तू मेरेमें देखता है वही तेरी मा बहनोंके पास भी है, तब क०। इया दांत निपोवता है।

जो मेरे हैं सो राजाके नहीं—अभिमानी मनुष्यपर क०।

जो में देसा जानती, प्रीत किये दुख होय। नगर डिंडोरा फेरती, प्रीत न कीजो कोय—स्पष्ट।

झोरकी लाठी सिरपर—जबवंस्तकी लाठी सिर ही पर पड़ती है।

जो रक्षक, वही भक्षक—जब रत्नमाला ही चोरी करे

वा विश्वासी ही विषवासयात करे, तब क०।

रचकी यन भक्कः! (सं०)

झोर थोड़ा गुस्सा बहुत मार खानेकी निशानी—स्पष्ट।

झोर न जुलम अक्लकी कोताही—मूर्खपर कही जाती है जो बिना झोर जुलमके भी अधिक कष्टदायक होता है।

झोर बादशाह और दांव घड़ीर—कुमती लड़नेवाले कहते हैं। यद्यपि झोर बादशाह है तथापि बिना दांव घड़ीरके उसका काम अच्छी तरह नहीं चल सकता।

जोरुका धयला बेंचकर तंदूरी रोटी खाई है—(मु०) स्वार्थी मनुष्यको क०।

जोरुका मरना और जूतीका टूटना बराबर है—क्योंकि पुरानी हो जानेसे तुलत नई मिल जाती है। हाई घर खचियोंमें यह मसल बहुत कही जाती है; क्योंकि उनका कोई लड़का जब माजू होता है तो तुलत उसका दूसरा ब्याह हो जाता है।

जोरुका मरना घरका खराबा—खी मरनेसे घर विगड़ जाता है।

जोरु किसकी, जो पास रखे उसकी—खीको जो साथ रखता है उसीकी होती है।

जोरु खुसमकी लड़ाई क्या?—घड़ीमें लड़ाई घड़ीमें मेल होता ही रहता है।

जोरु चिकनी मियां मजूर—जब किसी गरीबकी खी शौक्रीन हो, तब क०।

जोरु टटोले गठरी और मां टटोले अंतड़ी—जोरु यही देखती रहती है कि मेरे पतिके पास कितना धन है और मा यही देखती रहती है कि मेरे लड़केका पेट भरा है वा नहीं। तात्पर्य यह है कि जोरु धन चाहती है और मा अपने लड़केकी तन्दुरुस्ती।

जोरु न जाता अल्लामियांसे नाता—छड़े थादमीको कही जाती है जिसका कोई न हो।

जोवन गया तो भल भयो सिरसे गई बलाय। जने जनेको रुठनो हमपर राहो न जाय—बूढ़ बेर्यामोंका कहना है।

जोवन था जव रूप था, गाहक थे सब फोय ।
जोवन रतन गंवायके, घात न पूंछे फोय—
स्पष्ट ।

जो घर देख ताप मुझे आवे, सो ही घर मुझे
बपाहन आवे—जिस कामसे नफरत हो वही काम
यदि करना पड़े, तय क० ।

जो साधनमें बरखा होवे, खोज कालका यित्कुल
खोवे—(क०) श्रावणके महीनेमें बरसा हो तो
अकाल पड़नेका डर नहीं रहता ।

जो सिर उठाकर चलेगा सो ठोकर लायेगा—
जब कोई श्रादमी घमण्डसे बिना समझे कोई काम
करता है और उससे हानि होती है, तय क० ।

जो सिर धरि महिमा सही, लहियत राजा राउ ।

प्रगटत जड़ता थापनी, मुकुट सु पहिरत पाउ—
(विहारी) जो गुणियोंका निरादर करते हैं वे अपनी
मूर्खता प्रकाश करते हैं ।

जो सुख छज्जूके चौबारेमें, सो बलख न बुखारेमें
जो आराम अपने घरमें है वह दूसरी जगह नहीं है ।
दे० “जननी जन्मभूमिश्च ।”

जो सुत्थन सिलाता है, वह भूतनेको रास्ता
रख लेता है—दे० “जो चोरी करता ।”

जो हरदी जरदी तजे, तजे खटाई आम । तो
भलील सीलहिं तजे, आंगुन तजे गुलाम—

नीच जब अपनी नीचता नहीं छोड़ता, तय क० ।

जो हांडीमें होगा, सो रक्ताधीमें आयेगा—
जो मनमें होगा वही मुहसे निकलेगा ।

जो हाथी अंकुश तजे, औ घोड़ा तजे लगाम ।
जो भलील सीलहिं तजे, तो आंगुन तजे गुलाम
दे० “जो हरदी जरदी ।”

जौकमें शौक दस्तूरीमें लड़का—छशीमें खुशी
और मुफ्तमें लड़का । जब शौकके लिये कोई काम
और उसमें लाभ हो जाय, तय क० ।

जौको गये सतुआनीको आये—(५०) एकसे
ज्यादा मांगनेवाले पर क० ।

जौ लौं तेल प्रदीपमें, तौलौं जोति प्रकाश—
स्पष्ट

जौहरको जौहरी पहचाने—जिसका काम उसीसे
होता है ।

जौ हैं खेत, लला हैं पेट, मूड़नके दिन देखो आय
स्पष्ट । काम होनेके पहिले ही जो उसके नतीजेका
शुमार बांधता है, उसे क० ।

ज्ञान बड़े सोचसे, रोग बड़े भोगसे—विचारते
रहनेसे ज्ञान और भोग भोगते रहनेसे रोग बढ़ता
ही जाता है ।

ज्यादा जी कर क्या आकबतके घोरिये समेटोगे ?
(मु०) उस बड़े मनुष्यको कहते हैं जिसको जीनेकी
इविस ज्यादाह हो ।

ज्यों केराके पातमें, पात पातमें पात । त्यों
ज्ञानीकी बातमें घात घातमें घात—बातकी करा-
मातपर क० ।

ज्यों ज्यों कंचन ताइये, त्यों त्यों निर्मल होय—
सज्जनपर ज्यों ज्यों दुःख पड़ता जाता है त्यों त्यों
उसके गुण प्रकाश होते जाते हैं ।

ज्यों ज्यों वाय बहे पुरवाई, त्यों त्यों अति दुख
घायल पाई—पुरवेया हवा चलनेसे घायल श्रादमीके
घावोंमें दर्द होने लगता है इसलिये यह मसल
बनी है ।

ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय—
(ध्य०) जब किसी श्रादमीपर कर्ज़ बहुत हो और
वह उसका ब्याज़ तक न दे और कर्ज़ बढ़ता ही
जाय, तय क० ।

किरह बिधा दादी बहुत, नयन गौर ते जोर ।

ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय । (इन्द)

अति बड़ मतकर बड़ बड़े बात न करि के कोध,

ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय । (इन्द)

ज्यों ज्यों मुरगी मोटी हो त्यों त्यों दुम सुकड़े—
जब किसी कंजसके पास धन बढ़ता जाय और साथ
ही उसकी कृपणता भी बढ़ती जाय, तय क० ।

ज्यों ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों त्यों मारा सारा
गांव—अत्याचारी शासनकर्त्तापर क० ।

ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये कोध—
पेवीके पेयोंको दिखानेसे उसे बुरा लगता है ।

दित्तकी कश्चिये न तिष्ठिं जो नर होय अशोध ।

ज्यों नकटेकी आरसी, होत दिखाये कोध । (इन्द)

ज्यों भुजंग गन संग तऊ, चन्दन विप न धरन्त—
जो सबे साथ हैं वे असाधुओंकी संगतमें रहकर भी
नहीं विगड़ते ।

ज्यों सपने सिर फाटे कोई, बिन जागे दुख दूर
न होई—मनुष्य जयतक मोह-जालमें फंसा रहता है,
तयतक दुःख ही भोगता रहता है और जय ज्ञान
प्राप्त होता है, तब वह छली हो जाता है ।

भ

भगड़ा भूँठा कब्जा सबा — अधिकार ही सबा है
क्योंकि कानूनसे लड़नेपर भी लोग हार जाते हैं ।

भगड़ेकी तीन जड़, जून जमीन जर—दे० “जर
जमीन”

भटपटकी घानी, आधा तेल आधा पानी—
जल्दीका काम अच्छा नहीं होता ।

भट मंगनी पट ब्याह—तुरत फुरत काम करनेपर क० ।

भड़वेरीका कांटा—जो ऐसा चिमटे कि उससे
पीछा लुझाना मुश्किल हो, उसे क० ।

भड़वेरीके जङ्गलमें बिल्ली शेर—दोयी जगहमें
छोटे ही बड़े होते हैं

भांसी गलेकी फांसी, दतिया गलेका हार,
ललितपुर ना छाड़िये, जयलग मिले उधार—
स्पष्ट है । ललितपुरमें रुपयेका देन लेन बहुत
होता है ।

भाड़ थिछाई कामली, और रहे निमाने सोय—
फकीरोंकी उक्ति है ।

भाड़ भी बनियेका वैरी है—बनियेसे सब बुरा
मानते हैं ।

भाड़ों फूकों रक्षा करों, दई लै जाय तो मैं क्या
करों—होनहार ही बलवान है उसके सामने पुण्यार्थ-
की कुञ्ज नहीं चलती ।

भिड़की तो मुद्दतसे मसब्यात हो गई, गाली
कमो न दी थी सो अय यात हो गई । घाक्री
है मार खाना सो आजकलके धीच, सुन लोगे
उसे तुम भी के औफात हो गई—जब दिनोंदिन
आइमीका मान घटता जाता है, तब क० ।

बो रफ्त तः रफ्त तः इकमें वैपावद दूये,

पक्षि से आप पावसे तुम तुमसे रू हवे ।

भुके कोई उससे भुक जाय, रुके कोई उससे
रक जाय—स्पष्ट ।

होय मगबर तापे दूने मगबरी कीजे,

सबू बने चले तापीं लघुता निशचिये । (बोधा)

भूँठ फहना और जूठा खाना धराधर ही—स्पष्ट ।

भूँठके पाँव नहीं होते—भूँठा आइमी बहसमें नहीं
टहरता ।

भूँठ तितोही थोलिये ज्यों बाटेंमें नोन—स्पष्ट ।

भूँठ न थोले तो पेट भफुर जाय—भूँठको क० ।

भूँठ थोलना और छे खाना धराधर ही—स्पष्ट ।
छे=विद्या ।

भूँठ भूँठ ही ही सच सच ही ही—स्पष्ट ।

सामान्या दुकिया सम कैसं, चंतर कीच जलन मधि जंभे ।

कई पखलो बुधिवर पांच, भूँठ सो भूँठ सांच सो सांच ।
(लो० १० की०)

भूँठ थोलनेमें सरफा धया ?—भूँठथोलनेमें किरा-
यत क्या ? भूँठको क० ।

बोली तिथा लखी सुइमार, ब्रै ही शेर चारको भार ।

सखियन इंचिके गाया कइ, कइसे भूँठ तो सरफो कइ ।

भूँठ साँचका फुर्क यों जैसे रज औ मोर—
भूँठ और सचमें रात दिनका अन्तर है ।

भूँठा जूठनसे घुरा जो सोनेका होय—स्पष्ट ।

भूँठा मरे न शहर पाक होय—भूँठसे शहर गंदा
होता है ।

भूँठो तो होती नहीं कभी भी साँची घात, जैसे
टहनी टाकमें लगे न चौथा पात—स्पष्ट ।

भूँठी घात घना ले, पानीमें आग लगा ले—
भूँठ थोलना ऐसा है जैसे पानीमें आग लगाना ।

भूँठका मुँह काला सबेका थोलवाला—जब
भूँठा हारता है और सचा जीतता है, तब क० ।

भूँठकी कुछ पत नहीं सजजन भूँठ न थोल ।
लाखपतीका भूँठसे दो कौड़ी हो मोल—भूँठका
विग्रास नहीं होता ।

भूँठकी नाच मन्धारमें दूये—स्पष्ट ।

जोवन था जब रूप था, गाहक थे सब फोय ।
जोवन रतन गंवायके, यात न पूछे फोय—
स्पष्ट ।

जो घर देख ताप मुझे आवे, सो ही घर मुझे
ब्याहन आवे—जिस कामसे नफ़रत हो वही काम
यदि करना पड़े, तब क० ।

जो साधनमें घरखा होवे, खोज फालका यित्कुल
खोवे—(क०) श्रावणके महीनेमें बरसा हो तो
अकाल पड़नेका डर नहीं रहता ।

जो सिर उठाकर चलेगा सो ठोकर खायेगा—
जब कोई आदमी धमकसे बिना समझे कोई काम
करता है और उससे हानि होती है, तब क० ।

जो सिर धरि महिमा सही, लहियत राजा राउ ।
प्रगटत जड़ता आपनी, मुकुट सु पहिरत पाउ—
(विहारी) जो गुणियोंका निरावर करते हैं वे अपनी
मूर्खता प्रकाश करते हैं ।

जो सुख छज्जूके चौबारेमें, सो यलख न बुखारेमें
जो आराम अपने घरमें है वह दूसरी जगह नहीं है ।
दे० “जननी जन्मभूमिश्च ।”

जो सुत्थन सिलाता है, वह मूतनेको रास्ता
रख लेता है—दे० “जो घोरी करता ।”

जो हरदी जरदी तजे, तजे खटाई बाम । तो
असील सोलहिं तजे, ओगुन तजे गुलाम—
नीच जब अपनी नीचता नहीं छोड़ता, तब क० ।

जो हांडीमें होगा, सो रक्षाभीमें आवेगा—
जो मनमें होगा वही मुहसे निकलेगा ।

जो हाथी अंकुश तजे, औ घोड़ा तजे लगाम ।
जो असील सोलहिं तजे, तो ओगुन तजे गुलाम
दे० “जो हरदी जरदी ।”

जौकमें शौक दस्तूरीमें लड़का—बुरीमें खुशी
और मुफ़्तमें लड़का । जब शौकके लिये कोई काम
और उसमें लाभ हो जाय, तब क० ।

जौको गये सनुआनीको आवे—(प०) हकसे
ज्यादा मांगनेवाले पर क० ।

जौ लौं तेल प्रदीपमें, तौलौं जोति प्रकाश—
स्पष्ट

जौहरको जौहरी पहचाने—जिसका काम उसीसे
होता है ।

जौ हैं खेत, लला हैं पेट, मूड़नके दिन देखो भाय
स्पष्ट । काम होनेके पहिले ही जो उसके नतीजेका
शुमार बांधता है, उसे क० ।

ज्ञान बढ़े सोचसे, रोग बढ़े भोगसे—विचारते
रहनेसे ज्ञान और भोग भोगते रहनेसे रोग बढ़ता
ही जाता है ।

ज्यादा जी कर क्या आक़शतके घोखिये समेटोगे ?
(मु०) उस धूड़े मनुष्यको कहते हैं जिसको जीनेकी
इविस ज्यादा हो ।

ज्यों केराके पातमें, पात पातमें पात । त्यों
ज्ञानीकी बातमें घात घातमें घात—घातकी करा-
मातपर क० ।

ज्यों ज्यों कंचन ताइये, त्यों त्यों निर्मल होय—
सज्जनपर ज्यों ज्यों दुःख पड़ता जाता है त्यों त्यों
उसके गुण प्रकाश होते जाते हैं ।

ज्यों ज्यों वाय बहे पुरवाई, त्यों त्यों अति दुख
घायल पाई—पुरवैया हवा चलनेसे घायल आदमीके
धावोंमें दर्द होने लगता है इसलिये यह मसल
यनी है ।

ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय—
(ध्य०) जब किसी आदमीपर कर्ज़ बहुत हो और
वह उसका ब्याज़ तक न दे और कर्ज़ बढ़ता ही
जाय, तब क० ।

विरह किया बाढ़ी बहुत, नयन नीर ते कोइ ।
ज्यों ज्यों भीजै कामरी, त्यों त्यों भारी होय । (हृद)
अति बड़ मतकर बड़ बड़े बात न करि है कोय,

ज्यों ज्यों मुरगी मोटी हो त्यों त्यों दुम सुकड़े—
जब किसी कंजसके पास धन बढ़ता जाय और साथ
ही उसकी कृपणता भी बढ़ती जाय, तब क० ।

ज्यों ज्यों लिया तेरा नाम, त्यों त्यों मारा सारा
गांव—अत्याचारी शासनकर्त्तापर क० ।

ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध—
पेदीके पेरोंको दिखानेसे उसे बुरा लगता है ।
द्वितह की कहिये न तिहिं जो नर होय शबोध ।
ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध ॥ (हृद)

ज्यों भुंजंग गन संग तऊ, चन्दन विप न धरन्त—
जो सबे साथ हैं वे असाधुओंकी संगतमें रहकर भी
नहीं बिगड़ते ।

ज्यों सपने सिर काटे कोई, यिन जागे दुख दूर,
न होई—मनुष्य जयतक मोह-जालमें फंसा रहता है,
तयतक दुःख ही भोगता रहता है और जब ज्ञान
प्राप्त होता है, तब वह छली हो जाता है ।

भ

भगड़ा भूँठा कूड़ा संघा—प्रधिकार ही सचा है
क्योंकि कानूनसे लड़नेपर भी लोग हार जाते हैं ।

भगड़ेकी तीन जड़, जून ज़मीन ज़र—दे० “ज़र
ज़मीन”

भटपटकी घानी, आधा तेल आधा पानी—
जल्दीका काम अच्छा नहीं होता ।

भट मंगनी पट ब्याह—दुरत फुरत काम करनेपर क० ।

भड़वेरीका कांटा—जो ऐसा चिमटे कि उससे
पीछा छुड़ाना मुश्किल हो, उसे क० ।

भड़वेरीके जड़लमें बिल्ली शेर—छोटी जगहमें
छोटे ही बड़े होते हैं ।

भाँसी गलेकी फाँसी, दतिया गलेका हार,
ललितपुर ना छाड़िये, जबलग मिले उधार—
स्पष्ट है । ललितपुरमें रुपयेका देन लेन बहुत
होता है ।

भाड़ बिछाई फामली, और रहे निमाने सोय—
फ़कीरोंकी उक्ति है ।

भाड़ भी बनियेका बैरी है—बनियेसे सब डरा
मानते हैं ।

भाड़ों फूकों रक्षा करों, दर्द लै जाय तो में क्या
करों—होगहार ही बलवान है उसके सामने पुरगार्थ-
की कुछ नहीं चलती ।

भिड़की तो मुद्दतसे मसावात हो गई, गाली
कभी न दी थी सो अथ बात हो गई । याक़ी
है मार खाना सो आजकलके बीच, सुन लोगे
उसे तुम भी के औकात ही गई—जब दिनोंदिन
आदमीका मान घटता जाता है, तब क० ।

बो रफ़्त, रफ़्त, रफ़्तमें बैपायद बुचे,

पदिले धे पाय पायसे तुम तुमसे दू डिये ।

भुके कोई उससे भुक जाय, रुके कोई उससे
रुक जाय—स्पष्ट ।

धोय मग़र तापे दूनी मग़री कौजे,

लघु हँ चले ताहीं लघुता निवाचिये । (नोवा)

भूँठ फहना और जूठा खाना घराघर है—स्पष्ट ।

भूँठके पाँच नहीं होते—भूँठा आदमी बहसमें नहीं
उहरता ।

भूँठ तितोही धोलिये ज्यों भाटेमें तोन—स्पष्ट ।

भूँठ न बोले तो पेट भफ़र जाय—भूँठको क० ।

भूँठ बोलना और खे खाना घराघर है—स्पष्ट ।

खे=विद्या ।

भूँठ भूँठ ही है सच सच ही है—स्पष्ट ।

सामान्य सुकिया सम कौंथे, बंतर कौच जलज मधि जँसे ।

कड़े पखानो दुधिवर पाँच, भूँठ सो भूँठ साँच सो साँच ।

(लो० २० कौ०)

भूँठ बोलनेमें सरफ़ा क्या ?—भूँठबोलनेमें किरा-
यत क्या ? भूँठको क० ।

बोकी तिया लखी सुज़गार, हँ ई रीर चारकी मार ।

सखियन संकिने गाया कछा, कड़ि है भूँठ ही सरफ़ी बघा ।

भूँठ साँचका फ़ुर्क़ यों जैसे रज औ मोर—

भूँठ और सचमें रात दिनका अन्तर है ।

भूँठा जूठनसे धुरा जो सोनेका होय—स्पष्ट ।

भूँठा मरे न शहर पाक होय—भूँठसे शहर गंदा
होता है ।

भूँठी तो होती नहीं कभी भी साँची बात, जैसे
टहनी ढाकमें लगे न चौथा पात—स्पष्ट ।

भूँठी बात घना ले, पानीमें भाग लगा ले—
भूँठ बोलना ऐसा है जैसे पानीमें भाग लगाना ।

भूँठेका मुँह काला सच्चेका बोलयाला—जब
भूँठा हारता है और सचा जीतता है, तब क० ।

भूँठेकी कुछ पत नहीं सज्जन भूँठ न बोल ।
लाखपतीका भूँठसे बी फौड़ी हो मोल—भूँठका
विश्वास नहीं होता ।

भूँठकी नाव मभ्रधरमें डूये—स्पष्ट ।

भूँटेकी क्या दोस्ती, लंगड़ेका क्या साथ; वह-
रसे क्या बोलना, गूँसे क्या घात—चारों ही
धेकार है ।

भूँटेके आगे सच्चा रो मरे—भूँटेके आगे सच्चा हार
मान लेता है ।

भूँटेको घरतक पहुंचाना चाहिये—भूँटेसे तब
तक बहस करे जबतक वह सब न बोले ।

भूँटे'घरको' घर कहै सच्चे घरको गोर, हम चाले
घर आपने लोग मचावे' शोर—संसारकी अनि-

त्यतापर क० ।

भूँटे जग पतियाय—(१) जब सच्चेकी बात नहीं
मानी जाती, तब क० । (२) भूँटे (मिथ्या)
संसारको लोग पतियाते हैं अर्थात् सच्चा करके
मानते हैं ।

भूँटे हाथसे कुत्ता भी नहीं मारता—कंजूसको क० ।

भूँठोंका वादशाह—बहुत भूँठोंको क० ।

भूँपड़ीमें रहे; महलोंका सुवाव देखे—असम्भव
कल्पना या उच्चाकांक्षापर क० ।

ट

टंगी रहे किं टके बिकाय—(व्य०) दाम आनेपर ही
बिकेगी, नहीं धरी रहेगी ।

पिय सनेह में यहतिय पागो, परतें मान करन बहुलागो ।

कहिथी लोग उल्लि व्यो गाव, टंगी रहै कै टकि बिकाय ।

टंगी रहै या तो टाँककर (सी कर) तब बिके ।

टंटा विपकी घेल है—स्पष्ट ।

टका व्याज धावाजी खोवै, रांडै खोवै हांसी ।

बालस नौद किसानै खोवै, चोरै खोवै खांसी—
स्पष्ट ।

टकामें टका और टकामें टका—जब पैसेवालोंके
पास पैसा आता है और दुःखियोंको दुःख और
सुकसान पहुंचता है, तब क० ।

टका सा जवाय दे दिया—साफ़ मुकर जानेपर क० ।

टका हर्ता, टका कर्ता, टका मोक्ष विंधायका,

टका सर्वत्र पूज्यन्ते, यिन टका टक टकायते—

(सं०) दुनियामें रुपयेसे ही सब काम निकलता है ।

टका करै कुलहल टका मिरदइ बजावै ।

टका चढ़े सुखपाल टका मिर छव धरावै ॥

टका माइ बरु बाप टका भाइनको भैया ।

टका माम बरु ससुर टका मिर साइ लहैया ॥

एक टके बिन टक टका छीत रहत मित रास दिन ।

नै ताल कहे विद्वान् सुनो धिक जीवन इक टके बिन ॥

टका हो जिसके हाथमें, वह बड़ा ही ज्ञातमें—

धनवानोंका सम्मान सर्वत्र होता है ।

टकेका सारा खेल ही—दे० "टका हर्ता टका कर्ता" ।

लाभके लिये अधिक खर्च करना । (२) सस्ती चीज़
खरीदकर जब उसकी मरम्मतमें असलसे भी ज्यादा
खर्च हो जाता है, तब क० ।

टकेकी मुर्गी छः टके महसूल—जब असलसे अधिक
व्यय होता है, तब क० ।

टकेकी लौंग बनियाइन खाय, कहो घर रहे कि
जाय ?—कंजूस बनियोंपर तांता है । जिस घरकी
मालकिन ज्यादा खर्च करती है उसका घर विगड़
जाता है ।

टकेके वास्ते मस्जिद ढाना—लोभके वश अनुचित
काम करनेपर क० ।

टके तीतर गैलापर, पांच रुपया भैलापर—(भो०)
जो चीज़ गरीबोंके लिये टकेकी है, वही चीज़ धमी-
रोंके लिये रुपयेकी है ।

टट्टड़ खोल निखट्टू आये—जब निखट्टू आदमी
रोब जमाता है, तब क० ।

टट्टीकी ओट शिकार—छिपकर घुरा काम करनेपर क०

(१) छेदिलकी दाँव घावमें मिजगाँसे चमयार ।

करवौ छे कम्द टट्टीकी भीफल शिकारका । (जौकी)

(२) खेलते फिरते हैं मैदाने जहाँमें सब शिकार ।

आइमें टट्टीके शाखों और इजायें परमला । (हाली)

टट्टू को कोड़ा और ताजीको इशारा—मूर्ख दंडसे
मानता है और समझदार इशारोंसे ही समझ जाता है ।

टट्टू जो मारें संग्राम, खर्चें बयों ताजीके दाम-
दे० "जो टट्टू"

का डर नहीं है। जब किसीके मनमें कोई ह्रास दर समा जाय जिसके समय वह कोई काम न कर सके, तब क०।

इसका निकास इस कहानीसे है—एक बूढ़ा सिपाही अपने दुबले-पतले टट्टू पर सवार हो कहीं जा रहा था। गमकी वह एक जगहमें जहां शेर भादि रिसक जानवर रहते थे, एक बुढ़ियाकी भोंपड़ीमें रुकने गया, और पूरने लगा—“यहां किसी बातका डर तो नहीं है।” बुढ़िया बोली—“हुजूर। डर तो किसी बातका नहीं है, है तो टपकेका डर है।” भोंपड़ीके पीछे एक शेर खड़ा खड़ा इस बातकी सुन रहा था। उसने समझा “टपका” कोई मुहंसे भी जबरदस्त जानवर है जिसके सामने मेरे डरकी कुछ परवाह ही नहीं की गई। संयोगवश भाभी रातकी पानी बरसा जिससे सिपाहीका घोड़ा खूँटेसे कूट गया। सिपाही भंभेरेमें घोड़ा खींचने गया तो उसके हाथ बाध पड़ गया। वह चले ही टट्टू समक बांधकर भोंपड़ीमें लौटाया और खूँटेसे बांध दिया। और भी “टपका” समक उससे कुछ न बोला। सुनह होते ही यह बात समाप्त फोन गई जिससे बड़े बड़े भादमी इस भावार्थे हय्यको देखने आये। राजाने उस बूढ़े सिपाही-को भ्रमंसा की और सुंफ नांगा इनाम देकर उसको फौजका कमान बना दिया।

टपका मित्रगुंसे लह होके जिगर आविष्कार।
एक मुहंसे इमो टपकेका डर था हमको। (जीक)

दहल करो फकीरकी देवे तुम्हें असीस, रैन दिना राजी रहो जुगमें विध्यावीस—स्पष्ट।

दहल करो मां-शापकी, हो सम्पूरन आश। यही दहलसू जो फिर, नरक उन्हींका वास—स्पष्ट।

दहल न टकोरी, लाओ मजूरी मोरी—मुफ्तद्वारों को क०।

दहलियेको दहल सोहे, वहलियेको वहल सोहे—जिसका काम उसीको शोभा देता है।

टांका पाना मिल गया—जब भगड़ा त हो जाता है, तब क०।

टांकीका घाव सहे तब ईश्वर—तकलीफ उठानेके बाद लाभ होता है। जो लोग तकलीफके इस्ते थपना नरु या प्रतिष्ठाको छोड़ देते हैं, उनको शिवाय कही जाती है।

टांकी यज्ञ रही है—मकान जल्दी तैय्यार हो रहा है टांग उठे ना, चढ़ल चाहे हाथी—जब कोई अपने शक्तिसे वाहर काम करना चाहता है, तब क०।

टांगकी जगह लड़केकी लाठी—जब किसी उप-योगी पदार्थके नष्ट हो जानेपर उसके बदले जैसे बने वैसे दूसरेके द्वारा काम चलाया जाये, तब क०।

टांगके नीचेसे निकाल दिया—जब किसीको अपने क्रावमें कर लिया जाता है, तब क०।

टांग पकड़कर लाये, और पूँछ पकड़कर धहा दिया—(व्य०) जब कोई रोजगारी माल लाते ही उसका निकास कर देता है, तब क०।

टांटेसे नाटा भला, जो देवे तुरत जवाय। वह टांटा किस कामका, जो घरसों करे खराब—(व्य०) टंटा करनेवालेसे नट जानेवाला श्रच्छा है क्योंकि वह घरसों भगड़ा डाले रहता है।

टांय टांय फ्रिस्स—जब काममें हुलड़ बहुत हो और काम कुछ न हो, तब क०।

टाट, कामला, दोलड़ा, तीनों जात गुलाम। जित चाहे तित बैठकर, तुरत करो विश्राम—(प्रा०) तीनों चीज़ें बड़े कामकी और टिकाऊ होती हैं।

टाट कामले घरमां घाले, याहर घतावे शाल दुशाले—फूटी शेरी मारनेवालोंपर क०।

टाटका लंगोटा नचावसे यारी—(च०) छोटा होकर बड़ोंकी मुसाहिबी करे, तब क०।

टाटकी अंगिया मूँजकी तनी, देख मेरे देवरा में कैसी बनी—(ज०) जब कोई औरत भद्दी पोशाक पहिनकर उसे दिखाती फिरती है, तब उसको नीचा दिवानेके अभिप्रायसे क०।

टाटकी अंगिया, मूँजकी बखिया—ऊ० दे०।

टाटपर पंचके सब बराबर, क्या अमीर क्या गरीब जातिमें छोटा बड़ा कोई नहीं, सब बराबर हैं।

टायर, टट्टू, गज, गऊ, पूत, नीत, धन, माल। कोई संग न जात है, जब ले जीउ निकाल—मरते समय कुछ भी साथ नहीं जाता। टायर भला न लांगड़ा, रुख भला ना भांगड़ा—लंगड़ा घोड़ा और कां देदार पेड़ घुरे होते हैं।

ढाल न भूखेको कभी, जो दे तुझे खुदा ।
आधीमेंसे पास जो, उसे बांटकर खा—स्पष्ट ।
ढाल वता उसको न तू, जिससे किया करार ।
चाहे बैरी होय वह, चाहे तेरा थार—वायदा
करके किसीसे ढालमडोल न करना चाहिये ।

ढालमटोला मत करे, किये वचन भुगताथ ।
जो नर वचनोंसे गिरे, वह पत देत गवांय—

(व्य०) वायदा खिलाफ़ीसे विश्वास घट जाता है ।

ढालीमें वहाली और चिट्टेमें मुंह फिट्टा—
(व्य०) थोड़ा देकर ढाल देनेपर क० । ढाली=अच्छली
चिट्टा=स्पया ।

टिक टिक घोड़ा खेलना—जो लड़के पढ़ते लिखते
नहीं बेकार मारे मारे फिर्ते हैं, उन्हें क० ।

'टिक टिक' समझे 'आ आ' समझे, कहे सुनेसे
रहे खड़ा । कहे कवीर सुनो भाई साधो, अस
मानससे बैल भला—सूखे और निवन्मे मनुष्यको क० ।

टिकुली सेन्दुर गैल तो खाने भी वजजर पड़व ?—

(प० ज०) शृङ्गारकी सामग्री गई तो क्या पेटभर
अन्न भी नहीं मिलेगा ।

टिड्डीका आना कालकी निशानी—(क०) टिड्डियों-
के उड़नेसे अकाल पढ़नेकी संभावना होती है ।

टीम टामकी पगड़ी बांधी, वह भी सड़का
जोरुका ! नेक पाकका चौका दीना, गोबर
गाये-गोरुका—मुसलमानोंका हिन्दुओंके प्रति ताना
है । गोबरका चौका लगा कर पवित्र होना ऐसा है
जैसे जोरुके दहेजमेंसे कपड़ा लेकर धांकी पगड़ी
बांधना । तात्पर्य यह है कि बिना आत्मशुद्धिके
पवित्रता नहीं आती ।

टुक जीया तो फिर क्या ?—(१) करना और न
करना बराबर है । (२) तलवारके नीचे दम लेना ।
जब कोई कठिन काम करनेके लिये हिम्मत करके
जाय और हाथ लगाते ही छोड़ दे, तब क० ।

टुक टुक करके मन भर खावे, तनक-वेगमा नाम
घतावे—(च०) नाम तो सखुमार वेगम है पर
थोड़ा करके मनभर खा जाती है ।

टुकड़ा तोड़ जवाय देना—(१) साफ़ मुक्त

(२) थोड़ेमें जवाय देना । (३) ऐसा जवाय देना
कि फिर खवाल न हो ।

टुकड़े खाये दिन वहलाये, कपड़े फाटे घरको
खाये—जब कोई ऐसा काम करे जिसमें केवल पेटभर
खानेको ही मिले और कुछ लाभ न हो, तब क० ।
टुकड़े टुकड़े काम चले तो मेहनत कौन करे—
आलसी और सुप्तजोरको क० ।

टुकड़े दे दे चछड़ा पाला, सींग लगे तब मारन
चाला—कृतघ्नको क० ।

टूट चांप नहिं झुरहिं रिसाने—(तुलसी) जब
किसीसे कोई काम बिगड़ जाय और फिर उसपर
क्रोध करता ही जाय, तब क० । तात्पर्य यह है
कि जो बिगड़ना था सो तो बिगड़ गया अब क्रोध
करनेसे नहीं छधर सकता । श्रीरामचन्द्रजीने परशु
रामजीसे कहा था ।

टूटत ही धनु भये विवाह—(तुलसी) जिस काम
या चीज़के अभावसे कोई काम अटका रहे और फिर
उसके मिलते ही पूराकर दिया जाय, तब क० ।

टूट न रख रे बालके, सखसे मिलकर चाल ।

टूटा ढोवर देत हैं, गांव गलीमें डाल—(उप०)
सबसे मिलकर चलो किसीसे बिगाड़ मत करो, जो
टूट (बिगाड़) करता है उसे लोग ऐसे त्याग देते हैं
जैसे टटी हांडी गलीमें फेंक दी जाती है ।

टूटले तेली, तो कमरमें अघेली—बिगाड़े तेलीकी
कमरमें अघेली ही रहती है । जब आदमीका दिन
खराब आता है, तब उसकी पूँजी सब निखल
जाती है ।

टूटीका क्या जोड़ना ? गांठ पड़े और ना रहै—

ट्टी चीज़ कभी जुड़ती नहीं, गांठ पड़ जाती है पर
टिकती नहीं । जब दो मिश्रोंका आपसमें आंतरिक
बिगाड़ हो जाय उस समय कोई मेल करनेकी चेष्टा
करे, तब क० ।

टूटीकी क्या वग्नी —सौतकी दवा नहीं ।

टूटीकी वृटी —जब जीनेकी कोई

आशा न

गंगा प साथ”

करने जाय जिते उससे कहीं अच्छे मनुष्य भी न कर सकते हों ।

टूटी दाढ़ बुढ़ापा आया, टूटी खाट दरिहर छाया
दाढ़ टूटनेसे बुढ़ापेका और खाट टूटनेसे दरिद्रका
आगमन समझना चाहिये ।

टूटी वॉइ गले पड़ी—वाँह जय टूट जाती है तब उसे
रस्सी वा पट्टीके सहारे गलेमें लटका लेते हैं । जय
कोई घरका आदमी वा रिश्तेदार बिगड़ा रहे और
उससे किसी तरह छुटकारा भी न हो, तब क० ।

टूटी है तो किसीसे जुड़ती नहीं, और जुड़ी है
तो कोई तोड़ सकता नहीं—बहुत बीमार आदमी-
को शान्त्वना देनेके लिये क० ।

टूटे टांग कि होय निवेड़ा—किसी कष्टसे छुटकारा
पानेके लिये क० ।

किसी सगुणके पैरमें दर्द होनेपर यह उपपत्ताल गया ।
यहाँ उसके पैरपर बहुत तेज तेज दवाइयाँ लगाई गईं ।
जिससे उसका दर्द और भी बढ़ गया । जब डाक्टर
साहबने उससे दर्दका हाल पूछा, तब उसने उपरोक्त
मसल कही ।

टूम कापड़े जिस घर पायें, एक छोड़ दस घैयर
वायें—टम वा टूम=गहना जैसे टूम छूटा । घैयर वा
मैयर=सी जैसे मैयरमानी । दोनों बातें ठेठ हिन्दी
के प्रसिद्धावरे हैं । अर्थ स्पष्ट है ।

टूम बिना घैयर है तैसी, बिन पानीकी खेती जैसी
स्पष्ट । टम और घैयरके लिये ऊ० दे० ।

टेंट आँखमें मुंह खुदीला, कहे पिया मोरा छैल
छवीला—स्पष्ट

टेंट, घरया, फालके मीत, खायें किसान और
गाधे गीत—(ऊ०) बुद्धिमें जड़ली फल ही खालक
किसान खुश रहते हैं ।

टंक उन्हींकी राखे साईं, गरब कपट नहिं
जिनके माहीं—स्पष्ट ।

टेंड जानि शंका सब काह, धक चन्द्रमा प्रसहिं
न राह—(तुलसी) टेढ़ेसे सब बरते हैं; यहाँतक कि टेढ़े
चन्द्रमाको राहु भी नहीं प्रसता । यह बचन श्री
रामचन्द्रजीने परछामसे कहा है, जय यह लक्ष्मण
की कष्टकियोंका उत्तर न देकर उनसे विवाद करने

लगे थे । 'जय कोई कष्ट स्वभाववालेसे तो डरके
मारे न बोले और शरीरको दयावे, तब क० ।

वाँके नर तें होत है, बन्द भीक सब लोय ।
नमत दुगीया चन्द काँ, पूरनचन्द न कोय ॥ (इन्द)

टेढ़ी खीर है—मुश्किल काम है । जय कोई मनुष्य
ऐसा काम करने जाय, जिसके करने लायक वह न
समझा जाय, तब कहते हैं कि यह काम करना टेढ़ी
खीर है अर्थात् तुम्हारे लिये बहुत मुश्किल है ।

इमपर एक कहानी थी है—किसी जगके पन्थे फकीरसे
एक मनुष्यने कहा, 'सुरदासजी ! खीर खाओगे ?'
उसने जवाब दिया, 'बाबा ! खीर कैसे होती है ?'
उत्तर मिला, 'सफ़ेद रंगकी ।' फकीरने पूछा, 'सफ़ेद
रंग कैसा होता है ?' उत्तर मिला, 'जैसा बगला ।'
फकीरने पूछा, 'बगला कैसा होता है ?' उसपर उस
मनुष्यने अपना हाथ टेढ़ा करके दिखाया कि जिसकी
पेछी गईन होती है । उस पन्थेने उसके टेढ़े हाथको
टटीबकी कहा, 'नहीं बाबा ! मैं ऐसी खीर नहीं
खाऊँगा, यह तो मरे गलेमें ही फंस जावेगी ।'

टेर टेरके रोवे, अपनी लाज खोवे—(ब्य०) अपने
घाटेको किसीसे न कहे; जो सबसे अपने बुद्धिसाम-
को कहा करता है उसकी साख जाती रहती है ।

टोटा कर दे मुहनु काला, टोटे बाल जगतदा
साला—(प० ब्य०) घाटा होनेसे मुँह काला होता है,
क्योंकि उसका दिवाला निकल जाता है और दिवा-
लिया सबका वनस होता है, क्योंकि उसे बहुतांका
देना रहता है जिसलिये वह हिकारतकी निगाहसे
देखा जाता है ।

टोटा, टामक, टोटक, छाने रहें न मूल । यूं
परघट हों जगत मां, ज्यूं लक्ष्मणकी धूल—
(मा०) घाटा, ढोल और फाखता (पिंकी) यह
छिपाये नहीं छिपते अपनेको आप ही प्रगट कर
देते हैं जैसे लक्ष्मणकी धूल ।

टोटा टाला ना टले, जय लग मिटे न लेख ।
साध कहें रे बालके, लाख यतन कर देल—
स्पष्ट

टोटे मारा बंजिया, धर जोगी दा भेप । हाँडे
भिक्षा मांगदा, घर घर देश विदेश—(प०) स्पष्ट ।
जो लोग देनेके बरसे साध हो जाते हैं, उनपर क० ।

ही होते हैं। जब किसी कुरूप स्त्रीको कुरूप पति मिले, तब क०। अक्सर कुरूप वेश्याओंपर क०। डायनको घधा सौंपना—किसीको जोखिममें डालना।

डायनको भी दामाद प्यारा—अपनी लड़कीके कारण।

डायन खाय तो मुंह लाल, न खाय तो मुंह लाल क्योंकि उसका मुंह ही लाल होता है। बदनाम मनुष्यपर क०। चाहे बुराकाम करे वा न करे बुराई उसीको मिलती है।

डायन वेटा वेटी दे कि ले—जब कोई बुरे आदमीसे भलाईकी आशा करता है, तब क०।

डायन भी दस घर छोड़कर खाती है—(ज०) दुष्टजन भी अपने पड़ोसियोंका लिहाज रखते हैं। जब कोई किसी अपने हीको उगता है, तब क०।

डायन भी अपने बच्चोंको नहीं खाती—अपने बच्चे सभीको प्यारे होते हैं।

नौ माया बँ लोख समाध, हीं प्रभु तुम दासनकी दास। लोक पखानों मनमें लाय, बाकिन हं निज सुत नहिं खाय।

डालका चूका बन्दर और वातका चूका आदमी फिर नहीं संभलता—जब कोई आदमी मौक़ेपर चूक जाय और उससे हानि उठाने, तब क०।

डालते देर नहीं सिरपर फोटवाल—जब कोई क्रूर करते ही पकड़ा जाय, तब क०।

डाघर डूबे जग तिरै, जगू डूबे डाघर तिरै—(क०) जब डाघर बरसातके कारण डूब जाता है, तब बहुत अन्न पैदा होता है और संसार सखी हो जाता है और जब संसारमें सूखा पड़ता है तब उस नीचो ज़मीनमें अन्न प्रचुर रूपसे होता है।

डिगै न शंभु सरासन कैसे, कामी बचन सती-मन जैसे—(हलसी) जब कोई चीज़ अडिग हो जाय अर्थात् हटाने न हटे, तब क०।

ढील डौल गुंयज, आवाज़ दर फ़िस्स—जो देखनेमें लय भोया ताज़ा, पर आवाज़ बहुत धीमी हो, उसे अथवा जिसका भरम बहुत और करतूत बहुत ही सामान्य हो, उसको क०।

दबरी भी काद दैत खिस्स, सफ़द विहाय बँडे डुका मुलगाय भाई डीलदार गुं बज आवाज़दार फ़िस्स।

डुग डुग वाजे बहुत नीकी लागे, नौआ नेग मांगे उठा वैठी लागे—(ए० ज०) जब नाई डुगडुगी यजाता है तो सुननेमें बहुत अच्छी लगती है, पर वह जब अपना नेग मांगता है तब बगलें भाँकते हैं। जो मज़ा लूटनेमें मुस्तद पर खर्च करनेसे दूर भागता है, उसपर क०।

डूयतेकी तिनकेका सहारा—डूयता आदमी तिनकेको भी पकड़ लेता है। जब किसी विपदप्रस्तको कूट भी सहारा मिलता है, तब क०।

उड़ गया याद खिजांसि आशियां, मुफ़की तिनकेका सहारा चाहिए। (दग्)

डूयां वंश कबीरका, जो उपजा पूत कमाल—जो मनुष्य अपने पूर्वजोंकी चाल वा धर्मको छोड़ देता है, उसपर क०।

इसका निजास इन बातोंसे है। कबीरने अपने पुत्र कमालको लड़कपनमें ही उपदेश दिया था कि सब मनुष्योंको अपना भार और सब स्त्रियोंको मा, बहिन और लड़कियोंके समान सम्भना चाहिए। •अनकमाल बालिग़ हुआ तो पिताने उसे विवाह करनेके लिये कष्ट। कमान बोला, संसारमें मुझे मा बहिन और देटी छोड़कर और कोई चीथी स्त्री नहीं दीखती जिससे मैं ब्याह करूँ। इसलिये उसने ब्याह ही नहीं किया और कबीरका वंश खोप ही गया। (१) कमाल कबीरके बचनोंका बहुत खंडन किया करते थे इसलिये कबीरने क्रोधित होकर यह बात कही थी। कष्टें कबीर दो नयें चढ़िये, एक बूड़े तो एके रहिये। कई कमाल दो नाव न चढ़िये, फटे जांच के बूड़े मरिये।

डूयो कंत भरोसे तेरे—(ज०) रूपट। जब किसीके भरोसेपर हानि होती है, तब क०।

तो हित हीं तजि दरै कुज रीति।
 तुष्ट सुधिह न लखै कष्ट प्रीति॥
 लोग उक्ति ज्यों सो गति मीरी।
 उबरो कंत भरोसों तेरो॥ (ख० र० कौ०)

डूबे कहीं उतराय चटगांय हीमें—(स्पष्ट)
 डूबेगा भाडू का भाटू, रात समयने देसे भाडू—

मांसे शय साय तीज सरि जाय बाप बाकी दैत नहिं

(मा० रा०) रातमें भाटू न देखे कानि।

डेढ़ ईंटकी मस्जिद जुदी ही घनाते—(मु०)

जो अपने ही मनकी करे वा सबसे निराली बाल चले, उसे क० ।

डेढ़ चावल अपने जुदे ही पकाते हैं—ऊ० दे० ।

डेढ़ पहोली रमतिला मिरजापुरकी हाट—जब कोई धादमी थोड़ा सा पदार्थ पाकर उसके लिये बड़े बड़े बन्धन बांधता है, तब क० ।

डेढ़ पाच आटा पुलपर रसोई—दे० “छटाक चून”

डेढ़ पेड़ बकायन मियां याग तले—दे० “डेढ़ पहोली”

डोडो आई बाल धुतराये—गन्दी वा बुरे भेषवाली-को क० ।

डोम डोली पाठक प्यादा—डोम डोलीमें और पुरोहित पैदा । समाजकी उल्टी रीतपर क० । जबकिरी

ढंढावाला जाड़ा टाला—(भा०) लकड़ जलानेसे जाड़ा भाग जाता है । उपाय करनेसे काम सिद्ध होता है ।

ढर्टीगर काहे मोटा, लाहा गने न टोटा—बेफिकरोंको क० ।

ढपोल खंख--जो कोई मुंहसे तो बहुत लाम्बी चौड़ी हाँकि, पर करे कुछ नहीं उते क० ।

इसपर एक कहानी है—किरी मनुष्यको बहुत धाराधना करनेपर एक ख मिला । उसका यही गुण था, कि जो कुछ उससे मांगा जाता था वहीं मिलता था । किरी धरंधकी इस बातकी खबर लगी । उसने एक खंख पैदा कराया, कि जो बात उसकी सामने कही जाय उसीकी प्रतिधनि उसमेंसे निकलती थी । जब कोई कहता कि “लो दो सी रूपये ।” खंख कहता, “लो दो सी रूपये ।” वह खंख उस मनुष्यके पास अपना खंख ले गया और बोला कि अपने खंखसे इमारत खंख बहल भो । उसने कहा, कि मेरे खंखमें यह गुण है कि इसमें जो कुछ मांगा जाय वही मिलता है । तुम्हारे खंखमें क्या गुण है ? खंखने जवाब दिया कि मेरे खंखका नाम “दुपौल खंख” है और इससे जितना मांगा जाता है उसका पूरा भव देता है । उस खंख का धादमीके उसने यह खंख बदन लिया । जब उसे कुछ काम । और उसने

मूर्ख मालिकको नौकर ज्ञानी मिले, तब भी क० ।

इंस बंस बचतंस भयि बच भचरज भभिराम,
गोपी तो हाथी चटे बर दायन सुन्दर श्याम ।

डोमनीका पूत चपनी बजाय, अपनी जात भाप ही जताय—जो जिसका ज्ञातीय स्वभाव है, वह नहीं छूटा ।

डोम, बनियां, पोस्ती, तीनों बड़ेमान-इनतीनोंका विश्वास न करना चाहिए ।

डोली आई डोली आई, मेरे मन चाच । डोली-मेंसे निकल पड़ा, मोंकड़ा विलाघ—(ज०) जब बहू सपानी और भदेसड़ आती है, तब क० ।

डोली न कहार, वीवी भई हैं तैप्यार—(पू० ज०) जो बिना बुलाये जानेको तैप्यार हो, उसे क० ।

डौल डालकर शामिल होना—जरा सी चीज देकर साकी होना ।

ढ

भंखसे मांगा तो भंखने उससे पूना देनेको कहा । पर वहां देनेको का धरा था, खाली बोली थी । (सदिये बच पकटाकर रह गया । जो मनुष्य क्षान्धवत एकको छोड़ कर दीके लिये दौड़ता है उसका एक भी बला जाता है ।

ढलती फिरती छांह—मनुष्यको श्रवस्थाके परिवर्तन होनेपर क० ।

ढाई अक्षर प्रेमके पढ़े सो पण्डित होय—स्व० ।

ढाई ईंटकी मस्जिद घनाते हैं—जो अपने ही मनका काम करे दूसरेकी न माने, उसे क० ।

ढाई चावलको खिचड़ी अलग ही पकाते हैं—ऊ० दे० ।

ढाकैके तीन पात—सदा एक ही हासतमें रहनेपर क० । निम्नस्थ धर्मधारी जिनकी तनप्याह कभी नहीं बढ़ती उनपर क० । ढाक घृतमें पतकड़ बहुत होता है और इसमें पत्ते भी कम रहते हैं ।

ढाक तलेकी फुहड़, महूप तलेकी सुघड़—(ज०) दोनों धाराय ही हैं क्योंकि ढाकमें छांह नहीं मिलती है और महुपके तलेपाने योग्य पदार्थ नहीं मिलते ।

ढाकैके बंगाल, कूजेके फंगाल—(पू०) जिन जगह कोई चीज बहुतायतसे पैदा हो और यदि धादमीको न मिले, तब क० । कूजा—एराहो, कन्कर ।

ढाल तलवार सिरहाने, और चूतड़ बन्दीगाने—
(पू०) डरपोकको क० ।

ढाल बांधूँ तलवार बांधूँ खींचके बांधूँ फेंटा
वीच बजारमें डाका मारूँ तौ वापका बेटा—
खरी कहनेवाले दड़ मनुष्यका कहना है जो कड़े
वही करे ।

ढालमें शेर—जब कोई असंभव बात हो जाती है,
तब क० ।

ढूँढ़ लाओ चता देंगे—उड़नभाई बताना ।
ढेंड़स और कड़ू, लानत या हर दू—दोनोंको लानत है ।

ढोर मरे न कौवा खाय—भूड़ी आया रखनेवाले-
को क० ।

ढोलके भीतर पोल—बहुत बकनेवालोंके भीतर पोल

रहती है । (व्य०) जिनका ऊपरी भडम्या बहुत
रहता है वह भीतरसे खाली रहते हैं ।

ढोल, गवांर, शूद्र, पशु, नारी । सकल ताड़नाके
अधिकारी—(तुल०) इनपर ताड़ना करते रहनेसे ही
ठीक रहते हैं ।

ढोल न ढाक हर हर गीत—बिना सामानके कोई
काम किया जाय, तब क० ।

ढोल बज दमामें बजे—जब किसी आदमीके घुरे
चालचलनको पहिले थोड़े ही आदमी जानते हों
और पीछे सब जान जाय, तब क० ।

ढोवेके टोकरी गाधेके गीत—(पू० च०) अपनी
हैसियतसे बाहर काम करनेपर वा थोड़ा आदमी
बड़ोंकी बराबरी करे, तब क० ।

त

तईकी तेरी धईकी मेरी—दे० “घबेकी मेरी”
तंगीके साथ फ़राखी और फ़राखीके साथ
तंगी लगी हुई है—दुःखके साथ खल और खलके
साथ दुःख लगा हुआ है ।

तंगी गई फ़राखी आई—दरिद्रताके घले जानेपर उदा-
स्ता आती है ।

तक तिरियाको आपनी, पर तिरिया मत ताक ।
पर नारीके ताकने, पड़े सीसपर खाक—दूसरेकी
खीको घुरी निगाहसे मत देखो ।

तकदीरके आगे नहीं तदघोरकी चलती—नसीबके
आगे उद्योग काम नहीं देता ।

बाकको तकदीरके समझिन नहीं करना रफू ।
सोज़ने तदघोर सारी लय गो सीती रछे ॥

तकदीरके लिखेको तदघोर क्या करे, गरहाकिम
खफ़ा हो घज़ीर क्या करे—स्पष्ट ।

तकदीर सीधी है तो सब कुछ—स्पष्ट ।

तकदीरों चाज़ी है—हार जीत नसीबसे होती है ।

तकल्लुफ़में रेल चल दी—मयादासे अधिक शिष्टा-
घार करनेसे हानि होती है ।

इसपर एक कहानी है :—दो सभ्य मनुष्य कहीं जानेके
लिये स्टेशन पहुँचे, और टिकट कटा लिये । रेल भी

स्टेशनपर आ पहुँची । एकने दूसरेकी मिटाघारी
दिखानेके लिये कहा—“हज़रत ! सवार हज़िर ।” दूस-
रेने कहा—“किबला आप ।” इसी तरह मिटाघार
दिखाते दिखाने रेल कूट गई । अइरेजी ‘रेल’ शब्दके
रूपसे यह मसल प्रचली नहीं जान पड़ती ।

तकल्लुफ़में है तकलीफ़ सरासर—दे० “तकल्लु-
फ़में रेल”

तकले कासा बल निकल गया—जब कोई जिद्दी
लड़का सज़ा पाकर सीधा हो जाता है, तब क० ।

तफ़ाज़ेका हुक्का भी नहीं पिया जाता—उधारकी
चीज़ घुरी होती है ।

तका पराया हाथ और गया नरक—स्पष्ट ।

तछतपर बैठे या तछतेपर लेट जाय—आदमीको
घादिफ़ कि इज़्ज़तसे रहे या मर जाय । गुलामी
करनेसे मरना अच्छा । बहुतसे हिन्दुओंमें चाल है,
कि मुर्दोंको तछतेपर से जाते हैं ।

तछतीपर तछती, मियांजीकी आई कामबहती—
(सु०) मक़तबमें पढ़नेवाले लड़के कहते हैं । पढ़ीपर
पढ़ीका रक्खा जाना मौलवीके लिये हागिकारक
समझा जाता है ।

तज गज-मुक्का भीलनी, पहिरत गुंजा हार—
जो जिसे रुचता है वही वह करता है । जैसे भीलनी

गज-मुक्ताकी छोड़कर गुंजाका हार पहिनती है ।
 जो ग्राही सीं रसि रफे, सोतेहि पादर दैत ।
 कोकिल अर्धदिं खेत है, काक निरौली खेत । (इन्द)
 तजल्लीको तकरार नहीं—प्रत्यक्षमें प्रमाणाकी ज़रूरत नहीं ।
 तड़के उठकर खाटसे, छोड़ छाड़ सय काम ।
 माला लेकर हाथमें, जप सार्ई का नाम—स्पष्ट ।
 तड़केका भूला सांभको भा जाय तो भूला नहीं कहाता—जो थादमी सपेरेका खोया हुआ श्रामतक घर लौट आये, वह खोया नहीं कहलाता । जो घात सपेरेकी भूली श्रामतरुपाद आजाय, वह भूली नहीं कहलाती । जब कोई मनुष्य संयोगवश खोटी संग-तमें पड़कर फिर उधर जाय, तब क० ।
 ततड़ीने दिया, जनमजलीने धाया, जीम जली न सयाद आया—(ज०) जब दो कमनसीब थादमी एक दूसरेकी सहायता करना चाहते हैं तब और जब कोई बहुत कम खानेकी चीज़ दे, तब क० ।
 तत्ता कौर निगलनेका, न उगलनेका—जब नई दोस्तीमें झलल आये, तब क० । क्योंकि न उठे छोड़ते ही बने न निभाते ही बने ।
 तत्तो खिचड़ी घी न पाया, अयका सिपालायूं हीं गंवाया—खिचड़ी अक्सर जाड़ोंमें ही खाई जाती है, और घी बिना उसमें स्वाद नहीं आता । गरी-पीकी हालतमें क० ।
 तन उजला मन सांभला, यगलेका सा भेंक ।
 तोसैं तो कागा भला, याहर भीतर एक—स्पष्ट ।
 फपटी या होंगी थादमीपर क० ।
 तन फसरतमें, मन औरतमें—दोनों पेजोड़ काम एक साथ नहीं हो सकते ।
 तनका घैरी ताप है, मनका घैरी नेह । जिस तनमें ये दो रमें, तो गये जीव और देह—स्पष्ट ।
 तनकी फर ले तुनतुनी, और मनके फर ले तार । फिर जश गा हरिनामके, जो तुरत मिले कर्तार—स्पष्ट ।
 तनकी तनक सरायमें, नेक न पावो वैन ।
 सांस नकारा कूचका, चाजत है दिन रैन—
 मौतका ठीक नहीं कि कय थावे ।

तनको कपड़ा न पेटको रोटी—निहायत गरीब थादमीपर क० । जिस स्त्रीकी परवरिश उसका स्वामी भली भांति नहीं करता हो वह भी कहती है ।
 तन गुदड़ी मन धागा, कोई कुछ हीं लखे मन लागी—फकरीरोंका ऐसा कहना है ।
 तन तकिया अरु मन विश्राम, जहां पड़ रहे वहीं धाराम—ज० दे० ।
 तन ताजा, कलन्दर राजा—फकरीरका भी जब पेट भर जाता है, तब वह अपनेको राजा समझने लगता है ।
 तन दे, मन ले—मेहनत करेगा तो मन चड़ेगा ।
 तनपर नहीं धागा, नाम चन्द्रभागा—(व्य०) नामके अनुसार गुण न हो, तब क० ।
 तनपर नहीं लत्ता, पान खाय भलयत्ता—(च०) हैसियतसे बाहर काम करनेवालेपर क० । करी रोड़ीका काम करना ।
 तनपर लीर न घरमां नाज, दूद-सुसरेका रोपा काज—(ज०) जब कोई ऐसा काम करे जिसके करने लायक वह न हो, तब क० ।
 तनपर सोहे कापड़ा, और रन सोहे रनजीत ।
 घीर पुरुष योड़ी भले, (जो) सबसे राखे प्रीत—स्पष्ट ।
 तन पिंजरा मन तीतरा, सांस जीवनका मूल ।
 जय तीतर उड़ जात है, तो हो जा पिंजर धूल—स्पष्ट ।
 तन पुतला है झाकका, इसे देख मत फूल ।
 इक दिन ऐसा होयगा, मिले धूलमें धूल—घरीर नखर है ।
 तन फूभड़का भैंस सूं भारी, कहे फहो मोहिं नाजो प्यारी—(ज०) देखनेमें तो भैंसकी सी गरीर-वाली तथा फूहड़ है, परन्तु कहती है कि मुझे नाजो प्यारी कहकर बुलायो ।
 तन लगी धुपड़ी, तो बलाय छाय भुपड़ी—जूरतके घत, काम हो जाता है, फिर नहीं ।
 एक इदियाने रातको जाड़ा लनपेपर विचार, कि सबद सोते ही भीपकी का लूरी परन्तु जब मुश्क हुआ और भय निडल पड़ी, तब तब चूल गई ।

तन शीतल हो शीतसूं, मन शीतल हो मीतसूं—
(मा०) स्पष्ट ।

तन सुखाय पिंजर करै, धरै रैन दिन ध्यान ।
तुलसी मिटे न वासना, विना विचारे ज्ञान—स्पष्ट ।
तन सुखी तो चैन है, ना तो दुख दिन रैन है—
दे० “तन्दुरुस्ती हजार” ।

तन सुखी तो मन सुखी—स्पष्ट ।

तन सूखा, कूबड़ी पीठ हुई, घोड़ेपर ज़ीन धरो
वाया । अब मौत नकारा याज चुका, चलनेकी
फ़िक़ करो वाया—(नज़ीर) बुद्धोंके लिये उपदेश है ।
तनूर बाज़ी और अल्लाह राज़ी—(मु०) फ़कीरोंका
कहना है । तनूर=रोटी सेकनेकी एक प्रकारकी भट्टी
जिसकी दीवारपर थापकर रोटी सेकी जाती है ।

तपे जेठ, तो धरखा हो भर पेट—(कु०) जेठ जोरोंसे
तपनेपर वर्षा ज़्यादा होती है । दे० “जेठ तपत हो
घर्षा गहरी” ।

तपे नखत मृगशिरा जोय, तब बरसा पूरन जग
होय—(कु०) मृगशिरा नक्षत्रमें अगार धूप ज़्यादा हो,
तो वर्षा ज़्यादा होती है ।

तबके नरपति वे रहे, रीझें तो फलु देयँ ।
अबके नरपति वे भये, रीझें अब लिख लेयँ—
स्पष्ट । फलयुगके दानियोंपर क० ।

तब लग भूँठ न घोलिये, जय लग पार बसाय—
जहांतक बस चले ऋठ बोलनेसे बचना चाहिये ।

तमाचा मारे मुंह लाल रखते हैं—तमाचा मार-
कर गरीबोंको छिपाना । जब कोई ऊपरी ठाट बना-
कर अपनी गरीबोंको छिपाता है, तब धौर जब
कोई दण्ड मिलनेपर उसकी याद रखता है, तब क० ।
तमोलनकी लड़कीसे कीजे न यारो, सरौता
दिखाकर कतर ले सुपारी—दुमानी है ।

तरकशमें तोतीर नहीं पर शरमा शरमी लड़ते हैं—
निराश्रामें भी आशा करनेवालेपर क० ।

इस चादगी पे कौन न सर जाय ऐ खुदा ।

लड़ते हैं और हाथमें तनवार भी नहीं । (गालिब)
आँखोंपर कही गई है ।

तल धरती ऊपर राम—क़स्म है ।

तल धार, ऊपर धार—(पू० कु०) मूसलवार पानी
बरसना ।

तल मुंडिया, पताल हुंडिया—(व) टग वा लुंचेको
क० । जो नोचा सिर किये नक़ हूँदा करता है ।

तलघरिया वाको मत कहो, जो खाँडा लेकर
हाथ । रनसे भांगे एकला, छोड़ टोलका साथ—
स्पष्ट ।

तलघरिया वो ही मला, जो रनमें हाथ दिखाय,
वैरीके टुकड़े करे, और आप साफ़ बच जाय—
स्पष्ट ।

तलघारका खेत हरा नहीं होता—तलवार द्वारा
नष्ट हुआ खेत कभी नहीं पनपता ।

तलघारका घाव भरता है वातका घाव नहीं
भरता—जब कोई किसीको ऐसा कुचन कहे कि वह
उसे अस्वस्थ हो जाय, तब क० ।

(१) तियुंम बुर्शिग यह ऐ हाली नहीं,

जिस कदर तेरी जुबां करती है काट । (हाली)

(२) कुरीका तीरका तलघारका ती धाव भरत ।

लगा ओ जुदम जुबांका रक्षा हमिया हरा ।

तलवार किसकी, मारेगा उसकी—स्पष्ट । जिसके
हाथ जो पदार्थ होता है, वह उसीके काम आता है ।
तलवारकी आंचके सामने कोई धिरला हो ठह-
रता है—तलवारके सामने ठहरना यद्द साहसी
आदमीका काम है ।

तलवार तो दे दी पर ग्यान मरे मारे देंगे—
जब कोई असली चीज़ तो ज़बोसे दे दे पर सामान्य
चीज़ देनेके लिये अड़ जाय, तब क० ।

तलवार मारे एकवार, पहसान मारे धार धार—
जब कोई आदमी किसीका उपकार करके पीछे धार-
धार अपना पहसान ज़ाहिर कर उसे दबाता है,
तब क० ।

तलुओंकी सी कहूँ या जीभकी सी—धूस वा
रिखत खानेवालेको क० ।

किसी हाकिमने एक मुकद्दमेमें फारियादी और असाबी
दोनोंसे ही रिखत ली । एकने उसे मिठाई और
खानेकी चीज़ें भेंट कीं और दूसरेने सुपकेसे उसके पैर

तले एक चरफाँ सरका दी। वरु इही बानका सीच करने ख्या जो इस मसलमें कही गई है।

तलेका दम तले रह गया ऊपरका ऊपर—जब कोई खराब खबर सुनकर सन्न रह जाय, तब क०। तलेके दाँत तले रह गये ऊपरके ऊपर—डर वा आश्चर्य होनेपर क०।

तले पड्डोका मोल क्या ?—(१) जो चीज़ पैर तले अर्थात् अपने अधीन है उसका मोल क्या। (२) सीधी और आज़ाकारी स्त्रीका कहना है। (३) गई पातोंकी चर्चा करके घृषा समय नष्ट करनेपर क०। तबंगरी बहिलस्त न बमाल, बुजुर्गी बधकलस्त न बसाल—(फ्रा० शेल सादी) अमीरी दिलसे होती है दौलतसे नहीं ; बुजुर्गी अकलसे होती है उम्रसे नहीं।

तवा बड़ा, और जीव बड़ा—स्पष्ट। तवा बड़ा बैठो मिसरानी, घरमें नाज अगन ना पानी—जब कोई बिना सामानके काम करनेपर तैय्यार हो जाय, तब क०।

तवा, तगारी, आग, जल, अन्न, ईंधन जित होय। घारा दून उजाड़ मां, भूखे मनुख न रोय—ये चीज़ें अगर किसी धने जंगलमें भी हों तो वहाँ भी आंदमी भूखा नहीं मरता।

तवा न फुंडा ना चुलहारी, कही नार में हूँ भटियारी—(ज०) स्पष्ट।

तवा न तगारी, काहेकी भटियारी ?—स्पष्ट। तवेकी तेरी हाथकी मेरी } जल्दी करनेवाले-
तवेकी तेरी तगारीकी मेरी } पर तथा स्वार्थी मनुष्यपर क०।

तवे परकी बूँद—जो चीज़ बहुत जल्दी नष्ट हो जाय, उसपर क०। रोटी करते समय खियां तवा गरम हुआ या नहीं, इस बातको जाननेके लिये तवेपर पानीकी बूँद डालती हैं। यदि वह बूँद तुरत सूख जाय तो तवा तप गया समझा जाता है। तवेलेकी बला बन्दरके सिर—सयकी बुराई एकहीके

सिर मढ़ना। जब घरमें कोई भी बुरा काम करे पर दोष उसीके सिर मढ़ा जाय जो पहिले बदनम हो चुका हो, तब क०। तवेले या अस्तबलमें घोड़ोंकी आरोग्यताके लिये एक बन्दर बांध दिया

जाता है, इससे घोड़ोंपर किसी तरहकी बीमारी नहीं आती, ऐसा लोगोंका विश्वास है।

इमपर एक कहानी है :—एक सिपाही किसी सरायमें जा डहरा। उसने भटियारीसे रोटी बनानेकी कष्ट दिया। भटियारी जब जोरसे पाटा गुंधने लगी, तब उसकी बाव सर गई। उसका पा० १० वर्षका लड़का पास बैठा था। अपनी हरकत दिवानेके लिये उसने पैरसे जूती उतारकर लड़केकी चांदपर लगाई और बोली, “गुलाबी करता है ?” सिपाही इस बातको ताड़ गया। थोड़ी देर बाद सिपाही रामने भी जोरसे भरंडा लिया और अपना खोलघरां पैरसे उतार उसी लड़केकी खोपड़ी पर जमाया। लड़का तिलमिना उठा। इसपर सिपाहीने कहा, “गुलाबी करता है ?” भटियारी चापसे बाहर निकर बोली, “बाह राहब ! हरकत तो आपने की और मार मैंने लड़केको।” सिपाही बोला, “तुप इरान-आदी, इस सरायका कायदा यही है, कि हरकत कोई करे पर जूता इधीके सरपर पड़ेगा।”

तसलवा तोर कि मोर ?—(म०) मैथिल वा भोजपुरियोंको लोग व्यंगसे कहा करते हैं।

इस मसलका विकास इस कहानीसे है :—किसी समय मिथिलापुरीमें एककाल पड़नेपर बहाक लीमोकी इति जुबदंतीसे खानेकी छो गई थी। उस समय जबकोई भात बनाता था, तब कुछ आदमी उससे आकर कहते थे “तसलवा तोर कि मोर ?” यदि वह “तोर” यानी तेरा कहता था तो उसे माफ़ कर देते थे अन्यथा (‘मोर’ कहनेसे) चीनकर खा लिया करते थे।

तसलवा—तसला, थाली।

तसवीह फेरू, किसको घेरू—(मु०) बगुला भगत पर क०।

ताई थिलाई, कुत्ते नोंच नोंच खाई—छोटे लड़के ताईको चिट्टानेके लिये कहा करते हैं।

तांत बाज़ी और राग बृम्हा—आदमीके थोलेते ही उसकी योग्यता तथा भक्ता हाल मालूम पड़ जाता है।

करौं खवाई नाहिं न बाम, बगहिं छै भाकं धनश्याम, काहे पहालो जुत धनुराग, बाजे तांत बृम्हिये राग। (इही) कुबज सुहाग दिरी, हमकी बिराम जभे, बाजी तांत जानी गई, राग रौति राबरी।

तांत स्त्री देह पांच न हाथ, लड़न चली सूरनके साथ—जब कोई अपनी ताकतसे बाहर काम करना चाहता है, तब क० ।

तांबा देखे चीतना, मन देखे व्योपार—(व्य०) व्यापार आदमीको देखकर या नगद रुपयेसे होता है ।

खलि खरप पिय वग भई, जौं गाथा परचार ।

ताबां देखे चीतना, मुख देखे व्यवहार । (आत्मन)

तांबेकी मेख, तमाशा देख—जब पैसेवाला आदमी सब कुछ संभव असंभव काम कर लेता है, तब क० । ताल भांककर चाल मत, यह है घुरा सुभाव । जार कहें या चोरटा, या कहे ऊद बिलाव—स्पष्ट ।

ताकत कमरमें चाहिए औलादके लिये, रखते नहीं हैं सिर्फ भरोसा मदार का—उस पुरुषार्थी आदमीपर कही जाती है जो अपने धोसे सब काम करता है, किसीका भरोसा नहीं करता ।

ताक पर घैठा उल्लू, मांगे भर भर चुल्लू—जब नीच आदमी किसी ऊंचे आदमीपर हुकम चलाता है, तब क० ।

ताकी, न रखे वाकी—ताकी घोड़ा मनुईस होताहै । ताज़ी को मारा तुरकी कांपा—एक पर शासन करनेसे दूसरोंका भी सधार होता है ।

ताज़ी पर बस नहीं, तुकीके कान उमेठे—जबदस्तके साथ न मिड़कर कमजोरों पर गुस्सा उतारना ।

ताज़ी मार खाय तुरकी धाश पाय—जब योग्य मनुष्योंपर आफ्त आवे और नालायक आदमी मौज करने लगें, तब क० ।

ताज़ीमें कारीगरां मुआफ़—(फा०) काम करने वालोंको अद्रव करना मुआफ़ है ।

ताता, तीता, आमला, तीनों धात विनास—गरम, तीता और खट्टी चीजें धातुको नुकसान पहुँचानेवाली हैं ।

ताते दूध विलार नाचे—गरम दूध देखकर बिल्ली नाचा करती है, न तो उसे छोड़ सकती है और न पी सकती है ।

तान न पड़वा कुरेवा घर लड्डम लड्डा—बिना यातकी लड़ाई लड़नेपर क० ।

इसका निकाम इस कहानीसे है—एक कोलीने कोरे जगह तानी बनानेके लिये नियतकी, इसपर कोलिनने कहा—“नहीं, यहाँ तो मैं पड़रा बांध ली” । इसी बात पर दोनोंमें लड़ाई चल गई, पर न तो कोलीके पास तान भरनेकी सूत था और न कोलिनके पास पड़रा । कुरेवा=कोली ।

ताना घाना, सूत पुराना—वृथा परिश्रम करनेपर क० ।

ताना शाह दिवाना, जिसके चिट्ठी न परवाना—जो व्यापारी अपनी लिखा पढ़ी ठीक नहीं रख सकता, उसे बहुत भ्रमोंमें फँसजाना पड़ता है ।

तानी घाट, या घानी घाट ?—जब दोनों तरफ दोष होता है, तब क० ।

तापव, तुवुक, तलाये जाव—तापना, बन्दूक चलाना और टट्टी जाना ये तीन काम लिहाफ़ थोड़ कर नहीं होते ।

ताम भाम लगे—जब कोई भ्रम डालाव या व्यर्थका धमंड करता है, तब क० ।

इस मसलका निकाम इस कहानीसे है—एक मूर्खके हाथ एक पालकी लग गई। वह सब कामके लिये पाषाणकी पर बैठ कर जाता था । भीर तो क्या उसकी स्त्री जब कहती कि “मिच नहीं है” तो वह कहता “ताम भाम लगे” फिर जब वह कहती कि “नमक मंगाना भूल गई” तो वह भट कहता कि “ताम भाम लगे” यहाँ लानो पालकी ।

ताल उभल कर उभले पमार, जब घरपा हो पुरम्पार—(क०) तालाब उभल कर जब खेतोंकी क्यारियां भी उभल जायं, तब समझना चाहिये कि बरसात पूरी हुई ।

ताल तो भूपाल ताल और तो तलैयां हैं—स्पष्ट ।

ताल न तलैया, वोओ सिंघाड़े भैया—(क०) बिना सामानके जब कोई काम करता है, तब क० ।

ताल बजा कर मांगे भीख, उसका जोग रहा फपा ठीक—जो साधु भंडा बजाकर भीख मांगते हैं उनका योग ठीक नहीं रहता ।

ताल में चमके ताल मछरिया, रण चमके

तलघार । तंबुशा चमके सैंया पगड़िया, सेज पै
विंदिया हमार—सब चीजें अपने अपने स्थानपर
थोभा देती हैं ।

ताल सूख पटपर भयो, हंसा कहीं न जाय । मरे
पुरानी पीत को, चुन चुन कंकड़ धाय—

(१) उस कृतज्ञ गौकरपर कही जाती है जो मालिककी
खराब अवस्थामें भी उसका साथ नहीं छोड़ता ।

(२) अपना घर किसीसे नहीं दूता ।

ताल से तलैया गहरी, सांपसे संपोला जहरी—

जब बापसे बेठा बड़कर निकले, तब क० ।

ताली दोऊ कर बाजै—(प०) दे० “एक हाथ ताली
नहीं” ।

ताली यिन कैसा ताला, जोरु यिन कैसा साला?—
स्पष्ट ।

ताया तोर, कठौती मोर—दे० “तवेकी तेरी”

ताशाकी अंगिया, मूजकी बखिया—वेजोड़ काम
पर क०

तित्तर वित्तर हो गये, सुगर डोमके काम ।

निमड़ गये जिजमान जय, गांठ गिरहके दाम—

जब पैसे बिना कोरी बातेंसे काम नहीं चलता,
तब क० । डोम धाड़ियाँका ऐसा कहना है ।

तिनका उतारेका अहसान होता है—निःस्वार्थ
मावसे कोई भी काम किया जाता है उसमें पहसान
माना जाता है ।

चत्तार वुने तो चिर तनसे, श्रामतके सारिका ।

भरे एहसान मानू सरसे मे, तिनका चत्तारेका । (जोक)

तिनका गिरा गयन्द मुख, नैक न घटो अहार,

सो ले चली पिपीलिका पालनको परिवार—

दे० “अमीरका उगाल”

तिनका होतो तोड़लू, पीत न तोड़ी जाय,

पीत लगत टूटत नहीं, जब लग मौत न आय—
स्पष्ट ।

यह ददें सर पेसा है कि सर जामे तो जाये ।

उष्कतका नया जब कोई भर जाये तो जाये ॥ (जोक)

तिनकेको ओट पहाड़—(ज०) आँवके सामने

तिनका रखनेसे पहाड़ भी छिप जाता है । थोड़े
सहारेसे जब कोई बड़ा काम सिद्ध होता है, तब क० ।

सिमरे तन तोहिमें मोह रहे, उन थोट पहार न देख परे ।

(मतिराम)

तिरिया जात कमान है जित चाहे तित तान—
स्पष्ट ।

तिरिया तुभमें तीन गुन, अवगुन हैं लख चार,
मंगल गावे सतरचे और फोखन उपजें लाळ—

स्पष्ट ।

तिरिया तुभसे जो कहे, मूल न तू वह मान ।

तिरिया मतपर जो चले, वह नर है निर्जान—स्पष्ट ।

तिरिया तेरह मरद अठारह—तेरह वर्षकी छी और

अठारह वर्षका पुरुष इनका जोड़ा ठीक है ।

तिरिया तेल हमीर हट चढ़े न दूजी धार—

हट प्रतिज्ञापर क० । पूरी मसल यह है—“सिंह

गमन सुपुत्र बचन, कदलि फरे इकसार । तिरिया
तेल……” ये सब काम एक ही बार होते हैं ।

इसका विकास एक ऐतिहासिक घटनासे है—“राज-

पूजाके अनर्गल नयपूरके पास रजयभगद नामका एक

प्राचीन स्थान है । यह पहिले बादशाह अलाउद्दीन

खिलजीके समयमें इम्शोरदेव नामक चौहान वंशीय

राजपूतके अधीन था । अलाउद्दीनके मीर मुहम्मद

मन्जोल नामके एक अपराधीने भागकर राजा इम्शोरदेवकी

गरथ ली । उस समय राजाने अपने सिवोंसे उक्त पुरी

मसलके साथ यह भी कहा । “धड़ बध” लोह रहे, परि

बोले चिर बोल, कटि कटि तन रचमें परे, तह नहिं

देइ छत्रोल” अनमें बादशाहका फरमान आनेपर

भी मन्जोलको नहीं दिया । निदान सन् १२०० ई० में

बड़ा भारी युद्ध हुआ ।

तिरिया तो है शोभा घरकी जो हो लाज

रखावा नरकी—जो छी अपने पतिकी इज्जत रख

सके उसीसे घरकी शोभा है ।

तिरिया धिरकत जो चले, वाको भला न जान

जैसे हाथ लिखेरका, काँपत हो नुकसान—स्पष्ट ।

तिरिया विन तो नर है पेसा, राह यटाऊ होवे

जैसा—बिना खीके मनुष्यके रहनेका कोई ठिकाना

नहीं ।

तिरिया भली घडी है भारी, जो पुरुषा संग करे

मलाई—स्पष्ट ।

तिरिया भी नर विन है पेसी, बिना धनीके खेती

जैसी—स्पष्ट ।

तिरिया रोवे पुरुष बिना, खेती रोवे मेह बिना—
(क०) स्पष्ट ।

तिरिया विपकी घेल हैं, यासूँ घचकर चाल,
याका नेहा खोत है, दीन, धरम, धन माल—स्पष्ट ।
तिलका ताल करना—थोड़ी बातको बहुत बढ़ाकर
कहना ।

तिल गुड़ भोजन, तुरक मिंताई, आगे मीठ
पाछे कडुचाई—मुसलमानोंकी तल्लाक़ देनेकी रस्म-
पर क० ।

तिल ज्यों वारू पेरिये नार्हीं निकसे तेल—
बालू पेलनेसे तेल नार्हीं निकलता । दे० 'इनतिलों' ।

तिल, तीखर, दाना धी शकरमें साना, खाय
बूढ़ा होय जवाना—स्पष्ट ।

तिल रहे तो तेठ निकले—(व्य०) गुंजायश हो तब
तो घटाया जाय । जब गाहक मालका दाम घटाया
चाहे पर उसमें घटानेकी गुंजायश न हो, तब दूकान
दार कहता है ।

तीज़ पड़े खेतमें बीज—(क०) सावनकी तीजको
खेतमें बीज पड़ता है ।

तीतड़के मुंह लक्ष्मी—हाकिमकी ज़यानमें सघ कूछ
है । मुक़द्दमेके समय क० ।

छ टव विपति बियोग, पिय तिय तन बतरान में ।
कहाँ कड़ावति लोग, ज्यों तीतर सुख लक्ष्मी ॥
अब प्रपतिककी बच्चेको यम घेरता है उस समय तीतरका
शब्द सुनते ही यम भाग जाता है । इसीसे यह कहावत
प्रचलित है कि तीतरके मुँह लक्ष्मी बसती है ।

तीतड़की सी घोली है—चाहे सो अर्थ निकाल लो ।

एक तीतर किसी इधरपरे बैठा हुआ अपने सामाधिक
धरसे नील रहा था । संयोगवश एक पथिक उधर आ
निकला और उस खरकी न समझ भौचका हो रहा ।
इतनेमें एक मुसलमान वहाँ आ पहुँचा और पथिककी
अर्थगारों देख 'सुभान तेरी कुदरत' नामक अर्थ बताया ।
पर इससे पथिककी शानि न हुई और उधरसे गुजरते
हुए एक हिन्दूसे भी उसका वही प्रश्न रहा । हिन्दूने उसे
'राम लक्ष्मण दशरथ' कह टाल दिया । पर उसे इतने
पर भी चैन न मिला और कुछ देर बाद गुजरते हुए एक
पहलवानसे भी उसका वही सवाल था जिधसे उसे

'माना कुदती कचरत' उत्तरमें मिला । पर उसे फिर भी
आराम कर्हा ? और उसी राह गुजरते हुए एक कसाईसे
प्रश्नकर उत्तर पाया 'जिधर कर और ठक रख' । तनिक
देर बाद एक कुंजड़की भी उधर आया देख उससे भी
वही प्रश्न कर बैठा और जवाबमें 'गांजर मूली चदरख'
पाया । अनन्त उसने एक लुलाहेसे भी वहाँ आ पहुँचा
था अर्थ पूछा और 'चरखा पूती चमरख' सबसे भिन्न
उत्तर पाया । सारांग यह है कि "जाकी रक्षी भावना
जैसी, प्रभु मूर्ति देखी तिन तैसी" (तुलसी०)

तीतड़ चाप' घोल जा, तो सगर कार हों डीक ।
दहने बोलत ना भला, सांच जान यह सीख-
शकुन है ।

तीन गुनाह खुदा भी बख़्शता है—जब कोई क्रमूर
करे और माफ़ी मांगे, तब क० ।

तीन टांगका घोड़ा बनाना—(व्य०) मालमें भूटा
पेच निकालना । जब कोई ग्राहक माल लेकर नटना
चाहे वा दाम घटाना चाहे तो प्रायः मालमें दोष
दिखाता है, उसीको दूकानदार लोग तीन टांगका
घोड़ा बनाना कहते हैं ।

तीन टांगकी घोड़ी नौ मनकी लदनी—जब किसी
अनुपयुक्तको बड़ा काम सौंपा जाय, तब क० ।

तीन टिकट, महा बिकट, चारका मुँह काला,
पांच हों तो भाला—(ज०) तीन चीज़ देना झराव,
चार उससे भी झराव और पांच सबसे झराव ।
लड़कोंको जब कोई चीज़ दी जाय, तब वह और
ज़्यादा लेनेके लिये ऐसा कहा करते हैं ।

तीन तिरहुतिया मिले पकना रह गया—मैथिल
म्रास्यणोंमें कच्ची रसाईका बहुत परहेज होता है ।

तीन तेरह हो गये—तितर बितर हो गये । बरबाद
हो गये ।

तीन थान, चौथी जान, उनका अल्लाह निगह-
वान—तीन लड़के चौथा में ईश्वर रक्षा करे ।

तीन दिन क़त्रमें भी भारी होते हैं—(सु०) दे०
"क़त्रमें भी....."

तीन दिये, और तेरह पाये, कैसे लोभ व्याजका
जाये—(व्य०) सुदज़ोरोंको व्यंगसे क० ।

तीन नरीमें तेरह गज़—तीन बकरियोंका घमड़ा
फैलानेसे तेरह गज़ होता है ।

तीन पांच आटा तूलपर रसोई—थोड़ी सामग्रीके लिये बहुत छोट घाट ।

तीन पाचकी तीन पकाईं सवा सेरकी एक, जेठ निपूता तीनों खा गया में सन्तोखन एक—जब कोई इयादा लेकर थोड़ा बतानेकी चेष्टा करे, तब क० । तीन पाचकी तीनोंसे एक सवा सेरकी बहुत भारी है ।

तीन पाच भीतर, तो देवता और पितर—पेट भरनेपर धर्म सूकता है ।

तीन पेड़ बकायनके मियां वागवान—जब कोई थोड़ी ही चीजसे अपनेको भरा पूरा समझे, तब क०

तीन बुलाये तेरह आये, देखो यहांकी रीत । वाहरवाले खा गये, और घरके गावें गीत—

जब एकको बुलाओ और चार आ जायें, तब क० ।

तीन बुलाये तेरह आये दे दालमें पानी—ऊ० दे० दालमें पानी अधिक डालनेसे वह पतली होकर बढ़ जाती है, इसलिये सभीको परोसी जा सकती है ।

पूरी मसल यह है “तीन बुलाये तेरह आये, उन्नीस ज्ञानकी बानी । राघो चेतन यों कहें, दू दे दालमें पानी ।”

तीनमें न तेरहमें—जो किसी गिन्तीमें न हो । दूरके रिश्तेदारको कहते हैं जिसका सूतक तीन दिनका हो न तेरह दिनका । नगण्य मनुष्यको भी क० ।

तीनमें न तेरहमें, वामनमें न बहत्तरमें । न सेर भर सुतलीमें, न करवा भर राईमें—ऊ० दे० ।

इसपर एक कहानी है :—किसी बेग्यानि अपने पारोंको श्रेष्ठियोंमें विभक्त किया । तीन पैसे थे जिन्हें वह सबसे अधिक चाहती थी । उनको पीछे तेरह, फिर बावन फिर बहत्तर थे । इसके बाद वे थे जिनके नामकी गाँठ उसने एक सेर सुतलीमें बांध रखी थीं । अन्तमें वे लोग थे जिनके नामसे वह एक एक दामा राईका एक कदवेमें डालती जाती थी । एक दिन एक मनुष्य उसके पास आया और बोला, कि मैं बहुत दिन पीछे आया हूँ, मैंने पहिले तुम्हें बहत्तरवा धन दिया है । उस बेग्यानि उसने नहीं पहिचाना और अपने गुमास्तेसे कहा, कि देखो यह किसमें है । तिसपर गुमास्तेने यह मसन कही । रक्षिया जाने पापको, बिसनीको मिरताज, गने नूँ, तेरह तीनमें बाम सुजार सनाज । रक्षिया तो समझता है कि

नायिका सबसे अधिक सुभीको चाहती है और नायिकाको जो बचन प्रिय तीन उनसे उतरकर तेरह आर थे उन दोनों कोटिमें वह इसको गिन्ती ही न थी ।

तीनमें न तेरहमें मृदङ्ग धजावें डेरेंमें—जो सबसे अलग रहते हैं किसीकमगुंमें नहीं पड़ते, उन्हें क० । जिसकी कोई बात भी नहीं पड़ता अपने घरमें ही पड़ा रहता है, उसे भी कही जा सकती है ।

तीन लोकसे मथुरा न्यारी—जब कोई नियम विरुद्ध काम करे, तब क० ।

तीन हैं साह किसानके जड़, जाल भर कर—(क०) जब दुर्मिज्ञ पड़ता है तो इन्हीं तीनोंसे इनकी पुनर्र होती है ।

तीनोंपन एकसे नहीं जाते—सड़कई, जवानी और बुढ़ापा ये तीनों अवस्था सबसे नहीं कटतीं ।

तीनों लोक दिखाई दे गये—तीनों लोकमें सब चीजें देखां, परन्तु खानेकी चीज न देखी । भूखा मनुष्य कहता है ।

तीर जुदाई या लगा, दिया कलेजा छेद । पी अपना परदेश मां, किससे कहिये भेद—विरहकी अवस्थामें क० ।

तीर, तुसमटी, इसतिरी, छूटत यश ना आयें । भूँट जो मांगे यह चचन, वे नर कूड़ कड़ायें—तीर, बाज़ और खी हाथसे छूटनेपर फिर हाथ नहीं आतीं ।

तीरथ गये मुड़ाये सिद्ध (या सिर)—तीर्थस्थानमें जाकर मुंडन कराना ही पड़ता है । जब कोई स्वर्धका काम थान पड़े तो उसमें स्वर्ध करे बिना पियाड नहीं छूटता । ऐसे ही मौकेपर क० । जब कोई मेला देखने या विदेश जाय तो कुछ न कुछ सौगात लानी ही पड़ती है, तब भी क० ।

तीरथगये सो तीन जन, मन चंचल चित घोर । एको पाप न फाटिया, सौमन लादा और—स्पष्ट । बुरे दिलका मनुष्य अच्छी जगहसे भी बुराई सीखता है ।

तीरथ मूरत पूजकर, मत ना उमर गंवाय । पूजा कर फरतारकी जो तुरत मुक्ति हो जाय—एकेपरमादियोंका सिद्धान्त है ।

तीर न कामान काहेके पठान—भूँठी शेर्री हांकेने

तुमने उड़ाई, हमने भून भून खाई—तुमने अपने धनका दुरुपयोग किया और उसे बर्बाद कर डाला, मैंने अपने धनका सदुपयोग किया और उससे लाभ उठा रहा हूँ।

तुम भी कहोगे मुझे चरखा ले दो—जब कोई मूर्खताकी बात करता है, तब क०। जो मनुष्य मर्दान्ते औरतोंका काम अच्छी तरह कर सके, उसे भी कहते हैं।

तुम भी फोरे चालीस सेरे ऊत हो—रे मूर्ख हो।

चालीस सेरे—पूरा एक मन।

तुम रुठे हम छूटे—(मु० ज०) तल्लकके समय क०।

तुम सरीखे सैकड़ों फिरते हैं—जब कोई किसीको तुच्छ समझता है, तब क०।

तुम्हारेहि भाग राम धन जाहीं—(तुलसी) जब कोई कार्य किसीके बड़े कामका निकल पड़ता है, तब क०।

तुम्हारी दाढ़ी जलने दो, हमारा दीया बलने दो—स्वार्थीको क०।

तुम्हारी बराबरी बह करे जो दौड़ते हिरनको पकड़े—कुत्ता बगाना। शोही बाजोंको व्यंगसे क०।

तुम्हारी बराबरी बह करे जो टांग उठाकर मूते—ऊ० दे०।

तुम्हारी बात न उठाई जाय न रक्खी जाय—जब कोई बेहूदा वा बेमेल बात कहे, तब क०।

तुम्हारी बात थल की, ना वेढ़ेकी—ऊ० दे०।

तुम्हारे पेटमें चींटिकी गांठ है—तुम बहुत कम खाते हो।

तुम्हारे फ़रिश्तोंको भी खबर नहीं—(मु०) तुम किसी तरह नहीं जान सकते। सब मनुष्योंके साथ दो फ़रिश्ते हैं, जो उनके सब कामोंकी प्रयर रखते हैं।

तुम्हारे वेल हमारे भँसा, तुम्हारा हमारा फिर साथ कैसा—वेल भैतेसे जल्दी चलता है इसलिये दोनोंका साथ नहीं निभ सकता।

तुम्हारे भतार न हमारे जोय, अस कुछ फरो कि वेटवा होय—(प०) रंहुपका कहना विधवाकेप्रति।

पति होमस्तु या नारी पति होमस्तु या पुमान।

उमाप्यारंखयंतायो नदीधोमनुरप्रवीत ।

तुम्हारे मरे देश खाक, हमारे मरे देश पाक—अधीनता दिखाना।

तुम्हारे मुंहमें घी शक्कर—जब कोई अच्छी खबर सुनावे, तब क०।

तुम्हें ग़ैरोसे कय फ़ुरसत हम अपने ग़मसे कय खाली, खलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली—मित्रका कहना मित्रकेप्रति। जब बहुत दिनपर मिलते हैं तब उलझनेके तौर पर क०।

तुम ग़ैरीके संग बै ठकर दिन शाद करोगे।

हम बीन हैं जो इनकी भला याद करोगे ॥

तुर्ई फई. लानत हरडू—(मु०) दोनों ही असार हैं।

तुरक काके मीत, सरपसे क्या प्रीत—स्पष्ट।

तुरक तलैया तोतड़ा, ना यह किसीके मीत।

भीड़ परत मुंह फेर लें, राखें नाहीं प्रीत—(मा०) मुसलमान, बरें और तोता किसीके संगे नहीं होते।

तुरक तेली ताड़, यह सूये विहार—विहारमें मुगलमान, तेली और ताड़ बहुत हैं।

तुरक तोता खरगोश, कभी न माने पोश—स्पष्ट।

तुरकी पीटे, ताजी कापे—एकको मज़ा होनेसे दूसरा सचेत हो जाता है।

तुरख दान मझा कल्यान—स्पष्ट।

बेगि बाल परसब झं, दे रस सरस मियां।

तुरत दान मझपुन्य है, गावा जग परचार।

तुरत फ़तह हो उसके ताई, जिसका हामी हो गोसाईं—स्पष्ट।

तुरत फुरत हो सगरे काम, जब होये मुट्टीमें दाम—स्पष्ट।

तुरत फुरत हो यह भी फार, मद्दत करे जिसकी सरकार—स्पष्ट।

तुरत भलाई यह नर पाये, जो धन दाता नाम लुटाये—जो ईश्वर निमित्त पृथ करता है उसका जल्दी नाम हो जाता है।

तुरत मजूरी जो परलाये, वाका फाज तुरत हो जाये—स्पष्ट।

तुरतहिं पोवो तुरतहिं खावो, यासी खा मत
ओभ वढ़ावो—रोटी ताजीही खानी चाहिय, खासी
खानेसे पेट फूलता है ।

तुलसी अपने जानके, कीन्हों थी परतीत ।
धोको दे न्यारे भये, भलो निवाही प्रीत—स्पष्ट ।
तुलसी अपने रामको, रोभ भजेके खीज । खेत
पड़े सब ऊरजे, उल्टे सीधे बीज—स्पष्ट ।

भाव कुभाव अनख खालसह,
राम अपत मंगल दिश दमह ।

तुलसी इक दिन वे हुते, मांगे मिलै न चून ।
रूपा भई भगवान की, लुचई दोनों जून—स्पष्ट ।
तुलसी कहत पुकारके, सुनो सकल दे कान ।
हेम दान राज दानसे, बड़ी दान सनमान—स्पष्ट ।

रहिमन मोहि न गुहाय श्री पियावे मान बिगु,
वह विष देर तुलाय मान महित मरिचो भलो ।

तुलसीके पत्तेमें कौन छोटा कौन बड़ा—
सभी समान हैं । जहां कई मालिक हों, वहां क० ।
तुलसीचंदन बिटप वसि, विप नहिं तजत भुजंग ।
नीच निचाई नहिं तजे, जों पावे सत संग—जब
कई अछ्दी संगतमें रहकर भी न छपरे, तब क० ।
तुलसी छल छल छांडके, कीजे राम सनेह ।
अंतर पनिसे है कहा, जिन देखी सब देह—
स्पष्ट ।

तुलसी जगमें आयके, अवगुन तज दे चार ।
चोरी जारी जामिनी, और पराई नार—स्पष्ट ।
तुलसी जगमें आयके, सीध ऊखसे लेव ।
जो तुमको अनरथ करे, वाको रस तुम देव—
स्पष्ट ।

तुलसी जपे तो राम जप, और नाम मत ले ।
राम नाम शमशेर है, जमके तिरमें दे—स्पष्ट ।
तुलसी तहां न जाइये, जहां न वर्ण विवेक ।
रांग रूप रूआ भुआ, सेत सेत सब एक—
रांगा, चांदो, रहै, और घास का फूल, सब ही
सक्रेद होते हैं, यद्यपि इनके गुणोंमें बहुत अन्तर है ।
तुलसी तहां न जाइये, जहां जनम को ठाम ।
गुण औगुण जाने नहीं, धरो पाछिलो नाम—

जन्मभूमिमें आदर नहीं होता । तुलसी दास जी
जय रामार्यण आदि बना चुके और भारत भरमें
महात्मा करके प्रसिद्ध हो चुके थे, तब एकवार वह
अपने गांव में गये । वहां सब लोग कहने लगे, कि
तुलसिया आया । इसीपर उन्होंने यह दोहा
कहा है ।

तुलसी दया न छांडिये, जब लग घटमें प्राण ।
कयहं तो दीन दयालके, भनक पड़ेगी कान—
दयाका महात्म कडा गया है ।

तुलसी धीरजके धरे, कुंजर मन भर खाय ।
टूक टूकके कारने, कुत्ता घर घर जाय—स्पष्ट ।
तुलसी पर घर जाय के, दुःख न कहिये रोय ।
भरम गवांवे आपनो, बांदिन लैहैं कोय—
कोई कोई इस दोहे को रहिमन का क० ।

तुलसी प्रतिमा पूजियो, ज्यों गुड़ियोंका बिल ।
भेंट भई जब पीउसे, धरो पिटारी मेल—स्पष्ट ।
तुलसी धिरवा वाग में, सींचत हू कुम्हिलाय ।
राम भरोसे बैठिके, पर्वत पर हरियाय—स्पष्ट ।
तुलसी भरोसे रामके, लिये पाप भरि मोट ।
ज्यों व्यभिचारी नारिको, बड़ी खसमकी ओट—
स्पष्ट । जो पुन्यकी ओटमें पाप करते हैं, उन्हें क० ।
तुलसी मीठे बचन से, सुख उपजे चहु ओर ।
घसी करन यह मंत्र है, तजि दे बचन कठोर—
स्पष्ट । बहुत बचन न कहनेके लिये क० ।

तुलसी मूर्ख न मानहीं, जब लग खता न खाय ।
जैसे विधवा इसतरी, गर्भ रहे पलताय—स्पष्ट ।
तुलसी या संसार में, पाखंडी को मान ।
सीधों को सीधा नहीं, झूठों को पकवान—स्पष्ट ।
तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार ।
साधूमिलन अरु हरि भजन, दया धर्म उपकार—
स्पष्ट ।

तुलसी या संसारमें, सबसे मिलिये धाय ।
ना जाने किस भेषमें, नारायण मिल जाय—स्पष्ट ।
तुलसी रामकी भक्तिबिन, धिक दाही अरु मूछ ।
पशू गढ़न्ते नर भयो, भूल्योसींग औ पूछ—स्पष्ट ।
तू कर अपना काम तबालिया भूकन दे—(प०)

अपना काम करो कुत्तोंको भौंकने दो ।
तू कहे सो सच, बुड़्ढी तू कहे सो सच्च्य—
 जब कोई मनुष्य सरासर झूठ बोलता हो, उस समय उसकी यातको भठी न कढ़ कर व्यंगसे सच्च्यो बताये, तब क० ।
 इसपर एक कहानी है:—किसी समय होलीके दिनोंमें कई बोरोंमें एक बुड़ियाके घरकी सभ बच्चों लूट लीं, और उसे कभेपर बुदाकर राखी राखी घुमाते फिरि । बुड़िया नो चिन्ता चिन्ता कर यह कहती थी, कि इन्होंने मुझे लूट लिया, पर बीहे उसकी बात बनसुनी करनेके लिये इस मसनकी कहने जाते थे । होलीका भवसर आन लोगोंने इसे भी एक खंग समझा और इसपर कुछ ध्यान न दिया ।
तू खोल मेरा मकाना, मैं घर संभालूं अपना—
 (मु० ज०) जब कोई यह सहराल में आते ही घरपर अपना झुंजा करले, तब क० ।
तू गधो कुम्हार की, तुझे राम से फौध—
 जब कोई तुच्छ मनुष्य ऐसी बातमें दखल दे जिसमें बोलने सायक बंध न समझा जाय, तब क० ।
तू गोर खोद मोकों, मैं गाड़ आऊं तोकों—
 स्पष्ट । पूरा बदला सुकानेके लिये क० ।
तू चाहे मेरी जाईको, मैं चाहुं तेरे खाटके पायेको—
 (ज०) सास का कहना जमाई से । यह सूचित करनेके लिये कही जाती है कि तुम हमारे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो हम भी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे ।
तू चूना फर में तेरा पार कट्या—खेप है । तू चूं मत कर मैं तेरा पार क्य था ।
तू डाल डाल मैं पात पात—यह सूचित करने के लिये कही जाती है कि हम तुम्हारी चालोंको खब समझते हैं ।
तूती चुगे तो ऊंच चुग, नीच चुगन मत जा । फुले लजावे आपने, कहे अकधर साह—
 यदि अवीगता ही स्वीकार करनी हो तो किसी अच्छे की करो, ओढ़े का पहरान कभी न उठाओ ।
तूती पाले बूतियां, और आशक पाले लाल । क्यूतर पाले चोट्टा, जो तके पराया माल—
 स्पष्ट । क्यूतरयाज अक्सर दूसरोंका क्यूतर फँसा

लेते हैं, इसी लिये क० ।
तू तेलीका बैल,तुके क्या सैल,लगा रह घानीसे—
 जो रात दिन काममें लगा रहता है, उसे क० ।
तू देवरानी मैं जेठानी, तेरे आग न मेरे पानी—
 स्पष्ट ।
तूने फीती रामजनी, मैंने कोता रामजना—
 (प०) छोकी पट्टकार अपने परछोगामी स्वामीके प्रति ।
तू भी रानी, मैं भी रानी, कौन भरेकूपका पानी—
 आलसी स्त्रियोंको कही जाती है जब वे घरका काम नहीं करतीं ।
तू मुझको, तो मैं तुझको—समान व्योहारके लिये क० ।
 “ मन तुरा हाओ बगीधम तू मरा हाजी वनी ”
तू मेरा लड़का खिला, मैं तेरी खिचड़ी पकाऊं—
 ऊ० दे० ।
तू मेरी जिकरमें, मैं तेरो फिकरमें—ऊ० दे० ।
 जब कोई किसीकी बदनामी करे और वह भी उसको हानि पहुँचाने की फिक्र में हो, तब क० ।
तू मेरे बालेको चाहे, तो मैं तेरे वूढेको चाहूँ—
 दे० ‘तू मुझको’
तूल, तेल, तापना, पूस माघ है आपना—
 रईके कपड़े, तेल और तापने को मिले, तो एस माघ अपना ही है ।
तू सच्चा, तेरा पीर सच्चा—सच्चे आदमीको क०
 कभी कभी व्यंगसे भटेको भी क० जब वह अपनी बात सत्य करनेके लिये हठ करता हो ।
तेज़ घोड़े को पड़ी फौसी ?—उसके लिये पड़ी लगाके चलाना बुधा है । जो नौकर इयारेसे काम करे उसे न धमकावे ।
तेतरी घेंटो राज रजावे,तेतरा घेंटा भीख मंगावे—
 दो लड़कोंके बाद यदि लड़की हो तो अच्छा, दो लड़कियोंके बाद लड़का होतो अच्छा नहीं ।
तेते पांच पसारिये, जेती लांशी सौर—(बृन्द)
 समाई अतुसार काम करना चाहिए । जब कोई वित्तले वाहर काम करता हो, तब क० ।
तेरा किया तेरे आगे आवे—भाप देना है ।

तेरा ढका रहे मेरा थिक जाय—(व्य०) स्वार्थी
को क० ।

तेरा पानी मैं भरूँ, मेरा भरे कहार—(ज०) आत्म-
श्लाघापर क० ।

तेरा पी तो मैं बसे, ज्यों पत्थरमें आग । देखा
चहे दीदारको, चक्रमक होके लाग—स्पष्ट ।

तेरा माल, सो मेरा माल, मेरा माल सो हैं हैं—
स्पष्ट । जो दूसरे की चीज़को अपनी समझे, पर
अपनी चीज़ दूसरेको न दिया चाहे, उसपर क० ।

तेरा हाथ और मेरा मुंह—(ज०) कमाथो और मुझे
खिलायो । स्वार्थ ।

तेरा है सो मेरा था वराय खुदा टुक देखने दे-
(मु० ज०) साहका कहना बहुके प्रति जिसने पूरी
तरहसे उसके लड़केको (अपने स्वामीको) वशमें
कर लिया हो ।

तेरी आन या तेरे गुसइयां फी—न तेरा डर है न
तेरे मालिकका । सिर चढ़े नौकरको क० ।

तेरी करनी तेरे आगे, मेरी करनी मेरे आगे—
जब कोई मनुष्य किसी ऐसेके साथ नेकी करता है,
जो सदा उसके साथ बढ़ी करता आया हो, तब क०

तेरी कुदरतके आगे कोई जोर किसीका चले
नहीं, चींटीपर हाथी चढ़ बैठे तब वह चींटी
मरे नहीं—स्पष्ट ।

चींटीके पाँवमें बांध गरदहि चाहे समुद्रके पार भगावे ।

(देव)

तेरी जो तेरी दरांती चाहे जैसे फाट—दे० “तुम
जानो तुम्हारा काम”

तेरे धँगन मेरी छाछ—जब कोई अपनी थोड़ी चीज़
के बदले दूसरेकी बहुत चाहे, तब क० ।

तेरे मेरे सदक़ों में उसकी जोरू पेट से—नपुंसक
की व्यभिचारिणी स्त्रीपर क० ।

तेलकी जलेयी मुभा दूरसे दिखाय—(मु० ज०)
जब कोई आशा तो बहुत दे, पर कुछ करे नहीं,
तब क० ।

तेलकी मिठाई, देखनेमें अच्छी पर खानेमें घुरी—
जो चीज़ देखनेमें भड़कीली पर टिकाऊ न हो,
उसपर क० ।

तेल जल चुका—माल उड़ गया अथ खर्च के लिये
भी कुछ नहीं है ।

तेल जले घी, घी जले तेल—तेल जलनेसे घीके
तुल्य, और घी जलनेसे तेलके तुल्य होता है ।

तेल डाल कमलीका साभा—जब कोई आदमी
किसीसे कोई काम कराता है और वह अपनेको
उसका हिस्सेदार समझने लगता है, तब क० ।

किसी गड़ेरियेके एक कम्बल तैयार कर उसे चिकना
करने के लिये दूसरे आदमीसे उस पर, तेल मलनेको
कहा । जब उसने तेलसे कम्बलको चिकना कर दिया,
तब बोला कि इस कम्बलमें मेरा भी साभा है, क्योंकि
इसे चिकना करनेका काम मैंने ही किया है ।

तेल तिलों ही मेंसे निकलता है—(व्य०) दे०
“तिल रहे तो तेल निकले”

तेल देखो तेलकी धार देखो—हर एक कामको
धीरजके साथ सोच समझकर करो ।

किसी राजकुमारके चार मित्र थे, सिपाही, पुरोहित,
जंठ धाँकने वाला और तैली । पिता के मरनेपर जब
वह गद्दीपर बैठे, तो उन चारोंको अपना मंत्री बनाया ।
जब दूसरे राजाोंने उसे ऐशमें डूबा और निकम्मे मंत्रियों
से घिरा हुआ पाया, तो उसपर चढ़ाई कर दी । राज-
कुमारने अपने चारों मंत्रियोंको बुलाया और इस चारोंमें
सबको अपनी अपनी राय देनेकी कहा । जो सिपाही
या उसने तुरत युद्ध करनेको कहा । पुरोहितने कहा,
जैसे बने सन्धि कर लो । जंठवानने कहा, देखिये
जंठ किस करवट बैठता है । इसीका समर्थन करते
हुए तैलीने कहा, घबड़ाइये नहीं, अभी तेल देखिये
तेलकी धार देखिये अर्थात् जल्दी न कीजिये ।

दिरदै धीर धरो सुकमारि, ज्यों पिय नेह कियो परमारि ।
लोग कहाउत यह निरधार, देखो तेल तेल की धार ।

(शिवा लो० २० कौ०)

तेल न मिठाई, चूल्हे धरी कढ़ाई—बिना सामान-
के कोई काम करनेको तैयार हो, तब क० ।

तेलनसे क्या धोवन घाट, इसके मूसल उसके
लाठ—(ज०) जहाँ दोनों ही खराब हों कोई किसीसे
कम न हो, यहाँ क० ।

तेलीका काम तमोली करे, चूल्हेमें आग उठे—
दे० “जाको काम बाहीको साजे ।”

तेलीका तेल गिरा हीना हुआ, घनियेका नोन गिरा दूना हुआ—तेल गिरा तो जमीन सोल गई और नोन गिरा तो उसके साथ मट्टी मिल गई जिससे बज्र बढ़ गया।

तेलीका तेल जले, मसालाचीका दिल जले—जब एकको खच करते देख दूसरेका दिल दुखे, तब क०।

तेलीका तेल, भगत भैयाजीकी—जब काम करे एक आदमी और नाम हो दूसरेका, तब क०। तेलीने तो तेल मंदिरमें जलानेको दिया, पर नाम पुजारीका हुआ। दे० "खेल खिलाड़ीका भगत।"

तेलीका घैल लेके, कुम्हारान सती होय—(५० ज०) मट्टी सल्लो घण्पो दिवाने पर क०। हाथ हाथ करिके पड़ताय पांशु भरिके कहे, लेके रैल तेलीको कुम्हारान सती भई। (ज० २०)

तेलीका घैल हो गया—जो रात दिन मेहनत करता है, उसको क०।

तेलीके घर तेल तो चुपड़े नहीं पहाड़—कोई अपना माल छुटा नहीं देता।

तेलीके तीनों भरे, और ऊपरसे टूटे लाठ—दोनों बल और तीसरा हांकनेवाला। जिससे अपना कोई प्रयोजन नहीं वह भले ही मर जाय।

तेलीके घैलको घर ही कोस पचास—जिसे घरमें रहकर भी दिन रात काम करना पड़े, उसे क०।

फिरत घकी ही रहत नहीं, मानिनि मान सवास। क्या तेलीके घैलको, घरहीं कोस पचास। (बी०२०की०)

तेली हासम करा और रुला खाया—(मु० ज०) जबकोई बड़ेका आसरा लेकर भी कष्टमें रहे, तब क०।

खान सनेह नाम विद्यान, पियसी भगवार्थ न सुहात। सुगो पवानो पधरत्र भाय, कर तेली पति दखो खाय। (जे० २० की०)

तेली जोड़े पली पली, रहमान लुढ़ावे कुप्पे—

(१) जब कोई कृपण बहुत कष्टसे थोड़ा थोड़ा करके धन संघय करे और एक ही काम ऐसा आन पड़े कि उसका सब धन निकल जाय, तब क०। (२)

जब दूसरेका धन खच करते किसीको दर्द नहीं होता, तब क०। (३) जब घरमें एक कमनिवाला और दूसरा सुटानेवाला हो, तब भी क०।

तेली रोवे तेलको, मकसूदन रोवे छलीको—सबको अपने अपने स्वार्थकी पड़ी रहती है। मकसूदन तेलीके नौकरका फर्जी नाम है।

तेरगा सो हूवेगा—सप्ट।

तोको न भुनाऊं, तेरा भइया और वंघाऊं—(५०) कंजसको क०।

कोई पूर्णिया एक रूपया भुनानेके लिये बाजारमें गया। रूपया भुनाने उसके मनमें बहुत कष्ट होता था। इस तरहसे वह कई दूकानोंमें घूमता फिरा, पर रूपया उसके हाथसे न कोड़ा गया। जब उसके हाथमें पसोना था गया, तब उसने समझा, कि रूपया मेरी जुदाईके लिये रीता है। इसीपर उसने वह मगल कही।

तोड़ डाल तागा, तू किस भडुवेके मुंह लगाया—(मु० ज०) तागा विवाह सूत्रको कहते हैं। जब कोई स्त्री विवाह होते ही कृपण गामिनी हो, तब क०। किसी खोटेका साथ छोड़नेके लिये भी क०।

तोड़न आये चारा, और खेतपर इजारा—असंगत दावेपर अथवा बेजा कृत्रुं पर क०।

तोते कौसी आखें फेर लेता है—इसीको तोते-चम भी कहते हैं। जिसे दया माया नहीं होती, उसे कहते हैं। तोतेको चाहे कितने ही प्यारसे पालो, पर वह ज्योंही मौजूद पाता है त्यों ही उड़ जाता है।

तोरी बगत बगत घनि जाई, तू हरिसे लगा रहू माई—सप्ट।

तेलीके पेटमें घुंगची—घड़ेमें छोटा समता है।

तेले भरकी आरसी, नागी बोले फारसी—अत्युक्ति वा लम्बी चौड़ी बात पर क०।

तेले भरकी चार कचौड़ी, खुरमा मासे दाईका, घरमें रोवे घदिन मानजी, याहर रोवे नाईका। धीरे धीरे जीमो पंचों, देखो गजब खुदाईका।

लालाजीने ब्याह रखाया, लहना घेच लुगाईका—

किसी गरीब या कंजसके यहाँ ब्याह हो, तब क०। तोले भरकी तीन चपाती, फहे जिमाने चालो हाथो—दे० "छटांक संतुग्रा मथुरामें भंडारा।"

तो सम पुरुष न मो सम नारी, यह संयोग विधि रचा विचारी—(तुलसी) सूपनखाका कहना

लक्ष्मणजीते। जोड़ा मिलनेपर क०।

तोसा, सो भरोसा—गांठमें जमा रहे, तो दातिर जमा रहे।

तौबह कर बंदे इस गंदे रोज़गारसे—जब कोई ऐसा काम करे जिससे बदनामी होती हो, उसे छोड़नेके लिये क०।

तौबह बड़ी सिपर है गुनहगारके लिये—दोषी मनुष्यके लिये पश्चात्ताप ढालका काम करता है।

त्रिया चरित्र और चोरकी घात, पार पढ़ेना, कह गये नाथ—त्रियाचरित्र और चोरकी घातका कोई पता नहीं पाता।

थ

थकल पैराकू फेन चाटे—(पू०) थका तेराक फेन चाटता है। जब किसी मनुष्यकी सारी सम्पदा नष्ट हो जाती है, और बाध्य होकर थोड़े पर सन्तोष करना पड़ता है, तब क०।

थका ऊंट सराय ताकता है—दिन भरके परिश्रम के बाद मनुष्यको अपना घर याद आता है।

थके बैल गौन भई भारी, अब फना लादोगे व्यौपाड़ी—जब शरीर थकता हो जाता है, तब क०।

थाली गिरी भनकार सयने सुनी—किसी घटनाके होनेपर जब खबर चारों ओर फैल जाती है, तब क०।

थाली परसे भूका नहीं उठा जाता—स्पष्ट।

थाली फूटी न फूटी, भनकार तो सुनी—

(१) किसीपर भूटी तोहमत लगाना। पहले कहा, कि इसने थाली तोड़ दी, जब थाली साबुत दिखा दी गई, तब कहा थाली चाहे टटी हो वा न टटी हो, मैंने गिरनेकी आवाज़ तो सुनी है। (२) जब दो मनुष्योंमें बिगाड़ हो जाता है, तब भी क०। कहनेका तात्पर्य यह है, कि चाहे वे जुड़े हो जाय वा न हों पर बिगाड़ हो गया है, यह सब जानते हैं। भाई भाई या साम्नीदारोंके विषयमें क०।

था सोच जो कुछ अटवल, वही आखिर पेश आया—जिस बातका पहलेसे संदेह हो, वही सामने आये, तब क०।

त्रिया चरित जाने नाकोई, खसम मारके सत्ती होई—स्पष्ट।

त्रिया चरित्र पुरुषस्य भाग्यं दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः—(सं०) कियोका चरित्र और पुरुषोंके भाग्यका हाल कोई नहीं कह सकता। पूरा श्लोक इस तरह है :—

“शुभस्य चित्तं कृपयस्य चित्तं, मनोरथं दुर्जनं वादवानाम्।
त्रिया चरिवं पुरुषस्य भाग्यं, दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

त्रिया पुरुष विनु है दुखी, जैसे अन विनु देह। जले बले है जीवड़ा, ज्यों खेती विनु मेह—स्पष्ट।

त्रिया सके नहिं घात पचाय—आरतके पेटमें बात नहीं पचती।

थुरमोल और उधार—जब कोई थोड़े दाममें ज्यादा दामकी चीज लिया चाहे, तब क०।

थूककर चाटना—कहकर मुकर जानेपर क०।

थूक दाढ़ी फिट्टे मुंह—(पं०) किसीको लानत देनी हो, तब क०।

थूक बिलोना—बेहूदा बात बकना।

थूको सत्तू नहीं सनता—थोड़े खर्चेसे बड़ा काम नहीं हो सकता।

थैलियाँ सिला लाओ—जब कोई रुपया मांगता हो और उसे न देना हो, तो हँसीसे क०।

थैली चोट बानियाँ जाने—धनकी हानि बानियेको ही बहुत आबती है।

थैलीमें रुपया मुँहमें गुड़—पास धन हो और ज़बान मीठी हो, इन्हीं दोसे मनुष्य छली होता है।

थोड़ मोलकी कामली, फरे बड़ोंका काम। महमूदी और वाफता, सबके रखले मान—स्पष्ट।

थोड़ा आपको, बहुत ग़ैरको—(१) जो अपने घरवालोंके साथ तो कम सलूक करे पर याहरवालोंके साथ अधिक करे, उसे क०। (२) जो व्यवसायी थोड़ा अर्थात् अपने क़र्ज़ेका काम करता है वह तो अपने लिये करता है और जो बहुत अर्थात् वित्तके बाहर काम करता है वह दूसरोंके लिये करता है

पहिलेका किया हुआ मुनाफ़ा उसीके पास रहता है और पिछलेका दूसरे खा जाते हैं।

थोड़ा करें गाज़ी मियां, बहुत करें डफ़ाली—जब किसी साधू वा महात्माके चेले उसके महात्मको बहुत अधिक बढ़ाकर कहते हैं, तब क०।

गाज़ी साखार उर्फ़ गाज़ी मियां, जिनका स्थान अवधके बहरावरव शहरमें है, महसूद ग़ुज़नबीके भतीजे थे, जो वहाँ सन् १०३१ ई० में विद्वानियों द्वारा मारे गये थे। इनकी गिनती बड़े पीरोंमें है।

थोड़ा खाना इज्जतसे रहना—जब कोई खाने पीनेमें अधिक लूच करे, तब नसीहतके लिये क०।

थोड़ा खाना जवानीकी मौत—थोड़ा खानेसे मनुष्य दुबल होकर जल्दी मर जाता है।

थोड़ा खाना और बनारसमें रहना—धार्मिक हिन्दूकी यही इच्छा रहती है। प्रायः ऐसे मौकेपर कही जाती है, जब कोई थोड़ी आमदनीसे संतुष्ट होकर घरमें रहना पसन्द करे, पर अधिककी उम्मेद होनेपर भी विदेश न जाना चाहे।

पतिषे पति दुइलोक बलागै, कुलटा का वा सरकी जाने।
शोग छति यह मनमें गभिये, शीरा खाय बनारस बसिये।

थोड़ा माल खाय दूकानदारको, बहुत माल खाय गाइफको—(व्य०) बहुत माल देखकर गाइफ रोबमें आ जाता है और जल्दी पट जाता है; थोड़ा माल रहनेसे मुनाफ़ा कम होता है और लूचके मारे दूकान-

दारका दिवाला निकल जाता है।

थोड़ी आस मदारकी, बहुत आस गुलगुलोंकी—जो कोई प्रसादके लालच मन्दिरमें दर्शन करने जाय, उसे क०।

शाह मदारकी गिनती पड़े पीरोंमें है जो सन् १४१२ ई० में मरे हैं। उनको दरगाह मखनपुरमें है। जब वहाँ मेला होता है, तब गुलगुली बँटते हैं। पीर साहबकी भक्तिके लिये तो लोग कम जाते हैं पर गुलगुलीके लालच बहुत। इसीलिये यह मसल क०।

थोड़ी पूंजी खसमों खाय—(प० व्य०) दे० “थोड़ा माल खान दूकानदारको”।

थोड़े धनमें खल इतराय—दे० “आध सेरके पात्रमें कैसे सेर समाय।”

खद नदी अस चलि इतराई,

जिमि धोरे धन खल बीराई।” (तुलसी)

थोड़ेसे बहुत होता है—जब कोई थोड़े धन वा कामसे संतुष्ट नहीं होता, तब उसे बढ़ावा देनेके लिये क०।

थोड़ेहिमें जानिये सयाने—(तुलसी) जो सयाने हैं वे थोड़े हीमें समझ जाते हैं।

थोथा चना, वाजे घना—जो आदमी कुल्ल कर नहीं सकता, वह चकता बहुत है।

थोथे फटके उड़ उड़ जायें—पोला वा घुना हुआ अनाज फटकेसे उड़ जाता है। मूर्ख वा भूठे जांच करनेसे नहीं ठहरते।

द

दंडासी पूंछ बुढ़ानेका रास्ता—जब कोई किसी कामके अयोग्य हो, तब क०। बुढ़ानेका रास्ता मरुमय होनेसे चलनेमें कठिन है। दण्डासी पूंछ पूड़े बैलकी होती है।

दक्खन गये न वाहुरे, रहे चंदेरी छाया—जब कोई अपना घर छोड़कर बहुत दिन विदेशमें रह जाय, तब क०। औरतज्ञेयकी फौज दक्खन जाते समय १२ वर्ष तक चन्देरीमें पड़ी रही थी।

दगा किसीका सगा नहीं—दगावाज़ किसीको भी दगा करनेसे नहीं छोड़ते।

दहा नहीं पड़े हैं, लल्ला पड़े हैं—देना नहीं जानते

लेना ही जानते हैं। नादिहन्द और कंशुसको क०।

दानको चबैना खाँसो दोधा सों चिराय कहीं

दियवेके डरते सो ददा ना कहत हैं। (चाँरीराम)

दयक शीरेके मटकेमें—जब कोई बड़े आदमीकी ख़शामदमें रहता है, तब क०।

दयतेको सय दयाते हैं—स्पष्ट।

दया पाई गुज़री “गहरा घासन लाओ”—किसीको दया जानकर न्यायसे अधिक पसूल करनेपर क०। गुज़री=ग्यालिन।

दया यनियां पूरा तोले—इरा हुआ बनियां पूरा सौलता है।

दवा हाकिम मद्दकूमके तावे—रिखतखोर हाकिम
 व अपने मुलाज़िमोंसे भी दवता है ।

दबी बिह्ली चूहोंसे फान कटाय—कोई बलवान
 यदि क्रूरवार हो, तो निर्बलकी भी घातें सहता है ।

रिखतखोर अफसर जब अपने मुलाज़िमोंसे दवता
 है वा कोई कनौड़ा आदमी दूसरोंकी घातें छगता
 है, तब क० ।

दवेपर चींटी भी चींट करती है—सतानेसे दुर्बल
 भी बदला लेता है ।

दवेपर सध शेर है—जो दवता है उससे सभी ज़य-
 दर्स्त वन जाते हैं ।

दमका क्या भरोसा आया न आया—ज़िन्दगीकी
 अस्थिरतापर क० ।

दमड़ीका पान पिटरियामें, मेरी तेरी घात अट-
 रियामें—मुफ़लिस ऐश्याखोंपर क० ।

दमड़ीकी अरहड़, सारी रात खड़खड़—(ज०)
 ज़रासे कामको बहुत करके दिखाये, तब क० ।

दमड़ीकी गुड़िया टका डोलीका—गरीबके ब्याहके
 समय क० ।

दमड़ीकी घोड़ी छः पसेरी दाना—जितनेका माल
 न हो उससे ज़्यादा उसपर खर्च पड़े, तब क० ।

दमड़ीकी दाल, आपही कुटनी आप ही छिनाऊ-
 जब चीज़ इतनी थोड़ी हो, कि एकका पेट भी न
 भरे, तब दूसरेको कहाँसे दे ।

दमड़ीकी निहारीमें टाटके टुकड़े—(मु० ज०)
 सूमके खानेको क० ।

दमड़ीकी पाग, अधेलीका जूता—उल्टाकाम कर-
 नेपर क० । जूतेसे पगड़ीकी क्रोमत अधिक होनी
 चाहिये ।

दमड़ीकी बुड़िया, टका सिर मुड़ाई—दे० “दम-
 ङीकी घोड़ी”

दमड़ीकी बुलबुल, टका हलाली—काम थोड़ा
 निकले और खर्च अधिक हो, तब क० ।

जहं देखहु निज अधिक बिगार,

खधु नामहु कर तशहु बिचार ।

नहिं यह बुझिमानकी चाम,

“दमड़ीकी बुलबुल टका हलाल ॥” (खो० १०

दमड़ीकी मुरगी, नौ टका निकियाई—ज० दे० ।
 दमड़ीकी लाई, बनेनी खाय, यह घर रहे कि
 जाय—बनियोंकी कृपणतापर क० ।

दमड़ीकी सूई, और सवा मनका मलीदा—थोड़ेसे
 लाभके लिये बहुत खर्च करनेपर क० ।

किची दर्ज़ीकी एक सूई खी गई । उसने मन्नत मानी,
 कि या पीर साहब ! अगर मेरी सूई मिल जाय, तो मैं

सवा मनका मलीदा चढ़ाऊँ । यह सुनकर एक मनुष्य
 बोला, कि एक सूईका दाम ही कितना होगा जिनके

लिये सवा मनका मलीदा चढ़ायोग ? दर्ज़ीने उत्तर
 दिया, कि यदि मेरी सूई मिल जायगी तो सब पीरोंकी

दगा दूँगा ।
 दमड़ीकी हँडिया गई, कुत्तेकी जात पहचानी
 गई—जब कोई थोड़ीसी चीज़के लिये बेईमानी करे,

तब क० ।
 लाज खाने कहत वनै मा बिना कहे वात,

वाति जानी, कुत्तेकी चाँड़ि गई दमरीकी (उ० प०)
 (उड़बके प्रति-शोषियोंका कष्टना) ।

दमड़ी पास न लखपत राय—(घ०) नामके अनु-
 सार गुण न हो, तब क० ।

दमदमेंमें दम नहीं, अथ खैर मांगो जानकी ।
 यस ज़फ़र अथ हो चूकी, शमशेर हिन्दुस्तानकी—

निराश अवस्थामें क० ।
 दिन्हीके चानिमें बाइगाह महादुर गाह जर सन् १२५०

के गदरमें अंगरेज़ों द्वारा पकड़े गये थे, तब उन्होंने
 किन्ही बाहर निकलते समय उपरोक्त गैर कहा था

दम नहीं चदनमें, नाम ज़ोरावरख़ाँ—नामके अनु-
 सार गुण न हो, तब क० ।

दम घना रहे, फूंक निकल जाय—आयीवाँद और
 श्राप एक साथ ।

दममार यार किसके, दम लगाया खिसके—
 गंडेड़ी और चरसवाज़ोंको क० ।

दममो ढेर कि हड्डो ढेर—(प०) दे० “दामो ढेरो”
 दया धर्मको मूल है, पाप मूल अभिमान ।

तुलसी दया न छाँड़िये, जब लग घटमें प्रान—
 दयाके महात्मपर क० ।
 दया धर्म नहिं तनमें मुखड़ा क्या देखे दर्पनमें—

ज० दे० ।

दरयाकी कूजेमें भरना—थोड़े शब्दोंमें बहुत कहना। असंभव काम करनेकी कोशिश करना।

दरयापर जाना, और प्यासे आना—मूर्खतापर क०। जब कोई धनकी इच्छासे किसी धनवानके पास जाय, और खाली फिर आवे, तब भी क०।

दरयामें रहना, और मगरमच्छसे घेर—जिसका आश्रित होकर रहें उसीसे दुग्मनी करे, तब क०।

कहा कही मखि दही सुकाम,

लाज रोकि राखत बहु धाम।

कहो कदाचित् त्रिभि बहु घैर,

भविषी विंधु मगरघों वैर। (मध्या०भो०र०कौ०)

दरवाजेपर आई बरात, समधनकी लगी इगास—दे० “येड़े आई बरात”

दरस परस मउजन अरु पाना, हरे पाप कइ बंद पुराना—(तुलसी) गंगाजलका महात्म है।

दरोगको फरोग नहीं—भूटा फलता फूलता नहीं।

दरोग गो को हाफिजा नहीं होता—भूटेकी स्मरण शक्ति नहीं रहती।

दर्जीका क्या कूच और क्या मुकाम—दर्जीको अपने कामके लिये विशेष सामान नहीं रखना पड़ता, इसलिये क०।

दर्जीकी सूई कभी ताशमें कभी टाटमें—(व्य०) सीनेसे काम, जैसा कपड़ा धाया सी दिया। व्यवसायी मनुष्यका कहना है, जिसे व्यवसायसेही काम है चाहे किसी तरहका हो तथा लाभ अधिक हो या कम।

दर्दको वह समझे जो खुद दर्दमन्द हो—स्पष्ट।

दर्शन मोटा, पैडा खोटा—श्रीब्रह्मीनायजीकी यात्रापर क०।

दलालका दिवाला क्या, मसजिदमें ताला क्या—दलालके घरकी पूजा नहीं होती, इसलिये उसका क्या दिवाला निकलेगा और मसजिदमें धरा हो क्या है जो उसमें ताला लगाया जाय।

दलिदर घरमें नोन परवान—(ज०) स्पष्ट।

दयसी सो हारसी—(मा० व्य०) जो दवेगा उसकी हार होगी। कोई कोई हम तरह भी कहते हैं “दयसी सो हारसी यही मियाँकी फारमी”

दवा और दुधा दोनों—जब एक साथ दोनों काम सधें, तब क०। दवा भी हो और ईश्वराराधन भी हो।

दवाकी दवा, और गिजाकी गिजा—ऊ० दे० ऐसी चीजको कहते हैं जिसके खानेसे दवाका भी काम हो और घेठ भी भरे।

दस नकटोंमें नाकवाला नक्कू—जैसोंके साथ रहे उन्हींकीसी चाल चले। दस नकटोंमें जब कोई नाकवाला जाता है, तो वे कहते हैं “नक्कू धाया” नक्कूके दो अर्थ हैं; यदनाम और यड़ी नाकवाला।

दसों उंगलियां घीमें—जिसे सब तरहसे फायदा हो उसे क०।

दसों उंगलियां दसों चिराग—(मु० ज०) जो सब तरहसे होशियार और काम करनेवाली हो, उसे क०।

दस्त धम गये तो दुखार आया—जब एक आश्रत के जाते ही दूसरी धा जाय, तब क०।

दस्तरखवान की बिल्ली (वा मक्खी)—मुफ्तखोर, दूसरेके सिर खानेवाला, पुशामदी। जो मनुष्य बिना हुलाये हर जगह जाफतमें पहुँच जाय, उसे कहते हैं।

दस्तार, रफ्तार, गुफ्तार जुदो जुदी—पगड़ी बांधना, बोलनेका तरीका और चलनेका ढंग सबका जुदा जुदा होता है।

दहदर दुनियां सहदर बाकिरात—(मु०) इमलोक में दस देनेसे परलोकमें सौ मिलता है। सुसलमान फ़कीरोंका कहना है।

दहना घोवे घायेंको, और वायां घोवे दहनेको एकका काम बिना दूसरेके सहारे नहीं चलता।

दहने सुर भोजन करे, बायें पीवे नीर, बायाँ करघट सोइये, तब सुख होय शरीर—स्पष्ट।

दहीका गवाही चूड़ा दोनोंका मेल है।

दहीकी फुट्टी, जिन पाई तिन लुट्टी—(प०) स्पष्ट।

दहीके धोखे चुना थाया—(व्य०) छपाये जाना। अच्छी समझके बुरी चीज लेना।

दही बेचन चली पीठ पिछाडू कमोइया—(ए० घा० ज०) सिंगपर रखनेमें गमांती है। बेवज्रा काम करनेपर क०।

दही भातका मूसल—निष्प्रयोजन घातपर क० । दही भात दोनों ही मुलायम हैं इनके लिये मूसलकी जरूरत नहीं ।

दाईकी दोस्ती पोतनोका प्यार—दे० “कोयलेकी दलाली”

कोई शौकीन एक दाईसे आशनाई करने गया । दाई उस वक्त चौका लीप रहीं थी । जब उस आदमीने दाई से दिल्लीगीकी, तब उसने प्यारसे पोतना उसके सुँघपर कर दिया ।

दाई चमेलीके मिरजा मोगरा— जो नीच मनुष्य अपनेको ऊँचा करके प्रसिद्ध करे, उसे क० । चमेली और मोगरा फुलोंके नाम हैं और मनुष्योंके नाम भी होते हैं ।

दाई जाने अपनी दाई—दाई ही अपना दुख जानती है, क्योंकि उसे प्रसूतीकी बहुत सेवा करनी पड़ती है । दाईसे पेट नहीं छिपता—जब कोई ऐसे मनुष्यसे अपनी बात छिपाता है जिसका सब भेद वह जानता हो, तब क० ।

सुरति चिन्ह किमि दुः सुनारि ।

नेक कपट पट सुखते टारि ॥

लोग चक्रि जिमि जगम दिपे ।

दाई सों कों पेट जु छिपे ॥ (लो० २० कौ०)

दांत बाते भी दुःख दें, जाते भी दुःख दें—

दांत निकलते समय बच्चोंको बहुत कष्ट होता है और जब गिरनेको होते हैं, तब भी बहुत पीड़ा होती है ।

त्रिन दांतोंसे संसते धे हमिया, खिल-खिल ।

अब दईसे ऐ बड़ी रुताते, हिल-हिल ॥

पीरीमें बहानं, अब वह जवानीके मज्जु ।

ऐ जीक, बुदापिमि ऐ दाँवा-किल-किल ॥

दांत काटी रोटी हैं—बहुत घनिष्टता होनेपर क० ।

एक दूसरेका जूठा तक खाता है ।

दांत घट्टे हो गये (धा कर दिये)—परास्त हो गये वा कर दिया ।

भेजा भिने अचार वुँ उनको,

दांत खट्टे हैं ता रकीभोके । (अहमद)

दांत गिरे और खुर घिसे, पीठ बोझ ना लेइ ।

ऐसे बूढ़े वेलको, कौन बांध भुस देइ—

बहुत बूढ़े और निकम्मे वेल वा आदमी पर क० ।

क्योंकि उससे कोई काम नहीं निकलता ।

दांतमें तिनका पकड़ाना—अपने अधीन कर लेना ।

दांतोंमें पैसा चिपकता है—बड़े रूपयको क० । लोग सरावगियोंको भी कहते हैं जो जीव हिंसाके भयसे दांत नहीं मलते ।

दांतों पसीना आ गया—बहुत मेहनत पड़नेपर क० ।

दाग लगाय लंगोशिया यार—क्योंकि वह तुम्हारा सब हाल जानता है ।

दागेके सांड तो दाग ले लोहार—(पू०) जिसका काम उसीसे ठीक होता है ।

दाढ़ी है या राजकी कुँची—लंबी दाढ़ीवालेको क० । दाताकी नाव पहाड़ चढ़े—स्पष्ट । क्योंकि उसके

सभी मनोरथ सफल होते हैं ।

दाताके घर लक्ष्मी, ठाढ़ी रहत हजूर । जैसे गारा राजको भर भर देत मजूर—दाता जितना दान करता है, ईश्वर उसे उतना ही देता है ।

दाताके तीन गुण, दे, दिलावे, देके डीन ले— ईश्वर देता है, दिलाता है और देकर डीन भी लेता है । राजा वा भालिकके प्रति भी क० ।

दाता तें सूमहिं भलो, जल्दी देइ जवाय— जब कोई देनेको कहे और उसके लिये बहुत दौड़ाव, तब क० ।

चले न पिय पे भित कहे, लोग चक्रि सुनि लेहि ।

दाता तें सूमहिं भलो उचर तरतहिं दीहि ।

दाता थें सो मर गये, रह गये मक्खीचूस । लेता देना कुछ नहीं, लड़नेको मज्जवृत—स्पष्ट ।

दाता दातार, सुथनी उतार—(मु० ज०) मेरा स्वामी ऐसा दाता है, कि काम पड़े तो मेरी सुथन (पायजामा) भी उतारके दे दे ।

दाता दे मंडारी पेट पीटे (धा मंडारीका पेट फूले) मालिक तो देनेका हुकम दे, पर खज्जांची आला-दाली करे, तब क० ।

जबसे स्वामी सों रति माने,

तब तें खामिन हिय अगखानी ।

कहि पाखानो ब्यो नर नारी,

दाता देत दुखी भण्यारी ।

(ज्ये० ६०—त्रौ० २० कौ०)

दाता देवे और शरमाय, बादल बरसे और गर्माय—दाता देकर शरमाता है कि मैंने बहुत कम दिया, हसी तरह बादल बरसकर गर्माता है। गर्मानेसे सूचित होता है, कि भारी वृष्टि होगी।

दाता पुण्य करे, कंजूस भ्रूरभ्रुर मरे—दाताको देते देख सम दुखी होता है।

दाता सदा दलित्नी—क्योंकि वह अपने पास कुछ नहीं रखता

दादा कहनेसे धनियां गुड़ देता है—मुसामद बड़ी चीज़ है।

दादा मरिहें, तो भोज करिहें—(५०) जय कोई बहुत दिनका वादा करे, तब क०।

दादा मरेंगे, तब बैल घटेंगे—ऊ० दे०।

दादा मरेंगे, तो पोता राज करेंगे—ऊ० दे०।

दादा ले और पोता घरते—(५०) बहुत मजबूत चीज़के लिये क०।

दादू धनियां चाबरी, पाथर पूजन जाय। घरकी चक्की ना पुजे, जाका पी था खाय—मूर्त्तिपूजाके विरोधमें क०।

दान पीछे फलदान—स्पष्ट। अकसर बहुत धीमार आदमीको दान करनेके लिये क०।

दान वित्त समान—स्पष्ट। सामर्थ्यके अनुसार दान देना चाहिये।

दाना खा मोठका, पानी पी सोंठका—मोठ गुरुपाक होती है इसलिये उसपर सोंठका पानी पीना चाहिये।

दाना खाय न पानी पीये, वह आदमी कैसे जीये—स्पष्ट।

दाना छितराना तहां जाना है जरूर, और पाना भी वही है जो दिलाना हकतालाने—(ग्याल) स्पष्ट।

दाना दुश्मन, नादान दीस्तसे बहतर—स्पष्ट।

दाना न घास, छाहरा छे छे चार—जय कोई बेकार चीज़ तो देनेको तैय्यार हो, पर जो चीज़ मांगी जाय वह न दे, तब क०।

दाना न घास, घोड़े तेरी आस—जय किसी चीज़

की हिफाजत तो न करे, पर उससे अपने आरामकी आशा रखे, तब क०।

दाना न घास, दिन दिन करे—स्पष्ट।

दानेको टापे, सवारीको पादे—जय कोई खानेको तैय्यार हो पर काम न कर सके, तब क०।

दाने दानेपर मंहर है—बिना भाग्यका एक दाना भी नहीं मिल सकता।

दाने पानीका अखतयार है—जय और जहां चाहे ले जाय।

दाबिल, मांजरी घैठ चुपै चुप चुहनसों निज कान कटाये—दे० 'दूबी थिह्ली'

दाम करे सब काम, (वा दाम संचारे काम)—पैसेसे सब काम होता है।

जानि नानिनी सुबरन गात, पिय सुका माल धीगात। लड सुसखाइ मनोहर दाम, करे दान नय जगके काम।

दाम दीजे काम लोजे—स्पष्ट।

दामहीमें राम है—ईश्वरका वास भी धनहीमें है।

दामों डेरी, या हाड़ों डेरी—पातो बहुत धन कमा लेंगे या हाड़ोंका ढेर लगा देंगे। ऐसा काम करनेपर कहते हैं, जिसमें जान जोखिम हो।

दामों रूठा, बातोंसे नहीं मानता—पावनेदार अपने पावनेके लिये रुठ जाय तो खाली बातोंसे नहीं संतुष्ट होता।

दारुये गुजब खामोशी—(फा०) क्रोधको दबा है चुप रहना अर्थात् चुपचाप रहनेसे क्रोध शान्त हो जाता है।

दाल भातमें मूसलचन्द—जहां दो मनुष्य कामकी बातें करते हों वहां तीसरा मनुष्य (जिसकी आचम्यकता न हो) बीचमें बोल कर याधा डाले, तब क०

रमत इते पिय तिय सुखवास।
भाई घर पाकी तहं भास ॥
योग परखानी सुनि रस भयो।
दूध भातमें मूसर पयो ॥ (नि० र० की०)

दाल भात धिन खाँग रसोई—बिना दाल भातके रसोई फीकी लगती है।

मिलन इदने सगत सिंगार। फाजर बेदो बेसरि चार ॥
कहत, पखानो ग्यों सब कोरे। टारि भात विगु खाँग रसोई (विदित हाय)

वाल भात रोटी, और चात खोटी—स्पष्ट ।

वालमें काला है—कुछ सन्देह अवग्य है । दे० “कुछ
वालमें काला है”

वालमें नमक, सचमें भूँठ—दे० “आटेमें नोन...”

दावत नहीं अदावत है—दावत नहीं दुखमनी है ।

दासी करम कहारसे नीचा—स्पष्ट ।

दिन अच्छे होते हैं तो कंकड़ जवाहिर हो जाते
हैं—स्पष्ट ।

दिन आये सुदिनके, वन भूँजे पाये मोर । चोरन
लड्डू खा लिये, घर भँस चियानी घोड़—जब दिन
अच्छे आते हैं, तब सभी काम अच्छे हो जाते हैं ।

इसपर एक कहानी है :—एक मनुष्य दिनोंकी गर्दिशका
मारो रोजगारकी तलाशमें विदेश गया । उसकी स्त्रीने
रातोंमें खानेके लिये थोड़े लड्डू बना दिये थे जिसमें
अनजानमें कोई विषैली चीज मिल गई थी । जब वह एक
कमरेमें पहुँचा जहाँ कुछ देर पहिले आग लग चुकी
थी, तो वहाँ उसने ऊँचे मोर जलन हुये पाये । वह भूखा
तो था ही, इसलिये मुने हुए मोरोंका मांस भर पेट
खाकर एक गाड़की हाथामें घेर रहा । एक डाकूओंका
दल बहुत सा लूटका माल लेकर उधरसे गुजरा और उसे
भी लूटना चाहा । जब इसके पास सिवाय लड्डूओंके
और कुछ न पाया तो उसीको लेकर सबने बाँट खाया।
विषैले लड्डू खाते ही वे सबके सब मर गये और लूटका
माल उस मनुष्यको मिल गया । वह अपने घरको लौटा
जहाँ पहुँचकर उसने सुना कि मेरो भँस विधारे है और
उसके घोड़ा पैदा हुआ है जिससे उसे दूध तो मिला ही
पर घोड़ा चढ़नेको सुकृत्तमें मिल गया ।

दिन ईद और रात शबरात—सदा प्रसन्न रहनेवा-
लेको क० ।

दिन कटा फुरियादसे, और रात ज़ारीसे कटी
उन्न कटनेको कटी, पर क्या ही कुवारीसे कटी—
जिसकी जिन्दगी बुरी तौरसे कटती है उसका
कहना है ।

दिनका भूला साम्हिं आवे, सो भूला नहिं
तनिक कहावे—जब कोई अपनी भूल आप ही उधार
ले, तब क० ।

दिनको ऊनी ऊनी, रातको चरखा पूनी—जब

कामका वक्त हो तब न करे और बेवक्तमें करे,
तब क० ।

दिनको गरम, रातको चगल गरम—जब कोई
खी अपने पतिके सामने घूँघट काढ़ती है, तब क० ।

दिनको सोचे, रोज़ी खोवे—दिनका सोना बुरा है ।

दिन खसा, मजूर हंसा—इसलिये कि कामसे छुटी
मिल गई ।

दिन जब बुरे आते हैं तो सोना छूये मिट्टी हो
जाता है—स्पष्ट ।

दिन जब भले आते हैं तो मिट्टी छूये सोना हो
जाता है—स्पष्ट ।

दिन जाते देर नहीं लगती—स्पष्ट ।

दिवस जात नहिं लागिं बारा,

सुन्दरी विखवन सुनहु इमारा । (तुलसी ।

दिन दस आदर पायके, करले आप बलान ।

जौ लग काग सराध पख, तौ लग तोसनमान-
(विहारी) जब किसीको थोड़े दिनकी साहिबी

मिले और वह उसीपर अभिमान करने लगे, तब क० ।

दिन दूना, रात चौगुना—आगीवाद है । जब
किसीकी वेपरिमान वृद्धि होती जाय, तब क० ।
जो लड़का रोज़ बरोज़ बीठ वा खराब होता जाय,
उसे भी क० ।

दिनके फेरसे सुमेर होत माटीको—जब दिन
खराब आते हैं तो सोना मट्टी हो जाता है ।

सार सुत सर होत, निधन कचेर होत, दिनको फेर
होत मीठ होत माटीको । (सिवनाथ)

दिन भले आयेगे, तो घर पूँछते चले आयेगे—
सुलाना न पड़ेगा ।

दिनों उड़ाती मैं फिरौं, घाटवाटमें धूल । जबसे
पीके देशकी, गई डगरिया भूल—स्पष्ट ।

दिया गुल पगड़ी मायव—दे० “चिराग गुल”

दिया जगतमें सार है, दिया करो सब कोय,
फरका धरा न पाइये, जो कर दिया न होय—
श्लेषमें दानका महात्म कहा गया है । जो कर
दिया न होय—जो हाथमें दिया न हो (अंधेरेमें)
और जो हाथसे न दिया होय ।

दिया तो चांद था, न दिया तो मुंह मांद था—
सुगामदीपर क० ।

दिया दान, मांगे मुसलमान—मुसलमान ही
दिया हुआ दान वापिस कर लेते हैं, क्योंकि मुसल-
मानोंमें यह रिवाज है कि लड़कीके मरनेपर देहजमें
दिये हुए धनको फिर वापिस मांग लेते हैं ।

दिया फ़ातिहाको, लगे लुटाने—(मु०) दे० “धमा-
नतमें खयालत” ।

दिया लिया ही भाड़े आता है—दान ही अन्त
समयमें रत्ना करता है ।

दिया हाथ, खाने लगा साथ—दे० “उंगली पक-
ड़ते पहुँचा” ।

चक्र चन्दन खाई कसाइन रावण खाई तो ही गई
गोतिन । (८० प० गोपियोंका कहना उदरके इति
कुवशाके विषयमें) ।

दियेका प्रकाश स्वर्ग तक } दिये शब्दमें श्लेष है
दियेकी रोशनी महशर तक } जिसका अर्थ दीपक
और दान है । चिरां रोशनी जगमें कलक है ।
दियेकी रोशनी महशर तक है” ।

दिलका दिल भाईना है—स्पष्ट । जितना हम हमें
चाहोगे उतना ही हम तुम्हें चाहेंगे ।

दिलकी धी में सादी, जिसका पाती उसका
गाती—स्पष्ट ।

दिलके फाफोले फोड़ना—मनकी ग़ार मियानेपर क०
मय-खाने बीच आके शीशे समान मोटे,
आदिदने बाजु बपने दिलके फाफोले फोड़े । (ख० बाबद)

दिलको दिलसे राहन है—मनको मन पहिचानता
है । तब कोई अपने मित्रको पाद करता है और
वह उसी समय उसके पास था जाता है, तब क० ।

दिलको हो फ़ारार, तो खय सूखें तेहवार—चित्त-
को जब शान्ति हो, तब तिहवार अच्छा लगता है ।

दिल जाने सो दिलदार—जो एज दुःखपर ध्यात
रखे वही अपना है ।

दिल दुनियाकी दम धरमकीजे, किमकी शादी
घो पिलसका रामकीजे—उल्लते रहनेपर क० ।

दिलमर पाना, सिर फोड़ लड़ना—जब कोई
आपसमें लड़ने खाय नहीं, तब क० ।

दिलमें आईको रखे सो भइ घा—मनमें आई पात
को छिपाना न चाहिए । जो मनका साफ़ होता है
वह कहता है ।

दिलमें नहीं डर, तो सयकी पगड़ी अपने सर—
जिसके मनमें डर नहीं वह सयको इज्जत उतारनेको
तेव्यार रहता है ।

दिल लगा गधीसे तो परो क्या चीज़ है—प्रेममें
दोष नहीं दिखाई पड़ते ।

दिल लगा मँड कीसे तो पघिनी क्या चीज़ है—
ऊ० दे० ।

दिल सोज़ खाना तराश—कलेजमें आग और परमें
धुरी । कुपात्र लड़कोंको कहते हैं ।

दिलोमें खाक उड़ती है फ़क़त मुंहपर सफ़ाई है—
कपटीको क० । दियालियोंको भी क० ।

दिल्लीकी अच्छी भी है धुरी भी—दिल्लीकी मन
भी बहलता है और दुःख भी होता है । दिल्लीकी=
हँसो; दिल्लीकी=किसीसे दिल लगागा ।

(१) बेचर तो है बही, कि न दुनियासे दिल छेी ।

पर क्या करे, जो काम न है दिम्नतो बने । (झीक)

(२) मजा भी जाता है दुनियासे दिल खदाने में ।

यजा भी मिलतो है दुनियासे दिल खदानेको ॥

(बकबर)

दिल्लीकी कमाई, दिल्लीहीमें गंवाई—जहां
कमाया वहाँ प्रव कर दिया बचाके घर कुछ न लाये
दिल्लीकी येटी मधुराकी गाय, कर्म फूटे तो
अन्ते जाय—स्पष्ट ।

दिल्लीके दिलवाली, मुंह चिकना पेट खाली—
दिल्लीके सिकाफिमो पर क० । खानेको धार न
मिले पर कपड़ा बढ़िया खर, पहिन्ते हैं ।

दिल्लीके पाँके, जिनकी जूतीमें सौ सौ टाँके—
ऊ० दे० ।

दिल्लीसे मैं आज दुखर फदे मेरा भाई—ऐसेके
सामने किसीका हाल कहना जो उसके अधिद
जानता हो, तब क० ।

दिवस चचाये चन्द्रमा, रैन चलाये सूर ।
ऐसो साधन नित करे, अमर होय भरपूर—
स्पष्ट ।

दियालियेकी साख पतालमें—दियालियेकी साख
गट हो जाती है ।

दीदम बले न गोयम—(फा०) देखा है मगर कहुँ गा नहीं ।

एक मूर्ख मनुष्यने इतनी ही पारसी सीखी थी । एक दिन किसी सुगलका कंठ खोया गया। वह उसे खोजता फिरता था। इतनेमें वह मूर्ख उसकी सामने जाता दिखाई पड़ा। उसने उससे पूछा कि जिधरसे तुम आ रहे हो उधरको कोई कंठ तुम्हें जाता दिखाई पड़ा ? उसने उसका उत्तर फारसी हीमें देना सुनासिध समझा। वह बोला “ दीदम बले न गोयम ” वह सुगल उसकी बातको हंसी समझ कर उससे भिन्नती करता जाता था कि तुम्हें बता दो कि कंठ किधर गया है, मगर वह यही उत्तर देता जाता था। जब सुगलको उसकी इस धृष्टतापर क्रोध आया तब उसे पीटने लगा, इसपर बहुतसे धादमी बहा जमा हो गये। जब उससे पूछा गया कि तू इस कंठका पता क्यों नहीं बता देता, तब वह बोला कि मैंने कंठको नहीं देखा तो कैसे बताऊँ। वह न तो सुगलकी मौलौ ही समझता था न अपने उत्तर का अर्थ ही जानता था, इसीलिये उसकी दुर्गति हुई। जो लोग विदेशी भाषा तो अच्छी तरह नहीं जानते, पर उसी भाषामें विदेशियोंके साथ बात चोत करने लगते हैं; उन्होंनेपर यह मसल लागू होती है।

दीदार बाज़ी, और मौला राज़ी—आंखसे देखनेसे ईश्वर भी नालुग नहीं होता। ऐसा कहना लम्पटोंका है।

दीन दुनियां दोनोंसे गये—जिसका यहलोक परलोक दोनों बिगड़ जाय, उसे क० ।

दीनसे दुनियां रखनी मुश्किल है—ईश्वर तो सहज ही प्रसन्न किया जा सकता है पर संसारको प्रसन्न रखना बड़ा ही कठिन है।

दीपककी रबिके उदय, घात न पूछे कोय—(बृन्द) बढ़के सामने छो टेकी कदर नहीं होती।

दीपकके भावे नहीं, ज़रि ज़रि मरै पतंग—जय कोई किसीके लिये प्राण देनेको तैय्यार हो पर वह उसका कुछ ज़्यादा भी न करे, तब क० ।

(१) लक्ष्मी न पियरी एक पल, रहे गु देख अनंग ।
ज्यो दीपक भावे नहीं, ज़रि ज़रि मरे पतंग ।
(ब्याधि)

(२) भादि दरै कैसी भई, भनचाइतके संग ।
दीपक मन भावे नहीं, ज़रि ज़रि मरे पतंग ।

(३) प्रीत पतंग करौ दीपकसीं आपै देख दखी ।

(चुरदास)

दीपक तले अंधेरा होवै—दे० “चिराग तले”

दीपमाल निज लखत नहिं दीपक देखत आन—

अपने घरकी दीवाली नहीं देखता दूसरेके घरका दीया देखता है। ईषा रखनेवालेको क० । दे० ‘अपना टेंटर’ ।

विनु विबाह ही कामवस परकिय दीपहि जानि ।

दीपमाल निज लखत नहिं दीपक देखत जानि । (भनूटा)

अपनी दीपमाल शरीरकी कान्ति नहीं देखती किन्तु घरका दीप देखती है कि कब बुझे और सुझे अबसर मिले।

दीवानोंके सिर क्या सींग होते हैं—जय कोई पागलों कीसी बात वा काम करे, तब क० ।

दीवारके भी कान होते हैं—गुप्त बातको प्रकार्य नहीं करनेके लिये क० ।

दीवाल खाय आला, और घर खाय साला— जो सालोंको घरमें रखता है, उसको नसीहतके लिये, क० ।

दीवाल रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे—जान बचेगी तो शरीरमें मांस भी हो जायगा। जय कोई धादमी धीमार होकर बहुत दुबला हो जाता है, तब क० ।

दीवालीका दीया चाटके आये और होलीकी जूतियां खाकर जायंगे—मनहूस धादमीको क० ।

दीवालीकी मिठाई—जो चोड़ देखनेमें तो अच्छी पर गुणमें खराब हो, उसको क० । दीवालीमें मिठाई बहुत बिकती है इसलिये हलवाई लोग अधिक लाभके लिये उसमें मीठा बहुत मिला देते हैं और कई दिन पहिलेसे बनाई जाती है इसलिये खराब भी हो जाती है।

न रीकें भूलकर भी आप, नाइरकी सफाई पर ।

बर्क सोनेका विपकार्या है गोबरकी मिठाई पर ॥

दीवालीकी रातको वूटी वूटी पुकारती है—स्पष्ट दीवाली के चोखेसे पड़ा मोटा नहीं होता— एक दिनेके खानेसे कुछ नहीं होता।

दीवाली जीत, साल भर जीत—जुयारियोंका ऐसा ही विश्वास है।

दीवाली नहीं दिवाला है—दीवालीमें ज़रूरी अधिक होता है, इसलिये क० ।

दीवाली चर्पमें एक दिन—शुधीका दिन रोज़ रोज़ नहीं होता ।

दीसै ज्यों जल माहि तरंग—पानी और उसकी तरंग यद्यपि जुदी जुदी दिखाई पड़ती है परंतु वास्तवमें एक ही चीज़ है । जब एक ही चीज़ दो अलग अलग रूपमें दिखाई दे, तब क० ।

(१) गिरा अर्थ जल गीचि सम कश्चित् मित्र न मित्र ।

(तुलसी)

(२) पिय सुमिरन में विरहिन वार । होति सुगति कौयो संचार कष्ट पछागो बुधि उमंग । दीसै ज्यों जल माहि तरंग ॥

(संचारी भाव—श्लो० २० कौ०)

दुखते दांतको उखेड़ना ही चाहिये—जिससे रोज़ कष्ट मिले, उसे निकाल बाहर करे ।

दुख मरें वी फ़ाख़ता और कौए मेवे खायँ—

जब एककी मेहनतका फल दूसरा भोगे, तब क० ।

दुखमें तो सय कोऊ भजे, सुखमें भजे न कोय ।

जो सुखमें हरको भजे, तो दुख काहेको होय—
स्पष्ट ।

दुखमें सुखकी क़दर होती है—स्पष्ट ।

दुख सुख बहन भाई हैं—बिना दुःखके सुख नहीं होता

दुख सुख निस दिन संग है, भेट सकेना कोय ।

जैसे छाया देहकी, न्यासी नेक न होय—स्पष्ट ।

दुख सुख मानने हीका है—दुःख और सुखको

जितना अधिक करके माना जाय, उतना ही अधिक व्यापता है । विरहोंका कहना है । किसी दुखीका दुःख वा मोह समता घटानेके लिये भी क० ।

इसपर एक हटाना है :—एक वैद्य किसी कार्यवश

विदेश चला गया । वहाँ उसे पन्द्रह वर्ष व्यतीत हो

गये । जब वह गया था तब उसकी वर्ण, दिनका एक

लड़का था । अब वह लड़का युवा हो गया और अपने

पितासे मिलने चला । उसी अंतरमें उसका पिता भी

परदेशसे घरकी आता था । संयोगवश वह लड़का एक

स्थानपर किसी मरायमें दिनसे ही अच्छी कोठरी देख-

कर उतर रहा । सारंगवालकी वह वैद्यभी वहाँ पहुँचा ।

जिस कोठरीमें वह लड़का उतरा था उसी बनिधिकी भी

पसंद आई और कुछ अधिक देकर लड़कीके लचमें

निकलवा दिया । सरायमें और जगह न रहनेके कारण

लड़का रातभर मैदानमें पका खेदसे रोता रहा, परंतु

बनिधिने एक भी न सुनी । जब सुबहा हुआ तो बनिधिने

लड़कीको देखा और उससे पूछा कि तू कहाँ आया है ?

लड़कीने अपना देश, सुझा, जाति और पिताका नाम

बताया । सुनते ही बनिधिने कहा कि तू मेरा लड़का है ।

अब उसे गलेसे लगा लिया और जो राचिकी उसे दुःख

दिया था उसका वह क्षयना पथात्ताप करने लगा ।

देखी ! वही लड़का रातमें घा पर उसे लड़का करके

नहीं माना, इसलिये कुछ दुःख सुख न हुआ । मातःभाव

उसीको लड़का समझकर दुखी सुखी हुआ ।

दुखिया दुख रोवे, सुखिया जेव टोवे—घकीलें-
को क० ।

दुखिया रोवे, सुखिया सोवे—स्पष्ट ।

दुधार गऊकी लात भी भली—जो काम करने-

वाला वा कमाऊ पूत होता है उसकी दो बातें भी

सही जाती हैं ।

बिन सारथ कैसे सई, कौऊ कश्ये बैन ।

लात खाद्य पुचकारिये, होय दुधाइ धेन । (इन्द्र)

दुनियाका मुँह किसने बंद किया है—कहतेका

मुँह कोई नहीं बंद कर सकता । जब किसीकी

मिन्दा होती है, तब क० ।

दुनियांको किसी तरह चैन नहीं—दुनियांका

स्वाभाव केवल दोष देखना ही है ।

इसपर एक कहानी है—एक बूढ़ा मनुष्य और उसका

लड़का एक कमज़ोर टट्टर बैठे जा रहे थे । लोगोंने

कहा, "तुम्हें तरस नहीं आता ? दी दी मट्टे कम-

कोर जानवरपर चढ़ बैठे हो ?" यह सुनकर लड़का

घोड़े परसे उतर गया और पैरों चढ़ने लगा । चाहे

चलकर लोगोंने पूछे कि कहा, "तू बड़ा निर्दयी है ।

पाप तो छोड़ेपर बैठ गया और लड़केकी पैरों चलाता

है ।" इसपर बूढ़ा घोड़ेपरसे उतर पड़ा और लड़का

चट बैठा । बोड़ी दूर चाहे चलकर लोगोंने लड़केसे

कहा, "तू बड़ा बेशर्म है, पाप तो छोड़ेपर चढ़ बैठे

और बुड़टे पापकी पैरों चलाता है ।" उस जगहसे

दोनों पैदल चलने लगे । अभी जगहपर लोग कहने

लगे, "तुम लोग बड़े बेशक़रानी । कि घोड़ा रहने पैदल

चलते हो ।" जब उन दोनोंने देखा, कि दुनियांको

किसी तरह कष्ट बिना चैन नहीं, तब उनकीने बोले :

दूर रन्सीसे बांधकर उसे एक बाँसमें लटका लिया और कंधों पर लडाकर वे घंटी धीरे चलने लगे। यह तमाशा देखकर सब कोई ताहिलियाँ बजाने लगे। आखिर उन लोगों ने कुंभलाकर पुलपरसे घोड़ेकी दरियामें फेंक दिया।

दुनियाँ उगिये मकरसे, रोटी खाइये शकरसे— जो फ़रेयसे दुनियाँको खाते हैं, और मौजसे दिन काटते हैं, उनपर क०। तात्पर्य्य यह है कि सीधे आदमीका गुज़ारा नहीं होता।

दुनियाँ दुरङ्गी मकारा सराय, कहीं ख़ैर ख़ूबी कहीं हाय हाय—स्पष्ट।

कचिहोपानादः कचिदपिच हाइति इदितं। (भव' हरि)

दुनियाँमें साढ़े तीन दल हैं—चिंउटी दल, टिड्डी दल, दादल, आधेमें और सय।

दुनियाँ वा-उम्मेद कायम है—स्पष्ट।

जो है बीमार चन्द है उम्मादे शफ़ा,

जो है बेजुर चन्द है उम्मादे गुनी।

उम्मादे न हो तो खुद कुयी हो एक खेल,

सच है उम्मादेपर है कायम दुनियाँ (रंजूर)

दुनियाँ धोकेकी टट्टी है—संसार मिथ्या है। सुफ़ी मज़हबवालोंका तथा धेदांतियोंका कहना है।

गुल गोर बबुला भागदबा और काँचड़ पानी मट्टी है।

धम देख चुके ब्रह्म दुनियाँको सच धोके की सी टट्टी है ॥

(मजोर)

दुनियाँ मुर्दा पसन्द है—जब आदमी मर जाता है तब पीछेसे लोग उसकी तारीफ़ करते हैं, इसलिये क० **दुनियाँमें हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा, मर जाना पे उठकर कहीं जाना नहीं अच्छा—**आलसीको क०।

दुखला कुनया सरापकी आस—जब कोई जयर्दस्त किसी निर्मलकी सम्पत्ति छीन ले, तो उसके पास सिवा कोसनेके और कोई आशा नहीं रहती।

दुबिधामें दोऊ गये, माया मिली न राम— जब कोई मनुष्य दो काम किया चाहता हो, वा दो आशुमियोंसे कुछ मिलनेकी आशा रखता हो, पर उनमेंसे एक भी पूरा न पड़े, तब क०।

माया मिली नहिं राम मिले दुबिधामें गये सुजनी सुनी दीऊ

(मधुर)

दुरंगी छोड़के इक रंग हो जा, सरासर मोम हो या संग हो जा—दुरंगी चाल छोड़नेके लिये क०। या तो मोमकी तरह नरम हो जाय या पत्थरकी तरह कड़ा हो जाय।

दुलहाको पत्तल नहीं, यजनियोंको धाली—(च०) स्पष्ट। मुख्यपात्रको कुद्व न मिले और उपरवाला मार ले जाय, तब क०।

दुलहा साथेसजे बरात—दे० 'दुल्हा गल'

दुलारी तिरिया ईंटका लटकन—(च०) स्पष्ट। जब कोई दुलारमें आकर अनुपयुक्त चीज़से काम लेता है, तब क०।

दुवा और दवा नित करनी चाहिए—ईश्वरकी उपासना और आरोग्य रहनेका उपाय रोज़ करना चाहिए।

दुशाखेमें लपेटके मारना—मीठी बोलीमें सानतदेना। **दुश्मनकी निगाह जूतीपर—**अथांत दुश्मन कमी मुंहकी तरफ़ नहीं देखता।

दुश्मनको कमी न छोड़े—जैसे बने शत्रुका संहार ही करना चाहिये।

कलकल समय विचारके, परि हनिये बनयास।

कियो भवैले-शेखं सुत, निशि पांडव कुलनास (इन्द)

दुश्मन कौन ? कि मांका पेट—सगे भाईके बराबर दुश्मन कोई नहीं होता।

दुश्मन सोय न सोने दे—स्पष्ट।

सोखे कहां रजक रचिकारि, सच निशि काम कैलिये जाई सांघी करी जगत रस भेय, बारी सोय, न सोवन दीय।

दुश्मनोंमें यों रहिये जैसे धरतीस दांतोंमें जीभ—स्पष्ट।

दुष्ट देवकी भ्रष्ट पूजा—स्पष्ट। जो दुष्ट समझानेसे नहीं माने, हाँकनेसे सीधा रहे, उसको क०।

दुष्ट न छोड़े दुष्टता, कैसी हूँ सिख दो। धोये हूँ सौबेरके, काजल श्वेत न हो—स्पष्ट।

(१) दुष्ट न छोड़े दुष्टता, सच्चन तजे न छैन।

कच्छल तजे न क्यामसा, सीवी तजे न सेय।

(२) दुष्ट न छोड़े दुष्टता, बड़ी ठीर हूँ पाय।

तै हँ सत्तर न क्यामता, विष मिलि कंठ पसाय ॥ (इन्द)

दूधका उफ़ान लड़े जलके छींटेसे दूध जाता है— छेड़ी धातोंसे सुल्ला दूर हो जाता है।

मधुर बचनमें आतु मिट, उचम अन अमिमान ।
तनक सीत जलसों मिट, जसे दूध उफान । (बन्ध)
दूधका जला छाछ फूँक के पीता है—एक बार
किसी काममें बहुत हानि होनेसे दूसरी बार
सामान्य काममें भी मनुष्य सावधान हो जाता है,
ऐसे समयपर क० ।

(१) नई चनोखी लखी सुवाल, दुखते होइ प्रथम रतिकाल
पीय संग सुनि रीवे कूके, दाख्यो दूध छाछ ज्यो फूँके ।

(लो० र० कौ०)

(२) 'जबसे मुझे यारों से जरूर पड़े' चा है,
अपने सायसे भी मुझे खटका है !

जब जाती है गरम दूधसे जिसकी जबा,

वह छाछ भी फूँक फूँक कर पीता है । (रंजूर)

दूधका दूध पानीका पानी—इन्साफ करने पर क० ।
दूधका सा उवाले आया और चला गया—
अव्यवस्थित चित वालेके क्रोधपर क० ।

दूधकी नदी बहना—चंचलाभी रहना ।
दूधकीसी मवली निकाल कर फेंक दी—
बिल्कुल अलग कर दिया, कोई वास्ता न रखा ।
दूध पूत किसमतसे—धन और औलाद भागसे
होती है ।

दूध फटे काँजो परे, सो फिर दूध बने न—
(इन्ध) बिगड़ी बात नहीं छधरती, मन फटनेसे फिर
नहीं मिलता ।

महत तिनि मन मिलत है, अन मिलते न मिलाय ।

दूध दही ते जगत है, काँजो ते फट आय । (हं दे)

दूध भी धौला, छाछ भी धौली—जबदो मनुष्य
वा चीजें देखनेमें तो एक ही हों पर उनके गुणमें
बहुत अन्तर हो, तत्र क० ।

पिय दक्षिण समता गदि टेंक, तियगण भीहित करे विवेक
कई पखानो ज्यो बुधियेन, दूध बवेत, अद छाको बवेत ।

[दक्षिणनायक]

दूधों नहावो पूतों फटो—आप्रीवाँद है । सद्मी
और औलादकी वृद्धि हो ।

दूधके डोल सुहावने—दूधकी बातें अच्छी लगती हैं ।

(१) बनि दूर भट्टूँ हया भट्टकी खगें दूरके डोल सुहावनेरी

(२) सुनि रीके चतुराई वाम, गी लीं परी डुली नदि' काम,

सोम छदि ज्यो फेरे सुत्रान, दूरके डोल सुहावे जान ।

दूर गये की आस क्या—जो विदेश गया उसका
क्या ठीक कि कय धावे ।

दूल्हा गैल बरात—सय बराती दूल्हेके पीछे चलते हैं,
जैसे अफ़रके पीछे फौज ।

व्यीति पादिखी मुधिकर, सघरी, चनके वियविनु। नीरस लखी
कई पखानों जग विख्यात, सोई दूल्ह संग बरात ।

दूल्हा ढाई दिनका बादशाह है—क्योंकि क्याहके
समय वही मुख्य समझा जाता है ।

दूल्हा दूल्हन पाय, सहवाला लातें खाय—
स्पष्ट । सहवाला—जो लड़का दूल्हेके पीछे घोड़ीपर
बैठता है ; साथका खेलनेवाला । अक्सर छोटा
भाई ही सहवाला बनता है ।

दूल्हा दूल्हन मिल गये, भूँठी पड़ी बरात—
जब दो मनुष्य आपसमें लड़ें और बहुतसे लोग
उनकी तरफ़ हो जायें फिर जब ये दोनों आपसमें
मिल जाते हैं, तो उनलोगोंको कोई नहीं पूछता ।

दूसरेका सेंदुर देख अपना कपाल फोड़े—जो
दूसरेकी बढ़ती देखकर जल मरे, उसे क० ।

दूसरेकी आस, सदा निराश—जो दूसरेकी भाया
रखता है, उसकी भाया पूरी नहीं होती ।

दूसरोंका ऐय बड़ी जल्दी दीखता है—जब किसी
को अपना ऐय न दिखाई पड़े, तत्र क० ।

देखतकी धन नौनी, रांटा करे पौनी—जो अपनी
छन्दरताके धमएडमें कुछ काम न करे, उसे धिक्का-
रनेको क० ।

देखता है सो कहता नहीं बहता है सो देखता
नहीं—थाव और जीभपर क० । दे० "गिता अनयन
नयन यिन यानी" ।

देल तिरियाके चाले, सिर मुँड़ा मुँह काले ।

देल मर्दाँकी फेरी, मां तेरी कि मेरी—

किसो समय एक पुरुष और उसकी स्त्रीमें इस बातको
बदस हुई कि स्त्री और पुरुष दोनोंमें कौन बुद्धिमान और
चालाक है । स्त्री अपने आत्मिकी प्रशंसा करती और पुरुष
अपनेकी श्रेष्ठ बतलाता था । एक समय वह स्त्री बहाला
करके बीमार पड़ी । उसकी स्त्रीमें बहुत इजाज किया
परन्तु उसे बाराह न हुआ । एक दिन उसने अपने
अन्तर्निष्ठ कहा कि यदि अपनी माँको फिर हुआ मधेपर

सवार कराके मेरे सामने लाओ तो मैं अच्छी ही जाऊंगी
अन्या नहीं। वह सगभ गया कि वह सुभसे चालाकी
करना चाहती है। इसनिधे उसने अपनी समुपल जाकर
सामसे कहा कि तुम्हारी लड़की मरनापन्न है, यदि तुम
विर मुझाकर गधेपर सवार हो उसकी सामने चली तो
वह आराम हो सकती है इसके मित्रा दूसरा कोई इलाज
नहीं है। मांकी लड़कीकी माथा बहुत छोटो है। उसने
विर मुझा लिया और गधेपर चढ़कर लड़कीके दरवाजे
पर आई। उस मनुष्यने अपनी स्त्रीसे कहा कि "मां,
था गई"। उस स्त्रीने अपनी साध सगभ हंसकर पहिली
बाधी मसन कही, भिमकी लघरमें उसके स्वामीने
पिड़की बाधी मसन कही। यह सुन वह अपनी मांकी
ही ऐसी बुरी अवस्थामें देख बहुत लजित हुई।

देखतेकी लुगाई अंधा ले गया—आश्रयकी बात
पर क०।

देख देख चहूरको खूंट, कौन करौंटा बैठे ऊंट-
दे० ऊंट किस कल्प देते।

देखना सो पैखना—दोनों एक ही बात हैं।

देखनेको घुलघुल निगलनेको दोमरिया बड़—
जो मनुष्य देखनेमें तो कमज़ोर हो पर काम सह-
ज़ोरका करे, उसे क०।

देखनेमें ना सो चखनेमें क्या—जो देखने लायक
नहीं वह खाने लायक कैसे होगी।

देख पराई चूपड़ी, गिर पड़ बेईमान, एक घड़ीकी
घेहई, दिन भरका आराम—चोरे वा खानेके
लालचीको कहते हैं।

देख पराई चूपड़ी, मत ललचावे जी। मिरूसी
कुस्सी खायकर, ठंडा पानी पी—ऊ० दे०।

देखा देख सेठनियांकी, घरियक सीख जेठनियांकी
बाहर पड़ौसनकी और घरमें जिठानीकी सीख माने।

देखा न भाला, सद्के गई खाला—स्पष्ट।

भूठी सहातुभूति दिखानेपर क०।

देखा भालां तोपची औ चपरां सैयद होय—
तोपची कहला कर सैयदको हानि पहुँचावे। बल
पाकर भले श्रावमीको सतावे, तब क०।

देखे भाले शेखजी औ चिड़ियें सईद होय—
बगुला भगतको क०।

देखा मीरदाद तेरा रंवा, गाजरोंकी रेल पेल
रोटियोंका चंथा—भूँडा भइया दिखानेवालोंपर क०।

देखा शहर बंगाला, दांत लाल, मुंह काला—
बंगाली पान बहुत खाते हैं और उनका रंग काला
होता है, इसलिये क०।

देखा सीखी कीना जोग, छीजी काया थादा
रोग—जो दूसरेकी देखा देखी करके कष्ट पाते हैं,
उनको क०।

देखा सो खया, न मुंह पांव जोगा—जो देखा
सो खा लिया, मुंह पांवके लिये कुछ भी न बचा।

देखिये दीदार, और मारिये पैजार—(मु० ज०)
वेरयाओंके लिये क०।

देखी ठोक बजाके दुनियां तालिय ज़रकी—
दुनियांमें सभी धनकी स्वाहिश रखते हैं।

देखी तेरी कालपी और वामन पुरा उजाड़—
कोरा नाम तत्व कुछ नहीं।

देखी पीर तेरी करामात—ऊ० दे०।

देखेके यौरहिया आवें पांचों पीर—(५० ज०) देख-
नेमें पागल लगती है, पर विचित्र गुणोंसे भरी हुई
है। जो देखनेमें अनाड़ी जान पड़े पर गुणसे
सम्पन्न हो, उसे क०।

देखेको वूढी, कामको थांधी—दे० 'देखनेको झुलझुल...
देखे राही, बोले सिपाही—स्पष्ट राहगीरसिर्फदेखता
रहता है परन्तु काम सिपाही ही करता है। चोरी
वा मारपीटके समय क०।

देखो मियांके छन्द वन्द, फाटा जामा तीन बन्द—
लिफाफियेको क०।

देता भला न लेता—देखनेवाला अच्छा लेनेवाला
अच्छा नहीं।

देता भूले न लेता—(व्य०) लीचे हिसाबपर क०।

दे दालमें पानी, पैगा यह चले चुहानी—(५०)
दालमें ऐसा पानी डालो जिसमें काठ, तेरने लगे।
पड़ौसीको नज़र न लगे, इसलिये क०।

दे दिलावे देदे करे, वह प्राणी भवसागर तरे—
स्पष्ट।

दे हुआ समध्यानेको, नहीं फिरती दो दो दानेकी—
(ज०) स्पष्ट। जिसकी ब्यौलत खानेको मिले
उसका मान्य करना चाहिये।

दे दे धारुदमें आग, किसकी रही और किसकी
उह जायगी—धनपर क०।

देनहार समरत्य है सो देवे दिन रैन—ईश्वर ही सबको देता है; मनुष्य जो कुछ किसीको देता है सो उसीको प्रेरणासे देता है।

गर वह दिलाया चाहे तो दुग्मनसे जा दिलाय।

भी जो न दे तो दोल भी फिर अपना सुँह दियाय ॥

विन कुछ चसके रोटीका टुकड़ा न हाथ पाय।

गर थिल्लू पानी मांगी तो हरगिज न कोरँ पिलाय ॥

गौर भज, खुदाके किसमें है कुदरत के हाथ चलाय।

मकूर क्या किसीका बर्षा दे बफ़ी दियाय ॥ (नजीर)

एक मनुष्य सदैव सदावर्त दिया करता था, जब वह किसीको कुछ देता तो चाँहे नीची कर लेता था। किछो फकीरने यह देखकर कहा:—

‘क’चिं च गुन देत ही नीचि करके देन।

कासीं सीखी सीखना ऐसी निधिसे देन’।

उस दाताने जवाब दिया:—

‘देनहार समरत्य है सो देहे दिन रैन।

लोग नाम सुरा, कहे तासि नीचे नैन’ ॥

देना और भरना परावर है—(व्य०) (१) देनदार

शरमके मारे आत्मघात तक कर बैठता है। (२)

सूमको भी कहते हैं जिसे देनेके नाम मौत आती है।

देना थोड़ा, दिलासा बहुत—जो आया तो बहुत दे पर दे थोड़ा, उसे क०।

देना पठानोंका, लेना जुलाहोंका—(व्य०) पठान अपना पावना सुरत अदा कर लेता है, और जुलाहोंसे रकम मुश्किलसे वसूल होती है क्योंकि ये बहुत गरीब होते हैं।

देना भला न थापका, बेटी भली न एक—देना किसीका भी अच्छा नहीं और बेटी एक भी अच्छी नहीं।

देना लेना काम डोम भाड़ियोंका मुहब्बत बड़ी चीज़ है—नादिहन्दोंको क०।

देनी पड़ी बुनाई, तो घटा बताने सून—जो देनेके समय अलसेट करे, उसे क०।

देनेके नाम तो दरवाज़ेके फिजाड़ भी नहीं देते—सूम वा नादिहन्दोंको क०।

देनेवालेसे दिलानेवालेको ज़्यादा सबाब है—स्पष्ट।

देनायद दुखस्तायद—(फा०) जो काम देखते होता है वही ठीक होता है।

देवता वासनाके भूखे हैं—देवता कुछ खाते नहीं वे सचे विश्वाससे प्रसन्न होते हैं।

देव सब फल देत है, जाकी ज़ेरी भाय।

जँसें मुख करि आरसी, देखीं हीरे दिखाय।

(इन्द)

देवाको रिन मिले सुहेला, अत देवाको मिले न घेला—(व्य०) जो लेकर दे उसको मुक्ता उधार मिलता है और जो लेकर न दे उसे अपहेला भी नहीं मिलता।

देवान धूपान, नीवान कुटान—देवता धूप देनेसे और नीच प्रहार करनेसे सतुन्ध होते हैं।

देवाय न पित्राय—व्यर्थ खर्च करनेपर क०। सूमके धनपर, भी क०।

(१) न देवाय न विप्राय न वसुधो न चातने।

रूपणस्य धनं याति बहिन तस्कर पापियं वै ॥

(२) खाय न खर्चें सुम धन, चोर सब लैजाय।

पाँके ज्यों मधुमक्षिका, हाथ नलै पड़ताय ॥ (इन्द)

देवी दिन फाटे लोग परवा मांगे—स्पष्ट।

देवी पित्त, मेरे पेटके भित्त—पेट भरनेसे ही देवताओंकी सधि आती है।

देवी मशरफा कौन साथ—जब दो चेमेल काम किये जाय, तब क०।

देवेगा सो पावेगा, योवेगा सो काटेगा—स्पष्ट।

देवेमें कंजूस है, धर्मदास है नाम—नामके अलुसार गुण न हो, तब क०।

देश चोरी, परदेश शिक्षा—जब कोई बहुत दरिद्र हो जाता है, तब कहता है। चोरीमें बिना जाने सफलता नहीं होती, इसी प्रकार परदेशमें भीख मांगनेमें लज्जा नहीं आती।

अबधि नदी सुखों फितनाम, मिले सु फाननाम संग स्वाम कछयी कछासत ज्यों बुधियेग, चोरी देस भोख परदेश।

देशपर चढ़ाय, सिर दुखे न पाँव—घर जानेके लिये न सिर दुखता है न पाँव।

देशा देशा चार, कुला कुला व्यवहार—देग देवकी चाल और कुल कुलका व्यवहार अलग।

श्रलग होता है ।

देशी कुतिया विलायती बोली—जब कोई मूर्ख विदेशी भाषा बोले, तब क० ।

देशी गधा पंचात्री रेंक--ऊ० दे० ।

देह धरेके दंड हैं--शरीर रहनेसे ही बीमारी होती है । बीमार आदमीको क० ।

देहमें न लत्ता, लूटके कलकत्ता--(पू० ज०) बिना पूंजीवालेको क० । तात्पर्य यह है कि कलकत्तेमें रोजगार करनेके लिये पूंजी चाहिये, परन्तु मार-पाट्टियोंने इस मसलको झूठी साबित कर दिया ।

दैव दैव आलसी पुकारा--आलसी मनुष्य दैव वा भाग्यकी दुहाई दिया करते हैं ।

कादर मन कर एक अधारा, दैव दैव आलसी पुकारा ।

(तुलसी)

देवन मारे हाथसे, कुमति देत चढ़ाय--दैव किस्तीको हाथसे नहीं मारता । जब समय खराब आता है, तब बुद्धि अष्ट हो जाती है ।

दैवो अथसरको भलो, जातें सुधरे काम ।

खेती सुखे बरसियो, धनको कौनै काम--जब झरूत हो उस वक्त चीज़ न मिले, तब क० ।

दैवो दुर्वल घातकः--(सं०) दैव भी दुर्वलको ही फट्ट देता है । दे० 'मरेको मारे.....'

हरत दैवद्व भिबल बर, दुर्वल हीके प्राण ।

बाधि सिंघु कीं काहि कै, दैत काम बलदान ॥ (इन्द्र)

दो फ़लाइयोंमें गाय मुरदार--स्पष्ट । क्योंकि वह प्राप ही मर जाती है ।

दो खसमकी जोरु, चौसरकी गोट--जिसका दाव पड़ा उसीने मार ली ।

दो घरका पाहुना भूखा रह जाता है--सामकेका काम बहुत खराब होता है ।

कीड़ि पिवा ऐ नारि गड, नू न मिली सुख दाय ।

ब्यों दुई घरकी पाहुनी, भूखी हो रहि जाय ।

दो घर मुसलमानी, तिसमें भी आना कानी--मुसलमान लड़ाके बहुत होते हैं, इसलिये क० ।

दो चूनके भी बुरे होते हैं--जब कोई एक साथ दो आदमियोंसे लड़नेको तैयार हो, तब क० ।

दो जोरुका खसम चौसरका पासा--एक तरफ़से

दूसरी तरफ़ दफ़ेल दिया जाता है, इसलिये क० ।

दो दिल राज़ी, तो क्या करेगा फ़ाज़ी--(मु०)

जब दो लड़के आपसमें रज़ामन्दी कर लें, तब क० ।

दोना पात बचूरके, तामे तनक पिसान ।

लाला जू लागे फरन, फथहुं फथहुं यह दान--

कंजूसताकी दह कही गई है ।

दोनों आँख बराबर--जब दोनोंको समान थताना हो, तब क० ।

कहा भरन उपज्यो मज नाम,

पिय सों सरस न चाछति खाम ।

सख पखाने यध बुधि आगर,

मेरे तो दोख आछ बराबर ।

दोनों खोई जोगिया, मुद्रा और आदेश--

जब कोई अपने धर्म वा उद्देश्यसे च्युत होनेपर निन्दित वा अपमानित हो, तब क० ।

दोनों तरहसे मौत है--जब दो कामोंमेंसे कोई भी

काम करे तो उसमें हानि वा घटनामी होती दिखाई दे और एक काम किये बिना पिंड न छूटे; तब क० ।

'कह बंगद लोचन भरि वारी,

दुर्म भाति भई बल्यु इगारी ।' (तुल०)

दोनों दीनसे गये पाँडे, हलुआ मिला न माँडे-

जब कोई लोभयव एक कामको छोड़ दूसरा करने जाय और वह भी न हो, तब क० ।

दोनों पल्ले बराबर--दे० 'दोनों आँख बराबर ।'

दोनों वैरी दीनके, रांगड़ और शीतान । बुरा

फराचे औरसे, और आप बुरेसे काम--

रांगड़ और शीतान दोनों बेईमान होते हैं आप तो

पाप करते ही हैं बुरतोंसे भी कराते हैं ।

दोनों हाथ लड्डू हैं--जब दोनों तरफ़से फ़ायदा हो, तब क० ।

मिली सु बहुत जलन जो बाल,

दौरि दोक कुच गडि लथि लाल ।

सुनो पखानो जो जग गाये,

दोक छाथनि साडू पाये ।

दोनों हाथोंसे ताली बजती है--जब दो आदमियों

में लड़ाई होती है, तब दोनोंको दोषी बनानेके लिये क० ।

‘कैसे पिय को करों पियार, वे रति माने मिल नवनार ।
सुनो पलानी नादिन म्पारो, दुःख राप सो बाजो तारी ।
(लघुमान)

दोनों हाथोंसे पगड़ी संभालनी पड़ती है—
जब कोई मुस्किलसे अपनी इज्जत बचाता है,
तब क० ।

दो मुहामें मुरगी हराम—(मु०) मुरगी जिबह
करनेपर मुहामें कुछ दक्षिणा दी जाती है, तब वह
हलाल होती है, पर जब दो मुहा आपसमें लड़ने
लगे और बिना कुछ लिये मुरगी उनके हाथोंसे
भारी जाय तो हराम होती है ।

दोमें तीसरा, बाँलोंमें ठीकरा—जब दो आदमी
आपसमें बात करते हों और तीसरा बीचमें बोल
उठे, तब क० । तीसरेका बोलना दुरा मालूम
पड़ता है ।

दो रक्तावा घोड़ा यशशीका दामाद—जो बड़ेका
आश्रित रहता है, उसपर क० ।

दो सिर इकट्ठे करनेका बड़ा सचाय है—
किस्तीका ब्याह करा देनेमें बड़ा पुण्य है ।

दोस्त आवे तो हड्डी धिक्काय—दोस्तके आनेपर
बहुत खर्च होता है ।

दोस्तका दुश्मन दुश्मन, और दुश्मनका दुश्मन
दोस्त—स्पष्ट ।

दोस्त मिले खाते, दुश्मन मिले रोते—दोस्त
खाता और दुश्मन रोता भला ।

दोस्तीमें लेन देन घोरका मूळ—स्पष्ट ।

दोस्तोंका हिसाब दिलमें—स्पष्ट ।

दोही चीज़ है घंटा या घंटी—जब किसीके बेदी हो
और उसका मन छोटा हो, तब क० ।

दोही चीज़ है हार या जीत—जब कोई हार जाय
तब उसकी हारत मिटानेको क० ।

दौड़ चले न चौपट गिरे (वा बाँधा गिरे)—स्पष्ट ।

दौड़ो कोस हज़ार लौं, पसे लक्ष्मी पास ।
बिना दिये रघुनाथके, मिले न तुलसी हास—
स्पष्ट

दौलत अंधी होती है—स्पष्ट ।

समरकन्दके बादशाह अमौर तैमूर जन दिल्लीमें आये, सन
उनके पास एक भंवा रवैया आया । बादशाहके पूरुनेपर
उसने अपना नाम दौलत बताया । बादशाह बोले कि
कहाँ दौलत भी अंधी होती है ? उसने जवाब दिया,
‘जहाँ पचाह । अगर दौलत अंधी नहीं होती तो खगर्बके
घरों क्यों जाती ।’ उसको इस हाज़िर नवाबोपर बाद-
शाह बहुत खूब डर और चन्हींने उसे बहुत सा इनाम
देकर बिदा किया । बाद रचे कि तैमूर बादशाह खंखे
वे इसीलिये वे तैमूरखंखे करके मगधर हैं । दौलतमंद
बादमी गुरीनोंके दुखको नहीं देखता, इसीलिये क० ।

दौलत मंदकी डेवड़ी सब सिजदा करते हैं—
रूपेवालेको देहली सब चमते हैं अर्थात् सब रूपे-
वालेकी लुशाद करते हैं ।

द्वार धनके पड़ रही, धका धनीके खाय—
स्पष्ट ।

ध

धड़ी भरका सिर तो हिला दिया, वैसे भरकी
जवान न हिलाई गई—जब किसी मनुष्यको खलाम
वा प्रणाम किया जाय और वह गर्दन हिला दे पर
सुंहसे उसका जवाब न दे, तब क० ।

धधायगा सो बुतायगा—जो आग जोरसे जलती
है वह जलदी बुकती है । जो बहुत अत्याचार करता
है उसका बिनाय जलदी ही होता है ।

धनका धन गया भीतकी भीत गई—दे० ‘दोस्तीमें
लेन देन’ ।

धनके पन्द्रह मकर पचीस, जाड़ा चिह्न दिन
चालीस—पन्द्रह दिन धनके और पचीस दिन मकर-
के यह चालीस दिन जाड़ा जोरसे पड़ता है । इसीको
चिह्न क० ।

धन चाहे तो धर्मकर, मुक्ति चाहे भज राम—स्पष्ट ।

धन जोरनके फाममें, योंहीं उमर न खो । मोती
घरने मोलके, कमी न ठीकर हो—(उप०) धन
जोड़ा चाहो तो क्या उमर मत खो । कंकड़ कमी
बेगड़ीमती मोती नहीं हो सकते । इस लोकमें

जो धन जमा होता है, वही सचा धन है ।
धन दे जीको राखिये, और जी दे राखे लाज—
(नीति) धन देकर प्राणको रक्षा करे और प्राण
देकर हज़रत यचाना चाहिये ।

धन नाते हुका, पोशाक नाते जुल्फ—बहुत निधन
आदमी हो पर ऊपरसे लिफाफा बनाये रहे, तब क० ।

धन बाढ़े मन बढ़ि गयो, नाहिन मन घट होय ।

उयो जल संग घड़े जलज, जल घटि घटे न सोय—
जब कोई धनी मनुष्य निधन हो जाय और उसकी
क्रावर पहिलेकी सो ही बनी रहे, तब क० ।

बदत बदत सपत सलिल, मन सरोज बदि जाय ।

घटत घटत पुनि ना घटे, बरु समूल विनसाय ॥ (बिहारी)

धनमें धन, तीन आंटी सन—नहींके समान ।
बहुत शरीरको क० ।

धनवन्तीके कांटा लगा, दौड़े लोग हज़ार । निर्धन
गिरा पहाड़से, कोई न आया कार—धनवानके
सब सगे हैं शरीरका सगा कोई नहीं ।

धनि रहोम जल पंकको, लडु जिहि पियत अघाय
उदधि यड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय—
धनवान होना उसीका सार्थक है जिससे किसीका
काम निकले ।

धना सेठके नाती धने हैं—थोड़ी पूजीवाला. थप-
नेको बड़ा साहूकार समझे, तब क० ।

धन्नू करे बजाजी, नौ गज लायें दस गज बचे
तमू गाहक नहिं राजी—(व्य०) थनाड़ी वा अभागे
बूकानदारको क० ।

धन्य जुलाहन तेरा दिया, जीता खसम धरतीमें
दिया—स्पष्ट ।

धन्य मेरी बालकी, जिन बाप चढ़ाये पालकी—
(च०) जब किसी मनुष्यकी लड़की या जमाईकी
बढ़ोसत प्रतिष्ठा होती हो, तब व्यंगसे क० ।

आपने भाग का हू न अयो भगिनी भग भाग तुरंग चड़े ।

धप्या लगाकर मांकी मांगना—नुकसान पहुँचाकर
आरजू मिनती करनेपर क० ।

झांकी श्व भूँठी मनुहारि, तब दर भड़ा मारकी मारि ।

कई पखानो जेहि रस चाइ, प्रथम बुभाय गहत श्व मोच ॥

(मीठाकी सुरमात । शी० २० की०)

धमकाया धनिया धर दी डेढ़सरी—जब कोई
किसीको धमकाके पावनेसे अधिक थदा करे, तब
क० । “दवा पाई गुजरी” ।

धमधूसड़ काहे मोटा, धनज करे न आवे टोटा—
दे० ‘काहे तुम’ ।

धर चल सिर कोल्लुकी लाट, मत चल साथ
कुंचालके घाट—स्पष्ट ।

धरजा मरजा—विश्वासघातीको कहते हैं जिसकी
यही इच्छा रहती है कि कोई उसके पास धरोहर
रख जाय और मर जाय, तो उसका धन पचा ले ।

धरती माता धोभ संमाले—आयोबाँदे है, जिसका
अर्थ है दीवजीवी हो ।

धरनीकी माँ सांभ—सन्ध्या होनेपर सभीको शान्ति
मिलती है । दिनभर मेहनत करके सन्ध्या बाद सभी
पेट भरके खाते हैं इसलिये सन्ध्याको मां कहा ।

धरनेकी मर्यादा सांभ—सभी कामकी सीमा है ।
कोई धरना भी दे तो सन्ध्या तक हड़ है ।

राजी केनि श्व मन्दकिगोर, लखी भई उजियारी भोर ।
सुनिछो लोक उजि रस मांभ, धरनेकी मरजाटा सांभ ॥

धराका स्वभाव यही तुलसी जो फरा सो भरा
औ बरा सो घुताना—दे० “जो फलगा सो”

धर्मका धर्म, फर्मका फर्म—जब स्वार्थ परमाय
दोनों सिद्ध हों, तब क० ।

धर्मकी जय होती है—जब कोई धर्मसे जीता चाहे,
तब क० । यतो धर्मक्षतो जयः

धर्मके दूने—(व्य०) बिना धोका दिये जब दूना
लाभ हो, तब क० ।

धर्म छोड़ धन कोई खाय—जब कोई बेईमानी
करके किसी दूसरेको प्राण्य धन आप ले ले, तब क०

धर्म पाप सब मनुषके धोघत है इस तौर, जल
साधुन ज्यों धोत है सब फपड़ोंका धोर—

जैसे साधुनसे फपड़ोंका मेल कटता है, वैसे ही
धर्मसे मनुष्यका पाप कटता है ।

धर्म रहे तो ऊसरमें जुरे—धर्मके जोरसे ऊसरमें
भी खेती हो सकती है ।

धर्म सनेह उभयमति घेरी, भई गति साप
छछन्दरकेरी—दे० “उगले तो अंधा”

धात्री धात्री धात्री, कर्म लिखा सो पात्री—

चाहे कितनी ही दौड़ धप करो, मगर मिलेगा वही जो नतीयमें लिखा है। श्रावसियोंका कहना है।

(१) ध्याने की सुद्धों गर्दिय तो पाया एक तिज,
रिज क इन्धोंके सुकहरसे सिखा मिलता नहीं।

(२) करम कामंडन करगरे, तुलसी अइं लमि जाय।
सागर सरिता कूपं जल, बृन्द नं अधिकं समाय।

धान कहे में हूं सुल्तान, आये गयेका राखूं मान-
स्पट।

धानका गांव पुश्रालसे जाना जाता है—(क०)
गांवके बांडर जो पुश्रालका ढेर लगा रहता है उससे
जाना जाता है कि इस गांवमें धान हैं। ऊपरके टाट
घाटसे मनुष्यको डालत जानी जाती है।

धान पान प नयउले, और नान्ह जात लतियउले—
(प० क०) धान और पान अछ्दी तरह सींच देनेसे
ठीक रहते हैं और नीच सतियानेसे ठीक रहता है।
दे० “काटे पे”

धान पान पानी, कातक सवाद जानी—धान
पान और पानीका सवाद कात्तिकमें मिलता है।

धान बिचारे भल्ले, जो कूटा खाया चल्ले—
धान बहुत अछ्दी चीज है। कूटा खाया और अपना
रास्ता लिया। व्यंगसे ऐसा कहा गया है। वास्तव
में धानका कूटर चावल निकालना और उसका
भात करके खा लेना ऐसा सहज नहीं है।

इसपर एक कहानी है। एक सरायमें दो सुभाफिर
ठहरे थे। एकके पास घोड़ा सगु था और दूसरेके पास
कुह धान थे। जब उन लोगोंकी आपसमें खाने पीने
की बात चित हुई तो एकने कहा कि भेरे पास सगु है
मैं उसीकी खाकर यावा आरंभ कर दूंगा। दूसरा बोला
कि तुम्हें बहुत देर लगेगी, भेरे पास धान है जिसमें
सुरत कूट काटके खा लूंगा क्योंकि “सगु मन सगु जब
बोली सब खाओ और धान बिचारे मंगली कूटे खाये
बने।” पहिला मनुष्य बहुत सीधा था, इसलिये वह
दूसरेके भावमें आ गया और उसे अपना सगु दे बदलमें
बदले धान ले लिया। वह तो सगु पील घाल कर
खाके अथवा बना और यह बिचारे धान कूटने ही बच
गये। जो मनुष्य भुंठा तक करके भूठकी सप बनाना
चाहता हो, उसपर क०।

धान सूखता है कौआ टरटराता है—(प० ज०) स्पट।

धाये धन न मांगे पूत—दौड़नेसे धन और मांगनेसे
लड़का नहीं मिलता, जो भाग्यमें है वही मिलता है
धावेगा सो पावेगा—दौड़ेगा (मेहनत करेगा) उसे
मिलेगा वा जो ध्यावेगा (श्राधाधना करेगा) उसे
फल मिलेगा।

धींग धींगो बल्लूका राज—जयवंस्ती बल्लूके राज
में होती है। बल्लू एक जाट राजा था जिसके
राजमें “जिसकी लाठी उसकी भैंस” वाली भसल
चरितार्थ होती थी। धींग धींगी करनेके समय क०।

धी छोड़ दामाद प्यारा—लड़कीसे जमाई प्यारा
होता है। हिन्दुओंमें ऐसी ही चाल है। अंगरेजोंमें
ठीक इसका विपरीत है। वह कहते हैं कि लड़का
सभी तक अपना लड़का रहता है जब तक उसका
विवाह नहीं होता। परन्तु लड़की जब तक जीती
है तब तक अपनी लड़की रहती है।

धी, जमाई, भानजा, यह तीनों नहीं आपने—
क्योंकि इनके क़रीबी रिश्तेदार दूसरे ही हैं।

धी न धोंकड़ अल्ला मियांका नौकर—मोटा
श्रादमो ईश्वरका नौकर है। मोटा श्रादमी आसली
होता है, उससे कुछ काम नहीं हो सकता, वह
ईश्वरके भरोसे पर ही रहता है, इसलिये क०।

(२) धी न धोंकड़=पेटी न घेटी।

धी न धियाना, आपही कमाना, आपही खाना—
(ज०) उसके लड़की है न जमाई, श्रापही जो
कमाता है आपही खाता है।

धी न घेटी, उधल गई समघेटी—(ज०) उसके
कोई लड़की नहीं है तो भी कहती है कि मेरी
लड़कीकी नन्द निकल गई। समधन=लड़कीकी
सास। समघेटी=उसकी लड़की। बिना सिरपरकी
घात करना।

धी पराई, आंख लजाई—लड़कीका विवाह कर
देनेपर समधीसे बचना पड़ता है।

धी घेटी अपने घर भली—(ज०) लड़कीका अपने
(अपने स्वामीके) घरमें रहना अछ्दा।

धीमरके बस पड़ी—कुरूप पर क०।

धी मरी जमाई चोर—(प०) लड़की मरनेपर
चोरके समान हो जाता है, यह

तभी कही जाती है। जब अपनी लड़कीके कोई लड़कावाला नहीं रहता। पूरी मसल यह है—

“धो मरी जमाई चोर, टूट गई झाली उड़ गया मोर।”

धी मारू पुतोहले तरास—(मे० ज०) बहुको डराने के वास्ते में अपनी लड़की को मारती है। पुरुका शासन करनेसे दूसरेको चेत होता है।

धीया तोको कहुं बहुगिया तू कान धर—अथांत तू भी सीखले। ऊ० दे०।

धीया पूतके न गांती, धिल्लैयाके गांती—(प० ज०) बेदा बेटीके लिये तो कपड़े नहीं मगर उसकी बिल्लीके लिये कपड़ा मौजूद है; बिल्लीसे तात्पर्य स्त्रीका है।

धीरज धरिय तो पाइय पारु, नाहित बूड़त सय परिवारु—(तुलसी) धीरज धरनेके लिये क०।

धीरज धर्म मित्र अरुनारी, आपद्काल पर-लिये चारी—(तुलसी) धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री इनकी परीक्षा विपत्ति पड़नेपर करनी चाहिए।

धीरज बनिज उतावल खेती—व्यापार धर्मसे और खेती जल्दीकी अच्छी होती है।

धीरा काम रहमानी, शिंताय काम शैतानी—धीरा काम अच्छा और जल्दीका काम बुरा होता है।

धीरा सो गंभीरा—दे० “उताक्ला सो बाबला”

धनी पानीका संयोग है—खाने पीनेमें साफ़ा है।

धूप पड़त जो दायें चलावे, रासनाज वह लुरत उठावे—(क०) स्पष्ट।

धूपमें बाल सफ़ेद नहीं किये हैं—उमर योंहीं नहीं गँवाई है। जब किसी तजुर्बेकार आदमीको कोई धोका दिया चाहे, तब वह कहता है। तात्पर्य यह है कि मैं तुम्हारी चालोंको समझता हूँ।

धूमड तजइ सहज फरबार्इ, अगरु प्रसंग सुगन्ध बसाई—(तुलसी) हसंगतसे दुष्ट भी अपनी दुष्टता छोड़ देता है।

धूम कुसंगति फारिख होई, लिखिय पुरान मंजु मति सोई—(तुलसी) सोहयतके अक्षरपर क०। जो धर्मों का लिख समझ कर पुतवा वाला जाता है,

उसीकी स्याही बनती है तो उससे पुरान लिखे जाते हैं।

धूलकी रस्सी बटना—हवाके धौड़े दोड़ाना। अस्-भव कामके करनेकी चेष्टा करना। बहुत चालाक आदमीको भी क०। जो झाली बातोंका रोज़गार करके खाता हो।

धूलकोटका खरपूजा, जैसे मिथ्रीका कूजा—प्राण्तिक् मसल है। धूलकोट दिल्लीके पास एक जगहका नाम है।

धूल डालनेसे खरज नहीं छिपता—अच्छे मनुष्य की निन्दा करनेसे वह निन्दित नहीं होता।

पीतम भोजि सदा अतुल। देइ दीप मति, साजन भूख ॥ जो उपखाने पाठ अंग करे। धूरूर तन कैसे परे ॥
(सक्थीया । लो० २० कौ०)

धेला सिर मुड़ाई, टका बदलाई—जब असल कामसे ऊपरका खर्च बहुत हो, तब क०। अथेला तो सिर मुड़ाईका हुआ दो पैसे सपया मुनाईका बटा देना पड़ा।

धोई धाई भेंड़ी पाँके लगी—(प०) भेड़को घो धाके साफ़ किया फिर वह कीचड़में चली गई।

धोकेकी टट्टी—जैसी समझते थे वैसी नहीं है। नये धर्म मत या गुरु पर क०।

धोतीके भीतर सब नंगे—ऐव सभीमें होता है। जब कोई किसीका ऐव दिखाता है, तब क०।

धोती भी पहिने जब कि कोई गुर पिनहा दे, उमराको हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा—(हरिचन्द्र)। आलसियोंपर ताना है।

धोती थी दो पाँव, धोने पड़े चार पाँव—(ज०) दो अपने और दो अपने पतिके। आलसी पतिपर कही जाती है जो अपनी पैर भी नहीं धो सकता।

धोयिनपर बस न चले, गधइयाके कान अमिटे—जब बलवानसे बस न चले और निबलपर जोर दिखावे, तब क०।

धोबीका कुत्ता, घरका न घाटका—जिस मनुष्यके रहनेका कोई पका ठिकाना न हो, उसे क०। जो मनुष्य दोनों तरफ़की चाल बने, न इधरका रहे न उधरका, उसे भी क०।

(१) दुनियाकी तलबमें हुए अज्ञातसे दूर,
लंकिन दुनियाकी इनसे है यह स नपूर ।
धोवीके कृतेकी तरफ सद अफसोस,
हम वरके रहे न घाटके ऐ रंजूर ॥

(२) ना अहीर बंदिनमें ना तो यह बंदिनमें धोवी कैसी
कूकर न वरकी न घाटकी । (७० पं०)

धोवीका घर इंदपर देखा जाता है—(व्य०)
क्योंकि इंदके दिन सभी सफ़ेद और धुले हुए कपड़े
पहिनते हैं, इसलिये धोवीके यहाँसे सब कपड़े
निकल जाते हैं । जो कुछ बचा रह जाय वही
सम्भो धोवीका है

धोवीका छैला, एक उजला एक मौला—क्योंकि
यह दूसरोंके कपड़े पहिनता है जैसा मौला और
जो उसके बदलमें आया वही पहिन लिया ।
धोवीकी जगह बनिया भी क० ।

धोवीका भाई पत्यर—क्योंकि उसीसे उसे हरदम
काम रहता है ।

धोवीके घर पड़े चोर, वह न लुटा लुटे और—
जिनके कपड़े चोरी जाते हैं वही लुटे हैं धोवीका
क्या छुड़ेगा ।

धोवीके घर ब्याह गधेके माथे मौर—धोवीयोंमें
ऐसी चाल है ।

धोवी गीतको धोवी जाने—जिसका काम वही
बानता है ।

धोवी छोड़ सका किया, रही खिज़रके घाट—
(मु० अ०) धोवी छोड़के भिस्तीसे ब्याह किया
फिर भी पानीसे सम्बन्ध न टूटा । दोनोंहीका
काम घाटपर जाना है । ब्याजाखिज़र जलके देवता
सम्भो जाते हैं ।

धोवीपर धोवी खेधड़ेमें साधुन—धोवीपर धोवी
बदलना ऐसा है जैसा युद्धमें साधुन लगाना । घड़ी
घड़ी नौकर न बदलना चाहिये ।

धोवी यलिके बना करे दिग्भरोंके गाँव—
जहाँ रुद्र न हो वहाँ न रहना चाहिये । जब कोई
ऐसी जगह रहे जहाँ उसकी आवश्यकता न हो,
तब क० ।

धोवी घेटा चांदसा, सीटी और पटाक—
धोवीका घेटा दूसरोंके उज्वल कपड़े, पहिनकर
चांदसा बना रहता है, उसके पास निजकी दोही
चीज़ें हैं सीटी और पटाक । धोवी जब धोते समय
कपड़ेको पत्यरपर “पटाक” से पढाड़ते हैं तब सीटी
भी बजाते हैं । जो दूसरेके खर्चमें छैल चिकनियां
बने फिलते हैं उनपर क० ।

धोवी रोवे धुलाईको, मियां रोवें कपड़ोंको—
प्रायः ऐसा देखा जाता है कि धोवी तो धुलाईका
तगादा करता है और जिसका कपड़ा खोया गया हो
वह अपने कपड़ेका तगादा करता है । जहाँ दोनों
ही अपनी अपनी शिकायत करते हों वहाँ क० ।
दे० “तेली रोवे ।”

धोये गधा चछा नहीं होय—गधेको धोनेसे चछड़ा
नहीं होता । ऊपरके बनावसे असलियत नहीं
जाती ।

धोये हूँ सौ धारके, काजर होय न सेत—
(वृ०) ऊ० दे० । मूर्खको कितना ही सम्भ्राद्यो
उसे ज्ञान नहीं होता ।

धौला बाल मौतकी निशानी—बाल सफ़ेद हों तो
सम्भो मौत करीब आ गई । बाल सफ़ेद बुढ़ापमें
होते हैं ।

धीले भले हैं कापड़े, धौले भले न धार । काली
धाछी कामली, काली भली न नार—सफ़ेद
कपड़े अच्छे होते हैं पर सफ़ेद बाल अच्छे नहीं,
काला कंबल अच्छा होता है पर काली स्त्री अच्छी
नहीं ।

न

न ईंट डालो, न छोटों भरो—न किसीको धुरा कहे
न सुनो । जब कोई नीचको दुर्वचन कहे और यह
पल्लटेसे जवाब दे तब क० ।

नंग बड़े परमेश्वरसे—नंगमें ईश्वर भी डरता है ।

नंगसे जितना डर लगता है उतना ईश्वरसे नहीं । ..
नंगा खड़ा उजाड़में, है कोई कपड़े ले—जिसके
पास कुछ नहीं है उससे जो मिलनेकी आया करे,
उसे क० ।

नंगा चला बजारको, चोर बलैया लैय } ऊ० दे०
 नंगा नाचे खोरमें, चोर बलैया लैय }
 नंगा नाचे फाटे क्या ?—जिसके पास कपड़ा ही
 नहीं है उसका क्या फटेगा ।

नंगा साठ रुपये कमाय, तीन पैसे खाय—
 उस आदमीको कही जाती है जिसकी गृहस्थी नहीं
 है, तथा कमाता बहुत है और खर्च बहुत कम
 करता है ।

नंगी क्या नहायगी, क्या निचोड़ेगी—जिसके पास
 कुछ है ही नहीं वह क्या ध्याप खायगा, क्या दूसरे-
 को देगा ।

पिय परदेस भँदेस न पाऊँ, सजि सिंगार तन काहि दिखाऊँ
 सुन्दो पखानो लोगनि कहा, नंगी नहाय निचोरे बदा ।

(प्रीथत पतिका ११ लो० २० कौ०)

नंगी देखे सरसै काम—स्पष्ट ।

कौंसो सानान्या करि व्यंग, जनि रिखाय रसिया इहि दंग
 लोग छलि सौचो अभिराम, नामी देखे सरसै काम ।

(लो० २० कौ०)

नंगीने घाट रोका, नहाय न नहाने दे—स्पष्ट ।

नंगी भली कि छीके पाव—दो बुरे कामोंमेंसे जो
 कम बुरा हो, उसे करो । नंगी रहना और छीकेपर
 पैर रखकर खड़े होना दोनों ही बुरे हैं । कोई
 पहलेको बिलकुल बेपर्द और दूसरमें कुछ परदा
 समझते हैं, और कोई दूसरेको पहलेसे भी बुरा
 समझते हैं, क्योंकि पहलो अवस्थामें लोग नंगी
 देखकर आँख फेर लेते हैं, पर दूसरोंमें विशेषता देख-
 कर उसपर निगाह डालते हैं ।

नंगी भला कि टटक मचवा—(पू०) ऊ० दे० टटक
 मचवा=ट्टा मचवाना । इसपर एक कहानी भी है जो
 अश्लील होनेके कारण नहीं लिखी गई ।

नंगी भली कि मूसल आड़े—ऊ० दे० ।

नंगी होके फाता सूत, बूढ़ी होके जाया पूत—
 यदि पहले ही कातती तो नंगी क्यों रहती और
 पहले ही जनती तो बुरापमें कष्ट क्यों पाती ।

नंगीसे खुदा भी हारा है—सु० दे० 'नंग बड़' परमे-
 श्वरसे ।

नंगीको भूछोने लूट लिया—अशभव घातपर क० ।
 नकटा जीवे बुरे दवाल—चेथरुको क० । जो सपका

कनौड़ा रहता है, उसे भी क० ।
 नकटा बूचा सबसे ऊँचा—ऊ० दे० ।

नकटीके सामने नाक पकड़ना—उसको चिढ़ाना है ।
 नकटी घुड़िया पानी पिला, बेटा आगे चलकर
 दूध मिलेगा—जो काम मोठी धोलीसे निकलता है
 सो कटु वचन बोलनेसे नहीं निकलता । किसीने
 एक घुड़ियाको नकटी कहकर पानी मांगा, उसने
 व्यंगसे कहा पानी तो क्या आगे चलकर तुम्हें दूध
 मिलेगा ।

नकटी मैया पानी पिला, पूता इन्हीं गुनोंसे—
 ऊ० दे० ।

नकटेकी नाक कटी, सवा गज और बड़ी—
 निर्लज्जको क० ।

नकटहू हुरमतहू—(अरबी) नगद दो और साव
 रखो ।

नकूल राचे थूक—(फा०) नकूल करना कोई अक्लका
 काम नहीं है ।

नकूले कुफ़, कूफ़, न वाशद—(फा०) काफ़िरी
 नकूल करनेसे कोई काफ़िर नहीं होता । स्वांग
 बनानेवालोंका कहना है जो मनोरंजनाथे सभीकी
 नकूल करते हैं ।

न कूटे न पीसे न दुखड़ा करे, खुदा ऐसी
 औरतको शारत करे—स्पष्ट ।

न कोई आता था घरमें, न कोई जाता था, न
 कोई गोदमें लेकर मुझे सुलाता था—दुमानी है ।

एक मनुष्य अपनी जधान को और छोटे बच्चे को घरमें
 छोड़कर विदेश गया । उसकी अनुपस्थितिमें एक अज-
 नबी मनुष्य उसकी स्त्रीके पास आया आया करता था ।
 एक दिन उस छोटे बच्चेने अपनी मांसे पूछा, जो अभी
 आया था और चला गया, वह कौन है । मनि कहा न
 कोई आया न कोई गया । लड़का यही समझा कि
 इसका नाम 'न कोई' है । जब वह मनुष्य कुछ दिन
 बाद अपने घर आया तो लड़केको गोदमें लेकर प्यार
 करने लगा, और धपपपा कर सुनाने लगा । उसने
 लड़केसे पूछा मरे पीके तुम्हें इस तरह कौन सुलाता
 होगा । लड़केने ऊपर लिखी मसलकी कथा । याप तो
 यह समझा कि मरे पीके लड़केको प्यार करनेवाला कोई
 न था, मगर लड़केने तो सचा हाल कथ ही दिया ।

न कोई संग छाया है न कोई ले जायगा—
घनपर क० ।

कम करि भागिहि पाइवे युध सप्यति धन धाम ।

व्यायो कोठ न जघते विन रंग शत्रा निमान ॥

(को० २० को०)

नक्षत्र खानेमें तूतीकी अवाज़ कौन सुनता है—
बड़े आदमीकी बातके आगे गरीबको कोई नहीं
घनता ।

न खुदा ही मिला, न बिसाले सनम्, न इधरके
हुए न उधरके हुए—निरास फ़ज़ोरका कहना है । न
इस लोकके रहे न परलोकके ।

न गायके धन, न किसानके भांडू—वेकार चीज़-
पर क० ।

नगीनेसे नक्षत्र जुदा नहीं होता—पत्थरपर खुदी
हुई नक्षत्राणी मिटानेसे नहीं मिटती, जो बात जीमें
जम जाती है वह नहीं हटती ।

खुदा जुदा न करे तुम्ह परीके चीनेसे,

कभी हुआ है जुदा नक्षत्र नगीनेसे ।

न जीनेको शादी न मरनेका ग्राम—त्यागी मनुष्य
को क० ।

नटकका यच्चा तो फलावाजी ही करेगा—दे०
“बहेका यच्चा ।”

नट विद्या पाई जाय, जट विद्या न पाई जाय—
जाटोंकी चालाकी पर क० ।

एक राजाने किसी मटनीसे पतिव्रता कर दी कि यदि तुम्हें
नट विद्यामें कोई नई चीज़ मिलेगी तो मैं तुम्हें अपना
राज्य दे दूंगा । उस जगहपर एक साधारण जाट खड़ा
था । उसने मटनीके नीचेके दरजाने अपने हाथोंमें पड़िन
लिये और मटनीसपर बट गया । ऊपर जाकर उसने
सारी तरफ़ घूमकर खूब पेशाब किया । उसका यह
तमाशा ईर्ष्यकर सब कोई उसने लगे; और वह मटनी
बहुत लम्बित हुई । इस तरह उसने मटनीको परास्त
किया और अपने राजाका राज्य भी बचा लिया ।

नटनी जह घांसपर चढ़ी तो भूँघट क्या ?—

जय घेशमीका काम ही उठाया तो धर्म क्या
करना ?

न तैल तली न ऊपरपली—बहुत बुद्धि दान पर क० ।

नदिया उतरे नावमें क्या ले करे जहाज़, जो

जाको स्वारथ करे सो तार्को महाराज—दे०

“काम जो आने कामरी ।”

नदिया नाव घाट बहतेरा, वहाँ कधीर “नामके
फैरा”—नदी नाव और घाट बहतेसे हैं पर सबके नाम
बुदे बुदे हैं ।

नदी किनारे खूबड़ा जय तय होत विनास—

जो जोखिमका काम करता है, उसे क० ।

भवसागर मधि विन तन, बड़े न ताँज विधाय ।

नदी किनारे बख़्शो जय तय होत विनास ॥

नदी तू गुराँरो क्यों है, मैं पांव ही नहीं रखता—
जब कोई किसीको अपना रोष दिलावे और वह
उसकी कुछ भी परवाह न करे, तब क० ।

न दीनके रहे, न दुनियाके—जब कोई ऐसा काम
करे जिसमें धर्म भी जाय और यद्वामी भी हो,
तब क० ।

नदी नाव संयोग—इतिहाससे मिलने पर क० ।

(१) श्री दीनत सब निध्या मानि,

इराव शीक जानि मनमें धामि ।

दाग सुत सब धाता बंधु,

नदी नावको है मनबंधु ।

(२) कधे कबू दिन बमि ब्रियो, वा कपटी संग भोग ।
कहाँ कान्हू अब हम कहीं, नदी नाव संयोग । (पं० ६०)

नदीमें जल यों, फुनवा डूबा क्यों—दे० “हिसाब
ज्योंका त्यों० ।”

नदीमें रहकर मगरसे बैर—बलवानके पास रहकर
उससे बैर नहीं करना चाहिये ।

न झड़ू चलोगे, न टैस लगेगी—स्पष्ट ।

ननदका नन्दोई, गले लाग लाग रोई—जब कोई
ऐसेसे स्नेह दिलावे जिससे उसका कोई संबंध न
हो, तब क० ।

न नाम लेवा, न पानी देवा—जिसका कोई न हो,
उसे क० । निःसन्तानको भी क० ।

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेपी—जब कोई
मनुष्य अपने अज्ञानता विधानके लिये ऐसी गधि-
पर काम करनेको कहे जो मामुमकिन हो, तब क० ।

किसी इधरमें राधा नामकी—एक बेव्या बहूत मरहर
को गई थी । वह जानतो थी कि मुझे नाचवा च्यवा

नहीं आता। प्रसलिये उसे जब कोई नाचनेकी कहता तब वह यही कहती कि नौ मन तेलके चिराम् जलाओ तब मैं नाचूंगी, जिसे प्रसन्न वा कष्ट-घात्र समझ कर कोई नहीं करता था। बहुत लोग इस मसनकी योराधिकामोपर घटाते हैं जिन्के लिये यह काम कुछ सुशकिल न था क्योंकि तेल उस समय आजकलके पानीके मील विकता था।

नपूतीका घर सूना, मूरखका हृदय सूना।
दरिद्रीका सब कुछ सूना—स्पष्ट।

नफ़रीमें नखरा क्या ?—रोज़ाना तनइवाहमें भगड़ा क्या ?

न भूतो न भविष्यति—(सं०) न हुआ और न होगा। बहुत आश्चर्य जनक कामपर वा बड़े भारी पंडितको क०।

नमकका सहारा ही बहुत है—थोड़े ही सहारेसे काम चल सकता है।

नमाज़ छुड़ाने गये थे रोज़े गले पड़े—(मु०) दे०
“गये थे रोज़ा छुड़ाने”

किसी समय मुसलमानोंने मूसा पैगम्बरसे कहा कि खुदा से सिफ़ारिश करके पाँचों ब्रह्मकी नमाज़से हमारा कूट-कारा करा दीजिये। खुदाने उनको धर्मपर ऐसी अचि देखकर सज़ाको तोरपर उन्हे एक महाने तक रोज़ा रखनेकी कहा।

नमाज़ीका टका—

एक दुष्ट लड़केका यह स्वभाव पड़ गया था कि जब कोई मसजिदमें जाकर नमाज़ पढ़ने लगता तो वह पीछे उसका पैर पकड़कर घधीट लेता। जब उसने एक बड़े नमाज़ीके साथ यह बर्ताव करना चाहा तो उसने लड़केको एक टका दिया। इसी तरह सब नमाज़ी इस आफ़ससे पिछे लड़केके लिये उसे दोपैस दित थे। इससे लड़केका द्विभक्त बहुत बढ़ गई और उसने अपना यह काम एक पठागपर आजमाना चाहा। कौं हो उसने पीछे उसका पैर पकड़ा कौं ही पठागने घूमकर ऐसे जोरसे घूसा मारा कि लड़केका बर्ताव डेर ही गया।

न मारे मरे, न काटे फटे—अभेध वा यत्र तुल्य कतिन पदार्थ वा अनुष्यको क०।

न मिली नारी, तो सदा ब्रह्मचारी—लान

न मैं कहूँ तेरी न तू कह मेरी } (ज०)
न मैं जलाऊँ तेरी न तू जला मेरी } जब भगड़ा
निपट जाता है, तब क०। न मैं तेरी धुराई करूँ न तू मेरी कर।

नयन झोप जा कहँ जब होई। पीत वरन शशि कहँ कह सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

नया अतीत पेड़ पर भलाच—जिससे वह जल्दी थक जाता है। साधू लोग सहारेके लिये काठका वेंरागन बना लेते हैं जिसपर हाथ रखे वह दिन दिन भर बैठे रहते हैं और नहीं थकते।

नया चिकनियाँ रेंडीका फुल्ले—नदीसे मनुष्यको क०।

नया जोगी और गाजरका संख—(च०) जब कोई नौसिखुआ अनुपयुक्त चीज़से काम लेता है, तब क०। यदि इसली संख न हो तो ताँबे पीतल वा साँगा होना चाहिये।

नया दाना नया पानी—जब भालिक बदल जाय वा नई नौकरी लगे, तब क०।

नया धोविया धोवही, गुदड़ी साधुन लाय—
फ़य़डको क०।

एवनि धोविन या ब्रजमें लुगरी मई साधुन लावत चाये।
(सं० प० गोपियोंका कहना उहवके प्रति)

नया धोवी नाई पुराना—दोनों अच्छे होते हैं।

नया नया राज, ढय ढय बाज—नया राज होता है तो शेर गुल बहुत होता है।

नया नया राज भइल, शगरिन अनाज भइल—
(पू०) नयी अमलदारीमें नयी नयी बातें होती हैं, तब क०।

नया नौ गण्डा, पुराना छे गण्डा—पुरानेसे नयेकी क़दर ज्यादा होती है।

नया नौकर मारे हिरन (वा शेर)—वानगी दिखानेके लिये।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन—नई चीज़का एतबार दिनमें पुरानी हो जाती

पुकारे—नये मत

नया हकीम, दे अफ़ीम—हकीम जितने रोगियोंको
अराम नहीं करते उससे ज्यादाको मारते हैं। जो
नया हकीम होता है और सब रोगियोंको अफ़ीम
ही दवा बतलाता है, उसे क०।

नयी घोड़िया फोटीमें बछेड़—(५० च०) नये
शौकमें चाप बहुत होता है। घोड़ीके बच्चेको कोठीमें
रखना उसका अत्यधिक दुलार है। नये शौकीनपर
ध्वंगसे क०।

नयी घोसन, उपलोंका तकिया—नौसिधुआ जब
घोड़का उपयोग ठीकसे न करे, तब क०।

नयी जवानो मांभा ढीला—जो जवान होकर थालसी
या छस्त हो, उसे क०।

नयी जवानी बाराबाट, फमी न लाया भट्टा
भात—(मा०)—स्फट

नयी जुलाहिन फानमें छूछी—दे० “नयी घोसन”।

नयी दुलहन और मुंह पोपा—(च०) नयी दुलहन
और मुंह बुढ़ियोंका सा।

नयी नागिन टांगेपर फन—जब कोई मूर्खतासे पेसा
काम करे जिसे वह बिलकुल न समझता हो,
तब क०।

नयी नाइन बांसकी नहरनी—जिसे न तगुरबा हो
और न काम करनेका ठीक साधन हो, उसे क०।

नयी नाव बांसका न होना—बहुत बड़ी भूलपर क०।
सभी नावमें बांस होता है। नयी नावमें बांसका
न होना आश्चर्य है।

नयी नौ, दाम, पुरानी छेदाम—पुरानी घोड़से
नयीका दाम बहुत होता है।

नयी फौजदारी और मुरगीपर नकारा—नये
ज्ञानपर पूया प्रकाश करनेपर क०।

नयी घस्ती रेंडोका फुलेल—मूर्खतापर क०।

करि फुलेलको भाचभन मौडो कहत सरादि।

दे गथी मति चन्नु, अतर, दिखानत कादि ॥ (विहारी)

नयी यहू टाटका लहंगा—जब अच्छी जगह इरी
घोड़का उपयोग किया जाय, तब क०।

नये चाँडे अगग लगी है—(प०) जब कोई शरीर
एकएकी बड़ा आदमी होकर इतराने लगे, तब क०।

चौंदा=सिर। अगग=भाग।

नये छैला लीदके फको—(च०) दे० ‘नया विक-
नियां.....’

नये नमाज़ी और बोरियेका तहमद—(च०) दे०
‘नया जोगी.....’

नये नये हाकिम नयो नयो बातें—जब हाकिम
नये होते हैं, तब ज्ञानून भी नये बनते हैं। नया
हाकिम वा अफसर जब कोई नयी बात करे, तब क०
नये नवाय आसमानपर दिमाग—नयेके पास जप
धन होता है, तब वह इतराने लगता है।

नये बाबरची सागमें शोशवा—(च०) फहड़को क०।
नये बिरुसिये अति नये, पुर्जन दुसद सुभाय,
आँटेपर प्राणन हरत, काँटे लौं लगि पाँव—
दुष्ट और विश्वासवातीको बहुत नत्र होनेपर भी
विश्वास न करना चाहिये क्योंकि वह दाँव मिलने-
पर काँटेको तरह (पाँवमें लगकर) दुःख देता है।

नवन नीच कौं चंदि दुखदाई। (तुलसी)

नये शौकीन खलीतीमें गाजर—(च०) दे० ‘नये
जोगी.....’

नये सिपाही मूँछमें डाटा—ऊ० दे०। डाटा बाड़ीमें
बांधा जाता है जिससे बाड़ी ऊँची और जमी
रहती है।

नर धानरहि संग काहु कैसे—(तुलसी) बेजोड़
घातपर क०।

न रहेगा बांस न याजोगी बांसरी—जिसके रहनेमें
जुलसान होता हो, उस घोड़को जइसे मिटा देनेके
समय क०।

न रहे मान न रहे मानी, आखिर दुनियां फनाफनी
(मु०) स्पष्ट। संसारकी अस्थिरतापर क०।

न रामके न रहीमके—न हिन्दू न मुसलमान। जो
किसीका संगी नहीं, उसे क०।

बानी वेद बानके न, कलमा कुरानके न।

राम रहमाके न, अल्ल गणोरके।

नर्क परै उनके पुरला, परपंच करै पर पंच
कहावै—जब कोई पंच वा चौधरी अन्याय करता है,
तब क०।

नर्म चोबरा किर्मी गुरद—(फा०) नर्म काठको
कीड़े खा जाते हैं।

नहीं आता। इसलिये उसे जब कोई नाचनेको कहता तब वह यही कहती कि नी मन तेजके धिरामु जलाची तब मैं नाचूंगी, जिसे बसभब वा कष्ट-साध्य समझ कर कोई नहीं करता था। बहुत लोग इस मसलको शौराधिकानोपर घटाने हैं जिनके लिये यह काम कुछ मुश्किल न था क्योंकि तेल उस समय आजकालके पानीके मोल बिकता था।

नपूतीका घर सूना, मूरखका हृदय सूना।
दरिद्रीका सध कुछ सूना—स्फट।

नफ़रीमें नख़रा क्या ?—रोज़ाना तनफ़्वाहमें भगड़ा क्या ?

न भूतो न भविष्यति—(सं०) न हुआ और न होगा। बहुत आश्रय जनक कामपर वा बड़े भारी पंडितको क०।

नमकफका सदावा ही बहुत है—थोड़े ही सहारेसे काम चल सकता है।

नमाज़ छुड़ाने गये थे रोज़े गले पड़े—(सु०) दे०
“गये थे रोज़ा छुड़ाने”

किसी समय मुसलमानोंने सूझा पैगम्बरसे कहा कि खुदा से विफ़ारिय करके पाँचों बरतको नमाज़से इनाम कटकारा करा दीजिये। खुदाने उनको धर्मपर ऐसी अहमि देखकर सज़ाकी तोरपर उन्हें एक महीने तक रोज़ा रखनेको कहा।

नमाज़ीका टका—

एक दुष्ट लड़केका यह स्वभाव पड़ गया था कि जब कोई मसजिदमें जाकर नमाज़ पढ़ने लगता तो वह पीछेसे उसका पैर पकड़कर घसीट लेता। जब उसने एक बूढ़े नमाज़ीके साथ यह बर्ताव करना चाहा तो उसने लड़केको एक टका दिया। इसी तरह सभ नमाज़ी इस आफ़तसे पिछ हुड़ानेके लिये उसे दोपैस देते थे। इससे लड़केका चिन्ता बहुत बढ़ गई और उसने अपना यह काम एक पठानपर आजमाया चाहा। वही ही उसने पीछेसे उसका पैर पकड़ा वही ही पठानने धमकार ऐसी चीरसे पूंसा मारा कि लड़केका बर्ताव ठेर ही गया।

न मारे मरे, न काटे फटे—यमेश वा यज्ञतुल्य कटित पदार्थ वा मनुष्यको क०।

न मिली नारी, तो सदा ब्रह्मचारी—साचारीसे

न मैं कहूँ तेरी न तू कह मेरी } (ज०)
न मैं जलाऊँ तेरी न तू जला मेरी } जब भगड़ा
निपट जाता है, तब क०। न मैं तेरी पुराई करूँ न
तू मेरी कर।

नयन द्रुप जा कहं जच होई। पीत वरन शशि
कहं कह सोई—(तुलसी) स्फट।

नया अतीत पेड़ पर अलाव—जिससे वह जलदी थक जाता है। साथू लोग सहारेके लिये काटका वेंरागन बना लेते हैं जिसपर हाथ रखे वह दिन दिन भर बैठे रहते हैं और नहीं थकते।

नया चिकनियाँ रेंडीका फुल्ले—नदीसे मनुष्यको क०।

नया जोगी और गाजरका संख—(सं०) जब कोई नौसिखुआ अनुपयुक्त चीज़से काम लेता है, तब क०। यदि शासली संख न हो तो ताँबे पीतल वा साँगका होना चाहिये।

नया दाना नया पानी—जब मालिक बदल जाय वा नई नौकरी लगे, तब क०।

नया धोविया धोवही, गुदड़ी सावुन लाय—
फगड़को क०।

एविन धोविन या ब्रजमें लुगरी महँ सावुन लावन चाये।
(सं० प० गोपियोंका कहना उड़वके इति)

नया धोवी नाई पुराना—दोनों अच्छे होते हैं।

नया नया राज, दथ दथ याज—नया राज होता है तो शेर गुल बहुत होता है।

नया नया राज भइल, भगरिन अनाज भइल—
(पू०) नयी अमलदारीमें नयी नयी बातें होती हैं, तब क०।

नया नौ गण्डा, पुराना छै गण्डा—पुरानेसे नयेकी क़दर ज्यादा होती है।

नया नौकर मारे हिरन (वा शेर)—बानगी दिवानेके लिये।

नया नौ दिन, पुराना सौ दिन—नई चीज़का एतबार नहीं। सभो चीज़ें थोड़े दिनमें पुरानी हो जाती हैं इसलिये उनसे धृणा न करनी चाहिये।

नया मुसलमान अह्लाही अह्ला पुकारे—नये मत

नया हकीम, दे अफ़ीम—हकीम जितने रोगियोंको
थारामि नहीं करते उससे ज्यादाको मारते हैं। जो
नया हकीम होता है और सब रोगियोंको अफ़ीम
ही दवा बतलाता है, उसे क०।

नयी घोड़िया फोटीमें थलेडू—(५० व०) नये
शौकमें चाप बहुत होता है। घोड़ीके सबको कोठीमें
रखना उसका अत्यधिक हुलार है। नये शौकीनपर
ज्यासे क०।

नयी घोसन, उपलोंका तकिया—नौसिधुआ जब
चीज़का उपयोग ठीकते न करे, तब क०।

नयी जवानो मोंभां ढीला—जो जवान होकर आलसी
बा छस्त हो, उसे क०।

नयी जवानी चाराबाट, कभी न लाया भट्टा
भात—(भा०)—स्पष्ट

नयी जुलाहिन फानमें झुछी—दे० “नयी घोसन”।

नयी दुलहन और मुंघ पोपा—(च०) नयी दुलहन
और मुंघ बुढ़ियोंका सा।

नयी नागिन टांगेपर फन—जब कोई मूर्खतासे ऐसा
काम करे जिसे वह बिलकुल न समझता हो,
तब क०।

नयी नाइन बांसकी नहरनी—जिसे न तजुरबा हो
और न काम करनेका ठीक साधन हो, उसे क०।

नयी नाव बांसका न होना—बहुत बड़ी भूलपर क०।
सभी नावमें बांस होता है। नयी नावमें बांसका
न होना आश्चर्य है।

नयी नौ दाम, पुरानी छेदाम—पुरानी चीज़से
नयीका दाम बहुत होता है।

नयी फौजदारी और मुरगीपर नकारा—नये
कानूनपर पृथा प्रकाश करनेपर क०।

नयी यस्ती रेंडोका फुल्ले—मूर्खतापर क०।

करि फुल्लेको भावमन नींदो कहत सराहि।

रे गथी मति अन्ध तु, अतर दिखानत काहि ॥ (विचारी)

नयी बहू टाटक। लहंगा—जब अर्द्धा जगह डुरी
चीज़का उपयोग किया जाय, तब क०।

नये चौड़े अग लगी है—(प०) जब कोई गरीब
एकापकी बड़ा आदमी होकर इतराने लगे, तब क०।
चौड़ा=सिर। अग=आग।

नये छेला लीदके फक्के—(च०) दे० ‘नया चिक्क-
नियां’...

नये नमाज़ी और चोरियेबा तहमद—(च०) दे०
‘नया जोगी’...

नये नये हाकिम नयो नयी बातें—जब हाकिम
नये होते हैं, तब कानून भी नये बनते हैं। नया
हाकिम वा अफ़सर जब कोई नयी बात करे, तब क०
नये नयाय आसमानपर दिमाग—नयेके पास अथ
धन होता है, तब वह इतराने लगता है।

नये वावरची सागमें शोष्या—(च०) फहड़को क०।

नये थिरुसिये अति नये, युर्जन दुसद सुमाय,
आँटेपर प्राणन हरत, काँटे लौं लगी पाँव—
दुष्ट और विश्वासवादीको बहुत नम्र होनेपर भी
विश्वास न करना चाहिये क्योंकि यह दाँव मिलने-
पर काँटेको तरह (पाँवमें लगकर) दुःख देता है।

नमनि नोच के अति दुखदार। (गुथकी)

नये शौकीन खलीतीमें गाजर—(च०) दे० ‘नये
जोगी’...

नये सिपाही मूँछमें डाटा—ज० दे०। डाटा शक्तिमें
पाँधा जाता है जिससे दाढ़ी ऊँची और जमी
रहती है।

नर धानरहि संग फहु कैसे—(तुलसी) बेजोड़
वातपर क०।

न रहेगा थांस न याजेगी बांसरी—जिसके रहनेमें
जुलूसान होता हो, उस चीज़को अड़से मिटा देनेके
समय क०।

न रहे मानन रहे मानी, आखिर दुनियां फ़नाफ़ली
(मु०) स्पष्ट। संसारकी अस्थिरतापर क०।

न रामके न रहीमके—न हिन्दू न मुसलमान। धो
किरीका संगी गर्दी, उसे क०।

बानी बंद बाजके न, कानमा पुरानके न।

राम रहमानके न, अमर गजोरके।

नर्म परे उनके पुरखा, परपंच परे पर पंच
कहायि—जब कोई पंच वा चौधरी अन्वया फटा है,
तब क०।

नर्म चोरया किर्मी गुरद—(का०) नर्म काटको
कीड़े का जाते हैं।

मलका मारा नलवा टूटे—तिमकेकी चोटसे पिंहुली टूट जाती है (यदि नल कट जाय)। किसी समय ज़रा सी घातमें भारी नुक़सान हो जाता है, तब क०। मघन नीचके अति दुखदाई—(तुलसी) दे० “नये विससिये”

नव रसाल बन विहरन सीला, सोह कि कोकिल विपिन करीला—(तुलसी) ध्यामके धनमें विचरनेवाली कोयल टेंटीके जंगलमें शोभा नहीं देती। जब कोई शानी मनुष्य मूर्खोंके साथ बँटे, तब क०।

नशा उसने पीया खुमार तुम्हें चढ़ा—बड़े आदमीके रिश्तेदारको कटी जाती है जो उसके धनसे अपनेको भी बढ़ा आदमी समझते हैं।

नलकट खटिया दुलकन घोर, कहैं घाघ यह विपतक ओर। धाछा बैल पतुरिया जोय, ना घर रहै न खेती होय—(नीति) छोटी खाट, फूटके चलनेवाला घोड़ा, छोटा बैल और छिनाल खी ये घरे होते हैं।

नसीबवरका भूत हल जोतता है—नसीबवरके काम आपही हो जाते हैं।

भायवानके खेतको जोत बात है भूत (इन्द्र)

न स्व दूये जोग, न चलनी सराहे जोग—स्पष्ट।

नहाकर खावे खाकर सोवे, उसको औंसक कमी न होवे—जो नहाके खाता है और खाके सोता है, वह कमी बीमार नहीं होता।

नहानेसे पहिले खानेके पीछे—सखी लगती है।

नहिं अस कोउ जनम्यो जगमाहीं, प्रभुता पाय जाहि मद नाहीं—(तुल०) प्रभुता मिलनेपर सभीको अहंकार हो जाता है।

नहिं असत्य सम पातक पुंजा—(तुलसी) कठ धरावर पाप नहीं।

नहिं कलि कर्म न भक्ति विचेकू, राम नाम अबलभ्यन पकू—(तुल०) कलियुगमें राम नाम ही मुक्ति पानेका एक मात्र उपाय है।

नहिं दरिद्र सम दुःख जग माहीं, संत मिलन सम सुख कछु नाहीं—(तुल०) स्पष्ट।

नहि विष घेलि अमिय फल फरही—(तुल०) स्पष्ट

नाईकी धारातमें जने जने ठाकुर—(१) नाई सबकी धारातमें छोटा काम करते हैं, पर उनकी धारातमें कौन करे। जहाँ सब आदमी धरावरके हों वहाँ कोई छोटा या मेहनतका काम आ पड़े और उसे कोई भी न करना चाहे, तब क०। (२) नाईको ठाकुर कहते हैं और नाईकी धारातमें नाई ही रहते हैं।

खीरकी धून है भीर फ़ालोवर कोई नहीं।

खब तो बनरल है यही चाखिर निपाही कौन है ॥

(भक्तवर)

नाई, दाई, वैद, कसाई, इनका सूतक कधी न जाई—स्पष्ट।

नाई नाई बाल कितने, जिजमान भागे आयेंगे—जब कोई ऐसी बातके लिये पूछे जिसका हाल तुरंत ही उसके सामने आने वाला हो, तब क०।

नाईसे सयाना सो कौवा—पत्तियोंमें कौवा और मनुष्योंमें नौवा बहुत सयाना होता है।

नाऊ कीसी आरसी हर काहूके पास—ऐसी चीज़ जिसका उपयोग सब कोई करे, उसपर क०। नाऊका शीशा धमी पकके हाथमें है थोड़ी देरमें दूसरेके हाथमें चला जाता है।

नाक कटी पर घी तो चाटा—बेहया आदमीको क०।

किसीने कनिष्ठमें मुंह डालकर घी चाट लिया जिससे उसकी नाक कट गई, तब उसने उक्त मसल कही।

नाक कटी, पर हठ न हटी—ज़िद्दी आदमीको कहते हैं जो बहुत हानि होनेपर भी अपनी हठ नहीं छोड़ता।

नाक कटी बलासे दुश्मनकी बदशकुनी तो डुर्र—यात्राके समय नकटेको देखना अपसगुन होता है। उस वेधमें आदमीको कही जाती है जो अपना नुक़सान करके भी दूसरेकी बुराई करनेपर खुश होता है।

नाक कटी मुवारक, कान कटे सलामत—(मु० ज०) निर्लज्ज या षीठ मनुष्यको क०।

नाक काटके दुशालेसे पोंछना—हानि करके हमदर्दी दिखानेपर क०।

नाकके बाल हो रहे हैं—बहुत मुहलगे हैं।

नाक दधानेसे मुंह खुलता है—(१) दबाव पड़नेसे घात खुलती है। (२) अच्छे जब दवा पीनेके लिये

नानक दुखिया जग संसारा, सुखिया वही जो नाम अधारा—संसारमें केवल वही खली है जो भगवानको उपासना करता है।

नानक नरवां हो रहो, जैसी नरहीं दूब। बड़ी घास जल जायगी, दूब खूबकी खूब—नाश होकर चले। बड़ी घास जल जाती है थार दूब जो नीची होती है बनी रहती है।

नानाकी दौलतपर नवासा पेड़ा फिर—दूसरेके धनपर पेठनेपर क०।

नानाके टुकड़े खावे, दादाका पोता कहलावे—स्पष्ट। दे० 'खाय ननाको वदाको वताये।'

नानी फुंवारी मर गई नवाछेके नौ नौ ब्याह—कर्मों व्यर्थ श्रेष्ठी मारता है।

नानीके आगे ननिहालकी बातें—(ज०) अपनेसे अधिक जाननेवालेसे बात करनेपर क०।

खवा जाको लाख दारें अख कचो सो कैंसे,

नानी ज की आगे वीं बखान ननिभीरेकी।

(७० प० गोपियोंका कहना उहवके प्रति)

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे—(ज०) दोष कोई करे और दण्ड कोई भरे, तब क०।

नानी मरी नाता टूटा—नानीका जैसा दोहतेपर प्रेम रहता है वैसा मामा मामीका नहीं रहता।

नाप न तोल, भर दे भोल—अपने मतलबकी कहना।

नापे सौ गज़, फाड़े नौ गज़—(व्य०) जो कहे पड़त और करे थोड़ा, उसे क०।

नाम बमृत, पिलाय विप—नामसे विपरीत गुण हो, तब क०।

नाम कपूरचन्द खुशाबू गोवरकी नहीं—ज० दे०।

नामकी नरहीं, उठा ले जाय धत्री—नरही=छोटी; धत्री=कड़ी। जो देखनेमें छोटी हो पर काम बड़ा करे, तब क०।

नामके बायाजी करनी छावर—नाम बड़ा और करनी कुछ नहीं। छावर=ब्राक।

“नाम क्या?” “शकरपारा” “खाय क्या?” “सेर दसवारा” “पानो किनना पीये?” “मटका साच” “काम करनेकी?” “लड़का पिचारा”—

(ज०) जो लड़का खाय बहुत पर काम कुछ न करे, उसे क०।

नाम पहाड़ खां धोलें तब चीं—नामसे विपरीत गुण होनेपर क०।

नाम पृथ्वीपाल पालें चिड़िया भी नहीं—ज० दे०।

नाम बड़ ऊँचा, कान दोनों घुचा } जब कोई नाम बड़ा और दर्शन थोड़े } किसीका

बड़ा नाम इनके जाय और उसे कुछ भी न मिले, तब क०।

नाम बढ़ावे दाम—(व्य०) नामी दूकानदारका माल अधिक मोलपर बिकता है।

नाम घसन्ती मुंह कूकर अस—(५० ज०) नामा-नुसार गुण न हो, तब क०।

नाम भानमती और भोलीमें सिर—कूड़ी बड़ाई मारनेपर क०।

नाम मेरा, गांव तेरा—जो दूसरेकी सम्पत्तिसे अपना लाभ उठाया चाहे, उसपर क०।

नाम रतनकुंवर मुंह कुतियों जैसा—नामानुसार गुणके नहीं रहनेपर क०।

नामदों तो दी खुदाने, मार मारसे चूके कयों—असक होनेपर भी कुछ न कुछ करना चाहिये।

नाम हीरामल, दमक फंकड़ सी भी नहीं—नामसे गुण विपरीत हो, तब क०।

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कमा खाय—कहाँ नाम अच्छा होता है कहीं दुरा। खुशनामीसे लाभ होता है बदनामीसे हानि। व्यवसायमें जब किसीकी दूकानदारी अच्छी चलती है, तब क०।

अथवा बदनाम आदमीपर जब बिना किये ही दोष लगता है, तब भी क०।

नामी नर होत गरुड़, गामीके हेरेते—ईश्वर जिसपर निगाह करे वही यशस्वी होता है।

नारने निकांला दंन, मर्दने ताड़ा अंत—खीने दांत निकाला और मर्द उसका नतीजा समझ गया।

जय थी हंसो, तो समझ कि बशमें हो गई।

नार सुलखनी कुटुम छंकावे, आप तलेकी खुरचन खावे—अच्छी छियां कुटुम्बियोंको भर पेट खिला देती हैं और आप बची खुची खाकर ही संतुष्ट होती हैं।

नारि नहीं तहं कानी रानी—दे० 'जहां रख नहीं...
 नारि धर्म पति देव न दूजा-खियोंके लिये पतिके
 सिवाय दूसरा देवता नहीं है।
 नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं, तेहि प्रनाप निज
 अमर डराहीं—(तुल०) स्पष्ट।
 नारि विवश नर सकल गुसाईं, नाचहिं नर
 मरकटकी नाईं—(तुल०) खियां पुरुषोंको वधमें
 कर बन्दरकी तरह नचाया करती हैं।
 नारि मुई कुल सम्पति नासी, मूंड मुझाय भये
 सन्यासी—(तुल०) कलियुगके संन्यासीपर कही
 जाती है। जो खीके मरनेपर वा घरकी सम्पति
 खो देनेपर संन्यासी बन जाते हैं।
 नारियलमें पानी, नहीं जानता खट्टा कि मीठा—
 जब कोई बात छिपी हुई हो और संदेहयुक्त हो,
 तब क०।
 नारि सुभाव सत्य कवि कहहीं, अशुण आठ
 सदा उर रहहीं—(तुल०) स्पष्ट।

साधन, अश्रुत, चपलता, माया।

भय, अविवेक, असीब, अदाया। (तुलसी)

नाले मूज यगड़, नाले देवी दा दर्शन—(प०)
 एक पन्थ दो काजपर क०। मूज और यगड़ घास-
 की किस्ममें होती है जो रस्सी बनानेके काम
 आती है। यह नदीके किनारे होती है जहां देवीके
 मन्दिर भी होते हैं। इसी जोड़की बंगला मसल
 है 'श्य देला आर कला वेचा।'

नाव चढ़े भगडाळू आवे, साखी आवे पिरत—
 असामी फरियादीकी निसयत गवाहको बहुत तक-
 लीफ होती है।

नाव भर रुई जल गई, अपने लेखे फुस—
 किसीका नुकसान हो अपनी यलासे।
 नाहीं करिखे तें कडू करिखो ही नोको है—
 कुछ भी न करनेसे कुछ करना अच्छा है।

निकली हलकसे चली खलकमें—वात मुपसे
 निकलते ही संसारमें फैल जाती है।

निकली होठों चढ़ी फोठों—ऊ० दे०।

निकरन हार घडूरिया दुगौधाका दोप—दे०
 'धपलो बहू.....'

निकसत है इक आंरुसे, धोई, धोयी, धान,
 आळे भोंड़े हो गये, सब करतवके तान—
 धोई, धोयी और धान तीनों शब्दोंके प्रारंभमें एक
 ही अक्षर है पर अपने अपने कर्तव्यसे भले बुरे
 कहलाते हैं। धोई=उग।

निकसो चंदा, तो अंधेरो भयो मन्दा—सबके
 सामने झूठ नहीं ठहर सकता।

निकाही न बपाही, मुंडो यह कहाँसे आई—
 (सु०) स्पष्ट। झूठा रिश्ता जोड़नेपर क०।

निकौड़िया गये हाट, ककड़ो देख जीवरा फाट—
 (पू०) क्योंकि उसके पास खरीदनेको दाम न था।

निखटू आवें लड़ने, कमाऊ आवें डरते—
 (ज०) खियां निखटू आँको कहा करती हैं, जो पैदा
 तो कुछ नहीं करते पर हर बातमें दुःख देते हैं।

निगल जाते हैं ऊँट और दुमसे दिवकी लें }
 निगल जाय हाथी सकल, पर दुमसे परहेज }

दे० 'गुड़ खांय गुलगुलो.....'

निज कवित्त केहि लागन नीका, सरस होय
 अथवा अनि फीका—(तुल०) अपनी चीज़ अच्छी
 हो वा बुरी सभीको अच्छी लगती है।

निज प्रतिविम्ब मुकुर गहि जाई, जानि न जाई
 नारि गति भाई—(तुल०) स्त्री-चरित्रपर क०।

निज घुघियल भरोस मोहि नाहीं—(तुलसी)
 अधीनता दिखानेके लिये क०।

निज सुगन्ध गुण मृग नहिं जाने—अपना गुण
 अपनेको नहीं मालूम पड़ता।

'इतिहा उमही नखि सुखदाई,

दुभत जाय रोग भय पाई।

नोक उक्ति क्यो कइं सयाने,

निज सुगन्ध गुण मृग नहिं जाने।'

निज हित अनहित पसु पहिचाना—(तुलसी)
 अपना अच्छा बुरा सभी समझते हैं।

निठह्रा बनिथां पटथर तोड़े—बनिथां कामके बिना
 छाली नहीं रहता। बुद्ध न कुछ किया ही करता
 है। जब कोई निष्प्रयोजन काम करे, तब क०।

निघानवेके फेरमें पड़ गये—जब आदमी झरकी

नानक दुखिया जग संसार, सुखिया वही जो नाम अधारा—संसारमें केवल वही खली है जो भगवानकी उपासना करता है।

नानक नरहो हो रहो, जैसी नरहीं दूय। बड़ी घास जल जायगी, दूय खूबकी खूब—नर होकर चले। बड़ी घास जल जाती है धार दूय जो नीची होती है बनी रहती है।

नानाकी दौलतपर नवासा पेड़ा फिर—दूसरेके धनपर ऐंठनेपर क०।

नानाके टुकड़े खावे, दादाका पोता कहलावे—स्पष्ट। दे० 'खाय ननाको ददाको बतवै।'

नानी कुंवारी मर गई नवासेके नौ नौ व्याह—क्यों व्यर्थ श्रेष्ठी मारता है।

नानीके आगे ननिहालकी बातें—(ज०) अपनेसे अधिक जाननेवालेसे बात करनेपर क०।

लखा जाकी लाख दाईं अलाख कही सो कैंसे,

नामी जूके भागे ज्यों बखान ननिचोरकी।

(८० प० गोपियोंका कहना लखके प्रति)

नानी खसम करे, नवासा चट्टी भरे—(ज०) दोष कोई करे और दण्ड कोई भरे, तब क०।

नानी मरो नाता टूटा—नानीका जैसा दोहतेपर प्रेम रहता है वैसा मामा मामीका नहीं रहता।

नाप न तोल, भर दे भोल—अपने मतलबकी कहना।

नापे सौ गज, फाड़े नौ गज—(ज०) जो कहे बहुत और करे थोड़ा, उसे क०।

नाम अमृत, पिलाय विप—नामसे विपरीत गुण हो, तब क०।

नाम कपूरचन्द खुशबू गोवरकी नहीं—ज० दे०।

नामकी नरहीं, उठा ले जाय धनी—नन्ही—खोटी; धनी—कड़ी। जो देखनेमें खोटी हो पर काम बड़ा करे, तब क०।

नामके बायाजी करनी छावर—नाम बड़ा और करनी कुछ नहीं। छावर—ख़ाक।

“नाम क्या?” “शकरपारा” “खाय क्या?” “सेर दसबारा” “पानी किनना पीये?” “मटका सारा” “काम करनेको?” “लड़का बिचारा”—

(ज०) जो लड़का खाय बहुत पर काम कुछ न करे, उसे क०।

नाम पहाड़ खां थोलें तब चीं—नामसे विपरीत गुण होनेपर क०।

नाम पृथ्वीपाल पालें चिड़िया भी नहीं—ज० दे०।

नाम बड़ ऊँचा, कान दोनों वूचा } जब कोई

नाम बड़ा और दर्शन थोड़े } किसीका

बड़ा नाम इनके जाय और उसे कुछ भी न मिले, तब क०।

नाम बढ़ावे दाम—(ज०) नामी दूकानदारका माल अधिक मोलपर बिकता है।

नाम घसन्ती मुंह कूकर अस—(प० ज०) नामानुसार गुण न हो, तब क०।

नाम भानमती और भोलीमें सिर—भूठी बड़ाई मारनेपर क०।

नाम मेरा, गांज तेरा—जो दूसरेकी सम्पत्तिते अपना लाभ उठाया चाहे, उसपर क०।

नाम रतनकुंवर मुंह कुतियों जैसा—नामानुसार गुणके नहीं रहनेपर क०।

नामदों तो दी खुदाने, मार मारसे चूके क्यों—अग्रक होनेपर भी कुछ न कुछ करना चाहिये।

नाम हीरामल, दमक फंकड़ सी भी नहीं—नामसे गुण विपरीत हो, तब क०।

नामी चोर मारा जाय, नामी शाह कपा खाय—कहीं नाम अच्छा होता है कहीं बुरा। खुशनामीसे लाभ होता है बदनामीसे हानि। व्यवसायमें जब किसीकी दूकानदारी अच्छी चलती है, तब क०।

अथवा बदनाम आदमीपर जय बिना किये ही दोष लगता है, तब भी क०।

नामी नर होत गरुड, गामीके हेरेते—ईश्वर जिसपर निगाह करे वही यशस्वी होता है।

नारने मिकाला धन, मर्दाने ताड़ा अंत—झीने दांत निकाला और मर्दाने उसका गतीजा समक गया।

जय खां हंसो, तो समके कि बगमें हो गई।

नार सुलखनी कुट्टम लकावे, आप तलेकी खुरचन खावे—अच्छी स्त्रियां कुट्टमियोंको भर पेट खिता देती हैं और आप बेची खूची खाकर ही संगुच्छती हैं।

नारि नहीं तहँ कानी रानी—दे० 'जहाँ रख नहीं...
नारि धर्म पति देव न दूजा—स्त्रियोंके लिये पतिके
सिवाय दूसरा देवता नहीं है।

नारि पतिव्रत जेहि घर माहीं, तेहि प्रताप निज
अमर डराहीं—(तुल०) स्पष्ट।

नारि विवश नर सकल गुसाईं, नाचहिं नर
मरकटकी नाईं—(तुल०) स्त्रियां पुरुषोंको धरमं
कर बन्दरकी तरह नचाया करती हैं।

नारि मुई कुल सम्पति नासी, मूँड़ मुड़ाये भये
सन्ध्यासी—(तुल०) कलियुगके सन्ध्यासीपर कही
जाती है। जो स्त्रीके मरनेपर वा घरकी सम्पत्ति
लौ देनेपर सन्ध्यासी बन जाते हैं।

नारियलमें पानी, नहीं जानता छट्टा कि मीठा—
जब कोई बात द्विपी हुई हो और संदेहयुक्त हो,
तब क०।

नारि सुमाव सत्य कवि कहहीं, अथगुण आठ
सदा उर रहहीं—(तुल०) स्पष्ट।

साहस, अद्वय, चपलता, माया।

भय, अविवेक, अनीच, अदाया। (तुलसी)

नाले मूँज बगड़, नाले देवी दा दर्शन—(प०)
एक पन्थ दो काजपर क०। मूँज और बगड़ घास-
की किस्ममें होती है जो रस्सी बनानेके काम
आती है। यह नदीके किनारे होती है जहाँ देवीके
मन्दिर भी होते हैं। इसी जोड़की बंगला मसल
है 'रथ देखा आर कला बेचा।'

नाव चढ़े भगड़ालू आवे, साखी आवे पैरत—
असामी फ्रियारीकी निसवत गवाहको बहुत तक-
लीफ़ होती है।

नाव भर कई जल गई, अपने लेखे फुस—
किसीका नुक़सान हो अपनी बलासे।
नाहीं करिखे तें कड़ू करिखो ही नीको है—
कुछ भी न करनेसे कुछ करना अच्छा है।

निकली हलकसे चली खलकमें—यात मुखसे
निकलते ही संसारमें फेल जाती है।

निकली होउं चढ़ी कोठें—ऊ० दे०।

निकरन द्वार बहुरिया दुर्गधाका दोप—दे०
'बघलो बहू.....'

निरुसत है इक आंरसे, धोई, धोयी, धान,
आछे भोंड़े हो गये, सब करतबके तान—
धोई, धोयी और धान तीनों शब्दोंके प्रारंभमें एक
ही अक्षर है पर अपने अपने कर्त्तव्यसे भले बुरे
कहलाते हैं। धोई=अग।

निकसो चंदा, तो अंधिरो भयो मन्दा—सबके
सामने भूठ नहीं टहर सकता।

निकाही न दयाही, मुंडो बहू कहांसे आई—
(मु०) स्पष्ट। भूठा रिता जोड़नेपर क०।

निकाहिंइया गये हाट, ककड़ो देख जीवरा फाट—
(पू०) क्योंकि उसके पास खरीदनेको दाम न था।

निखटू आवें लड़ने, कमाऊ आवें डरते—
(ज०) स्त्रियां निखटू श्रोंको कहा करती हैं, जो पैदा
तो कुछ नहीं करते पर हर बातमें दुःख देते हैं।

निगल जाते हैं ऊँट और दुमसे दिचकी लें }
निगल जांय हाथी सकल, पर दुमसे परहेज }

दे० 'गुड़ खांय गुलगुल्लो.....'

निज कवित्त केहि लागन नीका, सरस होय
अथवा अनि फीका—(तुल०) अपनी चीज़ अच्छी
हो वा बुरी सभीको अच्छी लगती है।

निज प्रतिविम्ब मुकुर गहि जाई, जानि न जाई
नारि गति भाई—(तुल०) स्त्री-चरित्रपर क०।

निज युधिबल भरोस मोहि नाहीं—(तुलसी)
अधीनता दिखानेके लिये क०।

निज सुगन्ध गुण मृग नहिं जाने—अपना गुण
अपनेको नहीं मालूम पड़ता।

'इतिया चमड़ी नखि मुखदाई,

बुभन जाय रोग भय पाई।

लोक चक्रि स्त्री कहैं सयाने,

निज सुगन्ध गुण नखि जाने।'

निज हित अनहित पसु पहिचाना—(तुलसी)
अपना अच्छा बुरा सभी समझते हैं।

निठह्रा यनियां पदधर तोड़े—यनियां कामके बिना
खाली नहीं रहता। कुछ न कुछ किया ही करता
है। जब कोई निष्प्रयोजन काम करे, तब क०।

निज्ञानवेधे फेरमें पड़ गये—जब आदमी धरकी

किन्नायत कर रुपया इफ्फा करनेमें लग जाता है, तब क० ।

१ किमी शहरमें दो बहिनें थीं । एकका ब्याह धनवानके साथ हुआ था और दूसरीका गरीबके साथ । जो गरीब थी उसने अपनी बहिनसे सहायता मांगी, तो उसने उसे निश्चानवे रुपये दिये । यद्यपि वह गरीब थी पर अभी-तक उसे सन्तोष था । अब उसने निश्चानवे रुपये देखे, तब जिस कामके लिये सहायता मांगी थी, उसमें खर्च न कर वह उसी रुपये पूरे करनेकी फिक्रमें लग गई, जिससे उसका कष्ट पहिलेसे भी बढ़ गया । (शिक्षा) धनसे संतोष अच्छा । कहा भी है "जब भावे संतोष धन, सब धन धूरि समान ।" (२) किसी शहरमें एक सन्तोषी और उसकी स्त्री दोनों चार पैसे रोजमें अपना गुजर करते थे । इसपरा भी वे बहुत सुखी थे । उसकी एक भीजार्न बहुत धनाक्षी थी जिससे उनका यह सुख न देखा गया और उसने उन लोगोंको तकलीफमें डालनेके लिये श्विके एक घौलीमें निश्चानवे रुपये भरकर उसके घरमें रख दिये । वे गरीब तो थे ही, रुपया देखकर बहुत खुश हुए । जब गिना तो एक कम उसी रुपये पाये । अब वह इस बातकी फिक्रमें लगे, कि किसी तरह उसी रुपये पूरे करें । उन्होंने अपना खर्चा घटा कर तीन पैसे रोजका किया । जब दो महीनेमें उसी रुपये पूरे हो गये, तब उन्होंने विचार कि यदि दो पैसे हीमें गुजर करते तो इसका दूना हो जाता । व्यों व्यों उनका खालख बढता गया वे पेट काटकर जोड़ने लगे । इस तरह उनकी चिन्ता और दुर्बलता बढती गई और वह सुख सदाके लिये तिरोहित हो गया ।

निश्चानवे घड़े दूधमें एक घड़ा पानी क्या जाना जाय—दे० "सौ सयाने एक मत"

एक दिन एकदर बादशाहने बीरबलसे पूछा, कि सब मेमबालोंमें सयाना कौन होता है । बीरबलने कहा, सबसे सयाने ग्वालि हीने हैं । अपनी बात प्रमाणित करनेके लिये उसने एक दिन शहरके एक सौ ग्वालोंको बुलावाया और उन्हें एक घोडा दिखाकर कहा, कि रातको सब कोई एक एक छोटा दूध इसमें डाल जाय । ग्वालीने अपने अपने मतमें सोचा कि निश्चानवे बादमी तो दूध डालेंहींगे यदि मैं इसमें एक छोटा पानी डाल दूंगा तो कुछ भी न जान पड़ेगा । यही समझकर किसीने भी दूधके समान और सफेद लक्ष्मी और अन्य अन्य कि भीजार्न उस

निपट सवेरे खेतमा, जाकर हलको बाह, जब सूरज हो सीखमा, बैठ छांहमें जा—(क० उप०) स्पष्ट ।

निपूतीके मुख देख ले सात उपास—(१० ज०) खियोंका ऐसा विश्वास है कि जब सवेरे बांभ खोका मुंह देखनेसे खानेको नहीं मिलता ।

निर्वलको जवर जयरको सबर—नियलको सबल मारता है और सबलको सबर मारता है ।

निम्बू निचोड़—उस मनुष्यको कहते हैं जो किसी काम वा चीजमें अपनी तरफसे कुछमिलाकर बराबरका हिस्सेदार बन जाय । स्वार्थी और मुफ्तखोरोंकोभी क० ।

किसी समय लखनऊ शहरमें ऐसे बहुत आदमी सराय और मुसाफिरखानोंमें घुमा करते थे जो अपनी जेबमें एक नोबू और एक दुरी सदा रखते थे । अब देखते कि किसी मुसाफिरने खिचड़ी बनाई है और खानेके लिये थाली परीची है तो वह उनके पास जाकर कहते कि बिना तुम्हारे खिचड़ीमें मज्जा नहीं; अब वह मुसाफिर कहता कि भाई यह परदेश है कहा खटाई खोजने जाय तभी आप कहते कि यदि आप परहेज न समझें तो यह काजिर है । यह कहकर जेबसे नोबू निकाल कर दुरीसे काटकर खिचड़ीमें निचोड़ देते थे । मुसलमानोंका यह क्रायदा है कि खाते समय जो कोई आ जाय उसे भी शरीक कर लेते हैं । अब मुसाफिर कहता कि आप भी बैठ जाइये "तब घरमें खाना तैयार हो गया होगा, पर आपका हुक्म भी नहीं टाल सकता" यह कहते हुए वह भट बैठ जाते और सपानुप खिचड़ी उठाकर अपना पेट भर लेते थे । इसीसे यह लोग नोबू निचोड़ कहलाते थे ।

नियारे चूल्हे चलवल जाऊँ, सारा खाती आधा खाऊँ—(ज०) नई बहूका कहना सासके प्रति । चूल्हा तो अच्छा चाहे आधा पेट ही खाने-

पथ सोइ

निहंग लाडला सदा सुखी—स्वाधीनमनुष्य सदा
सुखी रहता है।

निहचै जानो सिंहबल स्यार न कयहुं धाय—
सबलका भाग निबल नहीं ले सकता।

नीक नीक मोरे भाग एक एक मछलियाकी दो
दो मछलियां—(पू० ज०) जय किसीको एकको
लगह दो मिले, तब सुखीमें क०।

नीक लगे ससुरालकी गारी—ससुरालकी गाली
भी प्यारी लगती है।

गारिकी मजा तो ससुरार हीकी गारिकिमें,
माहींकी मजा तो नवगारि हीकी माहींमें। (पद्माकर)

नीकीपै फीकी लगे बिन अवसरकी बात, जैसे
घरनत युद्धमें रस सिंगार न सुहात—(दृन्द)

बेनौके अच्छी बात भी बुरी लगती है।

नीकीम लागत बुरी, बिगु भीतर भी होय।

मात भये फीकी लगे ज्यु दीपककी लोय ॥ (भागीदास)

नीकीम फीकी लगे जो जाके नहिं काम।

सब भाचारी जीवके कौन कामकी मात्र ॥ (नायरीदास)

नीकीको सब लागत नीकी—छन्दर मनुष्यके मुंह-
पर सभी चीज खुलती हैं।

सजे साधु निय सज्ज सिंगार। सीमा लखी जु नन्दकमार ॥

कहे पखानो जग सुख बीकी। नीकीकी सभलगे नीकी ॥

नीच जात एक न एक उत्पात—स्पष्ट।

नीच जात छलूंदरी नाक धरे पछिताय—जैसे
छद्मदूतको छुकर सूँघनेसे पछताना पड़ता है उसी
तरह नीच जातिको मुँह लगानेसे पछताना
पड़ता है।

नीच न छोड़े निचार्ह, नीम न छोड़े तितार्ह—
स्पष्ट।

नीच हिये हुलसे रहें, लिये गेदके पोत, ज्यों
ज्यों माये मारिये, त्यों त्यों ऊँचे होत—(बिहारी)

नीच मनुष्य मनमें गेदका सा गुण लिये हुए प्रसन्न
रहते हैं। ज्यों ज्यों उनकी ताड़ना करते जायों त्यों
त्यों वे ऊँचे उठते जाते हैं।

धातु मारे बदति बिर, नीचकी धरि भगवान। (हृषीकेश)

नीचकी सांस नीचे ऊपरकी सांस ऊपर—
जय कोई बहुत दुःखकी बात खने, तब क०

नीचसे जड़ काटना, ऊपरसे पानी देना—जय
कोई ऊपरसे भला बनकर भीतर ही भीतर नुकसान
पहुँचावे, तब क०।

नीम न मीठी होय सींच गुड घीसे, जिसका
जो स्वभाव जाय नहीं जीसे—स्पष्ट। जय कोई
मीच बहुत समझानेपर भी अपनी नीचता नहीं
छोड़ता, तब क०।

मधुर अधर सँग बानी बसे, भति तोषे उनके गुन एसे।

करी कदावत जप सब कोई, गुनमें नीम न मीठी हीरे ॥

अधमा। (सो० २० चौ०)

दे० “जाको जो स्वभाव”

नीम हकीम खतर जान, नीम मौलवी खतर
ईमान—(फा०) अपराज्ञान बहुत हानिकर होता
है। जय किसी अयोग्य मनुष्यसे काम बिगाड़ता है,
तब क०।

नीयतकी बरकत है—ईमानदारीसे धन बढ़ता है।

जय येईमानी करनेसे किसीकी हानि हो, तब क०।

जँ सी होत निति वै सी होत बरकत है।

नीयत साबित मंजिल आसान—जिसकी नीयत
अच्छी रहती है उसके सब काम सहजमें होते हैं।

नीलकंठ फीड़ा भावै, मुखै चिराजै राम। जात

पाँतसे क्या पड़ी, दरसन हीं सौं काम—किसी
की बुराईको न देखकर उसके गुणकी सरफ़ देखना
चाहिये। नीलकंठ एक पत्नी होता है जिसका
दरान करना दयहरेके दिन यज्ञ पुनीत माना
जाता है।

नीलका टीका और कोढ़का दाग—यह दोनों
कमी नहीं हटते। जय किसीके चरित्रमें ऐसा
धब्बा लग जाय कि मिटाये न मिटे, तब क०।

नील टांस जिससिर मंडरावे, मुकटपती सूँ
लामा पावे—(मा०) लोग ऐसा विचार करते हैं, कि
नील टांस (पत्नी विधेय) जिसके सिरपर फिर जावे
उसे राजासे बहुत साम होता है।

नीच परी खरखर नहीं, मगरा डेरा कीगह—
किसी अच्छे कामका प्रारम्भ होते ही जय उसे
बिगाड़नेवाले आकर जुट जाय, तब क०।

नेक अन्दर घद, और यद अन्दर नेक—(मु०)

अच्छेके बुरे और बुरेके अच्छे होते हैं। जैसे, उम-
सेनके कंस और हिरण्यकश्यपके प्रह्लाद।

किफायत कर रूपया इकट्ठा करनेमें लग जाता है, तब क० ।

१ किमी शहरमें दो बहिनें थीं । एकका ब्याघ धनवानके साथ हुआ था और दूसरीका गुरीबके साथ । जो गुरीब थी उसने अपनी बहिनेस सहायता मांगी, तो उसने उसे निम्नानवे रूपये दिये । यद्यपि वह गुरीब थी पर अभी-तक उसे समीप था । जब उसने निम्नानवे रूपये देखे, तब जिस कामके लिये सहायता मांगी थी, उसमें खर्च न कर वह उसी रूपये पूरे करनेकी फिक्रमें लग गई, जिससे उसका कष्ट पहिलेसे भी बट गया । (गिचा) धनसे संतोष अच्छा । कहा भी है "जब चाहे संतोष धन, सब धन धूरि समान ।" (२) किसी शहरमें एक सन्तोषी और उसकी स्त्री दोनों चाहे पैसै रोजमें अपना गुजर करते थे । इसपर अभी वे बहुत सुखे थे । उसकी एक भोजाई बहुत धनाढ्य थी जिससे उनका यह सुख न देखा गया और उसने उन लोगोंको तकलीफमें डालनेके लिये बियके एक घौलीमें निम्नानवे रूपये भरकर उसके घरमें रख दिये । वे गुरीब ती धी थी, रूपया देखकर बहुत खुश हुए । जब गिना तो एक कम थी रूपये पाये । अब वह इस बातकी फिक्रमें लगे, कि किसी तरफ ही रूपये पूरे करें । उन्होंने अपना खर्चा घटा कर तीन पैसै रोजका किया । जब दो सप्तीनेमें उसी रूपये पूरे हो गये, तब उन्होंने विचार कि यदि दो पैसै घौलीमें गुजर करते तो इसका दुगना हो जाता । ज्यों ज्यों उनका लालच बढ़ता गया वे पेट काटकर जोड़ने लगे । इस तरह उनको चिन्ता और दुर्बलता बढ़ती गई और वह सुख सदाके लिये तिरोहित हो गया ।

निम्नान्वे घड़े दूधमें एक घड़ा पानी क्या जाना जाय—दे० "सौ सयाने एक मत"

एक दिन अकबर बादशाहमें बीरबलसे पूछा, कि सब मेमेवालोंमें सयाना कौन चीना है । बीरबलने कहा, सबसे सयाने ग्वाल्लि होने हैं । अपनी बात प्रमाथित करनेके लिये उसने एक दिन यहरके एक सौ ग्वालोंको लुलवाया और उन्हें एक हीज दिखाकर कहा, कि रातको सब कोड़े एक एक लोटा दूध इसमें डाल जाना । ग्वालोंने अपने अपने सगमें सोचा कि निम्नानवे चादमी तो दूध डालेहीने यदि मैं इसमें एक लोटा पानी डाल दूंगा तो कुछ भी न जान पड़ेगा । यही समझकर किसीने भी दूध न डाला और सबके लोटे खाली ही रह गये । अकबरने उसको पूछा कि रातको सब कोड़े एक एक लोटा दूध इसमें डाल जाना । ग्वालोंने अपने अपने सगमें सोचा कि निम्नानवे चादमी तो दूध डालेहीने यदि मैं इसमें एक लोटा पानी डाल दूंगा तो कुछ भी न जान पड़ेगा । यही समझकर किसीने भी दूध न डाला और सबके लोटे खाली ही रह गये । अकबरने उसको पूछा कि रातको सब कोड़े एक एक लोटा दूध इसमें डाल जाना । ग्वालोंने अपने अपने सगमें सोचा कि निम्नानवे चादमी तो दूध डालेहीने यदि मैं इसमें एक लोटा पानी डाल दूंगा तो कुछ भी न जान पड़ेगा । यही समझकर किसीने भी दूध न डाला और सबके लोटे खाली ही रह गये ।

निपट सवेरे खेतमा, जाकर हलको बाह, जब सूरज हो सीखमा, बैठ छांहमें जा—(क० उप०) स्पष्ट ।

निपूतीके मुख देख ले सात उपास—(५० ज०) खियोंका ऐसा विश्वास है कि जब सवेरे बांक खोका मुंह देखनेसे खानेको नहीं मिलता ।

निर्वलको जवर जयरको सवर—निर्वलको सबल मारता है और सबलको सवर मारता है ।

निम्बू निचोड़—उस मनुष्यको कहते हैं जो किसी काम वा चीज़में अपनी तरफसे कुछ मिलाकर धरा-धरका हिस्सेदार बन जाय । स्वार्थी और मुफ्तखो-रोंकोभी क० ।

किसी समय लखनऊ शहरमें ऐसे बहुत चादमी सराय और मुसाफिरखानोंमें घूमा करते थे जो अपनी जेबमें एक नीबू और एक दूरी गदा रखते थे । जब देखते कि किसी मुसाफिरने खिचड़ी बनाई है और खानेके लिये याली परीची है तो वह उनके पास जाकर कहते कि बिना तुम्हारे खिचड़ीमें मज़ा नहीं; जब वह मुसाफिर कहता कि भाई यह परदेश है कहां खटार खोजने मायं तभी आप कहते कि यदि आप परहेज न समझें तो यह हाजिर है । यह कहकर जेबसे नीबू निकाल दूरीसे काटकर खिचड़ीमें निचोड़ देते थे । मुसलमानोंका यह क़ायदा है कि खाने समय जो कोई भी माय उसे भी शरीक कर लेते हैं । जब मुसाफिर कहता कि आप भी बैठ आइये "तब घरमें खाना तैयार हो गया होगा, पर आपका इन्क़ाम भी नहीं टाल सकता" यह कहते हुए वह भट बैठ जाते और मुसामय खिचड़ी उड़ाकर अपना पेट भर लेते थे । इसीसे यह लीज नीबू निचोड़ कह-लाते थे ।

नियारे सून्हे बलबल जाऊं, सारा खाती आधा खाऊं—(ज०) नई बहूका कहना सास्के प्रति । चूल्हा भलगहो जाय तो अच्छा चाहे आधा पेट ही खानेको मिले ।

निराचार जो श्रुति पथ त्यागी, कलियुग सोई ज्ञानी वैरागी—(हलसी) आसक्तके साथ श्रौतिक । निर्धनके मत गिरिधारी गरीबका धन रखते हैं । निस दिन खाना, कामको असक्तता।

निहंग लाड़ला सदा सुखी—स्वाधीन मनुष्य सदा
छली रहता है ।

निहचै जानो सिंहवल स्यार न कयहुं खाय—
सबलका भाग नियल नहीं ले सकता ।

नीक नीक मोरे भाग एक एक मछलियाकी दो
दो मछलियाँ—(५० ज०) जब किसीको एककी
जगह दो मिले, तब खुशीमें क० ।

नीक लगे ससुरालकी गारी—सधरालकी गाली
भी प्यारी लगती है ।

गारिकी मजा तो ससुरार छोकी गारिहिमें,
गारिकी मजा तो नवगारि छोकी गारिहिमें । (पद्याकर)

नीकीपै फीकी लगे विन अधसरकी घात, जैसे
घरनत युद्धमें रस सिंगार न सुहात—(हुन्द)

बेमौके अच्छी घात भी घुरी लगती है ।

नीकीइ लागत घुरी, बिठु चौसर जी रोय ।

मात मये फीकी लगे ज्युं दीपककी लोय ॥ (नागरीदास)

नीकीइ फीकी लगे जो आके नहिं काज ।

कस बाहारी जीवके कीय कामको नाज । (नागरीदास)

नीकेको सब लागत नीकी—छन्दर मनुष्यके मुह-
पर सभी चीज़ खुलती हैं ।

सजे सागु तिय सङ्ग सिंगार । सीभा लखी शु नन्द उमार ॥

कई पखानो जग सुख नीकी । नीकेकी सभ लागी नीकी ॥

नीच जात एक न एक उत्पात—स्पष्ट ।

नीच जात छछूंदरी नाक धरे पछिताय—जैसे
छन्दरको छूकर सूँघनेसे पछताना पड़ता है उसी

तरह नीच जातिको मुँह लगानेसे पछताना
पड़ता है ।

नीच न छोड़े निचाई, नीम न छोड़े तिताई—
स्पष्ट ।

नीच हिये हुलसे रहें, लिये गेंदके पोत, ज्यों
ज्यों माथे भारिये, त्यों त्यों ऊँचो होत—(विहारी)

नीच मनुष्य मनमें गेंदका सा गुण लिये हुए प्रसन्न
रहते हैं । ज्यों ज्यों उणकी ताड़ना करत जायों त्यों
त्यों ये ऊँचे उठते जाते हैं ।

आतइ मारे बदवि सिर, नीचको धरि समान । (तुलसी)

नीचेकी सांस नीचे ऊपरकी सांस ऊपर—
जब कोई बहुत दुःखकी बात घने, तब क०

नीचेसे जड़ काटना, ऊपरसे पानी देना—जब
कोई ऊपरसे भला बनकर भीतर ही भीतर मुकसान
पहुँचावे, तब क० ।

नीम न मीठी होय सींच गुड़ घीसे, जिसका
जो स्वभाव जाय नहीं जीसे—स्पष्ट । जब कोई
नीच बहुत समझानेपर भी अपनी नीचता नहीं
छोड़ता, तब क० ।

मधुर मधुर संग बानी बसै, बलि मोषि वनके गुन एसै ।

कहो कथावत लप सव कोइ, गुड़तें भीम न मीठो कोइ ॥

अधमा । (ली० १० की०)

दे० “जाको जो स्वभाव”

नीम हकीम खतरे जान, नीम मौलवी खतरे
ईमान—(फा०) यथुरा दान बहुत हानिकर होता
है । जब किसी शयोग्य मनुष्यसे काम बिगड़ता है,
तब क० ।

नीयतकी बरफत है—ईमानदारीसे धन बढ़ता है ।
जब बेईमानी करनेसे किसीकी हानि हो, तब क० ।
जैसी छेत नेति वैसी छेत बरकत है ।

नीयत साबित मंजिल आसान—जिसकी नीयत
अच्छी रहती है उसके सब काम सहजमें होते हैं ।

नीलकंठ कीड़ा भखै, मुखे विराजे राम । जात
पाँतसे क्या पड़ी, दरसन हीं सों काम—किसी

की बुराईको न देखकर उसके गुणकी तरफ देखना
चाहिये । नीलकंठ एक पत्नी होता है जिसका
दर्शन करना दशहरेके दिन बड़ा पुनीत माना
जाता है ।

नीलका टीका और कोढ़का दाग—यह दोनों
कमी नहीं छूटते । जब किसीके चरित्रमें ऐसा
धर्या लग जाय कि मिटाये न मिटे, तब क० ।

नील टांस जिससिर मंडरावे, मुकटपंती सूं
लाभा पावे—(मा०) लोग ऐसा विश्वास करते हैं, कि
नील टांस (पत्नी विशेष) जिसके सिरपर फिट जाये
उसे राजसे बहुत लाभ होता है ।

नीव परी खरघर नहीं, मगरा डेरा कीन्ह—
किसी अच्छे कामका प्रारम्भ होते ही जब उसे
बिगाड़नेवाले आकर जुट जाय, तब क० ।

नेक अन्दर घद, और घद अन्दर नेक—(मु०)
अच्छेके बुरे और बुरेके अच्छे होते हैं । जैसे, उग्र-
सेनके कंस और हिरण्यकश्यपके प्रह्लाद ।

नेक नाम यन्त्रियां बदनाम चोर—जो वाणिज्य करता है उसकी नेकनामी और जो चोरी करता है उसकी बदनामी होती है। यद्यपि दोनों ही व्यापार हैं।

नेकी और पूछ पूछ—भलाई करनेमें पढ़ना क्या। जब कोई किसीसे पूछे कि मैं तुम्हारा अमुक काम कर दूँ, तब क०।

नेकी कर दर्यामें डाल—जब किसीका कोई उपकार करे तो उसे मुंहपर न लाये। जो लोग अपने किये उपकारको बारबार कहते हैं उनके गिनार्थ यह कहावत है।

नेकीका फल बदी—जब कोई किसीका उपकार करे और वह उल्टी उसकी बुराई करे, तब क०।

नेकीका बदला नेक है, बदसे बदीकी घातले—
(गज़ीर) स्पष्ट।

नेकी करो खुदासे पाओ—स्पष्ट। मुसलमान फ़कीर कहा करते हैं।

नेकीकी जड़ पातालमें—अर्थात् बहुत गहरी है।

नेकी बदी रह जाती है—मनुष्य तो मर जाता है पर उसका यश अपयश संसारमें रह जाता है।

हरिनाम चले संगमें "शिवनाथ"

सो नेकी बदी रह जात खदानमें।

नेकी बरबाद गुनाह लाज़िम—(मु०) दे० 'नेकीका फल...'

नेमी पांडे कामरमें जटा—झाली दिखावा घा हाँके लिये क०।

नेवतल ब्राह्मण शत्रु बराबर—(पू०) ब्राह्मणको नेवता दिया मानों धर्ममें दुश्मनको धुलाया। ब्राह्मणोंके लालची स्वभावपर ताना है।

नेस्तीमें बरखु रदारी—जब गरीबीमें बाल बच्चे हों और उनका पालना माता पिताके लिये कठिन हो जाय, तब क०।

नेह भरो दीपक तऊ गुन धिन जोति न होत—
(धुन्व) यदि दीपमें तेल भरा हो, पर बत्ती न होतो रोशनी नहीं होती। कैसेही अच्छे कुलका मनुष्य क्यों न हो पर निर्गुणी हो तो उसकी शोभा नहीं होती। अगाध धन होनेपर भी यदि सत्कर्म न करे, तो उसका नाम नहीं होता।

नेन छिपाये ना छिपे, पट धूधटकी ओट।
चतुर नार और सूरमा, करे लाकमें चोट—स्पष्ट
नेन सलोने धधर मधु, कहू खदीम घाट कौन।

मीठो भावे लोनपर, अरु मीठेपर लोन—स्पष्ट।
नैना तोहे पटक दूँ, टूक टूक है जाय।
पहिले नेह लगायके, पाछे भलग है जाय—स्पष्ट

नैना देत वताय सब, हियको हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत—स्पष्ट
नौआके घर चोरी भेल, तीन चाँगा बार भेल—
(पू०) और उसके यहां घरा ही क्या था।

नौआ देखले काँखेबार—(भो०) जब साधन देखकर कामपर मन चलत, तब क०।

नौकर आगे चाकर, चाकर आगे फूकर—
नौकरका नौकर फूकेके तुल्य है।

नौकरको चाकर, और मड़ईका औसारा—
दोनों ही बातें भरी और धेकर हैं। निष्प्रयोजन बातपर क०।

नौकर लाट कपूरके होंठ मलें और हक लें—
लाट कपूरके नौकर ज़हरदस्तो हक लेते हैं। ढीठ नौकरको क०।

एकबत्ती समयमें लाट कपूर नामको एक बड़े गवैया की गंध है। जब वे किसी बनीरके यहाँ सुन्नप करने जाते और उनको कोई इनाम देता और बादर पूर्वक यह कहता कि आपकी नौकरीके बाले दे, तो उनके नौकर ब्रिगार करके वह एकम उनसे ले लेते यह कहकर कि यह हम लोगोंकी बिलो है।

नौकरी अरंडकी जड़ है
नौकरीकी जड़ आसमानमें
नौकरीकी जड़ ज़यानमें
नौकरी ताड़की छाँह
} नौकरीका कुछ ठीक नहीं जब चाहे छूट जा सकती है।

इसलिये नौकरीका कुछ भरोसा न करना चाहिये।
नौकरी है कि भाईबन्धी—जब नौकर गिरहाज़िर हो वा काममें बहाना करे, तब क०।

नौका, दूती, चैद प्रधीन, काम सरे पुछियत
नहीं तीन—नाव, दूती और वेदको, काम निकल जानेपर कोई नहीं पड़ता।

नौ की लकड़ी नखे खर्च } जरासे कामके लिये
नौ की लकड़ी नखे ढुलाई } बहुत घाटम्बर कर-
नेपर क० ।

नौ कुंडे और दस नेगी—जितनी चीज हो उससे
मांगनेवाले बहुत हों, तब क० ।

नौ दिन चले अढ़ाई कोस—(१) बहुत सुस्त काम
करनेवालेको क० ।

एक आदमीने किसी पोखीसे कहा, कि "पोखीने
पौ-पोस, नौ दिन चले अढ़ाई कोस ।" पोखीने जवाब
दिया कि वह पोखी न होगी जाकका हरकारा होगा ।
अगर पोखी होता तो मैं झूँके उस पार रहना या इस पार ।
गोबर्धन भी अगर कहा, करि विजय मन मोहन, महा ।

सोम जु दै मतवारिन दोस, नौ दिन चले अढ़ाई कोस ।

(२) केदारनाथसे बड़ीनाथकी यात्रा पर क० ।
दोनों स्थानोंका अन्तर ठाई कोस है परन्तु रास्ता
सीधा न होनेसे प्रायः पचास कोस चलना पड़ता है
जिसमें नौ दिन लगते हैं ।

नौ नगद न तेरह उधार—(७०) उधार तेरहमें
पेचनेसे नगद नौमें पेचना अच्छा है ।

'रखी इस सङ्घले पै शरीरमदार,
कि नौ नकुद अच्छे न तेरह उधार ।'

नौ मन तेल न नारि सिंगार—दे० 'न नौमन
तेल.....'

नौ महीने मांके पेटमें कैसे रहा होगा—
चंचल और उत्पत्ती लड़कोंको क० ।

नौमो गोगा पीर मनाऊं, न चरखेके हाथ लगाऊं
जब कोई काम न करनेके लिये कड़ा बहाना करे,
तब क० । गोगा एक पीर हो गये हैं जिनकी मृत्यु
सन् १०२४ ई० में हुई है । भादों यदी नौमोको
उनकी यादगारीमें एक मेला होता है ।

नौ सौ चूहे खाके विल्ही हजको चली—(मु० ज०)
जिसने जन्मभर पाप किया हो, अन्तमें साध बनके
बैठे, उसे क० । प्रायः जब वेध्या और दुधरत्रि खियां
भक्तिन बनती हैं, तब उनको व्यंगसे क० ।

हह वेध्या तपस्विनी (सं०)

अपल चमोचर भनन बने चञ्चल भव,
सातस्रस खाथके बिदारि बनी मगदिन ।

(७० प० गोपियोंका कहना उड़नेके प्रति)

नौह भर खाया तो खाया, मुंहभर खाया तो खाया
खानेका नाम तो हुआ चाहे सुटकी भर खाया चाहे
पेट भर । चोरी करने वा रियत लेने पर क० ।

न्यारा पूत पड़ौसी दाखिल—जो लड़का अपनेसे
छुदा हो गया वह पड़ौसीके तुल्य हो जाता है ।

न्योतै गांच पास नहिं कौड़ी—(७०) ढोंग हांकने-
वालेको क० ।

प

पंच कहै विद्धी, तो विद्धी ही सही—जो सबकी
राय सो अपनी राय । अपनी अतिच्छा रहनेपर
भी जब कोई काम सबकी रायसे किया जाय,
तब क० ।

इसपर एक कहानी इस प्रकार है—रतके समय किसी
बनिदिने एक धोर पकड़ा । धोर लप बिद्धीकी तरह खी
खी करने लगा तो बनिदिने कड़ा, यदि सबैरे पंच तुम्हें
बिद्धी कहें तो मैं बिद्धी ही समझकर छोड़ दिया जायगा ।
अभी तो मैं तुम्हें धोर समझकर घरमें बन्द किये देता हूँ ।

(१) लाल साज सजि बाल सिंगार, बखी चहति
दिगपर तिव धार । खलि खलि कछी पछाको खिस,ं
पंच कहै बिद्धी तो बिद्धी । (अधोरा) खलि कछती
है कि लाल बालका सिंगार करके दूसरी स्त्रीके धारपर
जाते है—देख, उसपर उसने कहा अच्छा, यही सही

चर्वात् मेरी समझमें बाल नहीं है, परन्तु तुम कहती हो
तो यही सही ।

(२) जो कछु खलि न परे निज जाति,

नौ समाजकी समझ न कानि ।

बंते विन सारथ सधिये बिद्धी,

"पंच कहै विद्धी तो बिद्धी" (श्री० सं०)

पंच जहां परमेश्वर } पंचमें परमेश्वरका
पंचनके मुख हैं परमेश्वर } पास होता है ।

जहां पांच सत्यवादी इकट्ठे होकर निर्णय करते हैं
वहां न्याय ही होता है, तब क० ।

पंच बराबर टाटपर, है अमीर कंगाल—पंचके
टाटपर अमीर शरीर सब बराबर हैं । विचार सफेक
लिये एक सा है । जातिमें छोटा पड़ा कोई नहीं ।

पंच माने खुदा खुदा माने पंच—(मु०) पंच खुदा-

परस्त होता है इसलिये खुदाको भी पंचोका कहना मंजूर है।

पंचोका कहना सिर माथेपर मगर परनाला यहीं रहेगा—उस हठी मनुष्यको कहते हैं जो चार आदिमियोंके मना करनेपर भी अपने ही मनका काम करे।

किसी मनुष्यके घरकी मोरीका पानी चरके पड़ोसीके घरमें जाता था। जब पड़ोसीके कहनेपर चरने अपनी मोरी न फटाई तो इस भागड़ेकी निषट्टानेके लिये पांच पंच नियुक्त हुए। पंचोंने फूसला किया कि तुम अपनी मोरी ईधरसे फटाकर दूसरी तरफ बनवा ली। जिसके चरमें चरने उक्त समल कही।

पंचोका जूता और मेरा सिर—मैं पंचोका हुकम माननेको तैय्यार हूँ। जो दण्ड पंच मुझे दें, मैं भोगनेको तैय्यार हूँ। प्रायः निर्दोषी मनुष्य अपनी निर्दोषिता दिखाकर पंचोंके सामने ऐसा कहते हैं।

पंचों शामिल मर गये जानो गये घरात—सबके साथ मिलकर कष्ट भोगना वैसा ही है जैसा घरात में जाना। जो कष्ट सभीको हो वह अखरता नहीं। पंडित और मसालची, दोनों उल्टी रीत। और दिखावें चांदनी, आप अंधेरे बीच—समा-रकी उल्टी रीतिपर कः जो दूसरोंको रोशनी दिखाता है वह खुद अंधेरेमें रहता है, जो दूसरोंको खिसाता है वह खुद भूखा रहता है।

पंडित पोथी बांचते, मुल्ला पढ़े कुरान। लोग मुलावा लख करो, नाह मिले भगवान— बिना सच्ची भक्तिके ईश्वर नहीं मिलते। (दे०) “पढ़े भटकते...”

पंडित भये तो फना भये, गले लपेटे सूत। भाव भगत जानी नहीं, भये जंगलके भूत—बिना सच्ची भक्तिके ऊपरी दिखावते ईश्वर नहीं मिलता। पंडित सोई जो गाल बजावा—(तुलसी) आज कल वही पण्डित माने जाते हैं जो बहुत बकते हैं। पकले गूलर कौएके नौद आवाला—(भो०) जब मन चाही चीज मिलनेके लिये कोई बेचैन हो, तब क० कौए गूलर बहुत खाते हैं।

पकाय सो खाय नहीं, खाय कोई और। दौड़े सो पाय नहीं, पाय कोई और—जो मेहनत

करेगा सो फल पावेगा।

पक्का पान खांसी न जु काम—कच्चा पानकफ पदा करता है पका नहीं।

पक्का होना चाहे तो, पक्केके संग खेल। कच्ची सरसों पेलके, खरी होय ना तेल—स्पष्ट।

पक्के आमके टपकनेका डर है—बड़े मनुष्यको क० पखालका लादना और डांक चलाना एक सा-दोनों ही काम जल्दी किये जाते हैं।

पगड़ी दोनों हाथोंसे धामी जाती है—इज्जतको मजबूतीके साथ बचाना चाहिये।

पगड़ी रख, घी चख—इज्जत रखकर खर्च करना चाहिये।

पग पवित्र तीरथ गमन, कर पवित्र कुछ दान।

मुख पवित्र तय होंहिंगे, भजले श्रीभगवान— तीथाटनसे पैर, दानसे हाथ और ईश्वरका नाम लेनेसे मुँह पवित्र होता है। तोते मैनाको सिखाई जाते हैं।

पगधिन फटे न पंथ—बिना चले मंजिल ते नहीं होती। बिना किये कोई काम नहीं होता।

पछयां चले, खेती फले—(क०) स्पष्ट।

पठानका पूत, घड़ीमें औलिया घड़ीमें भूत—पठान वहमी और निर्दोष होते हैं।

पठान लड़ाई मारे, और बहिने दाढ़ी फटकारे—क्योंकि इस ज्ञातमें सब ही लड़ाके होते हैं।

पठानोंने गांव मारा, जुलाहोंकी चढ़ घनी—इसलिये कि उनको नौकरी लग जायगी क्योंकि उच्च श्रेणीके मनुष्य बिजेताकी नौकरी नहीं करते।

पड़ली पिया तोरे बस, जिन्ने चाहा तिन्ने घस—(ए० ज०) आशाकारी चीका कहना, कर पतिके प्रति।

पड़या गमन न कीजिये, जो सोनेकी होय—पड़याको विदेश यात्रा न करे; चाहे कैसाही लाभ होता क्यों न दिखाई पड़े।

पड़िया मोल मैस सुगौना—पड़िया खरीदे और मैस रूकनमें मांगे। जब कोई थोड़े दामकी चीज खरीदे और बहुत दामकी चीज मुफ्तमें मांगे, तब क० पढ़े भटकते हैं लाखों पंडित, हजारों मुल्ला

करोड़ों रुपाने। जो खूब देखा तो यारो
आखिर, खुदाकी बातें खुदा ही जाने—(नज़ीर)
... ईश्वरकी सृष्टिपर क०।

पढ़े रहे दरभारमें; धका धनीके खाव।
एक दिन ऐसा होयगा, आप धनी हूँ जाय—
बड़के घासरेमें रहना लाभ दायक है।

हरि तुमहीं विनती यही, कीजत बार इज़ार।

जहि नहि भाति बखी रहई, पखी रहई दरबार॥ (विहारी)

पढ़ोसीके मेह बरसेगा तो चौंछार यहाँ भी
भावियाँ—मालदारके पास रहनेसे किसी न किसी
तरहका फ़ायदा हो होगा।

पढ़ना लिखना साढ़ेयार्ड्स—जो लड़का पढ़ता
लिखता नहीं, उसको क०।

पढ़ पढ़के पत्थर भये, लिख लिखके भये ईंट।
ढो ढोके गारा भये, चुनन लगे तब भीत—
जब पढ़ लिखकर किसीको सफलता नहीं होती,
। तब क०।

पढ़िये सैया सोई, जामें हड़िया खुदबुद होई—
(५० ज०) घड़ी सीखो जिसमें धरका प्रवां चले।

खुदाइ साहबकी तुम सलाम करो।

खुदाइ मन्दिरमें राम राम करो।

भारं जो का फ़कत यह मतलब है,

जिसमें रुपया मिले वह काम करो। (चक्रवर)

पढ़के आगे टोकरा डाला, उसने कहा मुझे
उपलोंको भेजा—बुद्धिमान हसारेंमें बात समझता है
पढ़े घरकी पढ़ी पिली—सोहबतरा असर होता है।
पढ़े तोता, पढ़े मेना, कहीं सिपाहीका पूत भी
पढ़ा है—हिन्दुस्थानी सिपाही प्रायः पढ़े नहीं होते,
हसीसे क०।

पढ़े तो हूँ पर गुने नहीं—विद्या तो पढ़ेपर उसका
मनन नहीं किया। जो पढ़ा लिखा मनुष्य अपनी
शिक्षाका उद्देश्य न समझे अथवा विद्वान होकर भी
सांसारिक व्यापारोंको न समझे, उसपर क०। उदा-
हरणके लिये दो छोटी छोटी कहानियाँ नीचे दी
जाती हैं।

(१) एक ज्योतिषीने अपने लड़केको ज्योतिष अच्छी तरह
से पढ़ाया। जब वह सब विद्या सीख गया, तो एक
दिन किसी धनवानके पास पढ़ेया। वहाँ उसने अपनेको
ज्योतिषी बता कर परीचा लेनेको कहा। उस धनी
मनुष्यने अपने हाथमें एक भंगूड़ो लेकर कहा “वताभो
मेरे हाथमें क्या है?” उसने गणित करके बताया कि
आपके हाथमें जो धोज है वह मोलाकार है, उसमें धातु
भी है, उसकी नीचमें हिर भी है तथा उसके साथ पाषाण
भी है। यहाँ तक तो उसका कहना ठीक था। उसने
कभी भंगूड़ो नहीं देखी थी, अपने घरमें चक्री देखी
थी; इसलिये वह झट बोल उठा कि आपके हाथमें
चक्रीका पाट है। पंडित हानेपर भी उसकी बुद्धिमें यह
नहीं आया कि चक्रीका पाट मुझमें नहीं आ सकता।
वह धनी बोला कि आप पढ़े तो हूँ मगर गुने नहीं।

(२) एक देशने अपने शिष्यको वैद्यक खूब अच्छी तरहसे
पढ़ा दो। एक दिन वैद्यराज रोगीको देखने गये और
अपने शिष्यको भी साथ लेते गये। उन्होंने रोगीकी नाड़ी
देखकर कहा कि इसकी सर्दी हुई है। उपरान्त अपने
शिष्यको भी नाड़ी दिखाई। उसने भी वैसा ही कहा।
किर वैद्यराज नीले, इसने गंडेरिया, ग्यादा खार्ड हैं इसीसे
सर्दी हुई है। रोगीने कबूल किया। घर आकर शिष्यने
कहा, आपने मुझे सब विद्या नहीं पढ़ाई, ऊँच अपने
हाथमें रखली है, नहीं तो आपने कैसे कहा कि रोगीने
गंडेरी खार्ड है। गुदने जवाब दिया, ये सब बातें पालाकी
और ऊपरी व्यवहारसे जानी जाती हैं, शरोंमें नहीं
लिखी रहती। उस रोगीके घरमें ऊँचके शिष्यके और
गंडेरीकी छोटी पढ़ी थी, वही देखकर मैंने अनुमानसे
कह दिया था। शिष्यको वह अभिमान हुआ कि यह
काम तो मैं भी कर सकता हूँ। इसमें विद्याका विशेष
प्रयोजन नहीं है। एक दिन वह किसी रोगीको देखने
गया। नाड़ी देख कर उसने कहा तुम्हारी नाड़ीमें
भारीयन है। तुमने कोई भारी बोज खार्ड है। घरमें
चारों ओर देखा तो उसी कोनेमें चौड़ेका साजू रखा
देख पड़ा। उस जगह चौड़ेको न देखकर वह समझा
कि यह चौड़ेको खा गया है, इसलिये झट बोल उठा कि
मैं जानता हूँ कि तुमने चौड़ा खाया है। यह सुनकर
रोगीने उसको अपने घरसे भाहर निकलवा दिया।

पढ़े न लिखे नाम विद्याधर (वा विद्यासगर)—

(५०) नामके अतुसार गुण नहीं होनेपर क०।

पढ़े फ़ारसी बेचें घाटा,

यह देखो किसमतका घाटा—

पढ़े फ़ारसी बेचें तेल,

यह देखो कुदरतका खेल—

तब क०। भाग्यसे पढ़े लिखे मनुष्य भी मारे मारे
फिरते हैं।

पढ़े लिखे कुछ नहीं, नाम मुहम्मद फ़ाज़िल—

नामके अनुसार गुण नहीं होने पर क०।

पढ़े लिखे घेवकूफ़—जो कोई पढ़ा लिखा मनुष्य

मूर्खताकी बातें करे, उसे क०।

इस चन्दा कि बं शूतर खानी।

चूँ जमल नैस दूर तो नादानो ॥

नमस्किन्नु बुषद न दागिमन्द।

चार पाये षरो किताने चन्द ॥

जो पढ़े-लिखे मनुष्य मूर्खोंकेसे काम करते हैं, वे
पढ़े लिखे मूल हैं। किसी गधेपर यदि कुछ ग्रंथ
लाद दिये जायँ, तो क्या वह उनसे विद्वान बन
सकता है ?

पढ़ोगे लिखोगे होगे नचाव, खोलोगे कूदोगे होगे

खराब—लड़कोंको पढ़नेकी रुचि उपजानेके लिये क०।

पढ़ो तो पढ़ो, नहीं तो पींजरा खाली करो—

तोतेको पढ़ते समय क०। निहम्मे नौकरको पाबूड़े
बीमारको जिससे जी उबता गया हो, उसे क०।

पढ़ों में अनपढ़ा, जैसे हंसोंमें कौवा—स्पष्ट।

सभा मध्ये न शोभन्ते इंस मध्ये क्वो धया (चाणक्य)

पतली नार खाय चार, मुंस कहे मेरी निराधर,

मोटी नार खाय खड़ी, मुंस कहे मेरी कोटी भन्नी—

(पं०) हुयली स्त्री चार रोटी, खाय तौ भी पति
कहता है कि यह कुछ नहीं खाती और मोटी स्त्री
यदि आधी रोटी भी खाय तो पति कहता है यह
मेरा घर खा गई।

पति और परमेश्वर बराबर—स्पष्ट। स्त्री पतिके

सामने अपनी सचाई प्रगट करनेके समय कहती है।

‘सुखदि सीति ओं करे, पिचार,

मोदि पतिके सुखओं सुख चार।

बीसे मनम धारो चान,

पति परमेश्वर कइत समान ॥

10 ... (सकौया, को० र० कौ०)

जब विद्वान
मनुष्य कोई
छोटा काम
करता है,

पतुरिया रुठी, धरम वचा—क्योंकि फिर उसके
पास न जायगा।

पतुरियोंका डेरा, जैसे ठगोंका घेरा—क्योंकि
वहाँ जाकर भी आदमी लुट जाता है।

पत्ता खड़का, चन्दा सड़का—आहत पाई और
खिसक दिये। जब किसीके ऊपर कोई बात आती
हो यह समझकर वह चल दे, तब क०।

पत्थरकी लंकीर—जो कभी नहीं मिटती, सबोंकी
बात पर क०।

पत्थरको जोंक नहीं लगती—मूर्खोंको उपदेश नहीं
लगता। निर्दयीके आगे रोनेसे उसे दर्दा नहीं आती।

‘बार सुभाव कहा रच जानै,

तनि हुटैव सिख कहै म मानै।

उपखानो प्रसिद्ध तिहुँ लोकि,

पाथरके नहिँ लागहि जोंक।

पत्थर डारे कीचमें उलरि चिगारे अंग—दे० न
ईट डालो न.....

पत्थर पूजे हरि मिले, तो वंदा पूजे पहाड़।

माला फेरे हरि मिले, तो वंदा फेरे भाड़—

(कवीर) नास्तिकोंका क्रहना है।

पत्थर मारे मौत नहीं आती—बिना मौतके श्राय
कोई नहीं मरता।

पत्थर मोम नहीं होता—जिसका हृदय फटोर है वह
जल्दी नहीं पसीजता।

पदनी आइल, न पेठिया लागल—(१०) बिना
वेरवाके हाट नहीं लगती

पनिहारी की लेजसे, सहजे फटे पखान—

पनिहारीकी रस्तीसे पत्थरपर भी निशान पड़ता है।

अभ्यास करनेसे सब कुछ हो सकता है।

करत करत आभास ते, जइमत होत सुजात।

रचरी भावत जात ते, सिल पर पड़त निवान ॥ (इ'द)

पर अकाज भट सहस बाहुसे—(तुल०) हुयोंको क०।

पर अघ सुने सहस दस काना—(तुल०) ऊ० दे०।

पर भास, नित उपास—जो दूसरेकी आशामें रहता
है, वह भूला मरता है।

पर उपकारी, धरमधारी—परोपकारी ही धर्मात्मा
होते हैं। व्यगसे भी क०।

पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहि ते नर न घनेरे—(तुल०) जो कोई दूसरेको तो उपदेश दे पर आप उसके अनुसार काम न करे, उसे क० ।

‘ परोपदेशे पाण्डित्यम् ’

परकल घोड़ भुसौले ठाड़—(५०) दे० हूँ घोड़ी...

परकी आसा सदा निरासा—दे० ‘पर आस’

परकी खेती परकी गाय, वह पापी जो मारन जाय—दे० ‘अनकर खेती’ ।

परके धनपर घोर रोवे—जब उससे छिन जाता है । दे० ‘रोने चोर’ ।

पर घर कूदें मूसलचंद—जो बिना बुलाये किसीके यहां जाय और बिना कहे उसके काममें दखल दे, उसे क० ।

पर घर नाचें तीन जने, कायध, वध, दलाल—सेखक, वैद्य और दलाल यह तीनों दूसरों हीके भरोसेपर पेट पालते हैं ।

परचे परतीत है—देखनेसे या जाननेसे विश्वास होता है ।

परजा मरन, राजाकी हंसी—जब राजा अपने सखे लिये ऐसा काम करे जिसमें प्रजाको कष्ट हो, तब क० ।

पर तिरिया पर धनके ऊपर, जो कोई सुता धरे है । जब छूटे है, प्राण पियारे, जाके नरक परे है—स्पष्ट ।

परदाफाश करना—किसीका गुप्त भेद खोलना ।

परदेकी वीची और चट्टाईका लंदगा—(५०) इज्जतके मुख्य पोशाक न हो, तब क० ।

परदेश कलेस नरेशनको—विदेशमें राजाओंको भी कष्ट होता है ।

परदेसीकी प्रीतको, सबका मन ललचाय । दीई यातकी खोट है, रहे न संग ले जाय—विदेशीसे प्रीति करना धुंधा है, क्योंकि वह अधिक कालतक नहीं निभ सकती ।

परदेसीकी प्रीत फूसका तापना, दिया फलेजा काढ़ हुआ नहि आपना—ऊ० दे० ।

प्रीत अबाहिर यों इनको जी उभारैको खाव उपारैको तापव ।

(४० प०)

परदेसी घालम तेरी आस नहीं, चासी फूलोंमें वास नहीं—(३०) ऊ० दे० ।

परदोही कि होय निसंका, कामी पुनि किं रहै अफलङ्गा—(तुलसी) जो दूसरोंसे दुःखमने रखता है उसे सदा डर बना रहता है और कामी पुरुष कभी निष्फलक नही रह सकता ।

पर धन राखे मूरखचन्द—जो दूसरेका धन धरोहर रखता है वह मूख होता है क्योंकि उसके रखनेसे उसका कुछ लाभ नहीं होता और यदि खो जाय तो अपने पाससे दण्ड भरना पड़ता है ।

पर नारी पैनी छुरी, कोई मत लाभो अंग । दसों सीस राघनके ढदि गये, इस नारीके संग—पर सीसे बचनेके लिये क० । सीता हरनके लिये रावण मारा गया ।

पर नारी पैना छुरी, तीन जगहसे खाय । द्रव्य लैय योघन हरे, मुये नर्क ले जाय—स्पष्ट । ऊ० दे० ।

पर पतरीको नोक घरा—पराई चीज अच्छी लगती है ।

पर वसमें सुख है नहीं, निज वस ही सुख भोग । यतें पर वस त्यागके, रहें सुवस बुधलोग दे० “पराधोन सपने सुख नाही”

पर मुई साधू, एसों आयें आंसू—(५० ज०) बना-बटा दुःख प्रकाश करनेपर क० ।

पर मुडे फलहार—जो मनुष्य दूसरोंके सिरपर हाथ फेकर थपना मतलब निकालते हैं, उनको क० । इसीके जोड़को धंगला मतलब है—‘मोदेर बुद्धि तोदेर कड़ि, सवाई मिले फलार करि ।’ वोंगी देश हितपियों-पर खूब फवती है क्योंकि उनका काम ही है देश हितके लिये चन्दा करना और उसे हड़प जाना ।

परमेश्वर जो करता है सो अच्छे हीके लिये करता है—जो कुछ होता है सो ईश्वरकी इच्छासे होता है । आस्तिकों और संतोपियोंका कहना है । जब किसीपर कष्ट पड़ता है, तब उसे सान्त्वना देनेके लिये क० ।

एक राजा अपने मन्त्री सहित यिन्कारके लिये जङ्गलमें गया । किसी पक्षीसे राजाको उगली कष्ट गई तबसे उसने मन्त्रीको दिखाया । मन्त्रीने कहा, परमेश्वर जो करता है अच्छे हीके लिये करता है । राजाकी मन्त्रीके इस कथन-

पर बड़ा क्रोध आया और उसे पदच्युत करके वहाँसे निकाल दिया। राजा जब जङ्गलमें एक शिकारके पंखे पीछेबहुत दूर निकल गया तब चोरोंके एक गिरोहने उसे गिरफ्तार कर लिया। बलि देनेके लिये चोर राजाको देवीके सामने ले गये। चोरोंमें जो पण्डित था उसने राजाको ल'गली कटौ देखकर कहा कि इसका अङ्ग भङ्ग है इसलिये यह बलिदानके उपयुक्त नहीं। इसपर चोरोंने राजाको छोड़ दिया। राजा जब अपने शहरमें आया, तब उसे मन्त्रीको बात याद आई और उसे बुलवाकर कहा कि तुमने ठीक ही कहा था, यदि मेरी ल'गली न कटौ होती तो मैं मार डाला जाता। मुझे तुम्हें निकाल देनेका बड़ा अफसोस है। मन्त्रीने कहा कि परमेश्वर जो करता है, अच्छे हीके लिये करता है। यदि आप मुझे निकाल न देते तो मैं भी आपके साथ ही रहता और आपके बदले मेरा ही बलिदान होता।

परवतको राई करे राई परवत मान—ईश्वरकी कृपारत है। जब कोई धनवान निर्धन हो जाय वा निर्धन धनवान हो जाय, तब क०।

चाहे सुमेरको डारकरै, और डारको चाहे सुमेर बनावे। चाहे तो रंकको राउ करे, अरु राउको डारहिं डार किरावे। रीत यहो करुणानिधि की, कथि "दिव" कहे बिनती मोहिभावे। चोटीके प्रांचमें बाधि गयेदधि, चाहे समुद्रके पार लगावे।

परवतपर खोदे कुवां कैसे निकसे तोय—
कृथा परिभ्रम करनेपर क०।

क्या कौन ऐसे यतन जासों काय्य न होय।
परवतपर.....तोय। (७८)

परहित घृन जिनके मन माखी—(तुलसी) जो दूसरेकी बढ़ती देखकर जलते हैं, उनको क०।

परहित सरिस्स धर्म नहिं भाई। पर निन्दा सम नहिं अधमाई—(तुलसी) स्पष्ट।

परहेज चड़ी दवा है—रोगमें परहेज करना दवासे अधिक काम करता है।

परहेज भी दवासे जियादः सुफ़ीद है।

परहेज भी आधा इलाज है—ऊ० दे०। रोगियोंको कही जाती है जिसमें वे घदपरहेजी न करें।

पराई जेवसे अपनी जेवमें धरना मुशिकल है—
दूसरेका धन लेना सहजनहीं है।

पराई तौंदका घूसा—जिसका कष्ट अपनेको नहीं होता।

पराई थैलीका मुंह सकरा—अपना धन कोई जल्दी नहीं दिया चाहता। दे० "पराई जेवसे"

पराई नौकरी करना और सांपका खिलाना बराबर है—दोनों ही जोखिमके काम हैं।

पराई वद शकुनीके वास्ते अपनी नाक कटाना—
दुष्टोंका काम है।

पराई सरायमें कौन धुआं करता है—जब कोई किसीकी मदद नहीं करता, तब क०। धुआं करना—
थाग बालकर उसको मदद पहुंचाना।

पराई हांसी गुड़सी मीठी—दूसरोंकी हंसी अच्छी मालूम पड़ती है।

पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं—(तुलसी) जो पराई नौकरी करे वा दूसरेके अधीन रहे उसे कभी सुख नहीं मिलता।

पराया खाइये गा बजा, अपना खाइये टट्टी लगा—
स्पष्ट।

पराया घर धूकका भी डर—पराये घरमें थकनेका भी डर रहता है, अपने घरमें जो चाहो सो करो।

पराया दिल परदेश बराबर—जिसका हाल नहीं मालूम।

पराया दिल, समुन्दरके पार—ऊ० दे०।

पराया सिर कदू बराबर—जब कोई किसीका माल-
व्यर्च करनेमें ज़रा भी दर्द नहीं करता, तब क०।

पराया सिर कुरानकी जगह—(मु०) कसम खानेके लिये। मुसलमान लोगोंमें कुरानकी कसम बहुत खाई जाती है।

पराया सिर पसेरी बराबर—दे० "पराया सिर,
कदू"।

पराया सिर लाल देख, अपना सिर फोड़ डालेंगे
(ज०) दे० "पराई बदगकुनीके वास्ते।"

पराये धनपर भींगुर नाचे—जो दूसरेके धनपर ऐंठता है, उसे क०।

पराये धनपर लक्ष्मीनारायण—दूसरेके धनको
वैरात।

पराये पीरको मलीदा, घरके देवताको धतूरा—
जब थपनेको छोड़कर दूसरेकी खातिर होती है,
तब क० ।

पराये वरधे आज्ञाद करते हैं—दूसरेके नौकरोंको
मुक्त करते हैं। दूसरेका नुस्रसान करके बाह्य वाही
लेनेवालेको क० ।

परित्राणाय मूर्खानाम् विनाशाय च धनीनाम्,
आत्म स्वार्थ साधनाय संभवामि कलियुगे—
स्वार्थी देशोद्धारकोंको कष्टी जाती है जिनका काम
धनियोंको भूख बनाकर देशोद्धारके नामसे चन्दा
उगाहना और उसे हड़प जाना ही है ।

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्,
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे—
(गीता) भगवानका कहना है कि मैं साधुओंके
उद्धारके लिये और दुष्टोंके संहारके लिये अवतार
लेता हूँ ।

परे भोंपरो देखहीं सत महलोंका स्वप्न—ऊँची
आकांक्षा रखनेवालेको क० ।

परपेकाराय सतां विभूतयः—(सं०) साधुओं
(सन्ननों) की विभूति दूसरोंकी भलाई करनेमें है ।

रवाकरः किं कुरुते स्वर्वैः विन्ध्याचलः किं करिषि करोति
श्रीखंड खंडं नवधा चलः किं परीपकाराय सतां विभूतयः
पहाड़की उतराई चढ़ाई, दोनों पर लानत—
यदिमज्ञाज थादमी पर क० ।

पहाड़ सुहावनी दूरते लागै—स्पष्ट ।

पहाड़ी गधा पूर्वी रेंक—(व०) दे० 'देशी कृतिया...'
पहिली जीत मंगावे भीख—जखारी कहते हैं ।

पहिली बहुरिया, दूसरी पतुरिया, तीसरी कुकरिया
पहले विवाहकी खी ही खी होती है, दूसरे विवाह-
की पतुरिया और तीसरे विवाहकी कृतियाके
समान है ।

पहिली बोहनी गुलैयांकी आस—दूकानदार और
खुशारी लोग क० । मुसलमान लोग कहते हैं कि
पहिली बोहनी अहमियांकी आस ।

पहिले अपनी ही दाढ़ीकी आग बुझाई जाती है—
पहले अपना ही काम संभाला जाता है ।

पहिलेका भगडा अच्छा, पीछेका भगडा बुरा—
(व्य०) काममें पहिले सफाई करनेके लिये कहते
हैं, जिसमें पीछे विवाद न हो ।

'धने रक्षा विवादः स्यात् ।'

पहिले खाना, पीछे बात करना—जो काम सामने
है पहले उसे पूरा करो ।

पहिले ग्रासहिं मांछी गिरी—जब किसी कामके
प्रारम्भ हीमें विघ्न हो, तब क० । यह संस्कृतके
'प्रथम प्रासे मत्तिका पाता' का उल्था है ।

पहिले घड़ा फूटे कि मटकेना—दे० "कृजे बले कि
माट ।"

पहिले घरमें, तो पीछे मस्जिदमें—पहले घर देखो
पीछे याहर ।

पहिले चुम्मे गाल काटा—(व्य०) जब कोई किसी-
को पहले ही पहल कोई काम दे और वह उसे
चिगाड़ दे वा पहले पहल किसीको उधार दे और
वह रकम मार बैठे, तब क० ।

पहिले नहाना, पीछे खाना—हिन्दुओंका कहना है ।

'यतं विद्वाय भोक्तव्यं सद्यश्च खानमाचरेत् ।'

पहिले पहरे सब कोइ जागे, दूजे पहरे भोगी ।
तोजे पहरे चोरा जागे, चौथे पहरे जोगी—रातके

पहिले पहरमें सब कोइ जागते हैं, दूसरेमें भोगी,
तीसरेमें चोर, और चौथेमें योगी जागता है ।

पहिले पीधे जोगी, बीचमें पीवे भोगी, पीछे
पीवे रोगी—खाते समय पानी पीनेके लिये क० ।

तमाख पीनेके लिये भी क० ।

पहिले पीवे भकवा, फिर पीवे तमखवा, पीछे
पीवे चिलमचट—तमाख पीनेवालोंका कहना है ।

पहिले पीना धयां पीना है, फिर तमाख पीना है,
और पीछे चिलम घाटना है ।

पहिले घो पहिले काट—(क०) स्पष्ट ।

पहिले भित्तर, तब देवता पित्त—पेट भरेपर
देवता पित्त सूफते हैं ।

पहिले मारे सो मीर—स्पष्ट ।

देखि सुभंवर भञ्ज न मीर, हियमें भरि उहाइ गछी तीर ।

कछो कछे लपखानी पीर, पहिले मारे भोई मीर ।
पहिले लिख और पीछे दे, कमती होतो मुखसे ले-
कागज़ कहता है कि जो लिखकर देता है उसकी

पर महा क्रोध चया और उसे पदच्युत करके वहाँसे निकाल दिया। राजा जब लङ्कलमें एक शिकारकी पंक्ति पोंदियेवहुत दूर निकल गया तब चोरीके एक गिरोहने उसे गिरफ्तार कर लिया। बलि देनेके लिये चोर राजाको देवीके सामने ले गये। चोरो'में जो पण्डित था उसने राजाको उ'गली कटी देखकर कहा कि इसका अङ्ग भङ्ग है इसलिये यह बलिदानके उपयुक्त नहीं। इसपर चोरो'ने राजाको छोड़ दिया। राजा जब अपने गृहमें आया, तब उसे भन्तीकी बात याद आई और उसे बुलवाकर कहा कि तुमने ठीक ही कहा था, यदि मेरी उ'गली न कटी होती तो मैं मार डाला जाता। तुम्हें तुम्हें निकाल देनेका बड़ा अफसोस है। भन्तीने कहा कि परमेश्वर जो करता है, अच्छे होके लिये करता है। यदि आप तुम्हें निकाल न देते तो मैं भी आपके साथ ही रहता और आपके बदले मेरा ही बलिदान होता।

पराई तोंदका होता।
पराई धैलीय जल्दी नहीं
पराई नौक
घरावर है
पराई वद
दुष्टोंक
पराई
कि
य
परा

परवतको राई करे राई परवत मान—ईश्वरकी कुदरत है। जब कोई धनवान निर्धन हो जाय वा निर्धन धनवान हो जाय, तय क०।

चाहे सुमेरको धारकरे, और धारको चाहे सुमेर बनावे, चाहे ही रंकको राउ करे, अब राउको धारके धार फिरावे। रीत यहो करणानिधि की, कवि "देव" कहे विनती मोहि चोटीके प्रांचमें बाधि गंधर्दि, चाहे समुद्रके पार लना

परवतपर खोदे कुवां कैसे निकसे तोय
शुया परिश्रम करनेपर क०।
कां कीज ऐसे यतन जासो काथ' न होय।
परवतपर.....तोय। (उन्द

परहित घृन जिनके मन माखी—(तुलसी)
बुसरेकी बड़ती देखकर जलते हैं, उनको क०।
परहित सरिस धर्म नहीं भाई। पर निन्दा
नहि अधमाई—(तुलसी) स्पष्ट।

परहेज यड़ी दवा है—रोगमें परहेज करना द
अधिक काम करता है।
परहेज भी दशासे ज्यादा: सुफ़ीद है।

परहेज भी आधा इलाज है—उ० दे०। रोगियों
कही जाती है जिसमें वे बदपरहेजी न करें।
पराई जेधसे अपनी जेधमें धरना मुश्किल है—
बुसरेका धन लेना सहजनहीं है।

जस्यत
अपनी
उससे बहुत
समय चार
जा
बड़ पर सवार
पुका कि
सवार

पांडेजी पछितायंगे सूखे बने खायंगे—ऊपर देखो।

पांडे दोऊ दीनसे गये—जब कोई एक काम छोड़ कर दूसरा काम करने जाय, और उसमें भी विफल मनोरथ हो, तब क०।

एक ब्राह्मण मुहम्मदीय मजहबकी अच्छा समझ कर मुसलमान हो गया। कुछ दिन अब उसने अपने इस नये मजहबकी निम्सार पाया तो फिर हिन्दू होने की इच्छा प्रकटकी। परंतु हिन्दूधर्म अपनी प्रथाके अग्रधार उसे हिन्दू बनाना अभीकार कर दिया। इसलिये वह दोनों तरफसे गया।

पांवके नीचे आया रोड़ा, तले सवार ऊपर घोड़ा—स्पष्ट।

पांवमें जूती न सिरपर टोपी—(१) बहुत गरीबी हालत पर क०। (२) बंगालियोंको क० (३) जो सिर पर टोपी पहने रहे और नंगे पैर हो, उते क०।

पांव लों गिनती, सौ लों गिनती—जिस तरह सौ से ज्यादा गिनती नहीं होती उसी तरह पैर पड़नेसे ज्यादा गिनती नहीं होती। जब कोई अपना क्रूर माफ करानेके लिये किसीके पांव पड़े और इसपर भी वह न माने, तब क०।

पाक नाम अल्लाहका—(मु०) वे-ऐव नाम ईश्वरका है।

पाक रह, देवाह रह—(मु०) निर्दोषीको डर नहीं।

पात पात करि आप लुटावे, काला मुंह कर जग विघ्नभावे तब लालोंमें लाली पावे—यह पहली पलास वृत्त पर है। पहिले वह अपने सब पत्ते गिरा देता है अर्थात् नङ्गा हो जाता है फिर उसमें काले रङ्गकी कलियां लगती हैं, अर्थात् संसारमें अपमानित होकर उसका मुंह-काला होता है, पीछे साल रङ्गके फूल खिलते हैं, जिससे सारा धन दहक उठता है अर्थात् अपने गुणोंसे बड़ोंमें भी सम्मान योग्य होता है। तात्पर्य यह है कि बिना कष्ट उठाने मनुष्यको प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती।

पान और इमान फेर हीसे अच्छा रहता है—स्पष्ट। पान पुराना घी नया, और कुलवंती नार। चौथी पीठ तुरंगकी, स्वर्ग निशानी चार—पुराना पान, नया घी, कुलवंती सी, और घोड़ेकी सवारी जो ये चारों मिलें तो समझो कि स्वर्ग मिला। इसीको

उल्टी मसल यह है :—बड़े बाल और मेले कपड़े और फरकसा नार, सोनेको धरती मिले नरक निशानी चार।

पानीका सा गुलगुला है—स्यारंगुर चीज़पर क०।

पानीका हगा ऊपर आता है—जब कोई छिपकर किसीकी बुराई करे और वह प्रगट हो जाय, तब क०।

पानी पीकर जात पूंछना—काम करनेके पहिले उसका परिशाम सोच लेना चाहिये, काम हो चुकनेपर जब उसका विचार किया जाय, तब क०।

सुरति करी तिय परि बय काम, अब दुकत रचियाको नाम। लोक छक्ति मन गई नहिं रूके, पानी दिवे जात सबभूके।

(परकीया)

पानी पीजे छानके, गुरु कीजे जानके—पानी छान कर पीना चाहिये और गुरु जानकर करना चाहिये।

पानी पीनेको पुरुवा नहीं, आव दस्तको गड्डुआ—(च०) हैसियतसे ज्यादा मांगपर क०।

पानी पीपीके कोसना—श्राप देनेपर क०।

पानी पीवें छानके, जीव मारें जानके—जनियोंको क०। कपड़ोंमें जो कीड़े रह जाते हैं वह मर जाते हैं।

पानी बाढ़े नावमें, घरमें बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम—(गिरघर) स्पष्ट सूमते क०।

पानी भयनेसे घी नहीं निकलता—सूमकी सेवा करनेसे धन लाभ नहीं होता। मूर्खको उपदेश करनेका कुछ फल नहीं होता। अशुभभव बातपर क०। बारि मये बड़ होय छत, सिक्ताते बड़ तेल।

बिनु हरिं मजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त भयेव। (तुल०)

पानीमें पत्थर नहीं गलता (वा सड़ता)—

(व्य०) (१) कुछ रकम ढकी नहीं जाती। किसी

धनीके पास रकम बाकी हो, तब क०। (२) निर्दयी किसी तरह नहीं पसीजता।

भन्न करता कहीं रोना बुतोंपर,

भन्ना गलता कहीं पानीमें पत्थर।

पानीमें पापाण भीजे पर छीजे नहीं, मूरखके आगे ज्ञान रीझे पर बूके नहीं—स्पष्ट।

पानीमें मछली नौ नौ डुकड़ा दिस्ता—(प०)

काम होनेके पहिले ही किसी बातका शुमार बांधने पर क०।

रोकड़में रुपया नहीं घटता ।
 पहिले सोच विचार पीछे कीजे कार—(व्यो०)
 स्पष्ट ।
 पहिले ही गस्सेमें वाला आया—बदमगुन होना ।
 'दे० पहिले आसहि.....'
 पहुंचे चंग आकासलों, जो गुन संयुत होय—
 गुन=डोरी । जिस तरह गुड़ी बोले महारे आकागमें
 पहुंच जाती है, वैसे ही गुणवान मनुष्य ऊंचेसे
 ऊंचे पदपर पहुंच जाता है ।
 पहुना आये घर बसे, गये न ऊजड़ होय—स्पष्ट
 पांच जूतियां और हुकके पानी—किसीको
 लानती देना हो, तब क० । जब कोई उचित प्राप्यसे
 आधिक मांगे, तब भी क० ।
 पांच दिन पचमीखम न्हाई, मैं जानू सारा
 फतक न्हाई—छियां कहती हैं जो पूरा कातिक
 महीना भर गंगा स्नान नहीं कर सकतीं । पंच
 भीखम कातिक सुदी ११ से १५ तक पांच दिन
 रहता है ।
 पांच पंच मिलि कीजे काज, हारें जीते नाहीं लाज
 पांच आदमी मिलकर जो काम करते हैं, उसमें हानि
 भी हो, तो किसी एक के सिर बदानामो नहीं आती ।
 पांच पचासे ले गया, पांचे ले गया एक । टका
 रुपैया ले गया, तू बैठा बैठा देल—(व्यो०) सूद
 खोरों पर क० ।
 इसपर एक कहानी इस तरह है—एक मनुष्यके पास
 पचास रुपये थे । उसने उन्हें सूदमें लगाना चाहा ।
 एक आदमीको उसने पचास रुपये एक महीनेके बादपर
 दिये और पांच रुपये सूदके पहिले काट लिये । फिर
 दूसरे आदमीको उसने एक रुपया सूद लेकर पांच रुपये
 सवार दिये । जब उसके पास एक रुपया रह गया तो
 उसने व्याजके लालचमें वही दो पैस लेकर तीसरे
 आदमीको दे दिये । तीनों आसामिश्रमें उसका रुपया
 मारा गया, तब उसने उपरांत नमन कही ।
 पांच महीने व्याहको बीते पेट कहां से लाई—
 दुश्चरित्रा स्त्री को क० ।
 पांचे धाम पचीसे महुआ, तीस घरसमें इमली
 औ कहुआ—पांच वर्षमें धाम, पचीस वर्षमें महुआ
 और तीस वर्षमें इमली और कहुआ फलता है ।

कोई कोई इमलीको कहुआ भी क० ।
 पांचे मीत पचासे ठाकुर—पांच रुपयेके लिये मित्र
 से और पचास रुपयेके लिये राजा वा जमींदारसे
 विगाड़ न करे ।
 पांचों उंगलियां धी में तर—जिसकी खूब पौ
 चारह हो, उसे क० ।
 पांचों उंगलियां धो में, छटा सिर कड़ाहेमें—
 ऊ० दे० ।
 पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती—सब मनुष्य
 समान नहीं होते ।
 'पित्र दक्षिण हित सकल समान, वन न हं बर तिय उपमान
 विधिगति देखि जगतके मांदि, पांचो उंगली एकसी नादि'
 (नी० र० कौ०)
 पांचों उंगलियोंसे पहुंचा भारी—पांचके सहारे
 एककी प्रतिष्ठा होती है ।
 पांचों पंडे छठे नारायण—पांचों पांडवोंमें श्रीकृष्ण
 छठे हैं । जब कोई मनुष्य अकस्मात् पैसे, मनुष्योंमें
 जा मिले जहां उसको बहुत कदर हो तथा ज्ञस्त
 भी हो, तब क० ।
 पांचों सवारोंमें मिलना—जब कोई मनुष्य अपनी
 तुलना ऐसे मनुष्योंके साथ करे जो उससे बहुत
 ऊंचे दरजेके हों, तब क० ।
 इसका निकास नीचेकी कहानीसे है—किसी समय चार
 आदमी सवार हथियार बंधे खूब सज्जधरकर कहीं जा
 रहे थे । एक निहत्या मनुष्य एक सडियल टह पर सवार
 हो उनके पीछे हो लिया । जब उससे किसीने पूछा कि
 तुम कहां जाते हो, तब वह बोला कि इन पांचों सवार
 दिल्लीसे जाते हैं ।
 पांडे जी पछितायगे, वही चनेकी खायगे—
 जब कोई मनुष्य हार कर वही काम करे जो पहिले
 उसने बहुत समझानेपर भी अपनी जिहसे न किया
 हो, तब क० ।
 किसी ब्राह्मणकी चनेकी दाल अच्छी नहीं लगती थी । एक
 दिन और कोई दाल घरमें न रहनेके कारण ब्राह्मणकी
 चनेकी ही दाल बनाई । पांडेजीने रोटी खाना असी-
 वार किया । पंडाइनके बहुत समझानेपर भी वह
 राजी न हुए । इसपर उसने 'यह मसल कही' जब
 उनको बहुत मूख लगी, तब उन्होंने फख मारकर उसी
 चनेकी दालके साथ वह रोटी खाई ।

पांडेजी पछितायंगे खुले चने खायेंगे—ऊपर देते।

पांडे दीऊ दीनसे गये—जब कोई एक काम छोड़ कर दूसरा काम करने जाय, और उसमें भी विफल मनोरथ हो, तब क०।

एक ब्राह्मण मुहम्मदीय राजद्वारकी अच्छी समझ कर मुहम्मदमान हो गया। कुछ दिन जब उसने अपने इस नये राजद्वारकी निम्नार पाया तो फिर हिन्दू होने की इच्छा प्रकट की। परंतु हिन्दूओं ने अपने प्रणाले अनुसार उसे हिन्दू बनाना अच्छीकार कर दिया। इसलिये वह दोनों तरफसे गया।

पांवके नीचे आया रोड़ा, तले सवार ऊपर घोड़ा—स्पष्ट।

पांवमें जूती न सिरपर टोपी—(१) बहुत गरीबी हालत पर क०। (२) बंगालियोंको क० (३) जो सिर पर टोपी पहने रहे और नंगे पैर हो, उसे क०।

पांव लों बिनती, सौ लों गिनती—जिस तरह सौ से ज्यादा गिनती नहीं होती उसी तरह पैर पड़नेसे ज्यादा बिनती नहीं होती। जब कोई थपना कसूर माफ़ करानेके लिये किसीके पांव पड़े और इसपर भी वह न जाने, तब क०।

पाक नाम अल्हाहका—(मु०) वे-ऐव नाम ईश्वरका है।

पाक रह, धेवाह रह—(मु०) निर्दोषीको उर नहीं।

पात पात करि आप छुटाये, काला मुंह कर जग दिपलवये तब लालोंमें लाली पाये—यह पहिली पलास वृत्त पर है। पहिले वह अपने सब पत्ते गिरा देता है अर्थात् नङ्गा हो जाता है फिर उसमें कासे रङ्गकी कलियां लगती हैं, अर्थात् संसारमें अपमानित होकर उसका मुंह काला होता है, पीछे लाल रङ्गके फूल खिलते हैं, जिससे सारा वन दहक उठता है अर्थात् अपने गुणोंसे बड़ोंमें भी सम्मान योग्य होता है। तात्पर्य यह है कि बिना कष्ट उठाये मनुष्यको प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती।

पान और ईमान फेर हीसे अच्छा रहता है—स्पष्ट। पान पुराना घी नया, और कुलवंतीनार। चौथी पीठ तुरंगकी, स्वर्ग निशानी चार—पुराना पान, नया घी, कुलवंती स्त्री, और घोड़ेकी सवारी जो ये चारों मिलें तो समझो कि स्वर्ग मिला। इसीकी

उलटी मसल यह है :—श्रद्धे वाला और भले कपड़े और करकसा नार, सोनेको धरती मिले नरक निसानी चार।

पानीका सा बुलबुला है—दायांमंगुर चीज़पर क०।

पानीका हवा ऊपर आता है—जब कोई छिपकर किसीकी सुराई करे और वह प्रगट हो जाय, तब क०। पानी पीकर जात पूंछना—काम करनेके पहिले उसका परियाम सोच लेना चाहिये, काम हो चुकनेपर जब उसका विचार किया जाय, तब क०।

भुरति करी तिव परि बग काम, चब बुभल रसियाकी नाम। लोक उक्ति मन मर्ह नहिं रुके, पानी पिये आत तब बुके। (परकीया)

पानी पीजे छानके, गुरु कीजे जानके—पानी छान कर पीना चाहिये और गुरु जानकर करना चाहिये। पानी पीनेको पुरुषा नहीं, आच दस्तको गडुआ—(च०) हैसियतसे ज्यादा मांगपर क०।

पानी पीपीके कोसना—आप देनेपर क०।

पानी पीवें छानके, जीव मारें जानके—जनियोंको क०। कपड़ोंमें जो कीड़े रह जाते हैं वह मर जाते हैं।

पानी वाड़े नावमें, घरमें वाड़े दाम, दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम—(गिरधर) स्पष्ट सुमते क०।

पानी मधनेसे घी नहीं निकलता—सूमकी सेवा करनेसे घन लाभ नहीं होता। मूर्खको उपदेश करनेका कुछ फल नहीं होता। असम्भव बातपर क०। बारि मये बर होय छत, विक्रतायें बर तेल।

विनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेक्ष (तुल०)

पानीमें पत्थर नहीं गलता (वा सड़ता)—(ज्य०) (१) कुछ रङ्ग दूषी नहीं जाती। किसी धनीके पास रङ्ग यात्री हो, तब क०। (२) निर्दयी किसी तरह नहीं पसीजता।

भन्नर करता कहां रोना बुतीपर,

भवा गलता कहां पानीमें पत्थर।

पानीमें पापाण भीजे पर छोड़े नहीं, मूरखके आगे ज्ञान रोड़े पर बूके नहीं—स्पष्ट।

पानीमें मछली नौ नौ टुकड़ा हिस्सा—(पू०) काम होनेके पहिले ही किसी बातका शुभारंभ या धने पर क०।

रोकड़में खया नहीं घटता ।
 पहिले सोच विचार पीछे कीजे कार—(व्या०)
 स्पष्ट ।
 पहिले ही गरुस्तेमें बाल आया— वदसगुन होना ।
 दे० पहिले पासहि.....
 पहुँचे चंग आकासलों, जो गुन संयुत होय—
 गुन=डोरी । जिस तरह गुड्डी बोरके सहारे आकाशमें
 पहुँच जाती है, वैसे ही गुणवान मनुष्य ऊँचेसे
 ऊँचे पदपर पहुँच जाता है ।
 पहुना आये घर वसे, गये न ऊजड़ होय—स्पष्ट
 पांच जूतियां और हुक्केका पानी—किसीकी
 लानती देना हो, तब क० । जब कोई उचित प्राप्यसे
 आधिक मांगे, तब भी क० ।
 पांच दिन पचमीखम न्हाई, मैं जानू सारा
 कतक न्हाई—सियां कहती हैं जो पूरा कातिक
 महीना भर गंगा स्नान नहीं कर सकतीं । पंच
 भीखम कातिक छदी ११ से १५ तक पांच दिन
 रहता है ।
 पांच पंच मिलि कीजे काज, हारे जीते नहीं लाज
 पांच धादमी मिलकर जो काम करते हैं, उसमें हानि
 भी हो, तो किसी एक के सिर बदनामी नहीं आती ।
 पांच पचासे ले गया, पांचे ले गया एक । टका
 रुपैया ले गया, तू बैठा बैठा देख—(व्य०) सूद
 खोरों पर क० ।
 इसपर एक कहानी इस तरह है—एक मनुष्यके पास
 पचास रुपये थे । उसने उन्हें सूदमें लगाना चाहा ।
 एक धादमीकी उसने पचास रुपये एक महीनेकी धादपर
 दिये और पांच रुपये सूदके पहिले काट लिखे । फिर
 दूसरे धादमीको उसने एक रुपया सूद लेकर पांच रुपये
 उधार दिये । जब उसकी पाच एक रुपया रूफ गया तो
 उसने व्याजके लायचमें बड़ी दो पैसे लेकर तीसरे
 धादमीको दे दिये । तीनों धादामियोंमें उधका रुपया
 मारा गया, तब उसने उपगंत नसब कही ।
 पांच महीने व्याजको वीते पेट कहां से लाई—
 दुस्चरिया स्त्री को क० ।
 पांचे आम पचीसे महुआ, तीस धरसमें इमली
 औ कहुआ—पांच वर्षमें आम, पचीस वर्षमें महुआ
 और तीस वर्षमें इमली और कहुआ फलता है ।

कोई कोई इमलीको कहुआ भी क० ।
 पांचे मीत पचासे ठाकुर—पांच रुपयेके लिये मित्र
 ने और पचास रुपयेके लिये राजा वा ज़मींदारसे
 बिगाड़ न करे ।
 पांचों उंगलियां घी में तर—जिसकी खूब पौ
 वारह हो, उसे क० ।
 पांचों उंगलियां घी में, छटा सिर कड़ाहमें—
 ऊ० दे० ।
 पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती—सब मनुष्य
 समान नहीं होते ।
 'पित्र द्युचि न चित सकल समान, चने न हें वर तिय उपमान
 विधि गति देखि जगतके साँहि, पांचो उंगलो एकही नाहि'
 (जी० २० की०)
 पांचों उंगलियोंसे पहुँचा भारी—पांचके सहारे
 एककी प्रतिष्ठा होती है ।
 पांचों पंडे छटे नारायण—पांचों पांडवोंमें श्रीकृष्ण
 छटे हैं । जब कोई मनुष्य थकफ्मात् ऐसे मनुष्योंमें
 जा मिले जहां उसकी बहुत कद्र हो तथा ज़हमत
 भी हो, तब क० ।
 पांचों सवारोंमें मिलना—जब कोई मनुष्य अपनी
 तुलना ऐसे मनुष्योंके साथ करे जो उससे बहुत
 ऊँचे दरजेके हों, तब क० ।
 इसका विकास नीचेकी कड़ानोसे है—किसी समय चार
 वादशाही सवार हथियार बाँधे खूब सजधजकर कहीं जा
 रहे थे । एक निहत्या मनुष्य एक सड़ियल टह पर सवार
 हो उनके पीछे हो लिया । जब उससे किसीने पूछा कि
 तुम कहां जाते हो, तब वह बोला कि इस पाँचों सवार
 दिहोसे चाते हैं ।
 पांडे जी पछितायगे, वही चनेकी खायगे—
 जब कोई मनुष्य हार कर घड़ी काम करे जो पहिले
 उसने बहुत समझानेपर भी अपनी जिहसे न किया
 हो, तब क० ।
 किसी ब्राह्मणको चनेकी दाल अच्छी नहीं लगती थी । एक
 दिन और कोई दाल घरमें न रहनेके कारण ब्राह्मणने
 चनेकी ही दाल बनाई । पांडेजीने रोटी खाना चमी-
 कार किया । पंडाइनके बहुत समझानेपर भी वह
 राजी न हुए । इसपर उसने यह मसज कही । जब
 उनको बहुत भूल लगी, तब उन्होंने भूख मारकर उसी
 चनेकी दालके साथ वह रोटी खाई ।

पियें रुधिर पय ना पियें, लगी पयोधर जोक—
(वृन्द) नीच मनुष्य दूसरेके गुणको न ग्रहणकर
अवगुण को ही ग्रहण करता है जैसे स्तनमें जो क
लगा दी जाय तो वह दूध न पीकर खून ही पी
लेती है

पिसनहारीके पूतको चयेना ही लाभ—स्पष्ट ।
पिसनहारीका बेटा और केसरका तिलक—
(च०) जब कोई गरीब आदमी बड़े आदमीकी
रीस करे, तब क० ।

पी कारन पीरी भई लोग कहें पिंड रोग, छिप
छिप लंघन में किये पी मिलनेके जोग—विरहिनी
नायिकाका कहना है ।

पीच पी निमात खाई—मांड पीया और उसे दुनियां
भरकी नियामत समझा । जब कोई बहुत कष्ट उठा-
कर दूसरेके साथ सलूक करते करते उब जाता है,
तब क० ।

पीठ पीछे कुछ ही हो—भरे पीढ़े जो चाहे सो हो ।
पोतम तू मत जानियो, भयो दूरको वास ।
देह गेह कितहूँ रहै, प्राण तिहारे पास—
विरहिनी नायिकाका अपने पतिके प्रति कहना ।

कहा भयो जो बीहरे भोगन तो मन साथ,
गुडी उठी चलि जात कित तक उदयक साथ । विहारी
पीतम तेरी पीतको, झुक झुक करूँ सलाम ।
जयसे तो संग नेह करो, सुन्यों न सुखको नाम—
स्पष्ट ।

पीतम यसे पहाड़ पर, हम यमुनाके तीर । अयका
मिलना फडिन है, (कि) पांव पड़ी जंजीर—स्पष्ट ।
पीनेको पानी नहीं छिड़कनेको गुलाब—(च०)
बाहरी दिखावे पर क० ।
पीपल काटे, पाल बिनासे, भगवान मेस सतावे,
काया गद्दीमें दया न व्यापे, जड़ा मूलसे जावे—
(म०) स्पष्ट ।

पीपलकी चौखट—जो आदमी जल्दी पिंडन छोड़े,
उते क० । पीपलकी चौखट जल्दी दूती नहीं ।
पीपल पूजन में चली, निगम-बोधके घाट ।
पीपल पूजत पी मिले, एक पन्थ दो फाज—स्पष्ट ।

पी प्याला, मार भाला—प्याला पीलेतब शुद्ध कर,
जिसमें उचैजित हो जाय ।

पीयाकी कमाई मोहे नहीं लहना, मोपे याजूबन्द
नहीं और सय गहना—भूठी शिकायत पर क० ।

पीर आप ही दरमांदह, राफात किसकी करेंगे ?—
जिसकी सहायता चाहे वह खुद ही विपदमें फंसा
हो, तब क० ।

पीरकी सगाई मीरके यहां—(मु० ज०) अच्छो का
सम्बन्ध अच्छो हीते होता है ।

पीरको न शहीदको, पहिले नकटे देवको—
(मु० ज०) जब कोई नगण्य आदमी ऐसी चीज़
पहिले ही मांगे जो दूसरे अच्चे आदमियोंके लिये
तेयार की गई हो, तब क० ।

पीर मियां बकरी, मुरोद मियां चांगा । आगाई
बकरी ब्याव गई चांगा—(ए०) गुरु चेलोंकी कमाई
खाते हैं ।

पीर धवरची मिली खर—प्राण्यको क० । पुरोहि-
ताई करना, रसाई बनाना, पानी भरना वा पिलाना
और एक जगहसे दूसरी जगह संदेशा ले जाना वा
चीज़ ले जाना ।

एक दिन अरुपर बादशाहने बीरबलसे कहा, कि 'लाव
बीरबल ऐसा नर, पीर धवरची मिली खर' बीरबलने
एक प्राण्यको ले जाकर खड़ा कर दिया पीर कहा कि
इजूर । यह बातों काम कर सकता है । प्राण्यकने
शास्त्री पर ताना है ।

पीसनेवालियां पीस ले जायंगी, कुछ हत्या
थोड़े ही उलाड़ ले जायंगी—परोपकारीका कहना है
एक मीने दूसरीसे चट्टी मांगी, तीसरीने दीनेके विधि
भांजी मारी, तब दूसरीने एक मगन कही ।

पीस मुई, पका मुई, आये लौंठे खा गये—(ज०)
माझ कहना निरलू लड़कौंसे ।

पीहर घर सुवस बसे, जय लग है संसार—
खियोंका कहना है ।

पुत्रकी जड़ सदा हरी—अर्थात् कमी नहीं सुखती ।
पुत्रनि मिलै मनिच्छित्त भोग—मनके इच्छानुसृत
भोग बड़े पुण्यसे प्राप्त होता है ।

दृष्टि बरिष भागके सा
कैं केवि बनि बरि रति । अ

पानीमें मिल गया बतासा—बिलकुल घुल मिल जानेपर क० ।

‘मेरो मन पिथके तन नाहिं, भयो लौन श्यो दीधै नाहिं ।
कहै पखानो व्यो बुधि राधा, पानीमें मिल गयो बतासा ।’

(लीनता)

पानीसे पतला कर डाला—किसीको बहुत जलील वा शर्मिन्दा करनेपर क० ।

पानीसे पहिले पुल बांधते हो—दे० ‘पानीमें मद्दली’.....”

पाप उभड़े पर उभड़े—पाप छिपता नहीं ।

पापका घड़ा भरकर डूयता है—दे० ‘पापीकी नाव’

पाप छिपाये, ना छिपे, जस लहसुनकी वास-
स्पष्ट ।

पाप डुबावे धरम तिरावे, धरमी कमी नहीं दुख पावे—स्पष्ट ।

पाप पहाड़पर चढ़के पुकारे—दे० ‘पाप उभड़े’....”

पापियोंके मारनेको पाप :महाबली है—पापी अपने कर्मोंसे ही मारा जाता है ।

पापीका माल अकारथ जाय—छुरी कमाई घरे काममें ही खर्च होती है ।

पापीका माल पराछित जाय, दण्ड भरे या चोर ले जाय—स्पष्ट ।

पापीकी नाव भरके डूये—पापीकी पहिले उन्नति होती है और पीछे अधःपतन होता है ।

पापीके मनमें पाप ही वसे—स्पष्ट ।

पाय कुल्हाड़ो आपने, मारत मूरख हाथ—मूर्ख अपना उक्तान आप ही करता है ।

पाये सोनेकी छुरी पेट न मारत फोय—सोनेकी छुरी अपने पेटमें नहीं मारी जाती ।

पार उतरू तो बकरा डू—जब कोई विपत्तिके समय तो देवी देवता मनावे पर काम निक्ल जाने-पर भूल जाय, तब क० ।

इसपर एक कहानी इस तरह है :—एक सुसलमान नावमें बैठकर नदी पार जा रहा था । जब बीचमें पहुंचा तब बड़े जोरसे तूफान आया । उसने किसी धीरकी मन्नत मानी कि यदि सड़कल पार पहुंचे जाऊ तो बकरा बढाऊंगा । तूफान बन्द हुआ तो उसे

बकराका लोभ हुआ, बाद उसने कहा कि बकरा तो नहीं, झुझी अवश्य बढाऊंगा । जब वह रात्री सुभी पार पहुंच गया तो उसे सुरगीका भी लोभ हुआ और उसने अपने कपड़ोंमेंसे एक चौखड़ निकालकर मार डाला और यह कहकर अपनी मन्नतकी पूरा किया कि जागके बदलेमें जान ही तो दी ।

पारवाले कहें धारवाले अच्छे, धारवाले कहें पारवाले अच्छे—जब परस्परमें एक दूसरेको छुबी और अपनेको दुःखी समझें, तब क० ।

पारसनाथसे चक्की भली, जो आटा देवे पीस ।
फूहड़ नारसे मुरगी भली, जो अंडे देवे पीस-
स्पष्ट ।

पाल पाल तेरे जीका होगा काल—जब कोई ऐसा काम करे वा ऐसेसे प्रीत करे, जिसका परिणाम बुरा नज़र आता हो, तब क० ।

पावन्द फसे, आज्ञाद हंसे—प्राधीन दुखी और स्वाधीन छुकी रहते हैं ।

पावन्दी एककी भली—अधीनता एककी अच्छी ।
पासंगका चोर तीन जगह दंडाय, भुकता तोले,
रुकन दे, पासंग दिखाय—(व्य०) स्पष्ट ।

पास एक कौड़ी नहीं दौलत खां है नाम—
नामके अनुसार गुण नहीं होनेपर क० ।

पास एक कौड़ी नहीं, नाम करोड़ीमल—
ऊ० दे० ।

पासका कुत्ता दूरका भाई—दूरके भाईसे पासका कुत्ता अच्छा, क्यों कि वह काम आता है ।

पास कौड़ी न घज़ार लेखा—(व्य०) जिते किसीका देना लेना न हो, उसे क० ।

पासा पड़े अनाड़ी जीते—दांव पड़नेसे अनाड़ी भी जीतता है ।

पासा पड़े सो दांव, हाकिम करे सो न्याय—
भाग्यवश ध्यादमी पर जसा आन पड़ता है वैसा ही सुगतना पड़ता है ।

पिछली चंदिया खाई है—पीछे सोचते हैं ।

पिछली रोटी खाय, पिछली मत आय—(ज०)
द्वियोंका ऐसा विश्वास है, कि जो रोपकी रोटी खाता है वह मूल हो जाता है । पिछली रोटी अक्सर कुत्तोंको खिला दी जाती है ।

पिये रुधिर पय ना पिये, लगी पयोधर जोक—
(वृन्द) नीच मनुष्य दूसरेके गुणको न ग्रहणकर
श्रवणको ही ग्रहण करता है जैसे स्तनमें जो क
लगा दी जाय तो वह दूध न पीकर खून ही पी
लेती है

पिसनहारीके पूतको चबेना ही लाभ—स्पष्ट ।

पिसनहारीका बेटा और फेसरका तिलक—
(च०) जब कोई शरीर आदमी बड़े आदमीकी
रीस करे, तब क० ।

पी कारण पीरी भई लोग कहें पिंड रोग, छिप
छिप लंघन में किये पी मिलनेके जोग—विरहिनी
नायिकाका कहना है ।

पीच पी निमात खाई—मांड पीया और उसे हुनियां
भरकी नियामत समझा । जब कोई बहुत कष्ट उठा-
कर दूसरेके साथ सलूक करते करते जय जाता है,
तब क० ।

पीठ पीछे कुछ ही हो—मरे पीछे जो चाहे सो हो ।
पीतम तू मत जानियो, भयो दूरको वास ।
देह गेह कितहूँ रहै, प्राण तिहारे पास—
विरहिनी नायिकाका अपने पतिके प्रति कहना ।

कहा भयो जो बीहरे मोहन तो मन साथ,

गुडी लड़ी चल जाय कित तक उड़ायक हाय । विहारी

पीतम तेरी पीतको, भुक भुक करूँ सलाम ।
जयसे तो संग नेह करो, सुन्यों न सुखको नाम—
स्पष्ट ।

पीतम बसे पहाड़ पर, हम यमुनाके तीर । अबका
मिलना कठिन है, (कि) पांच पड़ी जंजीर—स्पष्ट ।
पीनेको पानी नहीं छिड़कनेको गुलाब—(च०)
बाहरी दिवावे पर क० ।

पीपल काटे, पाल धिनासे, भगवान भेस सतावे,
फाया गद्दीमें दया न व्यापे, जड़ा मूलसे जावे—
(मा०) स्पष्ट ।

पीपलकी चौखट—जो आदमी जल्दी पिंडन छोड़े,
उत्ते क० । पीपलकी चौखट जल्दी टूटती नहीं ।

पीपल पूजन में चली, निगम-बोधके घाट ।
पीपल पूजत पी मिले, एक पन्थ दो फाज—स्पष्ट ।

पी प्याला, मार भाला—प्याला पीले तब युद्ध कर,
जिसमें उत्तेजित हो जाय ।

पीयाकी कमाई मोहे नहीं लहना, मोपे याजूवन्द
नहीं और सब गहना—भूठी गिकायत पर क० ।

पीर आप ही दरमांदह, शफात किसकी करेंगे ?—
जिसकी सहायता चाहे वह खुद ही विपदमें फंसा
हो, तब क० ।

पीरकी सगाई मीरके यहां—(मु० ज०) अच्छोंका
सम्बन्ध अच्छों हीसे होता है ।

पीरको न शहीदको, पहिले नकटे देवको—
(मु० ज०) जब कोई नगरय आदमी ऐसी चीज
पहिले ही मांगे जो दूसरे अच्छे आदमियोंके लिये
तैयार की गई हो, तब क० ।

पीर मियां यकरी, सुरोद मियां वांगा । आगाई
यकरी चाय गई वांगा—(पू०) गुरु चेलोंकी कमाई
खाते हैं ।

पीर घवरची मिस्ती खर—ब्राह्मणको क० । पुरोहि-
ताई करना, रसोई बनाना, पानी भरना वा पिलाना
और एक जगहसे दूसरी जगह संदेया ले जाना वा
चीज़ ले जाना ।

एक दिन शकबर बादशाहने बीरबलसे कहा, कि 'लाव
बीरबल ऐसा नर, बीर बरची मिस्ती खर' बीरबलने
एक ब्राह्मणको ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा कि
हुजूर ! यह चारों काम कर सकता है । ब्राह्मणने
ब्राह्मणोंपर ताता है ।

पीसनेवालियां पीस ले जायंगी, कुछ हत्या
थोड़े ही उखाड़ लें जायंगी—परोपकारीका कहना है

एक कौने दूसरीसे बड़ी मांगी, तीसरीने देनेके लिये
मांजी मारी, तब दूसरीने एक मक्खन कही ।

पीस मुई, पका मुई, बाये लौटे वा गये—(ज०)
माका कहना निखट, लड़कौते ।

पीहर घर सुवस बसे, जय लग है संसार—
स्त्रियोंका कहना है ।

पुत्रकी जटु सदा हरी—अर्थात् कभी नहीं सुखती ।
पुत्रनि मिलै मनिच्छित भोग—मनके इच्छानुसृत
भोग बढ़े पुण्यसे प्राप्त होता है ।

दण्डि कानि भात्रके मा
करे कलि चलि बलि रति । ज

कई कहावतें थीं मत्र लोग ।

पुत्रनि मिलै मनिच्छित भोग ॥

पुत्रही आड़े आता है—पुण्यही, मनुष्यकी रक्षा करता है ।

एक राजा तीर्थमें गया और बर्ष बहुत सा दान पुण्य किया । एक घसियारिने अपने मगमें कहा कि राजाने तो बहुत दान किया, तुम्हें भी कुछ करना चाहिये । उसके पास कुछ धन तो मौजूद न था, परन्तु जाली और खुरपा बेचकर पुण्य कर दिया । जब राजा तीर्थसे लौटा तो उस दिन धूपकी अथना उष्यताके कारण उसके सभ आदमी घबराए आते थे परन्तु उस घसियारिके सिरपर एक टुकड़ा बदलीका चला आता था जिससे उसे धूप नहीं मालूम होती थी । यह खबर राजा तक पहुँची । राजाने घसियारिको बुलाकर सभ बात पूछी, परन्तु उसकी समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ । एक पण्डितने कहा कि महाराज इस घसियारिने तीर्थमें बहुत पुण्य किया है इस कारण बदली इसके सिरपर रहती है । राजाको आश्चर्य हुआ कि यह घसियारा और मैं राजा, मैंने जितना दान किया है उससे अधिक इस विचारिने क्या किया होगा । पण्डितने कहा इसमें खुरपा जाली पुण्य किया है जो इसका सर्वस्व धन था और आपने यद्यपि लाखों रुपय पुण्य किये हैं परन्तु आपकी पास अब भी करीबों का धन है । राजा मुनकर चुप हो रहा ।

पुत्र करते होय जो हानि, तौ भी न छोड़े पुत्रकी दानि—स्पष्ट ।

पुराना ढोकरा और कलईकी भड़क—बुढ़ी औरत और जवानोका सा सिंगार ।

पुराना वैद्य नये ज्योतिषी—दोनों अच्छे होते हैं और इनकी झुंझ होती है ।

पुराने गुम्बदपर कलई करना—जब कोई बुढ़ा अपनेको जवान बनानेकी कोशिश करे, या कोई पुरानी चीज़को नयी बनानेके लिये, वृथा परिश्रम करे, तब क० ।

गर्भ कंदोले सखुनकी मढ लिखा तो क्या हुआ ।

डाघकी सो है बही अगले घरसकी वीलियाँ ॥

पुराने चावलमें मज्जा होता है—बूढ़े और तनुयेंकार मनुष्योंसे बातलाप करनेसे बहुत शिक्ता मिलती है ।

पुरानोंको भिड़की नयोंको प्यार—पुराने और

विश्वासी नौकरोंपर दया रखनी चाहिये । जब कोई इस बातके विपरीत आचरण करता है, तब क० ।

पुरुषकी माया, वृक्षकी छाया—उसीके साथ जाती है ।

पुरुष पुरुषमें होवे अन्तर, कोई हीरा कोई कंकड़—दे० 'आदमी आदमी' ।

पुरुष घोही, जो एक दंता होई—बूढ़े मनुष्योंको व्यंग्यसे क० ।

इसपर एक कहानी है । एक बूढ़े सिपाहीने नौकरीसे पेंशन ले नई भाटोंको रिगवत देकर अपना विवाह किया । दुलहनको विदा कराके अपने घर जाते समय लड़कियाँ सुकाम किया तो उसको इच्छा अपनी स्त्रीसे बातचीत करने की हुई । स्त्री उसको बुढ़ा जान कहीं निरादर न करे इसलिये उसकी डोलीके चारों तरफ़ घोड़ा दौड़ाने लगे और उसके पास आकर कहा कि "पुरुष वीरें जो एक दंता होई" क्योंकि उसके मुँहमें एक ही दात रह गया था । स्त्री जो उससे भी अधिक बूढ़ी थी, डोलीका परदा उतार अपना घूँघट खोलकर बोली "नारि रूपवती होई, जाके मुखमें दंत न होई, " क्योंकि इसके मुँहमें एक दांत भी नहीं था था ।

पूछते पूछते दिह्नी चले जाते हैं—जब किसी आदमीसे कहीं जानेके वास्ते कहा जाय और वह कहे मुझे पता नहीं मालूम, तब क० ।

पूजले देवता छोड़ले भूत—(पू०) पूजनेसे देवता छोड़नेसे भूत हो जाता है ।

पूत आपनो सब कहं प्यारो—अपने लड़के सबको प्यार होते हैं ।

पूत कपूत हो तो हो, पर मां कुमां नहीं होती—स्पष्ट ।

पूत करे, भतारके आगे आये—लड़केका किया चापको भोगना पड़े, तब क० ।

पूतके पाँच पालनेमें पहिचाने जाते हैं—लड़कपन हीमें मालूम हो जाता है कि लड़का कैसा उठेगा । जब किसी कामके आसार पहिलेहीसे दीखने लगें, तब क० । होमहार लड़केको भी क० ।

दुख पानेवाले लड़के जो दुर्निर्गम होते हैं ।

बच्चन सब उनके पहिले ही पहिचाने जाते हैं । (नज़ीर)

पूत फकीरनीका, चाल अहदियोंकीसी—गरीब होकर बड़े आदमियोंकी सी चाल चले, तब क० ।

पकवरीके समय पहरो वन पमीरो को कहते थे जिन्हें बादशाहके दरवासे बसोका (गुजारा) मिलता था और मोर्र काम नहीं करना पड़ता था । जब राजपर कीर्त सुधीवत पडती थी तभी वह बुलाये जाते थे ।

पूत भये सपाने, दुःख भये विराने—लड़का सयाना होनेसे दुःख दूर हो जाता है ।

पूत मांगे गईं, भतार लेतो आईं—उन स्त्रियों-

पर कही जाती हैं जो लड़का होनेके लालच पकीरो क पास जाती हैं और वहांसे भ्रष्ट होकर आती हैं ।

पूत मीठ, भतार मीठ, किरिया कौहिकी खाऊं—जब दो काममेंसे एक भी न छोड़ा जाय, वा करते बने, तब क० ।

पूत सपूत तो कयों संचे, पूत कुपूत तो कयों संचे-

पूत सपूत होगा तो आप ही पंदा कर लेगा और कुपूत होगा तो सब उड़ा देगा ।

पूतों रात दुलभमनी—(पं० ज०) लड़का होना दुर्लभ है ।

पूरवका यथा उत्तरका नोर, पच्छिमका घोड़ा दक्षिणका चीर—यह अच्छे होते हैं ।

पूरा तोल, बाहे मंहगा बेच—(व्य०) वजन वा मापमें कम न देना चाहिए ।

पूरी पड़े तो सपूत कहावे—जिस लड़केसे घरका अभाव दूर हो, वही सपूत कहलाता है ।

पूरी लपसी घरमें खाय, भूंडी देवीसे आश लगाय—स्फुट ।

पूरीसे पूरी परै तो सभी न पूरी खायें—शरीर आदमी वा मोटा खानेवालोंका कहना है ।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हालमें खुश हैं—जो कभी चिन्ता नहीं करते और सब तरहके दुःखको ईश्वरकी इच्छा समझकर भूलते हैं वही पूरे मर्द हैं ।

गर शारकी सर्जी इर्द छिर जोइके बेटे ।

धरवार कुठया तो बड़ी धीइके बेटे ॥

मारा जिधर लगने लधर मुंइ मोइके बेटे ।

मुदड़ी जो सिनाई तो चसे मोइके बेटे ॥

और थाल उढ़या तो उगी शालमें, मुग है ।

पूरे हैं वही मर्द जो हर हालमें खुश हैं । (नजीर)

पूले तले गुजरान करते हैं—जब कोई बहुत शरीरी हालतमें हो, तब क० ।

पूले पूले आंच है—कष्ट सभीको होता है ।

पूस कोने घूस—पूसमें आदमी जाड़ेके वचावके लिये कोनेमें घुसता है ।

पूसे जाड़ न माधे जाड़, जवे धयरिया तबवे जाड़-जब हवा चलती है तभी जाड़ा पड़ता है ।

पेट कुई, मुंइ सुई—छोटा मुंह खाय बहुत, अर्थात् बहुत खानेवाले पर क० ।

पेटके आगे “ना” है—जब पेट भर जाता है तब “ना” कहते हैं ।

पेट खाये तो आंख लजाये—जिसका खाद्योगे उसका मुलाहिजा करना पड़ेगा । जो आदमी किसीको कुछ देता नहीं खाली अपना काम कराया चाहता है, उसे क० ।

पेट चले मन चरुतोंकी—यदुपरहेज आदमीको क० ।

(२) जब कोई विपद्ग्रस्त मनुष्य कोई ऐसा कार्य क्रिया चाहे जिससे उसकी विपत्ति दूर जाय, उसको क० । अश्लीलताके लिये पाठ भेद क्रिया गया है ।

पेट जो चाहे सो करावे—जब पेटके लिये कोई बुरा काम करे, तब क० ।

पेट पालना कुत्ता भी जानता है—स्वार्थी मनुष्यको क० । जो दूसरोंको नहीं खिलाता ।

पेट पिटारी, मुंइ सुपारी—दे० “पेट कुई”

पेट पीठ एक हो रहा है—बहुत भूखा है ।

पेट चांडाल है—इसीके पीछे सब तरहके कष्ट उठाने पड़ते हैं ।

पेट बिच पड़ी रोटियां, तां सय ही गलुं मोटियां (पं०) जो पहिले शरीर हो और पीछे धनवान हो जाय, उसको क० ।

पेट भर और पीठ लाद—पेट भरनेसे मेहनत होती है ।

पेटभर खाना, नौदभर सोना—सभीको चाहिये ।

पेट भरेकी बातें—जब कोई कामके लिये उचितसे अधिक मजूरी मांगे, तब क० ।

पेट भरेके गुन—जब कोई पेटभरा नौकर काम करनेके समय भुतमुनावे, तब क० ।

पेट भरेके छोटे चाले—(१) पेट भरनेपर यदुमायी सुकती है (२) बड़े आदमियोंका धन प्रायः पाप कर्ममें खर्च होता है ।

पेट भरे रिजाले और भूखे भले मानससे डरिये-

कहे कहावति थीं सब लोग ।

पुत्रनि मिले अनिच्छित भोग ॥

पुत्रही आड़े आता है—पुण्यही मनुष्यकी रक्षा करता है ।

एक राजा तीर्थमें गया और वहाँ बहुत सा दान पुण्य किया । एक घसियारिने अपने मनमें कहा कि राजाने तो बहुत दान किया, तुम्हें भी कुछ करना चाहिये । उसके पास कुछ धन तो मौजूद न था, परन्तु जानी और खुरपा बेचकर पुण्य कर दिया । जब राजा तीर्थसे लौटा, तो उस दिन धूपकी अत्यन्त उष्णताके कारण उसके सभ आदमी घबराए जाते थे परन्तु उस घसियारिके सिरपर एक टुकड़ा बदलीका चला आता था जिससे उसे धूप नहीं मालूम होती थी । यह खबर राजा तक पहुँची । राजाने घसियारिको बुलाकर सभ बात पूछी, परन्तु उसकी समझ में न आया कि ऐसा क्यों हुआ । एक पण्डितने कहा कि महाराज इस घसियारिने तीर्थमें बहुत पुण्य किया है इस कारण बदली इसके सिरपर रहती है । राजाको आश्चर्य हुआ कि यह घसियारा और मैं राजा, मैंने जितना दान किया है उससे अधिक इस विचारिने क्या किया होगा । पण्डितने कहा इसमें खुरपा जानी पुण्य किया है जो इसका सर्वस्व धन था और आपने यद्यपि लाखों रुपये पुण्य किये हैं परन्तु आपके पास अब भी करोड़ों का धन है । राजा सुनकर चुप हो रहा ।

पुत्र करते होय जो हानि, तौ भी न छोड़े पुत्रकी दानि—स्पष्ट ।

पुराना ढोकरा और कलईकी भड़क—बुझी औरत और ज्वानीका सा सिंगार ।

पुराना वैद्य नये ज्योतिषी—दोनों अच्छे होते हैं और इनकी झूठ होती है ।

पुराने गुग्गुदपर कलई करना—जब कोई बूढ़ा अपनेको जवान बनानेकी कोशिश करे, या कोई पुरानी चीज़को नयी बनानेके लिये बूया परिधम करे, तब क० ।

गर्भ कंदोलिं सलुनको मद लिया तो क्या हुआ ।

दाघकी तो है यही अगले वरसकी वीलियां ॥

पुराने चावलमें मंजा होता है—बूढ़े और तनुबेकार मनुष्योंसे वातालाप करनेसे बहुत शिक्ता मिलती है ।

पुरानोंको भिड़की नयोंको प्यार—पुराने और

विवासी नौकरोंपर दया रखनी चाहिये । जब कोई इस बातके विपरीत आचरण करता है, तब क० ।

पुरुषकी माया, वृक्षकी छाया—उसके साथ जाती है ।

पुरुष पुरुषमें होवे अन्तर, कोई हीरा कोई कंकड़—दे० 'आदमी आदमी' ।

पुरुष वोही, जो एक दंता होई—बूढ़े मनुष्योंको व्यंगसे क० ।

इसपर एक कहानी है । एक बूढ़े सिपाहीने भीकरीसे पेंशन ले माई भाटोंको रिगवत देकर अपना विवाह किया । दुलहनको विदा कराके अपने घर जाते समय जब पहिला मुकाम किया तो उसको इच्छा अपनी स्त्रीसे बात चीत करने को हुई । स्त्री उसको बूढ़ा जान कहीं निरादर न करे इसलिये उसकी डोलीके चारों तरफ़ घोड़ा दीहाने लगे और उसने पास आकर कहा कि 'पुरुष मोई जो एक दंता होई' की कि उसके मुँहमें एक ही दांत रह गया था । स्त्री जो उससे भी अधिक बूढ़ी थी, डोलीका परदा उठा अपना घूँघट खोलकर बोली 'मारि स्ववतो मोई, जाके मुखमें दंत न होई' । क्योंकि इसके मुँहमें एक दांत भी नहीं बचा था ।

पूछते पूछते दिह्नी चले जाते हैं—जब किसी आदमीसे कहीं जानेके वास्ते कहा जाय और वह कहे मुझे पता नहीं मालूम, तब क० ।

पूजले देवता छोड़ले भूत—(पू०) पूजनेसे देवता छोड़नेसे भूत हो जाता है ।

पूत आपनो सब कहं प्यारो—अपने लड़के सबको प्यार होते हैं ।

पूत कपूत हो तो हो, पर मां कुमां नहीं होती—स्पष्ट ।

पूत करे, भतारके आगे आवे—लड़केका किया बापको भोगना पड़े, तब क० ।

पूतके पाँव पालनेमें पहिचाने जाते हैं—लड़कपन हीमें मालूम हो जाता है कि लड़का बिसा उठेगा । जब किसी कामके आसार पहिलेहीसे देखने लगे, तब क० । होनहार लड़केको भी क० ।

दुख पानेवाले लड़के जो दुर्भागिमें भाते हैं ।

अच्छन सब उनके पहने ही पहिचाने जाते हैं । (नजीर)

पूत फकीरनीका, चाल अहदियोंकीसी—गरीब होकर बड़े आदमियोंकी सी चाल चले, तब क० ।

पोथा सो थोथा, पाठै तो साथै—वन्धस्थ विद्या ही विद्या है, पोथीमें लिखी कुछ नहीं ।

मुझकसा तु या विद्या परइसो गलं धनम्,
कार्यं काले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्वनम् ।

पोथी तो थोथी भई, पण्डित भया न कोय ।
ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय—स्पष्ट ।
प्याज कैसे छिलके उखाड़ना—किसीके गुप्त भेदको प्रकाश करना ।

प्यासा कुपके पास जाता है कूआं प्यासेके पास नहीं आता—जिसे गरज होती है वही जाता है ।
जिससे थभाव दूर हो उसके पास जानेके लिये कः

(१) चाइ अु बह बितमें चतुर, चभी सु ताहि निवास ।
आवत कहं कान न सुनो, कूप पियासे पास ॥

(२) हंस कर कहा कि आता है प्यासा कुएके पास,
या जाता है कूआं किसी विग्रहा दर्शनके पास ॥ (जीक)

प्यासे दुपहर जेठके, थके सवै जल सोधि ।
मरुधर पाय मतीरहं, मारू फहत पयोधि—
(विहारी) मारवाड़के मरुदेशमें जब थका हुआ पथिक जेठकी दुपहरीमें जल खोजकर हार जाता है,
| तब बड़े तरबूजको पाकर कहता कि यह लीर समुद्र है । मतीरसे भूय प्यास दोनों बुझती हैं ।

प्रकृति मिले मन मिलत है, अन मिलते न मिलाय ।
दूध दही ते जमत है, कांजी ते फट जाय—(वृन्द) स्पष्ट ।

प्राण जाहिं बर्य बचन न जाहीं—(तुलसी) जो कौलका सचा हो, उसे कः । व्यंगसे हठीको भी कः ।
प्रातःकाल करो असनाना, रोग दीप तुमको नहीं आना—स्पष्ट ।

प्रीत करे ते वावरे, फरके तोड़े छैल । गलमें रस्सा डालकर, और नियाहे वैल—स्पष्ट ।

प्रीत करी थी नीचसे, पल्ले लागी कौच । सीस काटि आगे धरा, अन्त नीचको नीच—नीच थपनी नीचता कभी नहीं छोड़ता ।

प्रीतका निवाहना खांदेकी धार है—प्रीत करना तो सहज है पर निवाहना कठिन है ।

(१) यह प्रेमको पंग कराल महा,
तलवारकी धारि पै धावनीं है । (चोधा)

(२) जिगर अख्म जारी अहाँ नित खोजका कीच,
नागर आशिक लुटि रहें, इशुक चमनके बीच ।
चलै तेग मागर हरफ इशुक तेगकी धार,
भोर कटै नहिं वार सीं कूटै कटै रिभवार ।

(नागरीदास)

प्रीत तो ऐसी कीजिये, जैसी रुई कपास । जीते जी तो संग रहे, मुये पर होवे साथ—स्पष्ट ।

प्रीत न जाने जात कुजात, नाँदन जाने टूटी खाट
भूख न जाने चासी भात, प्यास न जाने धोवी घाट—
स्पष्ट ।

चुधातुराणां न वनं न वृद्धिः, तिषातुराणां न च पापशुद्धिः
कामातुराणां न भयं न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमिशय्या

प्रीत न टूटे अन मिले, उत्तम मनकी लाग ।
सौ जुग पानी में रहे, चक मक तजे न आग—
प्रीति कभी छूटती नहीं ।

यह दर्द सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये ।

चलफतका नशा जब कोई सर जाये तो जाये ॥ (जीक)

प्रेम कहानी कहत हं, सुनो सखीरी आय ।
पी हूँदन को हम गई, आईं आप हिराय—स्पष्ट
प्रेम पियाही वह पिये, जो सीस दक्षिना देह—
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेमका लेह—स्पष्ट

इशुक वित सीं नहिं टहें, भावें बें चसवास ।

चगन चोट सीं गिर छड़े, धड़कीले स्वाभास ॥

सीस काटकर भू धरे, ऊपर रखवै पाँव ।

इशुक चमनके बीचमें ऐसा भोय तो थाव ॥

ए तबीय छडिजाइ घर, अवसि कुवै का हाव ।

चढी इशुककी कौफ यह, उत्तरै गिरके साप ॥

कृष्णमें तुम्हें करीनकी, सुनिवो मयै जहान ।

चश्मोंकी लागी गिरर, कूटै कूटै ग्यान ॥

जिन पावों सो खलकमें, चहाँ सुधरि मति पाँव ।

गिरके पावोंसे चले, इशुक चिमनमें थाव ॥ (नागरीदास)

प्रेममें नेम कहाँ—स्पष्ट ।

भूँठे भूँठे सेवरीके चनूटे कर साथे राम,
नेम सीं चपाये पै न प्रेम सीं चपाये हैं । (रतिक विहारी)

नीच मनुष्य धनवान होनेपर और धनी कंगाल होनेपर दुःखदाई होता है ।

पेट भी खाली गोद भी खाली—(ज०) (१) न खाने-है न लड़का वाला है । (२) न वच्चा पेटमें है न गोदमें है ।

पेटमें आंत, न मुंहमें दांत—बड़े मनुष्यको क० ।

पेटमें घुसे तो भेद मिले—किसीसे मिलकर मनकी बात जाननेपर क० ।

पेटमें चूहे कलावाज़ियां खा रहे हैं—ज्यादा भुखमें क० ।

पेट मेट, कार समेट—जब थोड़े घेतनपर किसीसे बहुत काम कराया जाय, तब क० ।

पेटमें पड़ा चारा, तो कूदन लगा बिचारा—स्पष्ट ।

जब आदमीके पेटमें आती हैं रोटियां ।

फूली नहीं बटनमें समाती हैं रोटियां ॥ (नजीर)

रोटीसे जिसका नाक तलक पेट है मरा ।

करता फिरे है क्या वर छड़ख जूद जा बजा ॥

दीवार फांदकर कोई कोडा छड़ख गया ।

ठंडा हंडी शराब सनम साकी इस सिबा ॥

सौ सी तरफकी भूम मचाती हैं रोटियां । (नजीर)

पेटमें पड़ी बूंद, नाम रखवा महमूद—(मु० ज०)

निश्चय कर लिया लड़का होगा । काम होनेके पहिले ही गुमार बांधनेवालेको क० ।

पेटमें लात मारना—किसीकी रोज़ीमें खलल डालना ।

पेट सव रखते हैं—(व्य०) खानेके लिये सब हीको चाहिए । जब कोई किसीकी रोज़ीमें खलल डालता है, तब क० ।

पेटहा चाकर घसहा घोड़, छाया बहुत काम करे थोड़—(१०) बहुत खानेवाला नौकर और घोड़ा काम कम करता है ।

पेटहिले कोई सीख न आघत—कोई पेटसे सीखके नहीं निकलता । काम सीखनेके लिये उत्साह देनेपर क० ।

पेट है या कुठार—बहुत खानेवालेको क० ।

पेट है या वेईमानकी क्रूर—ऊ० दे० ।

पेट मरे पेटकी, नामी मरे नामकी—स्पष्ट ।

पेट काटके पल्लव सींचा—स्पष्ट । जब पेट ही काट दिया तो पत्तोंको सींचना व्यथा है ।

पेशा हव्नीबुलाह, जो न करे सो लानतुलाह—(मु०) काम करनेवालोंपर ईश्वरका प्यार और न करनेवालोंपर ईश्वरका धाप है ।

पैदल और सवारका क्या साथ—दोनोंका साथ नहीं निभता ।

पैदा हुवा-नापैदके वास्ते—जो पैदा हुआ वह अवश्य नाश होगा ।

पैरका जूता पैरमें—जहांका वहां ।

पैरमें जूता न सिरमें टोपी—फटी हालतपर क० ।

पैसा करे काम बीबी करे सलाम—पैसेसे सब काम होता है ।

पैसा गांठका, जोरू साथकी—यही थपने होते हैं ।

पैसा न कौड़ी, बांकीपूरकी सैर—(च०) लिफाफेको क० ।

पैसा ना कौड़ी, बाज़ारमें दौड़ी—(ज०) ऊ० दे० ।

पैसा न हो तो आदमी चरखेकी माल है—मैसे बिना आदमीकी कूदर नहीं होती ।

पैसा ही बस बनाता है इंसानकी बातको ।

पैसा ही जं ब देता है ब्याही बरातकी ॥

भाई सगा भी आनकर पूछे न बातको ।

बिन पैसे यारो दूल्हा बने आधी रातको ॥

पैसा ही रंगरूप है—पैसा ही माल है ।

पैसा नहीं तो आदमी चरखेकी माल है ॥

पैसा न हो तो बागो छुए फिर कहांसे हों ।

खानेको पूरी और मुए फिर कहांसे हों ॥

पेशो तलके नक्के दूधे फिर कहांसे हों ।

हलुवा कबींडी, मालपूर फिर कहांसे हों ॥

पैसा ही रंगरूप है पैसा ही माल है ।

पैसा नहीं तो आदमी चरखेकी माल है ॥ (नजीर)

पैसा पासका, घोड़ी रानकी, काम आती हैं—दे० “पैसा गांठका”

पैसा नहीं पास, तो कैसे सूँधे वास—स्पष्ट ।

पैसा नहीं पास, चले नववायके साथ—(च०) हेरियतले बाहर काम करनेपर क० ।

पैसे दिन माता कहें, जन्मा पूत कपूत, भाई भी पैसे दिना, मारे लंबा सिर जूत—(मा०) स्पष्ट ।

पोथा सो धोथा, पाठै तो साथै—कंठस्थ विद्या ही
विद्या है, पोथीमें लिखी कुछ नहीं ।

पुस्तकस्था तु या विद्या पररक्षो गतं धनम्,
कार्यं कालि समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्वनम् ।

पोथी तो धोधी मई, पण्डित भया न कोय ।
ढाई अक्षर प्रेमका, पढ़े सो पण्डित होय—स्पष्ट ।
प्याज कैसे छिलके उखाड़ना—किसीके गुप्त भेदको
प्रकाश करना ।

प्यासा कुएंके पास जाता है कुआं प्यासेके
पास नहीं आता—जिसे गमज होती है वही जाता है ।
जिससे थभाव दूर हो उसके पास जानेके लिये क०

(१) चाए जु वह चितमें चतुर, चली सु ताहि निवास ।
भावत कहूँ कान न सुन्यो, कृप पियासि पास ॥

(२) बंस कर कष्टा कि जाता है प्यासा कुएंके पास,
या जाता है कुआं किसी तिग्ना दर्शनके पास ॥ (श्रीकृ०)

प्यासे दुपहर जेठके, थके सवै जल सोधि ।
मरुधर पाय मतीरहं, मारु कहत पयोधि—
(विहारी) मारवाड़के मरु देशमें जब थका हुआ
पयिक जेठकी दुपहरीमें जल खोजकर हार जाता है,
तब बड़े तरवृजको पाकर कहता कि यह क्षीर समुद्र
है । मतीरसे भूख प्यास दोनों बुझती हैं ।

प्रकृति मिले मन मिलत है, अन मिलते न
मिलाय । दूध दही ते जमत है, कांजी ते फट
जाय—(वृन्द) स्पष्ट ।

प्राण जाहिं घर बचन न जाहीं—(तुलसी) जो
श्रौलका सचा हो, उसे क० । ध्वंगसे हठीको भी क० ।
प्रातःकाल करो अस्तनाना, रोग दोष तुमको
नहीं आना—स्पष्ट ।

प्रीत करे ते धावरे, करके तोड़े छैल । गलमें
रस्ता डालकर, और निवाहे पैल—स्पष्ट ।

प्रीत करी थी नीचसे, पल्ले लागी कींच । सीस
काटि आगे धरा, अन्त नीचको नीच—नीच
अपनी नीचता कभी नहीं छोड़ता ।

प्रीतका निवाहना खांडेकी धार है—प्रीत करना तो
सहज है पर निवाहना कठिन है ।

(१) यह प्रेमको संय कराल मरु,
तनवारकी धारि पै धावनी है । (पोथा)

(२) जिरग जख्म वारी जहाँ नित लीहका कीच,
नागर भागिक लुटि रहिं, इगक चननके वीच ।
चलै तेग भागर हरक इगक तीगकी धार,
और कटै नहिं वार सी कूटै कटै रिभवार ।

(नामरोदास)

प्रीत तो ऐसी कीजिये, जैसी खई कपास । जीते
जी तो संग रहे, मुये पर होवे साथ—स्पष्ट ।

प्रीत न जाने जात कुजात, नींद न जाने सूटी खाट
भूख न जाने घासी भात, प्यास न जाने धोवी घाट—
स्पष्ट ।

चुधातुराणां न वलं न बुद्धिः, तिष्ठातुराणां न च पापमुद्दिः
कामातुराणां न भयं न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमिशया

प्रीत न टूटे अन मिले, उत्तम मनकी लाग ।
सौ जुग पानी में रहे, चक मक तजे न आग—
प्रीति कभी छूटती नहीं ।

यह दर्दे सर ऐसा है कि सर जाये तो जाये ।
उलफतका नया जब कोई सर जाये तो जाये ॥ (श्रीकृ०)

प्रेम कहानी कहत हूं, सुनो सखीरी आय ।
पी दूंदन को हम गई, आई आप हिराय—स्पष्ट
प्रेम पियाला वह पिये, जो सीस दक्षिणा देह—
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेमका लेह—स्पष्ट

इगक वित सौ नहिं टले, भावै ये चसवास ।

चगम चोट सौं सिर चड़े, धड़ बोले श्यावास ॥

सीस काटकर भू धरै, ऊपर रखी पांव ।

इगक चमनके वीचमें ऐसा होय तो भाव ॥

ए तवीन छति जाहु घर, अबसि कुवै क्या धाण ।

चट्टी इगककी कौफु यह, उतरै सिरके साय ॥

कहैं तुम्हें करौमकी, सुनिवो सपै जघान ।

चगमीकी लागी गिरक, कूटै कूटै ब्यान ॥

जिन पावो सो खलकमें, चर्धै सुधरि मति पांव ।

सिरके पावोसे चली, इगक चिननमें भाव ॥ (नामरोदास)

प्रेममें नेम कहाँ—स्पष्ट ।

भूँडे भूँडे सेवरीके अनूठे कर खाये राम,
नेम सौं अचाये पै न प्रेम सौं अचाये है । (रमिक विहारी)

फ

फ़कीर अपनी कमली में ही खुश है—फ़कीर संतोपी होते हैं।

फ़कीर, फ़ज़दार लड़का तीनोंही नहीं समझते—जबतक उनके कड़े मूजिव काम न हो।

फ़कीरकी ज़बान किसने कीली है—फ़कीरकी ज़बान कोई नहीं रोक सकता।

फ़कीरकी भोलीमें सब कुछ—फ़कीर जो चाहे दे सकता है।

फ़कीरकी सूरत ही सवाल है—फ़कीरको देखनेसे ही जान पड़ता है कि कुछ मांगेगा।

फ़कीर को फम्बल ही दुशाला—स्पष्ट।

फ़कीर को जहां रात हो गई वहीं सराय है—स्पष्ट।

फ़कीरको तीन चीज़ें चाहियें, फ़ाक़ह, फ़नात, और रियाज़—स्पष्ट। फ़ारसीमें फ़कीर तीन हरफोंसे लिखा जाता है फ़े से फ़ाक़ह (मत), फ़ाफ़से फ़नात (संतोष) और रे से रियाज़ (मेहनत)।

फ़कीर रा घ मुजादला चे कार—(फा०) फ़कीरको लड़नेसे क्या काम ?

फ़कीरी शेरका बुरका है—फ़कीर सामर्थवान् होता है।

फ़ज़ल करे ताँ छुट्टियाँ, बदल करे ताँ लुट्टियाँ—(प०) दया करनेसे छूट सकता हूँ, पर ईसाफ़ करनेसे लुट जाऊंगा। जब कोई क्रूरवार क्षमाका प्रार्थी हो, तब कहता है।

फ़टकचन्द गिरधारी, जिनके पास न लोटा धारी तनहां बाइड़े आदमोको फ०। जिसके साथ किसी तरहका लटाका नहीं रहता।

फ़टा फपड़ा, वृद्धा चाप, बाली जोरू, तीन चीज़ की शर्म नहीं—आज कलके शौज़ीन लड़के जो उरक चीज़ोंकी शरम करते हैं, उन्हें फ०।

फ़टा मन और फ़टा दूध फिर नहीं मिलता—जब किसीसे मन पट जाय, तब फ०।

फ़टेसे कुछते नहीं काटिन करे चपाव।

मन भोली थप दूध रस, इनका यजी सुभाव।

फ़टी जूती पग पुरानी, दाइ घरकी यही निशानी—पंजाबी थड़ाई घर खत्रियोंका कहना है, जो अक्सर बहुत गरीब होते हैं।

फ़टे को न सिये, और रुठेको न मनावे तो काम कैसे चले—(ज०) स्पष्ट।

फ़टे न फूटे, जिउ जान न छूटे—जिस चीज़से जी उकता जाय, उसपर फ०।

फ़टे में पांव, दफ़तरमें नांव—भगड़े में पड़ने ही से थदालतमें नाम लिखा जाता है (गवाहीके लिये)।

फ़टेसे कपड़े मत देखो घर दिष्टी है—इन्हें सीधा सादा मत समको यह बड़े पट्टेचे हुण्ड हैं। जब कोई होशियार आदमी सीधेसादे भेषमें रहे, तब फ०।

दङ्ग तकरीरके निरासे हैं। न सममें आप भोले भाले हैं।

फ़टे अकास कहाँ लग सीचे—दे० 'आसमान फ़टे'

फ़तेह और शिफ़स्त खुदाके हाथ हैं—हारजीत ईश्वरके अधीन है।

फ़तेह तो खुदाके हाथ है, मार मार तो किये जाओ—होगा वही जो ईश्वर करेगा परंतु हिम्मत न हारना चाहिये।

फ़तेह दाद इलाही हैं—(मु०) जीत ईश्वरकी देन है।

फ़रकावाद फ़रककी छाही, आप खाय जोरूको नाही—फ़रकावादियोंपर ताना है।

फ़र्ज़से अदा होगये—अपना कर्तव्य कर चुके।

लड़के लड़कियोंका ब्याह करने बाद अक्सर मा चाप कहा करते हैं।

फ़रज़ी शाह न हूँ सकै गति टेढ़ी तासीर, रहिमन सूधी चालसों प्यादा होत वजीर—आदमी सीधी चालसे ऊँचेसे ऊँचे स्तरेको पहुँच सकता है, टेढ़ी चालसे नहीं।

फर ना फरी बग़ीचाके नाम—(प०) फ़ल ना फ़लो नाम बग़ीचा। भूठी शेखी करनेपर फ०।

फरिया ना सारी, बड़ी सोभा हमारी—(च०) ज०

भूठी शेखी करनेवाली को फ०।

फरीद शकरगंज न रहे दुःख न रहे रंज—

धायीवांद है। फ़कीर शकरगंज कोई औलिया हो गये हैं।

फल खाना आसान नहीं—फल बहुत मुश्किलसे खानेको मिलता है, पहिले गाढ़ लगाया जाता है, जब वह बहुत है तब उसमें फल लगता है। बिना मेहनत कोई काम नहीं होता।

फलें परिचियते—(सं०) फलहीसे गाढ़ पहिचाना जाता है। कामहीसे आदमीकी पूरख होती है।

“फ़लानीने खसम किया,” घुरा किया,” “करके छोड़ दिया,” और भी घुरा किया”—(१) जो कर लिया सो कर लिया। जिस बातके लिये कोई काम करे, जबतक वह बात पूरी न हो उस कामको न छोड़े।

(२) जब कोई एक भूल उधारनेके लिये दूसरी भूल करे, तब भी क०।

फ़ाकहकशीकी नौबत पहुँची—खानेके लाले पड़ गये। फ़ाकोंसे मरिये, पर न कोई काम कीजिये, दुनियां नहीं अच्छी है ज़माना नहीं अच्छा—(हरिचन्द्र) आलसियोंका कहना है।

फाटक टूटा, गढ़ लूटा—फाटक टूटनेसे किला फतह हो सकता है। मोरवा मारा, और काम फतह हुआ।

फातिहा ने दरुद, जागये मरदूद—(सं० ज०) एबार खस्ता वा दुराचारीको क०।

फारखती लिखवाली—देनेसे छुटकारा पानेके लिये कागज़ लिखवानेको फारखती लिखवाना कहते हैं। जो दिया सो भर पामा श्रव फिर् न माँगिगे, ऐसाही भाव प्रगट करनेके लिये क०। सम्बन्ध त्याग करने के लिये भी क०।

इस्पर, एक कहानी है—किसी बन्दियेने अपने मर्दानको कर्जा चुकानेके लिये अपने घर पर बुलावा। जब वह वही खाता लेकर अपने पिताभू चुकाने आया तब बन्दियेने अपने दरवाजेपर बाजा बजानेका हुक्म दिया। जब खूब जोरसे बाजा बजने लगा तब बन्दियेने मर्दानको पीटना शुरू किया और शर्मातक पीटा कि उससे फारखती लिखवाओ। बन्दियेका चिन्तना बाजीकी आवाजके कारण कोई न सुन सका।

फारसी रा टंग तोड़म, ताकी ऊर्लगाड़ीशब्द—फारसीकी टंग तोड़ वृत्त जिससे कि वह लंगड़ी हो जाय। शब्द सिद्धित फारसीवांको क०।

हक़की कमाई सबको पचती है।

फ़ाल्दह खाते दांत टूटें तो बलासे—(सं०) जिस विपदका कोई उपाय नहीं वह भोगनी हो पड़ती है, उसके लिये सोच करना वृथा है।

फावड़ा न कुदार, बड़ा खेत हमार—कड़ी शैली करनेवालेको क०।

फ़िक और ज़िक दोनों चाहिये—(सं०) फ़कीरोंको ध्यान और आराधना दोनों ही करनी चाहिये।

फ़िक घुरा फ़ाफ़ा भला फ़िक फ़कीरां काय—(पं०) चिन्ता बहुत घुरी होती है जो फ़कीरोंको भी खालंती है, उससे फ़ाफ़ा अच्छा।

फिट वाका जीना जो तके पराई आस—स्पष्ट।

फिर बंदा मोचीका मोची—जैसे ये वैसे ही रहे। जिसकी कुद भी उन्नती नहीं होती, उसे क०।

फिर मुडली बेल तले—(पं०) फिर जोत्तिममें पड़े। बेल तले सिर मुड़ानेसे सिर फूटनेका डर रहता है।

फिसल पड़ेकी हरगंगा—(१) अपनी असावधानतासे तो फिसल पड़े और कहा “हरगंगा,” मानो जानकर गिरे हैं। जब किसीकी भूलसे काम बिगड़ा हो और जाहिर करे कि मैंने जानके फिगाड़ा है, तब क०। (२) बदनमें कीचड़ लग गई तो गंगामें धो आये। जो कभी सुवार्थ गंगा नहीं नहाते, उनको क०।

फोकी पै नोकी लगै, कहिये समय विचार, सबको मन हारिंत करे, ज्यों विद्याहमें गारि—(धृन्द) बाजी वक़्त घुरी बात भी अच्छी लगती है जैसे ब्याहमें गाली। (सीटनी)

फुई फुई तालाय भरता है—घोड़ा घोड़ा करके बहुत हो जाता है।

हर रोजके इकराफ़से सिक् एक पैसा,

बतला तो एक सखमें कितना चीना।

व्या तुमको खबर नहीं है ये घारो बजीश,

चीता है कतर कतरे आखिर दरया। (सं० ज०)

फुरसत रा गनीमत शुमार—(पा०) समयको एक लुट समझो।

फूँक फूँककर पेर रखना—होशियारीमें चलनेके लिये क०।

फूँक मसाल उठा चौपाला—मसाल बाल और पालकी उठा। जलदी काम करनेके लिये क०।

फूँकी दवा और मुँडा फ़कीर—इनको पहिचानना मुश्किल है।

फूँकेके ना फाँकेके, टाँग उठाके तापेके—(५० ज०) स्वार्थी वा श्यालसीको क०।

फूटी आँखका तारा—मातृहीन बालकको क०।

फूटी डेगची फलईकी भड़क—धोकेकी चीज़ वा बनावटी चीज़पर क०।

फूटी सही जाती है; आँजी नहीं सही जाती—आँख जाती रहे वह मंजूर, मगर अंजनकी जलन सहना मंजूर नहीं; जब कोई किलीकी बात न सहे चाहे उससे सम्बन्ध विच्छेद भले ही हो जाय, तत्र क०।

फूफ़ी मिस देना, भतीजे मिस लेना—विरादरीके बर्ताव पर क०। एक रिश्तेसे देना और दूसरे रिश्तेसे लेना।

फूल आये हैं तो फल भी लगेंगे—(ज०) शत्रुपक्ष हुआ है तो लड़के वाले भी होंगे।

फूलकी बैरिन धूप, धीका बैरी फूप—फल धूपमें सूख जाता है और धी कुप्पेमें खराब हो जाता है।

फूलकी डाल नीचेको झुके—गुणी सदा नम्र रहता है।

फूल झड़े तो फल लगे—(१) फूल गिरता है तब फल लगता है। (२) (ज०) स्त्री शत्रुपक्षमें होगी तो लड़का बाला होगा।

फूल टहनीदीमें झच्छा लगता है—अपने स्थानपर ही चीज़की शोभा होती है।

फूल फूल करके चंगेर भरती है—दे०। "फुई फई तालाय भरता है।"

फूल न पाती "देवी हाहा"—कोरी पाते वा भूठी लहोचप्पो करने पर क०।

फूल नहीं पंकड़ी ही सही—बहुत न हो तो थोड़ा ही सही।

गर बच्चाका बीसा दिते नहीं सबका दीजिये! दे मसल वह कि फूल नहीं पंकड़ी सही! (जीके)

फूल सूँघकर रहते हैं—बहुत थोड़ा खानेवालेको क०।

फूली फूली गौनेको, ठसक निकल गई रौनेको—(ज०) स्पष्ट।

फूले फूले फिरते हैं, आज हमारे व्याव। तुलसी गाय बजायके, देत काठमें पाँव—व्याह करने पर क०। गृहस्थीमें फंसना जानबूझकर गलेमें फाँसी लगाना है।

इस शी गल्लिं नौशहक इरमिज न जानव।

यह खानतीका शीक है जोद गलि पदो।

फूले फले न चेत, यद्यपि सुधा बरपहि जलद। मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहि विरचिसम—(तुलसी) स्पष्ट। किसी मूर्खको बहुत समझाने पर भी जब वह नहीं समझता, तत्र क०।

अत्र गर आधे जिनगी बारद।

इरिजु पञ्च या खे वेद वर न खरी ॥ (शिवधारी)

फूहड़ करे सिंगार माँग ईंटोंसे फोड़े—फूहड़ संदुरकी जगह ईंट घिसकर माँग भरती है। ईंट घिसनेसे खून निकल आता है।

फूहड़का माल हँस हँस जाइये—मूर्खका माल ख्यामदसे खाया जाता है और जल्दी शेष हो जाता है।

फूहड़के घर उगी चमेरो, गोबर माड उसीपर गेरी—अच्छी चीज़का मूर्खता बर्ष दुरुपयोग किया जाय, तत्र क०।

फूहड़के घर खिड़की लगी, सब कुत्तोंको चिंतापड़ी। बाँडा कुत्ता बाँचै सौन, लगी तो है पर देगा कौन—फूहड़के घरमें खिड़की लगी देखकर सब कुत्तोंको चिन्ता हुई, कि अब घरमें कैसे जा सकेंगे। इसपर एक लंदूरा कुत्ता बोला, कि खिड़की लगी तो है पर उसे बंद कौन करेगा, "अर्थात् हम लोग अनायास घरमें जा सकेंगे।" मूर्ख विपदसे धक्केका सामान रहते भी उसे काममें नहीं लाते।

फूहड़ चाले, नौ घर हाले—फूहड़ बाहर जाती है तो नौ घर हिल जाते हैं, अर्थात् जहाँ जायगी वहाँ ऐसी बात कहेगी वा ऐसा काम करेगी जिससे फ़साद होगा।

फूहड़ जोरुआ, सागमें शोरुआ—(मु० ज०) फूहड़ के सब काम बेरुग होते हैं।

फूहड़ देवीको फुरग्योका अच्छलुन्—जैसे देवता
बैसी पूजा ।

फूहड़ सीने बैठे तब सूर्य तोड़े—(ज०) अनाड़ी
जो काम करता है वही बिगड़ जाता है ।

फेरोंकी गुनहगार है—वाल विधवाको क० । जिसने

व

षट्क जाये षट्में नहीं रहते—(ज०) सदा दिन
किसीके बराबर नहीं रहते

षट्गी ऐसी और इनाम ऐसा—जब कोई किसीका
बड़ा काम करे और बदलेमें सामान्य मज़दूरी मिले,
तब क० ।

इसपर एक कहानी यी है :—किसी समय एक ब्राह्मण
किसी बादशाहके दरबारमें गया । उसने बादशाहकी बड़े
सभामें पूर्वक झुककर प्रणाम किया । बादशाहके यहाँ
तीन बार झुककर सनान करनेका नियम था । ब्राह्मणके
एक बार सलाम करनेसे बादशाहने इसे अपमान समझा
और ब्राह्मणकी तीन तमाचेकी सजा दी । उस समय
ब्राह्मणने छत्र मसज कही ।

षट्गी बेचारीगी—नौकरी करना साचारीका काम है ।

षट्क एक निलचरी लाया, फरी आपनी अर्धगी ।

लालदास रघुनाथ दयासे, उत्पन्न हुए फिरंगी—
छंगेरल्लोको क० । रामचन्द्रजीने हनुमानजीको
उनकी सेवाके लिये यह वरदान दिया था कि मुन्हारे
षट्गज कलियुगमें भारतवर्षपर राज्य करेंगे ।

षट्कका जख्म (वा घाव)—जो जल्दी नहीं
सूखता । जो मनुष्य अपने घाव या फोड़ेको खुजाया
वा नोचा करते हैं और जल्दी आराम नहीं होने
देते, उनपर क० ।

षट्कका हाल मुछंदर जाने—मुछंदर धन्दरके सर-
दारको कहते हैं । धन्दरोंका हाल वही जानना है ।
किसीका हाल उसका साथी ही अच्छी तरह
जानता है ।

षट्ककी आशानाई, घरमें आग लगाई—सूखते
मित्रता करनेमें हाति है ।

षट्ककी तुरत फुरत सुरत मशहूर है—स्पष्ट ।

पतिका मुँहवक भी नहीं देखा वह भी हिन्दू रीतिके
अनुसार दूसरा ब्याह नहीं कर सकती ।

फ़ौजकी—धगाड़ी, आँधीकी पिछाड़ी—इनको
सँमालना मुश्किल है ।

फ़ौज वे.घकील, साहब वे फ़ौल—बिना वृत्तकी
फ़ौज और बिना हाथीका सरदार कुछ नहीं ।

षट्ककी दोस्ती जीका जिआन—मूखसे प्रीति
करना जानको श्राफ़त लगाना है ।

कहो मखत वत गोपित वरम, लखि लखि मंजारीको वरम ।
जोग पखानो निदय जानि, बानर नेह नहीं सुखदानि ।
(चिख गोपना)

षट्ककी पगड़ी मुछंदरके सिर—एकसे सेकर दूसरेके
रेको दे, तब क० । एकका दोष दूसरेके सिर मढ़े,
तब भी क० ।

षट्कके गलेमें मोतियोंकी माला—किसीको ऐसी
चीज़ देना जिसके लायक वह न हो, तब क० ।

षट्कके धन केवल गाल—धन्दर जो पाता है सो-
गलेमें भर रखता है, पीछेसे निकाल निकालके खाया
करता है ।

षट्कके हाथ आइना—बूथा है, क्योंकि वह धद
शकल होता है और उसे फोड़ डालता है ।

षट्कके हाथ नारियल—जब किसीके हाथ ऐसी
चीज़ पड़े जो उसकी कदर न जानता हो, तब क० ।
मये पिथा तेरे अतुहल, चहैष्ट कद नागिनि रमसुल ।
जोग पखानो साँको कफ़ी, बन्दरी फाव नारियल पखी ।
(बाधीन पतिका)

षट्क क्या जाने अदरकका स्वाद—ऊ० दे० ।

बादीको स्वाद कड़ा कपिको, अरु नीच कड़ा उपकारदि
माने । जाने कड़ा फिरात शतिको गति, आखरकी गति का
मरु जाने ।

षट्ककी (वा भयकी)—कूटा हर दिखाना ।

षट्क नाचे ऊँट जल मरे—किसीको लुग देखकर
कोई ईषां करे, तब क० ।

षट्क वशर है—आदमी ही तो है । जब किसीसे
चूक हो जातो है, तब क० ।

बंधी मुट्ठी लाप्य बराबर—मुट्ठी बांधकर जो दान वा इनाम दिया जाता है, उसे लेनेवाला जितना चाहे बढ़ाकर कह सकता है। जब किसीका हिस्सापत्ती हो जाय और किसीको मालूम न हो, तब क०।

बंधी रहने न उठके बिकाय—(ब०) जो चीज़ जल्दी नहीं बिकती है, उसे क०। दे० 'टंगी रहे.....'

बकरा मुट्ठाय तब लकड़ी खाय—बकरा मोटा होता है तब मार खाता है, क्योंकि वह लड़ाका हो जाता है।

बकरी कासा मुंह चलता ही रहता है—दिन रात खाया करता है।

बकरी करे घाससे यारी तो चरने कहां जाय—
दे० 'घोड़ा घाससे'।

बकरीके नसीबों छुरी है—जब अच्छा काम करके भी किसीको बुरा फल मिले, तब क०।

बकरी जानसे गई खानेवालेको मज्जा न आया—

जब कोई किसीके लिये मर मिटे और वह उसका प्यूसान भी न माने, तब क०।

तुहें न कल ब्याकुल भई, रोवति युवती ज्वाद।

गई बकरी निज जीब सो, खादी लछो न खाद।'

(सुगंधा सुरतान लो० र० की०) ज्वाद=बधिक।

बकरीने दूध दिया मेंगनी भरा—लानती देकर किसीपर मेहरवानी की जाय, तब क०।

बकरी या सस्तेकी तीन ही टांगें—सरासर झूठ बोलना। जब कोई झूठ भी बोले और उसे सत्य साक्षित करनेके लिये डटा रहे, तब क०। दे० 'सुरंगी की एक हो.....'

बकरेकी मां कबतक खैर मनाय—एक न एक दिन मारा ही जायगा। बदचलनपर क०।

कट मरज है एक दिन, जो नर राई बैर।

बकरेकी मां कब तलक, रहे मनावत खैर।

बखतावरका भाटा गीला, कमबखतकी दाल गोली—पहिलेकी विशेष हालि नहीं परन्तु पिछलेका मरन है।

बखशीके धग्गाड़—(ब०) दे० 'लाटके साले.....'

बखशी वीची बिल्लो चूहा लंडूरा ही जोयेगा—
इसका निकास धो है—एक बार एक बिल्लीने किसी

चूहेको पकड़ लिया। बिल्लीसे कूटकर चूहा बिकने में पुस गया, पर उसको पूंछ टूटकर बिल्लीके मुँहमें रह गई। बिल्ली तो चूहेको खाना चाहती थी, इसलिये उसने चूहेसे ऊहा खैर बन बाहर निकल आने तुम्हारी पूंछ जोड़ दी। इसपर चूहेने उक्त मसल कही।

इसी जोड़की बडला मसल है—'किड़े दीमा कंदि बाची'।
बगडमें बगड तीन घर, तेली, धोबी, नाई—
नीब सोहवतपर क०।

बगल था सिपारा, तो पूत था हमारा, जब कमर हुआ कटारा, तो कंधा हुआ तुम्हारा—
सासका कहना बहूके प्रति जिसका पति उसके बशमें हो जाय। जब लड़का था, बगलमें पोथी लेकर पढ़ने जाता था, तब मेरा लड़का था। जब कमरमें कटारा हुआ तो तेरा पति हो गया।

बगलमें ईमान दाबकर यात करते हैं—बनावटी या बेईमानीकी यात करते हैं।

बगलमें छुरी मुँहमें राम राम—जो मुंहसे मित्रता की बातें करे और भीतरसे दुश्मनी रखे, उसको क०।
चाणक्यने भी कहा है, परीचे कार्य हनारं प्रत्यक्ष प्रिय वादिनाम्। बर्जयेत तादृशं मितं विपुत्रम् प्रयी सुखम्।'

बगलमें तूनीका पोंजड़ा नन्दीजी भेजो—
लोभी मनुष्यको क०।

बगलमें तोसा, किसका भरोसा—अपने पास धन है तो दूमेका घासरा क्या देखना।

बगलमें चुकचा, चली बजार—स्वप्न।

बगलमें मुँह डालो—अपनी तरफ देखो। जब कोई किसीकी बुराई करे और वह बुराई खुद उसमें भी हो, तब क०।

बगलमें साँटा, नाम गरीबदास—नामसे विपरीत गुणवालेको क०।

बगलमें लड़का, शहरमें दिंदोरा—दे० 'कनिया लड़का.....'

'कहीं तुमको न पाया मर वे हमने एक जहा दूटा।
किर बाकिर दिलहीमें देखा बगलहीमेंसे तू निकला।'

(लौक)

बगला भगत—जो मनुष्य ऊपरसे तो साधु बना हो पर भीतरसे अपना मतलब साधना चाहता हो, उसे

क० । घगला मझली पकड़नेके लिये तालाब या नदीके किनारे एक पाँव उठाकर खड़ा रहता है मानों ईश्वरमें ध्यान लगाये है पर जहाँ मझली सामने आई और उसे पकड़ा ।

घगला भी थोद्योका भाई है—क्योंकि वह भी पानीमें खड़ा रहता है ।

घगला मारे पखता हाथ—जब कोई किसीको लुकसान पहुँचावे और उसके हाथ कुछ न पड़े, तब क० । घगलमें खाली पर ही पर होते हैं, मांस नाम मात्रको होता है ।

भो शिव जै है सुरतिसो, सदा न धँडे नाथ ।

जैसे बगुलाके घने, पखता नामें हाथ (कृष्ण लो० र० कौ०)

घचन परम हित सुनत कठारे, कहहिं सुनहिं ते नरवर धोरे—(तुल०) स्पष्ट ।

घचन वज्र जेहि सदा पियारा, सहस नयन पर दोष निहारा—(तुलसी) कठोर बोलनेवाले और दूसरोंका दोष देखनेवालों पर क० ।

घचनोंका वार्धा खड़ा है—आसमानको कहते हैं जो बिना सहारे खड़ा है ।

घचे नर, हज़ार घर—सचो मर्दको बवानेसे हज़ार घर बचानेका फल होता है ।

घच, वे जुग्मा, आँधी आई—आती विपत्तिते होशियार होनेके लिये क० ।

घचे तो खिलाँदे दूध तो भान, बड़े हुए तो मारदे लान—(प०) कृतज्ञ लड़कों पर क० जो माँ बापका अपमान करते हैं ।

घड़ियाके बाबा पड़ियाके ताऊ—मूर्खको क० । घड़ियाके बाबा—बैल । पड़ियाके ताऊ—भैंसा । बाहियाके बाबा पहियाके ताऊ घसनीके घुम घुम भर भर (हरिचन्द्र)

घजत घजत आखिर तो नंदहीके द्वार आवेगी—आखिर बात खुल ही जायगी । जिम मनुष्यसे प्रयोजन हो आर उसीसे बात छिपाई जाय, तब यह ऐसा कहता है ।

घज्रादपि कठोरानि मूढनि कुशुमादपि—(सं० भवभूति) जिसका हृदय घजसे भी कठोर और फूलसे भी कोमल हो, उसे क० । न्यायवान मनुष्यको क० । अकसर इन्साफ करनेके समय क० ।

छलियहूँ बाहि कठोर बति, कोमल कुसुमहिं बाहि ।

चित खगेन रघुवीर बस, मनुभ परे कइ बाहि । (तुल०)

यजा कहे जिसे आलम उसे यजा समझो—जिस बातको दुनिया अच्छी कहे उसे अच्छी ही समझना चाहिये ।

यजाजकी गठरी पर भींगुर राजा—क्योंकि वह कपड़ेको चाट जाता है । दूसरोंकी वस्तुपर धमंड करना ।

यजा नकारा कूचका उखड़न लागी मेख, चलने हारे चल बसे खड़ा हुआ तू देख—स्पष्ट ।

यटियाकी राह, ये निरयाह—पगंडीका रास्ता आदमीको कहींका कहीं ले जाता है ।

यटुर हाथ दुशमनवें लोगो—(भो०) दुश्मनको मारे तो कड़ी मार मारे ।

यट्टे खाते डालो—(व्य०) (१) दूधत वा गताल खाते डालो । जब रकम बसूल होनेकी उम्मेद न रहे, तब क० । (२) जिस बातसे प्रयोजन न रहना हो, उसको चर्वा न करनेके लिये क० ।

यड़ तलेका भून—जो जल्दी नहीं छोड़ता, उसे क० । यड़ रोवे वड़ाईके, छोट रोवे पेटके—तोनेसे खाली कोई नहीं ।

यड़ा जाने किया, याऊक जाने हिया—सयाना काम देखता है और बचा प्यारसे छुच होता है ।

यड़ा धोता यड़ा पोथा मस्तके पगड़ यड़ा । अक्षरो नेव जानगति उजड़ुडाये नमोनमः—मूर्ख पहिड़तको क० ।

यड़ा निवाला खाइये, यड़ा बोल न धोलिये—आप कष्ट उठा ले पर दूसरोंको कष्ट न दे ।

यड़ा बोल क्रांतीका प्यादह—यड़ा बोल बोलनेमे क्रांतीका प्यादा सामने खड़ा है अर्थात् ईसाफ होनेसे उसकी कलाई खुन जाती है ।

यड़ी कमाई पर नौन विकिया—(पू०) बहुत कमाई करके नौन बेचना । धनवान होकर छोटा काम करे, तब क० । दे० “पड़े फारसी ।”

यड़ी ननद शैतानकी छड़ी, जय देलो तय तीर सी खड़ी—यड़ी ननदकी धरमें बहुत चलती है, इयलिये वह धरमें भीजाईको बाटती ढपटती रहती है ।

बड़ी नाक चाले—हज़रतदारको क० । ध्यंगसे उन्हें भी कहा जाती है, जो वास्तवमें हज़रतदार तो नहीं हैं पर अपनेको लगाते बहुत हैं ।

बड़ी नादके टूक—किसी प्रतिष्ठित घरानेका मनुष्य जिसको श्रवण्णा हीन हो गई हो, उसे क० ।

बड़ी फज़र चूल्हेपर नज़र—सबेरा हुआ और खानेको फ़िक्र पड़ी ।

बड़ो बड़ाई गोड़की, तीन कोसको कोस—जो तीन कोसका एक कोस करे उसी पैरकी बड़ाई करनी चाहिये ।

बड़ी बड़ी महफ़िलोंसे निकाले गये यह किस गिनतीमें है—बेहया आदमी पर क० ।

एक बदतमीज़ आदमीकी गुस्ताखी करनेपर भोगोंने महफ़िलसे निकल जानेके लिये कहा। तब उसने ज़वाह दिया कि मैं बड़ी बड़ी महफ़िलोंमेंसे निकाला गया हूँ तुम्हारी महफ़िल किस गिनतीमें है ।

बड़ी बहूको घुलाओ जो खोरमें नौन डाले—जब किसी बड़ेसे भूल होती है, तब ध्यंगसे क० ।

बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटा लाडा घण्टा सुहाग—(मा०) बहूकी उम्र वरसे अधिक होती है, तब घर पत्नवालोंको शांत्वना देनेके लिये क० ।

बड़ी भांभी माके थानक-बड़े भाईकी स्त्री माताके तुल्य है ।

बड़ो मछली छोटी मछलीको खाती है—बलवानं निर्बलको सताता है ।

बड़े अन्न पूरना घने हैं—बड़े दानी घने हैं। ध्यंगसेक० ।

बड़े आदमीको पीठ काली, गरीबका मुंह काला—बड़े आदमीको निन्दा लोग पीठ पीछे करते हैं गरीबको निन्दा मुंहपर करते हैं ।

बड़े आदमीने दाल खाई तो कहा सादा मिज़ाज है, गरीबने दाल खाई तो कहा कंगाल है—जिस कामके लिये बड़े आदमीकी तारीफ़ होती है उसी कामके लिये गरीबकी निन्दा होती है ।

हम घने तिन हैं तो बौक़ करते हैं ।

बड़े घने खाते हैं तो भूखीं सरते हैं ।

बड़े फड़ाहीमें तले जाते हैं—जब कोई बड़ोका अपमान करता है, तब क० । बड़े=(१) जो पीठीके

घरे बनाकर कढ़ाईमें तले जाते हैं । (२) जो उम्रमें बड़े हैं ।

बड़े कहेँ सो कीजिये, करेँ सो करिये नाहि—स्पष्ट । दे० 'गुरु कहेँ सो' ।

बड़ेकी बड़ाई न छोटेकी छुटाई—जो मर्यादासे नहीं चलता है, उसे क० ।

बड़ेकी यात बड़े पहिचाना—बड़ोकी बात बड़े ही समझते हैं। जब कोई मनुष्य मूर्खताकी यात करे और दूसरा उसको सच माने, तब ध्यंगसे क० । पूरी मसल यह है :—“कोथे धनुष हाथमें घाना, कहाँ चले दिखी एलताना। यनके राय विन्यके राता, बड़ोकी यात बड़े पहिचाना ।”

इसका निकाम इस किस्मिसे है। एक धुनियाँ कंधेपर धुनकी और हाथमें धुनैटा लिये जङ्गलकी राहसे कहीं आ रहा था। उसने एक सिंघारकी जड़बसमें यात देखी और समझा कि जड़बसका रासा सिंघे यड़ी है। सिंघारने भी धुनियोंको धनुष बाण लिये गिकारी समझकर भयके तारे मसलका प्रथमार्थ कहा; जिसके उपरमें धुनियोंने भी उसके सम्भ्रानार्थ उसका शिवाय कथा ।

बड़े घरके ठीकरा—दे० बड़े नांदकी टूक ।

बड़े घर पड़िये, पत्थर ढोढो मरिये—(ज०) यदि ऐसे घरमें व्याह हो जिसमें कुनबके आदमी बहुत हों तो वहाँकाम बहुतकरना पड़ता है, इसलिये क० ।

बड़े घोड़ेकी बड़ी चाल—बड़ेके काम भी बड़े ही होते हैं ।

बड़े चोरका हिस्सा नहीं—क्योंकि वह जितना चाहता है ले लेता है ।

बड़े न घूड़न देन हैं, जाकी पकड़े बांध, जैसे छोटा नावमें, तिरंत फिर जल मांह—स्पष्ट ।

बड़े घरतनकी खुरचन भी बहुत ही—दे० “बड़े नांदकी टूक ।”

बड़े बोलका सिर नीचा—अहंकारी नीचा देखता है ।

उस घुनने सुफ़की मुँह लगाया है अंगर,

शेखीकी न ली मुफ़से तू ऐ गोदी खर ।

एक बोज़ ज़रर मुँहकी खायगा तू,

घुन ले कि ५५ बोलका नीचा है सर । (रंज़र)

बड़े भागसे होत है, दाद, खाज और राज—

(१) ऐसा लोगोंका विश्वास है कि दाद और सुजली होनेसे अच्छी प्राप्ति होती है । (२) दाद और खासके सुजलानेपर अधिक कष्ट होता है इसलिये ऐसे रोगीको लोग व्यंगसे अथवा शांति देनेके लिये कहा करते हैं ।

बड़े मियां सी बड़े मियां, छोटे मियां सुमान अल्लाह—जहाँ एक बुरा हो और दूसरा उससे भी अधिक बुरा हो, तब क० । जब थापसे घेटा वा बड़े भाईसे छोटा भाई बड़कर निकले, तब क० ।

बड़े शहरका बड़ा ही चांद—बड़े शहरमें बड़े टग होते हैं । व्यंगसे क० ।

बड़े खनेह लघुनपर करहीं । गिर निज सीस सदा तृण धरहीं—(तुलसी) स्पष्ट ।

श्री बालक कष्ट तोवरि माता,

सचई सुदिसनन पितृ षष्ठ माता । (तुलसी)

बड़ोंका बड़ा ही भाग—बड़ोंका नसीब भी बड़ा ही होता है ।

बड़ोंका बड़ा ही मुँह—बड़ोंकी मांग भी बड़ी ही होती है ।

बड़ोंकी बड़ी बात—(१) बड़ोंके इयाल भी बड़े ही होते हैं (२) जब कोई बड़ा होकर नीच काम कर बैठे, तब व्यंगसे क० ।

जो चाई सीई करे बड़े सचकित अइ,

सबके देखत मर्गन हर धरत गीरि सधंग (इन्द)

बड़ोंके फहेका और भावलोंके खायिका पीछे सबाद आता है—यह पीछे अपना गुण दिखाते हैं पहिले फूडवे जान पड़ते हैं ।

बड़ोंको होवे दुख बड़ा, छोड़ोंसे दुख दूर । तारे सख न्यारे रहें, गहें राह शशि सूर—स्पष्ट । जब बड़ोंपर आश्रत आती है और छोटे घब जातें हैं, तब क० ।

विपत बड़े हैं सचि सबके, इतर विपति ते दूर ।

तारे सख..... (इन्द)

बड़ोंसे रखले आस, न जाय पास—बड़े आदमियोंसे आश्र रखले पर उनके पास न रहे ।

बड़े बाल और मैले कपड़े, और करकला नार,

सोनोको धरती मिले, नरक निसानी चार—स्पष्ट । दे० “पानपुराना”

बड़े तो अमीर, घटे तो फूफ़ीर, मरे तो पीर—यह मुसलमानोंपर क० । दे० “रज्जा अमीर” ।

यत्तीस दांतकी भाषा खाली नहीं जाती—नित्य प्रतिका कोसना बुरा होता है । (२) जिस दांतको बहुत लोग कहते हैं वह होकर रहती है ।

यत्तीस दांतमें जीम—बहुत सतर्क होकर चलनेपर क० । जो चारों ओर शत्रुओंसे घिरा हो, उसे भी क० ।

कामसे काम अपने उनको जो छो पाउम मुकामों, रहते हैं यमोच दांतोंमें, मुवानोंको तरह । (खाली)

यद अच्छा बदनाम बुरा—स्पष्ट ।

बाज कहते हैं शख्से खुद काम बुरा,

बाजोंको समझमें है मैं बाघाम बुरा ।

मुमसे पूछो तो ये कइ गं रंजूर,

यद अच्छा है मगर है बदनाम बुरा । (रजूर)

यद घोड़ेकी मेख—बहुत दुष्ट वा पापी मनुष्यको क० ।

यदनमें नहीं लत्ता पान खायँ अलबत्ता—लिफाफियेको क० ।

यदनमें दम नहीं नाम जोराघर खाँ—(च) नामके अनुसार गुण न हो, तब क० ।

यद धदीसे न जाय, तो नेक नेकीसे भी न जाय—बुरा बुराई न छोड़े तो अच्छेको भी अपने भलेपनको न छोड़ना चाहिये ।

यदलीकी छांह क्या—अस्वायी है ।

यदलीकी धूप जय निकसे तय तेज—स्पष्ट ।

यदलीमें दिन न दोसे, फूहड़ घैठी पीसे—चकी रात रहते पीसी जाती है । यदलीके कारण दिन धरई जान पड़ता इसलिये फूहड़को रात ही जान पड़तो है । यदाऊँके लाला—मूलको क० । यदाऊँके रहने-वालोंपर ताना है ।

यधिया मरी तो मरी आगरा तो देखा—हासि हुई तो हुई, अनुभव तो हुआ ।

कोई बंआरा चागरे मान बंधने गया, वरि ससका माल कइ भी न बिका पर साद हो साय ससका बेल मर गया । कोई कोई बधियाके जनह बुदिया भी क० ।

यधे पाप अपकीरत हारे—(तुलसी) दोनों तरफसे बुराई होती जान पड़ती है, तब क० ।

वनके पात वनहिके खड़िका, केल करत शारीके लड़िका—(भो०) वारीके लड़के जंगली पत्ते और लड़कों हीसे खेला करते हैं क्योंकि उनके यहां और है ही क्या ?

वन आयेकी बात रे ऊयो—दे० 'ऊयो वनि' ।

वन आई कुत्तकी, जो पालकी बैठे जावे—जब किसी नीचका सन्मान हो, तब क० ।

वन गयेके लालाजी औ विगड़ गयेके चूनिया—(व्य०) एक ही श्रादमी जब धन कमाता है तब बुद्धिमान कहलाता है और नुकसान देता है तब मूर्ख कहलाता है ।

वनजी और घटाउभा, सुल पावे जिहि गांव ।

घाको तो चौलूटमें, करें नेक सरनाम—स्पष्ट ।

वनज करेंगे वानियें, और करेंगे रीस । वनज करा था भाटने, सौके रह गये तीस—वाणिज्य करना वनियों हीका काम है ।

वनज करें तो टोटा आवे, वैठ खाये धन छीजे ।

फहे कवीर सुनो भाई सन्तो, मांग खाय सो जीते—स्पष्ट ।

वनजमें क्या भाई वन्यो—(व्य०) व्यवहारमें मुलाहिजा न करना चाहिये ।

वनते देर लगती है विगड़ते देर नहीं लगती—स्पष्ट ।

वन वालक और मैस उखारी, जेठ मास यह चार दुखारी—(क०) गरमोके कारण ये चारों विकल रहते हैं ।

धनमें मोर नाचा किसने देखा—दे० 'जंगलमें मोर' "बनाओगे" ? "नहीं", "विगाड़ोगे" ? "दोनों हाथोंसे"—जिस मनुष्यसे कोई काम न हो सके और यदि कुछ करे भी तो उसे विगाड़ दे, उसको क० ।

वनिआयेकी वनियाई है—जिसपर ईश्वर प्रसन्न होता है उसीका काम बनता है ।

बल बुधि विद्या गुन सब ज्ञान, सबपर हरि इच्छा बनवान ।

इहि मर्षे नहिं सत्रय राई है, "बनि आयेकी वनियाई है" (लो० सं०)

वनिक पुत्र जाने फहा, गढ़ लेवेकी घात—स्पष्ट ।

वनियां अपने बाप सों, ठगत न लावे चार, निस वासर जननो ठगे, जहां छेत अत्रतार—(गिर । धर कविराय) वनिये बड़े मतलबी होते हैं इसीलिये क० ।

वनियांके सखरच, ठकुराके हीन, चैदके पूत, व्याध ना चीन्ह, भटवाके चुप चुप, वेस्वाके मइल, वहे घाघ पांचों घर गइल—वनियेका लड़का खरचीला, ठकुराका बोदा, वैद्यका रोग न पहिचानने वाला, भाटका कम बोल, और घेर्याकी लड़की मैली वा काली हो तो इंगसे घरका नाश होता है ।

वनियां जिसका यार, उसको दुश्मन क्या दरकार स्पष्ट । वनियोंपर ताता है ।

वनियां देता ही नहीं कहे जूरा पूरा बौलियो—जिसकी मांगकी पूर्ति सारी ही श्रास्वीकारकी जाय पर वह अपनी मांगसे भी अधिक पानेकी इच्छा प्रगट करता जाय, तब क० ।

मानिनि मान तजे नहीं, पिय कहे घूषट खोन ।

वनिया बँठन देत नहीं, कहे जू पूरा तोल । (मान)

(लो० सं० की०)

वनियां भी अपना गुड़ छिपा कर खाता है—

जब कोई श्रादमी जाहिरा बुरा काम करे, तब क० । सोवन देइ सखी बस राज । जो होतिय तो चहियत खान कहे कइउत ज्यों बुधिभोरि । वनियो निज घर खायेजु चीरि । (मन्थाकी सुरति लो० सं० की०)

असराज-वेसे राजाको अर्थात् पतिको ।

वनियां मारे जान, ठग मारे अनजान—वनियां जान पहिचानवालेको और ठग अनजानको खाता है । वनियां मीत न वेस्वा सती—वनियां कभी किसीका मित्र नहीं होता, और घेर्या सती नहीं होती ।

है वनिया वनि आयेके साथी, न मूलियो पात मिठाइलमें ।

(राम)

वनियायेकी फकीरी भी भली—स्पष्ट ।

वनियां रीभे हरे दे—वनियोंकी रूपगता पर क० ।

वनियां लिखे पढ़े करता—वनियोंका लिखना अष्ट होता है ।

वनियेका उल्लू—कोई धेकार चीज यत्नसे रखी जाय, तब क० ।

किसी वनियेने बाजूके बोखे एक उल्लू खरीद लिया था, जिसे वह बाज कहकर सनको दिग्गता फिरता था।

वनियेका जी धनिये घराबर—बहुत छोटा होता है वनियेका बेटा कुछ देख ही के गिरता है—

बिना मतलबके वनियां कोई काम नहीं करता।

एक वनियेका लड़का सिरपर तैलका घड़ा लिये जा रहा था। उसका पैर किसतनेपर वह चले सहित गिर पड़ा किछीने उसके बापको इस घटनाकी सूचना दी, जिसके सचमें उसने कहा वह ऊपर रारनेमें कोई चीज देख कर गिरा होगा। वास्तवमें उसी एक चगकी मिलायी।

वनियेका बहकाया, और जोगीका फिटकारा—
वनियेके बहकानेसे और जोगीके धापसे बचना सुरिकल है। वनियेके बहकानेपर एक कहानी इस तरह है—

किसी मनुष्यके पास एक गिद्धो थी जिसे वह बंधा चाहता था। एक वनियेने उसे सचे दाममें खरीदना चाहा। उसने गिद्धोका दाम पांच रुपये लगाया। जब वह इतने दाममें बंधनेकी राजी न हुआ, तब वनियेने क्रमसे बढ़ते बढ़ते उसके दाम चौदह रुपये तक लगा दिये। उस मनुष्यके मनमें यह हुआ कि यह अवश्य ज्यादे दामकी चीज है, तभी तो इतने पांच रुपयेसे बढ़ते बढ़ते चौदह रुपये तक इसके दाम लगाये हैं। यह सोचकर उसने वनियेसे कहा कि मे सचापकी दिखाये बिना न बंधूंगा वनियेने उसका यह भाव देखकर निवृत्ता दिखाते हुए कहा कि यह तीस रुपयेका साल है, इससे कमतीमें इसे न बंधना। वह सारे बाजारमें उसे लिये फिरा और सबसे तीस रुपये दाम कहता, पर किछीने भी उस न खरीदा। अन्तमें निराय होकर उसने उसी वनियेकी चौदह रुपयेमें वह गिद्धो दे दी।

वनियेका मुंह ब्राह्म और पेट मोम—वनियां पेट फाट कर रुपया जमा करता है।

वनियेका साह भड़भूजा—जैसेको तैसा मिले, तब क०।

वनियेकी उचापत और घोड़ेकी दौड़ घराबर—
(व्य०) बहुत जल्दी बढ़ती है।

वनियेकी सलाम वैगरज नहीं होती—बिना मतलब के वनियां कोई काम नहीं करता।

वनियेके पेशावमें विच्छू पैदा होता है—वनियेके

लडके भी बड़े चालाक होते हैं। विच्छू=सयाना, चालाक।

वनियेसे सयाना, सो दीवाना—स्पष्ट।

वनीके सव यार हैं—अच्छे वक्तके सव साथी हैं।

वनीके सौ साले विगड़ीका एक बहिनीई भी नहीं—बड़े श्रादमीको सव कोई अपनी बहिन ब्याहने को तयार होते हैं, पर श्रादमीकी बहिनसे कोई ब्याह नहीं करना चाहता।

वनी तो वनी, नहीं दाऊद खां पनी—यदि एक जगह काम नहीं मिलेगा तो दूसरो जगह देखूंगा।
वनी तो भाई, नहीं दुग्मनाई—यदि अपनीसी कहे तो भाई नहीं तो दुग्मन।

वनी फिर बसवा, खोले फिर केसवा—(ज०) मां वा सासका कहना बेटी वा बहूके प्रति। सिर खुले फिरना येरवाका काम है।

वनी वनावे वानियां, वनी विगाड़े जाट।

मूंडे सीस सराह कर, डोम कवीश्वर भाट—
स्पष्ट।

वनेके साह, विगड़ेके मोटिया—स्पष्ट।

वने वनेके सव हैं साथी—जिसका समय अच्छा होता है उसके सव साथी होते हैं।

वने सव ही सराहें, विगड़े कहे कमयख्त—स्पष्ट।

यम्हनेयचने गडरे कुश, अहिर दक्षिणा कंडा भुस—
गांडर=एक फ़िसकी पास। माहाण्यके वचनसे गांडर कुग हो जाय तो अहोरके फहेसे दक्षिणाके लिये कंडा भूसा भी हो सकता है। दे० "वामनवचन"।

घरमेका काम छिदना नहीं होता—घरमेंसे दूसरी पीतमें छेद होता है। यह थाप नहीं हिदता।
यामे कोई नहीं टग सकता।

घर पीपर विन हो रहे, ज्यों अरंड अधिकार—
जहां बड़े नहीं होते वहां छोटेका ही अधिकार होता है।

घरस दिन गणेशजी कूदते हैं—(व्य०) जब कोई नया व्यापार करता है तो पहिले घरस लाम ही होता है फिर जब मुकसान होता है, तब क०।

घरस भरमें सखी समका लेखा घराघर—
जब किसी समका मुकसान हो जाता है, तब क०।

घरसातमें कड़ाही घर घर—घरसातमें त्योहार बहुत होते हैं, इसलिये घर घर कड़ाही चढ़ती है।
 घरसात घरके साथ—घरसात पतिके साथ बहुत थच्छी तरह कटती है।
 घरसाती दरज़ी हो रहे हैं—बेकार बंटे हैं।
 घरसा थोड़ी भभरौटी बहुत—थोड़ी घरपा होनेसे बहुत सुखा पड़ता है।
 घरसे आसोज, हो नाजकी मौज—(क०) कारमें पानी घरसेनेसे अन्न बहुत पैदा होता है।
 घरसेगा, घरसावेगा, पेसे सेर लगावेगा—(क०) घरसात थच्छी होनेसे अन्न सस्ता होता है।
 घरसेगा मेह, हांगे अनन्द, तुम शाहके शाह हम नंगके नंग—जो पानी घरसेगा तो अनाज बहुत उपजेगा। खानेको सभीको मिलेगा, लेकिन शाह शाह ही और नज़ा नज़ा ही रहेगा। गरीबोंका फहना व्यवसायोंके प्रति।
 घरसे पाढ़, तो हो जा ठाढ़—(क०) अपाढ़में वषां हो तो चैन हो जाय।
 घरसे सावन, तो हो पांचके चावन—(क०) धावणमें घरपा हो तो अन्न दसगुना हो।
 घरसो राम धड़ासे, वुद्धिया मर गई फाकी से—जब बहुत ज़रूरतके बाद पानी घरसता है, तब लड़के कहते हैं।
 घररातका छेला, सावनका छेला—घरातमें घुगो, जैसे सावनमें घास, अर्थात् बहुत होती है।
 घररातकी सोभा वाजा, अरथीकी सोभा स्यापा—स्पष्ट।
 घरसात पीछे पत्तल भारी—घरात विदा हो जाती है; तो पत्तलका झुंघ भी अघरता है। जब उत्सव समाप्त हो जाता है तो फिर उसके लिये सामान्य झुंघ करना भी भारी पड़ जाता है।
 घररातियोंको खानेकी चाह, दुलहेको दुलहिनकी चाह—स्पष्ट।
 घरराती किनारे हो जायंगे काम दूल्हा, दूल्हनसे पड़ेगा—खिलानेवाले लड़ाई कराकर अलग हो जाते हैं।
 बघ भल बास नर्ककर ताता, दुष्ट संग जनि देइ विधाता—(गुलसी) दुष्टके संगमें रहनेसे नर्कमें

रहना थच्छा है।
 घरेली जानेका काम करते हो—पागलोंका सा काम करते हो। घरेलीमें बड़ा पागलपाना है।
 घरेली रूपा रेली—घरेलीमें चांदी बरसती है। उपजाऊ ज़मीन और व्यवसायकी अधिस्तताके लिये क० घरोवरी तें कीजिये, व्याह घैर और प्रीत—व्याह, घैर और प्रीत बराबरवालोंसे करनी चाहिये।
 घरे वालक एक सुभाऊ—बच्चे और घरेका एकसा स्वभाव होता है। इनको छेड़ना न चाहिये।
 घल जाय राजको, मोती लगें प्याजको—जिस राज्यमें प्याजका दाम मोतीके समान हो वह ग़ारत हो जाय।
 घलती आगमें कूदना—अपनेको जोखिममें डालना।
 घलती आगमें घी डालना—भगड़ेको और बढ़ाना।
 घल तो अपना घल, नहिं जाय जल—अपना हो बल काम आता है दूसरेका नहीं।
 घलवानके वीस विस्से मारे और रोने न दे—दे० “ज़हरदस्त मारे और रोने न दे।”
 घलसे राजा राव है, घल विन घड़ा न कोय। सांच वड़ेरे कह गये, घल विन घड़ा न होय—स्पष्ट।
 घल सों नामी हो गये, दस्तम अरज़ुन भीम। घल विन कीसी हाकमी, कह गये सांच हकीम—स्पष्ट।
 घसंतकी खबर ही नहीं—असल बातकी खबर न हो, तब क०।
 घसंत जाड़ेका अंत—स्पष्ट।
 घस कर मियां घस कर, देखा तेरा लश्कर—(मु० ज०) जब कोई बहुत श्रेणी मारता है, तब क०।
 घसत ईशके सोस तऊ, भयो न पुर्ण मयंक—नसीब सब जगह साथ जाता है।
 घस ना चलत कुम्हार सों, घरके पंठत फान—दे० “कुम्हारसे घस न घले।”
 घसन नीलके माठमें, फवह लाल न होय—बुरी जगह रहनेसे किसीकी उन्नयति नहीं होती।
 घस नमाज हो चुकी मुसल्ला बढ़ाहिये—(मु०) जब काम खत्म हो जाता है, तब क०।

बस जो बुकौ ममाज मुहता बदाये.

बैठ बुके बतारि भन घरको जाये ।

यसाव शहरका, खेत नहरका—(क०) शहरका घर और नहरके किनारेका खेत अच्छा होता है ।

यसै घुराई जासु तन, ताहोको सन्मान । भलो भलो कहि छोड़िये, छोटे ग्रह जप दान—(बिहारी)

जिसमें घुराई रहती है, संसारमें उसीका मान होता है । अच्छे ग्रहको लोग अच्छा अच्छा कहकर ही छोड़ देते हैं, परबुरे ग्रहके लिये जप और दान करते हैं ।

यहकि बड़ाई आपनी, कत राँवति मति मूठ । चित मधु मधुकरके हिये, गड़े न गुड़हर फूल—

(विहारी) अपनी बड़ाईसे बहकके अपने मनमें क्यों प्रसन्न होता है । यह तेरी समझकी भूल है । बिना छगन्धके भौंरेके मनमें गुड़हलका फूल नहीं चुभता । कोई बिना गुणके अपनी बड़ाई करे, तब क० ।

यहता पानी निर्मला, धंधा गंदीला होय । साधू जन रमता भला, दाग न लागी कोय—

(गिरधर) स्पष्ट । (१) बरे संगे गदां न रोयद न धात । चलता फिरता जोगी बदनाम नहीं होता । (२) जो चीज सदा काममें लाई जाती है उसमें जंग नहीं लगता ।

(१) चाबे दरिया बहे तो बँहतर,

इसाँ रवा रहे तो बँहतर ।

(२) पानी न बहे तो उसमें दुर्गन्ध चाबे,

खंजर न चले सो भोघाँ खावे ।

यहती गंगा धोले पाँव—चलते काममें यण लेलो ।

जत्र किसीका समय अच्छा हो, तब उसको सत्कर्म करके ययका भागी होनेके लिये क० ।

'बह रहे न रहे यही समयो,

बहती नदी पाँव पखार लेरो ।' (ठाकुर)

यहतेको यह जाने दे, मत बतलाये ठौर ।

समझाये समझे नहीं, तो धक्का दे दे और— जो समझानेसे नहीं माने, उते क० ।

यहते दरियामें जिस्तका जी चाहै हाथ धोले— दे० 'बहती गंगा.....'

यहन कहे मेरा बीर हे प्यारा, काल कहे मेरा हे

यह चारा—स्पष्ट ।

यहनके घर भाई कुत्ता, सासरे जमाई कुत्ता— दे० 'कुत्ता पाले.....'

यह मरे बैल बैठे खाँय तुरंग—जब एक तो लटकर मरे और दूसरा बैठा आराम करे, तब क० ।

यहरा राग स्वाद क्या जाने—मूलके आगे गुणकी कद्र नहों होती ।

'लाग नाहिं जिहि लोयन लागी, सो मन्दत है परबपुराणो ।

भोग छकि मनमें तहिं बाने, बहिरा राग खाद कइजाने ।

(परकीय, लो० १० को०)

यहरा बहिस्ती, अंधा दोज्ञखी—(मु०) अंधा बेईमान होता है इसलिये नरक गामी होता और बहरा अपने कानोंसे परनिन्दा नहीं सुनता इसलिये स्वर्गवासी होता है ।

यहरा सुने धर्मकी कथा—असंभव यात पर क० ।

यहरा सोगहरा—बहरा मनुष्य बहुत गंभीर होता है ।

बहरे आगे गावना गूँगे आगे गल्ल, अंधे आगे नाचना तीनों अल बिलल्ल—(पं०) तीनों काम ही

दुया हैं क्योंकि बहिरा गीत छन नहीं सकता, गूँगा

यातका जवाब दे नहीं सकता और अंधा नाच देख

नहीं सकता

यहु गुणी यहु दुःखी—जब कोई अनेक कलाओंमें

नियुग होकर भी अथांभावसे कष्ट पावे, तब क० ।

यहुत अतीथ मठ खराया—एक कामको बहुतसे

ध्यादमी करे, तो वह विगड़ जाता है ।

यहुत कथनी थोड़ी करनी—कहना बहुत करना थोड़ा

यहुत कहेहुँ सय कियेहुँ डिठाई, उचित होय तस करिय गुसाई—(तुलसी) हमें कहना था सो

कह चुके, थय जो अच्छा समझो सो करो ।

यहुत गई थोड़ी रह गई हैं—बहुत उमर बीत गई

थोड़ी बाकी है इस ईश्वर इज्जतसे काट दे; इसी

अभिप्रायके लिये क० ।

बह चोती है मन चोती है । उमरुं ही तमान चोती है ।

यहुत बुझाई तुम्हेंहिंका फहई । परम चतुर मैं

जानत बढई—(तुलसी) जो खुद समझदार हो,

उसको क० ।

यहुत बोलनी मूरततार्—स्पष्ट ।

यहूँ नवेली और गऊ दुधेली—नई यहूँ और दुधारू
गऊ अच्छी होती है ।

यहूँ घेटीको ऐसी जगह बैठाये, जहाँसे रोके
उठे, हाँसके न उठे—अर्थात् दवावमें रखे स्वतंत्र न
होने दे ।

यहूँ घेटी सब रखते हैं—जो दूसरोंकी स्त्रियोंको
बुरी निगाहसे देखते हैं, उनको मलामत देनेके
लिये क० ।

यहूँ लाली, धन घर घाली—शौकीन यहूँसे धन
और घरका नाश होता है ।

यहूँ शरमकी, घेटी करमकी—शरमदार यहूँ और
नसीबवर लड़की अच्छी होती है ।

बांगर बोया बाजरा, खादर घोया धान ।
अपने पूता हीजरा मोहि घतावे वांभ—स्पष्ट ।

बहूँका कहना सासके प्रति ।

वांभ अच्छी इकौंज बुरी—एक लड़केवालीसे वांभ
अच्छी । एक लड़केका कुल भरोसा नहीं ।

वांभ बया जाने प्रसूतकी पीर—जिसपर पड़ती है
वही जानता है ।

मो विरहिन गति सावी विहाल, हंसी करत संजोगिन बाध
संभु पखाने कहत सयाने, ब्याठर पीर वांभ कह जाने ।
(प्रोपित पतिका । खो० २० की०)

वांभ बंभौटी, शैतानकी लंगोटी—(मु०ज०) वांभ
बड़ी शैतान होती है ।

वांभ बियानी, सोंठ उड़ानी—बातका बतगड़ करना ।
वांभल भाई परौसी बराबर—स्पष्ट ।

वांभके आगे वांभे आई, लोगोंने जाना आंधी
आई—नौकरका नौकर बहुत काम करता है क्योंकि
उससे काम लेनेमें किसी तरहकी दया नहीं दिखाई
जाती ।

वांभके आगे वांभे, मेह गिने न आंधी—
क० दे० ।

वांभ लीसा, ले हीसा—बैली वांभो तो हिस्सा
मिले ।

वांभे सकेला, फिर अकेला—हथियारबंदको किसी-

वांसके वांस खाये, उतराईकी उतराई दी—
दबल मारपर क० ।

वांसके वांस मल्लाहीकी मल्लाही—पूरा खर्च करके
भी जब थपमान हो, तब क० ।

वांस गुन बसौर और चमार गुन अधौर—
जहाँकी चीज़ वहाँ रहनेसे परखी जाती है ।

वांस चढ़ी गुड़ खाय—बेश्या वा नष्ट स्त्रीको क० ।

वांस डूबे वाउरी थाह मांगे—स्पष्ट । दे० “ऊँट
बड़े जाय”

वांस बड़े भुक जाय, अरंड बड़े टूट जाय—
बड़ा आदमी बड़नेपर और नर हो जाता है परंतु
छोटा आदमी बड़नेपर इतराने लगता है ।

वांह गहे की लाज—जिसका हाथ पकड़ लिया उसे
निबाहना चाहिए ।

वांह छुड़ये जात हो, निथल जानिके मोहि ।
हृदयमेंसे जाओगे, तो मर्द बहूँगो तोहि—भक्तका

कहना ईश्वरके प्रति ।

बहूँ दीहा, सुरदासजीने उध समय कहा था जब बि
चोरोने उनकी कूप में डाल दिया था, और श्रीराम
भगवानने उन्हें कूपमेंसे बाहर निकाला था ।

वाफ़ीका मारा गांव और चिलमोंका मारा बूल्दा—
फिर नहीं सम्भलते ।

वाग लागल ना मंगरा डेरा देल—(ओ०) बगीचा
लगा नहीं और मंगतोंने डेरा डाला ।

वाघकी मौसी विलाई—दोनों एक ही जातिके पशु
हैं इसलिये क० ।

वाघ बकरी एक घाट पानी पीते हैं—जिस राजमें
प्रबन्ध अच्छा हो, उसपर क० ।

वाघ मार नदीमें डारा, विलाई देख डरानी—
(प्रा० ज०) खोचरिपर क० ।

वाजरा कहेमें हैं अलबेला, दोमूसलसे लड़ू अकेला
जो मेरी नाजो खिचड़ी खाय, तो लुप्त बोलता
खुश हो जाय—वाजरा पुष्टिकर होता है इसलिये
उसकी तारीफ़में क० ।

वाज़ारका सचू वाप भी खाय घेटा भी खाय—

बाज़ार किसका ? जो लेके दे उसका—(७५०)

जो अपना देना चुका देता है उसको बाज़ारमें सब चीज़ मिल सकती है।

बाज़ारकी गाली किसकी ? जो फिरके देखे उसकी स्पष्ट। किसीकी कही बातको अपने ऊपर कही न समझना चाहिए।

बाज़ारकी छींक सुसरालकी गाली—इनको न मानना चाहिए।

बाज़ारकी मिठाईसे निर्वाह नहीं होता—धेरयागमन करने वालोंपर क०।

बाजे तांत राग तय यूझे—दे० 'तात बाजी'

घाटे घाटे कुतिया मरी, नाथ कहे मेरी चाचाफरी कुतिया तो देवयोगसे रास्ते या नदीके किनारे मर गई, योगिने कहा मेरा बचन फला। जो लोग देवघटनाको कहते हैं कि हमारे कहनेसे हुई, उनपर क०

बाड़ लगाई खेतको, बाड़ खेतको खाय। राजा हो चोरी करे, नियाय कौन चुकाय—

जो रत्नक हो वही भक्तक हो जाय, तय क०।

बाड़ही जय खेतको खाय तय रखवाली कौन करे क० दे०।

बाड़ीमें बारह आम, हष्टीमें अठारह आम— विपरीत बात पर क०।

बाढ़े पूत पिताके धर्म खेती उपजे अपने कर्मापिताके धर्मसे पुत्र समृद्धियाली हो सकता है, पर खेती अपने ही उद्योगसे सफल होती है।

बातें कहिये जग भाती, रोटी खाइये मन भाती— स्पष्ट।

बात कहनकी रीतिमें, है अन्तर अधिकाय— एक वचन ते रिस घड़े, एक वचनते जाय— (वृन्द) स्पष्ट। दे० "बातों हाथी"

बात कही और पराई हुई—मुंहसे बात निकली और सबको मालूम हुई। गुप्तमें प्रकाश न करना हो, तय क०।

बात कहेकी लाज—कही बातको निबाहनेके लिये (चाहे कूँठी क्यों न हो) तथा प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिये क०।

बातका चतंगड़ करना— थोड़ी बातको बहुत बढ़ा कर कहना।

बातकी करामात—बातोंसे बड़े काम होसकते हैं।

बातकी बात, खुराफातकी खुराफात—बात सची भी है और हंसीकी भी। पूरी मसल यह है— 'बातकी बात खुराफातकी खुराफात, बकरीके सोंगों को घर गये बेरीके पात' अर्थात् जब बकरी बेरीके पत्तोंको चरनेके लिये उचकी तो उसके सींग गाड़की काँटेदार टहनियोंमें फँस कर टुट गये। शिजा-जो दूसरेकी हानि किया चाहता है उसीकी हानि होती है।

बात गई फिर हाथ न आती— (१) मुँहसे निकली बात फिर वात गये कुछ हाथ नहीं है— हाथ नहीं आती (२) इज्जत एक दफ़े गये पीछे फिर जल्दी नहीं मिलती।

बात छीले रूखड़ो, और काठ छीले चौकना— बात छोलना=थहस करना। बात छीलनेसे रूखी और काठ छीलनेसे चिकना होता है।

बात जो चाहे आपनी, तो पानी मांग न पी— मांगनेसे बात वा इज्जत जाती रहती है।

बातपर बात याद आती है—प्रसंग वय बात याद आ जाती है।

बात पूछे, बातकी जड़ पूछे—हुजती वा झूठा तक करनेवालेको क०।

बात बँतासे, कागज नाँते—(व्य०) बात करनेसे और हवा चलनेसे कागज़ नहीं लिखा जाता। सुनीम गुमास्तोंका कहना है।

बातमें बात, पेय है—किसीकी बातके बीचमें बोलना बुरा है। द्वाभ्याम् वृत्तियों न भवामि राजन कि कारणां भोज भवामि मूर्खः।

बात रह जाती है वक्त निकल जाता है—दे० 'वक्त निकल।'

बात लाखकी, करनी खाककी—दे० 'करनी खाककी' बातुल भूत बिबस मतधारे। ते नहिं बोलहिं वचन सम्हारे—(तुलसी) स्पष्ट।

बातें अगली करती हैं खवार—पुरानी बातें याद आनेसे मनुष्य दुःखित होता है।

बातें आवें बातें जायँ, बातोंके बल रोटी खाय बातें चूके लातें खायँ—जो केवल बात बनाकर हो

पेट पालता है, उसे क० ।
 वार्ते करें मीना कीसी, आंखें बढलें तोते कीसी
 धेसुरौवत आदमीको क० ।
 वार्तो चिकना कामों ख्यार—(प०) वार्ते सफ़ाई-
 की करे और काम कुछ न करे तब क० ।
 वार्तो चीतों में बड़ी, करतूनों बड़ी जिठानी—
 (प० ज०) वात चीतके लिये मैं और काम करनेके
 लिये जिठानी बड़ी है। निकम्मी देवरानीको
 तानेसे क० ।
 वार्तो बूढ़ा करतब ख्यार—वार्ते बुद्धिमानकी सी
 करे पर काम खराब करे, तब क० ।
 वार्तोसे काम नहीं चलता—(व्य०) जब काम
 करनेके समय वा रुपया देनेके समय कोई खाली
 वार्तोसे डाले, तब क० ।
 वार्तो हाथी पाइयां वार्तो हाथी पांव—(प०)
 वार्तोहीसे हाथीको सवारी वा हाथी इनाममें
 मिलता है और वार्तो हीसे हाथीके पैर तले कुचला
 जाता है ।
 वाद अज़ मुर्दने सुहरा वनोश दारू—(फा०)
 भरनेपर दवा करना । घुरा काम हो चुकनेपर जब
 उपाय किया जाय, तब क० ।
 वाद सूद्र कह द्विजन सों, हम तुमवें कछु घाट ।
 जाने ब्रह्म सो विप्र घर, आंख दिखावहिं डांटे—
 (तुलसी) फलयुगके धर्म पर क० । सूद्र भी कहता
 है, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ।
 वादल देखि पोतला फोड़ें—स्फट ।
 वादल फटे तो कहांतक थिगली—जब काम बहुत
 विगड़ जाय और उधरने लायक न हो, तब क० ।
 वादला मंड़ेसे नीम नहीं छिपता—उसकी बड़ुआई
 नहीं जाती। छोटा काम छिपानेसे नहीं छिपता ।
 वान जल गया पर चल न गये—रस्ती जल गई
 पेंडन न गई। बरबाद हो गये पर जिह न छूटी ।
 वान पड़ी नहीं छूटती—जो आदत पड़ जाती है वह
 नहीं छूटती ।
 आदत भी पड़ी हो इमीगसे बच दूर भयो ।
 रकडो है चिनौटो पाकटमें पगभूतके नो ।
 वानवालेकी वान न जाय, कुत्ता

खराब आदत कमी नहीं छूटती । उ० दे० ।
 वाप ओम्हा मां डाइन, वेटी घेटा सब ही खान-
 स्पण्ट ।
 वाप कंटक पूत हातिम—जिसके घरमें वाप कंजूस
 और घेटा खर्चीला होता है, उसे क० ।
 वाप करे वापके आगे आये, घेटा करे घेटे के
 आगे आये—जो ऐसा करता है वही उसका फल
 पाता है ।
 वाप कहत सकुचत जुपै, चांचा किमि कहि जाय
 जो वापको वाप करनेमें संकोच करता है, वह दूसरे-
 को चाचा किस तरह कहेगा ।
 वापका नाम उधापुआ घेटेके नाम जीते खां—
 (च०) स्फण्ट ।
 वापका नाम दमड़ी, घेटाका नाम छकौड़िया,
 नातीका नाम पचकौड़िया, तीन पुरुषा बीती,
 छदाम न पूरा भया—(पू० ज० च०) अर्थ स्फण्ट ।
 जहां सब मिलकर भी कोई काम न कर सकें वहां
 वापका नाम सागपात, पूतका नाम परोर—
 (च०) स्फण्ट ।
 वापका घेटा बनकर सब फोई आता है, वापका
 वाप बनकर कोई नहीं आता—सब काम कायदेसे
 होना अच्छा है ।
 वापकी टांग तले आई, और मां कहलाई—
 जो सम्मानके योग्य नहीं है उसको व्यंगसे क० ।
 वापकी पोखर ही तो बना कींच खानी ही—
 (१) अतुपयुक्त चीज़ चाहे किसीकी क्यों न हो, उसे
 काममें न लाना चाहिये । (२) यदि घरमें नहीं है
 तो दूसरी जगह क्यों नहीं प्रवन्ध किया जाय ।
 वापकी यरात घेटा जाय—(१) वे मेल वापकर क० ।
 पिताका होता है, तब क० ।
 वाप

कहना है जो बापको घाटा न मिले जिससे मुझे
है घन लानेको जाना पड़े ।

बापको मौन न भूलत घेंटी—स्पष्ट ।

बाप चुप चुप, पूत लप भूप—(च०) स्पष्ट ।

बाप जनम ना धाये पान, दांत निपाड़े गये
पिरान, उड़ गई चुटिया रह गये फान—जब
किसीने कोई कतूत न करी हो और वह लंबी
चौड़ी यत्ने करता हो, तब क० ।

बाप टेनी मां कुलंग, लड़के निकले रंग विरंग—
स्पष्ट । दोगल्लोंको क० ।

बाप डोम और डोम ही दादा, कहे मियां में
सरफा ज़ादा—(च०) जब कोई अपनी शेरनी बधारता
है, तब क० ।

बाप दिखा या गोर घता— } या तो हमारी चीज़
बाप दिखा या पिंडा पार— } लामो, नहीं तो
उसका पता बताओ । जब किसीकी कोई चीज़ खो
जाती और वह दूसरेको उसका पता लगानेके लिये
बाध्य करता है तब, क० ।

बाप न दादे, मार खां ज़ादे—जब कोई छोटा
आदमी अपनी भूँटी शेरनी करता है, तब उसे
ब्यंगसे क० ।

बाप न दादे, सात पुरत हरामज़ादे—ऊ० दे० ।

बाप न मारो पीड़री, घेटा तीरंदाज़—जो लम्बी
चौड़ी हांक्ता है, उसे ब्यंगसे क० ।

बाप नरहटिया, पूत भगतिया—(च०) स्पष्ट ।

बाप पंडित पूत छिनरा—(च०) स्पष्ट ।

बाप घेठमें पूत व्याहने चला—असंभव घातपर क० ।

बाप घनियां पूत नवाब—(च०) स्पष्ट ।

बाप घेटोंकी लड़ाई क्या—बाप घेठका भगड़ा घोड़े
समय तक रहता है ।

बाप भला न भैया, सघसे भला रुपैया—खया
समोसे नाता तोड़ बाँधता है ।

बाप भिखारी, पूत भंडारी—अपने अपने नसीबका
फल है ।

बाप मरा घर घेंटा भया, इसका टोटा उसमें
गया—एक कामका घाटा जब दूसरे कामसे पूरा हो

जाय, तब क० ।

बाप मरा वह घेंटा जाया, बाका घाटा यामें
आया—ऊ० दे० ।

बाप मरि हैं, तब पूत राज करि हैं—(प०) स्पष्ट ।

बाप मरे पर, वौल वटेंगे—दे० “दादा मरेंगे”

बाप मारका चर है—जानी दुग्मनोपर क० ।

बापसे घेठा सघाया—बापसे घेठा बढ़कर निकले,
तब क० ।

बापसे चर पूतसे सगाई—स्पष्ट ।

बाप ही मारें और बाप ही बाप पुकारें—जिससे
कष्ट मिले उसीको सहामताके लिये हुलायें, तब क० ।

बापै पूत सिपाह पै घोड़ा, बहुत नहीं तो घोड़ा
धोड़ा—घेठपर बापका और घोड़ेपर सवारका कुछ
न कुछ अंतर पड़ता ही है । अक्सर लोग ऐसा भी
कहते हैं “मां पर पूत पिता पर घोड़ा” जो अशुद्ध है ।

बाघरे गांघमें ऊंट थाया, लोगोंने जाना परमेश्वर
आया—मूखोंको साधारण ही चीज़ अनोखी होती है ।

बाघा आदमके बहुतकी चीज़ (चा वात)—
बहुत पुरानी चीज़ वा बातपर क० ।

बाघा कमाये घेठा उड़ाये—स्पष्ट । दे० ‘तेली जोड़े’

बाघाके राजे सतुआ महगल, सैयाँके राजे सब
सहतल—(ज० भो०) जब शरीय लड़कीकी शादी

किसी धनी घरमें होती है, तब क० ।

बाघाजीका ठेक्स घड़—(प०) दीर्घशोचीको क० ।
ठेक्स=शंगूटा ।

बाघाजीके बाघाजो, बजंत्रीके बजंत्री—जब एक
चीज़से दो काम निकलते हों, तब क० ।

बाघाजी खेले बहुत हो गये हैं, बघा भूखे मरेंगे
तो आप चले जायेंगे—जब किसीके यहाँ मुफ़्तख़ोर
बहुत जमा हो जायें और उनका गुज़ारा न हो,
तब क० ।

बाघा मरे निहालू जग्मे वही तीनके तीन—
दे० “बाप मरा घर घेंटा भया”

बाघा सीधें इस घरमें, और टांग पसारें उस
घरमें—दो काम एक साथ नहीं होते । जब काम एक
जगह होता है और उसका सामान दूसरी जगह

हैव्यार किया जाता है, तब भी क० ।

धामनका बेटा धावन वर्ष तक पौंगा—व्यंगसे
ब्राह्मणोंपर क० । क्योंकि वे केवल दान या भिन्ना
हीपर भरोसा रखते हैं और कोई काम काज नहीं
करते

धामन कुत्ता धानियां, जात देख गुरार्य—यह तीनों
अपनी ज्ञातवालोंको नहीं देख सकते ।

धामन कुत्ता हाथी, यह नहीं ज्ञातके साथी—
क० दे० ।

धामन जीमें ही पतियाय—(१) ब्राह्मण खाने हीसे
विश्वास करता है । (२) ब्राह्मण जब खाले तभी उस-
पर विश्वास करना चाहिये, क्योंकि बहुतसे कामोंमें
ये दक्षिणा उहराये या मन मानता नेग लिये बिना
पहिले भोजन नहीं करते ।

नित प्रति परतिष्ठा करे, भिन्ने न पियसों खालि ।

लोग प्रति सांची करी, ब्राह्मण जैसे कालि । (की०र०की०)
कलका विश्वास नहीं ।

धामन जो चोरी करे, विधवा पान चवाय ।
क्षत्री जो रणसे भगे, जन्म अकारथ जाय—
स्पष्ट ।

धामन नाचे, धोबी देखे—उल्टी बातपर क० ।

धामन धचन परमान—ब्राह्मणकी बातको प्रामाणिक
मानना चाहिये ।

इसपर एक कहानी है । एक ब्राह्मण गंगा किनारे
किसी जाटकी याद कराने लगे । चंदनके अभावमें जब
उन्होंने उसके माथेमें महीका तिन्त्रक लगाया तब जाटने
कहा कि आपको चंदन लगाना चाहिए । ब्राह्मणने कहा
“धामन धचन परमान, गंगाजीकी रणका, नू चंदन करके
जान ।” जाट चुप रह गया । जब दक्षिण दिनेका समय
आया और ब्राह्मणने उससे गोदानका संकल्प करनेकी
कहा तो उसने एक मेंडुकी छदमें लेकर उनको देना
चाहा, तब ब्राह्मण देना बोले कि यह क्या ? सुभ्र गौ या
उसका उचित मूल्य देना चाहिये । जिसके उषरमें जाट-
ने कहा “जाट धचन परमान, गंगाजीकी मेंडुकी, नू
कपिजा करके जान” ।

धामन बेटा लोटे पोटे, मूल व्याज दोनों धोटे

(भा०) ब्राह्मण जब तक अपना

धसूल नहीं कर लेता तब

धामन भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत—
झाली जनेक गलेमें डाल लेनेसे ब्राह्मण नहीं होता
उसको अपनी कर्म जानना चाहिए ।

धामन मंत्री भाट खवास, उस राजाका होवे नास
स्पष्ट ।

वायस करि चह खगपति समता । सिंधु समान
होय किमि सरिता—(तुलसी) कौशा गङ्गकी और
नदी समुद्रकी बराबरी नहीं कर सकती ।

वायस पालिय अति अनुरागा । होहि निरामिय
कबहु कि कागा—(तुलसी) कौशको जैसे ही प्यार-
से पालो पर वह मांस खाना नहीं छोड़ता ।

वार बराबर वार है, तापर चलत वयार ।
रघुवर पार उतारिये, अपनी ओर निहार—
जब कोई धर्म संकटमें पड़ता है, तब क० ।

वार वार चोरकी, एकवार, साहकी—कमी न
कमी चालाकी खुल ही जाती है ।

वारसी वारीकी, और मूसरसे भरे—दे० “जहां
सुरे न जाय”

वारह गांधका चौधरी, भस्सी गांवका राव ।
अपने काम न आय तो, ऐसी तैसी में जाव—
चाहे कैसाही बड़ा क्यों न हो जो अपने काममें न
आये तो किसी कामका नहीं ।

वारह वफातकी खिचड़ी, आज हे तो कल नहीं—
(मु०) जो बहुतापत थोड़ी देरके लिये रहती है ।
बारह वफात ताः १२ सफरकी होती है, जो मुहम्मद
के मरनेका दिन है । सभी मुसलमानोंके यहाँ उनकी
यादगारमें खिचड़ी बांटी जाती है । और इसीको
फातिहा दुषाज़दहम् कहते हैं ।

वारह वरसका कोढ़ी, एक ही इतवार पाक—
असंभव वा आश्चर्य बातपर क० ।

वारह वरस काठमें रहे, चलती वफा पांवसे गये
छटनेके वक्त लुयोके मारे अर्थात् होनेके कारण
गिर पड़े । दुभाग्यपर क० ।

वारह वरसकी कन्या, और छठी रातका घर,
माने सोकर—वाल विवाह पर क० ।

वरसकी पटिया, वीस वरसकी टटिया—
दुषाग जल्दी आ जाता है

इसलिये क० ।

वारह वरसके को वेद क्या, और अठारह वरसके को कौद क्या ?—स्पष्ट ।

भरै तरुनि तन सनमें जोय, मिलन मान में ओ गति धोय ।
खोग, उन्निकी वार न भेद, वारह वरसकी का ऐ वेद ।
पर्धा वारह वर्ष की अवस्था जिसकी है, उसके लिये वेद
की आवश्यकता नहीं उसको सब बात लक्षकपनमें
जायगी ।

वारह वरस दिल्लीमें रहे भाइ हो भोंका—जय
कोई अच्ये स्थानमें रहकर भी अपनी उन्नति न कर
सके, तब क० ।

वारह वरस पीछे घूरेके भी दिन फिरते हैं—
वारह वरस पर सभीके दिन फिरते हैं । कभी न
कभी अवश्य अच्ये दिन आवेंगे ।

वारह वरस सेई काशी, भरनेको मगहकी माटी
सतकर्म करनेपर भी जिसका अंत खराब हो उसे क० ।

वारह बाट अठारह पैडे—जब कोई बहुतसे काम
सामने देखकर बचड़ा जाय कि कौनसा काम करूँ,
तब क० ।

वारहमें तीन गये तो रही खाक—तीन महीने
बरसातके सूखे ही बोल जाय अर्थात् अन्न न पैदा
हो, तब क० ।

वारह हाथकी काफड़ी तेरह हाथका धीज—
असंभव बातपर क० ।

चारू जैसी भुर भुरी, धौली जैसी धूप । मीठी
ऐसी कुल, नहीं, जैसी मीठी चूप—स्पष्ट ।

बारकी मां और बूढ़ेकी जोरू न मरे—बालककी
मा और बूढ़ेकी जोरूका मरना बहुत दुखदाई
होता है ।

बारै पूत हरीरी खेती, हूँ हूँ क्यधौं किनने देखी
क्योंकि इनसे खल मिलेगा या नहीं, इसका कुछ
निश्चय नहीं रहता ।

बाल उखाड़नेसे मुर्दा हलका नहीं होता—
असलीलताके लिये पाठ भेद किया गया है । जब
किसी बड़े काममें कोई नाममात्रको सहारा दे
जिससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध न हो, तब क० ।

बालक जाने हीया, मानस जाने कीया—बालक
प्यारसे और सयाना कामसे राजी रहता है ।

बालका कंबल करना—तिलका ताल करना । थोड़ी
बातको बहुत बढ़ाकर कहना ।

बालकी खाल निकालना—न्यर्थकी उन्नताचीनी
करना ।

बालकी खाल हिन्दीकी चिन्दी—तीम बुद्धिवाले-
पर क० ।

बालके हाथमें साँग ससाको—भूठी वा असंभव
बातके लिये क० । इरगोशके साँग नहीं होते ।
यह मिथ्याबाची सुझारि । यदि बचनन चित्तमें धारि ॥
कहे पखानो जौ बुधिवान । सुने सचाके सौंग न काण ॥
खरशाके सौंग यह कानसे कभी नहीं सुना ॥

बाल जंजाल पलै तो पाल नहीं मूछोंको टाल—
आसतोको क० ।

बाल जंजाल बाल सिंगार—एक ही चीज़ कौमी
अच्छी लगती है कभी भारी पड़ जाती है ।

बाल बाल गुनहगार—(मु० ज०) जो बहुत नपत्रा-
से अपना पूरा दोष स्वीकार करता है उसपर क० ।

बाल बांधा चोर—बालाक चोरको क० ।

बाल बांधा गुलाम—जो कमी हट नहीं सकता ।

बाल बांधी कौड़ी मारता है—अच्छा निघाना
लगानेवालेको क० ।

बाल हठ तिरिया हठ राज हठ—ये तीनों जल्दी
नहीं हटते ।

बालकी भीत, ओछेका संग, पतुरियाकी प्रीति,
तितलीका रङ्ग—स्थायी नहीं होते ।

बालों नाह छिनाला, और कागों हाथ संदेसा—
(प०) जिस कामसे अर्थ सिद्ध न हो उसपर क० ।

बाल मराल कि मंदर लेहीं—(तुल०) एकुमार
लड़का अधिक धोक नहीं उठा सकता । जब किसी
एकुमार भ्रातृमीको कठिन काम दिया जाय और
वह उससे न हो सके, तब क० ।

बाचन करकी लाँएका बड़े चट्टे असमान—(वृन्द)
जैसा मालिक हो वैसा ही नौकर हो तब क० । जैसे
बाचनजीके हाथकी लकड़ी भी उनके शरीर बड़नेपर
उसी अनुसार बढ़ गई थी ।

बाचन तोले पाव रत्ती—(व्य०) बिलकुल ठीकके क० ।

हेव्यार किया जाता है, तब भी क० ।

वामनका बेटा चावन वर्ष तक पाँगा—व्यंगसे ब्राह्मणोंपर क० । क्योंकि ये केवल दान या भिन्ना हीपर भरोसा रखते हैं और कोई काम काज नहीं करते

वामन कुत्ता बानियां, जात देख गुरार्य—ग्रह तीनों अपनी ज्ञातवालोंको नहीं देख सकते ।

वामन कुत्ता हाथी, यह नहीं ज्ञातके साथी—
ऊ० दे० ।

वामन जीमें ही पतियाय—(१) ब्राह्मण खाने हीसे विश्वास करता है । (२) ब्राह्मण जब खाले तभी उसपर विश्वास करना चाहिये, क्योंकि बहुते कर्मोंमें ये दक्षिणा ठहराये था मन मानता नेग लिये बिना पहिले भोजन नहीं करते ।

नित प्रति परतिज्ञा करे, मिलै न प्रियसों भालि ।

लोग उज्जि साँची करी, ब्राह्मण जैवें कालि । (लो०२००की०)

कलका चिन्वास नहीं ।

वामन जो चोरी करे, विध्रवा पान चथाय ।
क्षत्री जो रणसे भगे, जन्म अकारथ जाय—
स्पष्ट ।

वामन नाचे, घोबी देखे—उल्टी बातपर क० ।

वामन वचन परमान—ब्राह्मणकी बातको प्रामाणिक मानना चाहिये ।

इसपर एक कहानी है । एक ब्राह्मण गंग किनारे किसी जाटको श्राद्ध कराने लगे । वं दनके पभाषमें जब उन्होंने उसके माथेमें महीका तिनक लगाया तब जाटने कहा कि आपकी वं दन लगाना चाहिए । ब्राह्मणने कहा "वामन वचन परमान, गंगातीकी देणका, वृ वं दन करके जान ।" जाट चुप रह गया । जब दक्षिण दिनेका समय आया और ब्राह्मणने उससे गोदानका संकल्प करनेकी कक्षा तो उसने एक मेंडुकी द्वादमें लेकर उनकी देना चाहा, तब ब्राह्मण देवता बोले कि यह क्या ? तुम्हें गौ या उसका उचित मूल्य देना चाहिये । जिसकी वचनमें जाटने कहा "जाट वचन परमान, गंगातीकी मेंडुकी, वृ कपिजा करके जान" ।

वामन बेटा लोटे पोटे, मूल व्याज दोनों घोट्टे—

(मा०) ब्राह्मण जब तक अपनी पावना मय व्याजके वसूल नहीं कर लेता तब तक नहीं छोड़ता ।

वामन भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत—
झाली जनेऊ गलेमें डाल लेनेसे ब्राह्मण नहीं होता उसको अपना कर्म जानना चाहिए ।

वामनमंत्री भाट खंशस, उस राजाका होवे नास स्पष्ट ।

वायस करि चह खगपति समता । सिंधु समान होय किमि सरिता—(हुलसी) कौश्या गहड़की और नदी समुद्रकी बराबरी नहीं कर सकती ।

वायस पालिय अति अनुरागा । होहिं निरामिय कबहुं कि कागा—(हुलसी) कौएको कैसेही प्यारसे पालो पर वह मांस खाना नहीं छोड़ता ।

वार बराबर वार है, तापर चलत वयार । रघुवर पार उतारिये, अपनी ओर निहार—
जब कोई धर्म सफ्टमें पड़ता है, तब क० ।

वार वार चोरकी, एकवार, साहकी—कभी न कभी चालाकी खुल ही जाती है ।

वारसी वारीकी, और मूसरसे मर—दे० "जहां सुई न जाय"

वारह गांवका चौधरी, अस्सी गांवका राव । अपने काम न आय तो, ऐसे तैसी में जाव—
चाहे कैसाही बड़ा क्यों न हो जो अपने काममें न आवे तो किसी कामका नहीं ।

वारह बफातकी खिचड़ी, आज हे तो कल नहीं—
(मु०) जो बहुतायत थोड़ी देरके लिये रहता है ।
वारह वफात ताः १२ सफरको होती है, जो मुहम्मद के मरनेका दिन है । सभी मुसलमानके यहां उनकी यादगारमें खिचड़ी बांटी जाती है । और इसीको फ्रातिहा हुआज़दहम् कहते हैं ।

वारह वरसका कोठी, एक ही इतवार पाक—
असंभव वा आश्चर्य बातपर क० ।

वारह वरस काठमें रहे, चलती दफ्ता पांवसे गये छूटनेके वक्त खुरीके मारे अधीर होनेके कारण गिर पड़े । दुर्भाग्यपर क० ।

वारह वरसकी कन्या, और छठी रातका वर, मन माने सोकर—वाल विवाह पर क० ।

वारह वरसकी पठिया, वीस वरसकी टटिया—
इस देयमें धियोंको बुझापा जल्दी आ जाता है

इसलिये क० ।
घारह घरसके को वेद क्या, और अठारह घरसके को कैद क्या ?—स्पष्ट ।

भई तबनि तन मनमें लीय, मिलन मान में जो गति होय ।
लोग छलिकी पाव न भेद, घारह घरसको का है वेद ।
पर्या घारह वर्षकी अवस्था जिसकी है उसके लिये वेद
को आवश्यकता नहीं उसकी सब बात लड़कपनमें
जायगी ।

घारह घरस दिल्लीमें रहे भाड़ ही भोंका—जय
कोई अच्छे स्थानमें रहकर भी अपनी उन्नति न कर
सके, तब क० ।

घारह घरस पीछे घूरके भी दिन फिरते हैं—
घारह घरस पर सभीके दिन फिरते हैं । कभी न
कभी अकस्य अच्छे दिन आवेंगे ।

घारह घरस सेई फाशी, मरनेको मगहकी माटी
सतकर्म करनेपर भी जिसका अंत सराय हो उसे क० ।

घारह घाट अठारह पैडे—जब कोई बहुतसे काम
सामने देखकर घबड़ा जाय कि कौनसा काम करूँ,
तब क० ।

घारहमें तीन गये तो रही खाक—तीन महीने
बरासाके सूखे ही बीत जाय अर्थात् अन्न न पैदा
हो, तब क० ।

घारह हाथकी काफड़ी तेरह हाथका बीज—
असंभव बातपर क० ।

यारू जैसी भुर भुरी, धौली जैसी धूप । मीठी
पेसी कुछ नहीं, जैसी मीठी चूप—स्पष्ट ।

घारकी मां और बूढ़की जोरू न मरे—बालककी
मा और बूढ़की जोरूका भरना बहुत दुखदाई
होता है ।

घारे पूत हरीरी खेती, हूँ ही कथ धौँ किनने देखी
क्योंकि इनसे छल मिलेगा या नहीं, इसका कुछ
निश्चय नहीं रहता ।

घाल उजाड़नेसे मुर्दा हलका नहीं होता—
अश्लीलताके लिये पाठ भेद किया गया है । जब
किसी बड़े काममें कोई नाममात्रको सहारा दे
जिससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध न हो, तब क० ।

घालक जाने हीया, मानस जाने कीया—घालक
प्यारसे और सयाना कामसे राजी रहता है ।

घालका कंथल करना—तिलका ताल करना । थोड़ी
बातको बहुत बढ़ाकर कहना ।

घालकी खाल निकालना—व्यर्थकी उन्नताचीनी
करना ।

घालकी खाल हिन्दीकी चिन्दी—तीम बुद्धिवाले-
पर क० ।

घालके हाथमें सींग ससाको—भूड़ी वा असंभव
घातके लिये क० । खरगोशके सींग नहीं होते ।

यह मिथावाची सुकुमारि । याके वचन न बितमें धारि ॥
कई पखामो श्री बुधियान । सुने सचाकि सींग न काम ॥
खरफाके सींग यह कानरी कभी नहीं सुना ॥

घाल जंजाल पलै तो पाल नहीं मूछोंको डाल—
प्राप्तसौको क० ।

घाल जंजाल घाल सिंगार—एक ही चीज़ कभी
अच्छी लगती है कभी भारी पड़ जाती है ।

घाल घाल गुनहगार—(मु० ज०) जो बहुत नम्रता-
से अपना पूरा दोष स्वीकार करता है उसपर क० ।

घाल बाँधा चोर—घालाक चोरको क० ।

घाल बाँधा गुलाम—जो कभी हट नहीं सकता ।

घाल बाँधी कौड़ी मारता है—अच्छा निधाना
लगानेवालेको क० ।

घाल हठ तिरिया हठ राज हठ—ये तीनों जरूरी
नहीं हूटते ।

घालकी भीत, ओछेका संग, पतुरियाकी प्रीति,
तितलीका रङ्ग—स्थायी नहीं होते ।

घालों नाल छिनाला, और फागों हाथ संदेसा—
(प०) जिस कामसे अर्थ सिद्ध न हो उसपर क० ।

घाल मराल कि मंदर लेहीं—(तुल०) छकुमार
लड़का अधिक बोक नहीं उठा सकता । जब किसी
छकुमार आदमीको कठिन काम दिया जाय और
वह उससे न हो सके, तब क० ।

घावन करकी लष्टिका बड़े बड़े असमान—(वृन्द)
जैसा मालिक हो वैसा ही नौकर हो तब क० । जैसे
घावनजीके हाथकी लकड़ी भी उनके शरीर बढ़नेपर
उसी अनुसार बढ़ गई थी ।

घावन तोले पाव रत्ती—(व्य०) बिलकुल ठीकसे क० ।

हैय्यार किया जाता है, तब भी क० ।

यामनका घेटा वाचन वर्ष तक पौंगा—व्यंगसे
प्राह्वणोंपर क० । क्योंकि वे केवल दान या भिन्ना
हीपर भरोसा रखते हैं और कोई काम फाज नहीं
करते

यामन कुत्ता बानियां, जात देख गुरार्य—यह तीनों
श्रपनी ज्ञातवालोंको नहीं देख सकते ।

यामन कुत्ता हाथी, यह नहीं ज्ञातके साथी—
ऊ० दे० ।

यामन जीमें ही पतियाय—(१) प्राह्वण खाने हीसे
विश्वास करता है । (२) ब्राह्मण जब खाले तभी उस-
पर विश्वास करना चाहिये, क्योंकि बहुतेसे कामोंमें
वे दक्षिणा उहराये या मन मानता नेग लिये बिना
पहिले भोजन नहीं करते ।

नित प्रति परतिष्ठा करे, मित्र न पियसों चालि ।

लोग उक्ति सांची करी, ब्राह्मण जेधे कालि । (लो०र०की०)
कलका विप्रवास महर्षि ।

यामन जो चोरी करे, विधवा पान चथाय ।
क्षत्री जो रणसे भगे, जन्म अकारथ जाय—
स्पष्ट ।

यामन नाचे, घोषी देखे—उल्टी बातपर क० ।

यामन बचन परमान—ब्राह्मणकी बातको प्रामाणिक
मानना चाहिये ।

इसपर एक कहानी है । एक ब्राह्मण गंगा किनारे
किसी आठको श्राद्ध कराने लगे । वं दनके अभावमें जब
उन्होंने उसकी माथेमें गद्दीका तिनक लगाया तब आठने
कहा कि आपकी वं दन लगाया, चाहिए । ब्राह्मणने कहा
“यामन बचन परमान, गंगाजीकी रेषका, तू वं दन करके
ज्ञान ।” आठ चुप रह गया । जब दक्षिण दिनेका समय
आया और ब्राह्मणने उससे गौदानका संकल्प करनेकी
कहा तो उसने एक मंडुकी हाथमें लेकर उगकी देना
चाहा, तब ब्राह्मण देवता बोले कि यह क्या ? तुम्हें गौ या
उसका उचित मूल्य देना चाहिये । जिसके उत्तरमें आठ-
ने कहा “आठ बचन परमान, गंगाजीकी मंडुकी, तू
कपिला करके जान ।”

यामन घेटा लोटे पोटे, मूल व्याज दोनों छोटे—

(प्रा०) ब्राह्मण जब तरु श्रपना पावना मय व्याजके
बसूल नहीं कर लेता तब तक नहीं छोड़ता ।

यामन भये तो क्या भये, गले लपेटे सूत—
खाली जनेक गलेमें डाल लेनेसे प्राह्वण नहीं होता
उसको श्रपना कर्म जानना चाहिए ।
यामनमंत्री भाट खवास, उस राजाका होये नास
स्पष्ट ।

वायस करि चह खगपति समता । सिंधु समान
होय किमि सरिता—(तुलसी) कौशा गहड़की और
नदी समुद्रकी बराबरी नहीं कर सकती ।

वायस पालिय बति अनुरागा । होहिं निरामिप
कथहुं कि कागा—(तुलसी) कौएको कैसेही प्या-
से पालो पर वह मांस खाना नहीं छोड़ता ।

वार वरावर वार है, तापर चलत यवार ।
रघुवर पार उतारिये, अपनी ओर निहार—
जब कोई धर्म संकटमें पड़ता है, तब क० ।

वार वार चोरकी, एकवार, साहकी—कभी न
कभी चालाकी खुल ही जाती है ।

वारसी वारीकी, और मूसरसे भर—दे० “जहां
सुई न जाय”

वारह गांवका चौधरी, बरसी गांवका राव ।
अपने काम न आय तो, ऐसी तैसी में जाव—
चाहे कैसाही यज्ञ क्यों न हो जो श्रपने काममें न
आये तो किसी कामका नहीं ।

वारह वफातकी खिचड़ी, भाज है तो कल नहीं—
(मु०) जो बहुतायत थोड़ी देरके लिये रहता है ।
वारह वफात ताः १२ सफरको होती है, जो मुहम्मद
के मरनेका दिन है । सभी मुसलमानोंके यहां उनकी
यादगारमें खिचड़ी बांटी जाती है । और इसीको
फातिहा दुआज़दहम् कहते हैं ।

वारह वरसका कोढ़ी, एक ही इतवार पाक—
असंभव वा श्रावर्च्य बातपर क० ।

वारह वरस काठमें रहे, चलती वफा पांचसे गये
छटनेके वक्त खुगीके मारे अधीर होनेके कारण
गिर पड़े । दुर्भाग्यपर क० ।

वारह वरसकी कन्या, और छठी रातका घर,
मन माने सोकर—बाल विवाह पर क० ।

वारह वरसकी पठिया, वीस वरसकी टटिया—
इस देशमें धियोंको बुझापा जल्दी था जाता है

विजली कांसे हीपर गिरती है—दुःख भी यहाँ ही पर पड़ता है।

(१) रसधर्म लखि सुभा भाम,
गघो दीरि पिय कर लियो काम ।
कहे पखानो कविरस भरे,
कांसे ही पर-विजुषी परे । (ली० २० कौ०)

(२) बहुत द्रव्य संघे जहाँ, चोर राज भय होय ।
कांसे जपर भीजरी, परति कहे सब कोय ॥ (इन्द्र)

विजली चमके मेहा वरसे—जय विजली चमकती है
तब पानी वरसता है।

घिटीरैसे उपले ही निकलेंगे—यदियेके तोड़नेसे
कंठे ही निकलते हैं।

विदाके सम्य सय कंठ लगावै—लड़की विदा होती
है तो सय गले लगति हैं।

विद्या धन उद्यम विना, कही जुपाये कौन ।
विना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखाकी पौन—

(इन्द्र) परिश्रम किये विना कोई काम पूरा नहीं
होता।

विद्यामें विद्या बसे—स्पष्ट।
विद्या लोहिके चने हैं—पढ़ना बहुत कठिन है।

विद्या हि परम धनम्—(सं०) स्पष्ट।
विद्या धन सब धननते, सन कइत सरदार ।
बड़ी मोल नहिं घटत पर, दिन दिन होत उदार ।

विधि का लिखा को मेहनतहारा ?—होनहार कभी
नहीं मित्यी।

विधि प्रपंच गुण अवगुण साना—दुनियाँमें भलाई
सुराई दोनों मिली हैं।

विन अवसर भय तेरह जोई, जानेहु अधम नारि
जग सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

विन भाई कोई नहीं मरता—विना माँत कोई नहीं
मरता। जय कोई ईश्वरीय घटनासे बच जाय, बहुत
फलेग पाकर आत्मप्यात किया चाहे और न मरे।
ऐसी संख्या भोगे जिससे मर जाना ही अच्छा जान
पड़े अथवा जिसे कोई शत्रुता वरा मार डाला चाहे
और बच न मरे, तब क०।

गो रफ़ल अपना काम करता है ।
धेर भी भीतछोसे मरता । (पदपर)

विन कुटनी छिनाला नहीं—बिना दलालके रोज़गार-
में वृद्धि नहीं होती।

विन गुब होहि कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग
विनु । गावहि वेद पुराण, सुख कि लहिय हरि
भक्ति विनु—(तुलसी) स्पष्ट।

विन घरनी घर पांदत है—दे० 'घर घरवालीसे।'
विन घरनी घर भूतका डरा—जिस घरमें श्रौत
नहीं है उस घरमें भूतोंका वास होता है।

विन चूची चारह वर्षतक लड़केको रखता है—
जो मूंडी प्रतिज्ञा करता है, उसपर क०।

विन जाने कौन माने ?—स्पष्ट।
विन जुलाहे ईद—(सु०) नहीं होती। क्योंकि वह
नमाज़ पढ़नेके लिये दरी बनाता है।

विन जुलाहे नमाज़ नहीं, विन ढोलक तज़ीर नहीं—
(सु०) तज़ीर=सजा। बिना जुलाहके नमाज़ नहीं
होती क्योंकि वही दरी बनाता है और बिना
मुनादीके बड़ी मज़ा नहीं दी जाती।

विन ताये खोटो खरो, गहनो लहै न कोय—
विना जांचे किसीका साथी न बनना चाहिये।

विन पंखन ही चहत उड़ना—असंभव बात पर क०।
विन पति, बहु पति, बाल पति, पतनी पति जहँ
होय । नरपुरकी कहुको कहे, सुरपुर यस न कोय—

जिस जगह कोई मालिक न हो, जहाँ बहुतसे
मालिक हों, जहाँ लड़का मालिक हो, अथवा धी
मालिक हो उस जगहका इन्तजाम ठीक नहीं होता—
जिस रियासतमें उपरोक्त चार बातोंमेंसे एक भी
हो, यहाँ क०।

विन परचय परतीत नहीं—स्पष्ट।
विन पैसे साहूकार—स्पष्ट।

कों चमकते थंग जराये, प्यारि नाम कइ ज्ञान धराये ।
योग उक्तिमें सोख लजाये, विन दामनकी घाड़ कहाये ॥

विन पैसा फौडीके तेली साहू, टूटी हांडी फाँडू
साहू—तेल ही तेलीकी पूँजी है और हांडीका टुकड़ा
ही भड़भूजेकी पूँजी है।

विन बहू प्रीत नहीं—स्पष्ट अथने जमाईको तमी-
तरु प्यार करता है जयतक उसकी लड़की जीती
रहती है।

चाव न चतांस, तेरा आंचल क्यों कर डोला,
पूत न भतार, तेरा ढेंढा क्योंकर फूला—(ज०)

जो बिना कारण इतराये उसपर क० ।

चावल भेजी बनजको, गई डगरिया भूल, ठगवा
मगमें मिल गये, लाम रह्यो ना मूल—मूर्खपरक० ।

चावलीको आग चताई, उसने ले घरमें लगाई—
स्पष्ट ।

चावली छाटके चावले पाये, चावली रांडके
चावले जाये—जैसेके तैसे ही होते हैं ।

चावले कुत्तने काटा है—जो मूर्खपनको धातें करे
उसे क० ।

वासनसे वासन खडकता ही है—जहां चार
आदमी रहते हैं वहां भगड़ा होता ही है ।

वासी कढ़ीको उवाल आया—(१) अकरुमात् क्रोध आ
जानेपर क० । (२) गई वातका जिक्र करनेपर क० ।

वासी फूलोंमें वास नहीं, परदेशी वालम तेरी
आश नहीं—स्पष्ट ।

वासी घचे न कुत्ता खाय—(१) जब कामका थोड़ा
ही हिस्सा रह जाता हो तब उसे पूरा करनेके लिये
क० । (२) कंगाल आदमीपर भी, जिसके खानेके
बाद रोटीका टुकड़ा भी नहीं बचता, क० ।

वासी भातमें खुदाका क्या निहोरा (वा नाता)—
जो चीज़ आपसे आप मिल जाती है उसके लिये
दूसरेकी खुशामद क्यों करें । दे० “जो कबीर
काशीमें ”

बाहरके खांय, घरके गीत गांय } जब
बाहरके तो माल मारें, घरके गावें गीत } कोई
बाहरमें तो फ़ज़ल खर्च करे और घरमें तंगी करे,
तब क० ।

बाहर टेढ़ो फिरत है बांवी सधो सांप—
दे० “सांप अपने बिलमें”

बाहर त्याग, भीतर सुहाग—बगला मगतको क०

बाहर मियां अलझे तलझे घरमें सूहे पकी
बाहर मियां छैल चिकनियां, घरमें लिबड़ी जोय }
बाहर मियां भंग भंगाले, घरमें जंगी जोय }

जिसका पाहरमें बहुत आढम्बर हो और घरमें कुछ
न हो, उसे क० ।

बाहर मियां पंज हजारी, घरमें धीवी करमों मारी }
बाहर मियां सूवेदार, घरमें धीवी भोंके भाड़ }
बाहर लंबी लंबी धोती, भीतर मड़वेकी रोटी }
उ० दे० ।

बिंध गया सो मोती, रह गया सो पत्थर—
जो काम हो जाय उसीमें लाभ है और जो न हो
वह बेकार है ।

बिगड़ी तह फिर नहीं घैठती—(व्य०) बिगड़ा काम
नहीं छधरता ।

बिगड़ी लड़ाई, बख़तर पोशोंके स्त्रि—लड़ाईकी
हासे अफ़सरकी बदनामी होती है ।

बिगाड़ संवार ईश्वरके हाथ—बनना बिगड़ना
ईश्वराधीन है ।

बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं, मिलत एक दारुण
दुख देहीं—(तुल०) दुष्टके मिलनेसे और सज्जनके
बिछुड़नेसे कष्ट होता है ।

बिच्छूका काटा रोवे, सांपका काटा सोवे—
मीठी मार बुरी होती है ।

बिच्छूका मंत्र न जाने, सांपके पिटारमें हाथ दे—
जो अपनी योग्यतासे बाहर काम करता है, उस
पर क० ।

जानति पति न रिभांरवी, गहति सु छपति नाथ ।
जान न बीबी मंत्रकी, दीजति अहि पित हाथ ।
(श्लो० २० की०)

रस पनरस समके न कहु, पदे प्रेमकी नाथ ।
बीछू मंत्र न जानई, सांप पिटार हाथ । (४७)

बिछौनेसे लग गया—मरने परहैं, अब न उठेगा ।
बहुत बीमारको क० ।

विजया खैवो सहज है मौजे कठिन निदान—
दे० “भंग पीना आसान है”

विजया पीवे सेज्या सोवे, ताके वेद पिछाड़ी रोवे
भंगड़ोंका कहना है ।

विजलिक मारल, लुभाउ देख भागे—(५०) विज-
लीका मारा सुधांती देख कर भागता है । दे०
“दाप्यो दूध”

विजली कसि हीपर गिरती है—दुःख भी वड़ों ही पर पड़ता है।

(१) रथचलमें लखि सुधा धाम,
गङ्गी हीरि मिय कर बियो काम।
कई पखानो कविरस भरे,
काँसि ही पर-विजुकी परे। (को०-२० की०)

(२) बहुत द्रव्य संच जहा, घोर राज भय होय।
काँसि ऊपर शीजरी, परति कइँ सच कोय ॥ (हन्द)

विजली चमके मेहा बरसे—जब विजली चमकती है तब पानी बरसता है।

विद्यारिमेंसे उपले ही निकलेंगे—बट्टियेके तोड़नेसे कंठ ही निकलते हैं।

विद्याके समय सब कंठ लगचैं—लड़की विद्या होती है तो सब गले लगाते हैं।

विद्या धन उद्यम विना, कही जुपाये कोन।
विना डुलाये ना मिले, ज्याँ पखाकी पौन—
(वृन्द) परिश्रम किये विना कोई काम पूरा नहीं होता।

विद्यामें विवाद बसे—स्पष्ट।

विद्या लोहेके खने हैं—पढ़ना बहुत कठिन है।

विद्या हि परम धनम्—(सं०) स्पष्ट।

विद्या धन सब धननते, सन कछत सरदार।
बको मोल गहिं घटत पर, दिन दिन होत सटार।

विधिका लिखा को मेटनहारा ?—दोनहार कभी नहीं मिटती।

विधि प्रपंच गुण अवगुण साना—दुनियाँमें भलाई धुराई दोनों मिली हैं।

विन अवसर भय तेरह जोई, जानेहु अधम नारि
जग सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

विन भाई कोई नहीं मरता—विना मौत कोई नहीं मरता। जब कोई ईश्वरीय धटनासे बच जाय, बहुत क्लेश पाकर आत्मघात किया चाहे और न मरे, ऐसी चंत्रणा भोगे जिससे मर जाना ही अच्छा जान पड़े अथवा जिसे कोई शत्रुता बय मार डाला चाहे और वह न मरे, तब क०।

गो रक्षक बचना काम करता है।
गिर भी मौतघोसे मरना (अकबर)

विन कुटनी छिनाला नहीं—विना दलालके रोजगारमें श्रद्धि नहीं होती।

विन गुरु होहिं कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग
विनु। गावहिं वेद पुराण, सुख कि लहिय हरि
भक्ति विनु—(तुलसी) स्पष्ट।

विन घरनी घर पादत है—दे० 'घर धरवालीसे।'

विन घरनी घर भूतका डेरा—जिस घरमें शौरत नहीं है उस घरमें भूतोंका बास होता है।

विन चूची चारह वर्षतक लड़केको रखता है—जो मूंडी प्रतिज्ञा करता है, उसपर क०।

विन जाने कौन माने ?—स्पष्ट।

विन जुलाहे ईद—(मु०) नहीं होती। क्योंकि वह नमाज़ पढ़नेके लिये दूरी बनाता है।

विन जुलाहे नमाज़ नहीं, विन डोलक तज़ीर नहीं—
(मु०) तज़ीर=सजा। विना जुलाहेके नमाज़ नहीं होती क्योंकि वही दूरी बनाता है और विना मुनादीके बड़ी मज़ा नहीं दी जाती।

विन ताये खोटो खरो, गहनो लहे न फोद—
विना जांचे किसिका साथी न बनना चाहिये।

विन पंखन ही बहत उड़ना—असंभव बात पर क०।

विन पति, बहु पति, बाल पति, पतनी पति जहँ होय। नरपुरकी फटकी कही, सुरपुर धसे न फोय—
जिस जगह कोई मालिक न हो, जहाँ बहुतसे मालिक हों, जहाँ लड़का मालिक हो, अथवा श्री मालिक हो उस जगहका इन्तजाम ठीक नहीं होता—जिस रियासतमें उपरोक्त चार बातोंमेंसे एक भी हो, वहाँ क०।

विन परबय परतीत नहीं—स्पष्ट।

विन पैसे साहकार—स्पष्ट।

कौं चर्मनते खन मरारै, धारि नाम कहि नाम धरारै।
कोय लखिमें सोख बखारै, विन दामनको साह कइारै।

विन पैसा कौड़ीके तेली साह, टूटी हांडी कांदू साह—तेल ही तेलीकी पूजी है और हांडीका टुकड़ा ही भड़भूनेकी पूजी है।

विन बहू प्रीत नहीं—स्वच्छ अपने कामाँकी तभी-तक प्यार करता है जबतक उसकी लड़की जीती रहती है।

विन विद्या नर नार, जैसे गंधा कुम्हार—स्पष्ट ।

विन बुलाई अहमक, ले दौड़ी सहनक—(मु० ज०)

(१) जो विन बुलाये न्योतेमें आता है, उसे क० ।

(२) जो विना कहे छने दूसरेके काममें हाथ लगाता है, उसे भी क० ।

विन बुलाई डोमनी लड़केवाले समेत आये—

(ज०) स्पष्ट ।

विन बोले गुण जानन जाय—आदमी अच्छा वा बुरा

तब तक नहीं परखा जाता जयतक वह कुद्वन बोले ।

बात इन्हीं सब तलक करता नहीं ।

नेक-भोवद उसका कभी खुलता नहीं ॥

विन भय होय न प्रीत—विना भवके प्रीति नहीं

होती ।

छठि खलि खलि तजि कहु मनुहारि,

विन विद्योग समुझे नहिं नारि ।

कहे कहाउत गाया भौत,

होय न द्वियमें भय विनु प्रीत ।

विन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख—

मिलनेवाला होता है तो आप ही मिलता है, मांग-

नेसे भीख भी नहीं मिलती ।

(१) भागनी फिरती थी दुनिया जन तलक करते थे इन ।

अप को नफ़रत हमने की, तो नफ़रत आनेको के ॥

(२) एक दिन मांगे ही खड़े, मांगे एक लफ़े न ।

घन लज सुर हरिता भरे, चातक चौच भरे न ॥ (इन्द)

विन मारेकी तोया करना—मारनेसे पहले ही रोना ।

दुख पड़नेसे पहले ही उसका घोच करे, तब क० ।

विन रुके घेदकी घोड़ी ना चले—घेदकी घोड़ी उस

स्थानमें अवश्य रुक जाती है, जहाँ वह खड़ी की

जाती है अर्थात् रोगके घरेके

विन रोये तो मां भी दूध नहीं

मांगे अपनी रोई भी

विन सतसंग होई,

सुलभ न

विना

मजमू को कहे

भय

विना इष्ट ये भ्रष्ट हैं परिडत कवि अरु वेद-

(१) विना पैसेके ये तीनों काम नहीं करते । (२)

तक ये तीनों अपनी अपनी विद्यामें निपुण न

तबतक किसी कामके नहीं ।

विना कड़ु धो दवाई खाये रोग आराम नहीं है

(१) विना कष्ट उठाये छल नहीं होता ।

(२) बुरे लगत सिखके बचन, हिये पिचारी आप ।

कड़ु भी भेखज विन पिये, मिटै न तमकी ताप । (इ

विना कुचनकी कामिनी, विना मूँछका ज्वान

ये तीनों फीके लगें, विना सुपारी पान—स्पष्ट ।

विना गोता खाये तैरना नहीं आता—दे० “वि

कड़ुवी दवाई”

विना ठगाये ठाकुर नहीं होता—जब आद

ठगाया जाता है, तब सावधान हो जाता है ।

विना बुलाये पंखा हवा नहीं देता—विना प

अमके काम नहीं चलता ।

विना बुझाये ना मिले ज्यों पंखाकी पीन । (इन्द)

विना दयाये तिलोंमेंसे तेल नहीं निकलता—

दयाध पड़ने पर बात खुलती है ।

विना दवा रोग नहीं जाता—स्पष्ट ।

“रोग मिटै कहु चौपथ खाये”

विना पानी भोजे उतारना—जो मनुष्य वि

कारण लड़नेको तैयार हो जाय, उसे क० ।

पौध सदा मुनि होत चदाच, कौन सधान तजे रस हास

लोग पखानों करत प्रकार, दिन नख लखे समेटत बास

(ली० १० की०)

विना पेंद अपनी बात पर

नहीं मत पलटता रहता

उसपर

विना मिर्चकी घोट्टे भंग, विन भाइनके रोपे जंग
ले वेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंग न जंग न गंग
स्पष्ट ।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—(सं०) जय समय
घराव आता है, तब उल्टी बुद्धि हो जाती है ।

(१) न शास्त्रमथे न च दृष्टपूर्वा न य यते सैममयो कुरंगी ।

तथापि तथा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।

(२) ज्ञाको भु दादण दुःख देहों ताको मत पहिले हरलेहों
(तुलसी)

विना सींगके बैल—मूर्खको क० ।

विनौलेकी लूटमें घरछोका घाव—(१) मामूली
चीज प्राप्त करनेमें जय किसीको अधिक कष्ट
भोगना पड़ता है, तब क० । (२) साधारण अपराधमें
जय कठिन दंड मिलता है, तब भी क० ।

विपत्तके समय भूँजी ताले जाती है—दे० “राजा
नलको विपता”

विपत्त संघाती तीन जने, जोरू येटा आप—स्पष्ट ।

विपत्त पड़ी जय भेंट मनाई, मुकर गया जय
देनी आई—एख आ जानेपर आदमी दुःखकी बात
भूल जाता है ।

विपद् घरायर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय—
क्योंकि उसमें मनुष्यको अनुभव हो जाता है ।

विरादरीको न खिलायां चार कांदीही जिमा दिये
(हि०) स्पष्ट । कांदी=मुदां दोने वाला ।

विरादर-ए-हकीकी, दुश्मन ए-मादरजाद है—
सौतेला या कठभाई ही जानी दुश्मन होता है ।

विह्लीका खेल चूहोंकी मौत—जब एकको दुख देकर
दूसरोंको आनंद मिले, तब क० । दूसरेके दुख पर
हसनेपर भी क० ।

विह्लीका गू लोपनेका न पोतनेका—पुरी वस्तु
किसी काममें नहीं आती । बिलकुल निकम्मे
आदमीको क० ।

विह्लीके ख्यावमें चूहे कुद्रे } उरेको घुराई ही
विह्लीके ख्यावमें छीउडे } सुकती है ।

विह्लीके गलेमें मोहन माला—अज्ञानीके सामने
अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्पत्त होता है ।

विह्लीके भागसे छाँका टूटा—जब संयोगसे कोई
काम अचछा हो जाय, तब क० ।

(१) सोति गईं हुन हरखी माल,

मिन वस कियो हुतो मन लाग ।

कहे पखाभो क्यों रम जूटा,

विह्ली भागन चिकहर टूटा । (सुदिता)

(२) अफसोस कि अम मेरा मुकरन फूटा ।

मेरा और उनका साथ पेटिल हूटा ॥

मुझसे लड़कर गये वो दुश्मनके घर ।

विह्लीके भागों आफ छाँका टूटा ॥ (रंजर)

विह्ली खायगी नहीं पर फैला तौ भी जायगी—
दुष्ट धर्मकी हानि करता है ।

विह्ली चूहा खुदाके वास्ते नहीं मारती—संसार
में सब आदमी अपने स्वार्थके लिये करते हैं ।

‘विह्ली भी मारती है चूहा पेटके लिये’ ।

विह्ली भी द्यकर हरया करती है—द्वेषपर सब
चोट करते हैं ।

विह्ली भी लड़ती है तो मुंहपर पंजा घर लेती है—
अपना बचाव सब कोई करता है ।

विश्वासो फलदायकः—विश्वास हो जानेसे सब
काम सिद्ध हो जाते हैं ।

विप देते विपया दर्ई ऐसे दीन दयाल—दे० “जिन
पाये पंथी नहीं”

विपकी औपधि क्या ?—ज़हरकी दवा नहीं ।

विपकी गांठ—कुटिल आदमीको क० ।

विप तरुवर हूं रोपिके, कोउ न फाटत हाथ—
अपनी बनाई चीज़को कोई अपने हाथसे नहीं बिगा-
ड़ता, चाहे वह कैसी हो पुरी क्यों न हो ।

विप निकस्यो अति मथन तें, रतनाकरहू माहिं
अधिक बातें बतानेसे लड़ाई बढ़ जाती है ।

विपधर एकड़, ज़हरको चाट, पर नारी संग
चाल ना याट—पराई स्त्रीकी संगत करनेको अपेक्षा
विप खाकर मरना भला है ।

विप रस भरा कनक घट जैसे—जो चिकनी चुपड़ी
वाले करता हो और उसका हृदय कपटसे भरा हो,
उत्पस क० ।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार—स्पष्ट ।

बिन बुलाई अहमक, ले दौड़ी सहनक—(गु० ज०)

(१) जो बिन बुलाये न्योतेमें आता है, उसे क० ।

(२) जो बिना कहे छने दूसरेके काममें हाथ लगाता है, उसे भी क० । -

बिन बुलाई डोमनी लडुकेवाले समेत आये—

(ज०) स्पष्ट ।

बिन बोले गुण जानन जाय—आदमी अछ्छा वा घुरा

तय तक नहीं परखा जाता जयतक वह कुद्धन बोले ।

यात इत्यादि जब तक करता नहीं ।

नेक-भोवद उसका कभी खुलता नहीं ॥

बिन भय होय न प्रीत—बिना भवके प्रीति नहीं

होती ।

छठि बलि बलि तजि बड़ मनुहारि,

बिन बियोग समुके नहिं नारि ।

कहै कछाउत माधा गीत,

होय न द्वियमें भय बिन प्रीत ।

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख—

मिलनेवाला होता है तो आप ही मिलता है, मांग-

नेसे भीख भी नहीं मिलती ।

(१) मांगती फिरती थी दुनिया जब तव्य करते थे हम ।

पन जो नफरत हमने की, तो भेकरार भानेकी है ॥

(२) एक बिन मांगे ही लहे, मांगे एक लहे न ।

पन लल सुर सरिता भरे, चातक चौक भरे न ॥ (इत्य)

बिन मारेकी तोया करना—मारनेसे पहले ही रोना ।

हुल पड़नेसे पहले ही उसका शोक करे, तय क० ।

बिन रुके चैदकी घोड़ी ना चले—बैधकी घोड़ी उस

स्थानमें अवश्य रुक जाती है, जहाँ वह रोज़ खड़ी की

जाती है अर्थात् रोगीके घरेके दरवाजे पर ।

बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती—बिना

मांगे अपनी खुशासे कोई भी कुद्ध नहीं देता ।

बिन सतसंग बियेक न होई, राम रूपा बिन

सुलभ न सोई—(सुलसी) स्पष्ट ।

बिना असलके नकल नहीं होती—स्पष्ट ।

मजनु को कहै सब असल, और नकलके भाय ।

कछु हो दिलमें चपन तय, सबै नकल भी लाय ।

(जगदी शर)

बिना इष्ट ये भ्रष्ट हैं पण्डित कवि अरु वैद—

(१) बिना पैसेके ये तीनों काम नहीं करते । (२) जब

तक ये तीनों अपनी अपनी विद्यामें निपुण न हों

तयतक किसी कामके नहीं ।

बिना कडु घी दवाई खाये रोग आराम नहीं होता

(१) बिना कष्ट उठाये छल नहीं होता ।

(२) बुरे लगत छिछके घघन, द्विये विघारो भाप ।

कडु, भी भेखन बिन विधे, मिटै न तनको ताप । (इत्य)

बिना कुसनकी कामिनी, बिना मूँछका ज्वान ।

ये तीनों फीके लगें, बिना सुपारी पान—स्पष्ट ।

बिना गोता खाये तैरना नहीं आता—दे० “बिना

कडुपी दवाई”

बिना ठगाये ठाकुर नहीं होता—जब आदमी

ठगाया जाता है, तय सावधान हो जाता है ।

बिना झुलाये पंखा हवा नहीं देता—बिना परि-

श्रमके काम नहीं चलता ।

बिना दुषायि ना मिले ग्यो पंखाकी पीन । (इत्य)

बिना दयाये तिलोमेंसे तेल नहीं निकलता—

दयाप पड़ने पर बात खुलती है ।

बिना दया रोग नहीं जाता—स्पष्ट ।

“रोग मिटै कछु भीष खाये”

बिना पानी मोजे उतारना—जो मनुष्य बिना

कारण लड़नेको तैयार हो जाय, उसे क० ।

पीय सदा सुनि होत छदास, कौन सघान तजै रच हांस ।

भोग पखानों करत प्रकास, बिन जल लखे समेटत पास ॥

(लो० २० कौ०)

बिना पेंदीका लोटा—जो अपनी बात पर कायम

नहीं रहता, घड़ी घड़ी मत पलटता रहता है,

उसपर क० ।

बिना घसोले चाकरी, बिना धुद्ध की देह ।

बिना गुरूका घालका, सिरमें डाले खेद—स्पष्ट ।

बिना चिचारे जो करे, सो पाळे पछिताय ।

काम बिगाड़े आपनो, जगमें होत हँसाय—

(गिरधर) स्पष्ट ।

बिना बुलाये आदर नहीं चाहे जा देखे ।

पेट भरे सवाद नहीं चाहे खा देखे—स्पष्ट ।

बिना भरे ना स्वर्ग दिलात—दे० “अपने भरे बिना

विना मिर्चकी घोंटे भंग, विन भाइनके रोपे जंग
ले वेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंगन जंग न गंग
स्पष्ट ।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—(सं०) जब समय
सुराव ध्याता है, तब उल्टी बुद्धि हो जाती है ।

- (१) न शासनधेन च दृष्टपूर्वा न श्रूयते दिनमयो कुंजी ।
तथापि लघ्ना रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।
(२) शाकी प्रभु दारणदुःख देहो ताकी मत प. छलि हरलेहो
(तुलसी)

विना साँगके बैल—मूलको क० ।

विनालेकी लूटमें घरछोका घाव—(१) मामूली
चीज़ प्राप्त करनेमें जब किसीको अधिक कष्ट
भोगना पड़ता है, तब क० । (२) साधारण अपराधमें
जब कठिन दंड मिलता है, तब भी क० ।

विपत्तके समय भूँजी ताले जाती है—दे० “राजा
नलको विपत्ता”

विपत्त संघाती तीन जने, जोरू वेटा आप-स्पष्ट ।

विपत्त पड़ी जब भेट मनाई, मुकर गया जब
देनी आई—छल था जानेपर आदमी दुःखकी बात
भूल जाता है ।

विपद बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय—
क्योंकि उसमें मनुष्यको अनुभव हो जाता है ।

विरादरीको न खिलाया चार फाँदीही जिमा दिये
(हि०) स्पष्ट । फाँदी=मुदाँ दोने वाला ।

विरादर-प. हकीकी, दुश्मन प. मादरजाद है—
साँतला या कठभाई ही जानी दुश्मन होता है ।

विह्लीका खेल चूहोंकी मौत—जब एकको दुख देकर
दूसरेको आनंद मिले, तब क० । दूसरेके दुख पर
हँसनेपर भी क० ।

विह्लीका गू लोपनेका न पोतनेका—बुरी वस्तु
किसी काममें नहीं आती । बिट्ठल निकम्मे
आदमीको क० ।

विह्लीके खवाबमें चूहे फूदे } बुरेको धुराई ही
विह्लीके खवाबमें छीउडे } सुमतो है ।

विह्लीके गलेमें मोहन माला—अज्ञानीके सामने
अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्पत्त होता है ।

विह्लीके भागसे छींका टूटा—जब संयोगसे कोई
काम अच्छा हो जाय, तब क० ।

- (१) शीति गई सुन डरखी बाल,
मिन बस कियो हुतो मन लाग ।
कछे पखामो ज्यों रस जटा,
बिल्ली भागन चिकहर टूटा । (मुदिता)
(२) अफसोस जि अब मिरा सुकहर फूटा ।
मिरा और उनका साथ ऐ दिन टूटा ॥
मुकसे लड़कर गये वो दुग्गनके घर ।
बिल्लीके भागो अब छींका टूटा ॥ (रंजर)

विह्ली खायगी नहीं पर फैला तो भी जायगी—
दुष्ट व्यर्थकी हानि करता है ।

विह्ली चूहा खुदाके वास्ते नहीं मारती—संसारमें
सब आदमी अपने स्वार्थके लिये करते हैं ।
'बिल्ली भी मारती है चूहा पेटके लिये' ।

विह्ली भी दबकर हरवा करती है—दोषपर सब
घोट करते हैं ।

विह्ली भी लड़ती है तो मुँहपर पंजा धर लेती है—
अपना बचाव सब कोई करता है ।

विश्वासो फलदायकः—विश्वास हो जानेसे सब
काम सिद्ध हो जाते हैं ।

विप देते विपया दई ऐसे दीन दयाल—दे० “जिन
पाये पंधी नहीं”

विपकी औपधि क्या ?—ज़हरकी दवा नहीं ।

विपकी गाँठ—कुटिल आदमीको क० ।

विप तहरवर हूँ रोपिके, फोउ न फाटत हाथ—
अपनी बनाई चीज़को कोई अपने हाथसे नहीं बिगा-
ड़ता, चाहे वह कैसी ही बुरी क्यों न हो ।

विप निकस्यो अति मथन तें, रतनाकरहू माहिं
अधिक बात बनानेसे सड़ाई बढ़ जाती है ।

विपधर पकड़, ज़हरको चाट, पर नारी संग
छाल ना याट—पराई स्त्रीकी संगत करनेकी अपेक्षा
विप खाकर मरना भला है ।

विप रस भरा फनक घट जैसे—जो चिकनी पुपड़ी
घाते करता हो और उसका हृदय कपसत भरा हो,
उपस क० ।

बिन विद्या नर नार, जैसे गधा कुम्हार—स्पष्ट ।

बिन बुलाई अहमक, ले दौड़ी सहनक—(सु० ज०)

(१) जो बिन बुलाये न्योतेमें आता है; उसे क० ।

(२) जो बिना कहे छने दूसरेके काममें हाथ लगाता है, उसे भी क० ।

बिन बुलाई डोमनी लड़केवाले समेत आये—

(ज०) स्पष्ट ।

बिन बोले गुण जानन जाय—आदमी अच्छा वा बुरा

तब तक नहीं परखा जाता जबतक वह कुछ न बोले ।

बात इन्हीं जब तलक करता नहीं ।

नेक-भोषद उसका कभी खुलता नहीं ॥

बिन भय होय न प्रीत—बिना भवके प्रीति नहीं

होती ।

छठि बलि बलि तजि बड़ मनुषारि,

बिन विद्योग समुझे नहिं नारि ।

कहे कहाउत गाथा नीत,

होय न हियमें भय बिन प्रीत ।

बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भोख—

मिलनेवाला होता है तो आप ही मिलता है, मांग-

नेसे भोख भी नहीं मिलती ।

(१) भागती किरती घी दुनिया जब तलब करते थे हम ।

अब जो नफूरत हमने की, तो बँकुरार आनेकी है ॥

(२) एक बिन मांगे ही खड़े, मांगे एक खड़े न ।

घन जल सुर सरिता भरे, घातक चौंच भरे न ॥ (इन्द)

बिन मारेकी तोबा करना—मारनेसे पहले ही रोना ।

दुख पड़नेसे पहले ही उसका शोच करे, तब क० ।

बिन रुके वैदकी घोड़ी ना चले—वैद्यकी घोड़ी ऊँच

स्थानमें श्वशरय रुक जाती है, जहाँ वह रोज़ खड़ीकी

जाती है अर्थात् रोगीके घरके दरवाज़े पर ।

बिन रोये तो मां भी दूध नहीं पिलाती—बिना

मांगे अपनी खुशीसे कोई भी कुछ नहीं देता ।

बिन सतसंग विषेक न होई, राम कृपा बिनु

सुलभ न सोई—(तुलसी) स्पष्ट ।

बिना असलके नकल नहीं होती—स्पष्ट ।

मजनु जो कहे सब असल, और नकलके भाय ।

कहु सो दिलमें असल तर, सके नकल भी लाय ।

(भाषणे शक)

बिना इष्ट ये भ्रष्ट हैं—परिष्ठित कवि अरु वैद—

(१) बिना पैसेके ये तीनों काम नहीं करते । (२) जब तक ये तीनों अपनी अपनी विद्यामें निपुण न हों तबतक किसी कामके नहीं ।

बिना कड़ु घी दवाई खाये रोग आराम नहीं होता

(१) बिना कष्ट उठाये छल नहीं होता ।

(२) बुरे खल सिखके बचन, हिये विचारो आप ।

कड़ु घी भेखज बिन पिधे, मिटै न तनकी ताप । (इन्द)

बिना कुचनकी कामिनी, बिना मूँछका उवान ।

ये तीनों फीके लमें, बिना सुपारी पान—स्पष्ट ।

बिना गोता खाये तैरना नहीं आता—दे० “बिना

कड़ुघी दवाई”

बिना ठगाये ठाकुर नहीं होता—जब आदमी

ठगाया जाता है, तब सावधान हो जाता है ।

बिना डुलाये पंखा हवा नहीं देता—बिना परि-

श्रमके काम नहीं चलता ।

बिना डुलाये ना मिले ज्यो पंखाकी यौन । (इन्द)

बिना द्याये तिलोंमेंसे तेल नहीं निकलता—

दयाव पड़ने पर बात खुलती है ।

बिना दवा रोग नहीं जाता—स्पष्ट ।

“रोग मिटै कड़ु भोषध खाये”

बिना पानी भोजे उतारना—जो मनुष्य बिना

कारण लड़नेको तैयार हो जाय, उसे क० ।

पौय सदा सुनि होत सदास, कौन सयान तजै रसहास ।

भोग पखानों करत प्रकास, बिन जल खचे समेटत बास ॥

(लो० १० कौ०)

बिना पेंदीका लोटा—जो अपनी बात पर कायम

नहीं रहता, घड़ी घड़ी मत पलटता रहता है, उत्तर क० ।

बिना वसीले चाकरी, बिना बुद्ध की देह ।

बिना गुरूका बालका, सिरमें डाले खेह—स्पष्ट ।

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछिताय ।

काम बिगाड़े आपनो, जगमें होत हँसाय—

(गिरधर) स्पष्ट ।

बिना बुलाये आदर नहीं चाहे जा देखे ।

पेट भरे सचाद नहीं चाहे खा देखे—स्पष्ट ।

बिना भरे ना स्वर्ण दिलात—दे० “अपने भरे बिना

विना मिर्चकी घोटे भंग, विन भाइनके रोपे जंग
ले वेश्या जो नहावे गंग, ना वह भंगन जंग न गंग
स्पष्ट ।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः—(सं०) जय समय
खराब आता है, तब उल्टी बुद्धि हो जाती है ।

(१) न शास्त्रमथे न च दृष्टपूर्वा न यत्ने हिममयी कुंरी ।
तथापि दण्डा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।

(२) आको भ्रातृ दादृष दुःख देहीं ताको मत पड़ले हरखीहीं
(तुनसो)

विना सींगके चैल—मूर्खको क० ।

विनालेकी लूटमें घरछोका घाव—(१) मामूली
चीज प्राप्त करनेमें जब किसीको अधिक कष्ट
भोगना पड़ता है, तब क० । (२) साधारण अपराधमें
जब कठिन दंड मिलता है, तब भी क० ।

विपत्तके समय भूँजी ताले जाती है—दे० “राजा
नलको विपत्ता”

विपत्त संघाती तीन जने, जोरू घेटा आप—स्पष्ट ।
विपत्त पड़ी जय भेट मनाई, मुकर गया जब
देनी आई—छल था जानेपर आदमी दुःखकी बात
भूल जाता है ।

विपद बराबर सुख नहीं, जो थोड़े दिन होय—
क्योंकि उसमें मनुष्यको अनुभव हो जाता है ।

विराद्रीको न खिलाया चार कांटीही जिमा दिये
(हि०) स्पष्ट । कांटी—मुर्दा होने वाला ।

विरादर-प-हकीफ़ी, दुश्मन प-मादरजाद है—
सौतेला या कटभार ही जानी दुश्मन होता है ।

बिल्लीका खेल चूहोंकी मौत—जब एकको दुख देकर
दूसरोंको आनंद मिले, तब क० । दूसरेके दुख पर
हंसनेपर भी क० ।

बिल्लीका गू लीपनेका न पोतनेका—डूरी वस्तु
किसी काममें नहीं आती । बिल्कुल निकम्मे
आदमीको क० ।

बिल्लीके ख्यावमें चूहे कूदे } डूरेको डुराई ही
बिल्लीके ख्यावमें छोड़दे } सुभती है ।

बिल्लीके गलेमें मोहन माला—अज्ञानीके सामने
अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्फल होता है ।

बिल्लीके भागसे छाँका टूटा—जब संयोगसे कोई
काम अच्छा हो जाय, तब क० ।

(१) सोति गई सुन हरखी माल,
जिन वष कियो हुतो मन लाल ।

कई पखानी ज्यों रस जूटा,
बिल्ली भागन चिकहर टूटा । (सुदिता)

(२) भफ़सोस कि अन मीरा मुकहर कूटा ।
मीरा चीर लनका साथ पेट दिख कूटा ॥

मुफ़सि लडकर गये की दुश्मनके घर ।
बिल्लीके भागों चार कौंका टूटा ॥ (रंजर)

बिल्ली खायगी नहीं पर कैला तौ भी जायगी—
दुष्ट व्यर्थकी हानि करता है ।

बिल्ली चूहा खुदाके वास्ते नहीं मारती—संसार
में सब आदमी अपने स्वार्थके लिये करते हैं ।
‘बिल्ली भी मारती है चूहा पेटके लिये’ ।

बिल्ली भी दयकर हरवा करती है—दूबेपर सब
चोट करते हैं ।

बिल्ली भी लड़ती है तो मुँहपर पंजा धर लेती है—
अपना बचाव सब कोई करता है ।

विश्र्वास्तो फलदायकः—विश्वास हो जानेसे सब
काम सिद्ध हो जाते हैं ।

विप देते विपया दर्ई ऐसे दीन दयाल-दे० “जिन
पाये पंथी नहीं”

विपकी औपधि क्या ?—ज़हरकी दवा नहीं ।

विपकी गांठ—कुठिल आदमीको क० ।

विप तख़्तर हूँ रोपिके, कोउ न काटत हाथ—
अपनी बनाई चीज़को कोई अपने हाथसे नहीं बिगा-
ड़ता, चाहे वह कैसी ही डूरी क्यों न हो ।

विप निकस्यो अति मथन तें, रतनाकरहू माहिं
अधिक बात बनानेसे लड़ाई बढ़ जाती है ।

विपधर पकड़, ज़हरको चाट, पर नारी संग
चाल ना वाट—पराई स्त्रीकी संगत करनेकी अनेजा
विप खाकर मरना भला है ।

विप रस भरा कनक घट जैसे—जो चिकनी सुपड़ी
बातें करता हो और उसका हृदय कपटके भरा हो,
उसका क० ।

मन मलिन तन सुंदर कौंसे, विपरस.....(तुलसी)

(सं०) बिपकुंभम् पर्योगुखम् ।

बिप सोनेके चर्चनमें रखनेसे अमृत नहीं होता—
दुष्ट सतसंगमें भी दुष्टता नहीं छोड़ता ।

बिसनी बिलार डवरीमें डेरा—बिना बुलाये मेह-
मानपर क० । बिछी खानेके समय चुपचाप आपही
आ बैठती है ।

बिसमिल्लाहके गुम्वदमें बैठे हैं—(सु०) मरे हुए
आदमीपर क० ।

बिसमिल्ला ही गलत—जब कोई किसी काममें शुरूमें
ही भूल करता है, तब क० । फ़ारसी वा उर्दूवाले
लिखते समय पहिले “बिसमिल्लाह उल रहमाने-
रहोम” लिखते हैं । जैसे हिन्दीवाले “श्रीगणेशाय
नमः” लिखते हैं ।

बिस्वा बिसकी गांठ है—विश्वा लड़ाईकी जड़ है ।

बिस्वा गांवके बीसवें हिस्सेको क० ।
बी खैला दो चिट्टे एक मैला—(सु० ज०) ऊपरी
लिफाफेपर क० ।

बी खैला दो जट्टी एक मैला—(सु० ज०) बीबी
खैला और दो जाटनी जहां मिली वहां मैला हो
गया । औरतें जब आपसमें लड़ती हैं तो बहुत गुल
मचाती हैं ।

बीचके चले जायंगे काम दूल्हा दूल्हनसे पड़ेगा-
स्पष्ट ।

बीत्थो व्याह कुम्हारको, भांडा ले ले जाय—स्पष्ट ।

बीतो ताहि बिसार दे, आगेकी सुधि ले, जो
बनि आवे सहजमें, ताहीमें चित दे—(गिरधरदास)
स्पष्ट ।

बी तो अपने घरका धुआं भी निकलने नहीं देती
(ज०) कंजूस खीपर क० ।

बी दौलती, अपने तिहेमें आप ही खौलती—
(सु० ज०) जो अपने धनके घमण्डमें चूर रहता है,
उसपर क० ।

बी पिरागो, कामके बेले सो गई, परसादके बेले
जागो—जो कामके समय टल जाता और खानेके
समय मुस्तेद हो जाता है, उसपर क० ।

बीबीको बांदी कहा हंस दी, बांदीको बांदी कहा
रो दी—(ज०) अंधेको अंधा कहनेसे बुरा मानता है ।

बीबी नेकवदत, दमड़ीकी दांल तीन चकत—

(सु० ज०) जो थोड़े ही खर्चमें अपना काम भली
भांति निवाह लेता है, उसपर क० ।

बीबी बकरी, नावमें खाक उड़ाती है—जो अपना
स्वार्थ पूरा करनेके लिये लड़ाईका बहाना हूँवता
है, उसपर क० ।

इस मसलका सम्बन्ध उस कहानीसे है जिसमें यही
बहाना कर एक भेड़ियेने एक बकरीको खा लिया था ।

बीबी धारे बांदी खाय, घरकी बला कहीं न जाय
(ज०) घरको घरहीमें रही क्योंकि बीबीने वारा और
बांदीने खाया, इससे धारके बाहर बला न गई ।

‘बीबी बीबी ईद आई,’ ‘चल हरामजादी तुम्हे
क्या?’—(सु० ज०) बीबी और लौंडीका सम्वाद ।
कंजूसको खर्चका काम बतानेसे वह चिढ़ जाता है ।

‘बीबी बीबीईद आई,’ ‘चल सुन्दार तुम्हे टिकिया-
से काम—(सु० ज०) ऊ० दे० टिकिया=रोटीका टुकड़ा ।
बीबी मक्के न गई, लाड़ली हो आई—(सु० ज०)

जिसे मन चाहे वह बुरा होनेपर भी अचञ्चल गता है ।
बीबी हैं भरमाली, कान पीतलकी वाली—स्पष्ट ।
बीमारकी रात पहाड़ बराबर—रोगी बहुत मुश्किल-
से रात बिताता है ।

बीस पचीसके अंदरमें, जो पूत सपूत हुआ सो
हुआ, मात पिता कुल तारणको, जो गया न
गया सो कहीं न गया—जो गयामें अपने माता
पिताको बिंड न देकर सब तोषीसे हो आता है, उसे
कोई फल नहीं होता है ।

दीन पे दया करो, न बापकी गया करो ।

बीसी बीसी—बीस वर्षसे अधिककी औरत बुड्की हो
जाती है ।

बुड्बक एक गये बड़ गांव, डेरा पाइन ऊंचे
ठांव । बड़े धरार आड़ नहीं पावे, फाटे...मलार
गावे—(भो०) गाँवर आदमीपर क० ।

बुड्बक गइले मछली मारे ताप अइले गँवाय—
(भो०) मूर्ख रोजगार करने जाता है तो धर हीका धन
खो बैठता है । ताप=झीप ; मछली मारनेका ढंढा ।

बुड्बकदास गये हरवाहीं, दुई बैलमें एको नाहीं
(भो०) ऊ० दे० ।

घुड़यक देवीके कुल्फीके अच्छत—(भो०) दे० “घुड़
देवीकी अष्ट पूजा”

घुड़यक घरके सांझे बिछौना—(भो०) मूल सम-
यका व्यवहार नहीं जानता ।

घुड़भस लगी है—दूसरा लड़कपन आया है ।

घुड़वा व्याह फरे पड़ोसियोंको सुख होवे—स्पष्ट ।

घुड़वा भतारपर तीन टिकली—जब कोई स्त्री बूढ़े
स्वामीपर हदसे ज़्यादा सिंगार करती है, तब
क्यंगसे क० ।

घुड़ापेमें अहू, मारी जाती है—जब कोई बूढ़ा मनुष्य
पे-सिर पैरकी बातें करता है, तब क० ।

पमघटकी हमारी अगर चसवारी गई है ।

तो बर्षा भी लगी साथ यही खवारी गई है ॥

सुगते है कि कहती यही पनिचारी गई है ।

सो देखो हुड़ापेमें यह मत मारी गई है ॥ (नजीर)

घुड़ापेमें मट्टी खराब—जब कोई बूढ़ा कष्ट पाता है
वा लोग उसकी हंसी उड़ाते हैं, तब क० ।

ख बामें अगर आवे तो हीतो है यह फकड़ी ।

खैरे है कोई छाय कोई हीने है लकड़ी ॥

बाड़ीकी कोई खैल कोई भाड़े है मकड़ी ।

बूँदें कहीं बचीके लिपि जाती है पकड़ी । (नजीर)

घुड़ियाको पैठ बिना फव सरे—बुढ़ियाको पाज़ार
गये बिना चैन नहीं पड़ता ।

घुड़िया गज़बकी पुड़िया—लड़ाकन, बुड़ियापर क० ।

घुड़िया दीघानी हुई, पराये घरतन उठाने लगी—
सियान पागलकी क० ।

घुड़िया मरेका डर नहीं जम परकेका डर—
जब कोई काम ऐसा हो जाय कि जिससे धार धार

भविष्यमें धुरा फल होनेकी संभावना हो, तब क० ।

हर बार काज़लका रखी पर आना है धुरा ।

मरनेसे भी भीतका घर देख जाना है धुरा ॥

घुड़दी घोड़ी लाल लगाम—वेमेल बातपर क० ।

घुड़दी धकरी और हुंडारसे ठट्टा—जो कमज़ोर
होकर अपने बलवान शत्रुसे मुक़ाबिला करता है, उस
पर क० ।

घुड़दी मैसका दूध शकरका घोलना, घुड़दे
मर्देकी जोरू गलेका ढोलना—स्पष्ट ।

घुड़दी हुई नायका इस हालकी पहुंची, सिर
दिलने लगा छातियां पत्तालकी पहुंची—
(नजीर) हुड़ापा आनेपर सब अंग निकम्मा हो
जाता है ।

घुड़देकी औलाद—कमज़ोर होती है ।

घुड़देकी सीध, करे कामको ठीक—बूढ़े आदमी-
का उपदेश जरूर ग्रहण करना चाहिए ।

“इदस्य वचनं वाच्यम्”

घुड़दे तोते राम राम नहीं पढ़ते—बूढ़ोंको नहीं
सिखाया जा सकता क्योंकि उम्र अधिक होनेसे
बुद्धि मंद पड़ जाती है । जब किसी बुड़दे आदमीको
कोई काम सिखाया जाय और उससे करते न बने,
तब क० ।

घुड़दोंने जो काम सिखाया, धोका मूल न
उसमें पाया—स्पष्ट ।

घुनिवेमें, न चीन बजायवेमें—जो किसी कामसे
सम्पर्क न रखे वा किसी गिनतीमें न हो, उसे क० ।
इमें बात कहकी प्रयोजनका, घुनिवेमें न चीन बजायवेमें ।

(डांडर)

घुयाद हम-पेशा, वा हम-पेशा दुश्मन—(फा०)
एक ही पेशेके दो मनुष्योंकी राय एक नहीं होती
इसलिये कि वे आपसमें डाह रखते हैं ।

धुरा जो दूँदन में बला धुरा न पाया कोय ।
जो दिल दूँदा आपना मुफसे धुरा न कोय—
(कबीर) स्पष्ट ।

ऐ जूँक किसको चश्में दिक्कारतेही देखिये ।

धव हमसे है ग़ियादा, कोई हमसे कम नहीं ।

धुरा घेटा, खोटा पैसा, किली चक्कर काम आ
जाता है—निकम्मी बीज़ भी कमी न कमी काममें
आ जाती है ।

धुरा वही जो दूसरोंको धुरा कहे—किसीकी धुराई
न करनी चाहिये ।

जू, बाँ खोलेंगे हमपर बंद, जू, बाँ क्या बंदमधारी है ।

कि मैंने खाक भरदी है उनके सुँदमें, खाकसापीसै ॥

तू भला है तो धुरा ही नहीं बकता ० जूँक ।

है धुरा वही कि भी तुम्हको धुरा जानता है ॥

धुरा हाकिम खुदाका गजब-स्पष्ट ।
धुरी घड़ी न आवे—खराब समयको कोई नहीं
चाहता ।

धुरी संगतसे अकेला अच्छा—स्पष्ट ।
धुरे करमके धुरे हवाला—जो जीसा करेगा वह बंसा
ही फल पायगा ।

धुरेका लहसन भी धुरा—बदनसीध आदमीको लह-
सन भी लाभदायक नहीं होता । लहसन शरीरपर
लाल रंगका दाग होता है जो दाहिने अंगपर होने-
से शुभ माना जाता है ।

लहसन भीरी, लिज, मसो, डोय दाहिने पंग ।

जाय परी वन खंडमें, तङ्ग लक्ष्मी रंग ।

धुरेका साथ दे सो भी धुरा—स्पष्ट
धुरेका साथी कोई नहीं—स्पष्ट ।
धुरे खाविन्दका मिलना जीते जी दोख—
(मु० ज०) खराब पतिके साथ रहना जीते जी नरक
भोगना है ।

धुरे तुम्हसे डरिये या तेरी धुराईसे—स्पष्ट ।

भले धुराई तें डरे, राखो बाँधे धोय ।

जागत है पै दृष्टके, षषगुन कहत न कोय ॥ (इ०)

धुरे बरकका अल्हाद बेली—बुलके समय ईश्वरके
सिवा दूसरा कोई सहायक नहीं है ।

(१) होता नहीं है कोई धुरे बरकमें शरीक,

पसे भी भागते हैं खिजांमि शजरसे दूर । (दाग)

(२) पुतालियां तक भी तो फिर जाती हैं, देखो दमजिजा
बत्त, यइता है, तो सब भाख धुरा जाते हैं ॥ (दाग)

धुल धुल का सा चोंडा—(मु० ज० च०) जो अपने
सिरके बालको रंडी सा गूंधकर सजाता है, उसे
व्यंगसे क० ।

धुलावे न चलावे, मैं तो दुलहनकी चाची—
(५०) जो जयदेस्ती अपना दूर कायम करता है,
उस पर क० ।

धूंट बढ़ा होय तो मनसार न फोड़े—दे० 'अकेला
घना' ।

धूँद अघात सहै गिरि कैसे, खलके
सह जैसे—(तुलसी) सज्जन धुरे
भी सह-लेता है ।

धूँदका चूका घड़े दुलकावे—समयपर काम नहीं
करनेसे पीछे बहुत मुकतान उठाना पड़ता है । दे०
"उस धूँदसे भेरे कहाँ" ।

धूँदन धूँदन घट भरे, टपकत वीते तोय । कन
कन जोरे, मन जुरे, खाते निवर सोंय—दे० "फई
फुई तालाय भरता है" ।

धूँद धूँद करके तालाय भरता है—ऊ० दे० ।

धूँद धूँदसे नदी बहतो है—ऊ० दे० ।

धूँदसे गई सो फिर हौजसे नहीं भाती—दे० ।

"धूँदका चूका घड़े"

धू गई धूँदार गई रही खालकी खाल—अन्तमें
शरीर महीमें मिल जाता है ।

धूचा सयसे उँचा—(च०) जिसका अंग भंग रहता
है वही सयसे पहले दीख पड़ता है । अमूठी चीज
सयसे पहले नजर आती है ।

धूड़ा वंश कधीरका जो उपजे पूत कमाल—
दे० "दूबा वंश....."

धूढ़ भइलन, नाक लगले रहितन—(च० भो०) जो
सयाना होनेपर भी बच्चों का सा काम करता है,
उसे व्यंगसे क० ।

धूढ़ भई गुइयां दिमाग मोर वैसे—(५०) ऊ० दे० ।

धूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम—जय गुणके विरुद्ध नाम
रखवा जाता है, तब व्यंगसे क० ।

धूढ़ा खाय गांठका जाय—निकम्मे आदमीको
खिलाना बेकार है ।

धूढ़ा जाने किया, बाला जाने दिया—दे० 'बाज़क
जाने'

धूढ़ा, बाला बराबर होता है—बुढ़ापा और लड़कपन
एकसा होता है ।

धूढ़ी जुरवा नाम खतीजा—दे० "धूढ़ा कुत्ता पिलवा
नाम" ।

धूढ़े कलावतकी कौन सुने—स्पष्ट । कलावत=

धूढ़ेकी जोर होता है—जय आदमी बूढ़ा
तहसे निर्बल हो जाता है
जोर रहता है । (१) बोलता

बूढ़ेको बूढ़ा कहो तो चिढ़ मरे—बूढ़ेको बुढ़ा कहनेसे घुरा मानता है ।

का यारो कहे गोकि बुढ़ापो के समारो ।
पर बूढ़े कछानेका नहोँ दिलमें सघारो ॥
जब बूढ़ा हमे हाय जहा कइके पुकारा ।
काफिरने कलेत्रमें गोया तीरसा सारो ॥ (नज्बिर)

बूढ़े हुये तो क्या हुवा नखरा तिल्ला उतने—
पुढ़ापमें भी जो मनुष्य अपने लड़कपनको सी नखरे
तिल्लेकी याते करे उसपर क० ।

बूढ़े मुंह मुहांसे, लोग देखे तमासे—जो बूढ़ा
आदमी जवानोंका सा आचरण करता है, उसे देख
सब कोई हंसे है ।

बूढ़ेके लड्डू-खाय सो पछिताय न खाय वह भी
पछताय—दे० “खाय सो पछिताय”

आदारीको पारजू कइँ जर हाय भाए ।
आदारीको डर के चोर इचको न पुआये ॥
गर ऐ रंजर बुरका है लड्डू ।
जो खाए पछिताए भी न खाए पछिताए ॥

बूढ़की छाया और पुरुषकी माया—दोनों उसीके
साथ चली जाती हैं ।

बूढ़के सहारे बेल बढ़ती है—बड़ोंका आश्रय
जस्तर ग्रहण करना चाहिये ।

रहे समीप बड़ेनके झंग बसो फित मेल ।
सबहो आगत बढ़त के इच सघारे बेल । (इन्द)

बूढ़ धेरया तपस्विनी—जो आजन्म घुरा काम करके
अंतमें अच्छे काममें लग गया हो, उसे व्यंगसे क० ।
बूढ़ावन सो यन नहीं, नन्द गाँव सो गाँव ।
बंसी घट सो घट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम—
स्पष्ट ।

वे अद्वय वे नसीय वा अद्वय वा नसीय—कुचरित्र
आदमी अभागा होता है और सचरित्र आदमी
भाग्यवान होता है ।

वेईमानीका मुँह काला—वेईमानी नहीं करती
चाहिए ।

वे पेश जात खुदाकी—केवल ईश्वर ही निष्कलंक है

(१) शशि कलंक रावण विरोध छत्रमण सो बनवर ।
काम धेनु सो पयू जाय बिनाशणि पतयार ॥

पतिव्या तिय बाँध गुनीकी निषेध कहिये !
पति सभद्र भी खार कगल बिच कंटक लहिये ।
कोनुव्यास खैरनी दुर्वाया आसन लहिये ।
कवि गौध कइँ मुन रे गुनी, कीउन ज्ञाप निमैलरखी ॥

(२) गी कास तुम्हे के शायरीसे दिन रात ।
मालूम तुम्हे बदबके के सारे तुकात ।
क्यों मेरी माजिमो पै के मेरी नजर ।
वे ऐव तुम्हो चँ के भलाइकी जगत । (रंजर)

वेकार मवास कुछ किया कर, फपडे ही उधेड़
फर सौयाकर—बेठे रहनेसे कुछ करना ही अच्छा है ।
वे गुठलीका मेवा—हलुएको कहते हैं ।

वेकारी विकारो—खाली बैठे रहनेसे स्वास्थ्य खराब
हो जाता है ।

वेकारीसे वेगारी मली—दे० “बैठेसे वेगार भलो”

वेघार गुल नहीं—बिना दुखसे छल नहीं मिलता ।
घार=कांटा । गुल=फूल ।

वेच पछिताना अच्छा—(व्य०) माल बेचके पछि-
ताना अच्छा रखके पछिताना घुरा ।

वेच वेच मेरीपखनोका व्याह—(सु० यु०) जब सारी
सम्पत्ति बेचकर लड़कीको शादीकी जाती है, तब क० ।
बेचके साग, करे मोतियोंका दाम—जो अपनी
योग्यतासे बाहर काम करता है, उसे क० ।

वेचे सो वंजारा, रखवे सो हत्यारा—(व्य०) माल
को बेचना अच्छा रखना अच्छा नहीं ।

वेजड़ाके पीसनहारी गेहूँके गीत गावे—(११) वे
मेल यातपर क० । (२) हैसियतसे बढ़कर यात करने
पर क० ।

वेजर विसनी भडू वे घराघर—बिना पैसेका व्यसनी
मनुष्य भडूपैसे समान है । गरीब रंभी भडूनेके
समान है ।

वेडा खाय, चाप लखाय, कलंयुग धरणा बेल
दिखलाय—जब वेडा अपने चापको खानेकी न पूड़े
और उसे दिखा दिखाकर आंफे खाय, तब क० ।

वेडा जनकर निय चले सोना पहिनकर डक चले
स्पष्ट ।

वेडा धनकर सवने-खाया है चाप धनकर मोई
नहीं खाता—मीठी बात बोलनेवालेको सब कोई

घुरा हाकिम खुदाका गुज़ब—स्पष्ट ।

घुरी घड़ी न आवे—खराब समयको कोई नहीं चाहता ।

घुरी संगतसे अकेला अच्छा—स्पष्ट ।

घुरे करमके घुरे हवाल—जो जैसा करेगा वह वंसा ही फल पायगा ।

घुरेका लहसन भी घुरा—बदनसीब आदमीको लहसन भी लाभदायक नहीं होता । लहसन शरीरपर लाल रंगका दाग होता है जो दाहिने अंगपर होनेसे शुभ माना जाता है ।

लहसन भीरी, तिब, मसो, धीय दाहिने अंग ।

नाय परी वन खंडमें, तह लक्ष्मी रंग ।

घुरेका साथ दे सो भी घुरा—स्पष्ट

घुरेका साथी कोई नहीं—स्पष्ट ।

घुरे खाचिन्दका मिलना जीते जी दोखल—
(मु० ज०) खराब पतिके साथ रहना जीते जी नर्क भोगना है ।

घुरे तुम्हसे डरिये या तेरी घुराईसे—स्पष्ट ।

मले घुराई हैं डर, राखो चाहे सोय ।

जागत है ये दुष्टके, अकगुन कइत न कोय ॥ (इ'द)

घुरे घत्तुका अल्लाह बेली—दुष्टके समय ईश्वरके सिवा दूसरा कोई सहायक नहीं है ।

(१) होता नहों है कोई घुरे घत्तुमें शरीक,
पत्ते भी भागने है खिजांमें अजरसे दूर । (दाग)

(२) पुसकियां तक भी तो फिर जाती हैं, देखो दमनिजा
बक, पड़ता है, तो सब आंख घुरा जाते हैं ॥ (दाग)

घुल घुल का सा चोड़ा—(मु० ज० च०) जो अपने सिरके धालको रंडी सा गुंधकर सजाता है, उसे व्यंगसे क० ।

घुलाघे न चलाघे, मैं तो दुलहनकी चाची—
(५०) जो जयर्दस्ती अपना हक कायम करता है, उस पर क० ।

घूंट बड़ा होय तो मनसार न फोड़े—दे० 'अकेला घना' ।

घूंट अघात सहै गिरि कैसे, खलके वचन संत सह जैसे—(तुलसी) सज्जन घुरे आदमीको दो घात भी सह लेता है ।

घूंटका चूका घड़े दुलकावे—समयपर, काम नहीं करनेसे पीछे बहुत नुकसान उठाना पड़ता है । दे० "उस घूंटसे भेंट कहां" ।

घूंटन घूंटन घट भरे, टपकत चीते तोय । फन फन जोरे, मन जुरे, खाते नियरे सोय—दे० "फाई फुई तालाय भरता है" ।

घूंट घूंट करके तालाय भरता है—ऊ० दे० ।

घूंट घूंटसे नदी बहतो है—ऊ० दे० ।

घूंटसे गई सो फिर हौज़से नहीं भाती—दे० ।

"घूंटका चूका घड़े"

घू गई घूदर गई रही खालकी खाल—अन्तमें शरीर मट्टीमें मिल जाता है ।

घूचा सबसे उंचा—(च०) जिसका अंग भंग रहता है वही सबसे पहले दील पड़ता है । अगुडी चीज़ सबसे पहले नज़र आती है ।

घूड़ा वंश कवीरका जो उपजे पूत कमाल—
दे० "दूबा वंश....."

घूढ़ भइलन, नाफ लगले रहितन—(च० भो०) जो सयाना होनेपर भी यच्चों का सा काम करता है, उसे व्यंगसे क० ।

घूढ़ भई गुइयां दिमाग मोर वैसे—(५०) ऊ० दे० ।

घूढ़ा कुत्ता पिलवा नाम—जय गुणके विरुद्ध नाम रखना जाता है, तय व्यंगसे क० ।

घूढ़ा जाय गांठका जाय—निकम्मे आदमीको खिलाना बेकार है ।

घूढ़ा जाने किया, धाला जाने हिया—दे० 'बालक जाने' ।

घूढ़ा, धाला बराबर होता है—घुड़ापा और लड़कपन एकसा होता है ।

घूढ़ी जुरवा नाम खतीजा—दे० "घूढ़ाकुत्ता पिलवा नाम" ।

घूढ़े फलावतकी कौन सुने—स्पष्ट । क्लावत= गवैया ।

घूढ़ेकी जुबानमें जोर होता है—जय आदमी बूढ़ा हो जाता है तो सब तरहसे निर्बल हो जाता है केवल उसकी जुबानमें जोर रहता है । (१) बोलता बहुत है । (२) खाता बहुत है ।

वैद्यार्थिका घुरका मुंहपर डाल लिया है—
वेद्यार्थि आदमीको क० ।

वैद्यार्थिको नीचे रख जमा उसने जाना छांह हुई—
उस वेद्यार्थिको कहते हैं जो घुर कामको भी अच्छा समझता है ।

वैद्यार्थिको नौकर नहीं हूँ आपका नौकर हूँ—
ठकुर संहाती कहनेवालेको क० ।

किसी भगौरने अपने मुसाहिबसे कहा कि भगनको तरकारी बहुत अच्छी होती है, इसमें यद्येष्ट गुण है । वैद्यकमें भी इसको तारीफ़ कियी है । "हन्ताकं शक नायकम्" । उस मुसाहिबने भी हाँ में हाँ मिला दी । बाद भगौरने भगनको निन्दा की क्योंकि यह कटोला होता और इसकी खानेसे कफ़ होता है; इसकी चलावा और भी इसमें घनक प्रचुर है । मुसाहिबने कहा 'जी इज्जुर ! भगनको तरकारी अच्छी नहीं होती ।' इसपर भगौरने कहा, कौं मुसाहिब ! जब मैंने इसकी तारीफ़की तो तुमने भी कौं, और मेरे निन्दा करनेपर तुमने भी निन्दा की । इसका क्या कारण है ? इसपर मुसाहिबने कहा 'इज्जुर ! मैं आपका नौकर हूँ न कि वैद्यार्थिको । यदि मासिक दिनकी रात बतावे तो नौकरकी उचित है कि उसी वक्त चन्द्रमा और तारे भी दिखा दें ।' समझो जो कौं रात तो हम चाँद दिखा दें.....

वैद्यार्थिको सैर मुल्ककी करना, यह तमाशा कित्तारमें देखा—
गुल्तक पढ़नेसे सब मुल्कोंका हाल जाना जा सकता है ।

वैद्यार्थिको वनियां पना करे, उस कोठीके धान उस कोठीमें धरे—
जब कोई खाली वैद्यार्थिको व्यर्थका काम करे, तब क० ।

वैद्यार्थिको सैर घांट तौले } ऊ० दे० । करनेवाला
वैद्यार्थिको बुढ़िया मंगल गाय } कुद्धन कुद्ध करता ही रहता है ।

वैद्यार्थिको पहिचान, हेरफेर कोठीमें धान—
दे० "वैद्यार्थिको वनियां"

वैद्यार्थिको फ़ारूका खजाना भी खाली हो जाता है
जब कोई रोज़गार नहीं करता और सेक्रे खता है, तब क० ।

क० "एक सुगंधमान भाटगाय धरु कंजुन हो गया है ।
धरुने धरुतक धरु जमा किया धरु दि धरु जमा किया धरु

जो मुर्देके मुँहमें रुपया रक्खा जाता है उसे भी कुबरे सुदवा कर निकलवा लिया था ।

वैद्यार्थिको वेद्यार्थिको मली—
खाली वैद्यार्थिको रहनेसे मुल्तमें काम करना अच्छा ।

(१) मागा खादिमसे है दुकानदार अच्छा ।

याने मजदूरसे सुखतार अच्छा ।

लेकिन एक सख्त रोग बेकारी है ।

ए धार है बेकारसे बेगार अच्छा । (रंजुर)

(२) जिन्दगीको गहर है एक शरथ,

खैर विलंबेख खीजरी हो सरी ।

अब तो प्रकबर बसा है गंगातीर,

न ही खान दिग्गी हो सरी । (प्रकबर)

वैद्यार्थिको देवल सिखरपर घायस गरुड़ न होय—
(शुद्ध)

मंदिरकी चोटीपर बैठनेसे कौवा गरुड़ नहीं होता ।

नीचको ऊँचे स्थानमें बैठा देनेसे ऊँचा नहीं होता ।

वैद्यार्थिको वैद्यार्थिको, चंगा करे खुदाई—
(१) ईश्वर

आराम करता है डाक्टर फीस लेते हैं । (२) वैद्य

अपनी विद्या दिखता है पर आराम ईश्वर ही करता है ।

(१) अतम्बाको तो अपनी फीस खर्ग और दवा देना ।

खुदाका काम है तुम्हको करम करना शफ़ा देना ।

(प्रकबर)

अतम्बा=वैद्य । तुम्हको करम=दवा । शफ़ा=आराम

(२) मैं यह नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती ।

कहता हूँ कि वैद्यको खुदा कुछ नहीं करती ।

(प्रकबर)

वैद्यार्थिको वैद्यार्थिको गई, कानोकी आंख गई—
जब काम

बिगड़नेपर मजदूरी न दी जाय, तब क० ।

वैन तेय बलि जिमि चह फागू, जिमि शशि

चहहिं नाग अरि भागू—
(तुलसी) ऊँचो आकांक्ष

पर क० ।

वैद्यार्थिको चन्द्रतै निज घर नाहिं जलाय—
धलवान शयूसे बदला लेनेमें यदि चूक हो जाय तो

क्रोध या लज्जाके मारे अपनी ही हानि नका डालनी चाहिए ।

वैरीका झोल, बसुलेका डोल—
दुश्मनके बचन बसुलेको तरह करनेजोको छीलते हैं ।

वैरी तजै न हाटा खाये—
दुश्मन करनेसे भी तुम्हमें नहीं घरेलता ।

चाहते हैं, कठोरको कोई नहीं ।

वेटा वेटी बसका अच्छा—आज्ञाकारी लड़की या लड़का प्रयत्नशील है ।

वेटा भरियो, पर तिलस्तर न पड़ियो—(ज०) जीने की अपेक्षा तैतरा लड़केका मर जाना अच्छा है क्योंकि कि तैतरे लड़केका जीना श्रुभ समझा जाता है ।

वेटा लायगा चमारी, वह भी वह कहलायगी हमारी—धराय चीज़के सराहनेपर क० ।

वेटा हुआ जय जानिये, जब पोता खेले चार—लड़केका होना तभी सार्थक है जब घरमें पोता खेलता फिरे, क्योंकि पोता हो जानेपर वंश वृद्धिकी आशा रहती है ।

वेटी और ककड़ीकी बेल बराबर है—दोनों बहुत जल्दी बढ़ती हैं ।

वेटीका धन निमाना है आते भी सलाय, जाते भी सलाय—लड़की पैदा होनेपर भी रंज होता है और जब उसका ब्याह होकर वह अपने घर जाती है, तब भी रंज होता है ।

वेटीका भला चाहे तो धोलजमाई लाल की जे—जमाईको राजी रखनेसे वेटी सुखसे रहती है ।

वेटी चमारकी नाम रजरनियां—(२०) जाति या गुणके विरुद्ध जब नाम रक्खा जाय, तब क० ।

वेटीने किया कुम्हार, अम्माने किया लुहार, न तुम चलाओ हमार, न हम चलायें तुम्हार—स्पष्ट ।

वेटेसे नाम चलता है—वंश बढ़ता है ।

वे थांग चोरी नहीं होती—बिना भेदके चोरी नहीं होती। थांग=भेद । बानी दूसरेसे मालका पता या सहारा पाये बिना चोर चोरी नहीं करता ।

वेदर्द कसाई, क्या जाने पीर पराई—निष्ठुर व्यक्ति पर क० ।

वेदिल नौकर, दुश्मन बराबर—स्पष्ट ।

वे माघे घी लिचड़ी खाय, वे मेहरी ससुराले जाय ।

वे भादों पेन्हाई पढ्या, कहें घाघ ये तीनों कढ्या घी लिचड़ी गर्म खाना है इसे माघमें खाना चाहिये। बिना खीके सहारामें जानेसे क्रुदर नहीं होती ।

बिना भादोंके भूला नहीं डालना चाहिये; जो यह तीन काम करता है, वह मूर्ख है ।

वे मेहकी डामरी, घोड़ा बिना लगाम । वे माघके लश्कर तीनों भइल निकाम—बिना बर्षाका खेत जोतना, बिना लगामका घोड़ा, बिना सेनापतिकी सेना, ये तीनों बेकाम हैं ।

बेलके मारे बबूल तले, बबूलके मारे बेलतले—श्रमागा मनुष्य सब जगह ठोकर खाता है ।

बेल पका तो कौवेके बापकी क्या ?—जब कोई मनुष्य ऐसे कामकी तारीफ़ करने जिसमें वह देखल न दे सके वा उसका कुछ लाभ न हो, तब क० । कौवा बेलको अपनी चोंचसे नहीं तोड़ सकता ।

बेल फूटा राई राई हो गया—आपसमें फूट होनेसे मनुष्यकी क्रुदर नहीं होती ।

बेशकूफोंका दरवा खुल गया—जब कोई मुखताकी यात कने, तब क० ।

वे चसिले नौकरी नहीं होती—बिना सिफारिसके नौकरी नहीं लगती ।

वे चक्की शहनाई, मुण कूड़ने यजाई—जब कोई बेमौकी यात कहे, तब क० ।

नौकी पै फौकी लगै, बिन बचसरकी यात । जैसे बरभत युद्धमें रस सिंगार न सहाते । (इन्द्र)

वे शरमको सुख नहीं कंजूसको सुख नहीं—स्पष्ट ।

वेसवा सती, न कागा यती—स्पष्ट ।

वेसिरी फौज—बिना सेनापतिके फौज किसी कामकी नहीं । बिना नेताके जनता कुछ नहीं कर सकती ।

वेश्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय — बरसा कम उन्नको और जोगी ज्यादा उन्नका अच्छा समझा जाता है ।

एक पचीस बर्षका युवा पुरुष किसी बियाके यहाँ गया । बियाकी उस पचास बर्ष की थी । जब युवकने बियासे उसकी उम्र पूछी तो उसने कहा कि दस और दस और दो, यहाँ अपनी उम्र बाईस बर्षकी बताई । जब बियाने युवककी उम्र पूछी तो उसने कहा कि तुम्हारे पिताके मैं अभी पैदा ही नहीं हुआ ।

वेहयाईका बुरका मुंहपर डाल लिया है—

वेगर्म आदमीको क० ।

वेहयाके नीचे रूख जमा उसने जाता छांह हुई—

उस वेगर्मको कहते हैं जो बुरे कामको भी अच्छा समझता है ।

वेगर्मोंका नौकर नहीं है आपका नौकर है—

ठकुर संहाती कहनेवालेको क० ।

किसी बमोरने अपने मुसाहिबसे कहा कि मैं गनकी तरकारी बहुत अच्छी छीतो है, इसमें यद्यपि गुण है। वेदकर्म भी इसको तारीफ़ लिखी है। "इत्नाकं श्राक नायकम्"। उस मुसाहिबने भी जर्मिं जर्मिं मिला दी। बाद बमोरने, गनकी निम्दा की, क्योंकि यह कटीला भीता, और इसके खानेसे कफ़ छीता है, इसकी अलावा और भी इसमें अनेक अवगुण हैं। मुसाहिबने कहा 'ओ इज्जूर! मैं गनकी तरकारी अच्छी नहीं छीतो।' इसपर बमोरने कहा, 'क्यों मुसाहिब !' अतः मैंने इसकी तारीफ़की तो तुमने भी की, और सिर निम्दा करकेपर तुमने भी निम्दा की। इसका क्या कारण है ? इसपर मुसाहिबने कहा 'इज्जूर ! मैं आपका नौकर हूँ, न कि वेगर्मोंका ! यदि मासिक दिनको रात बसावे तो नौकरको उचित है कि उसी वक्त चन्द्रमा और तारे भी दिखा दें।' उमरा जो कंधे रात तो हम चाँद दिखा दें.....

बैठकर सिर मुल्फ़की करना, यह तमाशा फितायमें देखा—
 गुल्फ़क पदनेसे सत्र मुल्फ़ोंका हास जाना जा सकता है ।

बैठा बनियां क्या करे, उस फोटीके धान उस फोटीमें धरे—
 जब कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थका काम करे, तब क० ।

बैठा बनियां सिर घांट तौले } ऊ० दे० । करनेवाला
 बैठी बुद्धिया मंगल गाय } कुल न कुल करता ही रहता है ।

बैठे बनियांकी पहिचान, हेरफेर कोटीमें धान—
 दे० "बैठा बनियां"

बैठेसे तो क्राहूँका खजाना भी खाली हो जाता है
 जब कोई रोगमार नहीं करता और बैठे खाता है, तब क० ।

कार एक सुगन्धमान चादगाइ यह कंस म हो गया है ।
 उचने धर्मात्मा धन जमा किया पादि पदमन्त्र-लक्ष्मि धन

जो मुदे'की मुं'हमें रूपया रक्ता जाता है उसे भी कृषरे खुदवा कर निकलवा लिया पा ।

बैठेसे वेगार भली—
 खाली बैठे रहनेसे सुप्तमें काम करना अच्छा ।

(१) माया खादिमसे है दुकान्दार अच्छा ।

यानि मजदूरसे मुख्तार अच्छा ।

खेतिन एक सख्त रोग बं कारो है ।

ऐ यार है बेकारसे बं गार अच्छा । (रंजूर)

(२) जिम्दगीको जरूर है एक बरल,

खैर मिलकेल लीडरी ही सही ।

अब तो अकबर बसा है गंगातीर,

न ही खान दिल्ली ही सही । (अकबर)

बैठो देवल खिलपर घायस गरुड नहोय—
 (इन्दु)
 मंदिरकी चोटीपर बैठनेसे कौवा गरुड नहीं होता । नीचको ऊँचे स्थानमें बैठा देनेसे ऊँचा नहीं होता ।
 वैद करे वैदाई, चंगा करे खुदाई—
 (१) ईश्वर आराम करता है डाक्टर फीस लेते हैं । (२) वैद्य अपनी विद्या दिखाता है पर आराम ईश्वर ही करता है ।

(१) अतन्नाको तो अपनी फीस बिगं और दबा देना ।

खुदाका काम है तुम्को करन करना यफ़ा देना ।

(अकबर)

अतन्ना=वैद्य । लुत्फो करन=दया । शफ़ा=आराम

(२) मैं यह नहीं कहता कि दबा कुछ नहीं करती ।

कहता हूँ कि बे-इतने, खुदा कुछ नहीं करती ॥

(अकबर)

वैदकी वैदाई गई, कानोकी आंख गई—
 जब काम बिगड़नेपर मजूरी न दी जाय, तब क० ।

वेन तेय बलि जिमि चह कागू, जिमि शशि चहहिं नाग अरि भागू—
 (तुलसी) ऊँची आर्कात्ता पर क० ।

वैर लेनको चन्द्रतें निज घर नाहिं जलाय—
 बलवान शत्रुसे बदला लेनेमें यदि चूक हो जाय तो क्रोध या लज्जाके मारे अपनी ही हानि न कर डालनी चाहिए ।

वैरीका धोल, बसुलेका छोल—
 दुश्मनके बचन बसुलेकी तरह करनेको छीलते हैं ।

वैरी तजे न हाहा खाये—
 प्रामाद करनेसे भी छुल्लन नहीं छींटा ।

चाहते हैं, क्योरको कोई नहीं।

वेटा वेटी बसका अच्छा—आज्ञाकारी लड़की या लड़का प्रशंसनीय है।

वेटा मरियो, पर तिसर न पड़ियो—(ज०) जीने की अपेक्षा तैतरा लड़केका मर जाना अच्छा है क्योंकि तैतरे लड़केका जीना अशुभ समझा जाता है।

वेटा लायगा चमारी, वह भी वह कहलायगी हमारी—हराव चीज़के सराहनेपर क०।

वेटा हुआ जय जानिये, जय पोता खेले घर—लड़केका होना तभी सार्थक है जब घरमें पोता खेलता फिरे, क्योंकि पोता हो जानेपर वंश वृद्धिकी आशा रहती है।

वेटी और ककड़ीकी बेल बराबर है—दोनों बहुत जल्दी बढ़ती हैं।

वेटीका धन निमाना ही आते भी खलाय, जाते भी खलाय—लड़की पैदा होनेपर भी रंज होता है और जब उसका ब्याह होकर वह अपने घर जाती है, तब भी रंज होता है।

वेटीका भला चाहे तो बोल जमाईलाल की जै-जमाईको राजी रखनेसे वेटी सुखसे रहती है।

वेटी चमारकी नाम रजरनियां—(र०) जाति या गुणके विरुद्ध जय नाम रक्खा जाय, तब क०।

वेटीने किया कुम्हार, अम्माने किया लुहार, न तुम चलाओ हमार, न हम चलायें तुम्हार—स्पष्ट।

वेटेसे नाम चलता है—वंश बढ़ता है।

वे. धांग चोरी नहीं होती—बिना भेदके चोरी नहीं होती। धांग=भेद। यानी दूसरेसे मालका पता या सहारा पाये बिना चोर चोरी नहीं करता।

वेदई फुलार्ई, क्या जाने पीर पराई—निष्ठुर व्यक्ति पर क०।

वेदिल नौकर, दुश्मन बराबर—स्पष्ट।

वे माघे घी खिचड़ी खाय, वे मेहरा सुलारले जाय।
वे मादों पेन्हाई पव्या, कहेँ घाघ ये तीनों कव्या
घी खिचड़ी गर्म खाना है इसे माघमें खाना चाहिये।
बिना झीके, सहारामें जानेसे क्रूर नहीं होती।

बिना भादोंके भूला नहीं डालना चाहिये; जो यह तीन काम करता है, वह मूर्ख है।

वे मेहकी डामरी, घोड़ा बिना लगाम। वे माघके लश्कर तीनों भइल निकाम—बिना वर्षाका खेत जोतना, बिना लगामका घोड़ा, बिना सेनापतिकी सेना, ये तीनों बेकाम हैं।

बेलके मारे बवूल तले, बवूलके मारे बेलतले—अभाग मनुष्य सब जगह ठोकर खाता है।

बेल पका तो कौबेके घांपकी क्या?—जब कोई मनुष्य ऐसे कामको सारीफ़ सने जिसमें वह दुखल न दे सके वा उसका कुछ लाभ न हो, तब क०।
कौवा बेलको अपनी चोंचसे नहीं तोड़ सकता।

बेल फूटा राई राई हो गया—आपसमें फूट होनेसे मनुष्यकी क्रूर नहीं होती।

बेवकूफोंका दरवा खल गया—जब कोई सुखताकी यात कमे, तब क०।

वे बसोले नौकरी नहीं होती—बिना सिफारिस्के नौकरी नहीं लगती।

वे चक्की शहनाई, मुपकूढ़नें बजाई—जब कोई बेमौके यात कहे, तब क०।

नौकी पे फीकी लगे, बिन चबसरोकी यात।

कैसे बरमत पुषमें रस सिंगार न सुझात। (हृद)

वे शरमको दुख नहीं कंजूसको सुख नहीं—स्पष्ट।

बेसवा सती, न कागा यती—स्पष्ट।

बेसिरी फौज—बिना सेनापतिके फौज किसी कामकी नहीं। बिना नेताके जनता कुछ नहीं कर सकती।

वेश्या बरस घटावही जोगी बरस बढ़ाय—बेरया कम उम्रकी और जोगी ज्यादा उम्रका अच्छा समझा जाता है।

एक पचीस वर्षका पुष पुष किसी बेश्याके यहाँ गया।

बेश्याकी लस पचास वर्ष की थी। जब पुषकने बेश्यासे लसकी लस पूछी तो लसने कहा कि दस और दस और दो, अर्थात् अपनी लस काईस वर्षकी बताई। जब बेश्याने पुषकको लस पूछी तो लसने कहा कि तुम्हारे दिसाससे मैं अभी पैदा ही नहीं हुआ।

बेहयाईका बुरका मुंहपर डाल लिया है—

वेगमं आदमीको क० ।

बेहयाके नीचे रूल जमा उसने जाना छांह हुई—

उस वेगमको कहते हैं जो बुर कामको भी अच्छा समझता है ।

वेगनोंका नौकर नहीं हूँ आपका नौकर हूँ—

ठकुर उहाती कहनेवालेको क० ।

किसी भोरोने अपने मुसाहिबसे कहा कि बैगनकी तरकारी बहुत अच्छी होती है, इसमें यथेष्ट गुण है । बैद्यकमें भी इसको तारीफ़ लिखी है। “हन्नाकं ग्राहक नायकम्” । उस मुसाहिबने भी हाँ में हाँ मिला दी । बाद भोरोने बैगनकी जिन्दा की कौंकि यह कटोला होता, और इसके खानेसे कफ़ होता है; इसके अलावा और भी इसमें अनेक अवगुण हैं। मुसाहिबने कहा ‘जी इज्जूर ! बैगनकी तरकारी अच्छी नहीं होती ।’ इसपर भोरोने कहा, कौं मुसाहिब ! जब मैंने इसकी तारीफ़की तो तुमने भी कौं, और मेरे निन्दा करनेपर तुमने भी निन्दा की । इसका क्या कारण है ? इसपर मुसाहिबने कहा ‘इज्जूर ! मैं आपका नौकर हूँ न कि बैगनोंका । यदि भाविका दिनकी रात बतावे तो नौकरको खचित है कि उसी बत्त चन्द्रमा और तारे भी दिखाएँ ।’ उमरा जो कौं रात तो हम चाँद दिखाएँ.....

बैठकर सैर मुल्ककी करना, यह तमाशा किताबमें देखा—मुल्क पढ़नेसे सब मुल्कोंका हाल जाना जा सकता है ।

बैठा यनियां पना करे, उस फोटीके धान उस फोटीमें धरे—जब कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थका काम करे, तब क० ।

बैठा बनियां सैर घांट तौले } ऊ० दे० । करनेवाला
बैठी बुढ़िया मंगल गाय } कुल न कुल करता ही रहता है ।

बैठे बनियांकी पहिचान, हेरफेर फोटीमें धान—
दे० “बैठा यनियां”

बैठेसे तो फारूका खजाना भी खाली हो जाता है जब कोई रोजगार नहीं करता और बैठे जाता है, तब क० ।

काद एक सुगन्धमान चादगाद चद कंजुम को गया है ।
उपदि धरातल धन जमा किया पा कि धन, कल, कल धन

को मुर्देके मुँहमें कपया रक्ता जाता है उसे भी कृषे खुदा कर निकलवा लिया पा ।

बैठेसे वेगार भली—खाली बैठे रहनेसे मुफ्तमें काम करना अच्छा ।

(१) माता खादिमसे हुकाम्दार अच्छा ।

याने मजदूरसे मुल्ताए अच्छा ।

लेकिन एक सख्त रोग बँकारी है ।

ऐ यार है बेकारसे वेगार अच्छा । (रंजूर)

(२) जिन्दगीकी अरर है इका यरर,

खेर मिलकेल लीडरी ही सही ।

अब तो अकबर बसा है गंगोतीर,

न हो खान दिहनी ही सही ! (अकबर)

बैठा देवल सिखरपर वायस गरुड़ नहोय—(बुन्द)

मंदिरकी चोटीपर बैठनेसे कौवा गरुड़ नहीं होता ।

नीचको ऊँचे स्थानमें बैठा देनेसे ऊँचा नहीं होता ।

बैद करे बैदाई, चंगा करे खुदाई—(१) ईश्वर

आराम करता है डाक्टर फीस लेते हैं । (२) वैद्य

अपनी विद्या दिखाता है पर आराम ईश्वर ही करता है ।

(१) अतथाकी तो अपनी फीस लेग और दवा देगा ।

खुदाका काम है तुम्हो करम करना मफा देगा ।

(अकबर)

अतम्बा=वैद्य । तुम्हो करम=दवा । शफा=आराम

(२) मैं यह नहीं कहता कि दवा कुछ नहीं करती ।

कहता हूँ कि बे-इतने खुदा कुछ नहीं करती ।

(अकबर)

बैदकी बैदाई गई, कानोफी आंख गई—जब काम

बिगड़नेपर मजूरी न दी जाय, तब क० ।

बैन तैय बलि जिमि चह कागू, जिमि शशि

चहहिं नाग अरि भागू—(तुलसी) ऊँची आकांक्षा

पर क० ।

बैर लेनको चन्द्रतें निज घर नाहिं जलाय—

बलवान शत्रुसे बढ़ता लेनेमें यदि चूक हो जाय तो

क्रोध या सजाके मारे अपनी ही हानि न कर

खालनी चाहिए ।

बैरीका बोल, बसुलेका छोल—दुरमनके बचन

बसुनेकी तरह बनेनेको हीलते हैं ।

बैरी तजे न हाहा धाये—दुःखामद करनेसे भी

खुस्स नहीं होते ।

झाड़ी नू बड़ भई बिहाल, रिस रसमें चंपन हो। लाल
कई पखानो जग मन भाये बैरी तजै, न छाहा खाये।

(मीदा घुः को० लो० २० कौ०)

बैरी घोल धिनाघने, मरिये अपने काल—मौत
तो अपने समयपर ही आती है पर बैरीके घोल
भहाँ सहे जाते, कोसनेसे कोई नहीं मरता तथापि
कोसना घुरा मालूम पड़ता है।

बैरी मारिये फागुनकी बहार—दुरभनको मारनेसे
आनन्द होता है।

बैरी लागे हाथ तो, छोड़ न लेकर माठ। उसकी
जड़की मूलही, बाहर फँक निकाल—स्पष्ट।

बैरी संग न बैठिये, पीकर मद और भंग,
जो खोचा है बैठना, जब बैरीके संग—नया पीकर
बैरीके पास न बैठ, नहीं तो जान जानेका डर है।

बैरीसे बच, प्यारेसे रच—दुःखमनसे बचकर और
हितसे मिल कर रहना चाहिए।

बैलका बैल गया, नौ हाथका पधा गया—
पूरा नुकस्तान हो, तब क०।

बैल न कुदा कुदीगौन, यह तमाशा देखे कौन ?

जय किसीसे कोई मर्मभेदी बात कही जाय और
यह तो उसका उत्तर न दे पर दूसरा ही चिढ़कर
बोल उठे, तब क०। बिना ज़रूरत बोल उठनेपर क०।

बौले निदुर पिया त्रिपु दीप। आपुछि तिय बँठी गहि रोप
कहे पखानो जँहि गहि मोन। बैल न क्यूी शूदी गौन
(लो० २० कौ०)

बैल बघिया, सांभे अधिया—(क०) बैल और बघि-
या दोनों बटवारेके समय समान समझे जाते हैं।

बैल सरकारी, यारोंकी टिटकारी—दूसरेकी चीज़
से मन बहलानेपर क०।

बैले दीज जायफल क्या बोले क्या खाय—
मूल गुणकी कदर नहीं करता।

बैसांख नरदन—गधेको क०।

रासभो गदभगव व खरो व गाख मन्दनः।

घोटी वेकर, चकरा लेते हैं—(व्य०) खूब नफ़े
पर क०।

घोटी नहीं तो शोखया ही सही—नहाँसे कुछ
मिलना अच्छा है।

घोया गेहूँ उपजा जी—(क०) भलाईके बदले, बुराई
पानेपर क०।

घोया न जोता मुफ्तका पोता—(मु० ज०) (१)
अच्छे भाग्यपर क०। (२) खेत घोया जोता गया
ही नहीं नाहक ज़मीदारका पोत (लगान) देना
पड़े, तब भी क०।

घोये आम फले भाटा—दे० “घोया गेहूँ उपजा जौ”
बोलता चाकर मुनीमके आगे गूंगा—कमज़ोर
दिलके आदमीपर क०।

घोलता है जब तलफ ही घोलता—जब तक सांस
तब तक बात।

घोलतीपर सदमा है—दुःखसे अत्यन्त पीड़ित होने
पर क०।

घोलती बंद हो गई—(१) मर गया। (२) गाली
भी है।

घोलतेकी आशनाई है—प्रेम जीवन काल तक रहता
है। मित्रके मरनेपर जब दुःख प्रगट किया जाता है,
तब क०।

घोलहिं बचन मधुर जिमि मोरा, खाहिं महा
अहि हृदय कठोरा—(गुलसी) स्पष्ट।

घोली है बहु भांतकी, जो कोई बोले जान, दिये
तराजू तोलके, मुखसे बाहर आन—(कबीर) बात
विचारके कहना चाहिये।

घोट जीभ एकत करि बांट संहारि तोलिये।

बँताल कहे विक्रम सुनो, जीभ कंभारि बोलिये ॥

घोलेके न चालेके, मैं तो सुनेके भली—(ए० ज०)
सुस्त और आलसी स्त्रीको क०।

घोले तो बीबी मेरी, नहीं तो दरकार नहीं तेरी—
स्पष्ट।

घोहनी ठोनी रद बोला—(व्य०) घोहनी होनेसे
बला टलती है।

घोहरेकी राम राम यमका संदेशा—क्योंकि तगादा
हो तो करेगा।

घौना जोरुका जिलौना—स्पष्ट। नाटे आदमीको
चिढ़ानेके लिये क०।

व्याज और भाड़ा दिन रात चलता है—(व्य०)
स्पष्ट।

व्याजके आगे घोड़ा नहीं दौड़ सकता—(व्य०)

क्योंकि यह दिन रात चलता है।

व्याज खोर खुदाका चोर—(मु०) मुसलमानोंमें

व्याज खाना हाराम है, इसलिये क०।

व्याज बढ़ावे धन घना, राढ़ घटावे छो। जैसे

गंधक आगमें, गिरे तो दूनो हो—स्पष्ट।

व्याज मूलतें प्यारो होय—(व्य०) (१) मूलसे व्याज

प्यारा होता है (२) घेरेसे पांता अधिक प्यारा

होता है।

व्याज मोटा, जमामें टोटा—(व्य०) ज्यादे व्याज-

पर रुपया लगानेसे असल भी इधनेका दर रहता है।

व्याहका असगुन मालूम भये लहोरेमें आये भट्टा

(१०) स्पष्ट।

व्याह न कराव, भूठ मूठका चाव—किसी

कामके समाप्ति वा आरंभ होनेके पहिले जब कोई

अपना स्वार्थ पूरा करना चाहता है, तब क०।

व्याह नहीं किया तो क्या, चारात तो गये हैं—

हमने यह काम न किया तो क्या दूसरोंको करते तो

देखा है; अथवा जब किसीको तानेको तौरपर कहे

कि तुम इस कामको क्या जानो, तब क०।

व्याह पीछे पत्तल भारी—दे० "बरात पीछे"।

व्याहमें खाई बूर, फिर क्या खायगी धूर—जब

अच्छी दशामें कष्टे रहे तो फिर छल कब मिलेगा?

व्याहमें बीदका लेखा—हर एक चीजके लिये समय है।

व्याह हुआ नहीं गौनेका भगड़ा—काम करनेसे

पहिले मजूरीके लिये भगड़ा करे, तब क०।

व्याही छोड़ दे मंगनी न छोड़े—जिस लड़कीसे

सगाई ठहरी हो यदि उसे कोई दूसरा ही व्याह ले

जाय तो बहुत अपमान होता है, इसीलिये क०।

यदि कुछ अनबन भी हो जाय तो व्याहके छोड़ दे

पर मंगी हुई न छोड़े।

व्याही न बरात चढी, डोलीमें बैठी न चू चू हुई-

विना व्याहीको क०।

व्याही बैठीको घर रखना और हाथी बांधना

बराबर है—लड़की और जमाईको घरमें रखनेसे बहुत

खर्च उठाना पड़ता है, इसलिये क०।

व्याही घेटी पड़ौसन दाखिल—क्योंकि फिर वह

दूसरे घरकी हो जाती है।

व्याही मरी कुचारी भाग—क्योंकि व्याहीके मर

जानेपर कुचारीका व्याह अब उसी वरसे होगा।

जब एकके नाय हो जानेपर दूसरेको लाभ हो,

तब क०।

भ

भइल व्याह मोर करवा का—(भो०) काम हो

जानेपर जब दूसरेको उचित मांग पूरी नहीं की

जाती, तब क०।

भई अधियारी फूलो छाती चीन्ह पड़े राँड अहि-

घातो—अष्ट विधवाको क०

भई गति फीट भृंगकी नाई—भृंगी दूसरे कीयोंको

मी अचनासा ही बना लेता है। जब कोई अपना

स्वरूप छोड़कर दूसरेमें मिल जाय, तब क०।

जबसे खोखो चित्त में थांन। तबसे खोखो चित्त गति काम॥

योग उक्ति ज्यों कहते सुनाय। लखत कोट भृंगी हो जाय॥

(चित्त दर्शन। श्लो० २० कौ०)

भई गति साँव छडुन्दर केरी—जब किसी कामको

करते बने न छोड़ते अथवा दोनों हीमें आशंका जान

पड़े, तब कहते हैं। दे० "उगले तो अंधा"

(१) लाभ काम दोऊ दुख दाई, चली कौनके कष्टे सुमाई।

कई-पत्रानों सो नू उर धर, भई मोहित साँव छडुन्दर।

(श्लो० २० कौ०)

(२) भई छहँदर सपं गति, सगन्त बने न छास (गननी)

भंग पी और डंड पेल—भंगेड़ी अक्सर. भांगकी ता-

रीफमें कहा करते हैं।

हूँ ही कोटकी बना और देख टुक छुदरतका सेन।

कोड सन कामोंको गाफिल भंग पी और डंड पेल।

(भंगीर)

भंग पीना आसान है मौजें जान भारती हैं--

विना समके किसी कामका कर डालना सहज है,

पर उसका परिणाम भोगना कठिन है।

(१) बिजया खेकी सुभन है मौजे कठिन निदान।

(श्लो० २० कौ०)

(२) भांग मुखन है सुखमपर, छपर कठिन हो होय (७५)

भंगीकी जात क्या, झूठेकी बात क्या—झूठेका कोई विरवास नहीं करता ।

भंगीयां दर बाग़ रफ़नन्द वर गुठली सब रवा—
(फ़ा०) कोई भंगेड़ी बगोचमें गये और भांगके नशेमें

वर गुठली सब खा गये । भांग पीनेवालोंपर ताना है भकुआ भींगे गाँवके गोंयड़ा—गंवार आदमीपर क० । भगवतको भगवत ही जाने—गुणी ही गुणकी श्रद्धर जानता है ।

भगले चोर कूठरिया हाथ—(भो०) चोरके जो कुछ हाथ लगता है उसीको लेकर भाग जाता है ।

भजन और भोजन एकान्त भला—स्पष्ट ।

भजन कहाँ तातें भज्यो, भज्यो न एको वार । दूर भजन जातें कहाँ, सोते भज्यो गंवार—(विहारी) भजनेको कहाँ उसीसे भागा, एक वार भी उसे न भजा । जिससे दूर भागनेको कहा, रे गंवार मन ! तने उसीको भजा । तात्पर्य यह है कि भगवानको न भजा और विषयमें लिस रहा ।

भट पड़े घह ज़माना, नतनीको घूरे नाना—
स्पष्ट ।

भट पड़े वह सोना, जिससे टूटे कान—जिस चीज़से हानि हो, अच्छी होनेपर भी उसे काममें न लावे । जिस लड़के वा स्थितेदारसे बहुत कष्ट पड़े उसे उससे वा जिस धनके उपार्जन करनेमें बहुत कष्ट हो, उसपर क० ।

करिये सुख कौं होत दुख, यह कह कौन सवाल । वा सोनेको जारिये आसों टूटे कान । (४'द)

भट मटियारी बेसवा तीनों जात कुजात । आतेका आदर करें जात न पूछे यात—स्पष्ट ।

भटा एकको पित करे करे एकको वाय—२० 'किसीको बेगन' ।

भड़क भारी, खोसा खाली—बाहरी लिक्राफ़ पर क० । भड़भड़िया अच्छा, पेट पापो घु रा—साफ़ साफ़

फहनेवाला अच्छा, मनका कपटो अच्छा नहीं । भड़भूजनकी लड़की, फेसरका टीका—कमांनुसार लय जाति न हो, तय कहते हैं । धेजोड़ कामपर

भो क० ।

भद्रा धा घर दोयंगे, जिनके हैं नौ निद्र । अष्ट

कपाली दारिद्र्य, जब चाले तब सिद्ध—मुहूर्त और शकुन देखना धनवानके लिये है दरिद्रके लिए नहीं । भयदायक खलको प्रिय बानी, जिमि अकाशके कुसुम भवानी—स्पष्ट ।

भर दे भर पावे, काल कष्टक पास न आवे—
अधिक पुण्य करनेसे अधिक फल मिलता है ।

भर पेट खाना, नौद भर सोना—आलसी तया पेटू आदमीपर क० ।

भर माँग सेंदुर या भटपट रांड—या तो पूरी तरहसे छद्मगिन ही हो या निपट रांड ही हो जाय दे० "भर हाथ"

भरमा भूत शंका डायन—(१) भ्रम और शंका दोनों ही हानिकारक हैं । (२) वास्तवमें भूत और डायन कुछ नहीं है केवल भ्रम मात्र है ।

इसपर एक हठाल इस प्रकार है :—किसी वैश्यके एक लड़की थी । दोबालीके एक दिन पहले लड़की एक शीटमें गेद धोलकर बिना किसीकी कुछ कह पिताकी खटियाके पास इस ख्यालसे रख सोनेकी चली गई कि सबेरे दोवारमें दीवाली काटूँगी । सन्ध्याके समय उस वैश्यकी खटियाके पास उसकी स्त्री सदैव एक लोटा पानी भरकर रख दिया करती थी । उस दिन सिरहानेमें लोटा देखकर उसने समझा कि लड़कीने रख दिया होगा और वह भी सी रही । प्रातःकाल सोते ही वह वैश्य उस लोटेकी छटाकर जङ्गलकी लें गया । थापदल ले चुकनेके बाद क्या देखता है, कि रुधिर बह रहा है । इसपर उसने जाना कि यह रुधिर दलमें आया है, मालूम होता है कि किसीने मारू किया है या झुके कोई कठिन बीमारी हुई है । यह सोचकर वह अत्यन्त घबरा उठा और उसकी सभी सुधिबुधि जाती रही । बड़ी कठिनतासे वह घर तक पहुँचा और खाँटपर पड़ रहा । सामीकी ऐसी दया देखकर स्त्री पुरुती है, पर वह कुछ नवाव नहीं देता । बार बार स्त्रीके पुरुनेपर उसने भुंभलाकर कहा, 'शोक ! बड़ी दो बड़ोंमें मेरा प्राणाल होगा, क्योंकि मेरे सवा घेर लग गया है ।' यह सुनके स्त्री भी आपमें न रही और वैद कहीमके हलानेकी कोशिश करने लगी । इतनेमें उसकी लड़की भी जाग उठी और लोटा ढूँढ़ने लगी । लोटा नहीं मिलनेपर लड़कीने रोना शुरू कर दिया । जब उसकी मानी सोनेका कारण पूछा तो लड़कीने जवाब दिया कि पहले मैंने एक शीटमें गेद धोलकर बहा

रख दिया था, न मालूम क्या हो गया। वैश्यकी जब यह मालूम हुआ कि वह लहू न था, पर गेद था, तब उसका सारा दुःख जाता रहा और वह अपने में आ गया। कैवल धर्ममें पड़ कर ही उसे इस तरहकी बेचैनो हो गई थी और अपनेकी थोड़ी देर बाद यमराजका निहसान समझ बैठा था।

भर हाथ चूड़ी, परसू रांड—(५० ज०) बद चलन औरतपर क०। सहागिन बनो या रांड हो जावो अर्थात् तगादा सहे या हिसाब चुका दो। साफ कहनेके लिये क०।

भरा कद्दार, खाली कुम्हार, तेज जाता है— एक बोझ भारी होनेके कारण दूसरा हल्का होनेके कारण जलदी चलता है।

भरा सो धरा—जब भर जाय तब अलग घर दो दूसरेको भरो अर्थात् जो काम पूरा हो जाय उसे फिर दुहरानेमें समय नष्ट न करो।

भरी थालीमें लात मारना—जब कोई अभाग्यवश अपने लगे कामको छोड़ देता है, तब क०।

भरी मुट्टी सवा लाखकी—यात ढकी रहनेसे भरम घना रहता है; भरम न खोलनेके लिये क०।

भरेको भरता है—धनमें धन मिलता है।

भरे पेटपर शकर खारी—पेट भरा रहनेपर अच्छीसे अच्छी चीजमें भी स्वाद नहीं आता।

भरे व्याहमें वूर खाई, तो फिर क्या धूर खाय—जब अच्छी दयामें भी कष्ट रहे तो सब कय मिलेगा।

भरे समुन्दर घोघा प्यासा—खलकी अवस्थामें रहकर भी यदि दुःख भोगे, तब क०।

रही चरही भरी घमामें। व्यासी रही भरी गंगामें (शबी)

भरे समुन्दर घोघा हाथ—पूरा लाभ होनेकी जगहसे कुछ न मिले, तब क०।

भरोसेकी भैस, पड़ा चिआनी—मनुष्य जैसा सोचता है वैसा नहीं होता।

भल अनभल जानै सब कोई, जो जैहि भाव-नोक तेहि सोई—(तुलसी) स्पष्ट।

भल जनमल, भल पंडित भइल—(५०) जो पंडित होय उसीका जन्म सफल है।

भल मरलस भल पिल्लू पड़ल—(५०) पापी मनुष्य पर क०।

भल माथ मुडौलन, भल बेल गिरलैन— (५०) अभागको क०।

मलाईकर बुराईसे डर—स्पष्ट।

भला कर भलां हो, सौदाकर नफा हो—स्पष्ट।

भला किया सो खुदाने, बुरा किया सो बन्देने—

(१) अच्छे काम सब ईश्वरके हैं बुरे काम सब मनुष्य करता है। (२) कृतग्रको भी क० जो क्रिमिके किये सबकेको नहीं मानता।

भला मानस धरमें बड़ा, रिजालेने जाना मुकसे डरा—जो कैसा रहता है वह वैसा ही सोचता है।

भला हुआ दीदी गौने गई, दीदीकी फरिया मइका भई—(५० ज०) ननद जब अपने सरराल चली जाती है तो कुछ आज़ादी या जाती है।

भली भइल पियाके घाघ मारल, जे बेगारीसे बचल—(५० ज०) दे० “बोर गरी”।

भले आदमीकी मुर्गी टके टके—भला आदमी मुलाहिजेमें मारा जाता है।

भलेका जमाना ही नहीं—जब किसीके साथ भलाई करनेका उलटा फल हो, तब क०।

भलेकी यातें रसकी खानि, बुरेकी यातें दुःख निदान स्पष्ट।

भलेके भाई, बुरेके जमाई—अच्छेके भाई बुरेके जमाई बनो।

बीधन बी बीध बकि हुन बांके न सी
हरियन्द्र नगद दनाद बभिमानीके

भले घोड़ेको एक चायुक, भले आदमीकी एक बात—अकृतमन्दीके लिए इयारा काफ़ी है।

भले दिन आर्यंगे, तो घर पूँछते चले आर्यंगे—सदमी आपसे आप चली आती है।

भले बाबा बन्द पड़ी, गोबर छोड़ फसीदे पड़ी—(ज०) शरीरकी सड़को घनी धरमें ब्याही जाय तो उसकी पहिली सी स्वाधीनता नहीं रहती; गोबर थापनेमें आज़ादी थी यह कसीदा काङ्गनेमें न रही। भले बुरेका साथ क्या ?—नहीं निभ सकता।

मले घुरे सब एकत्ते, जब लौं बोलत नाहिं ।
जानि परत है काक पिक, मृत्यु वसन्तके माहिं—
(वृन्द) कामसे मनुष्यका गुण श्रवगुण जाना
जाता है ।

तामरं सुखन न गुफं ता वाग्द,
एषो-इतरम निहृफं ता वाग्द ।

मले भलाई पै लहहिं, लहहिं निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच—
(तुलसी) अर्थ स्पष्ट है; यह प्रायः दुष्ट जनों पर
कही जाती है ।

(१) जो वाकी सौं रनि रई, सो तेहि चरदर दैत ।

काकिल बंधि लैत है, काक निबारी लैत ॥ (वृन्द)

(२) भमरा मधुमिच्छनि ब्रधमिच्छनि भषिका ।

सज्जना गुणमिच्छनि दोषमिच्छनि पामरा ॥

मले भलेका सब कोई साथी—अच्छेकेसबसाथीहैं ।
मले भवन भव वायन दोन्हा—दे० 'अच्छे घर' ।
मले मानुषकी सब तरह खरायो है—स्पष्ट ।
मले संग वैठिये, खाश्ये नागर पान । घुरे संग
वैठिये, कटाश्ये नाक और कान—अच्छी संगतमें
बैठनेसे लाभ और घुरी संगतमें बैठनेसे हानि
होती है ।

मलोभयो मेरी मटुकी टूटी, मैं दही घेचतसे छूटी
जय कोई काम भारी पड़ जाय, और उससे रिहाई
हो, तब कहते हैं । जय कोई काम अपनी मूर्खतासे
विगड़ जाता है तो अपना दोष छिपानेके लिये भी
कहते हैं मानों हमने ऐसा जानके किया है ।

मलौं न होई-दुष्ट-जन, मलौं कहै जो कोय ।
विप मधुरौ मीठौ लवन, कहै न मीठौ होय—
(वृन्द) किसीके कहनेसे बुरा मनुष्य अच्छा नहीं
हो सकता ।

भवन बनावत दिन लगे, ढाचत लगे न चार—
(वृन्द) बनाते देर लगती है विगाड़ते देर नहीं
लगती ।

भसकड़के दामादको भात ही मिठाई—पेटार्थको
क० । क्योंकि उसे तो बहुत खानेसे काम है ।

भाई, भतीजा, भानजा, भाट, भांडा, भुईहार ।
इतने भग्ना छोड़कर, फिर करिये व्यवहार—
स्पष्ट ।

भाइयोंके दंड मलो, भाइयोंकी खुशामद करो—
जब कोई पहलवान कुश्ती मारता है तब उसकी जे
जंकार मनानेके लिये लोग उसके दंड मलते हैं ।
जब कोई मनुष्य अपनी शक्तिके बाहर काम करने
जाय और सफल नहो या जितनी डींग हाँके उतना
कर न सके, तब क० ।

भाई ऐसन हितना, भाई ऐसन बरोना... (पू०)
भाई सा मित्र और भाई सा शत्रु कोई नहीं ।
भाई न दे भाव दे—(व्य०) बाजार-भाव चीज दे
भाई समझके न दे अर्थात् व्यवहारमें मुलाहिजा न
करे ।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर चाव करे—
कपटी मित्रको कहते हैं जो भाईसा भाव दिखावे
और ऊपरसे तो प्यार करे पर भीतरसे जड़ कटे ।

भाई भावका, नहीं अपने दावका—भाई वही है
जो प्यार करे, वह नहीं जो अपना स्वाय देखे ।

भाई वही जो विपद सहाय—स्पष्ट ।

भाई सा दुश्मन नहीं, भाई सा मित्र नहीं—
देखो "भाई ऐसन हितना" ।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर—छींके पर वह चीज
रखी जाती है जिसकी अभी कोई जरूरत नहीं ।
यहां भाई शब्दमें श्लेष है जिसका अर्थ भ्राता और
मन पसंद है । इसलिए इसके दो अर्थ हैं । (१)
भाई ही अपना होता है बाकी सब किनारे कर दिये
जाते हैं । (२) जो चीज अच्छी लगी सो खाई
याक्री उठाकर छींकेपर रख दी ।

भांग कहे "मैं रंगी जंगी" पोस्त कहे "मैं शाहे-
जहां" अफ़ोम कहे "मैं सुंजी वेगमें, मुंभको खाके
जाय कहाँ—(स्पष्ट) अफ़ोमका नया छोड़नेसे नहीं
छूटा, इसलिए कहते हैं ।

भांग जनि देहु गवार्नको, हड़िया भर भात
विगाड़नको—भांगके नशेमें खाया बहुत जाता है,
इसलिए क० ।

भांड पुकारे पीरचस, मिस समझे सबकोय—
भांड यदि पीड़ाबय भी चिहाता हो तो उसे भी
लोग नरुल ही समझते हैं ।
भांडों संग खेती की, गा यजाके अपनी की—
भांडोंके सामें खेतीकी, उन्होंने गा यजाके अपनी

कर ली। जब कोई सीधा आदमी लफंगोंके साथ काम करे और उसका सब धन जाता रहे, तब कहते हैं।

भाषा जौन जाने ताहि शाखा मृग जानिये—

(१) जो केवल भाषा ही जानता है (अर्थात् संस्कृत नहीं जानता) वह बन्दरके तुल्य है। (२) जो भाषा (अर्थात् हिन्दी) नहीं जानता वह बन्दरके तुल्य है।

भागलपुरके भगौलिय, कहल गाँवके ठग। पटने के दिवालय, तीनों नामजद—स्पष्ट।

भागे जाहिं नाम रजपूत—(च०) नाभानुसार कर्म न हो, तब क०।

भागते भूतकी लंगोटी भी बहुत ही—

भागे भूतकी मूँ मली—

(व्य०)
जब सभी

जानेको हो तो उसमेंसे जो कुछ बच जाय वही लाभ है। जिससे कुछ भी मिलनेकी आशा नहीं उससे थोड़ा भी मिल जाये, तब क०।

भाग्यवानके खेतको जोत जात हैं भूत-नसीबवर-का काम थाप ही हो जाता है।

भागे हुए लश्करका मर्द पीछा नहीं करता—

जो हार मान ले उसे न मारना चाहिये।

भाजीकी भाजी, क्या दूसरेकी मुहताजी—

(ज०) इससे अधिक और क्या चाहिए।

भाजी पत्ता जे भखें, तिन्हें सतावे काम। दाल

भात जे खात हैं, तिनकी जानिं राम—स्पष्ट।

श्रीक—विश्वामित्र परांगरः प्रथमः पाताम्बु पश्याना।

श्रीपिस्वा सुख पंक्तं सुकृतिं दृष्टं न मोहं गतां ॥

शक्यं सद्यं पयोदधि युतं सुकृत्वं यो मानवा।

शिवामिन्द्रिय निय हो यदि भवेत्तु विंशसरेण सागरा ॥

(भवहरि)

भाड़ लोपती जाय, हाथ फालेका फाला—

भाड़के लीपनेसे भी हाथ काला होता है। बुरेके

साथ भलाई करने पर भी बुराई ही मिलती है।

भाड़ा व्याज दच्छता, पीछे पड़े कुच्छता—इन

तीनोंको हाथके हाथ चुकाना चाहिये थाकी रहनेपर फिर घसल नहीं होते।

भात खाकर जात पूँछना काम करनेके पहिले

जांच करनी चाहिये, पीछे नहीं।

भात खाते हाथ पिराय—(ज०) एकमात्रापर क०।

भात खाते बहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हनसे-स्पष्ट।

भान छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता—स्पष्ट।

बुनि बुनि प्यारी बस रतिराज,

बकी बहत पिय उदिम काज।

बछी पखानी ग्यो जन भज,

भात तजो पे साथ न तजो।

(प्रवक्तवपनिहा। श्लो० १० श्लो०)

भात बिना ही रांड रसोई, खांड बिना अनपूती।

बिन घिडकी जिन रोटी खाई मानो खाई जूती-स्पष्ट।

भात होगा तो कौबे बहुत आ रहेंगे—धन होगा

तो खानेवाले बहुत मिल जायेंगे। (व्य०) माल

होगा तो बहुत गाहक मिल जायेंगे।

भादोंका भट्टा एक साँग गीला एक सूखा—

(क०) भादोंमें वर्षा कम होती है।

भादोंकी घाम, और साझेका काम—यह दोनों

बुरे होते हैं।

भादोंकी छाल भूतोंको, कातकी छाल पूतोंकी—

(ज०) भादोंमें धाड़ हाविमरकर और कातिकमें गुण

कारक होती है, इसीलिये क०। कातकी=कातिक

महीने की।

भादोंकी धूपमें हिरण फाले होते हैं—सदसीका

घाम कड़ा होता है।

भादोंके मेहसे दोनों साखकी जड़ बँधती ही—

(क०) भादोंमें पानी बरसना दोनों फसलके लिये

अच्छा है।

भादों दोनों साखका राजा है—(क०) क्योंकि इस

समयमें अच्छी अच्छी फसल होती है।

भादोंमें जो घरखा होय, फाल पछोकर जाकर

रोय—(क०) भादोंमें पानी बरसनेसे उपज अच्छी

होती है, इसलिये अकाल नहीं पड़ता।

भानु उदय दीपक कह काम—बलमान या गुण्यके

सामने कमजोर या मूर्खकी क्रूर नहीं होती।

भानु श्यामु सर्व रस खाहीं, तिन पटं मंद कदत

कोठ नहीं—ममरयको कोई दोष नहीं देता।

भले घुरे सब एकसे, जब लौं बोलत नाहिं ।
जानि परत ई काक पिक, ऋतु वसन्तके माहिं-
(वृन्द) कामसे मनुष्यका गुण अवगुण जाना
जाता है ।

तामरे सुकन न गुफ्ता बायद,
ऐबो इतरय निहुफ्ता बायद ।

भले भलाई पे लहहिं, लहहिं निचाई नीच ।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीच-
(तुलसी) अर्थ स्पष्ट है; यह प्रायः दुष्ट जनों पर
कही जाती है ।

(१) जो जाही सो रमि रई, सो तैहि भादर दैत ।

काकिल भंभहि खेत है, काक निबारी खेत ॥ (इन्द)

(२) धमरा मधुमिच्छन्नि म्रणमिच्छन्नि भषिका ।

सञ्जना गुणमिच्छन्नि दोषमिच्छन्नि पामरा ॥

भले भलेका सब कोई साथी-अच्छेकेसबसाथीहैं ।
भले भवन भव वायन दोन्हा—दे० 'अच्छे घर' ।
भले मानुषकी सब तरह खराबी है—स्पष्ट ।
भले संग वैठिये, खाइये नागर पान । घुरे संग
वैठिये, कटाइये नाक और कान—अच्छी संगतमें
बैठनेसे लाभ और घुरी संगतमें बैठनेसे हानि
होती है ।

भलो भयो मेरी मटुकी टूटी, मैं दही वचनसे छूटी
जब कोई काम भारी पड़ जाय, और उससे रिहाई
हो, तब कहते हैं । जब कोई काम अपनी मूर्खतासे
विगड़ जाता है तो अपना दोष छिपानेके लिये भी
कहते हैं मानों हमने ऐसा जानके किया है ।

भलौ न होई दुष्ट-जन, भलौ कहै जो कोय ।
विप मधुरौ मीठौ लवन, कहे न मीठौ होय—
(वृन्द) किसीके कहनेसे घुरा मनुष्य अच्छा नहीं
हो सकता ।

भवन बनावत दिन लगे, ढावत लगे न बार—
(वृन्द) बनाते देर लगती है बिगाड़ते देर नहीं
लगती ।

भसकड़के दामादको भात ही मिठाई—पेठार्यको
क० । क्योंकि उसे तो बहुत खानेसे काम है ।

भाई, भतीजा, भावजा, भाट, भांड, भुईहार ।
इतने भभमा छोड़कर, फिर करिये व्यवहार—
स्पष्ट ।

भाइयोके दंड मलो, भाइयोकी खुशामद करो—
जब कोई पहलवान कुत्ती मारता है तब उसकी जे
जंकार मनानेके लिये लोग उसके दंड मलते हैं ।
जब कोई मनुष्य अपनी शक्तिके बाहर काम करने
जाय और सफल न हो या जितनी दोग हाँके उतना
कर न सके, तब क० ।

भाई ऐसन हितना, भाई ऐसन वरीना... (प०)
भाई सा मित्र और भाई सा शत्रु कोई नहीं ।
भाई न दे भाव दे—(व्य०) बाज़ार-भाव चीज़ दे
भाई समझके न दे अर्थात् व्यवहारमें मुलाहिजा न
करे ।

भाई भाव करे, तलमारे ऊपर चाव करे—
कपटी मित्रको कहते हैं जो भाईसा भाव दिखाय
और ऊपरसे तो प्यार करे पर भोतरसे जड़ काटे ।

भाई भावका, नहीं अपने दावका—भाई वही है
जो प्यार करे, वह नहीं जो अपना स्वाय देखे ।

भाई वही जो विपद सहाय—स्पष्ट ।
भाई सा दुश्मन नहीं, भाई सा मित्र नहीं—
देखो "भाई ऐसन हितना" ।

भाई सो भाई, बाकी छींके पर—छींके पर वह चीज़
रखी जाती है जिसकी अभी कोई जरूरत नहीं ।
यहां भाई शब्दमें श्लेष है जिसका अर्थ भ्राता और
मन पसंद है । इसलिए इसके दो अर्थ हैं । (१)
भाई ही अपना होता है बाकी सब किनारे कर दिये
जाते हैं । (२) जो चीज़ अच्छी लगी सो खाई
बाकी उठाकर छींकेपर रख दी ।

भांग कहे "मैं रंगी जंगी" पोस्त कहे "मैं शाह-
जहां" अफ़ोम कहे "मैं सुग्री वेगम, मुम्बको खाके
जाय कहाँ—(स्पष्ट) अफ़ोमका नशा छोड़नेसे नहीं
हटता, इसलिए कहते हैं ।

भांग जनि देहु गवांरनको, हड़िया भर भात
विगाड़नको—भांगके नशेमें खाया बहुत जाता है,
इसलिए क० ।

भांड पुकारे पीरवस, मिस समझे सबकोय—
भांड यदि पीड़ाका भी चिह्नता हो तो उसे भी
लोग नज़र ही समझते हैं ।
भांडों सँग खेती की, गा बजाके अपनी की—
भांडोंके साथमें खेतीकी, उन्होंने गा बजाके अपनी

कर ली। जब कोई सीधा घादमी लफाँके साथ काम करे और उसका सब धन जाता रहे, तब कहते हैं।

भाखा जौन जाने ताहि शाखा मृग जानिये—

(१) जो केवल भाषा ही जानता है (अर्थात् संस्कृत नहीं जानता) वह बन्दरके तुल्य है। (२) जो भाषा (अर्थात् हिन्दी) नहीं जानता वह बन्दरके तुल्य है।

भागलपुरके भगौलिय, कहल गाँवके ठग। पटने के दिवालिय, तीनों नामजुद—स्पष्ट।

भागे जाहि नाम रजपूत—(च०) नामानुसार कर्म न हो, तब क०।

भागते भूतकी लंगोटी भी बहुत है—

भागते भूतकी मूँछें मली—

(व्य०)
जब सभी

जानेको हो तो उसमेंसे जो कुछ बच जाय वही लाभ है। जिससे कुछ भी मिलनेकी आशा नहीं उससे थोड़ा भी मिल जावे, तब क०।

भाग्यदानके खेतको जोत जात है भूत-नसीबकर-का काम धारा ही हो जाता है।

भागै हुए लक्षकरका मर्द पीछा नहीं करता—जो हार मान ले उसे न मारना चाहिए।

भाजीकी भाजी, क्या दूसरेकी मुहताजी—(ज०) इससे अधिक और क्या चाहिए।

भाजी पत्ता जे भलें, तिन्हें सतावे काम। दाल भात जे खात है, तिनकी जानि राम—स्पष्ट।

शोक—विश्वामित्र पराभरः प्रभृतयः वाताम्बुपर्षामना।

को मिश्रा सुख पंजनं सुललितं दृष्टैव मोहंगतां ॥

गाल्यत्रं सद्यतं प्रयोदधि शुभं सुतां च यो मानवाः।

विश्वामित्रिय निषको यदि भवेत्तुंश्चरन्तु सागरा ॥

(मठहरि)

भाड़ा लीपती जाय, हाथ कालेका काला—

भाड़ेके लीपनेसे भी हाथ काला होता है। सुरेके साथ भलाई करने पर भी सुराई ही मिलती है।

भाड़ा ध्याज दच्छना, पीछे पड़े कुच्छना—इन तीनोंको हाथके हाथ बुकाना चाहिए याकी रहनेपर फिर बसल नहीं होते।

भात खाकर जात पूछना—काम करनेके पहिले जांच करनी चाहिए, पीछे नहीं।

भात खाते हाथ पिराय—(ज०) सुकुमारतापर क०।

भात खाते बहुतेरे, काम दुल्हा दुल्हनसे—स्पष्ट।

भान छोड़ा जाता है साथ नहीं छोड़ा जाता—स्पष्ट।

भुनि भुनि प्यारो बस रतिराज,

बख्यो बधत प्रिय उचिम काज।

बख्यो पखानो ज्यो जग भजै,

भात तजै पै साथ न तजै।

(प्रबसतपतिका। ली० २० काँ०)

भात बिना है रांड रसोई, खांड बिना अनपूती।

बिन घिउकी जिन रोटी खाई मानो खाई जूती—स्पष्ट।

भात होगा तो फौचे बहुत वा रहेंगे—धन होगा तो खानेवाले बहुत मिल जायेंगे। (व्य०) माल होगा तो बहुत गाहक मिल जायेंगे।

भादोंका भड्डा एक सींग गीला एक सूखा—(क०) भादोंमें वर्षा कम होती है।

भादोंकी घाम, और साझेका काम—यह दोनों घुरे होते हैं।

भादोंकी छाछ भूतोंको, कातकी छाछ पूतोंको—(ज०) भादोंमें छाछ हानिकारक और कातिकर्म गुण कारक होती है, इसीलिये क०। कातकी=कातिक महीने की।

भादोंकी धूपमें हिरण काले होते हैं—बदलीका घाम कड़ा होता है।

भादोंके मेहसे दोनों साखकी जड़ वैधती है—(क०) भादोंमें पानी बरसता दोनों फसलके लिये अच्छा है।

भादों दोनों साखका राजा है—(क०) क्योंकि इस समयमें अच्छी अच्छी फसल होती है।

भादोंमें जो बरखा होय, काल पछोकर जाकर रोय—(क०) भादोंमें पानी बरसनेसे उपज अच्छी होती है, इसलिये अकाल नहीं पड़ता।

भानु उदय दीपक कह काम—धलवान या शुष्कीके सामने कमजोर या सूखकी इन्द्र नहीं होती।

भानु कृशानु सर्वे रस खाहीं, तिन कड़ मंद फहत कोड नाही—संमत्पको कोई दोष नहीं देता।

भावधिना प्रतिकूल जय तव ऊंट चढ़ेपर
कूकर काटे—दे० 'ऊंट चढ़े'

भार डाल सब भाड़में, सम्मन उतरे पार—
विचित्रिमें पड़ जानेसे जब कोई अपनी सब चीज
खोकर जानकी रिहाई पा लेता है, तब क० ।

भारी नाम पहाड़खां जय बोलें तब पींड—
नामके अनुसार काम वा गुण न होनेपर क० ।

भारी पत्थर देखा, चूमकर छोड़ दिया—जो काम
अपने करने लायक न लंचे, उसे छोड़ दे ।

रंज रने पैमाने बना तोड़ दिया ।

चलफतका रिग्ता औरसे जोड़ दिया ॥

उस बुझमें तो थाने दिलवरी थी लेकिन ।

भारी मत्वर वा चूमकर छोड़ दिया ॥

भारी व्याज मूलको धाय—(व्य०) व्यादे सूदपर
रखा लगानेसे असल भी वसूल नहीं होता ।

भावजकी धैली और सराफ़ी करे देवरा—
दूसरेके धनकी ख़ैरात करनेपर क० या जब आदमी
दूसरेके काममें अपना नाम चलाता है, तब क० ।

भाव न जाने राव—जो जिस व्यवसायको करता है
वही उसका हाल जानता है ।

भाव रावकी खबर नहीं—राजा और बाज़ारकी दर
पहिलेसे कोई नहीं जानता ।

भाव राव खुदाके हाथ—स्पष्ट ।

भावीके घस संसार है—स्पष्ट ।

जो रहीम भावी कह, होती अपने हाथ ।

राम न जाते छिन संग सीता रावन साथ ॥

भावी बड़ी प्रबल है—स्पष्ट ।

मुझ भरत भावी प्रबल, बिलख फटैउ सुनि नाथ । (तुल०)

भीषकी हंडिया सिकहरपर नहीं चढ़ती—क्योंकि
पह ज़ाली रहती है ।

भीषके टुकड़े बाज़ारमें डकार—(च०) जो चर्च
घमंड करता है, उसपर क० ।

भीष मांगे और आँख दिखावे—नीच होकर जो
दूसरेपर रोव दिखावे। विशेष कर छपरे सारि और
सोरासी फन्हीरेंपर क० । जो ज़बरदस्ती मांगा
चाहते हैं अथवा जब कोई आदमी ज़बरदस्ती करके
किसीसे कोई पदार्थ मांगे, तब क० ।

भीगा चूहा—ख़राब चाल चलनवालेको क० ।

भीखमें पछोड़ क्या—जो चीज़ मुफ़्तमें मिले उसमें
दोष न निकालना चाहिए ।

भीगी बिल्ली—सयाने वा धूर्त आदमीको क० ।

भीगी बिल्ली बताना—बहाना करनेपर क० ।

किसी मालिकने अपने मुल नौकरको बिराग बुझानेके
लिए कहा । नौकरने जबाब दिया कि चाँख मूँद लीजिये
बंधकार ही जायगा । दूसरे दिन फिर मालिकने उसे
कहा बाहर जाकर देखो इटि होती है या नहीं । इसपर
उस धूर्त आदमी नौकरने जबाब दिया कि एक भिड़ी
मेरे गगन होकर जा रही थी और उसका बदन भीगा
मालूम पड़ा ।

भीत टले, पर वान न टले—ख़राब आदत किसी
तरह नहीं छूटती ।

भीतड़ा नाम कि गीतड़ा नाम—(मा०) दो ही
कामोंसे नाम होता है, कविता करनेसे या हमारतें
बनवानेसे ।

भीतरके पट तय खुले बाहरके जब दे—ज्ञान
उत्पन्न होनेसे भीतरका अन्धकार जाता रहता है ।

भीतर भांग अरु तुलसी बाहर—कपटके बतोंव-
पर क० ।

(१) खकिया सौं सब विधि तजि प्यार ।

चोरी सौं नित प्रति हितधार ॥

लोग छलि यदु जगमें जादिर ।

भीतर भांग अरु तुलसी बाहर (लो० १० कौ०)

भीत रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे—(ज०) जड़
रहेगी तो फल फल भी हो जायेंगे । पूँजी रहेगी तो
रोज़गार बहुत मिल जायगा । हड्डी रहेगी तो मांस
भी बंद जायगा, इत्यादि बातोंके लिए क० ।

भीष्म प्रतिज्ञा—कठोर प्रतिज्ञा । भीष्मने प्रतिज्ञा की
थी कि मैं आजन्म विवाह नहीं करूँगा और इस
कठोर प्रतिज्ञाको उन्होंने पूर्ण भी किया था । इसीसे
भीष्मका अर्थ कठोर रक्खा ।

भुगतमान भुगते चने, ज्ञानी मूरख, दोय, ज्ञानी
भुगते ज्ञान सौं मूरख भुगते रोय—जो भोगमान
है सो सभीको भोगना पड़ता है क्या ज्ञानी क्या
मूर्ख । ज्ञानी हंसकर और मूर्ख उसे रोकर भुगतता है ।

चाकिल था सो तो चाँपको समझाके मर गया ।

वे चक्र धाती पीठके घबराके मर गया । (जमोर)

भुस ऊपरको लीपयों, अरु बालूकी भीत—(दृन्व)

यह दोनों बहुत जल्द खराब हो जाती हैं।

भुसके मोल मलीदा—(ज्य०) जब अचछा माल

सस्ते दाममें बेचा जाय, तब क०।

भुसमें आग लगाकर जमालो दूर खड़ी—(ज०)

लड़ाई लगानेवाली स्त्रीको क०।

भूआकी नदीमें कौन बहे—छह सब कोई चाहता

है दुःख कोई नहीं चाहता। मुआ=मैल, फेन।

भूखको भोजन क्या और नौंदको विछौना क्या

दे० "भूख न जाने"

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये कयाय, जीवण

गये तिरिया मिले, तीनों देव बहाय—स्पष्ट

तीनों बेकाम हैं। कयाय=गर्म कपड़ा।

भूख न जाने यासी भात, प्यास न जाने धोयी

घाट—आतुरके लिये कोई नियम लागू नहीं है।

चपातुराणां न बलं न बुद्धिः, तत्रातुराणां न च पावग्रहिः।

कामातुराणां न भयो न सञ्जा, निद्रातुराणां न च भूमि शय्या

भूखमें किवाड़ पापड़ } भूखमें बुरी चीज भी

भूखमें गूलर पकवान } अच्छी लगती हैं।

भूख लगी तो घरकी सूझी—भूख लगनेपर घर धाद

आ जाता है।

भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं—ईश्वर

सबको खानेको देता है। जितने जीव हैं सब भूखे

उठते हैं पर भूखा सोता कोई नहीं।

भूखा खाये ही पतियाय—स्पष्ट।

रसयत्न मिले माल सो लाल, भवधि बदी निशि सुरति रसाल।

भीभी छक्ति मंद संसकाय, भूखा खाये ही पतियाय।

(सत्य दूतिका) (लो० २० की०)

भूखा गया जो बेचने, अधाना कहे धन्धक रख—

जूरुस्त आ पड़नेपर जब एकपर दूसरा दबाव डालता

है, तब क०।

भूखा चाहे रोटी दाल, धाया कहे में जोड़ू माल

स्पष्ट।

भूखा जोरू बेचे, रज्जा कहे उधार लू—दे० भूखा

गया।

भूखा तुरक न छेड़िये होजाय जीका भाइ—भूखे

मुसलमानको न छेड़े।

भूखा बंगाली भात भात पुकारे—छोटे बच्चे जब

दूधके लिए रोते हैं, तब उन्हें यह मसल क०। जिस

पदार्थको मनुष्य बहुतायतसे खाता रहता है उसका

अभ्यास उसको पड़ जाता है जब भूख लगती है तो

वह वही मांगता है।

बाह रही बह सुन्दर वाम, तो बिनु चैन नहीं वगश्याम।

लोग छक्ति परसिंह जुभाली, रट क्यों भात भात बंगाली।

(लो० २० की०)

भूखा मरता क्या न करता—भूखा आदमी सब

कुछ कर सकता है।

भूखा मरे कि सतुआ साने—भूखे रह जानेकी

अपेक्षा सच ही खाना अच्छा है।

भूखा सो रुखा—भूखेको मोघ जल्दी आता है।

भूखेको भन्न पियासेको पानी, जंगल जंगल

अयादानो—भूखेके लिये अन्न और प्यासेके लिये

पानी सब जगह मिलता है।

भूखेको क्या रुखा, और नौंदको क्या तकिया—

दे० "भूख न जाने"।

भूखेको कहा "दो और दो कै" कहा "चार

रोटियां—अपने मतलबकी समझना।

पूँछा किसीने यह किसी कामिल फकीरीसे,

सुरज भी चाँद इक़ने बनाये हैं काँचके।

यह सुनके बोला बाबा, खुदा तुमको खेर दे,

इन ती न चाँद समझे न सुरज हैं जानते।

बाबा हमें तो यह नजर आती है "रोटियां" (नज़ीर)

भूखेको खिला, और नंगीको पहिना—स्पष्ट।

भूखे घरमें नोन निहारी—भूखेको नमकही न्यामत है।

भूखे ने भूखेको मारा दोनोंको गश आ गया—

क्योंकि दोनों ही कमज़ोर हैं।

भूखे बेर अधाने गाँडा—भूखमें बेर और पेट भरेमें

गशा अच्छा लगता है। कोई कोई इसके साथमें

"ता ऊपर मूलीका दांडा" भी कहते हैं।

भूखे भजन न होहिं गोपाला—भूखमें ईश्वरका

भजन भी नहीं होता।

(१) भूखे गुरीब दिलकी, उदासि लगन न हो।

सच है कहा किसीने कि भूखे भजन न हो।

(२) भलाइकी भी याद दिलाती है रोटियां। (नज़ीर)

भूखे मले मानससे डरिये—देखो "पेट भरे"

भाविधिना प्रतिकूल जयै तव ऊंट चढ़ेपर
कूकर काटे—दे० 'ऊंट चढ़े'

भार डाल सब भाड़में, सम्मन उतरे पार—
विपत्तिमें पड़ जानेसे जय कोई अपनी सब चीज़
खोकर जानकी रिहाई पा लेता है, तब क० ।

भारी नाम पहाड़खां जब चोलैं तब पींड—
नामके अनुसार काम वा गुण न होनेपर क० ।

भारी पत्थर देखा, चूमकर छोड़ दिया—जो काम
अपने करने लायक न जंचे, उसे छोड़ दे ।

रंज रने पैमाने बफा तोड़ दिया ।

उत्पत्तिका रिग्ता शीसे जोड़ दिया ।

उस वृत्तमें तो शाने दिलवरी थी लेकिन ।

भारी मत्थर वा चूमकर छोड़ दिया ।

भारी व्याज मूलको षाय—(व्य०) व्यादे सूदपर
रुपया लगानेसे असल भी वसूल नहीं होता ।

भावजकी—धैली और सराफ़ी करे देवरा—
दूसरेके धनकी ख़ैरात करनेपर क० या जब आदमी
दूसरेके काममें अपना नाम चलाता है, तब क० ।

भाव न जाने राव—जो जिस व्यवसायको करता है
वही उसका हाल जानता है ।

भाव रावकी ख़बर नहीं—राजा और याज़ारकी दर
पहिलेसे कोई नहीं जानता ।

भाव राव खुदाके हाथ—स्पष्ट ।

भावीके घस संसार है—स्पष्ट ।

जो रहीम भावी कज़, होगी अपने हाथ ।

राम न जाते फिरम संग सोता रावन साथ ।

भावी चड़ी प्रपल है—स्पष्ट ।

सगड़ भरत भावी प्रपल, बिलख कहेउ तुनि नाथ । (तुल०)

भीखकी हंडिया सिकहरपर नहीं चढ़ती—क्योंकि
वह ख़ाली रहती है ।

भीखके टुकड़े बाज़ारमें डकार—(च०) जो व्यर्थ
घमंड करता है, उसपर क० ।

भीख मांगे और आँख दिखावे—नीच होकर जो
दूसरेपर रोव दिखावे । विशेष कर छथरे साईं और
मीरासी फकीरोंपर क० । जो ज़बरदस्ती मांगा
चाहते हैं अथवा जब कोई आदमी ज़बरदस्ती करके
किसीसे कोई पदार्थ मांगे, तब क० ।

भीगा चूहा—ख़राब चाल चलनवालेको क० ।

भीखमें पछोड़ क्या—जो चीज़ मुफ्तमें मिले उसमें
दोष न निकालना चाहिए ।

भीगी बिल्ली—सयाने वा धूसं आदमीको क० ।

भीगी बिल्ली बताना—बहाना करनेपर क० ।

किसी मालिकने अपने मुल नौकरको बिराग बुझानेके
लिए कहा । नौकरने जवाब दिया कि आँख सूँद लौत्रिये
बंधकार हो जायगा । दूसरे दिन फिर मालिकने उसे
कहा बाहर जाकर देखो हाँट होती है या नहीं । इसपर
उस धूसं आलसी नौकरने जवाब दिया कि एक शिबू
मेरे बगुन होकर आ रही थी और उसका बदन भीगा
मालूम पड़ा ।

भीत टले, पर धान न टले—ख़राब आदत किसी
तरह नहीं छूटी ।

भीतड़ा नाम कि गीतड़ा नाम—(सा०) दो ही
कामोंसे नाम होता है; कविता करनेसे या इमारतें
बनवानेसे ।

भीतरके पट तब खुले वाहरके जब दे—ज्ञान
उत्पन्न होनेसे भीतरका अन्धकार जाता रहता है ।

भीतर भांग अर तुलसी वाहर—कपटके बचाव-
पर क० ।

(१) स्त्रियां ही सब विधि तजि प्यार ।

चोरी से नित प्रति हितसार ॥

योग उक्ति यह जगमें जाहिर ।

भीतर भांग यह तुलसी वाहर (छ०) २० को०)

भीत रहेगी तो लेव बहुतेरे चढ़ रहेंगे—(ज०) जड़
रहेगी तो फल फल भी हो जायेंगे । पूंजी रहेगी तो
रोज़गार बहुत मिल जायगा । हड्डी रहेगी तो मांस
भी बढ़ जायगा, इत्यादि बातोंके लिए क० ।

भीष्म प्रतिज्ञा—कठोर प्रतिज्ञा । भीष्मने प्रतिज्ञा की
थी कि मैं आजन्म विवाह नहीं करूंगा और इस
कठोर प्रतिज्ञाको उन्होंने पूर्ण भी किया था । इसीसे
भीष्मका अर्थ कठोर रखवा ।

भुगतमान भुगते चने, ह्यानी मूरख दोय, शानी
भुगते शान सों मूरख भुगते रोय—जो भोगमान
है सो सभीको भोगना पड़ता है क्या शानी क्या
मूर्ख । शानी हंसकर और मूर्ख उसे रोकर भुगतता है ।
आकिल था सो तो आपकी समझाके भर गया ।
वै फल झाली पीटके चबराके भर गया । (नज़ीर)

भुस ऊपरको लीपघों, अरु घालूकी भीत—(हृन्व)
यह दोनों बहुत जरूरत हो जाती हैं।

भुसके मोल मलीदा—(व्य०) जब अचछा माल
सस्ते दाममें बेचा जाय, तब क०।

भुसमें आग लगाकर जमालो दूर खड़ी—(ज०)
लड़ाई लगानेवाली स्त्रीको क०।

भूआकी नदीमें फौन बंधे—एक सव कोई चाहता
है दुःख कोई नहीं चाहता। भुआ=मैल, फेन।

भूखको भोजन क्या और नींदको बिछौना क्या
दे० “भूख न जाने”।

भूख गये भोजन मिले, जाड़ा गये कषाय, जोवन
गये तिरिया मिले, तीनों देव बहाय—स्पष्ट

तीनों बेकाम हैं। कषाय=गर्म कपड़ा।

भूख न जाने वाली भात, प्यास न जाने धोयी
घाट—आतुरके लिये कोई नियम लागू नहीं है।

घुघतुराणां न बले न बुद्धि, वषातुराणां न च पावशुद्धि।
कामातुराणां न भवो न लज्जा, निद्रातुराणां न च भूमि शय्या

भूखमें किवाड़ पापड़ } भूखमें डुरी चीत्र भी
भूखमें गूलर पकवान } अचछी लगती हैं।

भूख लगी तो घरकी सब्जी—भूख लगनेपर घर बाद
आ जाता है।

भूखा उठता है, भूखा सुलाता नहीं—ईश्वर
सबको खानेको देता है। जितने जीव हैं सब भूखे
उठते हैं पर भूखा सोता कोई नहीं।

भूखा खाय ही पतियाय—स्पष्ट।

रक्षयल मिले बाल सौ लाल, शशधिवदी निशि सुरति रसाल।
भोली छक्ति मंद हसकाय, भूखा खाये ही पतियाय।
(सव्य दूतिका। (ली० २० कौ०)

भूखा गया जो देखने, अघाना कहे बन्धक रख—
जूरुस्त आ पढ़नेपर जब एकपर दूसरा दयाव डालता
है, तब क०।

भूखा चाहे रोटी दाल, धाया कहे में जोड़ू माल
स्पष्ट।

भूखा जोरू बेचे, रडजा कहे उधार लू—दे० भूखा
गया।

भूखा तुरक न छेड़िये होजाय जीका भाड़—भूखे
मुसलमानको न छेड़े।

भूखा बंगाली भात भात पुकारे—छोटे बच्चे जब
दूधके लिए रोते हैं, तब उन्हें यह मसल क०। जिस
पदार्थको मनुष्य बहुतपतले खाता रहता है उसका
अभ्यास उसको पड़ जाता है जब भूख लगती है तो
वह वही मांगता है।

बाह रही बह सन्दर वाम, गोविनु चैन नहीं धनश्याम।
भोग छक्ति परछिद जषापी, रट ज्यों भात भात बंगापी।
(ली० २० कौ०)

भूखा मरता क्या न करता—भूखा आदमी सब
कुछ कर सकता है।

भूखा मरे कि सतुआ साने—भूखे रह जानेकी
अपेक्षा सच ही खाना अच्छा है।

भूखा सो रुखा—भूखेको क्रोध जल्दी आता है।
भूखेको अन्न पियासेको पानी, जंगल जंगल
अधादानो—भूखेके लिये अन्न और प्यासेके लिये
पानी सब जगह मिलता है।

भूखेको क्या रुखा, और नींदको क्या तकिया—
दे० “भूख न जाने”।

भूखेको कहा “दो और दो कै” कहा “चार
रोटियां—अपने मतलबकी समझना।

पूँछा किछीने यह किसी कामिल फूकीरसी,
एरज भी चाँद इकने बनाये हैं काँचिके।

यह चुनके बोला बाबा, पुरदा तुमको खेर दे,
धम तो न चाँद समझे न एरज हैं जागते।

बाबा धम तो यह नजर आती है “रोटियां” (नज़ीर)
भूखेको खिला, और नंगेको पहिना—स्पष्ट।

भूखे घरमें नोग निहारी—भूखेको नमकही न्यामत है।
भूखेने भूखेको मारा दोनोंको गश आ गया—
क्योंकि दोनों ही कमज़ोर हैं।

भूखे घेर अघाने गांडा—भूखमें घेर और घेर भरेमें
गला अचछा लगता है। कोई कोई इसके साथमें
“ता ऊपर मूलीका ढांडा” भी कहते हैं।

भूखे भजन न होहिं गोपाला—भूखमें ईश्वरका
भजन भी नहीं होता।

(१) भूखे गुतेव दिवकी, चदाव लगन न ही।
सच है कहा किछीने कि भूखे भजन न हो।

(२) पञ्जाबकी भी याद दिलाती है रोटियां। (नज़ीर)
भूखे मले मानससे डरिये—देखो “पेट भरे”

रहितन कचल जो पेट सौ क्यों न मयो वृ पीड ।

भूखे मान घटावही मरे दिखाने छीट ॥

भूखे हो तो हरेहरे रुख देखो—कृष्ण मनुष्य मंग-
तोंको कहा करते हैं ।

भूखो सिंह न तिनका खाय—मानो आदमी काम
करेगा तो थपनी हैसियत मूजब करेगा नहीं तो
नहीं करेगा ।

भूड़के हूड़ होते हैं—देहाती मुखे होते हैं, गवारपर क० ।

भूतका पकवान—निकम्मी वा दिखौआ चीज़पर क० ।

(१) नित प्रति षषधि वदी सुखदाइ ।

मिले न इक दिन कौन सुभाइ ॥

निये भई गाय जो गार्डे, सौधी छीत न मृत मिटारि ।

षषात् भूत न्य करनेवाले जो मिटारै, बातकी बातमें
बनाकर दिखाते हैं बड़ कैवल कौतुकार्य है उभसे कोई
पेट नहीं भर सकता ।

भूतके पटथरकी चोट नहीं लगती—क्योंकि वह
अदृश्य है ।

भून जान न मारे, हैरान करे—स्पष्ट । दुष्टपर क० ।

भूतनके घर वेठा वेठी } जिस घरमें भूत रहते हैं

भूतन घर सन्तति कैसे } वहां वंश नहीं चलता,

अभागे वा कृष्णको क० ।

भूतोंके घर राम राम—असंभव बातपर क० ।

भून चोया, उपट गया—(पू० क०) भूला अल नहीं

जमता ; जब कोई लड़का चिगड़ जाता है, तब क० ।

भूनी भांग न कड़ुआ तेल—जिसके पास कुछ न

हो, उसे क० ।

भूमिनाग सिर धरई कि धरनी—बुद्ध मनुष्य बड़ा

काम नहीं कर सकता ।

भूमि परा कर गहत अकाशा—(छलसी) अनाहोनी

चात या ऊँची आकाशा पर क० ।

भूमियाँ तो भूमी पर मरी, तू क्यों मरी बटेर—

किसान तो जमीनके पीछे लड़ते हैं, हे बटेर ! तू क्यों

लड़ती है ? जब साधारण आदमी बड़े आदमियों-

के भगड़में पड़ते हैं, तब क० ।

भूमि सयन बलकल बसन, असन कंदफल मूल ।

तेकि सदा सय दिन मिलहि, समय समय अनुकुल

(छलसी) स्पष्ट ।

भूरका लड्डू खाय सो पछताय न खाय सो
पछताय—दे० “खाय तो पछताय.....”

यह दुनिया है भूरका लड्डू खाय तो पछताये,

ना खाय तो भी पछताये खाय तो पछताये । (चागाएय)

भूरा भैंसा, चांडली जोय, पूस महावत थिरले

होय—(क० पू०) भूरा भैंसा, गंजी छी थौर पूसमें

वर्षा बहुत कम होती है । चांडली—जिसके सिरके

वाल झड़ गये हों ।

भूल गई दिन दिहाड़ा, मुंडोंते सेहरा बांधा—

जब कोई वकूती होनेपर अपनी असलियत भूल

जाय, तब क० ।

भूल गई नार, हींग डाल दई भातमें—(ज०) जब

भूलसे एक कामकी जगह दूसरा काम हो जाय,

तब क० ।

सजत साज कह देखे ग्याम, बेमर धरी काममें वाम ।

लोग उक्ति को जग बिख्यात, भूलि डार दई हींग जू भात ॥

(विभमहाव । जी० २० की०)

भूल गये राग रंग भूल गये छकड़ी, तीन चीज़

याद रही नोन तेल लकड़ी—जब आदमी गृहस्थी-

के फेरमें पड़ जाता है, तब क० ।

भूल सूकका डर नहीं—स्पष्ट ।

भूल चूक लेनी देनी—(व्य०) जब हिसाब चुकाया

जाता है, तब क० ।

भूठे चूके कश्यप गोत्र—जिसको अपना गोत्र याद

न हो वह कश्यप गोत्र कहे ।

भूले चूके दँड नहीं—स्पष्ट ।

भूला जोगी दूनी लाभ—भुलकड़ जोगी एक ही

घरमें दो बार भीष मांगता है ।

हले छैल जह लपटि सिंगार ।

जनि सकुचो सुनि रस सुखमार ।

भोग पछानो मन अलगछो ।

भूले भोगी दूनी लाभो । लीला हाव । (ली० २० की०)

भूला फिरे किसान जो फातिक मांगे मेह—

(वृन्द) वह गृहस्थ पागल है जो फातिक महीनेमें

पर्षा चाहता है ।

भूले बनियाँ भांग खाई, अब खाऊँ तो राम दुहाई

भूले सामन गाँय खाई, अब खाऊँ तो राम दुहाई

आदमी एक दफे ठाकर सचेत हो जाता है।

भूले विसरे राम सहाई—भूले चूकेका इम्वर मालिक है।

भूल शराकी, गौन गधाकी—स्पष्ट।

भेड़की लात घुटनों तक—कमज़ोरकी चोटका असर कम पड़ता है। अधिकते अधिक इतना कर सकेगा।

भेड़ जहाँ जायगी वहीं मुड़ेगी—(१) क्योंकि ये कुण्डकी कुण्ड एक साथ जाती हैं। (२) धनी आदमी जहाँ जाते वहीं खड़े जाते हैं।

भेड़ पूंछ भादों नदी, को गहि उतरे पार—छोटेके सहारेसे बड़ा काम नहीं हो सकता।

(१) लाल नीच गिर बचन कह, बाँध देत सी पार

भेड़ पूंछ भादों नदी को गह उतरे पार।

नीच पाठमोके कई बार प्रतीक्षा करनेपर भी उसका विश्वास नहीं करना चाहिये, उसपर विश्वास करना गोया समझी हुई नदीको भेड़की पूंछ प्रकड़कर पार करनेके बराबर है।

मौं नू दूती नीच है, कबहूँ मिले न तार।

भेड़ पूंछ भादों नदी, को गहि उतरे पार (मो०२००की०)

भेड़ पै ऊन किसने छोड़ी—सब कोई भेड़के याल फतर लेते हैं क्योंकि ये बहुत कामोंमें लाए जाते हैं।

भेड़िया धसान—जब आगेकी चलाई हुई पद्धतिको अच्छी या बुरी जाने बिना उसीकी देखा देखी सब आदमी विचार शुद्ध होकर चलें, तब क०।

देखा देखी करत सब, नाहि न मत्स्य विचार।

याकी यह अनुमान है भेड़ चाल संसार ॥ (इन्द्र)

भेजा खाय, सिर सइलाय—पाखण्डी आदमी पर क०।

भेपसे भोल है—पोशाकसे ही आदमी पहिचाना जाता है या उसकी श्रद्ध होती है।

भैस आस की, पड़ा बियानी—दे० “भरोसेकी भैस.....”

भैस कहे गुन मेरा पूरा मेरा दूध पी होवे सूर। जिसके घरमें मैं वैध जाऊँ। दूध दहीको नाल यहाऊँ—स्पष्ट।

भैसका दूध, नलीका गूद—भैसके दूधसे कुप्यत बढ़ती है।

भैसका गोबर भैसके चुतड़ोंको लग जाता है—सब दूसरेके काममें नहीं आता। बड़े आदमियोंका अपना ही लचं अधिक होता है।

भैसके आगे धीन बजावे, भैस वैठि पगुराय—
भैसके आगे मागवत, भैस खड़ी रौंथाय—
अज्ञानीके सामने अच्छे अच्छे उपदेशोंका फल निष्फल होता है।

भैसको अपने सींग भारी नहीं—अपना परिवार पालनेमें किसीको कष्ट नहीं मालूम पड़ता।

भैस दूध जो कढ़वां पीवे, हाँगा घट्टे न जवलन जीवे—(प्रा०) भैसका दूध जो बराबर पीता है उसका बल कमो नहीं घटता।

भैस पकाड़े हग गयी—किसी मनुष्यकी असाधारण बुद्धिपर व्यंगसे क०।

भैस बियानी गढ़ सम्भरमें, खूँटा गड़ा फुरकावाद् जब काम एक जगह हो और उसका इन्तजाम दूसरी जगह, तब क०। दे० “बाया सोये”।

भैस पै दूध किसने छोड़ा—दे० “भेड़ पै ऊन...”

भैसा भैसोंमें, या कसाईके खूँटेमें—(व्य०) मालका दाम घट जाने पर क०। मतलब यह कि यातो मालको बढ़ करके घरमें रख दे, जब दाम मिले तब बेचे या बाज़ार भाव फूंक दे।

भौंदू भाव न जाने, पेट भरनसे काम—स्पष्ट।

भोग बिलास, जयतक सांस—मरे पीछे कुद नहीं।

भोग भाग, छत्तीसों राग—जो कुद है सो इसीमें।

भोगी सो रोगी—स्पष्ट।

भोजन ऐसा लाभ नहीं, मृत्यु ऐसी हानि नहीं—स्पष्ट।

भोजनं कुरु दुर्बुद्धे मा शरीरे दयां कुरु, परान्तं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः—पेटार्थको क०।

१३२२ एक कछाभो बो है—किसी शहरमें दो पिता पुत्र खानेके बड़े लालची थे। एक रात ये दोनों निमंत्रण खाकर आये। सुबहको लड़केका पेट भरने लगा। इसी समय दूसरी जगहसे निमंत्रण आया। सब लड़केने बापसे कहा “ऊह” गच्छन्ति नोद्वाराः नाधो गच्छन्ति बाववाः। निमन्त्रणं समायातः किं कर्तव्यं मयाधुना ।” १३२२ बापने ऊपरको मसज कही।

भोजन न भात, नैहरका समाद—बिधवाका आदर
न पोहरमें न नैहरमें ।

भोजन भट्ट—बहुत खानेवालेको क० ।

भोज न भात, हर हर गीत—कूठी शिष्टाचारीपर क० ।

भोजनपूर्वमें जैहा मत, जैहा तो खैहा मत, खैहा
तो सोइहा मत, सोइहा तो टोइहा मत, टोइहा तो
रोइहा मत—भोजनपूर्वमें चोर बहुत रहते हैं इसलिये क० ।

भोरका मुग्गा बोला, पंछीने मुंह खोला—
सवेरा हुआ और सबको भूख लग आई ।

म

मँगनीकी चादर, तापर पचासकी आदर—
(ज०) जो दूसरेकी चीज़से अपना नाम चलाता है,
उसे क० ।

मँगनीके चन्दन के न लगाय—सेतमें मिले तो कौन
न ले ।

मँगनीके बैलके दाँत नहीं देखते हैं—मुपतमें जो
चीज़ आ जाय उसे बिना देखे छने ले लेना चाहिए ।

मँगनीके सतुआ, सासको पिण्डा—(पू० ज०)
अनिच्छासे दूसरेका सत्कार करना । सास बहूके
साथ अच्छा बर्ताव नहीं करती, इसलिये क० ।

मँगई छोट, लाया ईंट—दूसरेकी इच्छाके
मँगई हींग, लाया गंदरक—प्रतिकूल जय कोई
काम करे, तब क० ।

मड्डेके भाटमें शर्त बना—खराब या कम दामकी
चीज़ लेनेपर दूकानदार कोई शर्त नहीं करता ।

मंत्री. विन राज सूना—प्रधानके बिना राजकार्य
अच्छी तरह नहीं चलता ।

मकदूरकी माँ कौड़ी ही रगड़ती है—छोटे हीकी
खबरगोरी अधिक करनी चाहिए ।

मकर चकरकी घानी, आधा तेल आधा पानी—
धूर्त और कपटी व्यापारीपर क० ।

मक्रे गये न मदीने गये, बीच ही बीचमें हाजो भये
(मु०) जय किसीका अभिष्ट सईजहीमें पूरा हो जाता
है, तब क० ।

मक्रेमें रहते हैं पर हज नहीं करते—(मु०) जो
चीज़ सइजमें मिलती है उसकी चाहना नहीं होती ।

भोर भया जय जानिये, जय पीले चादल होय—
स्पष्ट ।

भोलेका है दाता राम—सीधेको ईश्वर देता है ।

भौंके कुत्तेको रोटीका टुकड़ा—रिखत खाने-
वालेको क० जो पहिले तो गुल गपाड़ा करे पर कुल
मिलते हो चुप हो जाय ।

भौर न छाड़े केतकी, तोखे कंटक जान—(घृष्ट)

(१) गुण प्राही नोचसे भी गुण ग्रहण करते हैं । (२)
जिसकी जिससे प्रीति है अनेक बाधा होनेपर भी
वह उससे अवश्य मिलता है ।

म

जो जितना ही पुण्य स्थानके समीपर रहता है उसकी
भक्ति उतनी ही कम रहती है ।

मक्खी चूस—कंजूसको कहा जाता है जो धीमें पड़ी
मक्खी चूस लेता है जिसमें धी न खराब जाय ।

मक्खी छोड़ना, और हाथी निगलना—पाखंडी
या ऊंचा शिकार मारनेवालेको क० ।

मक्खी वैठी शहदपर पंख गये लपटाय । हाथ
मले और सिर धुने, लालच घुरी बलाय—लालचो
को क० ।

मक्खी भिनकती है—जिस दूकानदारके यहां कोई
ग्राहक न जाय या जिससे लोग घृणा करें और
उसके पास न जायें या जो मनुष्य गंदा हो, उस-
पर क० ।

मक्खी मारते हैं—जाली बँडे रहते हैं । ऊ० दे० ।

गाऊनकी बदीलत चमका भी इरतभा है ।

जो मारते थे मक्खी अब मारते हैं चूँ ॥

(चकवच) इरतफ़ा = विस्वाय ।

मक्खीमार, बड़ा चमार—कंजूसको व्यंगसे क० ।

मक्षिका स्थाने मक्षिका—(सं०) हथहू नकल उता-
रनेपर क० ।

मखमली जूती—मोठी बातोंमें तिरस्कार करना ।

मगह देश कंचनपुरी, देश अच्छा भाया घुरी—
स्पष्ट ।

मगहमें मरना, अगले जन्ममें गधा बनना—स्पष्ट ।

मच्छड़की हमला भयो, हाथी ऊपर आज—
जय कोई कमजोर अधिक बलवानपर हमला करता
है, तब उसे ध्यंगसे क० ।

मछली किमि जीवे विन पानी—स्पष्ट ।।

मोक्ष पिय सरस जीवते तीर्थ, कैसे जियौं विहरि संग पीया
शोक लज्जि मन सध नहिं आमी, किमि भोवै सबरी विनुपामी
(प्रबलव्यतिका लो० १० कौ०)

मछलीके बच्चोंको तैरना कौन सिखावे—जिसका
जो स्वभाव है, वह आपसे आप था जाता है ।
धर्मात्माके हाँके धार्मिक ही होते हैं ।

मछली खाये हाथ भी गँधाय, मुँह भी गँधाय—
स्पष्ट ।

मछली तो नहीं कि सड़ जायगी—(व्य०) जब
कोई दूसरेको बहुत जल्दी और सस्ते दाममें चीज़
खपानेको कहे, तब क० ।

मजनूको लेलीका कुत्ता भी प्यारा—कामी मनुष्य
अपने मारुक्के कुत्तेको भी चाहता है अर्थात् जिस
पर चाहना होती है उसको घुरी चीज़ भी प्यारी
लगती है ।

मज़ा मा मज़ा—(अरबी) धीती ताहि बिंसार दे ।
गई बातको भूल जायो ।

मट्टीका घड़ा भी टोक बजाकर लेते हैं—(व्य०)
बिना सोचे विचारे किसी काममें हाथ नहीं डालना
चाहिए ।

मट्टीमें हाथ डाले सोना होता है—भारववान
पुरुषको क० ।

मठा माँगन चली और मलैया पीछे लुकाई—
(५० ज०) अच्छी चीज़ अपने पास रखते हुए भी
शौरेसे माँगना ।

मछयो दमामा जात क्यों कहूँ चूहेके चाम—छोटे
श्राद्धमीसे बड़ा काम नहीं हो सकता अथवा छोटी
चीज़से बड़ा काम नहीं हो सकता ।

कैसे छोटे नरम तें सरत बड़नके काम ।

मच्छो दमामा जात कौं कहूँ चूहेके चाम ॥ (विचारी)

मतकर धार, जो भुगते कार—(व्य०) ऐसा क़ज़
नहीं करना चाहिए जिससे कारवारमें धक्का लगे ।

मतकर सास घुराइयां, तैरे भी अग्ये जाइयां—
(ज० पं०) बहूका कहना सासके प्रति । कहनेका
मतलब यह है कि हे सास ! तू मुझे सता मत,
क्योंकि तैरे भोसड़कियां हैं जो, छसराए जानेवाली
हैं । अगर तू मुझे सतायेगी तो वे भी इसी प्रकार

वहाँ सताई जावेगी ।

मत यो चापड़, उजड़े टावड़—(क०) पथरीली
ज़मीनमें कोई अनाज मत बोओ नहीं तो परिवार-
की हानि होगी ।

मतला साफ़ हुआ—आकाश साफ़ हुआ । जब
किसीका अमीष्ट पूरी हो जाता है और सब बाधाएँ
जाती रहती हैं, तब क० ।

मथरा दे बुन्दा, लुभावे दस गुँडा—(५० ज०)
भ्रष्टा शौस्त पर क० ।

मथरा मदारीका क्या साथ—स्पष्ट । मथरा=
हिन्दू, मदारी=मुसलमान ।

मथुराकी बेटी गोकुलकी, गाय, करम फूटे तो
अनते जाये—ये दोनों दूसरी जगह नहीं जाती ।

मदिरा मानत है जगत, दूध फलाडी हाथ—
(वृन्द) कलालके हाथमें दूध भी मदिरा समझा
जाता है । तात्पर्य यह कि कुसंगतिमें न बैठना
चाहिए ।

मधुरी भाँचे रोटी मीठ—जो काम बहुत धीरे धीरे
और सावधानीसे किया जाता है वह काम अच्छा
होता है ।

मन और दूध फटनेसे नहीं मिलता—स्पष्ट ।

दूध भी दिख जब फटा, प्यार, तो फिर मिलता नहीं ।

(मजीर)

मन उमराव करम दरिद्रो—इच्छा पूरी होनेका
साधन नहीं ।

मनू कपटी तन सज्जन चिन्हा—कपटका बर्ताव ।
मन करवे मोटा, खोवे सोटा, मन करवे मोही
सगरे तौही—(भो०) मीठी बात बोलनेवालेको सब
कोई चाहते हैं ।

मनको पहिरन चौतार, करम लिखे मेड़ीके धार—
दे० “मन उमराव कर्म दखि ।”

मनका अंकुश धान—स्पष्ट । ज्ञानसे मन बगमें
रहता है ।

मनका फेरत दिन गया, गया न मनका फेर ।
फरका मनका छोड़के, मनका मनका फेर—

(कथीर) सब काम साफ़ दिलसे करना चाहिये ।

मनकी बात मन हीमें रखिये—गुप्त बात किसीसे

नहीं कहनी चाहिये।

दोष नाहिं दोषतको दोष कर्म आपनेकी मन अपनेकी बात काह्न सो न कहिये। (दीनानाथ)

मनकी मारी कासे कहूँ, पेट-मसोसा दे दे रहूँ (पू०) भूखे भिखारीका कहना है।

मनका खाय तो लड्डू ही न खाय, चने क्यों खाय—
क्योंकि इसमें कुछ दाम तो लगते ही नहीं। दे०
“मनके लड्डू खाय”

मनके लड्डुओंसे भूख नहीं मिटती—केवल विचारसे काम नहीं चलता।

इया मरहु जानि गाल बजाई,

मन मोदकनि कि भूख हुभाई। (तुलसी)

मनके लड्डू खाय तो पेट भरके न खाय आधे पेट क्यों खाय—क्योंकि उसमें कुछ खर्च तो होता ही नहीं। जो मनुष्य केवल मनका खपाल बांधकर अपना हौसला पूरा करता है उसे क०।

मनके लड्डू फोड़ना—फूटी ऊंची आकांक्षा करना।

मनके हारे हार है, मनके जीते जीत। पार ब्रह्मको पाइये, मन ही की परतांत—पुरुषार्थ कभी न छोड़ना चाहिये।

दुख सुख सब कहे परत है वीरष तऊ न भोत।

मनके हारे हार है मनके जीते जीत ॥

मनको मन पहिचानता है—दे० “दिलको दिलसे राहत है।”

मन चंगा तो कठौतीमें गंगा—जिसका हृदय शुद्ध है उसके घरहीमें गंगा है। जिस शुद्ध हृदयवाले पुरुषकी धर्ममें श्रद्धा है पर धनाभाव वा और किसी कारणावय हीर्षादन वा कोई पुण्य कार्य नहीं कर सकता, उस पर यह मसल लागू होती है।

इसका निकास इस घटनासे है—गुरु रामानन्दके बारह शिष्योंमें रैदास भक्त भी बड़े साधु और महात्मा हो गये हैं। यह जातिके चमार थे। किसी पंचके दिन कुछ याधियोंकी गंगा स्नानके लिये जाते देखे उन्होंने कहा कि यह कौड़ियां तुम मीरा नाम लेकर गंगाजीकी दे दीना; परन्तु देना तभी जब गंगाजी साक्षात् प्रगट हों और यह कौड़ियां लीनेके लिये अपना हाथ बढ़ावे। याधियोंने गंगाके समीप पहुँच कर कहा कि यह कौड़ियां रैदासजीने आपकी भेंट की है। गंगाजीने हाथ निकाल कर

कौड़ियां लीं और बदलेमें एक सोनेका कड़ा रैदासजीको देनेके लिये दिया। यानी वह कड़ा रैदासजीके पास न ले जाकर राजाके पास ले गये। राजाने उसे रानीको दिया। रानी उस चमूत कड़ेकी देखकर ऐसा मोहित हुई कि उसको गोड़ी मिलानी चाही। जब उस तरहका कड़ा किसीने न बन सका तो चारखर रैदासजीके पास गये, और उनसे सब हाल कह सुनाया। रैदासजीने उनका अपराध क्षमा करके, अपनी कठौतीमें से जिसमें पानी भरा हुआ था, उस कड़ेकी गोड़ी निकाल कर दे दी। तात्पर्य यह कि उनका धित गृह था इसलिये उन्हें गंगाके समीप न जाना पड़ा, और गंगा उनको कठौतीमें भा गईं

(१) सक्तीयनकी तीरथ अघान,

बिन पति संग उचित नहिं मान।

कई पखानी व्योँरस रंगा,

मन चंगा तो कठौतिहिं गंगा। (जो०र०की०)

(२) सरापा पाक है धोये जिन्होंने हाथ दुनियासे नहीं झागत कि वह पानी बढ़ाये सरसे पाक तक।

(जीक)

मन चंचल करम दरिद्री—दे० “मन उमराव...”

मन चलता है पर टट्टू नहीं चलता—अभाव पर क०। शुद्ध मनुष्यकी विषय बासना पर भी क०।

मन चलेका सौदा है—जो चीज़ जिसे पसंद आती है वही वह खरीदता है।

लिनैरे मन चलेका सौदा है खड़ा और मोटा ॥

कौड़ियोंकी सी हाट है दुनिया सारो जिं स रकड़ी ॥ Ab

मोठी चाहे मोठी किले खडो चाहे खडो ॥

इपरंगपर भूख न दिलमें देखे चकलके चूरी ॥

ऊपर मोठी गौचे खडो चमूषाकी घी करो ॥

ले तैरे मन चलेका सौदा है खड़ा और मोटा ॥

मन जानत है आपको माई जाने वाप—गूढ़

पुरुषके हृदयका भेद न जानने पर क०।

मन जाने पाप, माई जाने न वाप—अपने किये

पापको अपना मन ही जानता है, मां वाप नहीं

जानते।

मनतुरा हाजी चगोयम् तू मरा हाजी चगो—

(फा०) में तुम्हें हाजी कहूँ तू मुझ हाजी कह। अर्थात् जैसा व्यवहार हम तुम्हारे साथ करें वैसा ही तुम भी हमारे साथ करो।

मन भरका सिर हिलाते हैं, -पैसे भरकी ज़वान नहीं हिलाते—जब कोई मनुष्य सलाम, प्रणाम आदिका उत्तर मुँहसे न दे और खाली सिर हिला दे, तब क०।

मन भाय तो डेला सुपारी—जिस चीज़पर मन चाहे वह बुरी होने पर भी अच्छी लगती है। खियां वा लड्डके कभी कभी मट्टीके टुकड़े सोंघेपनके लिए छपारीकी तरह मुँहमें रख लेते हैं।

मन भावे मूँड़ हिलावे—जब किसी मनुष्यको खिलाते वक्त उसकी मन चाही चीज़ और देनेके लिये पूछा जाय और वह मुँहसे तो नाहीं करे पर देनेसे खाता जाय, तब क०। खियोंको भी क०। खियोंके “ना” कहनेको “हाँ” समझना चाहिए।

मुझे चोचले तो सुय भाते नहीं।

तेरे नाजू बेजा यह भाते नहीं।

मेरी तफ़ा टुक देख तू हाय हाय।

मसल के कि “मन भाय मुझिया हिलाय।” (सोर हसन)

चसु पिय बोलत प्राण पियारी।

हिन नटिबो पुनि हिन नगुहारी।

व्यों गाया सुग चतुर चलावै।

सनसुख भावे मुँड हिलावे। (कहुमित हाव)

जिसे भाता है वह सामने सिर हिलाता है कि आपका कहना ठीक है।

मन भोगी कर्म दरिद्री—दरिद्री होकर भोग खिलासकी इच्छा रखे, तब क०।

मन मलीन तन सुन्दर कैसे, चिय रस भरा फनक घट जैसे—(हुलसी) कपटीको क०।

मन मानी, अनजानी—जान बूझ कर अज्ञान बने, तब क०।

मन मानी, घर जानी—कोई अपने मनकी करे किसीका कहना न माने, तब क०।

मन मानेका मेला, नहिं सयसे भला अफेला—स्पष्ट।

मन मिलेका मेला, चित्त मिलेका चेला—स्पष्ट।

मनमें गाती टस टस रोवे, चूहा बसम फर सुखसे सोवे—जो मयानी लड़की छोटे लड्डकेसे ब्याही जाय, बस पर क०।

मनमें बसे सो सपने दसे—जो बात मनमें रहती है वही स्वप्नमें दीखती है।

(१) सोबत देखो पाघो खाल, भोरागन सुनि हरखो बाल।
कई पखानी व्यों बुधि पच, जो सुपनों सो सो परबच।
(भावन पतिका)

(२) वाचना यव यस्पासतं स्वप्नेषु पश्यति।

मनमें मूरख जूनमें दुखी कोई नहीं—कोई अपनेको मूर्ख नहीं समझता और किसीको थपना जीना भारी नहीं होता।

मनमें शेर फरीद, धगलमें ईंट—कोई साधु पुरुष बुरा काम करनेपर आरु हो, तब क०। कपटीको भी क०।

इसका विकास इस कहानीसे है जिसमें एक बोर शेर फरीदका बिला हो गया था और प्रतिज्ञा की थी, कि कभी किसीको चीज़ नहीं लूंगा, पर वही ही उसने रात में एक सोनेकी ईंट पड़ी देखी थी। ईंट छे उठाकर बगलमें छिपा ली थी।

मन मोतियों ब्याह, मन चाचलों ब्याह—(ज०) ब्याह सय ही एकसे है चाहे मनभर मोतियोंसे किया जाय चाहे मनभर चाचलोंसे।

मन मोती अरु दूध रस, इनको एक सुभाय।
फाटेसे जुड़ते नहीं, कोटिन फरे उपाय—स्पष्ट। ये चारों फटेसे फिर नहीं जुड़ते।

मन मोदक नहिं भूख बुझाई—दे० “मनके लड्डु-घोलें।”

मन मौजी करम दरिद्री—दे० “मन भोगी”

मन मौजी, जोरुकी फहें “मौजी”—हंसी करनेके लिए। क्योंकि मौजासे हंसी उठानेकी रीति है।

मनवां मर गया, खेल बिगड़ गया—हिम्मत हारनेसे काम बिगड़ जाता है।

मन साँचा, तो सय साँचा—दे० ‘मन चंगा’।

मन हमारा पास, धन अनका पास—(५०)
मेरा मन मेरे पास है उसका धन उसके पास है। सन्तोषीका कहना है।

मन हुलासा गावे गीत—शय होनेपर गाना रूकता है।

मम मति रंक मनोरथ राज—(तुलसी) गरीब होकर ऊंची आशा रखने पर क० ।

मर गये मरदूद, जिनकी फ़ातिहा न दरूद—

(सु०) अत्याचारीको क० । मरे पीछे जिसका क्रिया कर्म नहीं होता ।

मरज बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवाकी—जब किसी कामको छुटारनेकी जितनी चेष्टा की जाय उतना ही वह बिगड़ता जाय, तब क० ।

पुलिसने भीर बदकारोंको गड़दो ।

मरज बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवाकी । (प्रताप ना० मित्र)

मरजीये मौला, अज हमद औला—(फा०) हरे-रिच्छा बलीयसी (सं०)

भरत प्यास पिंजरा परयो, सुआ सम्भके फेर ।

आदर दे दे बोलिये, चायस बलिकी बेर—

(विहारी) जहां गुणवान दुख पाने और निगुणीका आदर हो, वहां क० ।

मरता क्या न करता—जो मरनेको तैयार है उसके लिये कोई काम मुश्किल नहीं है ।

मरता सिवाले हाथ धाले—(भा०) डूबता आदमी

सिवार पकड़ता है—दे० “दूबतेको तिनकेका सहारा”

मरतेके साथ मरा नहीं जाता—जब किसीका

कोई मर जाय और वह विलाप करे, तब क० ।

मरन चली, और शुक साम्हने—(ज०) मरनेमें

शकुन अपशकुन क्या ? शुक साम्हने रहे तो यात्रा निबेध है ।

मरना जीना सबके साथ लगा है—स्पष्ट ।

मरना विचारा तो हटना कैसा—जो प्राणपर खेल

कर काम करता है, वह पीछे नहीं हटता ।

मरना भला विदेशका, जहां न अपना कोय ।

माटी खायं जनावर, महा महोत्सव होय—

भक्त या सन्यासीका कहना है । ऊपरकी आधी

मसल अपनेते तंग आकर भी क० ।

रक्षिष अब ऐसी लगड़ चलकर जहाँ कोई न हो ।

इम सखन कोई न हो और इम जग्य कोई न हो ॥

वेदरो दीवारका दकघर बनाना चाँहिए ।

कोई हमसाया न हो और पासवाँ कोई न हो ॥

पड़िये मर बीमार तो कोई न हो तोमार दार ।

और अगर मर जाय तो मोहाखी कोई न हो ॥ (गणेश)

मरनेके पहिले कब खोदना—दे० “दिना पानी भोजा उतारना” ।

इस पर एक कहानी इस तरह है—

एक मयूराके चौबोंको देखा कि यह काम कुछ भी नहीं

करते और खानी नांगके खाते हैं और मटण्डे होते जाते

हैं, तब उनको यह हुकम दिया कि जो मुसलमान मर

जाय उसकी कब्र तुम लोग खोदा करो । चौबोंने कब्र-

मानमें आकर हजारों कब्रें खोदा जर्नी । जब बादशाह-

को यह बात मालूम हुई तब चौबोंको बुलाकर पूछा कि

तुमने पहिलेहीसे कब्रें क्यों खोद डालीं, तब उन लोगोंने

कहा कि जहाँपनाह कभी न कभी तो सब मुसलमान

मरहींगे और यह काम भी हमी लोगोंको करना पड़ेगा

इसलिये पहिलेहीसे कर रफ़ा । बादशाह उनको इस

हाज़िर जवाबी पर बहुत ख़ुश हुए और उनको इस

कामसे रिहाई दी ।

मरनेको क्या हाथी घोड़े जुड़ते हैं—जब चाहे

मर जाय । किसीका अनादर करनेके लिये क० ।

मरनेको जी चाहे कफनको टोटा—ऊ० दे० ।

मरने जाय मलहार गाय—(१) जो वीर खुवाते

हथेलीपर प्राण रख लड़ाईमें मरने जाता है, उस

पर क० । (२) समयानुकूल कान न करने पर क० ।

मर मर न जाते, तो भर घर होते—(पू० ज०)

(१) खर्च न होता तो बहुत धन इकट्ठा हो जाता । (२)

घरके लोग मरते नहीं तो घर भर जाता ।

मरल बलिया वामनको दान—निकम्मी चीज़ जब

किसीको दी जाय, तब क० ।

मरा रावण फ़ज़ीहत हो—उरे आदमीके मरने पर

भी लोग उसकी फ़ज़ीहत करते हैं ।

मरा हाथी सौ मनका—(१) मरनेपर भी हाथीको

कीमत अधिक होती है । (२) घड़ा घर बिगड़ने-

पर भी घड़ोंते अच्छा होता है ।

मरिहों पर हटिहों नाहीं—स्पष्ट । जिही आदमी-

को क० । मरिहों पे टरिहों नाहीं भी क० ।

मरी क्यों सास न आया—(पू०) स्पष्ट ।

मरीजें इशकको दीदार काफ़ी है—प्रेमके रोगीको

अपने इशका देखना काफ़ी है ।

मरका कोई नहीं जीते जोके सय लागू है—

स्पष्ट ।

मरेको क्या मारना—दुर्बलको न सताना चाहिये ।
 किसी र कठको ऐ बंदाइ गर मारा तो क्या मारा ।
 जो भाप हो मर रफा हो चसको गर मारा तो क्या मारा ।

(जीक)

मरेको मर जाने दे, हलुआ पूरी खाने दे—
 बूढ़े आदमी पर क० ।

मरेको मारे शाह सदार—दे० “देवो दुर्बल घातकः” ।

मरे तो शहीद मारे तो राजी—(मु०) जो अपने धर्मका नास्तिक है, उसे मारना अथवा उसके हाथ मर जानेमें ही तारीफ है । काफ़िरोंको मारनेके वास्ते उचित करनेके लिये मुसलमानों पर क० ।

मरे न जीये हुकुर हुकुर करे—बूढ़े रोगीको कहते हैं जिसकी सेवा करते करते उसके घरके लोग थक जाते हैं ।

मरे न पीछा छोड़े } न मरता है न विद्धावनले
 मरे न माफा ले } नीचे लाया जाता है । खाट
 मरे न माँचा छोड़े } पर मरना हिन्दुधर्ममें अच्छा नहीं समझा जाता, इसलिये मरनेके पहिले रोगीको नीचे छलाया जाता है । ऊ० दे०

मरेपर वेद—
 मरे पाछे वेद अइलें, ठेंगा चाटके घरे गइलें }

किसी कामके नष्ट हो जानेपर जब उसका उपाय किया जाता है, तब क० ।

मरे पीछे डोम राजा—(हि०) क्योंकि प्रमथानमें यही कर सेता है । पीछे चाहे जो कुछ हो ।

मरे बैलकी थड़ी बड़ी आँखें—जब मरे आदमीकी कोई तारीफ़ करे, तब क० ।

मरे मुक्ति केहि काज—जिसका संसारमें यश न हो यदि उसकी मरेपर मुक्ति हो भो जाय तो किस कामकी । जिनको परलोकका निश्चय नहीं है और स्वर्ग नर्क सब यहीं समझते हैं उनका कहना है ।

मृ० तजि अथ० व पातकी, चिका तजि तुषराज । अथत
 वंही की जगतमें, “मरे मुक्ति केहि काज ॥” (वि० वं०)

मरे सुम सरदार मरे वह कहर टट्टू, मरे हठीली नारि मरे वह खसम निखट्टू । वाहन वह मरि जाय जो हाथ ले मदिरा प्यावे । पुत्र वंही मरि

जाय जो कुलमें दास लगावे । वे; नियाव राजा मरे नौद धड़ा धड़ सोइये । बैताल कहें विक्रम सुनो, पते मरे न रोइये—इनमेंसे किसीके मरेपर जब कोई अफ़सोस करता है, तब क० ।

मर्द औरत राजी तो क्या करेगा काज़ी—दे० ‘मियां बीवी राजी’ ।

मर्दका एक कौल होता है—मर्द अपनी प्रतिज्ञा या वास्ते नहीं हटता ।

मर्दका क्या है एक जूती पहनी एक जूती उतारी (ज०) जब एक छी मर जाती है तो दूसरी छीते आदी होनेपर क० ।

मर्दका दिखाया न खाइये, मर्दका लाया खाइये—छियां मर्दके सामने नहीं खातीं, इसलिये क० ।

मर्दका खाना औरतका नहाना, किसीने जाना किसीने न जाना—मर्दके खानेमें औरतके नहानेमें देर नहीं होती ।

मर्दका नौकर मरे धर्म मरमें, रंडीका नौकर मरे छः महीनेमें—क्योंकि उसे मेहनत बहुत करनी पड़ती है ।

मर्दका हाथ फिरा और औरत उमड़ो—विवाहके बाद लड़की बहुत जल्द बढ़ जाती है ।

मर्दकी बात और गाड़ोका पहिया आगे हीकी ओर चलता है—(हि०) भले आदमी अपनी बात नहीं बदलते ।

मर्दको मौत नामर्दके दाथ—जब कोई साहसी पुरुष धोरेसे मारा जाय, तब क० ।

मर्दके चार निफाद—बुरस्त है—स्पष्ट । हिन्दुओं का ताना मुसलमानोंके प्रति ।

मर्दको गर्द ज़रूर है—मनुष्यको मेहनत ज़रूर करनी चाहिए ।

मर्द जेकरा गाँठ खपैया—(पू०) स्पष्ट ।

मर्द मरे नामको, नामर्द मरे नानको—स्पष्ट ।

नान=रोटी

मर्द सीसपर नचे, मर्द धोली पहिचाने ।

मर्द खिलावे धाय मर्द चिन्ता नहीं माने ।

मर्द देइ अर लेइ मर्दको मर्द बचावे । गाढ़े सकरे काम मर्दके मर्ददि आवे ॥

पुनि मर्द उन्हींको जानिये साथी सुख दुख दर्दके,
वेताल कहे विक्रम सुनो ये लक्षन हैं मर्दके-स्पष्ट।

मलयागिरिकी भीलनी चन्दन देत जराय—

जो चीज़ इफ़रातसे होती है उसकी क्रूर नहीं होती
भक्ति परिचय तें होत है बरुचि अनादर भाय,
मलयागिरि.....जराय। (इन्द)

मल्लाहका लंगोटा ही भंगिता है—क्योंकि वह
और कोई कपड़ा नहीं पहिनता।

मल्लाहीकी मल्लाही दी, वांसके वांस खाये—
दे० “वांसके वांस.....”।

मसखरीके चूड़ा भर भर गाल—(पू०) जो केवल
मीठी मीठी बातोंसे दूसरोंको बहला लेता और
देता कुछ भी नहीं, उसपर क०।

मसजिद ढह गई मेहराब रह गई—मरनेपर नाम
रह जाता है।

मसजिद तक मुल्लाकी दौड़—अपनी पहुँचके
अनुसार सब कोई काम करता है अथवा जिसकी
आशा जहाँ तक रहती है वह वहाँ तक जाता है।
दे० ‘मुल्लाकी दौड़’

मस्ताई बकरी बोकका मुँह चूमती है—(पू०)
जब मस्ती चढ़ती है तो हिताहितका ज्ञान नहीं
रहता।

विहंसि हुलाय खगाय चर भौट तिया रस घूमि।

पुत्रकि पशोगत पूतकी पिय व म्यो सुख व चूमि॥(विहारी)

मसानका भूत—बहुत काले आदमीको क०

मशालची अंधा होता है—दे० “चिराय तले अंधेरा”

मशालची मरे तो पेट चीजना हो—पहाने भी
धमके वहाँ भी धमके। पेट चीजना—डुगन।

महफ़िले धोरान जहाँ भाँड़ न वाशद—बिना भाँड़के
महफ़िलेकी घोभा नहीं।

जबले धोरान अर्धा शेर न वाशद, महफ़िले...वाशद।

महदसे लहद तक—जन्मसे मरण तक।

महल्ले में भाई बरात, पड़ौसनको लगी धबराट
किसी कामके आ पड़नेपर धबड़ाना नहीं चाहिये।

महाजंनो येन गतस्य पंथा—(सं०) बड़े जिस
रास्तेपर चल गये हैं, उसी रास्तेपर चलना चाहिये।

महाघट चरसी और पादो सरसी—(क०)

जाड़ेमें वर्षा होनेसे फसल थच्छी होती है।
महादेव अचगुण भवन, विष्णु सकल गुणधाम
जेहिकर मन रम जाहिसन, ताहि ताहिसन काम
स्पष्ट।

महिमा घटी समुद्रकी, जो रावण वसा पड़ौस—
थच्छा भी यदि धुरी सँगति करे, तो उसे कालिमा
लग जाती है।

महीना पुराया, और कमेरा अघाया—क्योंकि
महीना पूरनेपर तनदुवाह मिलती है। कमेरा—
मजदूर।

माइ-बापको लातन मारे, मेहरी देख जुड़ाय }
चारों धामें जो फिरि आवे, तबौ पाप ना जाय }
स्पष्ट।

माई माई सब मिला, बाबू कोई नहीं मिला—
(१) माँ मरनेपर माँ मिल सकती है लेकिन बाप
नहीं। (२) फकीरोंका कहना है जो स्त्रियोंको माई
और पुरुषोंको बाबा कहते हैं, स्त्रियाँ हीसे भीष
अधिक मिलती है इसलिये वह ऐसा कहते हैं।

मा पली, बाप तेली, वेटा शाखे जाफ़रान—
जो अपनी जातिके अनुसार काम नहीं करता है,
उसपर व्यंगसे क०।

मांग जाँचके गये भाँभा, मांग लें तो लागे लाजा
जो अतिच्छासे दान देता है, उसपर क०।

मांगत पूत भतार गवाँयो—पुत्र मांगने गई स्वामी
भी खो बंठी।

मांग न आवे भीख, तो सुरती खाना सीख—
तमाखू या घरतो खानेवाले ज़रूर मांगते हैं।

मांगके खाना और मसजिदमें सोना—फहड़को
क० जिसका कोई न हो, उसको भी क०।

मांगिके खँको मसीदकी मीरकी,
खँकेको एक न देवेको दोऊ। (तुलसी)

मांगन गये सो मरि गये, मरे जो मांगन जाहिं }
वे नर पहिले ही मरे, जो होते कहदे नाहिं }
स्पष्ट। जो होते हवाते न दे, उसपर क०।

मांगनेसे मिलता है खड़खड़नेसे नहीं—बिना
मांगे कोई किसीको नहीं देता।

मांगे यनियं भीख न दीय, मूँह मारिके सर

माथ मुड़ाय, फुजोहत भये, जात पांत दोनोंसे गये
जब कोई ऐसा काम करे कि न इधरका रहे, न उधर
का, तब क० ।

एक बालसी मनुष्य सिर मुड़ाकर फुकीर हो गया इस
स्थानसे कि भीख मांगकर जीवन बिताना बहुत सज्ज है
किन्तु छोड़े समयके बाद उसे यह पंच : अन्धा, न लगा
और पुनः अपनी जातिमें मिलना चाहा ; लेकिन जाति
वालोंने उसे अपनी जातिमें न लिया । इसलिये वह दोनों
तरफसे गंथा । दे० पांडे दोड़ दीनसं गये ।

माथेका मुड़ांना, बेलका खिसना—जब कोई
काम आरम्भ करते ही थाफत आन पड़े, तब क० ।
माथे गठरी मधुरी चाल, आज न पहुंचव पहुंचव
काल—वे फिकर आदमी पर क० ।

माथेपर मोट बसन्तके गीत—वे मेल बात पर क० ।
पछिरे चन्ना हर खालि, सिर बोक धरे अठिलाथे ।
घाघ कछे वे तीनिउ भङ्गुषा, पोसत पान, चबाथे ।

मा तेलिन वाप पठान, वेटा शाख-इ जाफुरान }
मा धोविन पूत यजाज—(च०) योग्यताके विरुद्ध }
नाम होने पर क० ।

मानका पान अपमानका लड्डू—पिछलेसे पहला
अच्छा ।

मानका पान भी बहुत होता है } आदरकी जरा
मानका पान हीरा समान } सी बस्तु भी
मान घटे नितके घर जाये । ज्ञान घटे कुसंगति }
पाये । भाव घटे कुछ मुँहके माँगे । रोग घटे }
कुछ औपधि खाये—ज्यादा परिचय बढ़ानेसे आदर
घट जाता है ।

मान म मान में तेरा मेहमान—जयरदस्ती गले
पड़ने पर क० ।

मान बढ़ाई प्रेम रस, गरुआपन अरुनेह । यह
पांचो तब ही गये, मुखसे कहा कुछ दे—(तुलसी)
स्पष्ट । मांगना सबसे बुरा काम है ।

मान मनाई, खोर न खाई जूठी पातर चाटन भाई
जब कोई आदमी सम्मान किये जाने पर न आवे
और फिर पीछे आपसे आप आ जाय, तब क० ।
मा न माका जाया, सभी लोक पराया—

जहां अपनी मा या संग भाई न हो, वह देश
पराया है ।

मानस कसनेको मामला कसौटी है—आदमी-
की परख व्यवहार पड़ने पर होती है ।

मानस सलिल-सुधा-प्रतिपाली, जिथई कि
लवन-पयोधि मराली—(तुलसी) स्पष्ट ।

मान होत है गुननि तें, गुन विन, मान न होय ।
सुक सारी राखें सबै काग न राखै, कोय—
स्पष्ट ।

मानहु लोन जरपर देही—(तुलसी) जब कोई
किसीको दुखके समयमें कहुवी बात कहे, तब क० ।
मा नारंगी वाप फौला, वेटा रीशनुहीला—
नामानुसार जाति वा गुण न हो, तब क० ।

मानुप नहीं बेलका वाघा—मूर्ख तथा अज्ञानी आदमी
पर क० ।

माने न माने में भी नौशाकी खाला—(मु०ज०)
दे० मान न मान.....”

माने ना स्थानेकी सीख, लिये खपरिया मांगे
भीख—जो बुद्धिमान वा बड़ोंका कहना नहीं मानता
वह पीछे दुख भोगता है ।

मानों चाहे न मानो में तुम्हारा पंच—जो बिना
पूछे बीचमें बोल उठता है उसे क० ।

मानों तो देव नहीं पत्थर— } विश्वासो फल-
मानो तो देव नहीं भीतका लेव— } दायक । वि-
कुल हो सकता है । } थाससे सब

सक्रियनके पति सम भंगवान परकीयनि मति भीई आग ।
कहत पखानी जिह रस भेव । मानो देव न मानो खेव ।

(सकीया लो०र०की०)

(२) भाव भावकी सिद्धि है भाव भावमें भेव,
मा मानो तो देव है नहीं भीतकी खेव । (हृष्ट)

मा पतिहारी वाप कंजर, वेटा मिरजा संजर—
दे० “मां तेलिन वाप पठान...”

मापा कनियां और पटवारी, भेंट लिये विन
करे न यारी—स्पष्ट । मापा—जमीन नापनेवाला ।

कनियां—कर लगानेवाला ।
मा पिसनहारी अच्छी और वाप हुपत हजारी
कुछ नहीं—थापसे माका रनेह लड्डूकेपर अधिक रहता

है, इसलिये क० ।
 मा पिसनहारी पूत छैला, चूतरपर बांधे बूरका
 थैला— मा पिसनहारी है इसलिये उसका लड़का भूसी
 के सिवा और दूसरी किस चीजसे शौक करेगा ।
 (भा०) जिसके पास जो चीज रहती है वह उसीसे
 अपना शौक पूरा करता है ।

मा पे पूत पिता पे घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा-
 थोड़ा—यह कथुब मसल है दे० बाप पूत.....”

मा फिक्र होगा व्यय, तो कमी न होगा क्षय—
 क्षय ।

मा घाप रहते, कोई हुरामका नहीं कहलाता—
 (व्य०) जब कोई अपनी बात या दाँवका सचूत
 देनेका तैयार हो, तब क०

मा वेष्टियोंमें लड़ाई हुई लोगोंने जाना चेर पड़ा—
 (ज०) मा घेटोके भगड़ोके भगड़ा नहीं कहते ।
 लोग समझते हैं दुश्मनी हुई पर वास्तवमें ऐसा
 नहीं होता ।

मा घेटी गानेवाली बाप पूत चराती—(ज०)
 शरीर आदमीकी यादीपर क० ।

“बेटेका ब्याह हो तो न ब्याही न सादी है ।
 न रोपनी न बाजिकी बाबाजु आती है ॥
 मां पीछे एक मेली चदर छोड़ जाती है ।
 बेटा ब्याह है दूनह तो बाबा चराती है ।

सुफलिवकी यह चरात बड़ भातीहे सुफलिव । (नजीर)
 मा भटियारी पूत फूले खाँ } हैसियतके चिन्ह
 मा भटियारी पूत तीरदाज } नाम या काम हो,
 तब क० ।

मा मरे मौसी जीवे—मातासे मौसी अधिक प्यार
 करती है, इसलिये क० ।

मा मारे और मां ही मां पुकारे—जिससे कष्ट
 मिले उसीकी दुहाई दे, तब क० । कुत्ता मारनेवाले-
 का ही हाथ चाटता है ।

मा मारे दूसरेको न मारन दे—क्योंकि मां सा
 प्रेम दूसरेमें नहीं है । दे० कहानी “तवलेकी चला”
 मामूके कानमें बालियाँ, भांजा पेंडा पेंडा फिर
 जो दूसरेकी दौलतपर गेली या अभिमान करता है,
 उसपर क०

मायाका क्या जोड़ना, खल खाना फायल जोड़ना
 — जो धनी कृपण केवल धन जमा करनेमें ही छल
 समझता है, उसपर क० ।

मायाके भी पाँव होते हैं, आज मेरे कल तेरे—
 लक्ष्मी चंचला है ।

माया गंड, चिंटा कंठ—पैसा और विद्या पास रह-
 नेसे ही काम आता है ।

माया जगत सरायमें, तुरी भटियारी रांड । आप-
 समें जुतरायके किये मुसाफिर भांड—(नागरी-
 दास) संसाररूपी सरायमें जो मायारूपी भटियारी
 है वही मुसाफिररूपी मनुष्योंको आपसमें लड़ा
 देती है जैसे रंढियां भांडोंको लड़ा देती हैं । धनके
 लिये ही आपसमें विवाद होता है ।

माया जीका जंजाल है—धन आफतका घर है ।

माया तेरे तीन नाम, परसू, परमा, परसराम—
 मनुष्य जिस हैसियत या दर्जेका रहता है, उसी
 तरह सम्मानित भी होता है । किसी शरीर आदमी
 को लोग “परसू” ही कहते हैं । उसकी अवस्था
 कुछ सधर जानेसे “परसा” और धनी हो जानेपर
 “परसराम” कहने लगते हैं । अतः पैसेवालेकी कदर
 की जाती है ।

माया मरे न मन मरे, मर मर जात शरीर ।
 आशा तृष्णा ना मरे, कह गये दास कथीर—
 माया, मन आशा, तृष्णा इनका नाश नहीं होता
 केवल शरीर हीका नाश होता है ।

भोगान मुला बयनेब मुलाकरीन सत बय मेव तता ।
 काकी न यानी बयनेबयतः त्रया न जीवां बयनेब जीवां ।
 (भट्टहरि)

माया मेरे रामकी, धरनीघरकी देह । पूंजी
 साहकारकी, यश कोई कर ले—दानके लिये उभा-
 रनेपर क० ।

मायासे माया मिले, करके लये हाथ, तुलसी-
 दास शरीरकी, कोई न पूछे बात—जहाँ धनधानकी
 पूछ हो और शरीर गुनी होनेपर भी न पूछा
 जाय, वहाँ क० ।

मायासे माया मिले, मिले नीचसे नीच । पानीसे
 पानी मिले, मिले कीचसे कीच—जो जैसा होता
 है वैसे हीमें मिल जाता है ।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ कठोर ।
नौ नेजा पानी चढ़ा, तौड न भोगी धोर—कुल
धरतर न हुआ । कृपणको क० । नेजा—यांस ।

मारके आगे भूत भागे—मारसे सब डरते हैं । जब
कोई सीधी तरह समझानेसे नहीं मानता और
मारनेसे मानजाता है, तब क० ।

इसका विकास इस कहानीसे है । किसी करकसा
स्त्रीने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे साथ विवाह
करेगा उसे सबेरे उठते ही पांच जूतियां साफ़ंगी । वह
स्त्री बहुत सुन्दर और धनवान् थी । जो कोई उससे विवाह
करता दो चार दिनोंमें जूतियोंकी मारसे विकल होकर
भाग जाता । एक जवान और हृदयुक्त पुरुषने उसकी
रूपपर मोहित होकर उसके साथ विवाह किया । कुछ
दिन बाद जब जूतियां खाते खाते उसकी खोपड़ी पिल
पिली हो गई, तो उसने किसी कामका बहाना कर कुछ
दिनके लिए विदेश जानकी अपनी स्त्रीसे आज्ञा मांगी ।
उसने कहा तुम तो चले जाओगे मैं अपना हाथ किसपर
साफ़ करूंगी । घरके आंगनमें एक सूखा बज्रका टुंड
था, उसे दिखाकर उस मनुष्यने कहा कि जबतक मैं
लौटकर न आऊँ, तुम इसीपर अपना हाथ साफ़ कर
लिया करो । दैकयोगसे उस पंडमें एक भूत रहता था ।
वह स्त्री रोज़ सबेरे उठकर उस टुंड पेड़पर पांच
जूतियां मारती, जो उस भूतकी लगती थी, जब भूत
जूतियोंकी मारसे बेचैन हो गया, तो उसने भीचा कि
इसके मालिककी किसी तरह घरमें लौटा लाना चाहिए ।
यह विचार कर वह उसके पास गया और बोला कि तू
अपने घर क्यों नहीं जाता । उस मनुष्यने कहा मैं रोज़-
मारके लिये आया हूँ कुछ धन कमा लूँ तो जाऊँ ।
भूतने कहा मैं घड़की राजकन्याके सिरपर चढ़ता हूँ,
सिवा तैरे किसीके लहारे न उतरूँगा और राजासे तुझे
बहुत सा धन दिलावा दूँगा जिसे लेकर तू जल्दी अपने
घर चला जाइये । ऐसा ही हुआ जब उसके भाइनेसे
राजकुमारीका भत उतर गया तो राजाने उसे बहुत
धन दिया । वह मारके डरसे अपने घर तो नहीं गया
वहाँ ही रहने लगा । वह भूत वहाँसे चलकर किसी
दूरसे नगरकी रानीपर जा चढ़ा । वहाँके राजाने (जिसने
इसकी प्यारि सुनी थी) इसी मनुष्यको भूत उतारनेके
लिये बुलवाया । ज्यों ही वह रानीके सामने गया त्यों
ही रानीने (जिसपर भूत चढ़ा था) खान खाईं करके

कहा—'क्यों रे दुष्ट ! तैरा मतलब पूरा करा दिया तो
भी तू अभीतक घर नहीं गया ? उस मनुष्यने रानीके
कानमें भूतसे कहा कि जिसके डरसे मैं और पांच दोनों
भाग फिरते हैं वह इसलोगोंकी लगाममें घड़ियां तयारीफ़
से भाई है । इतना सुनते ही भूतरानीको छोड़कर वहाँसे
भी भाग गया ।

मार खाता जाय और कहे जरा मारो तो सही—
दरपोकको विशेषकर धनियोंको कही जाती है, इसी
जोड़की बंगलाकी प्रसिद्ध मसल है "मराली त मार-
ली एवार मार त देखि" दे० "अबके मारे तो..."

मार खाना मसजिदमें सो रहना—आ और
उचक़ोंको क० ।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—
जब किसी प्रतिष्ठित मनुष्यका अपमान होता है,
तब क० ।

'किड़की तो सुदृढसे मयाघात हो गई ।

गाली कभी न दो धो सो यह बात हो गई ॥

बाजू है मार खाना सो आज कलके बीच ।

सुन लोगे उसे तुम भी कि 'भीकात हो गई ॥'

मार गुस्सियां तेरी आश—नौकर मालिकसे और स्त्री
पतिले सताये जाने पर क० ।

मारतेका हाथ पकड़ा जाता है कहतेकी जवान
नहीं पकड़ी जाती—जब कोई किसीकी मूंडे बुराई
करता है, तब क० ।

मारतेके अंगाडो, भागतेके पिछाड़ी—दरपोकको
क० । मारतेके पीछे और भागतेके आगे कहनेसे
भी यही अर्थ निकलता है ।

मारम हारके पीछे रहे अरु भागम हारके धावत आगे ।

मारते खांसे सब डरते हैं—(मु०) ज़बरदस्तसे
सब डरते हैं ।

मारने वालेसे जिलाने वाला बड़ा होता है—
जब किसी घटना या रोगसे किसीकी जान बच जाय
तब क० ।

मारम हारने रहक मारी ।

मार पीछे सवार—मारके वाद बीच बचाव करने
या माफ़ी मांगने पर क० ।

मार मार किये जाय फ़तह दाद इलाही है—
उद्यम किये जाय सफलता ईशरके आधीन है ।

मार मारसे कौं चूकन है जो नामदे विधाता कीन्ह ।

मार मारके सती करना—अधिक मारने पर क० ।

जबरदस्ती काम करने पर मो क० ।

मार मुप मार तेरी हथड़ियां पिरायें मेरी आदत न जाय—(मु० ज०) बहुत हठीली और करकता खी

बहुत मार खानेपर अपने पतिसे क० ।

मारा घोटू फूटी आंख—जब करना है कुछ और हो जाता है कुछ, तब क० ।

मा रा चे अर्जी क्रिस्ता कि गावे आमद खर रफ्त (फा०) गऊ आई और गधा चला गया इस क्रिस्तेसे मुझे क्या मतलब। अप्रयोजनीय वस्तु पर अनिच्छा प्रगट करनेके लिये क० ।

मारा मुंह तबाक आगे धरा न खाय—जिसको एकवार मार लग चुकी है वह दूसरा काम करनेसे बरता है ।

मारी एक मुसरी नाम तीसमारखां—भूटी श्रेणी पर क० ।

मारें और रोने न दे—जबरदस्तेक सामने कुछ बस नहीं चलता ।

मारें न चूही नाम फुत्रह खां—दे० 'मारी एक मुसरी...'

मारें मेहर और आगे पंडौसिन—जब एकको शास देनेसे दूसरा डरे, तब क० ।

मा रोवे तलवारके धावसे, बाप रोवे तीरके धावसे—जब याता पिता अपने पुत्रके भिन्न भिन्न श्रत्याचारोंसे सजाये जाय, तब क० ।

मारें सिपाही नाम सरदारका, काटे चार नाम तलवारका—जब करे कोई, और नाम हो किसीका, तब क० ।

मारें सो मीर—जो पहिले मारता है, वही अंष्ट है ।

मारें तो हाथी सदा लूटे तो भंडार—काम करे तो ऐसा करे जिसमें नाम हो या अभाव दूर हो । तात्पर्य यह कि काम करे तो ऊंचा ही करे ।

माल भी दें जूतिआं भी खाय—व्यभिचारी मनुष्यको क० ।

मालका मुंह करते हैं जानका मुंह नहीं करते—कृपणको क० । क्योंकि वह प्राणसे धनको अधिक चाहता है ।

मालके नुकसानमें जानकी खैर—जब किसीका धन खोया जाता है, तब उसे वापस देनेके लिये क० ।

माल न राखे आपना चोरों खोरी देंदे—(पं०) अपनी असावधानीसे नुकसान हो और दूसरोंके सिर दोष मढ़े तब क० ।

माल पर जूकात है—जैरात करना धनवानका काम है । हैसियतके अनुसार खर्च किया जाता है ।

मालवाला हारे, गालवाला जीते—(व्य०) अंगरेजी अदालतमें मुकदमे पर क० । जहाँ पावने दार तो हार जाता है और देनदार वकील कौंसिलोंको सहायतासे जीत जाता है ।

माला तेरी काठकी धागा दर्ई पिरोय । मनमें गांठी पापकी राम भजे क्या होय—बिना मन श्रद्ध हुए ऊपरी आदम्बर दिखानेसे कुछ नहीं होता । माला फेरे हरि मिलै तो चँदा फेरे भाड़—नास्तिकोंका कहना है ।

माली चाहे घरसना, घोषी चाहे धूप, साहू चाहे योलना, चोर चाहे चूप—स्पष्ट ।

मालूम होगा हथको पीना शरावका—(मु०) शराबियोंको क० । जिस दिन ईश्वरके यहाँ विचार होगा उस दिन शराब पीनेका मजा मालूम होगा । माले मुफ्त दिले बेरहम—(फा०) जब कोई दूसरेका माल खर्च करनेमें दंद न करे, तब क० ।

माले मोल बिकाय, नहीं घेठे भूसा खाय—(व्य०) माल दाम आनेहीसे बिकता है नहीं तो पड़ा रहता है ।

माले हराम बूद बजाये हराम, रफ्त—(फा०) मुफ्तका माल मुफ्तमें ही जाता है ।

माशूककी ज्ञात वेवफा है—स्पष्ट । इससे कोई अच्छा फल नहीं निकल सकता ।

मास खाये, मास चट्टे, घी खाये थल होय । साग खाये ओम्ब बढ़े, घृता फहांसे होय—स्पष्ट ।

मास बिना सब साग रसोई—(मु०) मांसाहारी आँका कहना है ।

माससे नौह जुदा नहीं होता—अपने अलग नहीं हो सकते अर्थात् रिक्तेदारी छूट नहीं सकती ।

माया हुई तो फना हुआ, हिरदा हुआ कठोर ।
नौ नेजा पानी चढ़ा, तौड न भोगी कोर—कुछ
असर न हुआ । कृपणको क० । नेजा—यांस ।
मारके आगे भूत भांगे—मासे सय डते हैं । जय
कोई सीधी तरह समझानेसे नहीं मानता और
मारनेसे मानजाता है, तय क० ।

इसका निकाम इस कहानीसे है । किसी करकसा
झीने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे साथ विवाह
करेगा उसे सबेरे छठते ही पांच जूतियां मारूंगी । वह
झी बहुत सुन्दर और धनवान् थी । जो कोई उससे विवाह
करता दो चार दिनमें जूतियोंकी मासे बिकल होकर
भाग जाता । एक जगन और छटपुट रुपयने उसके
रुपपर मोहित होकर उसके साथ विवाह किया । कुछ
दिन बाद जब जूतियां खाते खाते उसकी खोपड़ी पिल
पिली हो गई, तो उसने किसी कामका बहाना कर कुछ
दिनके लिए विदेश जानिकी अपनी सौसे आज्ञा मांगी ।
उसने कहा तुम तो चले आओगे मैं अपना हाथ किसपर
साफू करूंगी । घरके भांगनमें एक सूखा ब्रह्मका ठूंड
था, उसे दिखाकर उस मनुष्यने कहा कि जबतक मैं
छोटकर न आऊँ, तुम इसीपर अपना हाथ साफू कर
लिया करो । देखयोगसे उस पैड़में एक भूत रहता था ।
वह सौ रोज़ सबेरे छठकर उस ठूंड पैड़पर पांच
जूतियां मारती, जो उस भूतकी लगती थी, जब मूत
जूतियोंकी मासे बँध न हो गया, तो उसने सोचा कि
इसके मालिककी किसी तरह घरमें लौटा जाना चाहिए ।
यह विचार कर वह उसकी पास गया और बोला कि तू
अपने घर क्यों नहीं जाता । उस मनुष्यने कहा मैं रोज़-
गारके लिये आया हूँ कुछ धन कमा लूँ तो जाऊँ ।
भूतने कहा मैं यहाँकी राजकन्याके सिरपर चढ़ता हूँ,
सिवा तेरे किसीके तमारे न चढ़ूँगा और राजासे तुझे
बहुत सा धन दिलाया दूँगा जिसे लेकर तू जल्दी अपने
घर चला जाइये । ऐसा ही हुआ जब उसके भाङ्गनेसे
राजकुमारिका भत उतर गया तो राजाने उसे बहुत
धन दिया । वह मारके डरसे अपने घर तो नहीं गया
वहाँ ही रहने लगा । वह मूत वहाँसे चलकर किसी
दुबले नगरकी रानीपर जा बसा । वहाँके राजाने (जिसने
इसकी ख्याति सुनी थी) इसी मनुष्यको भूत उतारनेके
लिये बुलवाया । जो वहाँसे रानीके सम्मुख गया जो
ही रानीने (जिसपर यह बड़ा था) लान चखें करके

कहा—'क्यों रे दुष्ट ! तेरा मतलब पूरा करा दिया तो
भी तू अभीतक घर नहीं गया ? उस मनुष्यने रानीके
कानमें भूतसे कहा कि जिसके डरसे मैं और आप दोनों
भागते हैं वह हमलोगोंकी तलाशमें वहाँ तयरीफ़
ले आई है । इतना सुनते ही भूतरानीकी ओझकर वहाँसे
भी भाग गया ।

मार खाता जाय और कड़े जरा मारो तो सही—
डरपोकको विशेषकर बनियोंको कही जाती है, इसी
जोड़की बंगलाकी प्रसिद्ध मसल है 'मराली त मार-
ली एवार मार त देखि' दे० 'अबके मारे तो..'

मार खाना मसजिदमें सो रहना—ज्य और
उचक़ोंको क० ।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—
जय किसी प्रतिष्ठित मनुष्यका अपमान होता है,
तय क० ।

'किङ्की तो सुदसे सचावात हो गई ।

गाली कभी न दो धो सो अब बात हो गई ॥

बाजू है मार खाना सो आज कलके बीच ।

सुन लोगे उसे तुम भी कि चौकात हो गई ॥'

मार गुसैयां तेरी आश—नौकर मालिकसे और की
पतिले सताये जाने पर क० ।

मारतेका हाथ पकड़ा जाता है कहतेकी जवान
नहीं पकड़ी जाती—जय कोई किसीकी भूठी बुराई
करता है, तय क० ।

मारतेके अगाड़ी, भागतेके पिछाड़ी—डरपोकको
क० । मारतेके पीछे और भागतेके आगे कहनेसे
भी यही अर्थ निकलता है ।

माग्न हारके पीछे रहे अब भागन हारके धावत आगे ।

मारते खांसे सय डरते हैं—(मु०) जयरदस्तले
सय डरते हैं ।

मारने वालेसे जिलाने वाला बड़ा होता है—
जय किसी घटना या रोगसे किसीकी जान बच जाय
तय क० ।

मारन हारने रचक भारी ।

मार पीछे सवार—मारके बाद बीच यथाव करने
या माफ़ी मांगने पर क० ।

मार मार किये जाय फ़तह दाद इलाही है—
उद्यम किये जाय सफलता ईशरके आधीन है ।

मार मारते क्यों घूत-हे जी नामुद्दे विधाता कौन्ह ।
 मार मारके सती करना — अधिक मारने पर क० ।
 जबरदस्ती काम कराने पर भो क० ।
 मार मुख मार तेरी हथड़ियाँ पिरायँ मेरी आदत
 न जाय—(मु० ज०) बहुत हठीली और करकसा खी
 बहुत मार खानेपर अपने पतिते क० ।
 मारा घोंटू फूटी आंख—जब करना है कुछ और हो
 जाता है कुछ, तब क० ।
 मारा चे अर्जी किस्सा कि गांव आमद खर रपत
 (फा०) गऊ आई और गधा चला गया इस किस्सेसे
 मुझे क्या मतलब। अप्रयोजनीय वस्तु पर अनिच्छा
 प्रगट करनेके लिये क० ।
 मारा मुंह तवाक आगे धरा न खाय—जिसको
 एकबार मार लग चुकी है वह दूसरा काम करनेसे
 डरता है ।
 मारी एक मुसरी नाम तीसमारखाँ—भूटी
 शेही पर क० ।
 मारे और रोने न दे—जबरदस्तीके सामने कुछ बस
 नहीं चलता ।
 मारे न चूही नाम फुतह खाँ—दे० 'मारी एक
 मुसरी...'
 मारे मेहर और आगे पड़ोसिन—जब एकको श्रास
 देनेसे दूसरा डरे, तब क० ।
 मा रोवे तलवारके घावसे, बाप रोवे तीरके
 घावसे—जब पाता पिता अपने पुत्रके भिन्न भिन्न
 श्रत्याचारोंसे सजाये जायँ, तब क० ।
 मारे सिपाही नाम सरदारका, काटे वार नाम
 तलवारका—जब करे कोई, और नाम हो किसीका,
 तब क० ।
 मारे सो मीर—जो पहिले मारता है, वही भेट है ।
 मारे तो हाथी सदा लूटे तो भंडार—काम करे तो
 ऐसा करे जिसमें नाम हो या अभाव दूर हो ।
 तात्पर्य यह कि काम करे तो ऊँचा ही करे ।
 माल भी दें जूतिआँ भी खायँ—व्यभिचारी मनु-
 प्यको क० ।
 मालका मुंह करते हैं जानका मुंह नहीं करते—
 कृपणको क० । क्योंकि वह प्रायः धनको अधिक
 चाहता है ।

मालके नुकसानमें जानकी खर—जब किसीका
 धन खोया जाता है, तब उसे डाढ़स देनेके लिये क० ।
 माल न राखे आपना चोरों खोरो देंदे—(पं०)
 अपनी असावधानीसे नुकसान हो और दूसरोंके
 सिर दोष मढ़े तब क० ।
 माल पर जकात है—खिरात करना धनधानका काम
 है । हैसियतके अनुसार खर्च किया जाता है ।
 मालवाला हारे, गालवाला जीते—व्य०) अंगरेजी
 अदालतोंमें मुकदमों पर क० । जहाँ पावने दार तो
 हार जाता है और देनदार वकील कौंसिलोंको सहा-
 यतासे जीत जाता है ।
 माला तेरी काठकी धागा दई पिराय । मनमें
 गांठी पापकी राम भजे क्या होय—बिना मन
 शुद्ध हुए ऊपरी आडम्बर दिखानेसे कुछ नहीं होता ।
 माला फेरे हरि मिलै तो रँदा फेरे भाड़—
 नास्तिकोंका कहना है ।
 माली चाहे धरसना, धोबी चाहे धूप, साहू
 चाहे बोलना, चोर चाहे चूप—स्पष्ट ।
 मालूम होगा हथ्रको पीना शराबका—(मु०)
 शराबियोंको क० । जिस दिन ईश्वरके यहाँ विचार
 होगा उस दिन शराब पीनेका मजा मालूम होगा ।
 माले मुफ्त दिले घेरहम—(फा०) जब कोई दूसरे-
 का माल खर्च करनेमें दूँ न करे, तब क० ।
 माले मोल विकाय, नहीं चेंटे भूसा धाय—
 (व्य०) माल दाम आनेहीसे बिकता है नहीं तो
 पड़ा रहता है ।
 माले हराम बूद यजाये हराम रपत—(फा०)
 मुफ्तका माल मुफ्तमें हो जाता है ।
 माशूककी ज्ञात घेवफा है—स्पष्ट । इससे कोई
 अच्छा फल नहीं निकल सकता ।
 मास खाये मास घड़े, घी खाये घल होय ।
 साग खाये ओम्ह बड़े, वृता कहांसे होय—
 स्पष्ट ।
 मास बिना सय साग रसोई—(मु०) मांसाहारी-
 आँका कहना है ।
 माससे नौह जुदा नहीं होता—अपने अलग नहीं
 हो सके अर्थात् रिश्तेदारी छूट नहीं सकती ।

माया हुई तो क्या हुआ, हिरदा हुआ फठोर ।
नौ नेजा पानी चढ़ा, तौड न भांगी कोर—कुछ
असर न हुआ । कृष्णको क० । नेजा—वांस ।
मारके आगे भूत भागे—मारसे सब डरते हैं । जब
कोई सीधी तरह समझानेसे नहीं मानता और
मारनेसे मानजाता है, तब क० ।

इसका निकाम इस कहानीसे है । किसी करकसा
स्त्रीने यह प्रतिज्ञा की कि जो कोई मेरे साथ विवाह
करेगा उसे सर्वेरे उठते ही पांच जूतियां माफ़गीं । वह
स्त्री बहुत सुन्दर और धनवान् थी । जो कोई उससे विवाह
करता दो चार दिनोंमें जूतियोंकी मांगसे बिकल होकर
भाग जाता । एक जवान और हटपुष्ट पुरुषने उसके
रूपपर मोहित होकर उसके साथ विवाह किया । कुछ
दिन बाद जब जूतियां खाते खाते उसकी खोपड़ी पिल
पिली हो गई, तो उसने किसी कामका बहाना कर कुछ
दिनके लिए विदेश जानेकी अपनी स्त्रीसे आज्ञा मांगी ।
उसने कहा तुम तो चले आओगे मैं अपना हाथ किसपर
साफ़ करूंगी ! घरके भांगनमें एक सूखा बच्चका टूट
था, उसे दिखाकर उस मनुष्यने कहा कि अवतक मैं
लौटकर न आऊँ, तुम इसीपर अपना हाथ साफ़ कर
लिया करो । दैवयोगसे उस पैड़में एक भूत रहता था ।
वह स्त्री रोज़ सर्वेरे उठकर उस टूट पेठपर पांच
जूतियां मारती, जो उस भूतकी लगती थी, जब भूत
जूतियोंकी मांगसे बेचैन हो गया, तो उसने भीचा कि
इसके मालिककी किसी तरह घरमें लौटा जाना चाहिए ।
यह विचार कर वह उसके पास गया और बोला कि तू
अपने घर क्यों नहीं जाता । उस मनुष्यने कहा मैं रोज़-
मारके लिये आया हूँ कुछ धन कमा लूँ तो जाऊँ ।
भूतने कहा मैं यहाँकी राजकन्याके सिरपर चढ़ता हूँ,
सिवा तैरे किसीके छतारे न चढ़ूँगा और राजासे तुम्हें
बहुत सा धन दिलवा दूँगा जिसे लेकर तू जल्दो अपने
घर चला जाइये । ऐसा ही हुआ जब उसके भाइनेसे
राजकुमारीका भत उत्तर गया तो राजाने उसे बहुत
धन दिया । वह मारके डरसे अपने घर तो नहीं गया
बढ़ा ही रहने लगा । वह भूत बहसिसे चलकर किसी
दूसरे नगरकी रानीपर जा चढ़ा । वहाँके राजाने (जिसने
इसकी श्यामि सुनी थी) इसी मनुष्यकी भूत छतारनेके
बिधि बुलवाया । ज्यों ही वह रानीके सङ्घने गया त्यों
ही रानीने (जिसपर तू चढ़ा था) लान आखिं करके

कहा—'क्यों रे दुष्ट ! तेरा मतलब पूरा करा दिया तो
भी तू अभीतक घर नहीं गया ? उस मनुष्यने रानीके
कानमें भूतसे कहा कि जिसके डरसे मैं और आप दोनों
भागते हैं वह हमलोगोंकी तमागमें बहसि तयरीफ़
ले आइए । इतना सुनते ही भूतरानीकी छोड़कर बहसि
ही भाग गया ।

मार खाता जाय और कहे जरा मारो तो सही—
दरपोकको विशेषकर बनिपोंको कही जाती है, इसी
जोड़की बंगलाकी प्रसिद्ध मसल है "मराली त मार-
ली एवार मार त देखि" दे० "अबके मारो तो..."
मार खाना मसजिदमें सो रहता—उग और
उचक्योंको क० ।

मार गाली सुनते हैं, गुमाश्ते कहलाते हैं—
जब किसी प्रतिष्ठित मनुष्यका अपमान होता है,
तब क० ।

'भिड़की तो सुदृश्य मसावात हो गई ।

गल्लो कभी न दो धो सो अब बात हो गई ॥

बाजू है मार खाना सो आज कलके बीच ।

सुन लोगे उसे तुम भी कि, चौकात हो गई ॥

मार गुस्सेयां तेरी आश—नौकर मालिकसे और स्त्री
पतिसे सताये जाने पर क० ।

मारतेका हाथ पकड़ा जाता है कहतेकी ज़वान
नहीं पकड़ी जाती—जब कोई किसीकी फूठी उरारें
करता है, तब क० ।

मारतेके अगाड़ी, भागतेके पिछाड़ी—दरपोकको
क० । मारतेके पीछे और भागतेके आगे कहनेसे
भी यही अर्थ निकलता है ।

मारन हारके पीछे रूँधे अब भागन हारके धावत आगे ।

मारते खांसे सब डरते हैं—(मु०) जबरदस्ते
सब डरते हैं ।

मारने वालेसे जिलाने वाला बड़ा होता है—
जब किसी घटना या रोगसे किसीकी जान बच जाय
तब क० ।

मारन हारते रचके भागे ।

मार पीछे सवाँर—मारके बाद बीच बचाव करने
या भाङ्गी मांगने पर क० ।

मार मार किये जाय फूतह दाद इलाही है—
उपम किये जाय सफलता ईश्वरके आधीन है ।

साहब सलामत अब भी मेरी सेखजीसी है।

लेकिन कटे बमारे वही राध हाटमें । (चकर)

मिल गये की हरगंगा—मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा ।

मिले एक समरत्यके, सबै सुभ्र दश गुत्र ।

मिटे एक समरत्यके, सबै सुभ्रके सुभ्र—एक सामर्थवान सहायक मिलनेसे दशगुना बल हो जाता है। जैसे छत्रके आगे एक बैठा देनेसे दश हो जायगा और उसपर जितने छत्र बैठाते जावो बराबर दश गुना होता जायगा, परन्तु यदि एक मिटा दिया जाय और केवल छत्र रह जाय तो उनका कुछ मोल न रहेगा ।

मिललतमां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल ।

माखी जय हों एकठी, तो देवें सहद मुहाल ।

एका रहनेपर लाभ दिखलानेके लिये क० ।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुसको—

(सु० ज०) सुफलिसी पर क० ।

मिस्सोंसे पेट भरता है किस्सोंसे नहीं—

—जब कोई कूड़ी चिट्ठाचारी दिखावे कुछ दे नहीं, तब क० । ब्रासी बातेंसे पेट नहीं भरता । मिस्सा= उस आटेकी रोटी जो कई तरहका अन्न एक साथ मिलाकर पीसा जाता है ।

मीठ बहुत जहँ कोरा लागे—अधिक प्रीतिसे बिगाड़ छेता है ।

मीठा और भर कठौती—अच्छी चीज़ बहुत नहीं

मिलती । दुहरे लाभ पर भी क० । दे० "एक तो मीठा"

मीठा खातिर जूठा खाय—आदमी स्वार्थके लिये सुशामद करता है ।

मीठा बोल पूरा तोल—(व्य०) दुकानदारको चाहिये कि गाहकले मीठा बोले और बज़त वा मापमें पूरी चीज़ दे ।

मीठा मीठा गप्प, कडुआ कडुआ धू—(व्य०) जब कोई जीतका माल चुन चुनके निकाले और बुकसानका छोड़ दे, तब क० ।

मीठी छुरी—कपटी को क० ।

मीठेसे मरे तो जहर क्यों दे—दे० "गुड़ दिये मरे"

मीठेपर नोन और नोनपर मीठा—खानेमें स्वादिष्ट लगता है । एक रसकी चीज़ खाते खाते वा एक ही प्रसंगकी बातें करते करते जब जी ऊब जाता है, तब उसे बदलनेके लिये क० ।

नयन खोजने भरष मधु कहु रफ़ीम घटि कौन ।

मीठी भावें खीनपर अब मीठे पर खीन ॥

मीत न नीत गलीत यह, जो धरिए धन जोर ।
खाये खरचे जो बचे, तो जोरिये करोर—(विहारी)

जो पेट काटकर धन जमा करते हैं, उनके लिये क० ।

मीनहि पैरब कौन सिखावे—दे० "मदलीकेबच्चोंको"
मीर साहबकी जात आली है मुँह चिकना पेट खाली है—(च०) लिफ़ाफ़ियेपर ताना है ।

मीरसाहब ज़माना नाज़ुक है, दोनों हाथोंसे

धामिये दस्तार—(मु०) खूब सन्मलकर रहनेपर क० ।

मीरांकी थोटी है—(मु०) बड़ा हिस्सा अलग कर

देनेपर क० । दरगाहोंके मुजाविर वा मन्दिरोंके पुजारी चढ़त वा प्रसादका हिस्सा पीर वा देवताके नामसे अलग रख लेते हैं बाकी सबको बांट देते हैं ।

मीराँ गोर बराबर—जितने बड़े मीयाँ उतनीही बड़ी उनकी छम । दे० "मियाँ गोर बराबर"

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—(१) अन्य धर्मी आद्व करनेपर कहते हैं (२) जब कोई बूढ़ा होकर जवानीका मज़ा लूटा चाहे, तब भी क० ।

मुई बछिया घाहानको दान—जब कोई किसीको ऐसी चीज़ दे जो किसीके कामकी न हो, तब क० ।

मुई माई टुटी सगार्ह—(ज०) माँके मरनेपर नैहरका नाता टट जाता है ।

मुई लोलो अँडोंपर—कमज़ोर अपना गुस्सा वेक़्मूर पर उतारता है ।

मुप गे और सो रहेंगे—मरनेपर क० ।

मुपपर स्त्री दरें—दे० "मरे को मारे"

मुप शेरसे जीती यिह्ली मली—जीवट बड़ी चीज़ है ।

मुँह पेसा जैसे मैसका चूतड़—भारी शकलपरक० ।

मुँह कहे "खाया खाया" हलक़ कहे "सवाद न आया"—जब कोई किसीको बहुत मोड़ा खानेको दे, तब क० ।

मुँहका निवाला तो नहीं है—जो जल्दी निगल

दिलसे मिटना बेरी 'भंग्युक्त' हिनाईका ख्याल ।

चो-गया गोशुषे नाखुनका बुदा हो जाना ।

मिज़ाज क्या है कि एक तमाशा, घड़ीमें तोला
घड़ीमें माशा—अव्यवस्थित चित्तवालेको क० ।

मिज़ाज बादशाहका औफ़ान भंडूभूजेकी—
जो गरीब होकर ऊँचा मिज़ाज रखे, उसे क० ।

मिट्टी कहे कुम्हारसे, तू क्या रूँधे मोहि, एक
दिन ऐसा आयागा, मैं रूँधूँगी तोहि—प्राणी-
मात्रका शरीर एक न एक दिन मिट्टीमें ही मिल
जाता है ।

मिट्टी पकड़े सोना हो—भाग्यवान मनुष्य पर क० ।

मिट्टे न होनहारकी रेल—भावी प्रबल है ।

भक्ति पक्षिंतानी चली सुलाल, वह तो ऐसी हुती न माल ।

कई उक्ति न्यो बुद्धि विशेष, मिट्टे न होनहारकी रेल ।

(कलहं तरिता)

मिट्टे न मेटे रेल हथेली—ऊ० दे० ।

मित्र बनाये ना बने, बैरी सिंह अब्द भाग ।

जैसे कधी न हो सकें, एक ठौर जल भाग—
स्पष्ट ।

मित्र वही मर जाय, जो अड़ीपर काम न आय—

विपत्तिके समय जो काम न दे वह दोस्त नहीं है ।

मिन्तरसे अन्तर नहीं, बैरीसे नहिं नेह । पीतम-

से परदा नहीं, जिन निरखी सारी देह—स्पष्ट ।

मियाँका दम और किशाड़की जोड़ी—किसी

बहुत ही गरीब भले मानसको क० जिसके पास
कुछ न हो ।

मियाँकी जूती मियाँका स्त्रि—उसीकी चीज़ते

उसीकी हानि करने या उसीका छर्च कराकर उसी-
की दावत करने पर क० ।

मियाँकी दाढ़ी घाह चाहीमें गई—बूरेसे अपनी

भठी तारीफ़ सुनकर जब कोई अपनी दौलत उड़ा
डालता है, तब क० । दे० "सुल्लाकी दाढ़ी ।"

मियाँके मियाँ गये बुरे बुरे सुपने—(मु० ज०)

जब किसीको दुखपर दुख आ जाता है, तब क० ।

मियाँ गये रौंद धीधी गई पटरौंद—जिस थौरत

का चरित्र खराब है उसपर क० ।

मियाँ गुड़ बराबर—जितनी धामदनी उतना छर्च ।

जितने हिस्से उतने ही लेनेवाले यानी जब बांटते
समय चीज़ पूरी हो जाय और सबको मिल भी
जाय, तब क० ।

मियाँ गोर बराबर—(मु०) जितने बड़े मियाँ

उतनी ही बड़ी क्रम । ठीक हिसाब मिलने पर क० ।

मियाँनमेंसे निकला ही पड़त। है—जब कोई

आदमी अकारण बहुत क्रोध करता है वा आपसे
याहर होने लगता है, तब क० ।

मियाँ नाक काटनेको फिर धीधी कहें नथ गढ़ादी

(ज०) जब कोई दूसरेकी इच्छासे ठोक उरदा काम
करना चाहता है, तब क० ।

मियाँने टोई, सब कामसे खोई—(मु०) मियाँने

ट्योला और वह भाग गई । जब कोई अपनी बे-
वकूफ़ीसे अछूता नौकर भगा देता है, तब क० ।

मियाँ फिर लाल गुलाल, धीधीके ही बुरे हवाल-

(मु० ज०) जो आप तो छेल छिक्कनियाँ बने फिर,
और धरमें छर्चको कुछ न दे, उसे क० ।

मियाँ धीधी राजी, तो क्या करेगा फ़ाज़ी—

जब दोनों आपसमें मिल जायें तो बीचमें दखल
देनेकी कोई ज़रूरत नहीं ।

मियाँ हाथ अंगूठी, धीधीके कनपात ; लौंडीके

दाँत मिस्सी, तीनोंकी एक बात—जैसा शौक़ीन
मालिक बैसा नौकर । जहाँ सब ही लिफ़ाफ़िये हों,
वहाँ क० ।

मिरज़ापुरी बग़ालमें छुरी, खाते पीते नियत बुरी-

मिरज़ापुुरके रहनेवालों पर ताना है ।

मिरज़ा फोया—जो बहुत छकुमार बनता है उसकोक०

मिलकी क्या जाने पराये दिलकी—कौन आदमी

किस तरहसे अपना जीवन बिताता है वह धनी
पुरुष नहीं जान सकता ।

मिलकी ना कहे दिलकी, पैंठें दरवाजे निकलें-

खिड़की—(ए०) धनी आदमी कोई काम प्रकट रूपसे
नहीं करता ।

मिल गयेकी राम राम—

मिल गयेकी सलाम आलेक—

भूटे मित्र पर क० ।

बे गानगी नहीं है बस इतनी दोस्ती है ।
भैं उनको जानता है वे सुभकी जानते हैं । (बकबर)

साइन सलामत पर भी मीरो सेखजोसि है।

सिकिन कटे कमाहे वधी राह छामें । (भकबर)

मिल गये की हरगंगा—मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा ।

मिले एक समरत्थके, सबै सुन्न दश सुन्न ।

मिटे एक समरत्थके, सबै सुन्नके सुन्न—एक

सामर्थवान सहायक मिलनेसे दशगुना बल हो जाता

है। जैसे छन्नके आगे एक बैठा देनेसे दश हो जायगा

और उसपर जितने छन्न बैठाते जावो बराबर दश

गुना होता जायगा, परन्तु यदि एक मिठा दिया

जाय और केवल छन्न रह जाय तो उनका कुछ मोल

न रहेगा ।

मिल्लतमां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल ।

माखी जय हों एकठी, तो देवें सहद मुहाल ।

एका रहनेपर लाभ दिखलानेके लिये क० ।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुसको—

(मु० ज०) मुफ़लिसी पर क० ।

मिस्सोंसे पेट भरता है किस्सोंसे नहीं—

जब कोई झूठी शिष्टाचारी दिखावे कुछ दे नहीं,

तब क० । झाली बातोंसे पेट नहीं भरता । मिस्सा=

उस आदमीकी रोटी जो कई तरहका अन्न एक साथ

मिलाकर पीसा जाता है ।

मीठ बहुत जहँ कीरा लागे—अधिक प्रीतिसे विगाड़

छेता है ।

मीठा और भर कटौती—अच्छी चीज़ बहुत नहीं

मिलती । दुहरे लाभ पर भी क० । दे० “एक तो

मीठा”

मीठा खातिर जूठा खाय—आदमी स्वार्थके लिये

सुखामद करता है ।

मीठा घोल पूरा तोल—(व्य०) दूकानदारको चाहिये

कि गाहफसे मीठा घोले और वजन वा मापमें

पूरी चीज़ दे ।

मीठा मीठा गर, कडुआ कडुआ धू—(व्य०)

जब कोई जीतका माल चुन चुनके निकाले और

सुकसानका छोड़ दे, तब क० ।

मीठी छुरी—रुपटी को क० ।

मीठसे मरे तो जहर क्यों दे—दे० “गुड़ दिये मरे”

मीठेपर नोन और नोनपर मीठा—खानेमें स्वादिष्ट

लगता है । एक रसकी चीज़ खाते खाते वा एक ही

प्रसंगकी बातें करते करते जबजी उब जाता है, तब

उसे बदलनेके लिये क० ।

नयन सलौने चधर मधु कहु रहूम घटि कौन ।

मीठी भावें लौनपर चध मीठेपर लौन ॥

मीत न नीत गलीत यह, जो धरिए धनं जोर ।

खाये खरचे जो बचे, तो जोरिये करोर—(विहारी)

जो पेट काटकर धन जमा करते हैं, उनके लिये क० ।

मीनहिएरय कौन सिखावे—दे० “मछलीकेबच्चोंको”

मीर साहयकी जात आली है मुँह चिकना पेट

खाली है—(च०) लिफाफ़ियेपर ताना है ।

मीरसाहय जमाना नाजुक है, दोनों हाथोंसे

धामिये दस्तार—(मु०) खूब सम्बलकर रहनेपर क० ।

मीरांकी वोटी है—(मु०) बड़ा हिस्सा अलग कर

देनेपर क० । दगाहोंके मुजाविर वा मन्दिरके

पुजारी चढ़त वा प्रसादका हिस्सा पीर वा देवताके

नामसे अलग रख लेते हैं बाकी सबको बांट देते हैं ।

मीराँ गोर बराबर—जितने बड़े मीयाँ उतनीही बड़ी

उनकी कन्न । दे० “मियाँ गोर बराबर”

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—(१) अन्य

धर्मी आदर करनेपर कहते हैं (२) जब कोई बूढ़ा

होकर जवानीका मज़ा लूटा चाहे, तब भी क० ।

मुई बछिया घाहानको दान—जब कोई किसीको

ऐसी चीज़ दे जो किसीके कामकी न हो, तब क० ।

मुई माई टुटी सगार्—(ज०) माँके मरनेपर नेहरका

नाता टट जाता है ।

मुई लोलो अंडोंपर—कमज़ोर अपना गुस्ता बेइस्र

पर उतारता है ।

मुप में और सो रहंगे—मरनेपर क० ॥

मुपपर सौ दरें—दे० “भरे को मारे”

मुप शेरसे जीती यिहो मली—जीवट बड़ी चीज़ है ।

मुँह पेसा जैसे भैंसका चूतड़—भारी गरुत्तरक० ।

मुँह कहे “खाया ख़ाया” हलफ़ कहे “सवाद न

आया”—जब कोई किसीको बहुत थोड़ा खानेको दे,

तब क० ।

मुँहका निवाला तो नहीं है—जो जल्दी निगल

दिलसे मिटना तेरी भंगमूल दिनारेका ख्याल ।

चो गया गोशुंते नाखनको जुदा हो लागे ।

मिजाज क्या है कि एक तमाशा, घड़ीमें तोला
घड़ीमें माशा—अव्यवस्थित चित्तवालेको क० ।

मिजाज चादशाहका औकात भङ्गभूजेकी—
जो गरीब होकर ऊँचा मिजाज रखे, उसे क० ।

मिट्टी कहे कुम्हारसे, तू क्या रूँधे मोदि, एक
दिन ऐसा आयागा, मैं रूँधूँगी तोहि—प्राणी-
मात्रका शरीर एक न एक दिन मिट्टीमें ही मिल
जाता है ।

मिट्टी पकड़े सोना हो—भाग्यवान मनुष्य पर क० ।

मिट्टे न होनहारकी रेल—भावी प्रथल है ।

चिति पहितानी खली सुखाल, बह तो ऐसी हुती न वाल ।

कहे चलि ज्यो बुद्धि विमिख, मिट्टे न होनहारकी रेल ।

(कलह तरिता)

मिट्टे न मेटे रेल हथेली—ऊ० दे० ।

मित्र बनाये ना बने, वैरी सिंह अरु आग ।

जैसे कधी न हो सकें, एक टौर जल भाग—
स्पष्ट ।

मित्र वही मर जाय, जो अड़ीपर काम न आय-
विपत्तिके समय जो काम न दे वह दोस्त नहीं है ।

मिन्तरसे अन्तर नहीं, वैरीसे नहिं नेह । पोतम-
से परदा नहीं, जिन निरखी सारी देह—स्पष्ट ।

मियाँका दम और किवाड़की जोड़ी—किसी
बहुत ही गरीब भले मानसको क० जिसके पास
कुछ न हो ।

मियाँकी जूती मियाँका सिर—उसीकी चीज़से
उसीकी हानि करने या उसीका खर्च कराकर उसी-
की दावंत करने पर क० ।

मियाँकी दाही घाह घाहीमें गई—दूसरेसे अपनी
भठी तारीफ़ सुनकर जब कोई अपनी दौलत उड़ा
डालता है, तब क० । दे० 'सुहाकी दाही ।'

मियाँके मियाँ गये घुरे घुरे सुपने—(मु० ज०)
जब किसीको दुखपर दुख आ जाता है, तब क० ।

मियाँ गये रौंद धोधी गई पटरौंद—जिस औरत
का चरित्र खराब है उसपर क० ।

मियाँ गुड़ बराबर—जितनी आमदनी उतना खर्च ।

जितने हिससे उतने ही लेनेवाले यानी जब बांटते
समय चीज़ पूरी हो जाय और सबको मिल भी
जाय, तब क० ।

मियाँ गोर बराबर—(मु०) जितने बड़े मियाँ
उतनी ही बड़ी क्रम । ठीक हिसाब मिलने पर क० ।

मियाँनमसे निकला ही पड़ता है—जब कोई
आदमी अकारण बहुत क्रोध करता है वा आपसे
थाहर होने लगता है, तब क० ।

मियाँ नाक काटनेको फिरें धोधी कहें नथ गढ़ादो
(ज०) जब कोई दूसरेको इच्छासे ठोक उलटा काम
करना चाहता है, तब क० ।

मियाँने टोई, सब कामसे खोई—(मु०) मियाँने
टटोला और वह भाग गई । जब कोई अपनी बे-
पकूफ़ीसे अच्छा नौकर भगा देता है, तब क० ।

मियाँ फिरें लाल गुलाल, धोधीके ही घुरे हवाल-
(मु० ज०) जो आप तो हेल, छिड़कनियाँ बने फिरें,
और घरमें खर्चको कुल्ल न दे, उसे क० ।

मियाँ धोधी राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी—
जब दोनों आपसमें मिल जायें तो धोचमें दखल
देनेकी कोई ज़रूरत नहीं ।

मियाँ हाथ अंगूठी, धोधीके फनपात ; लौंडीके
दाँत मिस्सी, तीनोंकी एक बात—जैसा शौकीन
मालिक वैसा नौकर । जहाँ सब ही लिफ़ाफ़िये हों,
वहाँ क० ।

मिरज़ापुरी चगलमें छुरी, खाते पीते नियत घुरी-
मिरज़ापुर्के रहनेवालों पर ताता है ।

मिरज़ा फोया—जो बहुत सफ़ुमार बनता है उसको क० ।

मिलकी क्या जाने पराये दिलकी—कौन आदमी
किस तरहसे अपना जीवन बितता है वह धनी
गुल्ल नहीं जान सकता ।

मिलकी ना कहे दिलकी, पैठें दरवाज़े निकल-
खिड़की—(पू०) धनी आदमी कोई काम प्रकट रूपसे
नहीं करता ।

मिल गयेकी राम राम— } भूठे मित्र पर
मिल गयेकी सलाम आलेक— } क० ।

ने गानगी नहीं है बस इतनी दोकी है ।

भेँ चनकी जानता छेँ वे सुभकी जानते हैं । (पकवर)

साधन सजामत अब भी मेरी श्रेष्ठजीसे है।

लेकिन बटे बगाई वही राह हाटमे । (चकवर)

मिल गये की हरगंगा—मिले तो अच्छा न मिले तो भी अच्छा ।

मिले एक समरतथके, सबै सुन्न दश गुन्न ।

मिटे एक समरतथके, सबै सुन्नके सुन्न—एक सामर्थवान सहायक मिलनेसे दशगुना बल हो जाता है। जैसे छत्रके आगे एक बैठा देनेसे दश हो जायगा और उसपर जितने छत्र बैठाते जावो बराबर दश गुना होता जायगा, परन्तु यदि एक मिठा दिया जाय और केवल छत्र रह जाय तो उनका कुछ मोल न रहेगा ।

मिल्लतमां अति लाभ है, सबसे मिलकर चाल ।

माखी जब हों एकठी, तो देवें सहद मुहाल ।

एका रहनेपर लाभ दिखलानेके लिये क० ।

मिस्सी काजल किसको, मियां चले भुसको—

(मु० ज०) मुजलिसी पर क० ।

मिस्सोंसे पेट भरता है किस्सोंसे नहीं—

जब कोई भूटी चिष्टाचारी दिखावे कुछ दे नहीं, तब क० । झालो बातोंसे पेट नहीं भरता । मिस्सा= उस आटेकी रोटी जो कई तरहका अन्न एक साथ मिलाकर पीसा जाता है ।

मीठ बहुत जहँ कीरा लागे—अधिक प्रीतिसे बिगाड़ छेता है ।

मीठा और भर कटौती—अच्छी चीज़ बहुत नहीं

मिलती । दुहरे लाभ पर भी क० । दे० "एक तो मीठा"

मीठा खातिर जूठा खाय—आदमी स्वार्थके लिये सुधामद करता है ।

मीठा थोल पूरा तोल—(व्य०) दूकानदारको चाहिये कि गाहकसे मीठा बोले और वज़न वा मापमें पूरी चीज़ दे ।

मीठा मीठा गप्प, फ़डुआ फ़डुआ धू—(व्य०)

जब कोई जीतका माल चुन चुनके निकाले और नुकसानका छोड़ दे, तब क० ।

मीठी छुरी—कपटी को क० ।

मीठेसे मरे तो जहर क्यों दे—दे० "गुड़ दिये मरे"

मीठेपर नोन और नोनपर मीठा—खानेमें स्वादिष्ट लगता है । एक रसकी चीज़ खाते खाते वा एक ही प्रसंगकी बातें करते करते ज़ब्रजी ऊब जाता है, तब उसे बदलनेके लिये क० ।

नयन सनोने चपर सपु कइ रझीम घटि कौन ।

मीठी भावें लौनपर अब मीठ पर लौन ॥

मीत न नीत गलीत यह, जो धरिए धन जोर ।

खाये खरबे जो बचे, तो जोरिये करोर—(विहारो)

जो पेट काटकर धन जमा करते हैं, उनके लिये क० ।

मीनहि पैरब कौन सिखावे—दे० "मदलीकेबच्चोंको"

मीर साह्यकी जात भाली है मुँह चिकना पेट खाली है—(च०) लिफ़ाफ़ियेपर ताना है ।

मीरसाह्य ज़माना नालुक है, दोनों हाथोंसे

थामिये दस्तार—(मु०) खूब सम्हलकर रहनेपर क० ।

मीरांकी वोटी है—(मु०) बड़ा हिस्सा अलग कर

देनेपर क० । दरगाहोंके मुजाविर वा मन्दिरोंके

पुजारी चक्रत वा प्रसादका हिस्सा पीर वा देवताके नामसे अलग रख लेते हैं बाकी सबको बांट देते हैं ।

मीरां गोर बराबर—जितने बड़े मीयां उतनीही बड़ी

उनकी इम । दे० "मियां गोर बराबर"

मुआ घोड़ा भी कहीं घास खाता है—(१) अन्य

धर्मी धाढ़ करनेपर कहते हैं (२) जब कोई बूढ़ा होकर जवानीका मज़ा लूटा चाहे, तब भी क० ।

मुई बछिया बाहानको दान—जब कोई किसीको

पैसी चीज़ दे जो किसीके कामकी न हो, तब क० ।

मुई माई टुटी सगार्—(ज०) माँके मरनेपर नैहरका नाता टट जाता है ।

मुई लोलो अँडोंपर—कमज़ोर अपना गुस्ता बेक़र्र पर उतारता है ।

मुप गे और सो रहेंगे—मरनेपर क० ।

मुपपर सो दरें—दे० "भरे को मारे"

मुप शेरसे जीती विह्नी मली—जीवट बड़ी चीज़ है ।

मुँह पेसा जैसे भैसका चूतड़—भारी शक़तरक० ।

मुँह कहे "खाया ख़ाया" हलक़ कहे "सवाद न ख़ाया"—जब कोई किसीको बहुत थोड़ा खानेको दे,

तब क० ।

मुँहका निवाला तो नहीं है—जो जल्दी विगत

निम्न ज्वर। कठिन कामके लिये क०।
 मुँह काटा जन्म कोयला पर है नाम गुंलाय—
 (च०) नामके अनुसार रूप रङ्ग न हो, तब क०।
 मुँह काटा बस उजला—कुरूप भाग्यवाँनकी क०।
 मुँह की नींठी हाथकी झूठी—(ज०) जो झूठा
 आन्तु दे रखे पर कभी दे नहीं उसे क०।
 मुँह के आगे खन्दक नहीं—बहुत बोलनेवाले वा
 बहुत करनेवालेको क०।
 मुँह के चिकने पेटके काले—कपटकीको क०। विप-
 क्तान् न्योमुत्तम्।
 मुँहको कालख लग गई—बदनामी हो गई।
 मुँह काय आँख लजाय—जिसका खाया हो उसके
 करने करना ही पड़ता है।
 मुँह नैल तमावे है—दे० “जैसा मुँह”
 मुँह चिकना पेट खाली—डोंग वाज़ वा ऊपरसे
 त्रिक्रम बनाये रखे। उसको क०।
 मुँह जूतियों पीटा—जिसके चेहरेपर फिटकार बर-
 स्तों हो, उसे क०।
 मुँह देखके टीका फाड़ा जाता है—जैसा आदमी
 उसके साथ वैसा ही बर्ताव करे। जब कोई
 अपने धनवान् सम्बन्धीकी अधिक खातिर करे
 और गरीबकी कम तब गरीब सानेकी क०।
 नित तिय तौ तन सज्ज सिंधार, भली जू-
 ड है पखानो न्यौ जग गौकी, मुखहि

मुँह देखके बीडा, और चूतड़
 (१) जैसा मनुष्य होता है
 ज्ञातिरदारी की जाती है। जब
 तो उससे सम्मताका व्यवहार कर
 अच्छी तरह पहिचान लो तब
 (पात) देना=शिष्टाचार करना।
 मुँह देखी सब कहते हैं खुदा
 कहता—(मु०) जब कोई सचाईकी
 सुनाहिजेमें साकर पन्नापात, करे तब
 “सज्ञा लगती” की “धर्म”
 मुँह देखे की

गों तो मुँह देखकी होती है मुहल्यव सचकी,
 पीछे की याद करे उसको बफा करने है।
 मुँह धो आओ (वा धो रखओ)—अनुचित माँग
 पर क०।
 मुँह धोवे रोजी खोवे नहाय नकर्म जाय—जैनियों
 को व्यंगसे कहते हैं कि जो जीव हिंसाके भयसे
 दाँत नहीं मलते और स्नान नहीं करते।
 मुँह न तुह नाम चाँद खाँ—(च०) नामके अनुसार
 रूप न हो, तब क०।
 मुँह न मत्था, जिन्द पहाड़ों लत्था—(पं०) जब
 कोई बंद शकल अपनेको खूबसूरत समझे, तब क०।
 लत्था=उतरा।
 मुँह नूर, न पेट सधूर—अभाग मनुष्यको क०।
 मुँहपर कहे सो मूखका बाल, पीछे कहे सो...का
 बाल—मुँहपर कहना अच्छा है पीछे किसीकी निन्दा
 करना अच्छा नहीं। निन्दक को क०।
 मुँहपर कुछ और पीठ पीछे कुछ और—ऊ० दे०।
 मुँहपर पूत, पीछे हरामी मूत—मु० ज०)ऊ० दे०।
 मुँहपर सुमानी, पीठपीछे सुअरखानी—(मु० ज०)
 ऊ० दे०।
 मुँहपर है (वा मखियां
 भिनकती है गंदी
 मुँह को क०
 मुँह म
 उथ
 होता
 ही
 ह

मुँह लगी और फ़ल मेरे पेटमें—शराबके नशेपर कइते हैं जिसे होंठसे लगाते ही सब पेय पेटमें धरा जाते हैं ।

मुँह लगाई डोमिनी, गाधे ताल घेताल—नौकरको बहुत मुँह नहीं लगाना चाहिए। जब कोई साधारण मनुष्य मुँह लगानेसे बहुत सिर चढ़ जाय और अपनी हैसियतसे बाहर बाते करने लगे, तब क०।

मुँह लगाई डोमिनी, चाल यच्चों समेत आय—
दे० “ऊँगली पकड़ते पहुँचा” ।

मुँहसे निकली, खलकमें पहुँची—यात मुँहसे निकलते ही चारों ओर फैल जाती है ।

मुँहसे निकली, हुई पराई यात—मुखसे जो बात निकल जाती है उसकी कोई कीमत नहीं रहती ।

देडो ब्यों पिय ग अनखाय, बढिके बोल न बोलि रिसाय,
कइते पचावो नाहिं न कोय, धोनि बात बिरानी होय ।

मुँहसे घोली, सिरसे खेलो—जो मनुष्य पूछनेसे कुछ जवाब नहीं देता, मौन धारण कर लेता है, उसे क० ।

कसा है कालिने तिमको काफ़िर,

तो बड़ फ़िरकी असरसे खेने ।

दहाने बेवका तेरे मारा, न मुँहसे बोले न बिरसे खेले ।

(जीक)

मुँहसे महाया—मुँह देखकर भय होता है । कड़ी निगाहरखनेसे काम ठीक होता है ।

मुँहसे राल टपकी पड़ती है—नदीदे आदमीको क०।

राल=सार

मुँहसे हजार चाउर धाय, नाकेसे एको ना—
(पू० ज०) अपनी इच्छालुमार उतना ही काम करो जयतक तुम ठीक तौरसे उसे कर सको ।

मुँह डाले, सत्तर थाला टाले—(१) रोगीको क० खाने लगे तो जानो रोग गया (२) थालसी आदमीपर क० जो कुछ न कुछ जवाब देकर काम करनेको तकलीफ़से बचा चाहता है ।

मुँह ही मुँह मारे और तोया तोया पुकारे—
ताड़ना करने हीसे लड़के छुधरते हैं ।

मुक्त माल धानर लिये, वेद लिये अज्ञान । परम सुन्दरी जोगी लिये, कायर हाथ कमान—
बेमेल कामपर क० ।

मुख देखकर बातें करना—दे० “मुँह देखी सब”
मुखादिमहाकाँके साले—जिसकी हैसियत कुछ भी न हो वह केवल दूसरोंके सहारे लम्बी चौड़ी बात बनाता हो, उसे क० ।

मुखिया मुख सों चाहिए, खान पानको एक ।
पाले पोये सकल अँग, तुलसी रहित विवेक—
(तुलसी) सरदार ऐसा होना चाहिए जैसा मुँह, जो सबको एक निगाहसे देखे और सबका पालन करे ।

मुजरा सबसे आला, जिसके लड़का न वाला—
छद्म आदमी धेक़र होता है । मुजरद=कुनारा=विन व्याहा ।

मुजरद सबसे आला है, न जोरू है न साला है
ऊ० दे० ।

मुझे दे सूर, तू हाथों फूंक—स्वार्थपर क० ।

मुझे न मारे तो सारे जहानको मार आऊ—
शेरीबाज़पर क० ।

मुड़ा जोगी पिसी दवा—इनकी पहिचान नहीं होती
मुड़े सिरपर पानी पड़ा ढल गया—बेगरम आदमीपर क० ।

मुहई मुहालैह नावसे शहीद तैरते जाँय—
देखो “नाव चढ़े भगडाल”

मुहई खुस्त, गवाह खुस्त—(व्य०) जो रियत सेके गवाही देता है, उसे क० ।

मुफ़लिसका चिराग़ रोशन नहीं होता—(मु०)
शरीय आदमीका कोई काम सफल नहीं होता ।

मुफ़लिसका मुरदा दरयावमें यहता है—(१)
क्योंकि धनाभावेसे उसकी अन्तेष्ट क्रिया नहीं होती (२) शरीय आदमीका माल सस्ते मोलमें बिकता है ।

का वाग़ मुफ़लिसकीका कफ़ ख़ारी फ़रइया ।

भाउ बग़ैर घरमें बिराही है भक़रिया ।

कीमत जालि मने है क़याममें सक़रिया ।

पैदा न हीम जिक़े क़यामकी मक़रिया ।

दरियामें उनके मुँदे बक़ाली है मुफ़लिसी । (मज़र)

मुफ़लिसकी जोरू सदा नंगी—(मु०) धनाभावसे गहना कपड़ा नहीं मिलता ।

मुफ़लिससे सवाल हराम है—(मु०) गरीबसे मांगना बुरा है।

मंगनिया सो' मांगियो लानतियाकी काम। (ली०२००)को०

मुफ़लिस हमेशा ख़ार—(मु०) गरीब सबसे अपमानित होता है।

मुफ़लिसी और फ़ालसेका शरयत } हैसियतसे
मुफ़लिसी और हाटकी सीर } अधिक
चाहनेपर क०।

मुफ़लिसीमें आटा गोला—दुःखपर दुख पड़नेपर क०
गीक पैसा कर दिया वंगलेका पीर पतनूनका।

बह मसल है मुफ़लिसीमें आटा गोला कर दिया। (अकबर)

बैरिशो पदकर इन्हें ये नफ़ा हुआ।

बैरिशो चलती नहीं घर बाग बिका॥

अहरेजी ठाठ अब निमेगा को' कर।

आटा हुआ मुफ़लिसीमें अपना गोला॥ (रंज०)

मुफ़लिसी सब बदार खोती है, मर्दफा इतवार खोती है—स्पष्ट।

मुफ़नका करना और दूर ले जाना—बूया परिष्म करनेपर क०।

मुफ़तका चन्दन घिसेजा बिलह्नी—(ज०) व्यर्थका काम करना। चन्दन लगाना बड़े आदमियोंका काम है, गरीबका नहीं।

मुफ़तका माल किसको बुरा लगता है—सब ही को अच्छा लगता है।

मुफ़तका सिरका शहदसे मीठा—जो चीज़ मुफ़त मिले वह बहुत अच्छी न होनेपर भी अच्छी ही है।

मुफ़तकी दाबतमें फ़क़त रोटी ही गोश्त है }
मुफ़तकी शराब फ़ाज़ीकी भी हलाल

(मु०)ऊ० दे०। यद्यपि मुसलमानोंमें शराब पीना हराम है, विशेषकर फ़ाज़ीके लिये, अगर वह मुफ़तमें मिले तो उसे पी लेना चाहिए, मुफ़तकी चीज़ किसीको बुरी नहीं लगती।

मुफ़तके खानेवाले हम और हमारा भाई—(ज०) जब कोई खो अपने पतिका धन अपने भाईको खिला दे, तब क०।

मुफ़तके चिड़वा भर भर फाँक—(ए०) हरामके

मुफ़तमें निकले काम, तो काहेको दीजे दाम—स्पष्ट
मुफ़त रा चे गुफ़त—जो चीज़ मुफ़तमें था जाय, उसमें दोष नहीं निकालना चाहिए।

मुये चाम सों चाम कटावे, भुईं सकरी मा स्वावे घाघ फ़हईं तीनिउ' भकुआ, उदरि जाय अद स्वावे—यह तीनों काम मूल्यके हैं।

मुरगा पशम भेंड मसम—(मु०) जो भेंडको पचा जाय उसके खिये मुरगा क्या चीज़ है। मांसाहारी पर क०।

मुरगा वाँग न देगा तो सुवहन होगी?—
दे० 'जहाँ मुरगा'

मुरगी अपनी जानसे गई खानेवालेको स्वादे न आया—दे० "बकरी जानसे गई"

मुरगीकी अज़ां कौन सुनता है—(१) खियोंको बातपर विश्वास नहीं करना चाहिए (२) गरीबकी कोई सुनवाई नहीं करता।

मुरगीकी अज़ान और औरतकी गवाहीका इतवार नहीं—ऊ० दे०।

मुरगीके ख़ाबमें दाना ही दाना—जो जिसकी चिन्तामें रहता है उसे अपनेमें भी वही चीज़ दीखती है।

मुरगीको तकले घाव ही बहुत है—दुःखियोंको थोड़ी हो ह न बहुत है। गरीब थोड़ी हानि भी नहीं सह सकता।

मुरगी क्या और मुरगीका शोरुवा ही क्या?—
छोटी चीज़से बड़ेका काम नहीं सरता।

मुरगी खाय नहीं पर खोसे—(१) मुरगी खाय, तो भी पर न खोसे, अर्थात् कोई ऐब करे भी तो किसीको ज़ाहिर न करे (२) मुरगी खाय नहीं तो भी पर खोसे, अर्थात् कोई ऐब न भी करे तो भी दुनियाको ज़ाहिर करे कि मैं ऐब करता हूँ।

मुरगीकी एक ही टांग होती है—

इस मसबुका निकाश एक छोटी सी कच्चीसी है। कोई बबची अपने मालिकके खाना पकाकर लाया। उसमें मुरगी की एक ही टांग थी। एक टांग चुपकेसे बबचीने खा डाली थी। मालिकने देखकर कहा कि इसकी दूसरी

गुंकी सिर्फ एकही टांग होती है। संयोगवम किसी दिन एक मुरगा मोबरके डेरपर एक टांग चड़ाये खड़ा था। बचपने मुरगोको भीर बतनाते हुए कहा 'इज्जुर एक पैरवाले मुरगोको देखिये। जब मालिकने ताखी बजाई तब मुरगने भट दूसरा पैर जमीनपर रख दिया और बचपनेसे कहा देख इसके दोनों पैर हैं कि एक इसपर उसने जवाब दिया 'इज्जुर ताजी बजानेपर दो पैर दौख पड़े। अगर उस समय भी ऐसा ही करते तो दूसरा पैर ज़रूर सामने था आता। ई० "बकरो या सस्से"

मुरदा चन्दस्त ज़िन्दा—(फा०) मुरदा ज़िन्देके छापमें होता है।

लायको दफ़न कौजे मरे याके फोक दोजे।

मुदा बदस्त ज़िन्दा" जो चाहिए सो कौजे। (जौक)

मुरदा यहिश्तमें जाय या दोज़खमें यहाँ तो हलवे मांडेसे काम—(मु०) मुसलमानोंमें एक रीति है कि उनके मुरदेके सामनेमुखा कुरान पढ़ता है और उसे मिठाई इत्यादि मिल जाती है, स्वार्थी वा मतलबी श्राद्धमोको क०।

किसी मुसलमानी बस्तीमें एक मुज्रा रफता या ओ ऊक फातिहा दफदकां काम पढता लोग उसे बुला लीने थे। जब शबेबराय भाई तब हर एकके घरसे उसे बुलाघट भाई। उसके किसी दोस्तने पूछा कि कहीं भाई अज तुम चलेली क्या करीगे और किस तरह घर घर फातिहा पढ़ीने। मुज्राने कहा मुझे फातिहा पढ़नेसे क्या काम, मुरदः दोज्जुष जाय या बिहिश्त, मुझे तो अपने इश्वर मांडेसे काम है।

मुरदेको बैठकर रोते हैं और रोज़गारको छोड़े होकर—जीवसे जीविका प्यारी होती है।

मुरदेपर सी मन मिट्टी तो एक मन और सही- जब बहुत जुकसान होता है तो उसके साथ थोड़ा जुकसान और भी सह लिया जाता है।

मुरदोंसे शर्से बांधकर सोता है—बहुत देर तक सोनेवालेको क०।

मुरद्वी बिना मुरद्व्या नहीं पकता—(फा०) "मुरद्वी बियार यो मुरद्व्या बिखूर" का तर्जुमा है किमका श्रायय है कि बिना धनी मालिकके अल्छी धीज़े खानेको नहीं मिलती, वा बिना अनुभवी वा मिरधरकुके काम उचारै रूपसे सम्पन्न नहीं होता।

मुल्के खुदा तंग नेस्त, पाये मरा लंग नेस्त—(फा०) ईश्वरका मुल्क थोड़ा नहीं है और मैं भी पांवका लंगड़ा नहीं हूँ। उद्योगी पुलकका कहना है, जब उसे कामसे जवाब हो जाता है।

मुलाज़िमे री, तेज़ा री—(फा०) नया नौकर फुरतोसे काम करता है।

मुल्लाकी दाढ़ी तयस्कमें गई—(मु०) जब किसीका सय धन बाहवाहीमें लुट जाय, तब क०।

इसका विकास इस कहानीसे है। कोई मुल्ला यादगारीके लिये चेलोकी अपनी चीज़ें बांट रहे थे; यह देखकर एक मसजिदके कच्चा मुल्लाजी थापकी दाढ़ी सटैव मुझे थापकी याद दिखती रहेगी यह कहकर उसने उनको दाढ़ीमेंसे एक बाल छलाख लिया, यह देखकर सभी चले भागे बढ़े और मुल्लाके बार बार मना करनेपर भी न माने उन्होंने एक एक बाल करके उनकी सारी दाढ़ी मोच ली।

मुल्लाकी दौड़ मसजिद तक—ज्यादासे ज्यादा इतना ही कर सकता है। जहांतक जिसको पहुंच रहती है वह वहाँ तक जा सकता है। अपनी शक्तिके बाहर कोई काम नहीं किया जा सकता। परमित शक्तिवाले मनुष्यको क०।

एक मुल्ला जब अपने घरवालोंसे लड़ता तो यही कहता कि मैं किसी दूसरे मुल्कको चला जाऊंगा। एक दिन वह मिहजत रोज़ीदह होकर बोला कि यो शब मैं जाता हूँ। उसके घरके नज्दिके एक मसजिद थी, वहाँ जाकर वह बैठ रहा। यह देखकर किसीने उससे पूछा कि तुम तो महर कीइकर दूसरे मुल्कको जानो थे, यहाँ क्यों बैठ रहे। उसने जवाब दिया "क्या तुम नहीं जानते कि मुल्लाकी दौड़ मसजिद तक ही होती है?"

जब गुम हुआ लौं दो बोतमें इकट्ठी,

मुज्राको दीह मसजिद भकरवकी दौड़ मरी (भकरव)

मुल्लाजी क्या कहें आखूँ जो आगे ही समझे बैठे हैं

तुम क्या कहोगे हम पहिले हीसे जानते हैं।

मुल्ला न होगा तो क्या मसजिदमें अज़ां न होगी- एक श्राद्धमीबिना जनताका काम नहीं रुक सकता। **मुश्किले नेस्त कि आसां न शबद, मर्द चायद कि हिरासां न शयद**—(फा०) कोई मुश्किल काम ऐसा नहीं जो उद्योग करनेसे सहज न हो जाय, मर्द कमी हिम्मत नहीं हाते।

मुसलमानां दर गोर, मुसलमानी दर किताय-
(फा० मु०) मुसलमान सब कर्ममें हैं और उनका
मज़हब किताबोंमें। अर्थात् सब मुसलमान अथ
रह नहीं गये।

मुसलमानी अशादानी—(मु०) मुसलमान एक
साथ रहते हैं, इसलिये क०।

मुसलमानीमें आनाकानी क्या ?—(मु०) जब
कोई निमन्त्रणमें आकर खानेसे इन्कार करे, तब क०।

मुसल्ला पसार, बग़लमें यार—(मु०) पाखंडीको
कहते हैं। मुसल्ला=जिस बिल्लौनेपर नुमाज़ पढ़ी
जाती है।

मुश्क आं अस्त कि खुद बोयद, न कि अत्तार
गोयद—(फा०) कस्तूरी सगन्ध होते पहिचानी जाती
है, बेचनेवालेके प्रशंसा करनेसे नहीं। गुणियोंको
प्रशंसा उनके गुणसे ही होती है दूसरोके किये नहीं
होती।

मूंग मोठमें बड़ा कौन—ज्ञातमें कोई छोटा बड़ा नहीं
संय बराबर हैं।

मूँछ मरोड़ा, रोटी तोड़ा—अलसी मनुष्योंको क०।

मूँजकी टट्टी और गुजराती ताला—वेजोड़
मामलेपर क०। (१) घासकी टट्टीमें गुजराती ताला
(जो बेश झीमती होता है) नहीं सोहता। (२)

मूँजकी टट्टी जो खुद कमज़ोर होती है उसमें (गुज-
राती) मज़बूत ताला लगाना बृथा है।

मूँजीका माल, निकले फूटकर खाल—मूँजीका
माल नहीं पचता।

मूँजीको नुमाज़ छोड़के मारे—(मु०) सांपको जब
देखे तभी मारे।

मूँड़का नाम फपार कहावे—दोनों एक ही बात है।

मूँड़ दिया मांग खावो—योगियोंका पहना चेलोंके
प्रति।

मूँड़ मुड़ाय फ़ज़ोहत भये, जात पांत दोनोंसे गये
द० “माथ मुड़ायेक०”

मूँड़ मुड़ाये जटा धराये, नगन फिर ज्यों मैसा
खलड़ी ऊपर राख लगाये, मन जैसे का तैसा
पाखण्डी साधुओंके प्रति क०।

जाके नख पक्ष जटा विशाल।

कोई सापस प्रसिद्ध कनिकाया। (तुलसी)

मूँड़ मुड़ाये तीन गुन, गई टांटकी खाज।

वाधा हो जगमें फिर, पेट भर खाया नाज—

मूँड़ मुड़ानेमें (साधू होनेमें) तीन गुण हैं, सिरकी
खुजली जाती रहती है, दुनियांमें मान होता है
और पेट भर खानेको मिलता है।

मूँड़ मुड़ायो सिगरे गांव, कौन कौनको लीजे नांव
एक हो तो कहा जाय, जहां सभी मूर्ख हों वहां
किस किसका नाम लिया जाय।

इस ससलका निक़ास इस कड़ागीसे है—एक धोरोके
गन्धर्वसेन नामका गधा था। जब वह मर गया तो धोरो
उसका नाम ली लेकर जोरसे रोने लगा। उसके लो

भान्नीय ये वे समझे कि इसका कोई निकट सम्बन्धी
मग है इसलिये उन्होंने मूँड़ मुड़ा दिया। जब उनसे

लीग पूरते कि तुम लीगोने मूँड़ क्यों मुड़ाया तब वह
कहते कि क्या आपकों नहीं सा मं कि गन्धर्वसेन मर

गये ? वह भी यही समझते कि गन्धर्वसेन कोई ऐसी
ही प्रतिष्ठित होंगे इसलिये इन्होंने भी मूँड़ मुड़ा लिया।

इसी तरह लीगोंकी देखकर कीतवालने और कीतवालसे
सुनकर मन्नीने और मन्नीसे सुनकर, राजा तकने अपना

चिर मुड़ा लिया। जब रानीने राजासे पूछा कि आपने
चिर क्या मुड़ाया तब वह बोले कि गन्धर्वसेन मर गये

हैं। रानीने पूछा वह आपके कौन थे ? राजाने कहा
मैं उन्हें नहीं जानता; मुझसे मन्नीने कहा। जब मन्नीसे

पूछा गया कि वह कौन थे; उसने कीतवालका नाम
लिया; इसी तरह पूरते पूरते अन्तमें सालम हुआ कि

गन्धर्वसेन गधिका नाम था। तब ही सब कोई बड़े
खिन्न हुए।

मूँड़ मुड़ाये मुरदा नहीं हलका होता—द० “वाल
खलाइनेसे.....”

मूँड़को नहिं तेल, मांगई खसम मुगौरा—
(ज०) सिरमें लगाने तकके लिये तेल तो है ही नहीं

खसम मुगौरा मांगता है सो कहाँसे हो सकता है
क्योंकि मुगौराके लिए अधिक तेलकी ज़रूरत होती

है। बहुत गरीबी हालतपर क०।

मूँतका खुल्लू हाथमें—गंदे धादमीको क०। यदि
दूसरे पर डालनेके लिये हो तो भाव दूसरा है।

मूँदहु थांख फतहुं कछु नाहीं—(तुलसी) स२८।
मूरखकी सारी रैन चतुरकी एक झड़ी—(ज०)

मूरखके साथ रात भर रहनेसे चतुरके साथ घड़ी भर रहना अच्छा ।

करिके सुरति कछो भिय नारि, भई दति के बाहुत नारि ।
बोकी कौक छति रच भरी, मूरख रैन न देखा घरी ।

(सामान्य)

मूरखके समझाये तें ज्ञान गांठको जाय-स्पष्ट ।

मूरखको मत सौंप दू, चतुराईका काम ।

गथा विकत मिलती नहीं, बध घोड़ेके दाम-
स्पष्ट । बध=बद्धी ।

मूरखको समझावनी, सरस चीजं चलि जाय ।

ज्यों पत्थरके मारने, चोखो तीर नसाय-
मूरखको चिन्ता देनेसे सम्पूर्ण सदुद्देश्योंकी हानि हो जाती है जैसे कि पत्थरपर तीक्ष्ण तीरे मारनेसे उसका नाश हो जाता है ।

मूरख गुण समझे नहीं, तौ न गुणीमें चूक ।
कहा भयो दिनको बिभौ, देखे जो न उलूक-
(वृन्द) स्पष्ट ।

मूरख जनका माल है, यारोंकी खुराक-दे०
“कूहड़का माल हैस हैस खाइये ।”
मूरख वैद्यकी मात्रा, वैकुरणकी यात्रा-मूरख वैद्यकी दवा करनेसे रोगी मर जाता है । दे० नीम हकीम जतरे जान ।

मूरखकी दोस्ती जीका जियान-मूरखसे दोस्ती करना जीका जंजाल है ।

भान तिया पे लखि पिय बाध, कछो वामं भरि कर्षं लसाय कछो पखानो व्थी, बुधिबान, मूरख सों हित जियेको अ्यान (कवचंभोग दुःखिता)

मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचिसम-
(तुलसी) स्पष्ट ।

मूरखस्व नास्ति औपधम्-मूरखका इलाज नहीं ।
मूल न बासों भय करे, जो नर करे गुरुर ।
जो नर साईं सों डरे, बासों डरो जुरुर-
स्पष्ट ।

मूलसे ब्याज प्यारा होता है—(१) (व्य०) मूल भले ही डूब जाय मगर ब्याज नहीं छोड़ा जाता । मूल तो धपना ही है, ब्याज नफ़में मिलता है,

हसलिये अधिक प्यारा होता है । (२) बंधेसे पोता अधिक प्यारा होता है ।

मूली अपने पत्तों भारी-जब कोई धपने दुःखमें फंसा हो और दूसरोंका दुःख दूर न कर सके, तबका मूली और मूलके पत्तोंपर नॉनकी डली-जब कोई श्रेखी करके अपनी ऐसी चोड़ोंको गिनाने जिनका कुछ मूल्य न हो, तब क० ।

मूले और विलारमें, कवहुं प्रीति नहीं होय-स्पष्ट ।
मूली हाथ पराइयां जिस चाहे तिस दें—(१०) जब चीज अपने अधिकारमें न रहकर दूसरेके अधिकारमें हो, तब क० ।

मूगकीसी आंखें चीतकीसी कमर-इन्द्री कीकी क० ।
मूर बांदरा तीतड़ मोर, ये चारों खेतीके चोर-
(क०) ये चारों खेतीको नष्ट करते हैं ।

मेओंका पूत बारह बरसमें बदला लेता है-
मेओं वा मेवाती एक नोच जातिके मुसलमान होते हैं, ये बहुत पराक्रमी और शोपी होते हैं । बारह वर्षकी अवस्थासे ही ये शत्रुओंसे अपना बदला चुकाते हैं अपना बारह वर्ष पीछे भी बदला लेनेसे नहीं चकते ।

मेओं बंदी जब दे जय उखली भर रुपैया रख-
वाल-मेओं लोग अपनी लड़कीके ब्याहमें बहुत रुपया लेते हैं ।

मेओं मरा जय जानिये जय तीजा हो जाय-जब किसी पातमें खटका पना रहे और उसका निप-
दारा न हो जाय, तबतक उसको पूरा न समझना चाहिये ।

इस मसलका निकास मेओं जातिकी एक बंदी कहानी-
सी है । एक बनियेका एक पायगा एक मेओंके यहाँ था ।
रुपये जियमें न देने पड़े, इशबिये चसने, बनियेकी पपनी
खेलु का सम्वाद भेज दिया । बनियां भी रुक सपे न
करता इना उसके घरपर आया । जब उसकी जाति वाले
उस गाइनेके मुहानेसे कश्चिआगकी ली चरी ती। बनियां भी
सकने-पीके पी लिया । चरी काकर लसका सपे न
जाता रहा, अब उसने सपसच सपे न जानेमें गाइने

देखा। निराम होकर जब वह लौटा आ रहा था, तब उसके आसपास ठिकाना न रहा जब उसने उस मिथो को क़द्र से बाहर निकलते देखा। भ्रममें उस बनिवने ऊपरकी मसल कही कि जबतक मिथो का तोजा न हो जाय तबतक उसको मरा न समझना चाहिए। कोई कोई तोजा ही जायको लगए "बाबीसा, शैय" भी कहते हैं।

मेड़कीको भी जुकाम हुआ— य कोई छोटा आदमी नज़ाकत दिखावे, तब क०।=

मैंह, लड़का और नौकरी घड़ी घड़ी नहीं हुआ करती—स्पष्ट।

मैंह घरसेना तो बौझार आ ही जायगी—

यदि कोई उदार-हृदय मनुष्य खर्चकरेगा तो हमें भी कुछ मिल ही जायगा, ऐसी आशयखनेवालेपर क०। मेरा था सो तेरा हुआ घराय खुदा टुक देखन दे (मु० ज०) दे० तेरा है सो मेरा था।

मेरा दिल बेदिल हुआ देख जगतकी रीत— जो संसारकी गति देखकर विरक्त हो जाय, उसका कहना है।

मेरा बेल न्याय नहीं पढ़ा है—हुजती आदमी जब याजी यात करनेमें बहुत मीन मेख निकालता है, तब उसका कहते हैं।

इसपर एक कहानी इस तरह है। किसी एक नैयायिकने एक तैलीसे पूछा कि तुमनेमो अपने बेलके गलेमें घंटी क्यों बांधते हो? उसने जवाब दिया कि जब हम अपने कामपर नहीं भी रहते तब, घंटीकी शब्दसे मालूम हो जाता है कि बेल खड़ा नहीं है अपना काम कर रहा है। इसपर उन्होंने कहा कि यदि वह बेल खड़ा होकर ही अपना सिर दिखावे और घंटी बजावे तो तुम्हें कैसे मालूम होगा कि वह अपना काम करता है? यह सुनकर उसने इतने हुए ऊपरकी मसल कही। यह नैयायिकोंपर माना है। मुसलमान कहते हैं कि मेरा बेल सुनिक नहीं पढ़ा।

मेरा भाथा उसी वक्त ठनका था—जब भविष्यमें आज़त आ जानेका सन्देह पहिले ही हो गया हो और वह आज़त यथार्थमें आ पड़े, तब क०।

मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे, कहना अच्छा नहीं सुगली खाना अच्छा नहीं।

मेरी सौतन खाय दही, मोसे कैसे जाय सही— सौतियाबाहर क०।

मेरी ही बिल्ली मुफसे ही म्यांव— जिसका छाया उसीको आँख दिखावे, तब क०।

मेरे गांवका कूड़िया, नाम रखवा इन्द्र जी— किसी आहरेदार आदमीका नाम और इन्द्र बाहरमें ही होती है न कि अपनी जन्मभूमिमें। कूड़िया और इन्द्र जी दोनों एकही पेड़का नाम है।

मेरे चापने घी खाया मेरा हाथ सुंधो—जो बड़ोंकी कीर्तिपर घमण्ड करता है, उसको क०।

मेरे ब्याह, जीजीके ठिक ठिक—(ज०) बिना प्रयोजन या बे मौक़ेपर खया खर्च करना।

मेरे भजू कि तेरे—अपनेको देखू कि तुम्हारेको?

मेरे मियांके दो कपड़े, सुत्थन, नाड़ा, बंस— गरीबी हालतपर क०।

मेरे मेरे मुंहकी सी तेरे तेरे मुंहकी सी करता फिरता है—खुशामदीपर क०।

मेरे यहां आज शर्ग है—जिस दिन किसीके घरमें चूल्हा भी नहीं जलता, उस दिन क०।

मेरे लालके सी सी यार, धुनिये, जुलाहे और मनिहार—(ज०) ज़राब सोहबतवाले लड़केको क०।

मेरे लालाकी उल्टी रीत, सायन मास चुनावें भीत—जो समयानुसूल काम नहीं करता; उसको क०।

मेरे हीसे आग लाई नाम धरा बसन्धर—(ज०) दूसरेकी चीज़पर घमण्ड करे, और उसके

कियेका एहसान न माने, तब क०। बसन्धर उस पवित्र अग्निको कहते हैं जो किसीको दी नहीं जाती कहेनेका तात्पर्य यह है कि मुफसे आग मांग ले गई और जब मैंने मांगी तो कहा बसन्धर है।

करे न मान इहोरकी, लही खुसुन्दर खाम। पाणि किरानी लाइके, धरइ बसन्धर नाम।

मेलमें जो जायत, तो नाचां कटिमें टांक। सौर जुआरी गंठ कटे, डाल सके ना आँख—(ग्रा०)

भीड़ भड़केमें अपनी चीज़ होशियारीसे रखनी चाहिए।

मेलमें भूमेला—मेलमें अक्सर लड़ाई दंगे हुआ ही करते हैं।

मेवा दिये मेवा मिले, फल फूल दे फल पातले—
 (नज़ीर) जैसा दो वैसा पावो ।
 मेहनत आरामकी कुंजी है—मेहनत करनेसे आराम
 मिलता है ।
 मेहर करे तो मेह बरसाय—ईश्वरकी कृपासे ही
 घुट्ट होतो है ।
 मेहर गई, मुहबत गई, गई नान और पान
 हुकसे मुंह झुलसके, विदा किया मेहमान—
 कजूसकी मेहमानदासीपर क० । दे०, “घाव गया
 घादर गयो ।”
 मेहराई पर दूध नहीं—भूखे पिछाचारपर क० ।
 मेहरियाके आगे सुगन असगुन—खियोंको संभी
 पातमें बहम होता है ।
 मेहरीकी रोक, जानके शोक—हठीलीखोके प्रति क०
 में और मेरा मुंस, तीसरेका मुंह झुलस—
 जो खी अपने पतिके सिवा और दूसरेको नहीं
 देख सकती, उसपर क० ।
 में कय कहूँ कि तेरे चेहरेको मिर्गी आवे है—
 (ज०) आंगनी सफाईकी ओटमें दूसरेकी बुराई
 करनेपर क० ।
 में करूँ तेरी भलाई, तू करे मेरी आँखमें सलाई
 भलाईके बदले बुराई करनेपर क० ।
 मेंकी गईनपर छुरी—अहंकारीको नीचा देखना
 पड़ता है । यह बकरीको भोलीपर क० । दे० ‘मैनाजी’
 में क्या तेरा दबैल हूँ—जब कोई किसीपर अनर्थका
 दबाव डाले, तब क० ।
 में क्या तेरी पट्टीतलेकी हूँ—ऊ० दे० ।
 में तुम्हे चाहूँ और तू काले धाँगको—(ज०) दे०
 “में मरूँ तेरे लिये”
 में तेरी आँखमें उंगली करूँ तू मेरे मुंहमें
 उंगली कर—हर तरहसे दूसरेको नुकसान पहुँचानेपर
 क० । क्योंकि उसकी आँख भी फोड़दी और उसकी
 उंगली भी काट डाली ।
 में तो तेरी लाल पगिया पर भूली रे रघुवा—
 (ज०) बाहरी बनावट देख खोलेंमें फस जाय, तब क० ।
 मैना जो ‘मैना’ कहे, दूध मात नित खायेगी
 बकरी जो ‘में में’ करे, उलटी खाल खिंचायेगी ।

मैना “मैना” कही, मोल भयो दस बीस ।
 बकरीने जो “में” कही, तुरत कटायो सोस ।
 मैना जो में नहीं कहती है उसका आदर होता है
 और मोल भी बढ़ जाता है । और बकरी जो में में
 करती है उसकी खाल खींची जाती है । मैना=पत्नी
 और में नहीं । में में=बकरीकी बोली और अहंकार ।
 तात्पर्य यह कि नम्रतासे चलनेवालेका आदर और
 अहंकारीका विनाश होता है ।
 में क्या उसकी खोर खाई है—(ज०) में क्या
 उसकी दबैल हूँ ।
 में क्या छुरी मारी थी कि कपफन फाड़के बोले—
 जब कोई अच्छी बात कहनेसे पकापक बिगड़ जाय,
 तब क० ।
 में तेरी गुड़ खाया है—जब कोई स्वार्थी
 मनुष्य पहले हीसे अपने स्वार्थ साधनके लिये
 टिप्पस जमान तब उसे दिव्गोके तौरपर क० ।
 एक अजानका चटोरा अपने निचो दील बनियेके यहाँ
 भिजने गया । उसके यहाँ नये गुड़का चटान भाया था,
 जिसे देखकर उसके मुँहसे लार टपकने लगी । कुछ
 दूर चरकर बाँतेकर उसने कहा, मेंने अपने सचमरमें
 तीन बार गुड़ खाया है । बनियेने कहा कय कय ।
 चटोरा बोला कि एक तो जब मैं पैदा हुआ था तब
 मुझे घुट्टीके साथ दिया गया था, दूसरी बार जब मेरा
 कान छेदा गया था तब मुझे खानेकी मिला था और
 तीसरी बार जब यह गया गुड़ खाऊँगा तो आपके
 यहाँ भाया है । बनियेने कहा, यदि मैं तुम्हें अपना गुड़
 खानेके लिये न दूँ तो क्या हो । चटोरेने जवाब दिया
 पच्छा तो ही हो दके सही ।
 में घैरी सुप्रीव पियासा, कारण कौन नाथ मोहि
 मारा—(तुलसी) जहाँ दो अर्थनोंमें एकके साथ सद्-
 ब्यवहार और दूसरेके साथ कुब्यवहार करे, वहाँ क० ।
 में भली कि पनेठा—(ज०) स्पष्ट । पनेठा=पेरीवाला ।
 में भली तू शावाश—जब आपसमें एक दूसरेकी
 तारीफ़ करे, तब क० ।
 में भी हूँ पाँचों सवारोंमें—दे० “पाँचों सवार”
 में मरूँ तेरे लिये, तू मरे चाके लिये—जिसके
 लिये आप प्राण दे और वह किसी दूसरेकी चाहती
 हो, तब क० ।

इसी बातपर महाराज भद्र हरिको बैराग्य ही गया था, जिसका उल्लेख करते हुए उन्होंने अपने मोतिगतकके प्रारंभमें यह श्लोक कहा है :—यां विनयानि सततं मयि सा विरता। सा चान्यमिच्छति जन्म सुखमोक्ष एतः अमरकृतेरि परित्यजति काचिदप्या धिक्तां च तेष सुदमं चादमां च मां च। अर्थात् जिसको मैं सर्वदा विद्या किया करता हूँ सो मुझसे विरक्त है; वह किसी अन्य पुरुषको चाहेती है, जो दूसरी ही स्त्रीसे अनुरक्त है और वह दूसरी स्त्री सुभे प्रसन्न किया चाहती है इसलिये उस हीनोंको हुम्मे और उस कामदेवको भी धिक्कार है जिसको यह प्रेरणा है। इसकी कथा इस प्रकार है :— एक दिन किसी ब्राह्मणने राजा भद्र हरिको एक अमरफल लाकर दिया, राजाने वह फल अपने रानो विंगलको दिया, रामो गहरके कीतवाकसे फंसी घो, उसने उसे कीतवाकको दिया। कीतवाकको उस गहरको एक चिख से मोति घो; उसने वह फल वैद्याको दिया। वैद्या अपने मनसे राजापर आसक्त घो; उसने समझा कि यह फल राजाके ही योग्य है, इसलिये उसने उसे राजाकी भेंट की, राजाने उस फलको देखकर आश्चर्य माना और सब भेद खुजनेपर उनका विषय संसारसे विरक्त ही गया और वह योगी होकर घरसे निकल गये। अन्तमें राजाने ही उस फलकी खा लिया था, जिसके कारण वह अमर हो गये।

मैं ही पाल करा मुष्ट डा, मोहिको मारे लेके डंडा (ज०) साका कदना कपूत लड़केके प्रति।

मैं हूँ ऐसा चतुर सयानो, चतुर भरे मेरे आगे पानी—आत्मप्रशंसा।

मैंदे और शहायको सो लोई—आधा मुँह सफेद और आधा लाल।

मैलका बेल घनाते हैं—जो थोड़ी बातको बहुत बढ़ा कर कहता है, उसे क०।

मैला कपड़ा पातर देह; कुत्ता काटे कौन संदेह—किसीको शरीर और कमजोर पाकर जब झमले फेले जायते हैं, तब क०।

मोको और, न तोको ठौर—जब एक दूसरेसे अत्यन्त प्रेम रखता है, तब क०। जोरू खसमकी लड़ाई पर क०।

मोको न तोको, ले चूहेमें आको—ज०) जब कोई बोज किसीके कामको न हो, तब क०।

मोचीके मोची रहे—जैसेके तैसे ही रहे।

मोजेका घाव मीयां जाने या पांव—जिसका दुःख घड़ी जानता है।

मोटी मोटी रोटी उरीदवाकी दाल—(पू०) दोनों ही जल्दी हज़म नहीं होतीं।

मोतीकी सी आब उतर गई—जब किसीका सम्मान जाता रहे, तब क०।

मोमकी नाक—जिधर चाहो मोड़ दो। भोले भाले आदमी पर क०।

मोम हो तो पिघले कहीं पत्थर भी पिघलता है—कृपण तथा कठोर आदमी पर व्यंगसे क०।

मोर अपना पर देखकर नाचता है, पर पर देखकर रोता है—क्योंकि जेसा सुन्दर मोर होता है वैसा सुन्दर उसका पर नहीं होता। जब कोई सब तरहसे खलो हो पर एक ही दुःख, ऐसा ही जिससे उसका सब खल जाता रहे, तब क०।

दुलहिन सब निज साज संवारि।

लाजो किते कुरूप निहारि ॥

शोग पढागो सब लग्य गारि।

मोर महार पयम सकुचारि ॥

मोर चन्द्रिका स्याम सिर, चढ़ि कत करत शुमान। लखिवी पायन पर लुटति, सुनियत राधा मान—(विहारी) अर्थ स्पष्ट है। जब कोई अनुप्य उच्च स्थान पाकर अभिमान करे, तब उसका मान भंग होता देखकर क०।

मोरनी हार निगल गई—असंभव बात हो गई।

इस मसलका विकास उस कहानीसे है जिसमें कि राजा विक्रमादित्यकी, सादेसायीकी लपसे, अपना राज पाट छोड़कर अन्य भूपकी चाकरों करते हुए वर्ष न किया है। विक्रमादित्य जब अपने मालिकके तोषेखानेका पहरा दे रहे थे तो देखते था है कि चापी रातको मोरनी (जिसकी तुलीर तोषेखानेकी एक दीवारपर टंगी थी) इतसीरसे निकलकर खूटीपर टंगे हारकी निगल गई। संधरे रात्रीकी हारकी खोबे जानेका पता चल गया। तोषेखानेपर कौशल उन्हींका पहरा रहनेके कारण राजाकी टंठका भागी होना पडा।

मोर सूर्यां चिकनियां, पचास बीडा खाय। आगे पीछे रिनिहा, दीवाना बने जाय—

(पू० ज०) कृजदार होकर जो फ्रिजल खर्च करता है, उसपर उसकी स्त्री व्यंगसे कहती है ।

मोरीकी ईंट चौवारे चढ़ी—जब कोई नीच आदमी अच्छे आहदे पर पहुँच जाता है अथवा जब कोई नीच लड़की अच्छेसे ब्याही जाती है, तब क० ।

मोरीके कीड़े मोरीमें ही खुश रहते हैं—स्पष्ट । जब किसी गंदे आदमीको अच्छी तरह खिलाओ पहनाओ और वह उससे खुश न हो और पूर्ववत् गंदा रहना ही पसंद करे, तब क० ।

मोरे कहे उ न संशय जाहों, विधि विपरीत भलाई नाहीं—(तुलसी) जब कोई दूसरेकी हितकर बातको अहितकर समझता है, तब क० ।

मोरे घापके उपजल कपास, मोरे लेखे पड़ल तुसार—(भो०) बाप कितना ही धनो क्यों न हो जाय पर उसकी लड़कीका हिस्सा नहीं होता ।

मोह न नारि नारिके रूपा—(तुलसी) स्त्री खोके रूपपर नहीं मोहती ।

मोहरोकी लूट, कोयलों पर छाप—जो अपनी सारी सम्पत्ति खो डालता और साधारण वस्तुके लिये लड़ाई करता है, उस पर क० । अथवा जो अपनी बहुमूल्य चीज़के नष्ट होनेकी और ध्यान न देकर तुच्छ वस्तुकी विशेष खबरदारी रखता है, तब उस पर क० ।

मोहिं न कछु बांधे कर लाजा, कीन्ह चहाँ निज प्रभु कर काजा—(तुलसी) इन्मान मेघनादसे कहते हैं कि मालिकका काम करने पर अपमान भी हो तो कुछ डर नहीं ।

मोकेका घूला तलवारसे धड़कर—समयपर काम हो जानेसे बहुत फ्रायदा होता है, साधारण बात भी यदि मोकेपर कही जाय तो उसका बहुत असर होता है ।

मौत और गाहकका एतवार नहीं, जाने किस चक आ जाय—(ज्य०) स्पष्ट ।

मौतकी दारू नहीं—जब कोई बहुत दवा करने पर भी अच्छा न हो, तब क० ।

मौतके भागे किसानका घश नहीं चलता—कोई मर जाय उसकी परतावनी करनेके समय क० ।

मौतके आगे सय हारे हैं—क० दे० ।

मौतको आते देर नहीं लगती—स्पष्ट ।

मौत दीजो पर मौर न दीजो—विवाह करनेसे मर जाना अच्छा है ।

मौत सिरपर खे लती है—स्पष्ट

मौन गहे यक दाव पर, मछली लेत उठाय—स्वामी जो अपनी धातमें लगा रहता है, उसपर क० ।

मौनम् सम्भति लक्षणम्—(सं०) चुप रहना सम्भतिका लक्षण है ।

मौनम् सर्वाथ साधनम्—(सं०) चुप रहनेसे सय काम सधता है ।

मौला यार, तो वेड़ा पार—(मु०) ईश्वरकी कृपा हो तो सय काम हो जाय ।

मौला हाथ बड़ाइयां जिस चाहें तिस व—(मु० सं०) ईश्वरकी कृपा जिसपर होती है उसीको देता है ।

मौसीका घर नहीं है—मौसीके घरमें लाड़ बहुत होता है—(भा०) जरा सोर समझकर काम करो ।

म्यांवका ठौर है—सुनिकल काम है । असंभव बात पर क० । नीचे देखो ।

म्यांवको कौन पकड़े—असल भय तो बना ही हुआ है । जो लोग ऊपरसे तो बहुत धीरता दिखाते हैं पर काम पड़ने पर डरके मारे भाग जाते हैं, उन्हें क० ।

इसका निशास इस कहानीसे है—एक दिन छुड़ीने सलाह की कि बिहो हमें जब भीका पाली है तब पकड़के खा लेंतो है इसलिये उसके गलेमें घंटा बांध देना चाहिये जिससे जब वह बांधे तो घंटेको आवाज सुनकर हम लोग भाग जाओ करे । बिहोने कहा मैं उसका घंटे पकड़ लूँगा, बिहोने कहा मैं पकड़ लूँगा, बिहोने काम पकड़ लेनेको कहा, इसी तरह सब अपनी अपनी धीरता बयारने लगे, अन्तमें एक बूढ़े पुरुषने कहा कि उसको "म्यांवको कौन पकड़ेगा ?" इस बातकी सुनते ही सब पकड़ डरके मारे भाग नये । कोई कोई म्यांवका ठौर कौन पकड़ेगा भी क० ।

म्यांवका ठौर—जिस जगहसे म्यांव निकलता है । अर्थात् बिहोका मुंह ।

शब्दाने इमरत लागे राघड़ी, जामें दांत लगे न जायड़ी—(मा०) नदीदेवा धरेका कहना है ।

य

यक मन इत्तरा वहमन अह्म मी वायद—(का०)

एक मन इत्तरके लिये दग मनबुद्धिकी प्रावश्यकता होती है।

यकीन बड़ा रक्षर है—दे० विश्वासा फलदायकः।

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः—

यदि यत्न करनेपर भी काम सिद्ध न हो तो उसमें श्रपना कोई दोष नहीं। तात्पर्य यह कि किसी कामको पूरा करनेके लिये यथेष्ट उद्योग करना चाहिए उसपर भी यदि कार्य सिद्ध न हो तो मनको संतोष रहता है और दुनियाँको भी कहनेकी कोई जगह नहीं रहती। यदि यत्न न करनेसे काम बिगड़ जाय तो मनमें पश्चात्ताप रहता है कि यदि मैं ऐसा करता तो मेरा काम हो जाता और दुनियाँ भी कहती है कि यत्न ही नहीं किया तो काम कहाँसे हो। पूरा श्लोक यह है :—

(१) उद्योगिनं पुरुषसिद्धयुतेषु लभ्यते।

दिवेन देयमिति का पुरुषा भवेति ॥

दिवं निश्चयं कुरु-पीरुष आगम शक्याः।

यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः। (द्वितीयद्वय)

(२) ज्ञानत-हो, जोगिय पुराम और वैयक को

ओरि ओरि अच्छर कविमन को चरौरे।

द्विदि ज्ञानी समामाक राजा को रिभाव जानी

अस बाध छैव नादि सधु न को ही खरी ॥

रामधरि गाऊ भी कूशाक घोरे बागधरि

कूप ताल बाबरी, नवारनमें ही वरी।

दीनबंध दीनानाथ पते गुण लये किरौ

करम न वारी दैत ताकी हो कडा को ॥

यथा नाम तथा गुण—जैसा नाम था वैसा ही निकला।

यथा राजा, तथा प्रजा—जैसा स्वामी वैसा सेवक।

यद्यपि शुद्ध लोक विरुद्ध ना करणीय ना करणीय—वेदाचारसे लोकाचार बढ़कर है।

यम सेनाकी विमल ध्वजा अब जरा दृष्टिमें आती है। करती हुई युद्ध रोगोंसे वैदह धारती जाती है—बुढ़ापेपर क०

यह अंगूर ही खट्टे हैं—दे० “भी गिर-गाया”

इसका विकास इस कहानीसे है—एक भूखी लोमड़ी किसी अंगूरके बागीचेमें गई। वहाँ परके डूब अंगूरके गुच्छों को खटकते देख उसके मुँहमें पानी भर आया और उन्हें लेनेकी कोशिश करने लगी। बहुत उखल कूटके बाद जब वह अंगूरको पाने सकी, तब उसमें छद्म होनेका दोष लगाकर वहाँसे चल पड़ी।

यह फयह नहीं दूररे होत, रसाईके विप्र, कसाई-के कूकर—स्पष्ट। दे० “कसाईका कुत्ता”

यह किसीका भी सगा नहीं—जिसकी किसीसे न यत्ने, उत्तर क०। अविश्वासीको भी क०।

यह कुत्ता दर दर फिरे, और दर दर दुर दुर होय एकहि घरका हो रहे, तो दुर दुर करे न कोय-जो स्थिरचित्तका आदमी नहीं है वह सदा ठोकर खाया करता है।

यह कुत्ता नहीं मानता—पेटपर क०।

यह घोड़ा किसका? जिसका मैं नौकर, तू नौकर किसका? जिसका यह घोड़ा—सूमका नाम न लेना हो, तब क०।

यह जवानी मुझे न भावे, साँग डुलावे इंसी आवे—(ज०) जो व्यर्थके लिए हसता है, उसपर क०।

किसी जानवरको साँग हिलाते देखकर हंसने लगे, तब क०

यह तीन काने और यह पौ चारह—चौपड़ खेलती समय क०। तीन काने सुकसानपर और पौ चारह फायदा होनेपर क०।

यह तू शिक्षा साधकी, निहचे चित्तमें ला। भेद न अपने जीउका, औरोंको बतला—स्पष्ट।

यह दाढ़ी धोखेकी टट्टी है—पालंबीको क०। दाढ़ी देखकर हसे भला आदमी न समझो।

यह दिन सबके वास्तो है—मौतपर क०।

यह दीदे नदीदे हैं—दीदारके—यह आँखें केवल देखना ही चाहती हैं।

यह दुनिया दिन चार है, संगत तेरे जाय। साईंकार खे आसरा, अरु व्यासिह-नेह लगा-संसारकी अस्मिरता दिखाते हुए उससे मुह मोड़-

कर ईश्वरसे प्रीति करनेके लिये क० ।

यह पट्टी नहीं पड़े—किसीकी धनुचित प्रार्थनाको अस्वीकार करनेके समय क० ।

यह बड़ मिट्टा, यह बड़ खट्टा—मनकी अस्थिरता पर क० ।

यह बचन मेरा ठोक है, सांच इसे तू जान, मरे यिन छूटै नहीं, जीसे भूंडी वान—धुरी भादत जन्ममर नहीं छूटी ।

यह बला तो कदमोंसे लगी है—जब कोई ऐसा पीछे पड़े कि किसी तरह भी उससे पियड़ न छूटे, तब क० ।

किसी धर्मिक यज्ञ, एक गवैया भूला भटका या यह चा। वह धर्मिक यज्ञ का कि, खाना, खिलाना तो दूर रहा, कभी न उठे। चादते कुपेकीभी न मारता। गवैयेने उसी बड़ा भादभी जाननामूरा बना। जब गवैया, धर्मिक भी उसके गानेपर रोहकर तारीफ कर रहा था कि धर्मिकों ने भाकर कहा कि इन्हें खाना तैयार है। धर्मिकों ने कहा मेरे सिरमें दूद है धर्मिकों ने एक नौद लेकर खाकर था। यह बहाना कर वह मुंह ठककर सो रहा। गवैया भी उसले इस फरेबकी समझाउसकी परलंगने नीचे घेर तले खैट रहा। दो। घंटे बाद जब धर्मिकों अपने पाक की प्रकारकर पूछा कि धर्मिक क्या बना गई, तो गवैया बोल उठा 'बलैया लैठ' यह बला तो कदमन लगी है; बिना खाना खाये कब जाती है ।

यह बात घड़ घांत, टका घर मेरे : हाथ—सालची मनुष्यको विशेष कर : माहणोंको क०, जो पूजा करते समय बात बातमें दक्षिणा मांगते हैं । याते धनाकर धनपना मतलब साधनेवालेको भों क० ।

यह घात शराफतके धईद है—(सु०) जब कोई असम्भ्यताकी बात कहे वा काम करे, तब क० ।

यह घाते मत कीजियो, कधी न तू अय्य पार ।

जिन घातोंमें रुस जा, साईं और संसार—स्पष्ट।

यह बेल मढ़े खड़ती नजर नहीं आती—जब कोई काम पूरा होते न दिखाई दे या उसकी सफलतामें सन्देह हो, तब क० ।

(१) बी.जी.एम. करकी कथा खाली ए वार, ३३
बीवी रहती है जिनमें आंती देवार ।

क्या ज्ञाथा इससे और सरसबजीध, (२७१)

को बेल मढ़े नहीं चढेगी जिनकार । (२७१)

(२) कौवा ससुमायो सुकुमारि, सरति न चहे भावु मिथारि ।
कष्टे पखाने ज्यों मगमादि, मकी बलि जु चडि है नाहि ।
पैरोसे इ दी लता से ऊपर नहीं चढती ।

यह भी अपने वक्तके हातिम हैं—बड़े सखी वा दाताको क० ।

यह भी किसीने न पूछा कि तेरे मुंहमें कैदांत है जब किसीकी खबर न ली जाय, तब क० । राजाके छपबन्धपर भी क०, जहां जानमालका इतरा नहीं रहता ।

यह भी दाम गुलामों धाये, यह भी धैगन काट पकाये—सब तरहसे बरबाद होनेपर क० ।

यह भी नहीं जानते कि भेड़का मुंह किधर है—सीधेको अगान्दीको या जिसे किसी बातकी खबर न हो, उसे क० ।

यह भी मेरी बात तू, जीव बीच धर ले । गजजा दे गजवालको, पर जीव भेद मत दे—घन सौंप दे, पर मतका भेद किसीको न दे ।

यह भी शिक्षा नाथजी, कह गये, ठोकम ठीक खोवें आदरमानको, दगा लोम अरु भीक—स्पष्ट। यह मत जाने यावरे, कि पाप न पूछे फोये । साईंके दरवारमें, एक दिन लेखों होय—पावका दयइ ईश्वर धवस्य देता है ।

यह मत जीमें जान तू, कि मनुख यड़ा जगवीच याद यिना क्लारकी, है नीचनका नीच—जो मनुष्य ईश्वरकी उपासना नहीं करता वह नीचैति भी नीच है ।

यह मुंह और गाजर ?—यह तुम्हारे खाने लायक नहीं । गाजर बहुत सस्ती चीज है । जानवरोंके खानेकी है, धर्मिकोंके लिये नहीं ।

यह मुंह और मसूरकी दाल ?—मसूरकी दाल संहमी होती है शरीरके खाने लायक नहीं । हैसियतसे अधिक इच्छा रखनेवालेको क० ।

यह मुंह पशु जोगा ?—(५०) ऊ० दे० । पान खाना धर्मिकोंका काम है । जिस मनुष्यने किसीकी निन्दा की हो उसको पान देनेके लिये कहा जाय, तब क०

यह मेरी शिक्षा निपट है—आखी, रोटी, भूल न खा अथकाची—कधी रोटी न खाय।

यह मेरी शिक्षा पिया चित लाओ, परनारीको दूरसे ता हो—(उप०) परघोको दूर ही सेत्याग दे।

यह मेरी शिक्षा मान रे चले, कधी घाट मत चाल अकेला—(उप०) अकेला दूर देखको न जाय।

यह मेरी शिक्षा मान रे चले, वासों मत मिल जुआ जो खेले—(उप०) जुआरीकी संगत न करे।

यह मेरी शिक्षा मान ले धीर, कपटी संग न राखो सीर—(उप०) कपटीसे साका व. व्यवहार न करे।

यह मेरी शिक्षा मान सहेली, पर नर संग न बैठ अकेली—(उप० ज०) पराये पुरुषके पास न बैठे।

यह मेरी खोल मान रे मीता, भीड़ समय मत रह हथ रोता—(उप०) भीड़के समय खाली हाथ न रहे अर्थात् कुछ हथियार जरूर हाथमें रखे।

यह मेरी शिक्षा मान पियारा, सौदा बेच न कधी उधारा—(उप० व्य०) उधार माल न बेचे।

यह रहस्य काहू नहिं जाना—(तुलसी) जब कोई विशेष घटना हो जाय और उसका भेद किसी पर न खुले, तब क०।

यह रास्ता घुरा निकला—जब एकको कोई चीज दी जाय और उसको मिलता देख सभी कोई मांगने लगे, वा कोई ऐसा काम किया जाय जो सदाके लिए नियत हो जाय, तब क० दे० “हुदिया मरनेका दर नहीं”

इसपर एक कहानी है—एक बनिवाँ अपने घरमें रातको नौदम गाफिल पड़ा सोता था कि एक चूड़ा उसके पैरपर ठोकर इससे उधर चला गया। वह नौद से चौक पड़ा और चौख मारकर रोने लगा। उसके रोनेकी आवाज सुन घरके लोग दौड़ आए और उससे पूछा कि तू क्यों रोता है। बनिवाँने कहा एक चूड़ा मेरी कानोपर ठोकर इस तरफसे उस तरफ चला गया, अब इस घरमें मैं नहीं रह सकता। लोगोंने कहा, चूड़ा चला गया तो बंलासे, इसके लिये रोना क्यों। बनिवाँ बोला,

“को तन तन जानि दूहा क्या” रे भारे, मैं चरके

राज बुरी निकली! आज चूड़ा गया है, कमकी साप जागया तो मैं क्यों कर लौता बचंगा।

यह संसार कालका खाजा, जैसा गदहा तैसा राजा—मौत किसीको नहीं छोड़ती।

एक राजाने किसी साधु संतको स्वर्गसे कहा, “जब देही का भाया बन जैसा गदहा वैसा संत” इसके उत्तरमें साधुने कहा, “यह संसार कालका खाजा, जैसा गदहा वैसा राजा” राजा उधर पाकर खिसियानेस हो गये, पर कुछ कह न सके।

यह हज़रते दिल जिधर आय उधर आय—मन जिधर ही लग जाता है उधर ही लग रहता है। यह हमारि अति बड़ि सेवकाई, लेहिं न बासन बसन चुराई—(तुलसी) निषादका कहना रामचन्द्रके प्रति। अवनो दीनता दिखानेके लिये वा ज्ञातिदारी न कर सकनेके लिये क०। नीच यदि कष्ट न दे तो समझना चाहिए कि उसने हमारी बड़ी सेवा की।

यहां अच्छोंके पर जलते हैं—कड़े अफसरके बारेमें क०।

यहां उल्टी गढ़ना बहती है—नयम् विरुद्ध काम पर क०।

यहां किसीका चारा नहीं चलता—मौतके विषयमें क०।

यहां जरूर कुछ दालमें काला है—दे० “कुछ दालमें काला”

यहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाही, जो तर्जनी देखत मरिजाहीं—(तुलसी) लक्ष्मणका कहना परशुरामजीके प्रति। यहां कोई ऐसा नहीं है जो तुम्हारे क्रोधसे डर जाय। ऐसा लोगोंका विश्वास है कि कुम्हड़ेकी बतिया उंगली दिखानेसे सूख जाती है। जब कोई भूला रोब दिखाने बराया चाहे, तब क०।

यहांके याया आदम ही निराले हैं—जहां नियम-विरुद्ध काम हो वहां क०।

यहांके रहे न यहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफसे निराय हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई संतकी नहीं है—हुज्जती वा भूला तर्क करनेवालोंको क०। संतकी=नैयायिक, तर्क्याच जाननेवाला पंडित। दे० “भैरा बैल”

यहांके रहे न यहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफसे निराय हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई संतकी नहीं है—हुज्जती वा भूला तर्क करनेवालोंको क०। संतकी=नैयायिक, तर्क्याच जाननेवाला पंडित। दे० “भैरा बैल”

यहांके रहे न यहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफसे निराय हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई संतकी नहीं है—हुज्जती वा भूला तर्क करनेवालोंको क०। संतकी=नैयायिक, तर्क्याच जाननेवाला पंडित। दे० “भैरा बैल”

यहांके रहे न यहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफसे निराय हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई संतकी नहीं है—हुज्जती वा भूला तर्क करनेवालोंको क०। संतकी=नैयायिक, तर्क्याच जाननेवाला पंडित। दे० “भैरा बैल”

यहांके रहे न यहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफसे निराय हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई संतकी नहीं है—हुज्जती वा भूला तर्क करनेवालोंको क०। संतकी=नैयायिक, तर्क्याच जाननेवाला पंडित। दे० “भैरा बैल”

यहांके रहे न यहांके रहे—इधरका रहे न उधरका अर्थात् दोनों तरफसे निराय हो जाय, उसपर क०।

यहां कोई संतकी नहीं है—हुज्जती वा भूला तर्क करनेवालोंको क०। संतकी=नैयायिक, तर्क्याच जाननेवाला पंडित। दे० “भैरा बैल”

कुछ भादमी एक नावपर सवार होकर कहीं जा रहे थे। सबने मिलकर यह सलाह दी कि मन, बहलानिके लिये कोई कहानी कहनी चाहिये। उनमेंसे एकने कहा कि अगर यहाँपर कोई संतकी न हो तो हम कुछ सुनाएँ। सभीने कहा कि यहाँ कोई नहीं है। मन अपने कहना शुरू किया 'एक पत्ते और टेलीमें बड़ी दीखी थी। जब पानी छोटा तो पत्ता टेलीको ठाँप लेता और हवा चलनेपर देखा पत्तेपर सवार हो जाता।' सुननेवालोंमेंसे एक बोल उठा, 'अगर पानी और हवा एक साथ छोड़े तो क्या होता?' कहानी कहनेवालीने कहा 'मैंने इसी लिये कहा था कि यहाँ कोई संतको न हो'।

यहाँ क्या तेरी नाल गड़ी है—जय कोई जगह न छोड़े, तब क०।

यहाँ तुम्हारी टिकी न लगेगी
यहाँ तुम्हारी टिप्पण नहीं जमेगी
यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गलेगी } यहाँ तुम्हारी
धाँत नहीं च-
लेगी, अर्थात्

हमसे किसी तरहकी आशा न रखो।

यहाँ तो सब हारे हैं (या कान पकड़ते हैं)—
मौतके वारेमें क०।

यहाँ तो हम भी हीरान हैं—मुखिल कामपर सलाह
पूछी जाय, तब क०।

यहाँ परिन्द्रा पर नहीं मार सकता—यहाँ कोई नहीं
या सकता।

यहाँ परिश्रमोंके पर जलते हैं—दे० "यहाँ अर्थदोंके"
काष्ठिदने कहा कि यह लजिये अपना खत वापिस।

कृ० में तो वहाँ परिश्रमोंके भी पर जली जाते ॥

यहाँ फिक्र मीशत है, वहाँ डगडगे हथू आसूदगी
हरफ़ेस्त न यहाँ है न यहाँ है—यहाँ खानेकी
फिक्र वहाँ विचारका दर, छल दुनियाँमें नामको
भी नहीं।

यही खेल में खेलियाँ, धौले आये केस। सासू-
नाल पहिलियाँ, यारों नाल संदेस— (ज० प०)

सासका कहना बहूके प्रति। अर्प संष्ट है।

यही गौ और यही मैदान—कारण और काय-
पर क०।

यही गौना यहुरि नहीं औना—सत्यपर क०

यही भरोसा ठीक है, कि दाता दे तो लूँ।

औरतका कर आसरा, जी तरसावे क्यूँ—

ईश्वरके देनेहीसे पूरा पड़ता है।

यही भला है मीत जो, झूठ कधी ना बोल। वीग
न सोना हो सके, फिरत सुनहरी भोल—भूठी
धात सधी नहीं होती।—रांगपर सोनेका पानी
फेरनेसे सोना नहीं होता।

यहाँ मुँह यही मसाला—जेसेको तसा।

या अल्लाह गौड़ोंमें भी कौन गौड़—

इसका निकास इस कहानीसे है। एक सुघनमान ब्राह्मण-
का वेप बनाकर किसी ब्राह्मणमें ब्राह्मणोंकी पंक्तिमें
जा बैठा। ब्राह्मणोंको छसपर संदेह हुआ तो पूछा
कि तुम कौन हो। अपने कहा, ब्राह्मण। फिर पूछा कौन
ब्राह्मण, उत्तर मिला गौड़। जब पूछा कौन गौड़ तो यह
घमझाके बोल उठा "या ब्रह्मा गौड़ोंमें भी कौन गौड़?"
तब सबको भाव हुआ कि यह सुघनमान है। तावय
यह कि बिना गदावक किये सधा भेद नहीं मिश्रता था
बनावटो धात सङ्कीकृत करने पर जाती है।

या इधर हो या उधर हो—आगा पीछा करने
वाले को क०।

मा करे दर्दमन्द, या करे गुज़मन्द—स्पष्ट।

या किसीको कर रहे, या किलीका हो रहे—
जो मनुष्य किसीसे मिल कर नहीं रहता, अपने
ही मनका काम करता है और दुःख पाता है। उस
पर क०। संघ दो तरहसे ही निभ सकता है या
किलीको अर्पना मित्र बना ले या धाप ही दूसरेका
उपकारी हो जाय।

या कुँड़ीके इस पार, या उस पार—दे० "कूड़ी
के इस पार या उस पार" और दे० "नौ दिन चले
अढ़ाई कोस।"

या खाय उसल्ला, या खाय मुसल्ला—ओसवाल
और मुसलमान दोनों ही बढिया चीज़ खानेके
गौड़ान होते हैं, इसलिये क०। उसल्ला=ओसवाल,
जैनियोंको एक नाति। मुसल्ला=मुसलमान।

या खाय घोड़ा, या खाय रोड़ा—घोड़े और मकान-
नकी मरम्मतके लिये नित्य प्रति वर्ष होता रहता
है, इसलिये क०।

या खुदा हीरे, यचा हाथ पर—स्पष्ट।

या खुदा तू दे, न मैं दूँ—कंगूरका कहना है।

या घरतें कपड़ें न टसो, पिय टूटो तवा और

फूटी कठौती—(नरोत्तम दास) सद्दामासे उनकी
क्षीने कहा है। सदा-दरिद्रिको क०।

या तो भर मांग सेंदुर, या निपट ही रांड—
दे० “भर हाथ चूड़ो पठूँ रांड”

याद भली भगवानकी, तो हो गये भगत कवीर।
झूठे वाकी याद धिन, सय हैं पीर फ़कीर—
स्पष्ट

याद करी भगवानकी, और भली ना कोय।

राजाकी कर चाकरी, जो परजा ताये होय—

ईश्वरकी उपासना सबसे अच्छी है। जो राजाकी
सेवा करता है सब कोई उसका हुक्म-मानते हैं।
इसका उत्तरार्थ सरकारी नौकरीपर भी कहा जा
सकता है।

यादूशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी—

(सं०) जिसकी जैसी भावना रहती है उसे वैसी
सिद्धि मिलती है।

जाकी रहे भावना तैसी, धरि मुरत टखी तिन तैसी।

(तुलसी)

यादृशी शीतला देवी तादृशी वाहनो खरः—

(सं०) एक सी जोड़ी मिलनेपर क०। दे० “जैसी
देवी शीतला”

या वसे गुजर, या रहे ऊजड़—

इसका निकार एक कहातीसे है :—किसी समय दिल्लीके

बादशाह मुहम्मद तुगलक दिल्लीके समीप एक किला

बनवा रहे थे। इसके समीप ही निजामउद्दीन नामक

कोई फ़कीर भी एक कुर्षा खदनाता था। अधिकांश

मजदूर कूरके काममें लग जातेसे किलका काम कुछ

ढोला पड़ गया। इसपर बादशाहने उन्हें सख्त आज्ञा

दी कि एक मजदूर भी फ़कीरके कूरपर काम करनेकी

न जाय। बिचारे गरीब मजदूर दिनभर बादशाहके यहाँ

और रातको फ़कीरके यहाँ काम करने लगे। एक दिन

बादशाह जब किलका काम देखने आये तो उन्होंने बड़-

तसे मजदूरोंको अपने कामपर उकधते पाया। पूरा हाल

मालूम होनेपर बादशाहनेलिल बेचनेवालीसे कहा कि तुम

निजामउद्दीन फ़कीरके हाथ तेल मत बेची। बादशाहने

सोचा था कि ऐसा करनेसे फ़कीरका रातका काम न

हो सकेगा। संयोगवश उसी दिन फ़कीरके कूरमें एक

पानीका सोता निकला। तब उसने मजदूरोंसे कहा

कि तुमसो गिल प्रति रातको काम करनेके लिए भाया

करो, इसी कूरका पानी तेलका काम करेगा। कौसा

उस फ़कीरने कहा था वैया हुआ भी। यह बात बादशा-

हको मालूम होनेपर उन्होंने उसे एक जादूगर समझा

और उसका सिर मारगा। दूसरे दिन एक चादमी एक बड़ा

तरबूज निकार फ़कीरके पास गया और उसने सब बात

कह सुनाई। तुगलकको ऐसी निष्ठ रता देख फ़कीरने

शाप दिया कि तुम्हारे सिरपर बचपात हो और उस

किलेमें गुजरका पास हो अथवा खाली हो पड़ा रहे।

इतना कहते ही चारों ओर काली धटा फिर चारों ओर

एक बच किलेपर गिरा जिससे तुगलकको मरु हो गई।

अभी भी वह किला धंसावस्थामें पड़ा है और इसके कुछ

भागमें गुजरजाति वास करती है।

या वेईमानी तेरा आसरा—जब कोई वेईमानी

करता है, तब क०।

या वेहयाई तेरा आसरा—वे शरम आदमीको क०।

या मारे भादोंकी घाम, या मारे साहजेका काम—

दे० “कांटा बुरा करीलका”।

यार करूँ, प्यार करूँ, चूतड़ तले अंगार धरूँ,

जल जाय तो फया करूँ—कपटी मित्रपर क०। जो

ऊपरसे स्नेह दिखावे, भीतरसे जड़ काटे।

परोचे कार्यें हतल प्रत्येक मियवादिन।

बयंयेता हयं मित्तं विवक्तं मय्ये पयो सुखम् ॥

यारका गुस्ता भतारके ऊपर—(ज०) अष्ट

खियोंके प्रति क०।

यारका दिल यार रखे तो यारका भी राखिये।

यारके घर खीर पक़े तो तनकसी चाखिये।

यारके घर आग लगे तो पड़े पड़े ताकिये—

स्वार्थी मित्रपर क०।

यारकी यारीसे काम या यारके फ़ेलोंसे—

अपने मतलबसे मतलब है।

यारकी न भतारकी—(ज०) यार ही खुश न भतार

ही खुश। इधरकी न उधरकी। धरकी न घाटकी।

जो अपनेको चाहता हो उसे भी खुश न कर सके

और जिसे आप चाहती हो वह भी खुश न हो,

तब क०।

यारको करूँ प्यार, खसमको करूँ भसम,

लड़केको करूँ चटनी—अपराध औरतको क०।

यार ज़िन्दः सोहवत बाकी—जब तक मित्र जीता रहे मिलनेकी उम्मेद रहती है।

यार डोमने किया जुलाहा, तन ढाकनको कपड़ा पाया—स्पष्ट।

यार डोमने किया रंघड़िया और न देखा वीसा हंडिया—रांघड़ एक नीच जातिके राजपूत होते हैं जो चोरीके लिये प्रसिद्ध हैं।

यार डोमने किया सिपाही; बात बातमें करे लड़ाई—स्पष्ट।

यार डोमने कीना कंजर, हर लिया पला पलाया कूकर—स्पष्ट।

यार डोमने कीना गूजर, चुरा चुरा घर कर दिया ऊजड़—स्पष्ट।

यार डोमने कीना नाई, कौड़ी देना थाल मुड़ाई स्पष्ट।

यार डोमने जाट धनाया, सीत दूध इन मुका पाया—स्पष्ट। सीत=दही।

यार डोमने बनियां कीना, दस ले कूज़ सेकड़ा दीना—स्पष्ट।

यार वही जो भीड़में काम थाये—स्पष्ट। भीड़=घिपत्ति।

यार वही है पका, जिसने मन यारका रक्खा—स्पष्ट।

यार चोरी न पीरा दगायाजी—(मु०) मित्रसे मनकी बात छिपाना और पीरोंको शाना उचित नहीं। जब किसीसे मनका सचा हाल कहा जाय, तब क०।

या रिन्द रिन्दे, या फ़तहचन्दे—या फ़कीर हो या बादशाह।

यारी करे' सो याचरे और करके छोड़े कूड़।
याते थोड़ निवाहिये या इससे रहिये दूर—स्पष्ट।

या तो काह रंगमें न रंगिये सुजान पारि।

रंगे तो रंगे ही रहे करे तजनी कहर ॥ (स्वा०)

या संसारमें करम प्रधान—दे० "कर्म प्रधान"

या सुख नींद सो, या माला जपो—स्पष्ट।

या हंसा मोती चुगे' या लंघन करि जाय—स्वामिमानो मानके साथ हो जीवन व्यतीत करते हैं युग फूटे विना नद नही मस्ती—दो मनुष्य यदि एक साथ मिले रहें तो उन्हें कोई नहीं टा सकता। एका बड़ी चीज़ है। दे० "युग टटा"

दी भीचे दक्षिणसे कमारि किये मयूराको चले पाते थे। राहमें लुटेरी ने उन्हें बा घेरा और लगे भाले परदिया चधाने। यहदीनों भौ चट माहीसे छतर परतलके टट्टूर पर ना बैठे और उनसे पूछने लगे कि "दुनियाँ लौल" नार नार डार डार की कर जान्यो कि कभू चौपड़इ खिले हीं। उनमेंसे एक बोला कि क्यों यह पूछनेसे तुम्हारा क्या मतलब। इन्होंने कहा 'कह' जुयइ माफो जातु है'। इस मतौफ़ से वे बहुत रुध डुप, और इन्हें न छूट डंसकर चले गये।

यूं मत मान गुमान कर कि मैं हूं शेर जवान। मुभले इस संसारमें लाखों हैं घलवान—स्पष्ट।

ये दोऊ कहें पाइये, सोनो और सुगन्ध—दे० "सोना और सुगन्ध" दोनों बातें एक साथ नहीं मिलतीं।

येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत—(सं०) नामके भूले मनुष्यको क०। जिस तरह बने नाम होना चाहिये।

इम तानिबे मोहरत है, इमे इभसे बग काम बदनाम गर दीजे तो का कूक नाम न. होमा ?

र

रंगकी खुशी मनका सौदा—रंग अपने मन पसंदका है।

रंग कौपसा नाम महताय कुंवर—(च०) नामके अनुसार रूप न हो, तब क०।

रंगमें भंग पड़ गई—जब किसी शुभ कार्यमें विघ्न

पड़ जाय या सुगीके काममें रंज पैदा हो जाय, तब क०।

रंग रूप देखकर न भूलिये—(व्य०) भड़कीली चीज़ पर क०।

न रंगिं सुवकर भो पाय बाहरकी सुफारंवर।
बक चीनेका धिपकाया है मोरकी मिजारंवर।

रंग है उसीको, जो कहना किसीको—भला

वही है जो किसीकी निन्दा न करे ।

मैं बताऊँ आपको अच्छी की वश पहचान दे ।

जो है खुद बख्शे वह बीरो को नहीं कहते । बुरा ॥ (हाली)

रत्तियोंकी खरची और चक्कीलोंका खरचा पेशगी चाहिये—क्योंकि काम निकल जाने पर पीछे कोई जल्दी नहीं देता ।

रंडीका दिया धव न तब—न यह लोक छधरता है न पसलोक ।

रंडी किसकी जोड़ और भुडुचा किसका साला—ये धपने मतलबके होते हैं ।

रंडीका जोधन रकाबीमें—(१) अच्छी चीजें खानेसे रंडीका यौधन बना रहता है । (२) जिससे माल मिलता है उसीसे खुश रहती हैं । रकाबी रुपया लखनऊमें चलता है ।

रंडीकी फमाई, या खाय धाड़ी, या खाय-गाड़ी—रत्तियोंका पैसा धाड़ियोंको खिलानेमें और गाड़ी भाड़ा देनेमें बहुत खर्च होता है ।

रंडीकी गाली और भूतके पत्थरकी चोट नहीं लगती—स्पष्ट ।

रंडीका मीत पैसा—वी पैसेकी आशना है ।

तवायफकी बिक्रीनेपर, बना है काम चीनेका ।

न उदरेगा सुलगा है, अपठ है जूरके खीनेका ॥

रंडीके घर माँड़े, और आशंकोंके घर फडाके—

रत्तियोंके घर बढिया माल पकेगा तो उनके चाहने-वालोंके यहां कड़ाका होगा । क्योंकि उन्हींका धन इनके यहां खर्च होता है ।

रंडीके नाक न हो तो गु खाय—स्पष्ट ।

रंडी तिरा यार मर गया “कहा”कौनसी गलीका—रंडीके सेकड़ों यार होते हैं ।

रंडी फकीर कर दे दममें शाहे ज़माको, बदफन करे पलकमें इनसान नेक फनको—(नगीर) स्पष्ट ।

रंडी मांगे रुपैया, “लेले मेरी मैया” फकड़ मांगे पैसा, “चलये साले कैसा”—स्पष्ट ।

रंडी मोमकी नाफ होती है—जिधर चाही मोड़ो ।

जायगा ।

रँडुआ गया सगाईको, आपको लाय कि भाईको ।
क्योंकि उसे भी खीकी जरूरत है । पहले धपना मतलब पूरा करे या दूसरेका ।

रकाव पांव हो रहे हैं—चलनेको तैयार हैं, जल्द-याज व उतावलेको क० ।

रख पत रखा पत—दूसरेकी इज्जत रखनेको तो गुम्हारी भी इज्जत रहेगी ।

रख पछतावा कुछ नहीं, बेच पछतावा अच्छा—(ज्य०) माल बेचकर पछिताना अच्छा, रखकर पछिताना अच्छा नहीं ।

रखे सच्चा हाथ तो मुका मिले उधार, विगड़े सेती मीत भी भागे कोस हज़ार—स्पष्ट ।

रखवा तो चर्मोंसे उड़ा दिया तो पशमोंसे—स्वाधीन नौकरका कहना । मुझे रख लें तो अच्छी बात है, निकाल दें तो कुछ परवाह नहीं ।

रखे तो पीत, नहीं पलीत—निहाह सके तो प्रीत रहती है नहीं तो बुराभी होती है ।

रघुकुल रीति सदा बलि आई, प्राण जाहि पर बचन न जाई—(तुलसी) श्री रामचन्द्रका कहना परशुरामके प्रति । दड़ प्रतिज्ञा पर क० । ज्यंगसे हठी मनुष्यको भी क० ।

रज़ीलकी दो, न असराफकी सौ—गाली देने पर क० ।

रज्जा अमीर, भुका फकीर, मुआ पीर, पागल औलिया, अन्या हाफिज़—अबल्यानुसार मुसल-मानोंकी पदवी पर क० । धनवान हुये तो अमीर, भुकड़ होनेपर फकीर, मर गये तो पीर, पागल हो गये तो औलिया, और अन्ध हो गये तो हाफिज़-जी कहलाते हैं ।

रत्तियों जोड़े, तोलों खोचे, वाको लाभ कहाँसे होवे—स्पष्ट ।

रत्ती दान न धीको दिया, देखोरी नमननका दिया... (ज०) देहजमें कुछ न दिया ।

रत्ती देकर मांगे तोला, वाको कौन यतावे थोला

तुम कौन भो' पाटी पढ़े ही लला,

मन खिड़ पै देह क'टाक नही। (घनानंद)

रत्ती भरकी तीन चपाती, छाने बैठे सात
संगाती—(ज०) मुफ्लिसी पर क०।

रत्तीभर धन साथ न जावे, जय तू मरकर
जीव गँवावे—स्पष्ट। दे० 'सब ठाठ'।

रत्ती भर सगाई, न गाड़े भर आशनाई—
वक्त पर रिशतेदार ही काम आता है, दोस्त नहीं।

रन फतह हो गया—लड़ाई जीत ली। हमारा काम
हो गया।

रपट पड़ेकी हर गंगा—जो कभी गंगा नहीं नहाते
उनको क०। दे० "फिसल पड़ेकी"।

रमजानाका नामाज़ी, मुहर्रमका सिपाही—(मु०)
बाकी सालभर कुद्व नहीं, कपटी व छलीको कहते हैं।

रले मिले पांचो रहिये, जान जायपर सच न
काहिये—समयायुक्त काम करने पर क०।

"जो ही बड़े बगारि पीठ तब तैसी दीज" (गिरधर)

दे० "पंच कहे बिल्ली"

रवि जल उखरे कमलको, जारत मारत जात—
(शुद्ध) बने पर जो मित्र रहते हैं वह भी बिगड़े पर
शत्रु हो जाते हैं।

रवि नहिं लखियत धारि मसाल—सूझको कोई
मगाल बाल कर नहीं देखता, गुणवान अपने गुणों-
हीसे प्रसिद्ध हो जाता है।

रविहूँकी इक दिवसमें, तीन अवस्था होय—
एकसी अवस्थाओं किसीकी भी नहीं रहती।

रसको स्वाद जो और छवैये—स्पष्ट।

"बधर मधुर निज च सुत बाल, देहु नेकु मांगत हैं लाल,
लोग लखि मगते न नभैये, रसको स्वाद जो और छवैये।

रस मारे रसायन बनता है—(१) पारा मारनेसे
चांदी वा सोना बनता है। (२) रिपुओंको दमन
करनेसे मनुष्य सिद्ध हो जाता है।

पिय खात भरै बर सुनारो खीकि कै साज सिंगार लतारो
पायो लाल कहे सखि लोय। मारे रसकि रसायन होय॥

(विचित पाय)

रसमें चिप फैला दिया—दे० "रामें भांग।"

रससे मरे तो चिप क्यों दीजे—दे० "गुड़ दिये

मरे....."

रसोई और रसायन बराबर—दोनोंका बनाना
मुश्किल है, हरयकको नहीं आता।

रसोईके विप्र कसाईके कुत्ते—यह दुबले नहीं होते।

यह कब ह' नहिं दूबरे होत,

रसोईके विप्र कसाईके कुत्तर।

रस्सीका सांप यन गया—जब थोड़ी बातका बहुत
विस्तार हो जाय, तब क०।

रस्सी जल गई पेंठन न गई (वा चल न गया)—
जब कोई मनुष्य धर्मोद होनेपर भी अपनी भ्रान न
छोड़े, तब क०।

चपतक खल्ले दिमार्गे मीखलत न गया,

सीदाणे गीएर सुखलमल न गया।

हे कुत्रमें भी सुम्हे तेरी शुनपूजाका ध्यान,

गो रसोई जल गई मगर धन न गया। (रंजु)

रहनेको नहीं भोंपड़ी मियां मुहल्लेदार—हैसियत
या गुणके विरुद्ध नाम रहने पर क०।

रहमान जोड़े पली पली, सैतान लुड़ावे कुप्पा—
जब घरमें एक धार्मिक धन सचय करे और दूसरा
उड़ावे, तब क०। दे० "तेली जोड़े....." जब
गृहस्थीमें कोई स्त्री धोत्र श्रद्धा तरह संवय करके
रक्खे और खुदे बिल्ली उसे ब्रारार क दे, तब भी कही
जा सकती है।

रहिमन मोहि न सोहाय, अमिय पियावे मान
बिनु। जो विष देय बुलाय, मान सहित मरयो
भलो—स्पष्ट।

रहिमन रहिलाको भली जो परतै मनलाय,
परसत मन मैला करै वह मैदा जरि जाय—
ऊ० दे०। रहिला=चना।

रहिमानको रहिमान, शैतानको शैतान—अच्छेको
अच्छा और बुरेको बुरा मिलता है।

रही बात थोड़ी, जीन लगाम थोड़ी—जब काम कुद्व
भी न हुआ हो और करनेवाला उसे पूरा समझे,
तब क०। कहनेका तात्पर्य यह कि अभी हुआ ही
क्या है अर्थात् कुद्व भी नहीं हुआ।

रहे अंत मोचीके मोची—जैसे ये बैसे ही
अनेक कष्ट सहनेपर भी अवस्था न बदलें, तब क०।

रहेके भुसाहुल नाम लेवेके धरोहर—(पू० ज०)

हैसियतके विरुद्ध नाम हो, तब क० ।

रहेगा बांस न बाजेगी बांसुरी—कारण ही नहीं

रहेगा तो कार्य कैसे होगा ।

रहे भ्रौंपड़ीमें हवाब देखे महलोंका—(च०) ऊंची
धार्काज्ञापर क० ।

रहे तो टंकेसे, जाय तो जड़ वेलसे—वेइइजतीसे
रहनेकी अपेक्षा मरना भला है ।

रहे महमूदके और अंडे देवे मसूदके—जब खाय
एकका और काम करे दूसरेका, तब क० ।

राईको पर्वत करे और पर्वतको करे राई—ईश्वरकी
कुदरतपर क० ।

चाहे सुमेरको छार करे, अरु छारको चाहे सुमेर बनावे ।
चाहे सो रंकको राउ करे, अरु राउको रागिं हार
फिरावे । रीति यही कदधानिधिकी, कवि देव कई
बिनती मोहिं भावे । चींटीके पाषमें बांध गयेदहिं, चाहे
समुद्रके पार लगावे । (देव)

राखनहार भये भुजचार, तो क्या विगड़े भुज
दोके विगाड़े—ईश्वर जिसका सहायक है, उसे मनुष्य
हानि नहीं पहुंचा सकता ।

राग तालका हाल न जाने, दोनों हाथ मजोरा—
वाहरी दिखावे पर क० ।

रागी, चागी, पारखी, नारी और नियात्र । इन
पांचोंके गुरु सही, उपजत अंग सुभाव—गाना,
घोड़ेकी सवारी, रत्न परीक्षा, नाड़ीका ज्ञान और
न्याय करना, यद्यपि इन पांचों विद्याओंके गुरु हैं
तथापि यह स्वभावसे ही उत्पन्न होती हैं अर्थात्
यदि ईश्वरकी देन न हो तो सिखानेसे जल्दी नहीं
प्राप्ती । कोई कोई “इन पांचोंके गुरु नहीं” भी क० ।

न्यायपर एक दृष्टान्त है कि—एक दिन महाराशाधिकमा-
दित्यके यज्ञ चार मनुष्य चौरोंके सुभामलेमें पकड़े आवे ।
राजाने उनमेंसे एकको पास बुला इतना कुछ छोड़ दिया
कि तुम्हारे लायक यह काम न था । दूसरेकी पांच,
चार गालियां दे निकाल दिया । तीसरेकी दस चौस धील
जूतियां खगवा धके दिलवा निकलवा दिया । चौथेकी
नाक और कान कटवा काला मुंछ कर गंधेपर चढ़वा
गहर बाहर करवाया । यह इन मुंछ देख हर एक

पूरा कि तुम्हारे दिलमें क्या है सो कहे । उन्होंने हाथ
जोड़कर कहा, धर्मावतार आपने न्याय तो समझ ही कर
किया होगा पर इसका भेद हमरप न खुला कि एक ही
काममें चार मनुष्योंको भिन्न भिन्न सजाएं क्यों दी गईं ।
राजाने कहा कि तुम चारोंके पीछे घर लगाकर यह
खबर भंगवाओ कि वह घर जाकर क्या करते हैं ।
तीसरे दिन जब वह भोग खबर लगाकर राजाके समीप
आये तब राजाने सब दरबारियोंके सामने पूछा कि कौसे
किसने घर आकर क्या किया । दूसरेने कहा जिसे आपने
कहा था कि यह काम तुम्हारे लायक नहीं है वह तो
घर जाकर लहर खाके मर गया । दूसरा जिसे आपने
गालियां दी थीं शहर छोड़के चला गया । तीसरा जिसे
घोड़ी बहुत मार पड़ी थी अभी तक घरसे नहीं निकलता
चौथेकी कूफ न पूछिये । जब वह नाक कान कटाये
काला मुंछ किये गंधेपर चढ़े जा रहा था और दो चार
सौ तमाशगौर भी चारों तरफसे लानत मजामन करते
जाते थे तब उसको जोड़ भी सामने आ गईं । उसने
उसे पास बुलाकर सबके देखते कहा कि तू घर जाकर
नहानेका पानी जलद गरम कर रख थोड़ा शहर फिरना
वाकी है अभी फिरकर इन मूर्खियोंके हाथसे छुटकर
बला भाऊंगा । राजाने दरबारियोंके कहा ‘कौसे अब
तो इस भेदकी समझे ?’ दरबारियोंने हाथ जोड़कर
कहा, ‘एवोन्याय आपका न्याय आप हीसे बने दूसरेकी
क्या सामर्थ्य जो इसमें दम मारे’ ।

रांघड़ गुजरदो, कुत्ता चिल्ली दो । ये चारों ना
हों तो खुले किवाड़ों सी—रांघड़ और गुजर बहुत
चोटें होते हैं, उन्हींपर क० ।

रांड और खांडका यौवन रातको—स्पष्ट ।

रांडका सांड और छिनालका छिनरा—विध-
वाका लड़का खुलासा और छिनालका लड़का छिपके
रहता है ।

रांडका सांड सौदागरका घोड़ा, खाय बहुत
चले थोड़ा—स्पष्ट ।

रांडकी गांठमें मालका टूफ—विधवा निरवलम्ब
रहती है ।

रांडके आगे गाली क्या—एहागनके लिये रांडसे
यदकर कोई गाली नहीं ।

काम सदा चलता रहे, कमी नहीं रहे, उसपर क० ।
रांडको वेटीका बल, रंडुयेको रूपयेका बल—
स्पष्ट ।

रांड सांड विगड़े घुरे—नीचे देखो ।

रांड सांड अघ नकटा भैसा, ये विगड़े तो होवे
कैसा—इन तीनोंको न देखे । जब कभी उहँ और
मूर्ख आदमी विरुद्ध हो जाता है और, समझानेपर
नहीं समझता, तब क० ।

रांड भइलके सुख कौन, जो निचिन्त सोअल न—
(पू० ज०) स्पष्ट ।

रांड रोवे, कुंवारी रोवे, साथरलगे सत खसमी
रोवे—सहायभृतिकी अधिकतापर क० ।

ध्यान श्री कौंसे मंदमाल व्रज कामन्दकी ।

। रांड रोवे सेर बरिचानी राबै सात सेर ॥ (उ० प०)

रांड सांड सीढ़ी सन्यासी, इनसे घचे तो रुचे
काशी—काश्यामें रहना हो तो इन चारोंसे होगियार
रहे । काश्यामें सीढ़ियां बहुत ऊंची और पत्थरकी
होती हैं जिनपरसे गिरनेका सदैव डर रहता है ।

रांडसे घड़फर कोसना नहीं—(ज०) दे० “रांडके
आगे माली क्या !”

रांड तो बहुतेरी रहें, जो रंडुये रहने दें—
रंडुओंके ही सख्य विधवाओंका चरित्र विगड़ता
है । यदि घोरीका माल धरतीनेवाले न रहें तो धोर
भी न रहें ।

रांधे सो रानी, भरे सो लौंडी—स्तोई बनाना
मासकनिका और पानो भरना दाईका काम है ।

राचेका पान घिराचेकी मेंहदी—यदि मानसे दिया
जाय तो पान है नहीं तो मेंहदीके समान है ।

राज करते सेरभर, भीख मंगते सेर । तुलसी
राम प्रताप ते, नहीं सेरमें फेर—स्पष्ट ।

राजका राजमें, व्याजका व्याजमें, नाजका
नाजमें—(व्य०) जिस कामको कमाई होती है उसी
काममें खर्च होती है । राजका धन राजमें, सराफका
कड़ देनेमें और शल्लेवालेका शल्लेमें लगता है ।

राज नहीं है पोपा दाईका—जब कोई धांग धांगी
करे, तब क० ।

राजपूत, जाट, मूसलके धनुर्ही । टूट जात नवे
नहिं कवहीं—राजपूत और जाट मूसलके धनुषके
तुल्य हैं जो झुकानेसे झुकता नहीं, टट भले ही
जाय । दोनोंकी ज़िद्द और कट्टरपनपर क० ।

राजईस धिनको फरे, छीर नीरको दोय—
(वृन्द) बिना पहिचानने वालेके अच्छे घुरे थलग
थलग नहीं हो सक्ते ।

“संघट्ट व्याग न विनु पहिचाने” (तुलसी)

राजा आगे राज, पीछे चलनी न छाज—
विषवासे कहते हैं ।

राजा करे सो न्याव, पासा पड़े सो दाँव—
दे० “पासा पड़े सो दाँव” । पासा पड़े सो दाँव है
राजा करे सो न्याव । (पमाकर)

राजाका दान, प्रजाका स्तान—दोनों बराबर है,
सबको अपनी सामर्थके अनुसार सुख-काय करना
चाहिये ।

राजाका दूजा, बकरीका तोजा, दोनों खराय—
राज्यका अधिकारी पहिला लड़का ही होता है और
बकरीके दोही धन होते हैं जो दो बच्चे पीते हैं ।

राजको दूमरो, छेरीको तीसरो, बेडकी मूसरो । खासर
बूसा ।

राजाका परचाना, और साँपका खिलाना बरा-
बर है—दोनों जोखिमके काम हैं ।

राजा किसके पाहुने, और जोगी किसके मीन—
राजा और जोगी किसीके मीत नहीं होते ।

सुधाकिरसे कोई भी करता है मीत ।

मसल है कि जोगी इधे किसके मीत । (मीरचमर)

इनकी दोहो पर बरबास नहीं करमा चाहिये ।

राजाकी घेटी, करमोंकी हेटी—ये जोड़ विवाह
पर क० ।

राजाकी सभा नकमें जाय—जब किसीके पास
बैठकर लोग सुधामदकी बातें करें और उसके प्रसन्न
करनेके लिये झूठ बोलें, तब क० ।

राजाके घर काज और हमारे घर ठक ठक—
राजा और जमींदारोंके यहां ब्याह यादी होनेपर
उसके खर्चके लिये प्रजासे ज़बर्दस्ती कर वसूल किया
जाता है ।

राजाके घर आई, और रानी कहलाई—जिसे राजा

माने वही रानी हो जाती है ।

कहा भयो मोदि कुल नहिं धार ।

निधि दिन पिया करत बहु धार ॥

सुनो कलि जो लोग बखानो ।

राजा मानो सीई रानी ॥ (प्रेम गर्वता लो० र० को०)

राजाके घर मोतियोंका काल—जब किलीके यहां कोई चीज बहुतसी होनेकी उम्मेद हो पर बिचकुल न दिखाई पड़े वा किसीसे वैसी चीज मांगे जो उसके यहां बहुत सी हो पर वह न दे, और यह कह दे कि मेरे यहां नहीं है, तब क० ।

राजा झूठ और रानी होय—जिसपर राजा वा अमीरकी निगाह हो, वही ऊंचे पदपर पहुँच जाय ।

राजा छोड़े नगरी जो चाहे सो लेवे—जिस चीजसे अपना कोई प्रयोजन न रहे, उसे जिसका जो चाहे ले ले ।

कबो चहत परदेय तिय, देखि रमनकी मेघ ।

राजा छोड़े नगरकी, बिदि भाषे सो खेइ ।

(अनुभवना । लो० र० को०)

बुलबुलने भाषियाना चम से छटा दिया,

उधकी बलासि वू रई वा इना रई ।

राजा जोगी किसके मीत—राजा और जोगी बे-मरब्वत होते हैं ।

राजा नटे तो किसको कहे—जब ईसाफ़ करने-वाला ही बेईमान हो जाय, तो ईसाफ़ कौन करे ।

राजा नलपर विपता पड़ी, भूती मछली जलमें तरी जब मनुष्य पर विपत्ति पड़ती है तो सभी घातें उखटी होती हैं । जब राजा नल अपना राज जपमें हार रानी दमयन्तीको साथ ले जंगलमें चले आये, और वहां कुछ फल फल भी खानेको न मिला, तो छुधासे व्याकुल हो उन्होंने तालाबमेंसे मछली पकड़ी, और उसको आगमें भूना । जब रानी उसकी राख धोनेके लिये तालाबमें ले गई, तो वह भूनी मछली पानीमें चल पड़ी ।

राजा न्याय न करेगा तो घर तो आने देगा—काम हो चाहे न हो, पर उद्योग जरूर करना चाहिये । आलसीको काम करनेके लिये उत्साह दिलानेको क० ।

होता है ।

राजा वेटा किसका, जो खिलावे उसका—(ज०) छोटे बच्चोंको खिलाते समय क० ।

राजा भीमकी कज़ा, रामकी रज़ा—भीम भी ईश्वरकी इच्छा हीसे मेरे हैं ।

राजा माने सो रानी, छानी बीनती आनी—दे०, “राजाके घर आई” ।

राजा रकवे रानी खावे—पुरुष कमावे स्त्री खर्च करे, तब क० ।

राजा राज परजा चैन—जब न्यायी राजा होता है, तो प्रजा सुखसे रहती है ।

राजा रुडेगा, अपनी नगरी लेगा—जब कोई आदमी अपनी स्वाधीनता रखनेके लिये सब तरहके कष्ट सहनेको तैयार हो जाता है, तब क० ।

राजा हैं हम उसीमें जिसमें तेरी रज़ा है, यहाँ यों भी वाहवा है और वों भी वाहवा है—(नजीर) जब कोई हर तरहसे दूसरेके कहने मुताबिक चलनेको तैयार हो तब क० ।

रातकी मालज़ादी, और दिनकी खूजादी—रातको बेया और दिनको गृहस्थियन ।

रात गई, चात गई—वक्त भी खराब हुआ और कुछ काम भी नहीं हुआ ।

रात थोड़ी, कशानी बड़ी—समय थोड़ा है पर काम बहुत करना है । जब कोई व्यर्थकी बातें करके समय नष्ट करे वा काममें विग्र ढाले, तब क० ।

थोड़ी है रात और कशानी बहुत बड़ी, झाली निकल सकेंगे न दिलके गुबार बस । (झाली)

रात नर्वदा उतरी, सुबह फूँआ देख डरी—(ज०) स्त्री चरित्र पर क० ।

दिश काक रताहोता रात्रीसरति भगंडाम ।

रात पड़ी वूँद, नाम रखवा महमूँद—(सु० ज०) समझ लिया कि लड़का ही होगा । जब कोई काम होनेसे पहिले उसका नतीजा अपने मन मुताबिक निकाल बैठे, तब क० ।

रात पड़े उपासी, दिनको खोजे दासी—गरीबी पर क० ।

राजा नलपर विपता पड़ी, भूती मछली जलमें तरी भी नटे तो किसको कहे—जब ईसाफ़ करने-वाला ही बेईमान हो जाय, तो ईसाफ़ कौन करे ।

— जिस कामके लिये आइम्बर किया जाय वह काम ही न हो, तय क० । लड़का होनेपर बहुत खुशी हुई पर उसमें लड़केका कोई चिन्ह न पाया ।

रात मांका पेट—निद्राके समय सय कष्ट भूल जाते हैं ।

दिन म्यतीत दुःख दर्दमें, चार पहर उतपात ।

विपत्ती मरि जाते सब, को होती मरि रात ॥ (जागरोदास)

रात रातका पड़ रहना, भोर भये चल देना—
सुसाज़िर वा फ़कीरको क० ।

रात हटाई, तड़के ही आई, भूख वेदना धुरो रे भाई
स्पष्ट ।

रातों काता कातनां, सिरपर नहीं नातना—
(ज०) विफलतापर क० ।

रातों रोई एक ही भूया—सारी रात कोसां पर एक
ही मरा । बहुत परिश्रम करनेपर भी थोड़ा ही लाभ
हो, तत्र क० ।

राधे राधे रटत हैं, भाक ढाक अरु कौर । तुलसी
या घृज भूमिमें, कहा राम सों चैर—(तुलसी) स्पष्ट ।

तुलसीदासजी रामचन्द्रजीके परम भक्त थे । एक बार वह
नय राजी गये । वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि यहाँका
प्रत्येक मनुष्य केवल श्रीराधेराजकी ही चर्चा करता है ।
रामचन्द्रजीका कोई नाम भी नहीं लेता । इस बातसे
उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने उक्त दोषा कहा—
इसके बाद जब वह एक मंदिरमें पहुँचे तो उन्होंने
श्रीराधेराजकी दिव्य मूर्ति देखी और बड़े विनीत भावसे यह
दोषा कहा—

“कहा कहीं हवि भ्राजकी, मले बने ही नाय ।

तुलसी मन्नाक जय भवे, धनुषबाण हो हाथ ॥”

तुलसीदासजीकी यह श्रावना सुन श्रीराधेराजने धनुषबाण
धारण कर लिया । श्रीराधेराजकी य हवि देखकर तुलसी
दासजी बड़े प्रसन्न हुए और यह दोषा कहा—

“कित सुखी कित पदका, कित गोपिनकी साथ ।

तुलसीदासकी कारने नाय भये रघुनाथ ॥”

रानीको कौन कहे “आगा टक ?”—(ज०)
यह श्रावनीका दोष कोई ठरसे उसके मुँहपर नहीं
कहता ।

रानीकी राजा प्यारा, कानीकी काना प्यारा—

(१) अपनी अपनी चीज़ सबको प्यारी लगती है

(२) जैसेको वैसा ही मिलता है ।

रानी गईं हाट, लाईं रीभकर चक्कीके पाट—

क्योंकि वह नहीं जानती थी कि अनाज कैसे पीसा
जाता है । जो चीज़ न देखी हो उसे ही देखनेकी
इच्छा होती है ।

रानी दीवानी हुई, औरोंको पत्थर अपनोंको
लड्डू मारकर—स्यान-पागलपर क० ।

रानी रूठेगी अपना सोहाना लेगी, क्या किसीका
माग लेगी—दे० “राजा स्टेगा” । मालिक स्टेगा
अपनी नौकरी लेगा ।

रामके न रहीमके—जो मनुष्य किसी अर्थका न हो,
उसे क० ।

बानी वेद पानके न, कलमा कुराणके न

रामरहिमानके न, अत्रय गंभीरके ॥

रामके भक्त काठके गुड़िया, दिनभर ठक ठक
रातके घुसकुरिया—(भो०) वैष्णव पुजारियोंपर
ताना है ।

राम खवरिया लेवे करिहैं, दया लगे कछु देवे
करिहैं—स्पष्ट ।

राम चरित जे सुनत अघाहीं, रस विशेष जाना
तिन नाहीं—(तुलसी०) स्पष्ट ।

राम छोड़ो अयोध्या मन चाहे सो लेय—दे०
“राजा छोड़ीनाराही”

रामजीका आसरा है—जिसके लड़का नहीं होता वह
कहता है ।

रामजीकी माया, कहीं धूप कहीं छाया—
ईश्वरकी कुदरतपर क० ।

राम भरोखे बैठके, सबका मुजरा लेत । जैसी
जाकी चाकरी, वैसा चाको देत—जैसी सेवा
करता है वैसा फल पाता है ।

एक राजाने किसी कंगाल ब्राह्मणसे पूछा कि तुम्हें और
तुम्हें खानेकी कौन देता है, उसने जवाब दिया कि पर-
मेश्वर । फिर पूछा इसका क्या कारण कि तुम्हें इतना
अधिक देता है और तुम्हें इतना कम । जिसके उत्तरमें
ब्राह्मणने उक्त दोषा कहा ।

राम न मारे आपे मरे, देय कुमति चढ़ाय—
(पू०) स्पष्ट ।

जाको भु दासच दुख देहों, ताको मति पहिले कर लेहों ।

(तुलसी)

राम नाम धाराधियो, तुलसी वृथा न जाय ।
लरिकाईको पैरिबो आगे होत सहाय—रामकी
उपासना खाली नहीं जाती, बक्त पर ज़रूर काम
आती है

राम नामकी लूट है, लूट सके तो लूट । अंत-
काल पछतायगा प्रान जायंगे छूट—स्पष्ट ।

राम नामके भालसी, भोजनको तैय्यार—
हराम डील या जंगरचोरको क० ।

राम नामके कारने, सब धन डारै खोय ।
मूरख जाने के गया, दिन दिन दूना होय—दान
करनेको उत्तेजित करनेके लिए क० ।

राम नाम मणि दीप धरू, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार—

(१) देहलीपर दीया रखनेसे जैसे घरके भीतर बाहर
दोनों तरफ चांदना होता है उसी तरह रामका नाम
मुंहसे लेनेसे आत्मा शुद्ध होती है, और संसारमें
यश होता है । (२) बुद्धिमान दो भगड्डालुओंके
बीचमें पड़कर उनका भगड्डा मिटा देता है ।

सुबुध बीष परि दुई न कौ, हरत कलह रसपर ।
कारत देहरी दीप ली, घर आगन तम दूर ॥ (इन्द्र)

राम नाम लड़ आ गोपाल नाम धी हरिका
नाम मिथी तू घोल घोल पो—स्पष्ट ।

राम नाम ले सो धक्का खावे, चूतड़ हिलावे सो
टक्का पावे—(ज०) देश्याओंको धन मिलता है सब-
रित्र खियोंकी कोई बात नहीं पूछता ।

राम नाम सत्य है—ईश्वरका नाम ही सचा है ।
हिन्दुओंमें मुरदा ले जाते समय कहते हैं ।

राम नाम सुमिरन करो, यही नाम है तंत ।
तीनलोक चौदह भुवन, छांय रहे भगवंत—स्पष्ट ।
राम नाम शमशेर पकड़ लो, कृष्ण कटारा
बांध लिया । दया धर्मकी ढाल बना ली, यमका
द्वारा जीत लिया—स्पष्ट ।

राम बढ़ाये सो बढ़े, बलकर बढ़ा न कोय ।
बल करके रावण बढ़ा, छिनमें डारा खोय—
स्पष्ट ।

राम बने ही ती बने जैह बिगरी वनत वनत वन
जाय—ईश्वर चाहे तो बिगड़ी बात भी बन जाती है ।

राम बिना दुख कौन हरे ? बरखा बिन सागर
कौन भरे ? लछमी बिन धादर कौन करे ? माता
बिन भोजन कौन धरे ?—स्पष्ट ।

राम बिमुख अपना नहिं कोई—जो ईश्वरसे विमुख
है उसका सगा कोई नहीं होता ।

राम मिलाई जोड़ी एक, अंधा एक कोढी—
जब दो दुष्टजनोंका आपसमें घना सम्बन्ध हो,
तब क० ।

राम राम कहते रहो, जब लग घटमें प्रान ।
कबहुं तो दीन दयालके, भनक पड़ेगी कान—
राम राम स्टे जाओ कमी न कमी उनवाई ज़रूर
होगी ।

राम राम कहो मन मेरे, क्षणमें पाप कटेंगे तेरे—
स्पष्ट ।

राम राम जपना पराया माल अपना—पालंडी
और ब गुला भगतको क० ।

“पू का कि ग गूल क्या है, कइने लगे गुदजी,
बस राम राम जपना, चेलोंका माल अपना” (पद्मपर)

राम राममें टेंटे—जहां कोई अच्छी बात होती हो
वहां बेहूदी बात कहनेपर क० ।

राम राम सत्य है सबकी यही गत्य है—
मरनेपर क० ।

राम राम लिख दे शिलातर जायगी, भज ले
सीताराम मुक्ति हो जायगी—स्पष्ट । जब समुद्र
पार होनेके लिये बन्दरोंने सेतु बांधा था, तब
शिलाघोंपर राम नाम लिखा था जिसके कारण
वह तैरती रही थीं ।

राम राम सब कोई कहे, दशरथ कहे न कोय ।
एक बार दशरथ कहे, कोटि यह फल होय—
रामके पिता होनेके कारण दशरथ उनसे बड़े हैं,
परन्तु उनका कोई स्मरण नहीं करता ।

राम राम कहोगे, तो सदा सुखी रहोगे । रामको
बिसारोगे, तो जीती वाजी हारोगे—स्पष्ट ।

राम सहाय करे तो कोई क्या कर सके—
ईश्वर जिसका सहायक है उसका कोई कुछ नहीं
बिगाड़ सकता ।

राम सो रहोम—दोनों एक ही हैं । हिन्दू मुसलमा-

नौके पकेपर क० ।

रामहिं केवल प्रेम पियारा, जानि लेहि जे जान-
निहारा—रामको केवल प्रेम ही प्यारा है, नेम नहीं ।

कूटे कूटे सिररीके चमूटे कर खाये राम ।

नेम सौं चचाये पै न प्रेम सौं चचाये है ॥ (रसिक विहारी)

राशनका साला—उस अत्याचार करनेवालेको क०
जिसका हिमायती कोई बड़ा आदमी हो ।

रावनने जय जनम लिया था, बीस भुजा दस
सोस । माय अचंभे हो रही, किस मुंहमें दूँ बीस
स्पष्ट ।

राव न रावड़ी, ले उठे घावड़ी—(मा०) मैंने एक
बात भी नहीं बही और उसने तरवार खींच ली ।
बिना कुछ कहे जय कोई लड़केकी तैयार हो जाय,
तब क० ।

रास्तगो मुफ़लिस गजलिसमें भूठा—गरीब
आदमी सवा हो तो भी आदालतमें भूठा टहरता है
क्योंकि रखेवाला उसके विपन्नमें लोगोंको रियासत
देकर भूटी गवाही दिला देता है ।

रास्तेमें हने और आंख दिखावे—दे० “बोरी और
सीनाजोरी”

राहकी यात है—ठीक यातपर क० ।

राह छोड़ कुराह चले, तुरत धोखा खाय—
स्पष्ट ।

राह पड़े जानिये, या घाह पड़े जानिये—(पं०)
संभ करनेसे या व्यवहार पड़नेसे आदमी पहिचाना
जाता है ।

राह घताये तो भागे चल—नेताग्रिक प्रति क०
रिज़क न पल्ले बांधते, पंछी और दरवेश ।
जिनका तकिया रव्य है, उनको रिज़क हमेशा—
ये दोनों ईश्वरपर निर्भर रहते हैं इससे इन्हें रोज़ीकी
फ़िक्र नहीं रहती ।

रिज़क है न मौत—कमनसोचको क० ।

रिज़ाला मस्त हुआ, खुदाको भूल गया—
स्पष्ट ।

रिज़ालेका लट्टे-बदशासल और वेहदा आदमीको क० ।
रिज़ालेके नाखून हुए—सतानेका सामान मिला ।

रिज़ालेकी जोरुकी सदा तलाक़—(मु०) लुच्चेकी
खी रोज़ त्यागी जाती है ।

रिज़ालोंकी दोस्ती पानीकी लकीर, शरीफ़ोंकी
दोस्ती पत्थरकी लकीर—पानीकी लकीर तुरत मिट
जाती है और पत्थरकी लकीर कभी मिटनेकी नहीं
रिमिकिम परसे मेह ऊपर हो रावटी, कामिन
करे किलोल पांय बिच पावटी । और फूलोंकी
सेज पंखोंका डोलना, इतना दे करतार तो
फिर क्या बोलना—बिषयी लोग चाहते हैं ।

रिशवतखोर खुदाका चोर } रिशवत लेना
रिशवतखोर जहन्नुमी } पाप है ।

रियासत बर्गर सियासत नहीं होती—बिना रौब
(डर) ज़मींदारी नहीं चल सकती ।

रीछका एक बाल भी बहुत है—रीछका बाल
लड़कोंको नज़र न लगनेके लिये बांध देते हैं ।

रीझेंगे तो पत्थर ही मारेंगे—गुश होंगे तो भी
बुराई ही करेंगे । दुष्ट प्रकृतिवाले मनुष्यको क० ।

रीतकी कौड़ी न ऊत बिलासकी ढेरों—मूखोंकी
ढेरोंते हक़की एक कौड़ी भी अच्छी ।

रीते भरै भरे ढुलकाधे, मेहर करे तो फिर भर
जावे—ईश्वरकी मज़ी पर क० ।

एक बड़ा सोदागर किसी कमाल कुकीरका पैना हुआ
और पात्रों पहर उनकी खिदमतमें हाज़िर रहने लगा ।
ईश्वरकी इच्छासे वह मज़ीके भीतर उसका ऐसा काम
बिगड़ा कि खाने पीनेसे भी तंग आ गया । उसे उदास
देख फकीर साहबने कहा वू इतना फ़िक्र क्यों करता है,
वया वूने यह मसल नहीं चुनी ।

अनह दाद करताकी वतमें क्या न करता क्या न करे ।
हाथी मार गट्टेमें डाले पदनाके सिर हल धरे ।
रीते भरै भरे ढुलकाधे मिहर करे तो फिर भरे ।

रीते सरवर पर गये, कैसे बुभुत पियास—
(वृन्द) निचंगले थागा पूरी नहीं हो सकती ।

रीस न कर धनघंतकी, निर्धन होकर यार ।
रीस करते सैकाड़ों, देखे होते ख़ार—किसीकी
रीस न करना चाहिये ।

रीस भली, हंस बुरी—बराबरी करना अच्छा है प
करना बुरा है ।

रुचे जुरे पचे—जो चीज़ अच्छी लगे, मिल जाय और पच जाय वही खानी चाहिये।

रुचे सो पचे—जिस खाद्य पदार्थ पर रुचि होगी वह पच भी जायगा।

रुपया आनी जानो शय है—किसीके पास नहीं टिकता।

रुपया तो शेख नहीं तो जुलाहा—स्पष्ट।

रुपया हाथ पेरका मैल है—जब किसीका रुपया निकल जाता है, तब क०। उदारता पूर्वक खर्च करनेके लिये भी क०।

रुपयेका काम रुपयेसे चलता है—(व्य०) खाली बातोंसे नहीं चलता। जब कोई बात थनाकर तगादा टाला चाहता है, तब क०।

रुपयेकी खीर है—रुपयेसे खीर बनती है।

रुपयेकी ज्ञात है—जब रुपयेके ज़ोरसे जातमें हेठा भी कुलीन बन जाता है, तब क०।

रुपयेको ठोकरी कर दिया—किसी काममें रुपयेको तुच्छ समझके बहुत खर्च कर दे, तब क०।

रुपयेको रुपया कमाता है—(व्य०) रुपयेसे रुपया पैदा होता है।

इसपर एक कहानी है—किसी मनुष्यके पास एक रुपया था। उसने सुना था कि रुपयेकी रुपया कमाता है इसलिये वह उसे साय लीकर बाजारमें एक शराफ़की दूकानपर गया। वहाँ उसने रुपयीका ढेर रक्बा देखकर रुपयेसे अपना रुपया उसके पास रख दिया, और अलग जा खड़ा हुआ। वह यहाँ सोच रहा था कि देखो मेरा रुपया रुपया कमाता है वा नहीं, इनमें में शराफ़की निगाह उस रुपये पर पड़ी, उसने समझा कि रुपया झिटक कर ढेरीसे अलग वा पड़ा है इसलिये उसे चठाकर ढेरमें मिला दिया। उस मनुष्यने कड़ा यह रुपया मेरा था, मैंने सुना था कि रुपयेकी रुपया कमाता है पर मेरा तो गंठका भी चढ़ा गया। शराफ़ कोला तुम्हारा सुनना ठीक था मेरे [पयों] वह रुपया कमाया है। तात्पर्य यह है कि धनसे धन मिलता है।

रुपयेवालेकी हमेशा पूछ है—स्पष्ट। पूछ=हुग, पीछे लगाना, पूछ=तलाश करना, उसके पास जाना।

रुपयेवालेको रुपयेकी आशा, मोको रामकी आशा

रुस्तमका साला—रिज़ालेको क०।

अजब नकुशा है दुमियाँका, अजब खालम है खालमका।

कि धन तो जो रज़ीना है वही साला है रुस्तमका।

रुख बिना ना नगरी सोहे, बिन वरगन ना कड़ियां। पूत बिना ना माता सोहे, छब सोनेमें जड़ियां—स्पष्ट।

रुखा खाना धरती सोना, नान्ह सुहेला फकीड़ होना—फ़कीर होना सहज नहीं है, क्योंकि फ़कीरोंको रुखा खाना और ज़मोनेमें सोना पड़ता है।

रुखा सो भूखा—रुखा (बिना धोका) अन्न खानेसे भूख जल्दी लगती है।

रुखी मिसली खायके, ठंडा पानी पी—सन्तोषके लिये क०।

रुठेको मनाय नहीं, फटेको सिलाय नहीं, तो काम कैसे चले—(ज०) स्पष्ट।

रुठे बाधा दाढ़ी हाथ—बूढ़ा आदमी क्रोध करता है तो अपनी ही दाढ़ी नोचता है।

रुपकी रोय करमकी खाय, विधि करतूत जानि नहिं जाय—जब गुणोंका अनादर हो, और नियुग्णिका भाग्यके बलसे आदर हो, तब क०।

पिय धरि यह संग सुन्दरि नारि, को इने दासो सौ प्यार।

कई पखानी न्यों चित लाय, रोने रूप करम पै खाय ॥

पिछले चरणाका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि कर्मका पै अर्थात् दोष खाकर रूप होता है। पै लगाना वा निकालना दोष वा ऐव दिवानेको क०।

रुसल बहुड़िया उद्गारल आग, दोनों ठेरे बड़े हैं भाग—(प०) रुठी खी और बलती आग बड़े भाग्यसे ठहरती हैं।

रेवड़ीके फेरमें पड़ना या आजाना—मुश्किलमें पड़ जानेको क०। रेवड़ी बहुत मुश्किलसे बनती है।

इसकी चासनीको खूटीमें हाटकाकर खींचते और दुहराते जाते हैं, इसलिये इसमें सेकड़ों फेर पड़ जाते हैं।

रेवड़ीके लिये मसजिद ढाना—अपने सामान्य लाभके लिये दूसरेको बहुत हानि पहुंचाने पर क०।

रोके पूछ ले हैंसके उड़ा दे—उस कपटी मित्रके

जान ले और फिर उसे हँसीमें उड़ा दे।
 रोगका घर खाँसी, और लड़ाईका घर हाँसी—
 बहुत हँसी करनेसे लड़ाई हो जाती है।
 रोगिया भावे सो वैद्य धतावे—जब रोगी बड़ा
 आदमी होता है तब डाक्टर उसके मन मुताबिक
 पथ्य बताता है।
 रोगीको रोगी मिला कहा 'नीम पी'—जो जिस
 यातको जानता है वही सलाह-वह दूसरेको भी
 देता है।
 रोज़ कूँधा खोदना और रोज़ पानी पीना—
 निर्धनको क०। जो रोज़ मजदूरी करके खाता है।
 रोज़गार और दुश्मन बार बार नहीं मिलते—
 (प्य०) इनको पाकर नहीं छोड़ना चाहिये।
 रोज़ रोज़की दवा भी गिज़ा हो जाती है—
 (मु०) जो नित्य दवा खाया करते हैं, उनको क०।
 गिज़ा=खुराक।
 रोज़ा न रखे, नमाज़ न पढ़े, सहरी न खाय,
 तो काफ़र ही न हो जाय—(मु०) स्पष्ट।
 रोज़ीका मारा दर दर रोवे, पूतका मारा चैठके
 रोवे—'देखो जीवसे जीविका प्यारी'।
 रोज़को गये नमाज़ गले पड़ी—(मु०) दे० "गये
 थे रोज़ा छुड़ाने"
 रोज़ खोर, खुदाका चोर—(उ०) स्पष्ट।
 रोटिया चाकर घसहा घोड़, खाय बहुत चले
 घोड़—जिस नौकरको तनख़्वाह नहीं मिलती केवल
 खाने हीपर रहता है और जिस घोड़ेको दाना नहीं
 मिलता केवल घास ही मिलती है, वह काम थोड़ा
 करता है।
 रोटी करो सत्तू करो, भात यरोवर नाहीं।
 मौसी करो फूफ़ी करो, माय यरोवर नाहीं—
 (प०) पृथ देशके लोग जो भात खाकर ही रहते हैं,
 उनका कहना है।
 रोटी कहे में मंज़िल पहुंचाऊं, याटी कहे में
 फेर ले आऊं। दाल भातका हलका खाना,
 इसको खाकर कहीं न जाना—भात जल्दी पच
 जाता है, रोटी देरमें और याटी उससे अधिक देरमें
 पचती है, इसलिये क०।

रोटी कारन छोड़कर, कुटुम देश घरवार। लाख
 कोस जाकर वसें रोटी दूँदन हार—स्पष्ट। फेर
 पालनेके लिये सभी तरहके कष्ट सहने पड़ते हैं।
 रोटी कारन जालमें, फंसे पखेरू आय। रोटी
 कारन आदमी, लाखों पाप कमाय—ऊ० दे०।
 रोटी कारन लशकरी, रनमें शीश कटाय।
 रोटी कारन रैन दिन, गीत गधेंसर गाय—
 ऊ० दे०।
 रोटी कारन सीखते; विद्या है सब लोग।
 जिस घरमें रोटी नहीं, उस घर पूरा सोग—
 ऊ० दे०।
 रोटी किसमतकी हुका पांव दौड़ीका—रोटी
 नसीबसे मिलती है पर हुका उद्योगसे मिल जाता
 है। किसीके यहां जा पहुंचो तो वह हुके तमाख़से
 खातिर करता है।
 रोटीकी खाक भाड़ना—खुशामद करना।
 रोटीकी जगह उपला खाना—बेहूदा यात पर क०।
 जो जानशूकर भोला बनता है, उसे व्यंगसे क०।
 रोटीको टांटी, पानीको बिल्हा, खसमको दादा—
 भोंड़ी वा भोली खोको क०। जो जान बककर
 भोला बनता है, उसे भी क०।
 रोटीको रहोगे, कि वह भी छोड़ोगे—जब कोई
 अपने गुनरका ख्याल न करके मन मानी धाल
 चलता है, तब क०।
 रोटीको रोवे, खपड़ीको टोवे (ज०) बहुत
 रोटीको रोवे, चूल्हे पीछे सोवे } गरीबीहाल-
 तपर क०।
 रोटी खाय्ने शक़रसे, दुनियां उगिये मकरसे—
 जो लोग फ़रेब और खुशामदसे दुनियांको टगते हैं
 वह मौज़में रहते हैं परसीधे और सच दुःख पाते हैं।
 रोटी गई मुंहमें, ज़ात गई गुहमें—(मु० ज०)
 नीचा सम्बन्ध करनेपर क०। डेस फिरङ्गियोंके
 बारेमें प्रायः क०।
 रोटी न कपड़ा, सेंतका भतरा—(प० ज०) खाना
 दे न कपड़ा दे, केवल नामका भतरा है।
 रोटीपरका घो गिर गया मुझे ऊखी ही भाती है
 दे० "यह अंगूर ही खट्टे हैं।"

Handwritten text, mostly illegible due to extreme blurriness and low contrast. Some faint characters are visible, but the overall content is unreadable.

Handwritten mark or character, possibly a signature or a specific symbol.

Handwritten text in the bottom left section, appearing as a list or series of notes. The text is too blurry to transcribe accurately.

Handwritten text in the bottom right section, possibly a separate entry or a continuation of notes. The text is illegible.

लंथा टीका मधुरी चाल, यह भाई किसका घर
घाल—(ज०) बदचलन औरतको क०।

लंथा टीका मधुरी बानी, दगाधाज़की यही
निशानी—पाखण्डीको क०।

लम्बे घूँघटवालोसे डरिये—स्पष्ट।

लकड़ीके बेल बकरी, नाच—मूर्ख भय दिखानेसे
काम करता है। बकरीको जगह चंदरी भी क०।

लकीर पर फ़कीर—पुरानी चालपर चलनेवालोंको
क०।

लग गईं जूती उड़ गईं खेद, फूल पानसी हो गईं
देह—वेशरमको क०।

लगन खुरी होती है—किसी काम वा चीज़ वा
मनुष्यसे मन लग जाय, तो जबतक उसे न करे वा
उसे न मिले तो चित्तमें बचेनी रहती है और उसीके
करने वा मिलनेकी उत्कंक्षा बनी रहती है।

लगा तो तीर तर्ही तुका ही सही—कामके लिये
उत्साह दिलाने पर क०।

लगा सो भगा—काम शुरू किया और समाप्त हुआ।
जिन्दगीकी अस्थिरता पर क०।

लगी खुरी होती है—चित्तमें जो काम ऊँच नीच
नहीं सकता।

लगीमें और लगती है—चोटपर ही चोट लगती है।
दे० “काने चोट”।

लगेको बिडारियेना, बिन लगेको हिलाइये ना—
जाने हुएको त्यागना और बिना जानेको मुँह न
लगाना चाहिये।

लगे खुशामद सब कहें प्यारी—स्पष्ट।

जो खुशामद करे खलक उससे बड़ा राजी है,
सब तो यह है कि खुशामदसे खुदा राजी है। (नज़ीर)

लगे तोते भीतों बोलने—बात प्रकाशित हो गई।

लगे दम, मिट्टे ग़म—गंजिड़ियोंका कहना है।

लगे दाम, धने काम—रूपसे काम बनता है।

लगे रगड़ा, मिट्टे भगड़ा—भंगिड़ियोंका क०।

लघुता तें प्रभुता मिले, प्रभुता तें ग़भु दूर।

चींटी शकर खात है, कुंजरके मुख धूर—स्पष्ट।

लच्छमी चंचल है—लक्ष्मी किसीके पास स्थिर

होकर नहीं रहती, आज एकके पास है तो कल
दूसरेके पास चली जाती है। जब किसीका धन
निकल जाता है, तब क०।

चपना यह न रहोम बिर, साँच कहत सब खोय।

प्रथम पुरातनकी शू, कौन न चंचना होय।

लच्छमीसे भेंट ना, दरिद्रसे बैर—(भो०) जब
कोई लाभका काम तो न करे और धृया किसीसे
विगाड़ कर ले, तब क०।

लजाधुर बहोरिया सरायमें डेरा—(भो०) स्पष्ट
लजाधुर—शरमाऊ। अनुचित काम पर क०।

लजाना बोलू मुँह बिदोरे—(प०) शरमाई बकरी
दाँत दिवाती है। निर्लजताकी हंसी पर क०।

लजायल लड़िका ढोंडा टोहवे—(भो०) शरमाया
धृया लड़िका अपने पेटकी ओर देखता है।

लजावू मरे डिठाऊ जीये, गंगाजल चमारो पीये—
समयकी खूबी पर क०।

लटा हाथी बिटोरे बराबर—बड़ा आदमी बिगड़ने
पर भी छोड़ते बड़ा ही रहता है।

लटा हाथी भी सौ मनका—ज० दे०।

लटकी जोय, सारे गाँवकी सरहज—(प०)
गरीबको सब कोई छेड़ते हैं। सालेकी श्रीके साथ
हँसी करनेकी रिवाज़ है।

लटे पटे दिन काटिये—तंगीसे गुजराने होनेपर क०।

लठ, मुँह फट—जो बिना विचार बोल उठते हैं,
उनको क०।

लड़कनके भगवा ना बिलाईके गाँती—(प० ज०)
घरवालोंको कुछ न दे और गैरोंकी मदद करे, तब क०
लड़का जने चीथी और पट्टी बांधे मियां—
दे० “बायें भीम”

लड़का परकावेके न चाही, हरकावेके चाही—
लड़कोंको शह न दे, दवाके रखे।

लड़िका रोवे खसम चिहाय, लड़कौरी मे इरिया
फ़ज़ीहत होय—(प० ज०) गृहस्थोंके भगड़ों पर क०।

लड़का रोवे घालोंको, नाई रोवे मुड़ाईको—
सब अपना स्वार्थ देखते हैं।

लड़केकी यारी, गधेकी सवारी—दे० “नादानकी
दोस्ती”।

लड़केके भागसे लड़कोरी जीये—लड़केके कारण उसकी मांकी छातिरदारी होती है।

लड़केको जब भेड़िया ले गया तब टट्टी याँधी—काम बिगड़ जाने पर सचेत हो, तब क०।

लड़केको मुँह लगाओ, तो दाढ़ी खसोटे। कुत्तेको मुँह लगाओ, तो मुँह चाटे—थोड़ेको मुँह न लगाना चाहिये।

लड़ते तो नहीं मुये मारते हैं—(ज०) चुगल-खोरको क०।

लड़तोंके पीछे और भागतोंके आगे—डरपोकको क० लड़ना दे पर बिछुड़ना न दे—साथ रहकर लड़ते रहो मगर अलग न हो।

लड़ना सिर फोड़के, खाना जाँघ जोड़के—लड़ो मगर बुदे मत हो।

लड़ाई और आगका बढ़ाना क्या?—बहुत जल्दी बढ़ सकती है।

लड़ाईका घर हांसी, और रोगका घर खांसी—स्पष्ट।

(१) करो न बड़ उपहास तिय, गयो पखानी मूल।
खांसी घर है रोगकी, हांसी कलह मूल॥
(सो० १० कौ०)

(२) काहू कौं हंसिये नहीं, हंसी कलह कौ मूल।
हांसी ही तें है भयो, कल पांडव भिरमूल॥ (इन्द्र)

लड़ाईका मुँह काला—स्पष्ट। लड़ाई खुपी है।

लड़ाईमें कुछ लड़इ नहीं बैठते—लड़ाईमें कुछ लाभ नहीं।

लड़ाईके चार फान—लड़नेके लिये दूसरोंकी बुराई बहुत जल्दी छनता है।

लड़में लड़का घुड़ोंमें घुड़ा—मिलनसार वा सीधे आदमीको क०। हरदिल अजीज।

लड़े न मिड़े, तरफस पहिने फिरें—डॉंगवाज-को क०।

लड़े सांड घारोका भुरकस—सांडोंकी लड़ाईमें खेतकी खराबी।

लड़े सिपाही नाम हो सरदारका—दे० “कटे धार नाम तरवारका”

लड़इ न तोड़ो चूरा भूड़ खाओ—(व्य०) मूल न बिगाड़ो व्याज खा लो। पूंजी न बिगाड़ो मुना-फ़ा खा लो।

लड़इ फुटेंगा तो चूर भरेगा—नी० दे०।

लड़इ लड़े चूरा भूड़े—दो बड़े आदमियोंको लड़ाईमें दूसरोंका फायदा हो, तब क०।

लश्करकी अगाड़ी, और आंधीकी पिछाड़ी—मयानक होती है।

लश्करमें ऊंट बदनाम—बदनाम आदमी पर क०।

लसन बसाये बसनको कैसे फूल बसाय—(वृन्द) बिगड़ा हुआ आदमी नहीं सघरता।

लहनेकी जड़ तगादा—(व्य०) तगादा करने हीसे लहना बसूल होता है।

लहू लगा शहीदोंमें मिले—भूठी प्रसंथा चाहनेवाले पर क०।

लाखका घर खाकमें मिला दिया—घर बरबाद कर दिया

लाख जोय, सख न जाय—धन भले ही चला जाय, इजत न जाय।

लाख तदकतरफ़, और एक तक़दोर एक तरफ़—भाग्य के आगे उद्योगकी नहीं चलती।

लाखनमें कोई पत्त सपूत—स्पष्ट।

लाखोंके बारे न्यारे कर दिये—लाखों कमाये खर्चे।

लाग लगी तब लाज कहाँ—किसीसे मन लगनेसे लज्जा नहीं रहती।

जाते कियो नेह फोर तातें लजनों कहा, (ग्याल)

लाचारमें विचार क्या—झरूतके बक, न्यायका विचार नहीं रहता।

लाचारी पर्वतसे भारी—अभाव वा गरीबी असह्य होती है।

लाजकी आंख जहांजसे भारी—ऊ० दे०।

लाज भली है बालके, या मत जीसे खोय। लाज

बिना ऐसा मनुष्य, खसम बिना ज्यूं जोय—स्पष्ट।

लाठीके हाथ मालगुजारी बेबाक—लाठी हाथमें

लेनेसे मालगुजारी जल्दी बसूल हो जाती है।

लाठी मारे पानी बुदा नहीं होता—भगड़ा होनेसे

रिखेदारी नहीं हटती।
 लाठी लिये पांवपर खाक—लाठी लेकर चलनेसे
 पैरपर घूल पड़ती ही है (लाठीके टेकनेसे उड़कर।)
 हाठी हाथकी, भाई साथका—लाठी और भाई
 पासके कामआते हैं।
 लाडमें आवे कूकड़ी, घल बल जावे कौवा—
 जब कौवा मुरगीके प्रेममें फंसता है तो अपनेको
 बलिदान कर देता है। आशय स्पष्ट है।
 लाडला लडुका जुआरी, और लाडली लडुकी
 छिनाल—स्पष्ट।
 लात खाय पुचकारिये, होय दुधारु धेनु—
 दे० “दुधार गौकी लात भी भली।”
 लात भात खाईला, ठाकुरकी नाई रहोला—
 (प्रा०) दे० “मार गाली उगते हैं।”
 लात भारी भोपड़ी, सलाम मियां नूल्हे—
 दे० “उठाऊ चूल्हा।”
 लात सही मूकी सही, उल्टे सहे कुयार।
 हन होंठनके कारने, सिरपर धरें अंगार—जब कोई
 अपनी प्यारी चीजके मिलनेके लिये बहुत कष्ट
 उठावे और वही उसे मिल जाय, तब क०।
 इसका निकास इस कहानीसे है—एक नीजवान खूब
 सस्ते, मुस और चालाक स्त्री अपनी बचनेकी यहाँ गई
 और कुछ इधर उधरकी बातें कर रही थी कि उसे प्यार
 लगी। इसकी उस सुझोली बचने कीरे कुछइधरेमें
 भरकर उसे पानी पीनेकी दिया। जब उसने सुँ
 लगाकर पानी पिया तो कुछइधरा हीठसे थपक रहा।
 यह खिलखिलाकर हँसी और इस दीर्घकी कथा—
 “रे माटीके कुछइधरा, तोफि डारी पटकाय।
 सोठ रखे है पीठकी, तू क्यों चूस जाय।”
 यह दोहा सुन उसकी बचनेकीने कुछइधरेकी तरफसे
 आवाजमें उपरोक्त मसलभाला दोहा कथा।
 लातके देव चातासे नहीं मानते—भीच समझानेसे
 नहीं मानता, अर्थात् बिना मारे सीधा नहीं होता।
 लाद दे, लदा दे, लादनवाला साथ दे—(पं०)
 अनुचित मांगपर क०। जब किसीको कोई चीज दी
 जाय और वह कहे कि हमारे घर पहुंचा दो, वा
 किसीको लाभका काम यताया जाय और वह कहे
 कि साथ चलकर करवा दो, तब क०।

लादे पादे और औंधाय, सांच न कहे जीव चह
 जाय—माल लादनेवाला, पादनेवाला और ऊंधने-
 वाला कभी सच नहीं कहता। किसी ऊंधतेसे पूछो
 कि क्या सोते हो? भट कहेगा, “नहीं तो।” ऐसे
 ही पात्री दोनोका भी हाल जानो।
 लाभे लोहा ढोइये विन लाभ न ढोइये कई—
 लाभके काममें मेहनत करी जाती है पर बेगार नहीं
 लदा जाता।
 लायगा दारा तो खायगी दारी, न लायगा दारा
 तो पड़ेगी दुयारी—(ज०) पति कमावेगा तो स्त्री
 खायगी नहीं तो लड़ाई होगी। गृहस्थीके जंजाल-
 पर क०।
 लारा लीरीका यार, कभी न उतरे पार—दीर्घ-
 सोचीका काम कभी पूरा नहीं उतरता।
 लाल किताब उठे वीली यों, तैली वेल लड़ाया
 क्यों? खल खिलाकर किया मुसंड, वेलफा वेल
 और दण्डका दण्ड—
 इसका निकास इस कहानीसे है—किशो तैलीके रखने
 एक काजीके बेलकी मार डाला। इसपर काजीने तैलीसे
 कहा कि, तुमने अपने बेलको क्यों खिला पिलाकर मुसंड
 किया, जिससे मेरा बेल मारा गया। इस अपराधमें
 तुम्हें बेल और जुमाना दोनों देना होगा। अन्तमें जब
 काजीको मालूम पड़ा, कि मेरे ही बेलने तैलीके बेलकी
 मार डाला है, तब उसने अपने दोष छलका करनेके
 लिये कहा कि फिर जानवर ही तो था, अर्थात् पशुको
 भले बुरेका विचार नहीं होता। इसपर तैलीने अपने
 मन ही मन कहा, “वाइजी काजी साधव, एक ही अप-
 राधमें अपने लिये खास एक कान न और मेरे लिये कुछ
 दूसरा ही।” (भा०) केवल दूसरेका दोष दूँदनेमें मनु-
 श्यको बाँध तोम हीतो है।
 लाल किताब—ज्ञाननकी किताब वा काजी।
 लाल खांकी खादर धड़ी होगी तो अपना बदन
 ढकेगा, हमको क्या—जब कोई आदमी दूसरेके धन-
 को तारीफ करे, तब क०।
 अनार भाते जी काबुलसे तो पकते सबके हिस्सेमें।
 अनोर भाये तो हमको क्या मजु है लौरे मिठोके।
 (चक्रवर्त)
 लाल गुदड़ीमें नहीं छिपता—अच्छे बुरी स्थितिमें
 भी नहीं छिपते।

लालच गुण घर विनाश—बहुत लालच करनेसे घर बरबाद हो जाता है ।

लालच परेशान है—लालच आदमीको लजित बनाता है ।

लालच चुरी बला—लालच करनेसे जो मिलता हो वह भी नहीं मिलता । लालच अन्याय कराता है ।

(१) घे कैकती फिल्ममें सो रोटी भी गई ।

चाही थी बड़ी सो छोटी भी गई ॥

बाइजकी नई हत कौं न माने आखिर ।

पतलूनकी ताकमें भंगोटी भी गई ॥ (अक्षर)

(२) लालच मतकर बालके, लालच चुरी बलाय ।

तुरत पछिद वालमें, लालचसे फंस जाय ।

लालचीको जहान तंग—स्पष्ट ।

लाल प्यारा तो उसका ह्याल भी प्यारा—
दे० “कान प्यारा.....”

लाल बुभुक्कड़ बूमियां और न बूभा कोय ।
कड़ी बड़गां टारके, ऊपरको ही लो—(पं०)
मर्खको या धराव सलाह दी जाने पर क० ।

किसी गांवमें एक छोटा लड़का अपने दोनों हाथ खंभेके दोनों तरफ फैलाये खड़ा था । इसी समय उसके बापने उसकी दोनी छंछीमें छोड़ा चना भर दिया, अब सब कोई इस अचमंजसमें पड़ गये कि किस तरह वह लड़का बिना हाथसे चना गिराये बाहर हाथ भिकालगा । उसी समय लाल बुभुक्कड़ भी वहां था पड़ था और उसने अपनी सहायि दी कि खंभे परसे कड़ी बरगा हटाकर लड़केको बाहर निकाल्लेनिसे लड़केको भंजुलीका चना ज्योंका त्यों भरा रह लायगा, बन्वया कोई छपाय नहीं सुभता । लाल बुभुक्कड़ अक्षर बादमाइके संदी वीरयलका पुत्र था । उसकी नाम इसका लाल था । वह अपने पितासे भी अधिक ठंडोलोपचंद था । यह हीसे इसके मनमें वैराग्य समाया हुआ था, संसारकी निर्या-जागता था, और मानवीय बुद्धिको अल्प समझता था । सन् १९२३ ई० में काठुलकी लड़ाईमें अपने पिताके सर आने पर यह अपना सर्वस्व जुटाकर सहायो हो गया । लोग इसको बड़ा चतुर समझते थे, पर यह तुकमान चक्रीम की तरह अपनी बुद्धिको तुच्छ जानता था । इसकी बगईं पैकड़ी पहिलियां देग भरमें प्रतिष्ठ है, जिनमेंसे प्रत्येक इस बातकी प्रकाशक है कि “गंवारो, गूद, भाती में

बड़े बड़े चतुर विद्वानोंकी बुद्धि वैसी ही अल्प होती है, जैसी कि साधारण भातों में, चौर गंवारोंकी ।

लाल बुभुक्कड़ बूमियां, और न बुझे कोय । पैरों चघी बांधके, हिरना कूदा होय—(पं०) उ० दे० ।

किसी गांव होकर एक हाथी गया था, इस कारण उसके पैरका चिन्ह, जमीनपर उपट गया । गांववाले उस खंभे कीके गोलाकार चिन्हकी देख-अधमीन हो गये । अपनी संकाकी दूर करनेके लिये उन्हेंने लाल बुभुक्कड़की बुलाया । लाल बुभुक्कड़ने उस गिरानकी देखकर बताया कि कोई हिरन अपने पैरमें चघी बांधकर कूदा है ।

लाल बुभुक्कड़ बूमियां और न बुझे शानी ।
पुरानी होकर गिर पड़ी अल्लाहकी सुरमेदानी—
उ० दे० ।

एक दिन लालबुभुक्कड़ कई गंवारोंको साथ लिये कहीं जा रहे थे । गंवारोंको एक कोलह किन्नी खेतमें पड़ा दिखाई-दिया तो संघके सब कहने-लगे कि ऐ मंछराज ! यह क्या है ? तब तो लालबुभुक्कड़ इनकी खाम-अकली पर आँसु भर लाये और उन्नत मसल कही ।

लालाका घोड़ा, खाय-बहुत चले थोड़ा—
क्योंकि ये उसके पालनेका तरीका नहीं जानते ।
“लाला घरात दिवा ला”, “बल ससुरे किसी-
की फारखती लिखी जाती होगी”—किसी लड़के-
ने अपने बापसे प्रथमार्थ शब्द कहे जिसके उत्तरमें उसके पिताने शेषार्थ शब्द कहे ।

इसका निकास इस कहानीसे है :—किसी कुर्ज दारने अपने दरवाजे पर बहुतसे बाज बालोंकी इकट्ठा किया । उसने अपने मंछराजको बुलाया कि अपना हिंसाय चुका ले जाओ । बनिर्वा अपना बड़ी खाता लेकर घरके भीतर हिंसाय चुकानेके लिये आया, तो उसने बाजबालोंको हुजम दिया कि खूब जोरसे बाज बजाओ । उधर तो बाजा बजने लगा और इधर कुर्ज दारने बनिर्वाको पीटना आरंभ किया, और उसे पीटा कि उसने उससे फारखती लिखा तौ, उसका चिह्नना बाजकी आवाजसे कोई न सुन सका ।

लालाजी आज मर गये चघी धहूको भेज दो—
सुझिया अन्नरौं पर लंगसे क०, क्योंकि इसमें माश्रा नहीं होती ।
किसी साहकारने चिठोंमें यह लिखकर भेजा था, “लाश-
की अक्षररह गये बड़ी चघीको भेज दो” पर वहां छपरोक्त

बात पढी गई जिससे बड़ी बह गीती पीठनी चली आई।

लिखना आवे नहीं मिटावे दोनों हाथ—

नालायक पर क०।

लिखे न पढ़े कानमें कलम—कूडा डकोसला दिखानेवालेको क०।

लिखे मूसा पढ़े खुदा—(मु०) (१) खुदा ही

मूसाके लिखेको पढ़ सकता है। (२) ऐसा खराब लिखता है जो उसके सिवा कोई दूसरा नहीं पढ़ सकता। मूसा और खुदामें श्लेष है; मूसा=पैगम्बर और बाल जैसा महीन। खुदा=ईश्वर और खुद=आप आकर। खराब लिखने पर कहते हैं। एक सिपाहीने किसी कायस्थके पास जाकर कहा कि मुझे एक चिट्ठी लिख दे। कायस्थने कहा मैंने पांथमें दर्द है। सिपाहीने कहा, चिट्ठी तो हाथसे लिखी जाती है कुछ पांथसे नहीं, तू कूडा मछाना क्यों करता है। कायस्थने कहा तुम्हारा कफना ठोक दे परन्तु अब मैं किसीके लिये चिट्ठी लिखता हूँ तो उसके पढ़नेके बाधों भी बुझाया जाता हूँ क्योंकि मैंने लिखा कोई दूसरा पढ़ नहीं सकता।

उसे तो आप समझे या कहीं शायद खुदा समझे।

न खालाजी न पंडितजी न कोई तीसरा समझे।

लिखे न आवे कलमिया टेढ़—(प०) दे० “बले न थाय।”

लिखे न पढ़े, दूध मारे कढ़े—जो लड़का लिखता

पढ़ता नहीं, केवल अच्छी धच्छी चीजें खानेकी ताकतमें रहता है, उसपर क०।

लिखे ना पढ़े नाम मुहम्मद फाजिल—उ० दे० नामानुसार गुण न हो, तब क०।

लिखे ईसा पढ़े मूसा—दे० “लिखे मूसा”

लिहो गंडेरीका साथ क्या?—धमेल बात पर क०।

लीक लीक गाड़ी चले, लीकहिं चले कपूत।

लीक छोड़ि तीनहिं चले, शायर, सूर, सपूत—

उन्नतियाली मनुष्य अपनी मलाईके लिये नया मार्ग ढूँढता है।

लीजे ससा अखेट पर, नाहरके सामान—

(१) छोटे कामके लिये जब बड़ा आयोजन किया जाय, तब क०। (२) थोड़ी श्राफतके लिये अविप्यतमें भारी सतरा या जानिके दरसे बड़ा धायो-

जन करना चाहिये।

लीप बह दिवाली आई, पीत बह दिवाली आई,

छेद छिदालो भाये मारी, क्यों सासू यही

दिवाली थी—जब सासू बहूके साथ बुरा बर्ताव करे

तो उसे ताना मार कर क०। सासने बहूके ऊपर

कूडा काकट फेंककर कहा कि दिवाली आई। इसपर

बहूने कहा कि दिवालीके उपलक्षमें क्या-सिरपर

कूडा काकट ही फेंका जाता है।

लीपू ओटा, मरे मोटा—जब कोई धनी आदमीके

मरनेके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करे, कि जिससे उसे

लाभ हो, तब क०। महापात्रोंके घरमें श्रोटा नाम-

की एक प्रतिमा रहती है, और वह उसीकी पूजा

हमेंया किया करते हैं ताकि किसी धनीकी मृत्यु हो

जाय और उसे प्रचुर धन हाय लगे।

लुगाई रहे तो आपसे, नहीं तो जाय सगे आपसे—

दे० “श्रीस्त रहे तो”।

लुटाया धिगाना माल, बन्द्रीका दिल दरियाव—

(मु० ज०) जो नौकर अपने मालिकका धन धरबाद

होता देखकर उस पर कुछ भी ध्यान न दे, उसे क०।

कृतप्र या नमकहराम चाकर पर क०।

लुटिया हूयो रे हरदास, घोड़ा दाना खाय न घास

जब काम विगड़नेके लक्षण दिखाई पड़े, तब क०।

लुहारकी कूँचों कभी आगमें कभी पानीमें—

(ज्य०) दे० “दुर्गोकी सुँ”

गुणो विकोक न भूना भट,

यद्य ऊधो न होय लुहारकी कूँचो। (उ० प०)

लूटका मूसल भी बहुत—मुफ्तमें जो मिला सो

अच्छा।

लूट कोयलौकी, मार बलीकी—बहुत परिश्रम कर-

नेपर थोड़ा लाभ हो, तब क०।

लूटमें चरखा नफ़ा—दे० “लूटका मूसल।”

लूट लाये कूट खाया—कारण चोर या ठगको क०।

लूर न ऊर, चला मियां जगदीशपूर—(प० प०)

अक्सल न शहर और चले जगदीशपूर।

लूहर मारा कूकरा, बिजली देख डराय—दे०

“दूधका जज्ञ”। लूहर=बुधांती।

लेके दिया कमाके खाया, ऐसी तैसी जगमें भाया

गादिहन्दको क०।

ले गये गठरी चोर चुराई, सकल बेगारन छुट्टी पाई
दे० "चोरने....."

लेता भूले न देता—(व्य०) पूरे हिसाय पर क०। जैसे
पचीस पचास सौ इत्यादि जिसमें ध्राना पाई न
भर रहे।

लेता मरे कि देता—जो अपना कर्मान न चुकाया चाहे,
उसे क०।

लेते कुछ और, देते कुछ और—(व्य०) जब कोई
लेते वक्त तो सुशामद करके ले ले और देते वक्त
अलसेट करे, तब क०। जो अपना लेना तो सवाया
वसूल करे और दूसरेका देना देते समय रुपयेके
बाराह ध्राने दिया चाहे, उसे भी क०।

किसी बनिबेके यहाँ एक लड़का नौकर था, जिसके उसने
दो नाम रख लिये थे—एक तो लिखा और दूसरा
दिखा। जब कोई उसके यहाँ माल बचने जाता तो
वह लड़केको पुकारकर कहता, "बचे लिखा जरा तराजू
बाट तो ले जा।" तो लड़का सवा सेरका सीर ले जाता।
और जब कोई माल खरीदने जाता तो वह लड़केको यह
कहकर बुलाता, "बचे दिखा तराजू बाट तो ले जा।"
तब लड़का तीन पाषका सीर उठा खेता। कीरे चालाक
उसकी इस धाँसकी ताड़ गया और उसने बनिबेसे कहा,
बाह साहजी, धापकी तो वही मसल है कि "लेते वक्त
कुछ और, और देते वक्त कुछ और।"

ले दे आटा कडीतोमें—मेरी कडीतोमें आटा दे,
स्वार्थीको क०। दिखानेको लेता देता है पर
वास्तवमें अपने पास रखता है।

लेना उसका देना नहीं—जो लेके न दे, उसे क०।

लेना एक न देना दो—(व्य०) (१) कुछ लेना देना
नहीं (हिसाब साफ़)। (२) न किसीसे एक लो न
दो देना पड़े। किसीसे कुछ प्रयोजन न रखना हो,
तब क०।

इसपर एक कहानी है। देवयोगसे एक ईस उड़ता हुआ
समुद्रके किनारे पा गया। एक मेटकसे उसकी निवृत्ता
हो गई। एक दिन किसी बहेलियेने ईसको जालमें
फाँसा। मेटकने बहेलियेसे कहा, तूने मेरे निवृत्तको क्यों
पकड़ा। उसने उत्तर दिया कि मैं ईस राजाकी भेट
करना जिससे मुझे इनाम मिलेगा। मेटकने कहा, तू
इस को दे, मैं तुम्हें ऐसा धन दूँगा कि तेरे राजाके पास

भी न होगा। यह कहकर उसने समुद्रमें गोता मारा
और एक बड़मूल्या माल (रत्न) निकालकर उसे दिया।
बहेलियेने ईसको छोड़ दिया और रत्न लेकर अपने घर
गया, और उसे अपनी स्त्रीको दिया। उसने कहा कि
इसका छोड़ा लाओ तो मैं अपने कामों का लटकन बनवा
लूँ। बहेलियेने आकर फिर ईसकी फाँसा और मेटकसे
कहा, कि उसीको छोड़ीका दूसरा माल दो तो छोड़ूँ।
मेटक बोला यह तो बजाकर है इसमें उससे अच्छे और
बुरे अनगिनत रत्न हैं, तू वह रत्न ले जा तो मैं उसकी
छोड़ी मिनाकर निकाल लाऊँ। उसने मेटकको वह
रत्न ला दिया। मेटकने ईससे कहा इसकी नीयत खराब
है, यह तुम्हें फिर पकड़ेगा इसलिये तू यहाँसे चला जा,
और उस बहेलियेसे कहा कि तुम्हें तो न एक (रत्न)
लेना है न मुझे दो देने हैं। यह कहकर वह लाल मुँहमें
लेकर समुद्रमें चला गया। गिधा—धी धुवानि परित्यज्य
भद्रं वंपरि सेवति, धुवानितस्य नश्यति भद्रं वं नृप एवच।
बाधो छोड़ सारीकी धावे, बाधो रहे न सारी पावे।

बदता फिर बर्दकी नार्दे घरके करते टिक टिक लोथ।
मार लकड़िये पुड़े फीरे नकुना छेद नाक दई पीथ।
करे बनोडे रई भावरी खानेकी खरपीना लोथ।
कहते नित्य न माफिल हो यहाँ सेना एक न देना दोय।
औ तू चाया जगतमें बंदे गंदा काम करे मत लोथ।
कबहु क परे दुःख बहुतेरा कबहु क रहे सुखमें लोथ।
भारें बंधु भव कुटुंब कबोला मरघट ले सभ चलेते रीथ।
कहते नित्य न माफिल हो यहाँ सेना एक न देना दोय।

लेना देना कुछ नहीं, लड़नेको मजबूत—कल्युग-
के दानियोंको क०।

लेना देना साढ़े धाईस—(व्य०) जो मोल तोल
करता है पर खरीदता नहीं, उसे क०। साढ़े धाईस
जैसी अघरी रकम है वेसा ही दर दाम करके माल
न लेना अघरा सौदा करना है।

लेना न देना कारे न मसले—धेकार आदमीको
क०।

लेना न देना "गाड़ी भर चना"—खाली बातोंसे
चना नहीं खरीदा जाता।

लेना न देना, भूँटों मुह छुटौचल—बेबातके लिये
भाड़ा करने पर क०।

लेना न देना धातोंका जमा खर्च—(व्य०) स्पष्ट।

लेनेके देने पड़ गये—सोचा था कुछ और, हो गया कुछ और, लाभ समझकर कुछ काम किया जाय और उसमें हानि हो, तब क० ।

सैठजीको फिक्र थी एक...के दस दस कौजिये ।

मीत था पड़ची फिक्र...त जान बापिस, कौजिये... (बकबर),

लोकका डर न परलोकका डर—पापीको क० । जो न तो धनामीसे डरे न ईश्वरसे डरे ।

हाथ सन लीगन सौ कौन सौ उपाय,

जिन्हें लोककी न डर परलोककी न डर है । (ठाकुर)

लोन केरि पुतला चलो, थाह सिन्धुकी लेन—नोनका पुतला पानीमें जाते ही गल जायगा ।

लेनेको सब कुछ देनेको कुछ नहीं—नादेहन्द वा सुमको क० ।

तुम कौन थी पाटी पटे सी लला,

मन खेड़, पै देखे बटाक नहीं । (धन धानन्द)

ले लिया पल्ला और चिनने लागी सिद्धा—(क०)

जो विना हुक्म लिये काम करने लगता है, उसे क० ।

ले लुगड़ी, चाल गुदड़ी—(ज०) जो तुम्हारा काम है, सो करो ।

लोभ पापको मूल है, लोभ मिटावत मान ।

लोभ कभी नहीं कीजिये, यामें नरक निदान—

मनुष्यको लोभसे निवृत्त रखनेके लिये क० ।

पायो दुख मुने संकेत, फिर चाई निंदत पति हैत ।

कपौ पखानो दिवकी मूष, लोभ सकल दुखनिकी मूल । (विमलवधा)

लोभीके गांवमें धगड़ियां भूखा नहीं मगता—

(व्य०) लोभी मनुष्य हो बुआचोरोंद्वारा बहुत

टगये जाते हैं, जब कोई लोभवश किसी बुआचोर

द्वारा टगा जाता है, तब क० । उन मनुष्योंको भी क० । जिनका पैया ही लोगोंको टाके खानेका है ।

दिये कपट मुछ मधुरता, ठगौ खान बड़वाम ।

गव, छू भूखा ना रहे, इति लोभीके याम ।

(सठ नायक । लो० १० लो०)

लोभी गुरु लालची चेला, दीऊ नरकमें डेलमडैला—क्या गुरु क्या चेला जो लोभ करेगा सो नरकमें जायगा ।

लोमड़ीके शिकारको जाय तो शेरका सामान कर ले—दे० “लोजे ससा थलेट पर”

लोहा करे अपनी बड़ाई, हम भी हैं महादेवकी भाई—जब कोई नीच मनुष्य किसी प्रतिष्ठित आदमीसे अपना धनिष्ठ सम्बन्ध बतलावे, तब क० । लोहेसे तात्पर्य त्रिशूलका है जो महादेवजीका हथियार होनेके कारण देवताकी तरह पूजा जाता है ।

लोहा जाने लुहार जाने धौकनेवालेकी बला जाने अपने मतलब रखनेवालेको क० ।

लोहेकी मंडीमें, मार ही मार—लोहेकी मंडीमें केवल हथौड़े और लोहेकी धावाज़ आती है, इसलिये क० ।

लोहेके घने चयाना—बहुत मुश्किल काम करने पर क० ।

लौंडीकी ज्ञात क्या ? रंडीका साथ क्या ? मेंडकी लांत क्या ? औरतकी यात क्या—इनका कुछ मोल नहीं ।

लौंडीका यार, सदा ह्वार, टाटका यिछौना जूतियोंका हार—स्पष्ट ।

लौंडी धनकर कमाना, और धीवी धनकर खाना—मेहनत करके कमाओ और इज्जतले खाओ ।

व

चकीलोंका हाथ पराई जेयमें—दूसरोंके धनसे ही इनका निर्वाह होता है ।

चक उड़ गये धुलेंदी रह गई—समय निकल जाता है, पर कीर्ति रह जाती है ।

चकका रोना ये चकके हंसनेसे बेहतर है—स्पष्ट ।

चककी धू यी है—समयका प्रभाव है । जब किसीके

साथ नकी की जाय और वह बुरा माने, तब क० । चकको गनीमत जानिये—समयका सदुपयोग कर लेना चाहिये ।

चक दे यारी तो कर छोड़े असवारी, चक ना दे यारी तो कर खा चरवेदारी—यदि सौभाग्य छोड़ेकी सवारी दे तो उसे करना चाहिये और यदि ऐसा समय था जाये कि छोड़ेका सारंग धनना पड़े

तो उस समय बही करना चाहिये ।
 वक्त निकल जाता है, बात रह जाती है—जब कोई मनुष्य किसीसे न्याय्य सहायताकी याथा रखता हो और वह उसे न मिले, तब क० ।
 काम इनसानकी इनसानसे पड़ता है वृद्ध ।
 बात रह जाती है पर वक्त गुजर जाता है ॥
 वक्त पड़ेपर जानिये, को बैरी को भीत—विपत्ति पड़नेपर शत्रु मित्र पहिचाने जाते हैं ।
 वक्त पड़े बाँका तो गधेको कहे काका—विपद्के समय नीचकी भी खुशामद करनी पड़ती है ।
 वक्त पर कुछ धन नहीं आता—विपत्तिके समय अकल काम नहीं करती ।
 वक्त पर कोई काम नहीं आता—ज़रूरत पड़नेपर किसीसे सहायता नहीं मिलती ।
 पुतलियाँ तक भी तो फिर जाती है देखो दम निजो ।
 वक्त पडता है तो सब बाँध चुग जाते हैं ॥ (अमोर)
 वक्त पर गधेको बाप बनाते हैं—दे० वक्त पड़े बाँका ।
 वक्त पर गाँडका पैसा ही काम आता है—स्पष्ट ।
 वक्त पर जो हो जाय सो ठीक है—स्पष्ट । थाल-सियों या संतोपियोंका कहना है ।
 वक्त पर भाग जाना मर्दानगी नहीं है—स्पष्ट ।
 संकटके समय जब कोई काम नहीं आता, तब क० ।
 वक्त पर सब कुछ करना पड़ता है—नीचसे नीच काम भी समय पड़नेपर करना पड़ता है ।
 वक्त पीरी शयाबकी बातें, ऐसी हैं जैसी खवाब की बातें—मुदापमें जवानीकी बातें ऐसी मालूम पड़ती हैं मानों स्वप्नमें देखी हुई बातें हों ।
 वक्त वक्तकी रागिनी है—प्रत्येक कार्य समयका ही ठीक होता है ।
 वक्त भूलता है पर बात नहीं भूलती—दे० “वक्त निकल जाता है” ।
 वक्त सब कुछ कर लेता है—समयके थानेपर कार्य अपने आप हो जाता है ।
 वक्त सब कुछ करा लेता है—समय पड़नेपर घुरसे घुरा काम भी करना पड़ता है ।
 वक्त हीका गुलाम वक्त हीका यादशाह—

समय ही सब कुछ मनुष्यको बनाता है ।
 वक्तके बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया—दे० “बाह पीर” ।
 वज़नमें तीन मन नाम छटंकी—नामके अनुसार गुण न हो, तब क० ।
 वज़ीरो शहर यारी चुनां—(फा०) जैसा वज़ीर है वैसा ही बादशाह । जब कोई दूसरेके कहने धमूजिब चले, तब क० ।
 घरके न मिले भूसा, बरियाती मांगे चूरा—असंगत वा अनुचित मांगपर क० ।
 घर मरे पटवासी न दूट—घर मर गया पर पटिया पारना न हूटा । नष्ट विधवाको क० ।
 घर मरो या कन्या मरो मेरी गोदका भाड़ा भरो मुके अपने मतलबसे मतलब ।
 बलायतमें क्या गधे नहीं होते—अच्छे घुरे सब जगह होते हैं । बुद्धिमानोंके समाजमें जब कोई मूर्खताका काम करे, तब क० ।
 बलिहारी इन कदमोंकी—चल दो, चाल दिखानो अर्थात् हम चले जाओ तो हम खुश हों । बलिहारी सके जाना, कुरबान होना । (१) जब किसीका चला जाना अभिष्ट हो, तब क० । (२) सब ज़रूत कदमको भी ज्यंगसे कही जाती है, जिसके आते ही काम चौपट हो ज़ाम ।
 एक दिन रासधारियोंकी मंडलीकी चोरो के गिरोहने घर लिया । जब वे उन्हें लूटने लगे तो मंडलीके मालिकने कहा कि तुमने कभी रास भी देखा है, यदि न देखा हो तो देख लो । चोरोने विचार कि यह तो हमारे कर्म में कस ही गये हैं अब कर्षा जा सकते हैं, सफ़्तमें रास देखनेमें आवे तो क्यों न दिखें । चोरोके सरदारने उनसे कीरे अच्छी बीला दिखानिके लिये कहा जिस लड़कीको उन्होंने कन्हइयाजी बनाया उसे सब गहने और अच्छे अच्छे कपड़े पहिना दिये । जब वह नाचते नाचते बहुत दूर निकल गया, तो उसने पावाज लगाई “वालाजी कछो ली चलती धद” । रासधारियोंके मालिकने चिन्ताकर कहा “बलिहारी इन कदमोंकी” । कन्हइयाजी नाचते नाचते भी दो ग्यारह हो गये । चोरोने जब समझा कि इन्हीने पावाकीसे माल भंग पार कर दिया तो उनको मार पीटकर छोड़ दिया ।
 बलीका घेडा शैतान—योग्य पिताके अयोग्य पुत्रपर

क०। जैसे उपरानेके कंस।
 वली सयका अल्ला है हम तो रखवाले हैं—
 (सु०) मालिक सबका ईश्वर है हम केवल रखनेवाले
 हैं। कृपयाका क०।
 घसीले बिना रोजगार नहीं होता—बिना हीले
 रोजी नहीं मिलती।
 वह कमली जातो रही जिसमें तिल बंधते थे—
 समय निकल जानेपर जब कोई सबाल करे, तब क०।
 वह फीमियागर कैसा, जो मांगे पैसा—स्पष्ट।
 वह कुछ नाहर तो नहीं है जो खा जायगा—
 जब कोई किसीसे डरता हो तो उसका दर छुड़ानेके
 लिये क०।
 वह कौनसी किसमिस है जिसमें तिनका नहीं—
 कुछ न कुछ दोष समोमें होता है। निष्कलंक कोई
 नहीं है, सिवा ईश्वरके।
 वह कौनसी तपरी, जो हमसे छपरी—कौनसा घर
 है जो हमसे छिपा है। तात्पर्य यह है कि तुम क्या
 हमें सिखाने आये हो, हम सब जानते हैं।
 वह क्या मेरी खालाकी खल्यघी है ?—(सु० ज०)
 वह मेरी कौन है ? अर्थात् कोई नहीं।
 वह गुड़ नहीं जो चींटे खायें—यहांसे तुम्हें कुछ न
 मिलेगा। तुम हमें धोखा न दे सकोगे। प्रायः कृपया
 मनुष्यके लिये क०।
 वह गुड़ नहीं जो मक्खी बैठे—ऊ० दे०।
 वह डूबे मक्खार जिनपर भारी बोझ—पापियों-
 पर क०।
 वह तो सगे चापको नाहिं—जो किसीका इहसान
 न माने, उसे क०।
 वह दपतर गाव खुर्द हो गया—विाङ्ग गया अर्थात्
 वहां शय घास पैदा होती है।
 वह दरवाही जल गया—ऊ० दे०। वहासे शय कुछ
 आया नहीं।
 वह दिन गये जो खलील खां फ्रायता मारते थे
 बहुतीके दिन निकल जानेपर क०।
 वह दिन गये जो भैंस पकौड़े इगती थी—
 ऊ० दे०। पहले सी आमदनी नहीं, इसलिये उतना
 खर्च नहीं कर सकते।

वह दिन डुब्ने, जय घोड़ो चढ़े कुब्जे—(प०) वह
 दिन मारत हो जब कुब्जा घोड़ी चढ़े। श्राप देना
 वा कोसना है।
 वह नारी भी दिन दिन रोवे, जाका पुरुष निखट्टू
 होवे—(ज०) स्पष्ट।
 वह पानी मुलतान गया—(व्य०) वह बात बहुत
 दूर चली गई। जब कोई श्रेष्ठोके मारे वा ज़िद्द बस
 मिलती चीज़को न ले, वा थपने शत्रुकूल फ़ैसलेको
 मंजूर न करे, फिर पद्धताकर वही चीज़ या वही
 फ़ैसला चाहे और देनेवाला राजी न हो, तब क०।
 इशका निकास इस कहानीसे है—एक दिन मुह गोरख-
 नाथ रैदास भक्तसे मिलने गये। प्यास लगनेपर उन्होंने
 पानी मांगा, जो रैदासजीने उनकी खपरमें भर दिया।
 जब उन्हें मुह थारै कि यह प्रातिक्रमण है तब उन्होंने
 पानी न पीया और उसे खपरमें ही रखने दिया। वहांसे
 वह कबीरके पास गये। जब कबीरने पूछा कि खपरमें
 क्या है ? तब उन्होंने सारा हाल कह सुनाया। कबीरकी
 सड़की कमाली जो पास ही बैठे थी और रैदासको
 सिद्धता भंगीभांति जानती थी, उस पानीको पी गई।
 पानी पीते ही उसे दिव्य ज्ञान लयत्र हो बाया। ऐसा
 अकथात् परिवर्तन होते देख गोरखनाथकी होग हुआ
 और उन्होंने तुरंत रैदासजीके पास आ वनसे फिर पानी
 मांगा। इसी बीचमें कमाली अपने पतिके साथ सुलतान
 चली गई। रैदासने अपने योगबलसे सब हाल जानकर
 गोरखनाथजीसे कहा, “प्यासत घे जब पिया नहीं, तब
 तुमने वह अभिमान किया। मूढा धोमी फिर दिवाना,
 वह पानी मुलतान गया।”
 वह पुरखा एक दिन पछतावे, दया धरम जो
 जीसे ताहवे—जो मनुष्य दया और धर्म जीसे त्याग
 देते हैं उन्हें एक दिन पद्धताना पड़ता है।
 वह पुरखा तो फले और फूले, जो दाताको मूल
 न भूले—जो ईश्वरको सदैव याद रखता है वही फूलता
 फलता है।
 वह पुरखा दिन दिन पछतावे, जो आमदसे
 दुगना धावे—आपसे व्यय अधिक करनेसे पद्धताना
 पड़ता है।
 वह पुरखा भी अति दुख पाये, सीख यहाँसे
 जो फिर जाये—जो बड़े बड़ोंका कठना नहीं मानते

वे दुःख पाते हैं ।
 घह पुरखा भी मूल है खोटा, पावे लाभ यतावे
 टोटा—स्पष्ट ।
 घह पुरखा लं निपट भलाई, जिसको होवे
 खौफ़ इलाही—(मु०) स्पष्ट ।
 वह बात कोसों गई—वह मौका दूर निकल गया
 अर्थात् अब न मिलेगा ।
 वह बिल्ही पूजके चलते हैं—वहमो आदमीको
 क० । बिल्ही ब्राह्मणी समझी जाती है ।
 वह बूंद मुलतान गई—जब कोई मौकेपर चूक जाय
 तब क० । दे० 'वह पानी' ।
 वह भलमानस कैसा, जिसके पास न होवे पैसा
 पैसेमें ही भलमनसाहत है ।
 वह ऐसे गए जैसे गधेके सिरसे साँग—वे मालूम
 चले जानेपर क० । गधेके सिरपर साँगका निशान
 भी नहीं होता। कुछ खोगोंका ऐसा खयाल है कि
 पहले गधेके साँग और घाँड़ोंके पर होते थे ।
 वह भी कन्या जिसके अथलख वाल—जिसके
 बाल सफ़ेद हो जायँ क्या वह भी कन्या ही है ।
 हिन्दुओंमें इतनी उमर तक स्त्री कुमारी नहीं रह
 सकती । अथलख=आधा काला आधा सफ़ेद ।
 वहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं है—
 यकी आदमीको कोई भी नहीं समझा सकता ।
 वह मढ़ी ही जाती रही जहां अतीथ रहते थे—
 बोते हुए समयपर क० ।
 वह मर गये हमें मरना है—सत्य कहनेके समय या
 अपनी बातको सची बतानेके लिये क० ।
 वह मानस तो नित सुख पावे सीख चढ़ोंकी
 जो चितलावे—स्पष्ट ।
 वह राजा मरता भला जिसमें न्याय न हो
 मरी भली वह इस्तरी, लाज न राखे जो }
 अन्यायी राजा और निर्लज्ज स्त्रियोंपर क० । दे० "मेरे
 सूम सरदार....."
 वह शैतानसे ज्यादा मशहूर है—उसे सभी कोई
 जानते हैं ।
 वह समय ही नहीं रहा—विगत अर्द्ध समयके
 लिये क० ।

यहां उसके घर बसन्त है, यहां मेरे घर बसन्त—
 जिस समय दो आदमियोंके घर खुशी रहती है,
 तब क० ।
 यहां तलक हँसिये जो ना रोइये—हंसीसे जो
 उकतानेपर क० ।
 यहां फुरिश्तोंके भी पर जलते हैं—दे० "यहां
 अच्छोंके....."
 वही जोरुका भाई वही साला—दोनों एकही बात है ।
 वही टाकके तीन पात—टाककी एक टहनोमें तीन
 हो पत्ते होते हैं । जब किसीकी अवस्था ज्याँ की
 लों यनी रहे, पहलेसे कुछ भी न छपरे, तब क० ।
 वही तीन बीसी, वही साठ, वही चारपाई, वही
 खाट—एक ही बात भिन्न भिन्न शब्दोंमें या एक छे
 चीज़ भिन्न भिन्न नामोंसे कही जाय, तब क० ।
 कोई ग्राम छोड़े ग्रंथ सजाने, रत्नमें द्विविध भेद जनिमान ।
 कहीं पखानी सब सुख पाठे, बोड़े तीन बीसी बोड़े साठ ।
 (लो० २० लो० ।
 वही दे वही दिलाय— जो कुछ मिलता है वह ईश्वर
 की प्रेरणासे ही मिलता है ।
 गर बच दिनाना चाहे तो दुःखमें ही दिलाय ।
 भी जो न दे तो दोस्त भी फिर अपना मुँह छिपाय ॥
 बिन हुकूम उसके रोटीका मुँहका न हाय थाय ।
 गर चिन्न पानी मांगे तो हमिजुं न कोइं बिलाय ॥
 गुं र अज खुदाके किसमें है फुदरत जो हाय उठाय ।
 भकदूर क्या किचीका "वही दे वही दिलाय" (नजीर)
 वही फूल जो महेश चढ़े—किसी चीजके सदुपयोग
 करनेपर क० । यानी वही अच्छा है जो सत्पुरुषोंके
 काम थावे ।
 जो सुघातविष राजकी, ते कविण रस मूल ।
 जो परमेश्वर पै चढ़े, तेईं सांघे फूल ॥ (भूषण)
 वही भला है मेरे लेखे, कं नाहककी जो नर देखे
 जिते अच्छे बुरेका खयाल रहता है, वही अच्छा है ।
 वही भूत जो सिर चढ़ बोले—स्पष्ट ।
 क्या लुफ्फू जो गुं र परदा बोले ।
 जो आदू वही जो सिरपर चढ़के बोले ॥
 वही मन वही चालिस सिर—एक ही बातपर क० ।
 दे० "वही तीन बीसी"

वही मनुष्य धनवन्त है, वही मनुष्य बलवन्त, जो साईं के नामपर, बैठे होय निचन्त—स्पष्ट । साधुके लिये क० ।

वही मनुष्य तो दे सके, राजनको सिख ज्ञान । जो ना राखे लोभ धन, और धरे हाथपर जान—स्पष्ट ।

वही मामू वही यापका साला—दोनों एक ही हैं । जब एक ही बात दूसरी तरह कही जाय, तब क० । वही रहेगा चैनमें, लोभ किया जिन दूर । साईंका कर आसरा, राखा जो भरपूर—स्पष्ट । वही रांडकी रांड, वही बाबल पिट्टी—जहां दो बातोंका एक ही अर्थ हो, वहां क० । रांडकी रांड= विषवाकी लड़की । बाबल पिट्टी=जिसका याप भर गया हो ।

वाकी गत घाही जाने—इस्वरके लिये क० । वाको अच्छा मत कहे, जो तेरे घोरें आय । करे घुराई औरकी, अपने तरें बढ़ाय—उस आदमीको अच्छा नहीं समझना चाहिये जो किसी के सामने अपनी बढ़ाई करे और श्रम्यकी घुराई बतावे ; क्योंकि ऐसे गुण बुरे लोगोंमें रहते हैं ।

वा तिरिया तो एक दिन भाजै, जाकी आंख कधी ना लाजे—निर्लज्ज खियोंके लिये क० । वा तिरिया संग बैठे न भाई, जाको जगत कहे हरजाई—स्पष्ट । हरजाई=व्यभिचारिणीको क० ।

वा दिनकी बतिया मैं कहूँगी—दूसरेकी साधारण कही हुई बात अपने ऊपर कही जानकर अपना भेद व्याप ही खोल दे, तब क० ।

इसपर एक कहानी है :—एक राईस अपने हीसके यहां आदीमें सिद्धमान करीकर गये । आसके बल बच नैदान गये और भाइकी भाइमें फुरागतके लिये बैठे । बर खूब फले हुए थे, इसलिये बच पके पके सोड़ सोड़कर खाते भी जाते थे । उस बल एक रंडीका इका उसी राईके करीकर गुजरा । बच भी इसी व्याचमें नापनेके लिये बनाई गई थी । जिस रोज उसका नाच हुआ तो उसने यह गीत गया “वा दिनकी बतिया मैं कहूँगी।” यह राईस जो महफिजमें बैठे उसका गाना सुन रहे थे अपने मनमें समझे कि उस दिन श्री फुरागतके

बल मैं बर खा रहा था, सो इसमें देख लिया है उसीको कदा चाहती है । इसलिये उसे रिश्वतके तौरपर दस रुपयकी नोट निकालकर दे दिया, जिसमें बच इस भेदकी न करे । रंडी यह समझी कि प्रायद बच गाना इनकी बहुत पसंद आया है, इसलिये मुझे इनाम दिया है । बच बड़ी घड़ी उनकी तरफ देखकर इसी बातको कचने लगी । दो तीन दफा तो इन्होंने उसे दस दस रुपयके नोट दिये पर लब उसने गाना बन्द न किया तो आप बोल उठे कि “नू क्या कच देगी, मैं खुद ही कच देता हूँ ।” यह कचकर उन्होंने सारी बात कच मुनाई । बच रंडी जो इस भेदको जानती भी न थी और महफिजके सब लोग उनकी मूर्खतापर हंस पड़े ।

वा दिन देखे जायंगे, भले बुरे सब कार । जा दिन लेखा लेयंगा, वह फादिर फर्तार—सबके नेक बद कामोंका विचार ईश्वर एक दिन अवश्य करता है ।

वा नरसे मत मिल रे मोता, जो कभी मिरग कमी हो चीता—अव्यवस्थित चित्तवालेसे कमी मिश्रता न करे ।

वा पुरुखाकी दिन दिन ख्यारी, जाकी तिरिया ही फलहारी—स्पष्ट । कलहारी=भगडाखू ।

वा पुरुखा तेरी चतुराई, चून बैचकर गाजर खाई—मूर्खको क० ।

वार करत पी जात है फेर न आवत हाथ, वेग चरन पीके गहो जो मूल न छूटे साथ—स्पष्ट ।

देर करनेसे जो काम बिगड़ जाता है वह फिर नहीं सघरता ।

वार कहे उत धार है, पार कहे, इत धार । पकड़ किनारा बैठे रहू, यही पार यही धार—किसी एक दृष्ट विचारके कधीभूत होकर रहना अच्छा है ।

वार न पार अधम मा नैया । खेवा कहे कि उतरो भैया—स्पष्ट ।

वारवाले कहें पारवाले अच्छे, पारवाले कहे धारवाले अच्छे—जो संतोपी नहीं होते वे अपनेसे दूसरेको एसी समझते हैं ।

वारी गई फेरी गई, जलयेके धक, टल गई—आवश्यकताके बक, टल जानेपर क० ।

धारी फेरी जय गई जय नेव धराई, मुंह मोड़
वाते करे जय ताखो आई, बांध मुडेरौ उतरा
जम दिये दिखाई—यह कहावत खीपर है, किन्तु

इसका रूपक राजसे बांधा गया है अर्थात् जयतक
मकानकी नींव पड़ती है राजसे बड़ा सद्भाव रहता
है, जब मकान बनकर ताख तक पहुंच जाता है, तब
उससे मुंह मोड़कर बाते करते हैं और जब मकान
मुडेरौ तक बन जाता है, तब राज यमकी तरह
दिखाई देता है और उसे लोग अलग कर देते हैं।
यह कहावत खीपर इस तरह घटती है कि पहले
खी बड़े धाबभगतसे पुरयका ध्यादर करती है, कुछ
अत्रस्थ्या हो जानेपर मुंह मोड़कर बाते करती है
और बार्दक्य प्राप्त हो जानेपर मनमाना व्यवहार
करती है।

धारी सोवे उठे सवेरे, चाको नाह दरिहर घेरे—
जो देखे मोता है और सवेरे उठता है, वह दरिद्रो
नहीं होता।

चाह पीर अलिया, पकाई धी खीर, हो गया दलिया
अच्छा करने जाय और घुरा हो जाय, तब क०।

अलिया एक पड़ुं'चे इधे फूकीर छे। यह भीख मांगते
मांगते एक औरतके पास पड़ुं'चे और उसे खीर पकाते
इधे देखकर लन्दो'ने उससे पूछा कि क्या पकाती छे।
उस औरतने कहा कि दलिया पकाती छे। फूकीर यह
सुनकर तथाम्ब कचहर चल दिया। उसके जानिके बाद
उस औरतने खीरको देखा तो उसे खीरकी अगह दलिया
मिला। इसपर उस औरतने उपरोक्त मसल कही।

चाह पुरुखा तेरी खतुराई, मांगा गुड़ लादी खटाई
स्पष्ट। करनेको कहा जाय कुछ और करे कुछ,

श

शंका डायन मनसा भूत—शंका ही डायन और
मनसा ही भूत है।

शकल चुडेलकी मिजाज परियोंका—(च० ज०)

नीच खानदानमें पैदा होकर ऊंचे श्रेणियोंके पुरुषोंका
सा मिजाज करना।

शकल भूतकी सी, नाम अलवेले लाल—
नामके अनुसार रूप न हो, तब क०।

शकर खोरको शकर, मूजीको टकर—(मु०) जो
जिस लायक होता है, ईश्वर उसको वैसाही देता है।

तब क०।

चाह पुरुखा मेरे चातुर खानी, मांगी आग उठा
लाया पानी—(मु०) ऊ० दे०।

चाह वह तेरी खतुराई, देखा मूसा कहे बिलाई—
देखे कुछ और करे कुछ अर्थात् वहाना करे, तब क०।
चाह मियां काले, खूय रंग निकाले—(मु० च०)
नई रंगत लानेपर मसजरीकी तौरपर क०।

चाह मियां नाकवाले—(मु०) जो अपनेको बड़ा
मानता है, उसको क०।

चाह मियां बांके तेरे दगलेमें सौ सौ टांके—
(मु० च०) लिफाफेको क०।

चाहीका भाई—जो पागलपनकी बाते करे, उसे क०।

चाही नरको जान तू, पूरा अपना मोत।

जो राखे बिन लामके, तुभसे पोत परीत-स्पष्ट।

बिया तो वह माल है, जो खरचत दूना होय,

राजा, राव, चोरटा छोन न सकी कोय—स्पष्ट।

वृन्दावन सो बन नहीं, नन्द गामसो गाम।

वंशी बट सो बट नहीं, कृष्ण नाम सो नाम—

स्पष्ट।

वेद पुराण संत मत यह। सकल सुरुत फल-

राम संनेह—(तुलसी) स्पष्ट।

वेही मियां दरवारको, वे ही मियां खूदा फूक

नेको—एक ही ध्यादमी सब कुछ करे, तब क०।

वैसहि ताको फल मिले, जैसा बीज बुधाय।

नीम बोयके बालके, गांडा कोई न धाय—

जैसा जो करता है वैसा फल पाता है।

जिन्हि वीतो निहचै तितो, दैत दई पड़ुं'चाय।

शकर खोरको मिते, अँसे शकर भाय ॥ (हन्द)

को जिमके सुनासिब था मँदू'ने किया पैदा।

यारोंके लिये चौहटे चिड़ियोंके लिये फाँदे ॥ (शकर)

शकर दिये मरे, तो जहर क्यों दीजे—दे० "गुड़
दिये मरे"

शठ सन विनय, कुटिल सन प्रीती—कुटिलोंसे

विनयी तथा कुटिलोंसे प्रेम नहीं करना चाहिये।

शतरंज चौपड़ पोथी खोई, भगवत चर्चा मर्पोने।

खोया रास भक्तियों भक्ति, हरि जश खोया
टप्पोंने—(नागरो दास) स्पष्ट ।

शतरंज नहीं सद् रंज है—शतरंजमें सौ रंज हैं—
इसमें सोचना बहुत पड़ता है, इसलिये क० ।

छाड़ शतरंज काम रंज भक्ति भारी है ।

शत्रोऽरपि गुणाः वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि—
(सं०) शत्रुका भी गुणगान तथा गुरुका भी अत्र-
गुण कहना चाहिये ।

शमाका पुश्त और कह बराबर है—(सु०) मोम-
पत्तीकी रोशनीका आगा पीछा दोनों बराबर है ।
भले आदमीको क० । बुरेकी उपमा चिरामसे दी
जाती है, जिसके पीछे छाया पड़ती है ।

शमाकी रोशनी जलते तलक और दीयेकी
रोशनी महशर तलक—(सु०) दीया शब्द दुमानी
है जिसका अर्थ देना भी है । यहाँ अर्थ दान करनेसे
है । महशर=विचारका दिन ।

शमाके सामने चिरामकी क्या ज़रूरत—क्योंकि
चिराममें रोशनी कम होती है ।

शरहमें शरम क्या—व्यवहारमें शरम नहीं चाहिये ।

शरण गुरुकी आशयके, जो सुमिरे सिया राम ।
यहाँ रहे आनंदसे, अंत वसे हरिधाम ॥

स्पष्ट ।

शराय कायस्थोंकी घुट्टीमें पड़ती है—कायस्थ
जन्मसे ही शराय पीते हैं ।

शरायखवार हमेशा खवार—शरावी हमेशा तबाह
रहते हैं ।

शर्मकी वह नित भूखी मरे—जो वह खाने पीनेमें
शर्माती है वह भूखी ही रहती है, क्योंकि जब नई
वह घरमें आती है तब शर्माती है । खाने पीनेमें
शर्म करनेवालेके लिये क० ।

शर्म से कुत्तीस्त कि पेश मरदां विआयद-
(फा०) शर्म कौन कुतिया है कि मर्दको घरमें कर
सके । बेशर्म या बेहयाको धरंगते क० ।

शलीतेमें मेल लश्करमें शोख न रखले—जेबमें
कील कांटा न रखले और जेबमें शोखको भरती न
करे । शेष लश्करमें थोड़े होते हैं ।

शब्द भेदको लखा नहीं तो क्या ही पुस्तक

चीन्ह लिये ? (जो) दिल दिल-वरसे मिला
नहीं तो क्या (हो) करवा कोपीन लिये—
बिना सबी भक्तिके ऊपरी आदम्बरसे कुछ नहीं
होता ।

नप माला छाया तिलक, छरे न एकी काम

मन काँचे नाचे हया, साँचे राचे राम ॥ (विहारी)

यह कहावत साधुओंके लिये क० ।

शशि तारा निशि हैं तऊ, रवि बिन रहत मलीन-
स्पष्ट ।

शहदकी छुरी—अच्छे शब्दों द्वारा घात करनेपर क० ।

शहद लगाकर चाटो—जब किसी कागज़की मियाद
बच जाती है, तब क० । दे० “नालिय करो” ।

शहद सुहागा घो, मरी धातका जी—इनतीनोंसे
धातु पुष्ट होती है ।

शहरकी सलाम, दिहातका दाल भात—
शहरमें छातिर किसी मनुष्यकी सलामसे को जाती
है और देहातमें भोगनसे ।

शाखा मृगकी यह मनुसाई, शाखाते शाखापर
जाई—जिनको पहुंच थोड़ी दूरतक रहती है, उन्हें क० ।

शागिर्द कहर, उस्ताद ग़ज़य—नौकर और मालिक
दोनोंके अत्याचारी होने पर क० ।

शागिर्द रपता रपता वा उस्ताद मिया शुद—
धीरे धीरे चेला भी गुरु हो जाता है ।

शादी, खाना आवादी—ब्याहते घर बसता है ।

शादी ग़मी सबके साथ हैं—हुए छल सबके
लिये है ।

शादी है, कुछ गुड़ियोंका ब्याह थोड़ा ही है—
यह उस समय कहा जाता है, जब मनुष्य ब्याहके
समय कम खर्च करता है ।

शानमें क्या जुपुते पड़ेगे—(सु०) अभिमानीको क० ।
शामके मुर्देको कबतक रोवे—अगले कैसे पूरा
पड़ेगा । सारी रात कोई नहीं रो सकता ।

शाम भई दिन ढल गया, चकई दीनी रोय ।
चल चकवे वा देशमें, जहाँ शाम कभी ना होय—
स्पष्ट । दे० “बकवा घरई दो जने”

शायाश मियां तुम्हको, नूते मोह लिया मुम्हको—
(सु० ज०) स्पष्ट ।

शाहका माल भूईं पड़े दूना—धनिकोंका धन देनेसे ही बढ़ता है।

शाहके सचाये कमबख्तके दूने—(व्य०) जो कम मुनाफेसे माल बेचता है वही साहूकार है, जो बहुत मुनाफा खाता है, उसका काम बहुत दिन नहीं चलता।

शाहजहाँ बूढ़े बगलमें दड़ी, खाते पीते चिपचिप पड़ी—जब किसीको बुढ़ापेमें कष्ट होता है, तब क०।

इस भयलका निकाल इस कहानोसे है :—जब शाहनशाह शाहजहाँ हवाबख्तको प्राप्त हुआ और वह समय उसको सुखसे व्यतीत करनेका था, उसी समय वह अपने पुत्र औरंगजेब हारा कौद कारके बन्दी गृहमें डाल दिया गया, उस समय उसको सुख करनेके बदले दुख मिगने लगा; तबसे यह कहानी प्रचलित है।

शाहिद वार वार, मुकद्दमेवाले पार पार—
दे० “नाथ चढ़े भगडालू छावे”

शिकारके चक्क कुतिया हगासी—जब कोई कामके चक्क, जो चुराता है, तब क०।

शिकारको गये और खुद शिकार हो गये—
जब कोई किसीको परास्त करनेकी नियतसे जाता है और खुद परास्त होकर आता है, तब क०।

शिकारमें हल्दी—यसगुन है। पहिले हल्दी वांटेके जाओ तो शिकार नहीं मिलता।

शिकारी शिकार खेल, चूतिया साथ फिरें—
कामवालोंके साथ निकम्मोंके रहनेपर क०।

शिव जपे न राम जपे, न हरिसे लावे हेत।

वे नर ऐसे जायंगे, ज्यों मूलीके खेत—स्फट।

शिव शिव रटे, तो संकट कटे—स्फट।

शिव दधोचि हरिचन्द नरेशा, सहे धर्मलनि कोटि फलेशा—(तुलसी) परोपकारार्थे कष्ट सहनेके लिये क०।

शीतल शिप दाहक भई कैसे, चकइहिं शरद चाँदीनी जैसे—(तुलसी) जैसे शरदकालका चन्द्रमा, जो सपको उल्लास्यो है, चकईके विरह-व्यथाको बढ़ाता है, उसी प्रकार वह सुन्दर शिवा जो श्रीसीताजीको रामचन्द्रजीने दी थी, व्यथा देनेवाली सी प्रतीत हो रही थी। अच्छी शिवा भी

जब घुरी मालूम पड़े, तब क०।
शीनके शटके (या शडुप्ये)—जो ‘स’ को जगह ‘श’ उच्चारण करते हैं, उनपर क०।

एक मनुष्य जो घोड़ी को फारसी पढ़ी थी, सुदैव कीमती जगह शीन घोड़ा करता था। एक दिन वह घूमते घूमते बनियेकी दुकानपर गया। बनियेने उससे पूछा कि आप कौन है, उत्तर दिया कि मैं एक गौदागर हूँ। आपका नाम क्या है? यमान अली। आपकी ज्ञात क्या है? कहा शैवद। पुनः बनियेने पूछा, आप बेचते क्या हैं? कहा शूरी। किस रंगकी? कहा, ग्याह, शफेद, गल शख, शोयनी, शरनई, शफा तालू। वासयमें किसी शब्दमें शीन नहीं है।

शुकवारकी बादली, रहे शनीचर छाये। ऐसा कहते भड्डरी विनु, वरसे ना जाय—(क०)
शुकवारको यदि बदली उठे और शनिवार तक बनी रहे तो बिना वरसे नहीं रहती। “घाघ कहे छन घाघनी” ऐसा भी कोई कोई कहते हैं।

शुक सारी राखे सवे, काक न राखे काये। मान होत है गुणनते, बिन गुण मात न होय—
(चुन्द) स्फट।

शुतर वे मुहार—बिना नकेलका ऊट। उहंड मनुष्यको कहते हैं।

शुभ अरु अशुभ सलिल सय वहहीं, सुरसरि कोउ न अपावन कहहीं—नीच पुरुष भी बड़ोंके या सज्जनोंके साथमें पड़कर बड़ा या सज्जन बन जाता है। सामर्थ-वानको कुछ भी दोष नहीं है।

शुभस्य शीघ्रम्—शुभ कार्यमें विलम्ब नहीं करना चाहिये।

शूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव—
(सं०) जब कोई बिना लड़ाई किये किसीका हक न दिया चाहे, तब क०।

शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना, बैठ वरासन कहहिं पुराना—(तुलसी) कलिधर्मपर क०।

शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना, मेलि जनेऊ लेहिं कुंदाणा—(तुलसी) क० दे०।

शेख चंडाल, न छोड़े मक्खी न छोड़े घाल—
देदू मनुष्यको ध्यंगते क०।

शेखने कोएको भी दया दी है—कौवा सब जान-
वरसे घबुर होता है किन्तु शेख उससे भी कहीं बढ़
चढ़के घबुर होते हैं।

इस कहानीका निकास यों है :—किसी गेहूँने एक
कौबेको पकड़ना चाहा। इन्तलिये वह अपने मुँहमें
एक शोटीका टुकड़ा लेकर चतुर्वन्त जमीनपर सो रहा।
संयोगवश ज्यों ही एक कौबेने उसके गरीरपर बैठ उस
टुकड़ेको लेना चाहा त्यों ही उस धूर्तने उसको चोंच
अपने मुँहसे पकड़ो। कौबेने हटकारा पानेके लिये
उसकी ज्ञात पूछो। लेकिन वह गेहूँ उस कौबेका
बाध्यनारिक भाव समझ गया। इस कारण वह हटगासि
उसको चोंच अपने दाँतोंके बीच दबाके बीबा "शेख"

शेखसादी शीराज़ी, आशिकोके यादशाह माशू-
कोंके काज़ी—(मु०) शेखसादीकी तारीफ़में क०।

शेखी और तीन काने—कूठी शेखी करनेपर क०।

शेखीका मुँह काला—स्पष्ट।

शेखीघोरेसे कहा 'तेरा घर जलता है।' कहा,
'धलासे, मेरी शेखी तो मेरे पास है'—स्पष्ट।

शेखी सेठकी, धोती भाड़की—कूठी शेखीपर क०।

शेखोंकी शेखी पठानोंकी टर, यहाँ न धोवेंगे
धोवेंगे घर—यह मसल शेख और पठानोंके स्वभाव
पर क०।

शेर और शख्र बांधे—दे० 'एक तो भाल'

शेरका एक ही भला—अगर लड़का सपूत हो तो
एक ही अच्छा है।

शेरका खाजा बकरी—शेखी खुराक बकरी है।

शेरका जूठा गीहड़ खाय—प्रतापियोंके प्रतापसे
कितने छोटे लोग जीते हैं, तत्र क०।

शेरका बच्चा शेर ही होता है—वीरके वीर ही पुत्र
जन्म लेते हैं।

शेरके बुरकेमें छीछड़े खाते हैं—जो बे-इज़्जतीसे
अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उनपर क०।

शेर पूत एक भलो, सौ सियारके नाहिं—
वीर पुत्र एक ही अच्छा है, सैकड़ों, कायर अच्छे
नहीं।

भरनेको गुथी प्रभो मधमूखों गवैरपि,

एकपन्द्रसती पनि मध तारा गवैरपि।

शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं—न्यायी और
प्रतापी राजाके अच्छे राज्य प्रबन्ध पर क०।

शेरशाहकी दाढ़ी बड़ी, या सलीमशाहकी—
छोटी छोटी सी बातोंके लिये आपसमें लड़ने पर
व्यंगसे क०। शेरशाह सुर और सलीमशाह सुर
बाप बेटे थे, जिन्होंने सन् ई० १५४२ से १५४४ तक
दिल्लीमें यादशाह की थी।

शेरोंका मुँह किसने धोया—उन छोटे लड़कोंको
क० जो साफ़ सयरे नहीं रहते। औरतोंका अक्सर
पेसा झुवाल रहता है कि लड़कोंको साफ़ सयरा
रखनेसे नज़ा लग जाती है। इसी जोड़की दिहाती
मसल है—“कहाँ कपिला भी सँचवी है।”

शेरोंके शेर ही होते हैं—वीरके वीर ही पुत्र पैदा
होने पर क०।

शैतानकी आँत—(मु०) लम्बो चीज़ पर क०।

शैतानकी खाला—(मु० ज०) दुष्ट औरत पर क०।

शैतानके कान फाटे—(मु०) जदिल कार्य करने-
वालेको क०।

शैतानके कान बहरे—(मु० ज०) जो किसीकी नहीं
सुनता, अपने मनकी करता है, उसे क०।

शैतान जान न मारे, हीरान तो झरूर करे—
स्पष्ट।

शैतान तूफ़ानसे खुदा निगहवान—(मु० ज०) जो
बहुत अत्याचारी हो जाता है, उस पर क०।

शैतानने भी लड़कोंसे पनाह मांगी है—स्पष्ट।

इसपर एक कहानी है कि :—किसी शैतानकी लड़कोंके
साथ खेलनेमें बड़ा आनन्द मिलता था। एक दिन वह
गदहके रूपमें उनके बीच घिबने आया। लड़कोंने उसे
देखते ही उनको पीठपर सवारो करनी आरंभ कर दी।
चार लड़के तो आसानीसे उसकी पीठपर बैठ गये, और
जब पाँचवेंको स्थान नहीं मिला तब वह उसकी दुममें
बाँध बांध कर बैठ गया। वह दुष्ट शैतानके लिये पसन्द
धी गया और लड़कोंसे दार मानकर भाग गया।
उत्पत्ती लड़कोंको क०।

शैतान सिरपर चढ़ रहा है—कोधके प्रेगमें जब
कोई सराब काम करने लगता है, तत्र क०।

शैतानसे उयादः मशहूर—(मु०) किसी मगहूर
आदमीके विषयमें क०।

शैले शैले न माणिक्यं मीक्तिकं न गजे गजे ।

साधयो नहिं सर्वत्र चंदनं न घने घने—(सं०)

जैसे सब पहाड़ोंमें माणिक्य, सब हाथियोंमें मोती,
सब वनोंमें चंदन नहीं होता, उसी तरह सब जगह
साधु भी नहीं मिलते ।

घर घर घंघ न होत घाति गत्र रज न दर दर ।

तर तर सुकर न होत गांरि पतिव्रता न घर घर ॥

तन तन सुमति न होत मलयगिरि होत न वन वन ।

फधि फधि नधि नहिं होत सुक्त जल होत न घन घन ॥

रन रन सर न होन है अन जन होत न भक्ति हरि ।

नर हरि निरखि कविच कधि सय नर होत न एक सरि ॥

शौक दाद इलाही है—शौक ईश्वरकी देन है । शौक—

व्यसन ।

शौकीन बुद्धिया चटाईका लहंगा—बेमेल बात,
या नदीदेकी बनावट पर क० ।

शौकीन घोधी कमलकी चोली—ज० दे० ।

श्याम सुरभि पय विशद अति, गुण न करहिं
तेहि पान—शकल देखकर नहीं भूलना चाहिए, गुण
देखना चाहिए, क्योंकि गाय काली होती है पर
उसका दूध अमृत-तुल्य है ।

श्रीगणेश करो—कामका आरंभ करो ।

श्रीमद चक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि
मृगनयनीके नयन शर, का अस लागु न जाहि—
स्पष्ट ।

स

सइयांके अरजन भैयाके नाउँ, पहन थोड़ में
सासुर जाउँ—(ज०) उस स्त्री पर क० जो अपने
पतिकी कमाईको भाईका कहकर अपने ससुराल
लाती है ।

सइयां गये परदेश अब डर काहेका—(ज०)
दुश्चरित्र स्त्री पर क० । अब कोई देखने रोकनेवाला
नहीं है ।

सइयां गये विदेस में तो कात कात मुई,

आगरेका चरखा घुरहानपुरकी रुई—(ज०) जिसका
पति विदेशमें है उसका कहना है । विहार प्रान्तमें
जो लोग कश्युतली नचाते हैं (जिसे गुलाबो सिताबो
का नाच कहते हैं) वह ऐसे ही गीत गाते हैं ।

सइयां गये लदनी, लदाइन झड़ा झड़ा, सौके
पचास किये, चले आये घर—(५० ज०) जो कोई
व्यापार करता है और उसमें हानि उठता है, तब
उसपर ब्यंगसे क० ।

सइयां जान विदेशको, कथा हाट न खोल ।
हुनर देख मेरे हाथका, फातू सूत अनमोल—

(ज०) पतिको विदेश जानेसे रोकनेके लिये कहती है ।

सइयां तेरे फारने, जल बल हो गई राख । पतसे
में बेपत भई, पंचनमें गई साख—(ज०) परकीया
विरहिनी नायिकका कहना है ।

सइयांने इस दुनियांमें, लाखों रुपये चट्टे; कधी न

लाये लड़ू पेड़े, घेर खिलाये खट्टे—(ज०) धनाढ्य
सूम पतिके प्रति खोका कहना है ।

सइयां परदेश मजा लूटत हुईं, चूतड़ उठाय
चूल्हा फूंकत हुईं । रोटी तो खात नीक लागत
हुईं, चासन मांजत.....फाटत हुईं—
जो परदेशमें अकेले रहते हैं, उन पर क० ।

सइयां भये कोतवाल अब डर काहेका—(ज०)
जब कोई बड़प्पनको प्राप्त होता है, तब उसके
अधित कहा करते हैं ।

सईसोंका काल, मुं शियोंकी बहुतात—अग्निशि-
तोंको भौकरी मिले और शित्तोंको न मिले, ऐसी
जगह पर क० ।

संख राजाओ सोबो साधू, जो सुख पावे काया—
आज कलके साधुओं पर ब्यंगसे क० ।

संख बाजे, सत्तर बला भाजे—घरमें शंख बजनेसे
सब बला विपत्ति दूर हो जाती है । हिन्दुओंका
ऐसा विश्वास है ।

संग आमद, व सहत आमद—(फा०) पत्यरकी
चोट बड़ी कड़ी होती है । विपत्ति पर विपत्ति पड़
तब क० तथा कठिन समयमें मुस्तेदीसे काम करने
पर क० ।

संगत अच्छी बैठके, खीये नागर पान । छोटी
संगत बैठके, कट्टे नाक और फान—स्पष्ट ।

संगत कीजे साधुकी, हरे औरकी व्याधि ।
ओछी संगत नीचकी, आठों पहर उपाधि—
स्पष्ट ।

संगतकी फूटका अल्लाहवेली—संगतकी फूटसे
ईश्वर बचावे ।

संगतसे फल होत है, वही तिली वही तेल ।
जात पांत सब छोड़के, पाया नाम फुलेल—
स्पष्ट ।

संगतसे फल होत है, संगतसे फल जाय—
थच्छे साथसे फल होता है और धुरे साथसे फल
जाता रहता है ।

संगत फल देखिय तत्काला, काक होहिं पिक
चकड़ मराला—(तुलसी) सत्संगके महात्मपर क० ।

एक चीरने मरते समय अपने लड़केको उपदेश दिया कि
कभी सत्संगमें न जाना, नहीं तो मूखे मरोगे । लड़का
बापकी गिषा पर यज्ञांतक दृष्ट था कि किसी फकौर
और पंडितकी बात नहीं सुनता था । एक दिन वह
पैसी स्थानमें गया जहाँ कथा हो रही थी । वहाँ उसने
अपने कामोंमें लगे देखा । देवात् वही समय
उसके पैरमें काँटा लगा जिस लिये उसे कोनसे चंगली
निकालनी पड़ी । उस समय कथामें यह प्रसंग चल
रहा था कि दिवताके परकाँई नहीं होती । इतना
उसको सुनाई दे गया । कुछ दिन बाद उसने कहीं
चोरी की । किसी मनुष्यने उसके पकड़ा देनेका इकरार
किया और देवीका रूप बनाकर गतकी उसके घर जाकर
कहा, 'तुमने मेरी पूजा नहीं की इसलिये मैं तुम्हें मार
आऊँगी ।' पड़िले तो चीरने देवीकी मिमती की और
ज्योंही चीरीका साग भेद कहा बाहरा था, थोड़ी उसे
दौबालमें देवीकी परकाँई दिखाई दी । उसे कथाकी
बात याद आ गई कि दिवताके परकाँई नहीं होती, इस-
लिये उसे देवीपर संदेह हुआ और उसे बनापटी समझ-
कर मारके निकाल दिया । उस तरह उसने अपनी और
अपने साथियोंकी जान बचाई, नहीं तो सबके सब मार
जाते । जब उसे कथापर विश्वास हुआ तो बराबर कथा
सुनने जाने लगा । चीरे चीरे सब चीर भंग हो गई ।
ऐसी महिमा सत्संगकी है ।

संगति दोष लगे सबे, कईं जु सांचे पैत ।
कुटिल बंधू संगमें, कुटिल बंधू गति नैत—

(विहारी) संगतका दोष सभीको लगता है । खोटी
देवी भौंहेके साथ नैनके रहनेसे ये भी खोटे देवी
चालके हो गये हैं ।

संगति सुमति न पावहीं, परे कुमतिके धंध ।

राखो मेलि कपूरमें, हींग न होति सुगंध—
(विहारी) कुतुहिके काममें पड़नेसे मनुष्यको संगतसे
भी उमति नहीं होती, जैसे हींगको कपूरमें डालके
रखनेसे भी उसमें कपूरकी सगंध नहीं होती । तात्पर्य
यह है कि जन्मगत दोष किसीका नहीं हटता ।

संग सोई तो लाज क्या ?—पास सोई तो फिर
गरमें किस बातकी ?

एतौ लाज न सोइति बाल, रघो भीन गहि वृक्षत लाल ।

लौत कति साँची दरसावे, संग सोवे अच सुचरिं बिपावे ॥

संतनकी वाणी सुने, प्रेम सहित जो कोय ।
गंगादिक सब तीर्थ फल, यिन अरुनाने होय—
स्पष्ट ।

संतोष परम सुखम्—(सं०) संतोषका होना ही
परम सुख है ।

संदलके छापे सुँहको लगे—आयोबांद है ।

संदेशन खेती नहीं होय—संदेश भिन्नवानेसे खेती
नहीं होती, मिदहत करनेसे होती है ।

संध्या देइ सबेरे पाये, पूत भतारके आगे धावे-
दुराई करने पर क० ।

संपति केश सुदेश नर, नवनि दुहुन इक वानि ।

विमौ सतर कुचनीच नर, नरम विमौकी हानि—
(विहारी) संपत्तिके बढ़नेसे बाल और अशुद्धे पुरुष
नर होते हैं । ऐश्वर्यमें देखे हुए कुच और नीच
मनुष्य संपत्ति जाने पर नर होते हैं ।

संपत्तिकी जोक, विपत्तिका यार—श्री संपत्तिकी
साथी है और सच्चा मित्र विपत्तिका साथी है ।

संपनसे भेडा नहीं दलिहरसे टूट्टां—निष्प्रयोजन
भगड़ा करने पर क० ।

संवर जाय सौ काम, पहले पड़े सो दाम—

(ज्य०) जो काम पूरा हो जाय उसीको काम सम-
झना चाहिये और जो अपने पास दाम था जाय,
उसीको दाम समझना चाहिये ।

सकल तीर्थकर आई तुमड़िया, तो भी न गई
तिताई—जन्मगत दोष किसीका दूर नहीं होता।

सकसेना कायथ घुरा, खत्री घुरा सरीन, वैश्या
सुत वाम्हन घुरा, मुगल घुरा तुरीन—कायस्थोंमें
सकसेना, खत्रियोंमें सरीन कुछ नीचे समझे जाते
हैं; तीसरेका कहना ही क्या है और चौथेकी राम
जाने।

सकुचो पूँछे बसत विप, मस्तक बसे भुजंग।
केहरिके नखमें बसे, तिरिया आठों अंग—
बिच्छकी पूँछ, सपंके मस्तक और सिंहके नखमें
विप रहता है, परन्तु खीके सर्वांगमें रहता है।

सखी करीम पड़े एड़ियां रगड़ते हैं, बखील
मूसलोंसे मोतियोंको तोड़ते हैं—दाता और उदार
पुरुष दुःख पाते हैं और कंजूस सुमड़ोंकी मौजसे
कटती है।

सखीका खज़ाना कभी खाली नहीं होता—
दे० "राम नामके कारने"।

सखीका वेड़ा पार और सूमकी मट्टी ख़ार—
स्पष्ट।

सखीका बोल वाला, सूमका मुंहकाला—स्पष्ट।

सखीका सर वुलन्द, मूजीकी गोर तंग—
(मु०) दाताका सिर ऊंचा रहता है और कृपणकी
कम तंग रहती है।

सखीकी कमाईमें सचका साभा—क्योंकि वह जो
पैदा करता है दूसरोंको घाँटकर खाता है।

सखीकी नाय पहाड़ चढ़े—दाताको प्रत्येक कार्यमें
सफलता मिलती है।

सखीके मालपर पड़े—सूमकी जानपर पड़े—
दाताकी धनपर बीतती है, सूमकी जानपर बीतती है।
सखी दासकी डलिया ढोवें, अपना काम करत
ही रोवें—जो अपने धरका कार्य कुछ भी न करे और
दूसरोंका करे, उसको क०।

सखी न सहेली, भली अकेली—(ज०) जो खी
अपेली रहती है, उसका क०।

सखी सखावतसे फलता है, अडू अदावतसे
जलता है—दानो दानसे फलता है और आदो दाहसे

जलता है।

सखी सूमका लेखा बराबर—जब किसी सूमका
सुक्रसान हो जाता है, तब क०।

सोबत बीर्ययात भयो बाल,
भार देखि कछो निर दित बाल।

सुनो पखानो मापत होइ;

सखी सुन लीखो सम होइ ॥ (मो० र० की)

सखीसे भेटा नहीं तो सूमसे क्यों विगाड़े—
कुछ नहींसे कुछ अच्छा है।

सखीसे सूम भला जो तुरत दे जवाब—जो
आदमी देनेमें बहुत ढाल मटोल करे, उसपर क०।

सगरी उमरमें पाप कमाई, जनम न कीना पुत्र
लेवनहारा आ गया, तो तन मन हो गया सुत्र—
स्पष्ट। यह सन्तोंका कहना है।

सगरी रैन घन घन फिरी, भोर भये कुपैसे डरी
(ज०) झूठे सतीत्वपर क०।

सगरे गांव घूरे आइली, कहीं न देखी लवदा।
पटना शहर भइसन देख लीं, कांख तरे लवदा—

(पू०) पटना जिस समय व्यवसाइयोंका केन्द्र था
उस समय यह बात कही जाती थी। लवदा=प्राप्ति

सगरे घरमें रंगके मुसरी सिर पटकके मरजा—
जब किसीपर विपत्ति पड़ती है, तब क०।

सगों दिन सगाई कैसी, भलों दिन भलाई कैसी—
स्पष्ट।

सच और झूठमें चार अंगुलका फरक है—
आंख और कानमें चार अंगुलका फरक है। कानसे
सुनना कठोर और आंखसे देखना सच्चा है।

बनर च गुरी चारकी, साँच झूठमें होय।

सच माने देखी भई, सुनो न माने कोय। (शब्द)

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है—यदि
किसीका सच्चा दोष भी कह दिया जाय, तो उसे
धुरा लगता है।

सच कहे सो मारा जाय—उ० दे०।

साँच कहते पगही खावें, झूठे बड़बिधि पदनी पावें।

(हरियन्त)

सचकी सँडखी घुरी होती है—क० दे०।

सच बराबर पुण्य नहीं, झूठ बराबर पाप—स्पष्ट।

सच बात कड़वी लगती है—दे० "सच कहना
ध्याधी लड़ाई"

सच बोलना, सुखी रहना—स्पष्ट ।

सच बोल, पूरा तोल—(व्य०) सदैव सच बोलना
चाहिए और पूरा तौलना चाहिए ।

सचाईमें खुदाकी सुरत है—स्पष्ट । सत्य ही पर-
मेस्वर है ।

सचिच वैद्य, गुरु तीन जो प्रिय बोलहिं भय
आस । राजधर्म तन तीन कर, होहिं बेगही नाश
स्पष्ट ।

सच्चा जाय, रोता आय, झूठा जाय, हँसता आय
अदालतमें झूठेको ही जीत होती है ।

सच्चे का जमाना नहीं—जब कोई सच कहे और
वसकी बात न मानी जाय, तब क० ।

सच्चेका धोल धाला, झूठेका मुँह काला—
सचको सदैव धर और झूठेको अपयश मिलता है ।

सच्चेकी वायडे, झूठेकी न वायडे—सच्चेकी पारी
फिर आसिगी पर झूठेकी फिर नहीं आनेकी ।

सच्चे रामको छोड़के, पूजे देवी भूत । आप
विचार मर गये, उनसे मांगे पूत—स्पष्ट ।

सच्चे लोग कसम नहीं खाते—झूठी बातको सच
साबित करनेके लिये ही कसम खाई जाती है ।

सजने चले परदेशको, घर छोड़ेपर जीत ।
जो मैं ऐसा जानती, चायुक लेती छीन—यह

खबर न थी कि परदेश चले जायंगे ।

सजने तुम झूठ मत बोलो, खुदाकी सांच
प्यारा है । कहावत है झूठेकी यों "कधी सांचा
न हारा है—स्पष्ट ।

सजने यिन ईद कौसी—(मु० ज०) जब किसी स्त्रीका
पति परदेश चला गया हो, तब वह दुःखते क० ।

सजने सकारे जायंगे और नयन मरेंगे रोय ।
बिधना ऐसी रैन कर, कि भोर कधी ना होय—
स्पष्ट (प्रयत्नसतपतिका)

सजनी हम हूँ राजकुमार—दे० "पाँचों सवारोंमें
मिलना ।"

सजने चित कय हुँ न धरे, दुर्जन जनके बोल
पाहन मारे ब्रामको, तो फल देत अमोल—

स्पष्ट : पाहन=पत्थर ।

सड़ी साहिबी और गचका सोना—(च०)

हैसियतके बाहर काम करनेपर क० । गच=चूनेकी छत

सत मत छोड़े सूरमा, सत छोड़े पत जाय—

कर्त्तव्य न भूलना चाहिये, सत्यका पालन सदा
करना चाहिये ।

सतचन्तीकी लाज बड़, छिनारीकी घात बड़—

सती स्त्रियाँ शीलवान और ब्यभिचारिणी स्त्रियाँ
बेहया होती हैं ।

सतरा यहतरा—बेकार आदमीपर क०, क्योंकि सत्तर
यहतरकी उधर्म आदमी किसी कामके लायक नहीं
रहता ।

सत द्वारा, गया मारा—जो अपना सत छोड़ देता है,
वह मारा जाता है ।

सति कुच और भुजंग मणि, सिंह केश गज दन्त
सूर कटारी विप्र धन हाथ लगे जय अन्त—

विना मरे इनकी यह चीजें हाथ नहीं लग सकतीं ।

सत्तमानके बकरा लाये, कान पकड़ सिर काटा
पूजा थी सो मालिन लगे गई, मूरतको धरचाटा—

(कवीर) आजकलकी प्रचलित मूर्तिपूजापर तागा है ।

सत्तर कोने सातके, और सोलहके विषे सौ
व्याज घुरा रे बालके, यासूँ राखो भौ—(व्य०)

सूदखीरको क० ।

सत्तर चूहे खाके यिझी हजकी चली—जब कोई
आजन्म पाप करके पीछे पुराय करने लगता है, तब

क० । जो बैरया बुद्धावस्थामें धर्म पयपर चलने
लगती है, उसपर क० ।

(सं) इइ बेया तपभनन ।

पल्लव चगीपर अनन्त बने चपुत पर
सात मूस खायके बिलारी बनी भगतिन । (उ०प०)

गोपियोंका कर्त्तव्य चहबसे श्रीकृष्णके विषयमें ।

सत्तू खाके शुक क्या ?—(मु०) तुच्छ वस्तु पाकर
तारीफ़ क्या ? शाला शुक खाकर शुक करता है,

अच्छा मियोंको खराब करता है—(बंगला)

सत्तू बांधके पीछे पड़ना—किसी तरहसे दम नहीं
लेने देना । इइ संकल्प यनाये रखना ।

सकल तीर्थकर आई तुमड़िया, तो भी न गई
तिताई—जन्मगत दोष किसीका दूर नहीं होता।

सकसेना कायथ बुरा, खत्री बुरा सरीन, वैश्या
सुत चाम्हन बुरा, मुगल बुरा तुरीन—कायस्थोंमें
सकसेना, खत्रियोंमें सरीन कुछ नीचे समझे जाते
हैं; तीसरेका कहना ही क्या है और चौथेकी राम
जाने।

सकुची पूंछे वसत विप, मस्तक वसे भुजंग।
केहरिके नखमें वसे, तिरिया आठा अंग—
बिच्छकी पूंछ, सपके मस्तक और सिंहके नखमें
विप रहता है, परन्तु खीके सर्वांगमें रहता है।

सखी करीम पड़े पड़ियां रगड़ते हैं, बखील
मूसलोंसे मोतियोंको तोड़ते हैं—दाता और उदार
पुरुष दुःख पाते हैं और कंजूस सूमड़ोंकी मौजसे
कटती है।

सखीका खजाना कभी खाली नहीं होता—
दे० "राम नामके कारने"।

सखीका वेड़ा पार और सूमकी मट्टी खार—
स्पष्ट।

सखीका बोल वाला, सूमका मुंहकाला—स्पष्ट।

सखीका सर बुलन्द, मूत्तीकी गोर तंग—
(मु०) दाताका सिर ऊंचा रहता है और कृपणकी
कम्र तंग रहती है।

सखीकी कमाईमें सबका साक्षा—क्योंकि, वह जो
पैदा करता है दूसरोंको वांटकर खाता है।

सखीकी नाय पहाड़ चढ़े—दाताको प्रत्येक कार्यमें
सफलता मिलती है।

सखीके मालपर पड़े सूमकी जानपर पड़े—
दाताकी धनपर बीतती है, सूमकी जानपर बीतती है।
सखी दासकी डलिया ढोवें, अपना काम करत
ही रोवें—जो अपने घरका कार्य कुछ भी न करे और
दूसरोंका करे, उसको क०।

सखी न सहेली, भली अकेली—(ज०) जो खी
अकेली रहती है, उसका क०।

सखी सखावतसे फलता है, अदू अदावतसे
जलता है—दानी दानसे फलता है और डाही डाहसे

जलता है।

सखी सूमका लेखा बराबर—जब किसी सूमका
सूक्तान हो जाता है, तब क०।

सोबत बीर्यपात भयो बाल,
भार देखि कछो निर छित बाल।

सुनो पबलागो भापत होइ,

सखी सूम लेखी सम होइ ॥ (श्लो० १० कौ)

सखीसे भेदा नहीं तो सूमसे क्यों विगाड़े—
कुछ नहींसे कुछ अच्छा है।

सखीसे सूम भला जो तुरत दे जवाब—जो
आदमी देनेमें बहुत ढाल मटोल करे, उसपर क०।

सगरी उमरमें पाप कमाई, जनम न कीना पुत्र
लेवनहारा आ गया, तो तन मन हो गया सुन्न-
स्पष्ट। यह सन्तोंका कहना है।

सगरी रैन वन वन फिरी, भोर भये कुपैसे डरी
(ज०) झूठे सतीत्वपर क०।

सगरे गांव घूरे अइली, कहीं न देखी लवदा।
पटना शहर अइसन देख लीं, कांख तरे लवदा—

.. (पू०) पटना जिस समय व्यवसाहियोंका केन्द्र था
उस समय यह बात कही जाती थी। लवदा=प्राप्ति

सगरे घरमें रंगके मुसरी सिर पटकके मरजा—
जब किसीपर विपत्ति पड़ती है, तब क०।

सगों विन सगाई कैसी, भलों विन भलाई कैसी—
स्पष्ट।

सच और झूठमें चार अंगुलका फरक है—
धांख और कानमें चार अंगुलका फरक है। कानसे
धनना भटा और धांखसे देखना सच्चा है।

बनर चंगुरी चारको, बाँध झूठमें होय।

सब माने देखी भई, सुनो न माने कोय। (श्रु०)

सच कहना आधी लड़ाई मोल लेना है—यदि
किसीका सच्चा दोष भी कह दिया जाय, तो उसे
बुरा लगता है।

सच कहे सो मारा जाय—ऊ० दे०।

साँच कहते पनही खावें, झूठे बहुविधि पदभी पावें।

(हरिचन्द्र)

सचकी सँडसी घुरी होती है—ऊ० दे०।

सच बराबर पुण्य नहीं, झूठ बराबर पाप—स्पष्ट।

काम निन्दित समझे जाते हैं।

बाकी है दिलमें श्रेष्ठके हसरत गुनाहकी।

काबा करेगा मुँह भी ओ दादी निवाहकी। (जीक)

सब आदमी एकसे नहीं होते—जब अच्छे आदमी पर कोई सन्देह करे तब वा सभियोंको कोई छुरा समझे, तब क०।

(१) नरहरि निरवि कवित कहि, सब नर हीत न एक हरि

(२) सब इकसे हीत न करूँ हीत सबमें करे,

कपरी खादी बाफ़नी लोह तथा गमबरे। (हन्द)

सब उस्तरे बांधो, कोई तलघार न बांधो।

फर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो—

नामर्दी पर क०। अंगरेज़ी राज्यके धामसू एकट-पर ताना है।

सब एकही धैलीके बट्टे हैं—एक थापके लड़के, एक

घरके रहनेवाले वा, एक साथ रहनेवाले। जहां

सबका स्वार्थ एक सा हो वा सबकी राय एक हीसी हो, वहां क०।

मवफ़ और तयक़ दोनों मौजूद हैं—(मु०) पाठ

और भोजन दोनों। मौलवी सारा काम अपने विद्यार्थियों हीसे लेते हैं। स्कूलके नौकरोंको भी क०।

सब काम थका, तो छुरा काम तका—(प०) जब

कोई काम नहीं चलता तब छोटे काम पर निगाह जाती है।

सब कामोंमें पुरी, कोई न कहे अधूरी—अभि-

मानी स्त्रीको व्यंगसे क०।

सबकी मैया सांभ—संध्या सबको धाराम देने-

वाली है।

सब कुत्ते स्वर्गको जायँ तो जूठी पत्तल कौन चाटे-

दे० 'सब ही कूकर'।

सबके गुरु गोवर्द्धनदास—गुरु घंटालको क०। दे०

'गुरु घंटाल'।

सबके दांव अंडे बंधे, हमारे दांव कुड़क—

अपनी निष्फलता पर क०।

सबके दाता राम—ईश्वर सबको देनेवाला है।

सबके पांय नउनियां धोवे, धोचत व्याप लजाय-

जो दूसरेका कार्य तो करता है परन्तु अपना करते

हुए धमांता है, उसे क०।

सब केहू बोले तो नीक लागेला, फपूर वहू धोले
टिहुकं घरेला—(प०) सास अपनी उस पतोहूको
कहती हैं, जिससे घृणा कांती है।

सब कोई झूमर पहरे, लंगड़ी कहे "हमहू"—

(ज०) जो जिस वस्तुके योग्य न हो उसकी इच्छा करे, तब क०।

सब कोई मिलियो, लंगोटिया न मिलियो—

क्योंकि वह सब भेद जानता है।

सबको डेल, मैं अकेल—स्वाधियों पर क०।

सब गहनोमें चन्दन हार—चन्द्रहार सब गहनोमें

अच्छा होता है। यह सबमें अच्छा है।

सब गुड़ मिट्टी हुआ—जब बना बनाया काम बिगड़

जाता है, तब क०।

सब गुणकी आगर धीया नाक बिना बेहाल—

(प० ज०) जो बके बहुत और काम थोड़ा करे, उसे क०।

सब गुणकी आगर, फूटल गागर—सब गुणसे

परिपूर्ण है परन्तु घरमें केवल फूटी गगरी है।

सब गुणकी पूरी, कौन कहे अधूरी—(ज०) मूख

स्त्रीको व्यंगसे क०।

सब गुण भाग ठकुरवा मोर, अपने पहक अपने

चोर—जब रत्नक ही भक्तक यन जाता है, तब क०।

सब गुण भरी वैतरा सोंठ—वैतरा सोंठ बहुत गुण-

कारी है। जो सब गुणोंमें सम्पन्न हो, उसपर क०।

व्यंगसे नन्ट स्त्रियों पर भी क०।

सब घटा देते हैं मुफलिसके गरज मालका मोल

प्रत्येक मनुष्य गरीबके मालका कम दाम लगाते हैं

अथवा गरीबोंकी उपेक्षा प्रत्येक स्थानोंमें होती है।

सब छोड़ दे पर मत न छोड़े—सत्यके महात्मके

लिये क०। जो अनेक कष्ट सहने पर भी अपने

सत्यको नहीं छोड़ता, उसकी अन्तमें विजय होती

है। हरिश्चन्द्रादिकी कथा तो इस विषयके प्रमाण

स्वरूप प्रसिद्ध ही हैं, अब एक नया दृष्टान्त दिया

जाता है।

सत्यवान नामक किसी राजाने सचपुर नामक एक नया

नगर बनाया। उसे आबाद करानेके लिये सभने सब

घरोंमें इत्तहार बंटवा दिया, कि बहुत दिनोंके इस नगर-

इत विद्विमं परे जो विप्र, तपस्य मन न करो उद्विग्न ।

चोइहि बबसि षट्ठाथम करो, सनुषाबांधके पाके परी॥”

(लो० सं०)

सत्सू मन भत्सू जब घोले जब खाय, धान
बिचारे भल्ले, कूटे खाये चह्ले—(पू०) दे० “धान
बिचारे.....”

सत्य कहहिं फविनार सुभाऊ, सय विधि
धगम धगाध दुराऊ—(तुलसी) स्त्री-चरित्रपर क० ।

सत्य वचन विश्वास न करहीं । वायस इव

सय हो सन डरहीं—(तुलसी) वहमी मनुष्यको क० ।

सत्यं द्रूयात् प्रियं द्रूयात् न द्रूयात् सत्य-
मप्रियम्—(सं०) सत्य बोलो, मीठा बोलोंपर ऐसा

सत्य भी न बोलो जो दूसरेको अप्रिय लगे ।

सत्य समान धर्म नहिं दूजा—(तुलसी) स्पष्ट ।

सत्ये नास्ति भयं क्वचित्-सचको डर नहीं ।

सदका दिए रहू यलाय, उधारदिये गाहक जाय

(व्य०) सदकसे सब बला दूर होती है और उधार

देनेसे गाहक दूर जाता है ।

सदा ईद नहीं जो हलुआ खाय—(मु०) पैदू तथा

व्यंजनप्रिय आदमीपर क० ।

सदा एक ही रुझ नहीं नाव चलती—सब दिन

एकसे नहीं जाते ।

सदा किसीकी नहीं रहती—भाग्य परिवर्तनपर क० ।

सदा न कागकी रची, गल पीतमके बाँह ।

ढलते ढलते ढल गई, तहवरकी सी बाँह ॥

सदाकी पदनी उरखों दीप—(ज०) जो अपने स्वा-

भाविक दोषको कोई चहाना लगाकर छिपाता है,

उसपर क० ।

सदाके उजड़े नाम वस्तोराम—(च०) हैसियत

या गुणके अनुसार नाम न रहनेपर क० ।

सदाके दानी मूसलके नौ टके—कजूसको व्यंगसे

क० । तात्पर्य यह है कि यह सदाके दानी हैं, एक

टकेकी चीजके नौ टके देते हैं ।

सदाके दुखिया, नाम चंगे खाँ—(च०) हैसियतके

प्रतिकूल नाम रहने पर क० ।

सदा दिन एकसे नहीं जाते—दुल और छल आद-

मीको हुआ ही करता है ।

सदा दिवाली रून्त घर, जों गुड़ गेहूँ होय—

जिसके घरमें खाने पीनेकी कमी नहीं है उसके घर
नित्य त्यौहार है । ‘जो घर गेहूँ होय’ भी कहते हैं ।

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय ।

सदा न योवन थिर रहे; सदा न जीये कोय—

सदा दिन एकसे नहीं रहते—

(१) चलि बलि लखि दुति तद्विष घन,

सुखद समो नानि खीय ।

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय ।

(२) चै नसे जुगनु चमकली यह बनेकी बात है,

सूद की कि सर्वदा रहती नहीं बरनात है ।

(३) रहती है कब, बहारे जवानो तमाम सन,

मानन्द दूये गुल, इधर आई उधर गई ।

सदा नाव कागजकी, बहती नहीं—कचा काम

थोड़े दिनमें बिगड़ जाता है ।

सदा फूली फूली चुनी है—भाग्यवान आदमी

पर क० ।

सदा भयानी दाहिनी, सन्मुख रहें गणेश ।

पांच देव रक्षा करें, ब्रह्मा, विष्णु, महेश—

मंगलाचरण है ।

सदा मियां घोड़े ही तो रखते थे—किसीको व्यं-

गसे क० ।

सपूती रोवे टूकोंको, और निपूती रोवे पूतोंको—

जिसे जन है उसे धन नहीं और जिसे धन है उसे

जन नहीं ।

सपूतोंके कपूत और कपूतोंके सपूत—अच्छोंके

दुरे और दुबोंके अच्छे । जैसे उग्रसेनके कंस और

हिरण्यकश्यपके प्रह्लाद ।

सफ़र कई: विसियार गोयद द्रोण—(फा०)

मुसाफ़िर कितनी कूठी बातें करते हैं ।

सफलताका मूल विश्वास है—बिना विश्वासके

किसी काममें सफलता नहीं होती । सं० विश्वासो

फल दायकः ।

सफेदीपर स्याही—(व्य०) लेख पर क० । (१)

तात्पर्य यह है कि जो बात लिख दी वह बदल नहीं

सकती । (२) सुदृतीमें कलप लगाकर बाल काले

करनेवालेको क० । सफ़ेद कागज़पर स्याहीसे लिख-

कर मुकरना और सुदृतीमें बाल काले करना दोनों

काम निन्दित समझे जाते हैं।

बाकी छे दिवसमें गेलके हसरत गुनाहकी।

कान्हा करेगा हुं छ भो ओ टादी नियोहकी। (जीक)

सब आदमी एकसे नहीं होते—जर अच्छे आदमी पर कोई सन्देह करे तब वा सभीको कोई बुरा समझे, तब क०।

(१) नरहरि निरखि कबित कदि, सब नर होत न एक छदि

(२) सब एकसे होत न कह होत सबमें जेर,

कपरो खादी भाफती छोड़ तवा शमशेर। (हन्द)

सब उस्तरे बांधो, कोई तलवार न बांधो।

कर दो यह मुनादी, कोई दस्तार न बांधो—

नामदी पर क०। अंगरेजी राज्यके आर्मस् एक्ट-पर ताना है।

सब एकही धैलीके घट्टे हैं—एक बापके लड़के, एक धरके रहनेवाले वा एक साथ रहनेवाले। जहाँ संवका स्वार्थ एक सा हो वा सबकी राय एक हीसी हो, वहाँ क०।

सबक और तबक दोनों मौजूद हैं—(मु०) पाठ और भोजन दोनों। मौलवी सारा काम अपने विद्यार्थियों हीसे लेते हैं। स्कूलके नौकरोंको भी क०।

सब काम धका, तो बुरा काम तका—(प०) जब कोई काम नहीं चलता तब छोटे काम पर निगाह जाती है।

सब कामोंमें पूरी, कोई न कहे अधूरी—अभि-मानी स्त्रीको व्यंगसे क०।

संवकी मैया सांभ—संध्या सबको आराम देने-वाली है।

सब कुत्ते स्वर्गको जायँ तो जूठी पत्तल कौन चाटे दे० 'सब ही बूकर'।

सबके गुरु गोबर्द्धनदास—गुरु घंटाळको क०। दे० 'गुरु घंटाळ'

सबके दांव अंडे बच्चों, हमारे दांव कुड़क—अपनी निष्कलता पर क०।

सबके दाता राम—ईश्वर सबको देनेवाला है।

सबके पांय नउनियां धोये, धोवत आप लजाय—जो दूसरेका कार्य तो करता है परन्तु अपना करते हुए धमांता है, उसे क०।

सब केहू बोले तो नीक लागेला, कपूर बहू बोले टिहुकं घरेला—(प०) सास अपनी उस पतोहुंको कहती हैं, जिससे घृणा करती है।

सब कोई झूमर पइरे, लंगड़ी कहे "हमहू"—

(ज०) जो जिस वस्तुके योग्य न हो उसकी इच्छा करे, तब क०।

सब कोई मिलियो, लंगोडिया न मिलियो—क्योंकि वह सब भेद जानता है।

सबको डेल, मैं अकेल—स्वाधियों पर क०।

सब गहनोमें चन्दन हार—चन्द्रहार सब गहनोमें अच्छा होता है। वह सबमें अच्छा है।

सब गुड़ मिट्टी हुआ—जब बना बनाया काम बिगड़ जाता है, तब क०।

सब गुणकी आगर धीया नाक बिना बेहाल—(प० ज०) जो बके बहुत और काम थोड़ा करे, उसे क०।

सब गुणकी आगर, फूटल गागर—सब गुणसे परिपूर्ण है परन्तु घरमें केवल फूटी गगरी है।

सब गुणकी पूरी, कौन कहे अधूरी—(ज०) मूर्ख स्त्रीको व्यंगसे क०।

सब गुण भरा ठकुरवा मोर, अपने पहरू अपने खोर—जब रत्नक ही भक्तक बन जाता है, तब क०।

सब गुण भरी वैतरा सोंठ—वैतरा सोंठ बहुत गुणकारी है। जो सब गुणोंमें सम्पन्न हो, उसपर क०। व्यंगसे नष्ट स्त्रियों पर भी क०।

सब घटा देते हैं मुफलिलके गरज मालका मोल प्रत्येक मनुष्य गरीबके मालका कम दाम लगाते हैं अशक्त गरीबोंकी उपेक्षा प्रत्येक स्थानोंमें होती है।

सब छोड़ दे पर मत न छोड़े—सत्यके महात्मके लिये क०। जो अनेक कष्ट सहने पर भी अपने सत्यको नहीं छोड़ता, उसकी अन्तमें विजय होती है। हरिश्चन्द्रादिकी कथा तो इस विषयके प्रमाण स्वरूप प्रसिद्ध ही हैं, अथ एक नया उदाहण दिया जाता है।

सुवधान नामक किसी राजाके सत्यपुर नामक एक नया नगर बनाया। उसे आबाद करनेके लिये उसने सब घरोंमें दण्डहार बंटवा दिया, कि बहुत दिनों तक नगर-

में एक मीठा, खगंगा को एक सूँघने तक रहगा। सब सरहदकी खोजीके सोदागर अपना अपना माल खीकर आये, जिसका माल विकनेसे बाकी रह जायगा, उसको कोमत सरकारी, खजानेसे मिलेगी, बहुतसे दूकानदार अपना अपना माल खीकर आये और सबका माल बिका भी, जो बच रहा उसका दाम राजाके खजानेसे मिल गया। एक मनुष्य खोहेकी एक प्रतिमा बनवा कर मंत्रोंसे सिद्ध करके लाया था जिसका नाम उसने "दरिद्र" रखता था और उसका मूल्य एक लाख रुपये रखता था। उसमें गुण भी उसके नामानुसार ही था इसलिये कोई उसे खरीदनेमें राजी न हुआ। जब राजाको खबर लगी कि सबका माल बिक गया किधन एक आदमीकी बीजका दाम नहीं दिया गया तब उसने उस मनुष्यको बुलाया और उस प्रतिमाका हवाल पूछा। उस मनुष्यने कहा कि मैंने इस प्रतिमाको मन्त्रसे सिद्ध किया है। यह जिस घरमें रहगी वहाँ पूरा "दरिद्र" भा जायगा। इसीलिये इसे किसीने नहीं लिया। राजाने अपनी प्रतिज्ञानुसार उसे ले लिया और उसका मूल्य एक लाख रुपये देकर उसे अपने तोमेलानेमें रखना दिया। रातको स्वप्नमें एक सुन्दर स्त्रीने आकर कहा कि राजा! मैं जाती हूँ। राजाने पूछा कि तू कौन है और क्यों जाती है? उसने उस स्त्रीने कहा कि मैं लक्ष्मी हूँ, तेरे यहाँ तो दरिद्र आया है यदि तू उसे न ल्यायगा तो मेरा रहना तेरे यहाँ नहीं हो सकता। राजाने कहा मैं यदि उसे बहपन न करूँ तो मेरी प्रतिज्ञा भंग होती है इसलिये तू भले ही चली जा मेरे इस्ते न छोड़गा। कुछ देर बाद धर्म आया। उसने भी कहा कि राजा! तेरे घर दरिद्र आया है और लक्ष्मी भी चली गई, अब मेरा रहना यहाँ ठीक नहीं, इसलिये मैं जाता हूँ। राजाने उसे भी जाने दिया। इसी तरह सब गुण क्रम क्रमसे आकर राजाकी सूचना देकर विदा हो गये। अन्तमें सब आया और कहा कि राजा! मैं भी जाता हूँ। राजाने उससे पूछा कि तू कौन है और क्यों जाता है? तब उसने कहा कि मैं सत्य हूँ। तेरे यहाँ दरिद्रका निवास है और लक्ष्मी धर्म कर्म सब गुण छोड़ गये अब तेरे यहाँ मेरा निवास नहीं हो सकता। इतना सुन राजाको बड़ा क्रोध आया और उससे बोले कि "रे दूट। तेरे ही पीछे तो मैंने सबका ग्याग किया अब तूही मुझे छोड़ आइता है तो जा अब मैं किसीका सुँघ न दूँगा और न अपना सुँघ किंसेकी दिसाऊँगा इतना कह बदर तानकर भी रहा हूँरे दिन सत्य छोटक आया

और राजासे कहा कि "राजा मैं भा गया" राजाने आदि यत्न किये हुए उससे पूछा कि तू कौन है और क्यों आया है? सत्यने कहा कि मैं सत्य हूँ मैं सारी पृथ्वीमें घूम चुका परन्तु तेरे समान मेरी सत्यादा रखनेवाला कोई न मिला इससे कहीं मेरा जो न लगा इसलिये लौटकर तेरे ही पास आया हूँ मुझे भंगीकार कर। राजाने उसे भंगीकार किया। इसी तरह क्रम धर्म आदि सब गुण लौटा आये, अन्तमें लक्ष्मी भी भा गई। तात्पर्य यह है कि बिना सत्यके कर्म नहीं, बिना कर्मके धर्म नहीं और बिना धर्मके लक्ष्मी नहीं रह सकती अर्थात् सब गुणोंमें सत्य ही बड़ा है इसलिये इसे कर्म न छोड़े।

सब जगं रुठा रुठने दे, एक वह न रुठा चाहिये— ईश्वरके प्रति उस मनुष्यका कहना है जिसका वक्त, खराब ध्याता है और सत्य कोई उससे फिरंट हो जाते हैं।

दूटे कौं न राजा, जासों कइ, नाहिं कामा, एक तोषी महाराजा, और कौनको सराहिये। दूटे कौं न भाई, जासों कइ ना बसाई, एक तूही है सचाई, और कौन पास जाये। दूटे कौं न शव, मिथ, पाठों याम एक चिप, रावरे चरनकेरे नेह कौं निवाहिये। सब जगडे बडा, एक ही है अमूठा, सब चूँगेमें बंगूडा, एक तू न रुठा चाहिये। (चहान दरवेश)

सय जहाज़ एक ही घाट लंगर करते हैं— ईश्वर-वादियों पर कं। देय, जाति, धर्म, और मत भिन्न भिन्न होने पर भी उद्देश्य सबका एक ही है।

(१) आकाशान् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्। सर्वं देव नमस्तारः केजवं प्रनिगच्छति ॥ (महाभारत)

(२) निहतै रस्तीके हैं सब देर फेर, सब जहाज़ोंका है लंगर एक घाट. (हाली) सय जीते जीके भगड़े हैं, यह तेरा है यह मेरा है। जय चल वसे इस दुनियांसे, नां तेरा है ना मेरा है। (नज़ीर)

मय जैते जीके भगड़े हैं, सब पूको तो क्या खाक हुए। जब मीतसे आकर काम पड़ा, सब किस्से कृजिये पाक हुए। (नज़र)

सबज़ी मत देव गँवारनकी, हँडिया भंर भात विगारनको—गँवारोंको भोग न-पिलाना चाहिये।

— भांग पीनेसे भूल बहुत लगती है।

सीवनको उभकरन भीजनकी भीम सी।

संयज्ञीमें सुरखी, खबर लाये धुरकी—भंगेड़ियों-
को क०।

संय झूठे तो मर गये, तुम्हें न आइं ताप—
बहुत झटकेको क०।

संय टाट पड़ा रह जायेगा, जय लाद चलैगा
घनजारा—(नज़ीर) मरनेपर कुछ साथ न जायगा,
संय यहाँ पड़ा रह जायगा।

(१) दोलत दुनियां माल खजाना, रङ्ग मलमल खासा।

कोई न तेरे संग चलेगा, जंगल होगा वासा (साहबमाल)

(२) डेरत ही हादिकी हलका डिराय जँई

रोरे सम घोरे रय बहल बिलोनी।

सोहने हवैशपर मोहने रङ्गी करो

परोसी नितबिनी ते परो रङ्गि जावेनी ॥

पालकीमें हालकी खबर न रङ्गी जन

कालकी कलेशरकी फौजे उठ धावेनी।

संभ्रम सिपाही साही चलत मरातिवते

नीवत बजाइनेकी नीवत न धावेनी ॥

संय तीरथे थार थार, गंगासागर एक थार—
गंगासागरमें कष्ट बहुत होता है, इसलिये क०।

संयते कठिन जात अपमाना—जातका अपमान
नहीं सहा जाता।

यद्यपि दाक्ष दुख जग नाना,

सयते अधिक जाति अपमाना। (तुलसी)

संयते लघु ही मांगियो, यामें करे न सार। थलि
पै याचत ही भये, याचन तन कर्तार—(तुन्द)
मांगना सबसे सुरा है।

संय तोड़े, मेरा एक रथ न तोड़े—(ज०) धुरी
श्रवस्वापर क०। दे० “संय जग रडा”।

संय दिन चंगे, तिहवारके दिन नंगे—धुरी श्रव-
स्वापर क०। दे० “श्रीर दिन खीर पूरी”

संय दिन जात न एक समान—जय कोई संपत्ति-
वाली मनुष्य दरिद्र हो जाता है, तब उसकी दया
देखकर क०।

संय घड़ कड़िगो कटकी पूछ—जय कोई कार्य
पूरा होनेमें थोड़ा बाकी रह जाता है और उसमें
झूठ कटिनाई पड़ती है, संय ऐसा क०।

संय धान थारस पसेरी—जहाँ न्याय अन्याय,
मूर्ख परिश्रत, अच्छे दुरेका कुछ विचार न हो, यहाँ
क०। (व्य०) बहुत सस्तो चीज़पर भी क०।

संय नर काम लोभ रत मोधी, देव विप्र गुरु
संत धिरोधी—कलियुगकी महिमापर क०।

संय पंचन मिलि कीजे काज, हारे जीते नाहीं लाज
दे० “पंच पंच मिलि”

संय पीर छूटे, पकड़ी गईं थोथी नूर—जहाँ बड़े
बड़े दोषी तो बच जायें और कोई छोटा फँस जाय,
वहाँ क०।

संय पेड़ोंमें बड़ा जो बड़, आकाश थाकी चोटी
पाताल थाकी जड़, हरे हरे पत्ते लाल लाल फर,
अकबर यादशाह गोदी खर—

इस कदावतका निवास इस कदागोरीरुहे :—ककबर

बादशाह कविताके बड़े प्रेमी हैं, यह जानकर चार दिवा-

तियोंने अपनी कवितासे उन्हें प्रथम करमा पाड़ा। लोगने

तो छपरोक्त तीनों चरण बना जिये, पर चौथेसे न बन

सका। इसलिये वह सोच विचारमें बैठे थे कि एक

मसखरा छधरकी भा निकला। उसने चौथे चरणकी

पूर्ति कर दी। चारों दिशाओं दरबारमें पढ़ाये और

बाधा पाकर अपना अपना पद सुनाने लगे। तब तो पारो

पारोसे अपने पद सुना गये, जब चौथेने अपना पद

सुनाया तो सब दरबारी उसे धिक्कारने लगे और बादशाह

भी बहुत माराजु हुए। उस दिवातोंने जब यह समझा

कि उससे बड़ी भारी भूल हुई है तो उसने उस मसखरे-

का नाम बता दिया, उसने चौथा चरण बना दिया था।

बादशाहने उसे निघा गँवार देख रंजकर छोड़ दिया और

उसी चने ज मेकी पाशा दी।

संय मद् मद्दे ही विद्या मद् उनमाद्—संय नगोंमें
विद्याका नगा अधिक है, थोड़ी विद्या मनुष्यको
पागल बना देती है।

संय रात पीसा, ढकनीके उठाया—(पू०) अधिक
परिश्रम करके सामान्य लाभ हो, तब क०।

संय रामायन पढ़ गये सीता केकी जोय—
संय बात सुनकर भी जो नहीं समझता, उसे क०।

संय शरल लंगूरकी एक दुमकी फसर है—
(च०) भरी पोशाक पहिननेवालेको क०।

संय सड़के में अलग—(ज०) सिपा में और संय

तुमपर न्योद्धावर है । वनावटी प्रेमपर क० ।
 सब संसे मिट जायगा, (जय) होगा राम सहाय ।
 रानी उस भगवानसे, लीजें ध्यान लगाय—
 राजा नलका कहना दमयन्तीके प्रति वाहरियचन्द्रका
 गव्याके प्रति । हिम्मत न हारनेके लिये क० ।
 सब सुखके साथी हैं, दुखका साथी कोई नहीं—
 स्पष्ट है ।
 इसपर एक दृष्टान्त है कि :—एक लुटेरा सदैव विदे-
 गियोंको लूटा करता था और उसी धमसे अपने कुट-
 म्बका पालन किया करता था । एक दिन एक फकीर
 चला जाता था, वह लुटेरा उनको भी लूटने गया । तब
 फकीर साहबने कहा कि भाई एक बात मेरी भी सुन ले,
 पीछे तुम्हें अछब्यार है, तुम्हें लट लौकियो । लुटेरेने कहा,
 कछो क्या कहते हो । फकीरने कहा तू सबको इस तरह
 क्यों लूटा करता है ? उसने उत्तर दिया कि कुटुम्ब
 पालनेको । फकीर साहबने कहा कि तू उन खानेवालोंसे
 पूछ कि जिस समय भगवानके यहाँसे तुम्हें इस लूटनेका
 दंड मिलेगा उस समय तुम सब मिलकर उस दुःखको
 बट लीगे या नहीं । वह मनुष्य अपने घर गथा और
 बर्हा अपने लड़के वा स्त्रीसे यह बात पूछी ; सबने कान-
 पर टाप रक्कर कहा कि हम क्या लूटनेको कहते हैं,
 हम इसका दुख क्यों भोगेंगे । जब वह फिरफर फकीरके
 पास आया और उसी उत्तर सुनाया तो फकीर साहब बोले
 कि ऐ मूख ! खानेको सब भोजन और मार खानेको
 तू ही भकेला रहा । फकीरका कहना उसने दिलमें चुभ
 गया । उसने सोचा कि यह सब अथाय मेरे ही गलेपर
 रहा । उसी दिनसे उसने लटना छोड़ दिया । तात्पर्य
 यह है कि सब कोई अपने अपने सुखके साथी हैं दुखमें
 कोई पाव भी नहीं खाता होता ।
 सबसे बड़ी भूल, जो पाँचै सो चूख—भूलमें जो
 मिलता है वही खा लिया जाता है ।
 सबसे वेहतर है, मियाँ, साहब-सलामत दूरकी—
 दूर रहना अच्छा, बहुत घनिष्ठतासे आदर घट
 जाता है ।
 सबसे भला किसान, खेती करे और घर रहे—
 जो जीविकाके लिये विदेश जाते हैं, उनपर क० ।
 सबसे भली चुप—स्पष्ट ।
 (सं०) मौनम् सर्वार्थसाधकम् ।
 सबसे भले भीखके रोठ—मुफ्तखोरोंको क०

सबसे भले मूमलचन्द्र, करै न खेती भरे न दंड
 लुटेरोंको क० ।
 सबसे रल-मिल चालिये, जय लग पार वसाय,
 मिष्ट घवन मुख बोलिये, नेकी ही रह जाय —
 स्पष्ट ।
 सबसे हिलिये सबसे मिलिये, सबसे फीजे
 चाव । हाँजी हाँजी सबसे कहिये, बसिये अपने
 गाँव—स्पष्ट ।
 सब स्वांग बनते हैं पर रुपयेका स्वांग नहीं
 बनना — रुपयेका काम रुपयेसे ही निकलता है ।
 सब ही मारग साइयाँ आगे एक मुकाम । जोही
 सन्मुख हो रहा ताही सेती काम—सबको बड़ा
 समझना चाहिये परन्तु जिससे अपनेको काम पड़ा
 है उसको सुख करके बड़ा समझना ही बुद्धिमानों-
 का काम है ।
 एक दृष्टान्त है कि कारं मनुष्य सब पंचके साधुओंको
 सेवा किया करता था । उसने एक बार साधुओंका
 भंडारा किया और सब भेयके साधु इकट्ठे हुए । सबको
 बहुत अच्छे प्रकारके एकरी भोजन करावाये । जब सब
 साधु भी भन कर चुके तब उसने अपने गुदकी पत्रामेंसे
 प्रसाद लिया । किसी साधुने कहा, 'क्यों भाई यह अन्न
 क्यों किया, तुम्हें सबकी पत्रामेंसे प्रसाद लेना था' उसने
 उत्तर दिया कि 'महाराज सुनिये, जब लड़कीका विवाह
 होता है और जिस समय वरान आती है तब बरातियों-
 की दूल्हसे अधिक मिठावारी होती है, परन्तु लड़कीका
 दाजु लड़केको ही पकड़वाया जाता है । सो महाराज
 आप सब बराती हैं और गुद दूल्हके समान होती है
 इसलिये इतना अन्न किया । यह सुनकर साधु चुप
 हो गये ।
 सब ही कूकर काशी जायँ, तो पत्तल चाटै कौन—
 (प० ज०) सब कुत्ते स्वर्गको चले जायँ, तो जूठी
 पत्तल कौन चाटे । जब अयोग्य मनुष्य कोई काम
 करने जाय और न कर सके; तब क० ।
 सबै सुहाये ही लगै, बसे सुहाये ठाम, गोरे
 मुख वेदी लसे अरुन पीत सित स्याम—(बिहारी)
 अच्छी जगह रहनेसे सभी चीजोंकी शोभा
 होती है ।
 सबै हँसत करताल दे, नागरताके नांव । गयो

गरव गुणको म्वे, घसै गांवारे गांव—गरावके साथ गांवमें बसनेसे गुणका गर्व चला जाता है और उस चतुरको सब कोई ताली बजाके हंसते हैं।

सत्र कर मतमें, ता सुख लहे तनमें—घैर्य रलनेसे शरीरको छल मिलता है।

सत्रकी डालमें मेवा लगता है—समका फल अच्छा होता है।

सत्रकी दाद खुदा देगा—सताये हुएको धैर्य देते समय क०।

सत्र तल्ल अस्त, व लेकिन धरे शीरी दारद—
(फा०) धैर्य कहुआ है, किन्तु उसका फल मधुर होता है।

सयही जात चमारकी, विना चाम नहिं कोय।

विना चाम वह आप है, जिसको लखे न कोय—
निराकार परमात्माके लिये कहा है।

समाकी चूकी डामनी और डालका चूका बन्दर धरावर है—स्पष्ट।

समा विगारें तीन जन, चुराल चूतिया चोर—
स्पष्ट।

सभी भूमि गोपालकी यामे अटक कहा।

जाके मनमें अटक है सोई अटक रहा—पूर्वकालमें

सिन्ध नदी पार करना हिन्दू धर्मके विरुद्ध खतलाया जाता था। कहा जाता है कि १५८२ ई० में महाराज मानसिंहने अपने हिन्दू सिपाहियोंको नदी पार करनेके लिये कहा। सिपाहियोंके आनाकानी करनेपर उन्होंने उक्त मसल कही।

सभी सहायक सबलक, फोउ नहिं निबल सहाय पवन जगाघत आगको, दीपहि देत बुझाय—

(चन्द्र) बलवानके सब सहायक होते हैं निबलका कोई नहीं, हवा आगको जगाती है और दीपको बुझा देती है।

समभका घर दूर है—समभ होना बहुत मुश्किल है।

समभदारको मिट्टी खराब है—समभदार होपर सब कामका भार पड़ता है, इसलिये उसीपर गुराई-भलाई निर्भर है।

समभनेवालेकी मौत है—ऊ० दे०।

किसी समय पक्षधरके दरवारमें एक बटिया गवैका

गाना हो रहा था, सब कोई बीच बीचों-बीच झिपाने आते थे। बादशाहने पक्षधरमें आकर बौरबलसे पूछा कि क्या सब लोग गाना समझते हैं। बौरबलने उत्तर दिया कि समझनेवाले तो बहुत ही कम हैं अभी मैं उनको धटि देता हूँ। यह कहकर उन्होंने दरबारियोंको एमोषन करके कहा कि इस तरह सिर झिपाना अर्थात् पनाइकी बहुत बुरा लगता है। अब कोई ऐसी हकत करेगा तो उसका घर ले लिया जायगा। इसपर सब सफलकर बैठ गये। सरका झिपाना बन्ध हुआ और गाना चलता रहा। अन्तमें एक बहू मनुष्यसे न रहा गया। उसके सुँहसे निकल पड़ा, “समभदारकी मौत है।” तब बौरबलने बादशाहसे कहा कि यही एक मनुष्य गाना समझता है। तब ही इसके मुखसे पन्नाइके कारण ऐसे शब्द निकले, विना घर झिपाने इसकी क्या कष्ट ही रहा है।

सुकवि जननके श्रद्धयशी खातल दो कहु कौन।

पससुभवाय सरादिनी समुभवारकी मौन ॥

(सुरातीदान)

समभका और पत्थर हुआ—समभदारके मनमें जो बात बैठ जाती है उससे वह कभी विचलित नहीं होता।

समभकाये समभन नहीं, मन नहिं धरता धीर।
परालवध पहिले धनी, पाँछे बना शरीर—
स्पष्ट।

समभके सो गधा, अनाड़ीकी जाने यला—जो समभता है उसीकी खराबी है।

समभको न धूमको, बूँटा लेके जूझो—विना समभके किसी बातपर हठ करने पर क०।

समय करे नर क्या करे, समय समयकी यात।
किसी समयके दिन बड़े, किसी समयकी रात—
स्पष्ट।

समय चूकि पुनिका पछिताने—देखो “का बर्षा”

समय न धारंवार—अच्छा समय घड़ी घड़ी नहीं आता।

समय पड़ेकी यात बाज़ पर भपटे पगुला—
(गिरिधर) जय समय खराब आता है तब दुर्गल भी सबलको सताता है।

समय पाय तरुवर फले, केतक सींचो नीर—
समयसे पहिले कुञ्ज नहीं होता। समय आने पर
ही सब काम होते हैं। अथसमयमें अनेक यत्न करने-
पर भी नहीं होते।

समय समयकी यात है—दे० “कककी रागनी है”।

समय समय सुन्दर समी, रूप कुरूप न कोय—
अपने समयपर सभी अच्छे लगते हैं कोई धुरा नहीं
लगता।

समरथको नहिं दोष गुंसाईं। रवि पावक सुर-
सरिकी नाईं—(तुलसी) बलवानको दोष करने पर
भी दोष नहीं लगता। जब कोई धनवान कुकर्म
करे वा किसी पंडितसे भूल हो जाय, तब लोग
व्यंगसे क०।

गो चिचिचिन सयन हरि करणै,

बुध कछु तिनको दोष न धरहौं। (तुलसी)

समुझे मीत मीतके दिन—मित्रकी हालत मित्र ही
जानता है।

दृष्टि परे कड़ु मंदकुमार, बोलो बरन बरगसे बार।

कष्ट पखानो क्यों मति ऐन, सतुझे मीत मीतके दिन।

(खर संग)

समुन्दर क्या जाने दोजखका अजाध—आगका
कोड़ा नरकके कण्टको क्या जाने ? क्योंकि वह
आगहीमें रहता है।

समुन्दर सोखको दरया क्या ?—जो बड़ बड़
काम शुभमतासे कर लेता है, उसके लिये छोटा काम
कुञ्ज भी नहीं है।

सम्मन ऐसी प्रीतकर, जैसी करे कपास। जीते
तो हुरमत रखे, मुण चलेगी साथ—प्रीत कपासकी
तरह करनी चाहिये, जो जीते जी तन टककर इज्जत
रखती है और मरनेपर कफन धनकर साथ जाती है।

सम्मन ऐसी प्रीत कर ज्यों हिन्दूकी जोय।

जीते जी तो संग रहे मरे पै सत्ती होय—

स्पष्ट। उ० दे०।

सम्मन ऐसी प्रीत कर जैसे शकर घो, जात
भात पूछे नहीं जिससे मिल जाय जी—

स्पष्ट।

सम्मन चूड़ी काँचको कौड़ी कौड़ी देख, जब

गल लागी पीउके लाख टकेकी एक—स्पष्ट।
अच्छी संगतसे सामान्य चीज़का भी बहुत आदर
हो जाता है।

सम्मन धागा प्रेमका जिन तोड़ो चटकाय।
तोड़ पर जो जोड़ हो बीच गाँठ पड़ जाय—
स्पष्ट।

सम्मन वह दिन कौनसे जो सुखसे लाई प्रीत,
अब दुख दे न्यारे भये कौन गाँवकी रीत—
(ज०) स्पष्ट।

सम्मन वह फल कौनसे जो पक्के पै कड़वास,
कच्चे लगें सुहावने गहर करें मिठास—
मनुष्यकी तीन अवस्था पर क०। पक्का=बुझापा,
कच्चा=लड़कपन, गहर=जवानो।

सम्मन साँभ अंधेरमां भुल चाट मत चाल,
जान गँवावे एक दिन संग गँवावे माल—
(उप०) स्पष्ट।

सयाना कौआ खेलाय—जब कोई सयाना आदमी
नीचा देखता है, तब क०। दे० “सयानेका गू तीन
जगह”।

सयाना सो दीवाना—बहुत सयाना आदमी पाग-
लके बराबर है।

सयानेका गू तीन जगह—जो बहुत चालाक होते
हैं, वही घोखा भी बहुत खाते हैं।

दो मित एक साथ कहीं आ रहे थे। उनमेंसे एक तो
दीघासादा था, और दूसरा बहुत चालाक था। रास्तेमें
कहीं दोनोंके देरोंमें बिछा लग गई। जो दीघा था
उसने तो तुरंत अपना पैर भी डाला, परन्तु जो चालाक
था, उसने कहा कि यह बिछा है या नहीं इसका क्या
ठीक ? इसलिये उसी जगह लगाकर देखा। जब उसपर भी
उसी नियम न हुआ, तब उसने हाथको रूँघा, जिससे
उसकी नाकमें भी बिछा लग गई, इस तरह वह तीन
जगह गंदा हुआ। (मै०) से बड़ काविल से तीन ठाम
माख।

सरकारसे मिला तेल, पहले हीमें मेल—राजासे
अगर कोई तुच्छ वस्तु भी मिले, तो उसे अपना
सौभाग्य ही समझना चाहिये।

सरगसे गिरो खजूरे अँटकी—एक दुःखसे छुटकारा
पाते ही दूसरे दुःखमें फँसे, तब क०।

सरदारीका डंडा शटका है—जो अपनी ज्यतीत प्रतिष्ठाके प्रतिमानमें रहकर वर्तमान अवस्थानुसार काम नहीं करता, उसे क०।

सखीका मारा पनपताहै, अन्नका मारा नहीं पनपता—स्पष्ट।

सरधा ढाल जो पहने खावे, चाके टोटा कभी न आवे—जो अपने सामर्थके अनुसार खाता पहिनता है, उसको किसी बातकी कमी नहीं रहती है।

सरधा लागे कहलों मतार, ऊहो निकलल जातके चमार—(५० ज०) जलदीमें कोई काम किया जाय और उसका परिणाम बुरा हो, तब क०।

सरधस खाय भोग करि नाना, समर भूमि भा दुर्लभ प्राणा—(सुलसी) श्रुतप्रको क०, जो कामके वक्त पीठ दिलावे।

सरसों फूले फागमें और सांभी फूले सांभ, नाह कमी फूले फले, जो तिरिया हो बांभ—स्पष्ट।

सराफकी धौलीमें छोटा खरा एक—कुलीन घरमें नीच संबन्ध हो जाने पर क०।

सरायका कुत्ता हर मुसाफिरका यार—मुफ्त खोरके क०।

सराहल बहुरिया डोम घर जाय—(५० ज०) बहूको सराहो, तो मंगीके साथ निकल जाय। बहुत सारी करनेसे दिमाग खराब हो जाता है।

सरेसेका दट्टू बना फिरता है—निकम्मे आदमीको क०। सरसा दरमंगा झिलेका एक परगना है, वहाँके दट्टू भगहर हैं।

सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति—जब धनवानकी सेवा गुणी करते हैं और उसके आश्रयमें रहते हैं, तब क०। (१) धनवानमें सब गुण रहते हैं। (२) सब गुणियोंको धनवानका आश्रय ग्रहण करना पड़ता है।

यस्मात्सि विचक्षन्तः कुलीनाः स पण्डितः स युतवान् गुणकः स एव बला स च दर्शनैः सर्वे गुणाः... (भवेत्परि)

सलामत रहे बहू जिसका घड़ा मरोसा है—(ज० मु०) जिसका लड़का मर जाता है उसको धैर्य दिलानेके लिये क०।

सलाह न शुद, बला शुद—(फा०) जियाफत क्या

भी श्राफत थी।

सवाय न अजाय, कमर टूटी मुपनमें—तिफल परिधम पर क०।

सवारीकी सचारी ज़नाना साथ—घोड़ीकी सवारी पर क०।

सवाल दीगर जवाब दीगर—पूछा जाय कुछ और उत्तर मिले कुछ, तब क०।

सवेरेका भूला शामको लौट आवे तो भूला नहीं कहलाता—अपनी भूलको थाप ही जल्दी छपार ले, तब क०।

करी कलह तो बे गिबनु, र्वां पिय हिल वरमांभ।

भोर भयो सुखो नहीं, र्वां फिर आवे सांभ।

ससुरार सुखकी सार, जो रहे दिना दो चार—ससुरालमें बहुत न रहना चाहिये।

इसपर एक कहानी है। एक कायल अपनी ससुराल गया।

वहाँ अपनी अधिक चादर सरकार देखकर उसने पहिला मिसरा कहा। जब उसके सखिने (जो उसे अपने घर रखनेमें राजी न था) देखा कि इसको वहाँ रखनेका चस्का पड़ गया है, तब दूसरा मिसरा बनाकर उसमें ओढ़ दिया।

पूरी मसन यह है—ससुरार सुखकी सार, जो रहे दिना दो चार। रहे माय, पखवार, शायमें खुर्ग वगुनमें खारा। देखो “दूर जगई”।

सस्ता ऊँट महंगा पट्टा—दे० ‘दमड़ीकी घोड़ी’।

सस्ता गेहूँ घरघर पूजा—गेहूँ सस्ता होनेसे घरघर आनन्द होता है।

सस्ता रोये बार बार, महंगा रोये एक बार—(ध्य०) सस्ती वस्तु खराब होती है, क्योंकि वह रोज़ रोज़ बिगड़ती है और उसपर खर्च होता रहता है, पर महंगी चीज़का एकही दर्ज़े दाम ज्यादा लग जाता है और जल्दी बिगड़ती नहीं।

सस्ता हँसाये महंगा कलावे—(क०) सस्ता धन्य होनेपर लोग खुश होते हैं, और महंगा होने पर कष्ट पाते हैं।

सस्ती मेंडुकी टांग उठाकर देखते हैं—(व्या०) सस्ती चीज़को लोग बार बार इस्लिय देखते हैं कि कहीं ऐव तो नहीं है।

सस्तेको देख मालकर लेना चाहिये—(व्या०) सस्ती चीज़ अच्छी तरह देखकर लेना चाहिये।

सस्त्रों जाऊँ, या गोसों जाऊँ—(ज०) खुराओय-
के लिये जाऊँ या उपलोंके लिये?—एक गँवार खी
जंगलमें रोज़ इधनके लिये गोबर बटोरने जाती थी।
एक दिन कहीं उसने एक खुराओय पकड़ लिया।
उसने समझा कि खुराओय मुझे रोज़ मिलेगा।
इसीसे उक्त मसल कही।

सहज पके सो मीठा—जो काम उगमतासे हो जाय
वही अच्छा है।

सहजाइल कुलिया मुँह चाटे—दे० “कुत्ता मुँह
लगानेसे”।

सहता सहै, न सहता छाती दहै—जो बात सहने
योग्य होती है वह तो सही जाती है और जो असह्य
होती है उससे छाती जलती है।

सहनाईका बजाना और सत्तूका फांकना एक
साथ नहीं होता—दो विपरीत काम एक साथ नहीं
होते—दे० “लिट्टी गँडेरि”।

इस कि छोड़ एक रंग सुवाला। इसब ठठार फुलाचप गला
(तुलसी)

सहरी खाय सो रोज़ा रखखे—(मु०) सुखलमानोंमें
यह रिवाज़ है कि रोज़के दिनोंमें सूर्योदयके कुछ
पहिले खाना खा लेते हैं।

एक मियाँ साहबके पास एक कुत्ता था। एक दिन उस
कुत्तेने चनका खाना, जिसे उसने प्रातःकाल खानेके लिये
रखा था, खा डाला। इसपर मियाँ साहबने गुरहेमें था
उसी एक खंभेसे बांध दिया और कहा कि मेरे बदले
आज यही कुत्ता रोज़ा रखेगा, क्योंकि इसीने प्रातः-
कालका खाना खाया है।

सहरी भी न खाऊँ तो काफ़िर न हो जाऊँ—
दे० “रोज़ा न रखे”।

एक समय बहुतसे मुसलमान सहरी खा रहे थे। उनमें
एक मुसलमान ऐसा भी था जो रोज़ा नहीं रखता था।
उसको अपनी पातमें देखकर सबके सब कहने लगे, कि
तुम क्यों खाते हो? तुमको क्या रोज़ा रखना है, इसपर
उसने कहा कि जमाज़ भी नहीं पढ़ना है, न रोज़ा ही
रखता हूँ अगर सहरी भी न खाल तो क्या काफ़िर
ही जाऊँ।

सहस्र बाहु सुरनाथ त्रिशंकु, केहि न राजमद
दीन फलंकु—(तुल०) उद्यम पाकर सभीको अभि-

मान होता है और उसी अभिमानके कारण उनको
नीचा देखना पड़ता है। सहस्रबाहु, इन्द्र और
त्रिशंकु तीनोंको अपने अभिमानका फल भोगना
पड़ा था।

सहसा करि पछिताय विमूढा—(तुल०) मूर्ख
एकाएकी कार्य्य करके पछिताते हैं—

चरमा करि पाछि पकताहीं, कछदिं वेद, वष ते बुधनाहीं।

सहस्र गोपी एक कन्हैया—जब एक पदके लिये
हज़ार प्रार्थी हों, तब क०। एक कृष्णकी इच्छुक
हज़ारों गोपियाँ थीं।

सहस्र डूवकी मैं लयी, मोती लगा न हाथ।

सागरका क्या दोप है, हीन हमारे भाग—
अभागे मनुष्य कहा करते हैं।

सही गये, सलामत आये—(मु० ज०) जो रोज़-
गारके लिये विदेश जाय और खाली हाथ घर लौट
आवे, उसे व्यंगसे कहते हैं।

साईसी इत्म दरयाव है जामे सौ सौ बकसुआ
लगत है—साईसके कार्य्यमें भी हुनर चाहिये। (सभी
पेशमें कुछ न कुछ गुन रहस्य रहता है)। मूर्खको
भी व्यंगसे क०।

साईसोंका काल मुशियाँकी बहुतत—
साईस कम और गुमास्ते बहुत मिलते हैं। जब छोटे
आदमियोंको काम मिल जाय और इज़मतदार या
पद लिखेको न मिले, तब क०।

तामस रीधन साहबको घोड़ोंका बहुत शौक था। एक
दिन उन्होंने एक चरबी घोड़ा खरीदा। मुमयी सदर-
हीनने खैरखाही दिखाते हुए कहा कि इसपर अगर
पंजाबी साईस रक्खा जाय तो घोड़ेकी खिदमत रखनी
हो। साहबने अज्ञानके जमादारकी बुलाकर कहा, एक
पंजाबी साईस ला दो। तिस पधौस दिन बाद उसे बुला-
कर पूछा कि साईस मियाँ आ नहीं। उसने कहा, हम
में तपाय करता हूँ अभी मिला नहीं। यह सुन मुमयीने
कहा, कैसा बदज़ान है एक महीनेसे टाकसटोल करता
है, साईस नहीं ला देता। जमादारने कहा, पीर मुसद-
बदज़ानके कहना है। मैं बुरा नहीं मानता, आप साहब
है जो जो चाहे करे, पर साहबकीके हकक रकू बात कह-
नेमें कुछ ऐश नहीं, तकलीफ़ मुपाक हो, ये कुछ मौलवी
मुमयी नहीं है जो एकके बुलानेसे ही पान पड़े।

तो साईं व हैं, महीनोंकी सलाहमें एक पथ मिल जाय तो मिल जाय। यह सुन साइब बहुत ईंधि और जो मौलवी मुनगी छम्बेदवार बहाई बैठे। ये शरमिन्दा की गये और मुनगी सदबहो न भी मन की मन कड़कर दम माध रहे।

साईं अँखियाँ फेरियाँ, घेरी मुलकजहान। टुक इक भाँकी मिहर दी, लक्ष्मी करे सलाम—

(पंजाबी) ईश्वर जिससे विमुख होता है, संसार उसका बेरो हो जाता है और जिसपर, उसकी कृपा होती है, सब उसे बंदगी करते हैं।

साईं अपने चित्तकी, भूल न कहिये कोय। तबलग मनमें राखिये, जयलग फारज होय—

(गिरिधर) जबतक काम न हो जाय, तबतक थपना संकल्प किसीसे न करे।

साईं इस संसारमें भाँतिभाँतिके लोग। सबसे मिलके चैडिये नदी भाव संयोग—(गिरिधर) जैसे नदी पार होनेके समय एक नावमें सभी तरहके लोग इकठ्ठे हो जाते हैं, वैसे ही संसारमें सभी तरहके लोगोंके काम पड़ता है, इसलिये सबसे मिलकर रहना चाहिये।

साईं का घर दूर है, जैसे लाँघि खजूर। चढ़े तो चाखे प्रेमरस, गिरे तो सकनाचूर—ईश्वरका घर बहुत ऊँचा है जैसे खजूरका पेड़। यदि वहाँ तक पहुँच जाय तो (प्रेम) रस पीनेको मिलता है और यदि गिर जाय तो नष्ट हो जाता है।

साईं के दरवारमें, बड़े बड़े हीँ डेर, अपना दाना घोन लो, जिसमें हेर न फेर—ईश्वरके यहाँ किसी बातकी कमी नहीं है, मगर तुम्हारे नसीबमें जो क्या है वही तुम्हें मिलेगा। तात्पर्य यह है कि जो तुम्हें मिले, उसीमें संतोष करो, दूसरेकी ईर्ष्या मत करो।

साईं के सौ खेले हैं—ईश्वरके सौ तरहके खयाल हैं न जाने वह क्या किया चाहता है।

साईं को साँच प्यारा, झूठेका मालिक न्यारा—ईश्वर सबको प्यार करता है। झूठेका ईश्वर हीकोई दूसरा है।

साईं घोड़े मर गये, गद्दहन आयो राज। काग

हाथ पै लेत हैं, दूर कियो है याज—(गिरिधर) जहाँ अच्छोंकी क्रूर न हो और दुष्टोंका थावर हो, वहाँ कंग।

साईं तेरा आसरा, छोड़े जो अनजान। दर दर हांडे मांगता, कौड़ी मिले न दान—जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता उसे मांगसे भीख भी नहीं मिलती।

साईं तेरी यादमें, जिन तन कीना खाक। सोना उसके रुयक, ही चूल्हेकी राख—ईश्वरकी यादमें जिसने अपना शरीर मट्टी कर दिया, उसके लिये सोना चूल्हेकी राखके तुल्य है।

साईं तेरे आसरे, आग परे जो लोग। उनके पूरे भाग हैं, उनके पूरे जोग—जो ईश्वरकी शरणमें रहता है वही मायबान और पूरा योगी है।

साईं तेरे कारने छोड़ा बलख बुखार, नौलख घोड़े पालकी औ नौलख असवार—स्पष्ट।

साईं तेरे कारने जिन तज दिया जहान, डेठ किया वैकुण्ठमें उसने जहाँ मकान—स्पष्ट।

साईं तेरे नेहका, जिन तव लागे तीर। घोड़ी पूरा साधु ही, घोड़ी पीर फ़कीर—जैसे ईश्वरसे स्नेह है, वही पूरा साधु और फ़कीर है।

साईं ते सच्चा रहो, वन्दे ते सत भाव। भावें लम्बे केश रख, भावें घोट मुड़ाव—(पं०) सिस्ख धनो वा हिन्दू, पर ईश्वरसे सच्चे रहो और सबसे सद्भाव रखो।

साईं मोर आप विरूकल, लोग दिहल पोचारा, लात, मूका हम सहलौं, और सहलौं दू गारा—

(भो० ज०) मेरा पति स्वयं नाराज था तिसपर लोगोंने उसे शह दी। मार और गाली सब मैंने सही। दे० "बलती आगमें घी डालना!"

साईं राज बुलन्द राज, पूत राज दूत राज—विधवा स्त्री कहती है, क्योंकि जबतक उसका पति जिन्दा था तबतक उसकी सब माँग पूरी होती थीं। श्रव पुत्रके समयमें नहीं होतीं।

साईं संसा मेटे दी और न मेटे कोय। चाको संसा क्या रहा, जा सिर साईं होय—जिसका ईश्वर सहायक है उसे किसी बातका भय नहीं है।

साईं साईं जीभपर, गरव कपट मन बीच ।
वह नर डाले जायेंगे, पकड़ नरकमें खाँच—
जो मनके कपटो हैं और ऊपरसे ईश्वरका नाम लेते
हैं, वह नरकगामी होते हैं ।

साईंसे जो फिर गया, उसको लाम न होय,
वह तो योंही जायगा, जनम अकारथ खोय—
जो ईश्वरसे विमुख है उसका जन्म लेना वृथा है ।
साईंसे साँची रहूँ, बाज बाजरे ढोल । पंचन
मेरी पत रहे, सखियनमें रहे बोल — स्पष्ट ।

सांच कहे मुंह मारा जाय, भूठ कहे तो जग
पतियाय—स्पष्ट ।

सांच कहे सो पनही खावे, भूठा घहु विधि
पदवी पावे—(हरिश्चन्द्र) सत्य कहनेवाला बहुत कट
पाता है और भूठे छल पाते हैं ।

सांचको आंच कहां—सच्चे को कितोंका डर नहीं ।
सत्य बोलनेमें किसी तरहका डर नहीं ।

(सं०) सच्ये नाति भयं क्वचित् ।

सांच भूठ निर्णय करे, नीति निपुण हो जाय—
स्पष्ट ।

सांच बराबर तप नहीं, भूठ बराबर पाप । जाके
मनमें सांच है, ताके मनमें आप—प्रथमार्ध स्पष्ट
है । सच्चे मनमें ईश्वरका वास होता है ।

सांचहुं ताको न होय भलो, जो कही नहिं
मानत चार जनेकी—(पद्माकर) जो चार मनुष्यका
कहना नहीं मानता, उसका भला नहीं होता ।

सांची बात गोपाले भावे—सच्ची बात ईश्वरको
प्यारी है ।

सांची बात सद्बुद्धा कहे, सबके मनस उतरे रहें—
सच्ची बात सबको क डूँई लगती है ।

सांची होत न भूत मिठाई—दे० “भूतका पकवान”
सांचेका रंग रूखा—(१) सच बात सबको डुरी
लगती है—(२) अच्छे मनुष्यमें बनावटी सटक
मटक नहीं होती ।

सांचे गुहका बालका, मरे न मारा जाय—
स्पष्ट ।

सांचेहुं उनके मोह न माया । उदासीन धन
धाम न जाया—(तुल०) साध विरक्तोंको कहते हैं ।

सांचों कोइ न मानही, भूठों जग पतियाय—
सच कहो तो कोई नहीं मानता, भूठको सब मान
लेते हैं । जहां सच्चे की बात नहीं मानी जाती,
वहां क० ।

सांभ जाय और भोर धाय, वह कैसे न छिनाल
कहाय—नष्ट खीपर कहते हैं ।

सांभी चाली सांभसे, साध बसंता पूत । माधो
भी तो जात हैं, बांधे कमरके सुत—स्पष्ट ।

किसी गांधमें माधो नामका एक बगड़िया रहता था ।
उसकी स्त्रीका नाम सांभी और लड़किका नाम बसंता
था । जब उसे बहुत देना ही गया और लोगोंने कहा
तगदा किया तो उसने कहा, मैं भागूंगा नहीं और लो
गाजंगा तो कहकर जाजंगा । एक दिन सोलोक दिनोंमें
सांग बनकर उक्त मसल कही और रफू चकर हो गया ।

सांटेकी सगाई सेधे, तेलवी मिठाई सेधे—
बदलेका ब्याह और तेलकी मिठाई दोनों ही सराब
होती हैं ।

सांप अपने बिलमें सीधा ही जाता है—बाहर
चाहे जो करे पर घरमें निष्कपट रहना चाहिये । जब
कोई घरमें ही छल कपटका व्यवहार करे वा अपनी
सेही उड़नभाई बतावे, तब क० ।

सांप और चोरका धाक बहुत होती है—दोनोंसे
डर लगता है ।

सांप और चोर दवेपर चोट करता है—बिना दवे
यह दोनों चोट नहीं करते ।

जातइती चिय चोरे बाब । गोहन लय्यो नदको खाल ॥

मूरमारके सरस लगवे । चोर चपे तब चोट खलावे ॥

सांपका काटा पानी नहीं मांगता—क्योंकि उसके
काटनेसे मृत्यु शोभ था जाती है । कपटी मनुष्य
जिते सलाह देता है वह नहीं पनपता ।

सांपका काटा रस्सीसे डरता है—एक बार किसी
काममें हानि होनेसे दूसरी बार सामान्य काममें
भी मनुष्य सावधान हो जाता है ।

वू मेरी दोसोका है दम भरता,

मैं दोसके नामसे हूँ नपूरत करता ।

क्यों कर न कह रहा हूँ यारोंका भिकार ॥

है मार गुजोद रसभासे उरता ॥ (रंजूर)

सांपका काटा सोवे, बिच्छुका काटा रोवे—

बिल्कुल काटनेसे आदमी रोता है पर सांपके काटनेसे मर जाता है।

सांप काटना छोड़ दे, पर फुंकार न छोड़े—

जब कोई किसीका श्मिष्ट करना छोड़ दे, लेकिन अपने बचावके लिये केवल रोवदाव दिखाता रहे, तब क०।

इसपर एक कहानी है—एक हिंसक सांप रातों पर बैठकर सदैव पथिकोंको काटा करता था। एक दिन कोई साधू उसी राहसे वा राह्ये।

जब सांप उसपर घोट करने लगा, तब साधु ने उसे उपदेश देते हुए कहा, कि तू क्यों इस तरह तिमोर पथिकोंकी प्राप्त किया करता है, पूर्व जन्मके कुकर्मसे तू संशोभित प्राप्त हुआ

थव भी तुझे उचित है, कि कुपयको छोड़ सुपय पर चल, ताकि भविष्यमें एक अच्छी योग प्राप्त हो।

अतः तुझे आश्रय देता हूँ कि अरतक में लौट न आऊँ तबतक तू किशोपर घोट न करियो। सांपने उसकी आश्रयकी शिरोधार्य कर उस दिनसे किसी पथिक पर आक्रमण न किया।

यद्यपि कि मनुष्योंसे कुचल जानीपर भी उस सांपने साधुकी आज्ञा उल्लंघन न की।

छोड़े दिनेके बाद यह साधू उसी राहसे लौटा और उसने सांपसे दुर्गति होनेका कारण पूछा।

सांपने सब बात कह सुनाई। इसपर साधुने ऊपरकी मसल कही।

सांपका बच्चा सांपोलिया—उसमें सांपसे भी अधिक विष होता है।

दुग्धमगके बच्चेपर भी विश्वास न करना चाहिये। जब किसी खोटे मनुष्यका लड़का भी सुनाई करे, तब क०।

सांपका बिल भी नहीं मिलता जहाँ समा जाऊँ—

जब कोई बहुत सजित वा दुःखित होकर दुनियांसे अपने मुँह दिपाया चाहता हो, तब कहता है।

‘हरीकी’ पर खजाने हैं खुले याँ हिज्जे गैरु है। बच्चा पै विन है और याँ सांपका भी बिल नहीं मिलता ॥

(अक्षर)

हरीक=दुग्धमग। हिज्जे=विशेष। गैरु=कुचल।

सांपका मन्तर न जाने बिलमें हाथ दे—बिना

बचावका रास्ता रखे किसी सौभाग्यकाममें हाथ डाले और उसमें ज़िह्नत उठावे, तब क०।

मन्तर न जाने सांपकी देत पिटागी जाय। (हन्द)

सांपका सिर ही कुचलते हैं—दूसरे अंगको कुचलनेसे उसके जीनेकी आशाका रहती है, परन्तु सिर

कुचलनेसे किसी बातकी चिन्ता नहीं रहती।

सांपकी तो भाप बुरी—सांपके स्वाससे आदमीकी

देह मुसल जाती है। दुष्टकी हवा भी बुरी होती है।

सांपकी सी केंचली भाड़ दी (या बदल दी)—

जब कोई रोगी आराम हो जाता है, तब क०।

सांपको दूध पिलानेसे केवल विष ही बढ़ता है—

तुष्टको अन्धरी शिवा देनी न चाहिये।

(१) (सं०) पयः पानं सुजननां केवल विपश्चन्मम् ।

(२) मुरख कौं हितके भजन, सुनि उपजतु है कोप ।

सांपके दूध विवाश है, बाकि मुक विष पोप ॥

(हन्द)

सांप छछुन्दरका वैर—दे० “उगले तो अन्धा...”।

सांप निकल गया लकीर पीटनेसे क्या?—

अवसर चूकनेपर पश्चिमानेसे कुछ लाभ नहीं होता।

सांप मरे न लाठी टूटे—(१) सांप भी न मरे और

लाठी भी न टूटे। दो मनुष्योंके झगड़ेको ऐसी तरह निपटा देनेके लिये क०, जिसमें किसीका भी नुकसान न हो और काम भी हो जाय। (२)

सांप तो मर जाय पर लाठी न टूटे। अपना मतलब भी हो जाय और किसी तरहकी हानि भी न हो। (३) सांप तो न मरे पर लाठी टूट जाय।

जिस मतलबसे कोई काम किया जाय वह मतलब तो पूरा न हो पर उल्टी हानि हो जाय, तब क०। (४)

युक्तिने काम लेनेके लिये भी क०।

इसपर एक हर्षात दिया जाता है :—कोई मनुष्यमान

नमान पद रहा था और उसके पास हनुषा रक्खा था। हनुषको देखकर बिल्ली आई; नमानो हैरान हुष्या कि

ओ बिल्लीकी मारता हूँ तो नमान जाती है और जो नहीं मारता तो खाना जाता है और खाने बिना दूसरे समयकी नमान नहीं हो सकेगी।

उस समय उसने विचारके “अल्हमदुल्लाह रबिल आलमीन” बहुत जोरसे पढ़ा।

बिल्ली भाग गई, इसलिये कि रबिल आलमीनमें किन्न निकलता है जिससे वह समझी कि मुझे धमकाया है। इस युक्तिसे नमान भी हो गई और खाना भी बचा।

सांप सताया ढोकिया तीनों जोय निकास।

जय लग-पार बसाय तो बैठ न इनके पास्त—

सांप, शत्रु और एगसे सदैव अलग ही रहना चाहिये।

सांपोंकी सभामें जीमोंकी लपालप—जब बहुतसे

गर्णी और आलसी मनुष्य एक जगह इकट्ठे हों और कोरी बकवाद होती हो, तब क० ।

सांभर जाय, बलाना खाय— देखो “तेली खसम” सांभरमें नोनका टोटा—जिस चीज़की जहां खान है और वहाँके लोग उसीके अभावसे कष्ट पावें, तब क० ।

धी न कमी कुछ तरे घरमें । नोनको तरही भी सांभरमें (रखी)

सांभरमें पड़ा और गला - राजपूतानेके अन्तर्गत सांभर नामको एक भील है । उसका जल इतना तेज़ है, कि उसमें गिरनेसे हरएक चीज़ नमक हो जाती है या गल जाती है ।

सांभरमें पड़ा सो सांभर हुआ - सांभर=भील, नमक । उ० दे० ।

सांसा मत कर मूरखा, सिरपर है करतार ।

यो ही है सब जगतवा, सांसा मेटनहार— जयतक ईश्वरको कृपा किसी मनुष्य पर होती है तबतक उसे किसी बातकी चिन्ता नहीं रहती । ईश्वर पर भरोसा रखनेके लिये क० ।

सांसा भला न सांसका, और वान भला न कांसका - एक नण्यके लिये भी चिन्ता करनी कांस (एक प्रकारको घास) की बनी हुई रस्सीके बराबर है अर्थात् दोनों बुरी हैं ।

सांसा सुध बुध समी घटावे, सांसा सुखका खोज मिटावे—स्पष्ट ।

साख गये फिर हाथ न आये—(व्य०) एक बार इज्जत उतर जानेपर फिर नहीं होती ।

साख लाखसे अच्छी - देखो “जाय लाख” ।

सागमें शोरुवा अंडेमें पानी, क्यों बोधो पठानो— (मु० ज०) फूहड़पनेका काम करनेपर क० ।

सागरको गागरमें भला—बहुत बात थोड़ेमें कहना ।

सागरको नहिं रैये पार—समुद्रको पार नहीं मिलता ।

रसिकारै पिय रसिक सुजाना,

को गनि सकै तिया गुनवाना ।

सुबो पखौनी जग परघार,

सागरको नहिं रैये पार ।

(बिम्बिक हाव । ली० २० की०)

सागर सीपकी जाय उलीची - (तुल०) छोटसे बड़ा काम नहीं हो सकता है ।

साजन भावत हूँ सुनो, कुछ नेरे कुछ दूर । पलकन हीसे भाड़ लूँ, उन पांवनकी धूर - प्रेम होनेपर कहते हैं ।

साजन दुखिया कर गये, और सुखको ले गये साथ । अथ दुख दे न्यारे भये, और न पूछी बात (ज०) अपने स्वामीके परदेश जानेपर पश्चात्ताप करती है ।

साजन यों मत जानियो, तोहि विछुरत मोहि चैन आले वनकी लाकड़ी, सुलगत हूँ दिन रैन—स्पष्ट ।

साजन वे दिन कौन थे, जो सुखसे लाये पीत । अथ दुख दे न्यारे भये, कौन गांवकी रीत—स्पष्ट ।

साजन साजन मिल गये, झूठे पड़े बसीठ— लड़ाई भगड़के बाद जब दोनों मित्र आपसमें मिल जाते हैं, तब पीछे लड़ाई लगानेवालेका अपमान होता है ।

बिन दूती भङ्गलाइ तिय, भाइ मिलेने ईठ ।

साजन साजन मिल गये, झूठे पड़े बसीठ। (चमिछारिका) बसीठ=दूत,

साजन हम तुम एक हैं, देखत हीके दो । मनसे मनको तौल ले, दो मन कमी न हो—स्पष्ट । ‘मन’ शब्द मिले है ।

सांभा जोरु खसम हीका भला—स्पष्ट ।

साझेनी मां गंगा न पावे—जिस स्त्रीके कई लड़के होते हैं उसे जल्दी गंगा लाभ नहीं होती । यह प्रसिद्ध बंगला मसल “भागेर मागा पाय ना” का अनुवाद है, बंगालियोंमें मरनेसे कुछ पहिले गंगाघाट ले जाते हैं । सांभेकी कोई वस्तु अच्छी नहीं होती ।

साझेको हंडिया चौराहेमें फूट—जब सांभेके काममें विवाद हो, तब क० ।

साझेकी होली स्वयसे भली—दस घादमी मिलकर जो उत्सव मनाते हैं, यह अच्छा होता है ।

सांभा भला न थापका, और ताथ भला न तापका (व्य०) स्पष्ट ।

साक्षा सधे न बापका, हे रास्तेकी खान ।

घर न्यारा कर बालमा, यात मेरी तू मान —

(ज०) श्री अपने स्वामीसे कहती है कि हम दोनों पितासे अलग हो रहे ।

साझेका काम, उखाड़े चाम—साझेके काममें हमेशा भगड़ा हुआ करता है ।

साझेकी खेती सुभर न धार्ये क्योंकि उसपर दोनोंकी ही निगरानी रहती है ।

साझेकी सूई सांगमें चले—हिस्सेदार कभी मेलते नहीं रहता । सांग=सेंगरा ।

साटेकी सगाई और व्याजू रगयेका पहसान क्या (व्य०) स्पष्ट ।

साठ गांव बकरी चर गई—दे० “मोरनी द्वार निगल गई” ।

इस मसनका निकान इस तरह है—किसी समय मिकारसे खान छोकर कोई राजा किसी गुरीब खादमीकी भोजनमें भा टिके । उस गुरीबने राजाको धर्ये दे सेवा पशुपा की । राजाने सुबहकी जाते समय उसकी सेवासंभुष्ट छोकर साठ गांवका दान एत पत्तेमें लिख कर गुरीबको दे दिया । दुर्भाग्यवश उसकी एक बकरीने उस पत्तेको खा डाला । दूसरे दिन वह विचार बहुत सोच करता हुआ राजदरबारमें पहुंचा, और बहुत जोरसे उक्त मसन कही । राजाने उसे पहिचान किया और एक दूसरा दानपत्र प्रदान किया ।

साठ सास, ननद हों सौ, मांकी होइ न इनसू ही (मा०) स्त्रियां अपनी सास और ननदसे बढ़कर अपनी मांको प्यार करती हैं ।

साठा सौ पाठा, बीसी सो खीसी—साठ वर्षका होनेपर भी पुरुष जवान रहता है, और स्त्री बीस वर्षमें ही बुड्डी हो जाती है ।

साढीकी साख, और पीपलकी लाख—(क०) बसन्त ऋतुकी पत्तल और पीपलकी लाख दोनों अच्छी होती हैं ।

सात पांचकी लाकड़ी एक जनेका बोम्—कई एक आदमियोंकी एक एक लकड़ी मिलकर एक आदमीका बोम् हो जाता है । जब कई एक आदमी थोड़ा थोड़ा देकर दूसरेका उपकार करें, तब क० ।

कई न दक्षिण बात निश्रु सुनो कहावत जोय । सात पांचकी लाकड़ी, बोम् एककी होय ।

सात पांच एकुआ न एक गूलर—अगर लड़का सपून निकले तो एक ही अच्छा । (एकुआ एक प्रकारका जंगली फीका फल है ।)

सात पांच मिल कीजे काज, हारे जीते न आवे लाज—जो काम दश पांच आदमीसे मिलकर किया जाता है, अगर वह काम न भी उधरे तौभी उसमें किसीको लज्जा नहीं आती ।

सात मामाका भानजा नौता ही नौता फिर—सात मामाका भानजा भूखा ही भूखा पुकारे—

बहुतसे निरीक्षक रहनेपर भी जब कोई काम पड़ा रहता है, तब क०, क्योंकि इस किसीका खयाल उसपर नहीं होता । सभी हा वह खयाल रहता है कि दूसरा उसे खिला देगा, इसलिये वह भूखा ही रह जाता है । सभी आदमियोंका काम किसीका भी काम नहीं समझा जाता ।

सात हाथ हाथीसे रहिये, पांच हाथ सिंघारेसे । बीस हाथ नारीसे रहिये, तीस हाथ मतवारेसे—स्पष्ट । सिंघारा=सौंगवाला जानवर ।

दसि दस सहस्र पु गत दस न बाजिना, अर्धगोण दम हस पु स्थान त्यागिन दुर्जनान् । (चापक्य)

साथ कोई आवे, न कोई जाये—मनुष्य अकेला ही जन्म लेकर आता है और मरनेपर अकेला ही जाता है ।

साथ कौन किसांके जाता है—मरनेपर कोई किसीके साथ नहीं जाता ।

किसोका जब कोई रोज-विषयमें साथ देता है । कि तारोकीमें सांधा भी जुदा रहता है ३३सांसे ॥

साथ जोरू खसमका—ये दोनों जीवन पर्यन्त प्रेम बन्धनमें बंधे रहते हैं ।

साथ तो हाथका दिया ही चलता है—जो दान दिया जाता है मरनेपर वही संग जाता है ।

साथ सोई; यात खोई—(ज०) स्पष्ट ।

साथ सो, पेटका दुःख—(ज०) साथ सोनेसे ही गर्भ रहता है ।

साथ सोना, और मुँह छिपाना—(ज०) जिससे किसी यातका परदा न हो उससे सामान्य यात छिपाने, तब क० ।

एतो लान न सोइति बाल, रसो भीन गदि ब्रुंक्त लाल ।
लोग चलि सांघी दरसाई, संग सोये भेरु मुखदि क्षिपाई ।
(विहितहाव)

(२) प्रान पिपारी सुनो चित दे,

फिरटे बलि दूधट घालिषी कैंसी । (डाङ्कर)

साथी ऐसा चाहिये, जो साग साथ निभाये ।

साध न उसका लीजिये, जो दुख विच काम न
आये—जो दुःखमें साथ दे वही साथी है ।

साध खुटाई ना करे, ना मूरख सों प्रीत ।

चातुर तो बैरी भला, मूरख भला न मीत—

स्पष्ट । दे० “नादान दोस्तसे” ।

साध चले घैकुण्ठको, बैठ-पालकी मांदि । रस्ते-

मेंसे आये फिर, भांग तमाखू नाहिं—जो साथ

भांग और तमाखू बहुत पीते हैं, उनको क० । तमाखू-
की तारीफमें भी क० ।

साधन पी, संतन पी, पी कुंवर कन्दाई । जो

विजयाकी निन्दा करे, उसे खायकालिका माई-

भांग पीनेवाले कहते हैं ।

साध भगतकी करे जो सेवा, पार तुरत हो वाका

खेवा—जो साथ सन्तोंकी सेवा करते हैं उनका जल्दी
वेड़ा पार होता है ।

साध भगत दे जिन्हां असौस, सुखी रहें वं विश्वे

धीस—स्पष्ट ।

साध भगत हो जि उपर छो, मूल भला ना उसका

हो—(१०) साथके शापसे कोई छल नहीं पाता है ।

साध सन्तकी टहलको, उठो न बैठो जाय ।

तुलसी लालच लेनको, दौड़ा दौड़ा जाय—

जो साथ संतकी सेवा न करे रातदिन लोभके पीछे
पड़ा रहता है, उसपर क० ।

साधु असाधु सदन शुक्र सारी । सुमिरहिं राम

देदि जनि गारी—(तुल०) संगतका अग्रर होता ही है ।

साधु समागम हरि भजन, तुलसी दुर्लभ होय—

स्पष्ट ।

साधु कहिये स्वको पाया फेंके हलोर । ओड़ी

कहिये चालनी, भूसी राखे घडोर—सखन गुणके

प्रादक होते हैं और दुर्जन दोषके ।

“खल गेह भगुण साध गुण गाथा” (तुल०)

साधुकी जिन संगत कीनी, उन्हीं कामाई पूरी कीनी
जो साधकी संगत करते हैं, उन्हींका जीवन सफल है ।

साधु जन रमते भले, दाग न लागे कोय—
दे० “बहुता पानी”

साधु तो वोही भला, जो कर साधुका भेष ।

पूजा करता रव्यकी, हांडे देश विदेश—(१०)

स्पष्ट । रव्य=ईश्वर, हांडे=फिरे ।

साधु बच्चे, बहुते भूटे थोड़े सबे—मिलमंगे

साधुओंमें भूटे बहुत और सबे थोड़े होते हैं ।

साधु वही जो साधन करे, क्रोध, लोभ और

मोहको मारे—स्पष्ट ।

साधु वही सराहिये जाके हृदय गांठ, लड्डू

ले भीतर बरे चरणामृत दे बांट—स्पष्ट ।

साधु वही सराहिये, जो दुखें दुखावें नाहिं ।

फल फूलहिं छेड़े नहीं, रहे धगोचे माहिं—स्पष्ट ।

साधु सत कर बैठ जा, वही साधु है ठीक ।

वाको साथु मत कहो, जो घर घर मांगे भीख

स्पष्ट ।

साधु होकर कपट जो राखे, वह तो मंजा नर-

कका चाले—स्पष्ट ।

साधु होकर करे जो चोरो, उसका घर है

नरककी मोरी—स्पष्ट ।

साधु होकर करे जो जारी, उसकी हो दो जगमें

खुवारी—साधका धेय बनाकर जो औरतका पीछा

करता है, वह दोनों लोकमें कष्ट पाता है ।

साधु होकर देवे बुत्ता, उसको जानो पेटका

कुत्ता—बुत्ता देना=ठगना ।

साधोंको क्या सचाव, गुड़ नहीं घताशे ही सही—

व्यंगसे कहते हैं । गुड़से बतारो कहीं छच्छे होते हैं ।

जो ज्ञाहिरा अपनेको त्यागी बताते हैं, पर भोग

विलासमें रत रहते हैं, उनके ऊपर ताना है ।

साधोंने काम सधापनसे, कुत्तनने काम कुतापनसे

(मा०) जिसका जो काम होता है वही करता है ।

(सं०) वग यदि क्रियते राजा किं च नाथाय पानहम् ॥

साने सदा सनेहमें, जोम न चिकनी होय—
(वृन्द) रूखा मनुष्य मीठी बातोंसे नहीं पसीमता

साधित नहीं कान, वालियोंका अरमान—जो जिस चीज़के ग्रहण करने योग्य नहीं है, अगर वह उसे पानेकी इच्छा करे, तब क०।

साधित कदमको सब जगह ठाँव—मेहनतीका ठिकाना सब जगह है।

सारके सार लवङ्गू—जब कोई बहुत दूरकी स्थिते-दारी जोड़ने बैठे, तब क०।

सार पराई पीरकी क्या जाने अतज्ञान एकका दुःख दूसरा नहीं जानता है।

सारसकी सी जोड़ी—अन्तरंग मित्रोंपर क०। सारस पत्नीका जोड़ा एक साथ रहता है, कभी बिछुड़ता नहीं और उड़नेके समय एक अपना दहिनापर दूसरेके बायें पाके साथ ऐसा उलझा देता है कि दोनों अलग नहीं हो सकते।

सारा खेल तक्रारीका है—खल और दुख दोनों-में क०।

(१०) "भाग्य कति सर्वत्र"

सारा गाँव जल गया, काले मेघा पानी दे - गाँव जल जानेपर पानी बरसना। दे० ' का वर्षा जब कृषी खलाने"

सारा घर सूना रहे, चूहा रहे विल खोद। सी गुलाम हाथी चढ़े, फिर भी मादर ...—नीच अपनी नीचता नहीं छोड़ता।

सारा धड़ देख नाच मोरचा, पाँव देख लजाय—मोरका पैर ही भड़ा होता है। जब कोई धन जन सब तरहसे खो हो परन्तु एक ही मनुष्य उसके घरमें ऐसा छोटा हो जिसके कारण उसे सदैव लज्जित होना पड़े, तब क०।

दुलहिनि सब निज साज संचारि, साजी किते कुपप निहारि।
लोग पखानो सब जग गाई, मोर निहारि पगब सजुचाई।
सारा नरबदा फिर दी, कुंभा देख डर दी—(प०) खी चरित्रपर कहते हैं। नरबदा—वीर्यावान जंगल।
दिवा काक दशा दभीता रामीनरति नगैदान।

सारा शहर जल गया, वीवी फ़ातमाको खबर हो नहीं—स्वाधी पुरुषपर क० जो अपने अड़स पड़सकी स्थितिले विलकुल अनमनस्क रहता है।

सारी उमर काठमें रहे, चलते वंक, पाँवसे गये कम नसीब मनुष्यपर क०। उन्न भर जेलमें रहे

और जब छुट्टी हुई तो पाँव के काम हो गये।

सारी उमर भाड़ ही भोंका—भाग्यहीन मनुष्य पर क०।

सारी कुड़ियाँ मर गयीं नानीसे राह चले—(प०) क्या सब जवान औरतें मर गईं जो तुम नानीके पीछे दौड़ते हो।

साधिर ओ शाकिर दोनों जन्नती हैं—(मु०) संतोषी और कृतज्ञ दोनों देवताके तुल्य हैं।

सारी खुदाई एक तरफ़, जोरुका भाई एक तरफ़ खीष पुरुष जब सालेकी बड़ी खातिर करता है, तब उसे व्यंगसे क०।

सारी खुदाई एक तरफ़, फ़ज़ले इलाही एक तरफ़—ईश्वरकी शक्ति सपसे बड़ी है।

सारी चोट निहाईके शिर—जो घरमें बड़ा होता है सब भार उसीके शिर पड़ता है।

सारी डेगमें एक ही चावल टटोला जाता है—

(व्य०) हांडीका एक चावल देखने हीसे मालूम हो जाता है, कि सब चावल गल गये वा नहीं।

(१) नमूना देखकर माल खरोदनेके समय क०।

(२) एक बातसे मनका सारा हाल जाना जाता है।

सारी रात कहानी सुनी और सुयहको पूछा जुलेखा औरत थी या मर्द—मूर्खको क० जो ध्यानसे बात न सने, या उनकर भूल जाय, अथवा समझानेसे न समझे।

सारी रात मिमियाती और एकही वच्चा बियानी (पू० ज०) जो घोर गुल बहुत करे पर काम थोड़ा करे, उसपर क०। बकरी प्रायः दोसे कम बच्चे नहीं देती।

सारी रामायण सुनके पूछा सीता किसकी जोरु थी—दे० "सारी कहानी एनी"

सारे धड़की सुई निकाले सो कोई नहीं, आंखकी सुई निकाले सो सब कोई—(ज०) दे "आंखकी सुइयाँ"

सारे डीलमें जवान ही हलाल है—सब मोलनेके लिये क०।

सारे नगरमें दो ही, धुनकड़ या भुनकड़ (वा धुनकड़)—नीच संगतपर क०। (धुनिये, भड़भुंजे या गुलादे)

सालगरामकी बटिया जैसी छोटी वैसी घड़ी—
 दे० 'मूंग मोटमें छोटा बड़ा कौन'
 सालगराम जैसे सोए वैसे बैठे—दोनों एक हीते
 हैं। जो सब अवस्थामें एक सा रहे, उसे क० ।
 साला तीरथ सुसरा तीरथ तीरथ छोटी साली
 मातु पिताकी लाज न कीजे तीरथ है घरवाडी
 जो लोग घरवालोंकी ऊदर न करके सहरासवालोंका
 कहना करते हैं, उन्हें क० । स्त्रैण पुरुषको भी क० ।
 साली आधी निहाली, सलहज पूरी जोय—
 साली और सलहजसे हंसी उठा करनेकी रीति है,
 इसलिये क० ।
 साली निहाली चहिये ओढ़ी चहिये विछाली—
 ऊ० दे० ।
 सालेका साला पटाक साला—नीचे देखो ।
 सालेके सुसरे और सुसरेके लवड़ धौंधौ—
 जब कोई दूरका नाता जोड़ने बैठे, तब क० ।
 सावकी साथ भला और रातका घात भला—
 संगके लिये धनवान और खोटे काम करनेके लिये
 रात अच्युती होती है ।
 सावन की ना सीत भली, जातक की ना पीत
 भली—सावन महीनेमें दही खाना और तुरतके पैदा
 हुए लड़केसे प्रीत करना अच्युता नहीं ।
 सावन कीसी ऋड़ी—मूसलघार पानी बरसनेको क० ।
 जबते मिरखी सुन्दर श्याम, धामि एक ऋदि चाँद राम
 लोग उक्ति यह साँची करी, लागि रही क्यों सावन ऋगे ॥
 सावन कैसा साँधरा, पोह माह कैसा पाँडडा—
 सावनमें चटाई और पूष माघमें पंखा बेकार है ।
 सावनके अंधेको हरी हरी सूझे—(व्य०) जो सावनमें
 अंधा हो जाता है उसे हरे रंगकी ही स्मृति रह
 जाती है । व्यंगसे उन लोगोंको क० जिन्होंने अनु-
 चित उपायसे या अकस्मात् धन पैदा कर लिया हो
 और यही समझते हैं कि सब कोई इसी तरह
 करते हैं ।
 सावनके रपटे और हाकिमके डपटका कुछ
 डर नहीं—फिसल पड़नेसे श्राद्धमीको धर्म आती है ।
 सावनमें वर्षाके कारण फिसलन होती है—इसलिये
 बहुत लोग फिसल पड़ते हैं, इससे धर्म न करनी

चाहिये इसी तरह हाकिमके डपटनेमें भी डर नहीं
 क्योंकि वह सबहीको डपटता है ।
 सावन खीर जो खाय सकारे, मिरग ढाल
 कुरचाले मारे—(प्रा०) सावनमें खीर खाय तो
 हरिगकी तरह उद्वलता फिरे ।
 सावन घोड़ी भादों गाय, माघ मासमें भैंस
 बियाय, जीसे जाय या खसमें खाय—लोगोंका
 विरवास है, कि सावनमें घोड़ी, भादोंमें गाय और
 माघ मासमें भैंस बियाये तो आप ही मर जाती है
 या उसका मालिक मर जाता है ।
 सावन थोड़ा पानी गदला क्या मलमलके घोता
 है, अंदर दाग लगा कुदरतका जध देखो तब
 रोता है—स्पष्ट ।
 सावन दिये मैल फटे गंगा नहाये पाप—स्पष्ट ।
 सावन मांस बहे पुरवैया, खेले पूत बलाले मैया
 (क०) सावनमें पुरवैया चलनेसे घृष्टि अच्युती होती
 है, इसलिये क० ।
 सावन मास बहे पुरवैया, बेचो शरदा कीनो गैया
 (क०) ऊ० दे० । घृष्टि अधिक होनेसे अन्न बहुत
 होगा, सिंचाईकी जरूरत न पड़ेगी इसलिये बैल
 बेचकर गाय खरीद लो जिसके खानेको पुआल भी
 बहुत मिलेगा । कोई कोई यह भी अर्थ करते हैं कि
 सावनमें पुरवैया बहनेसे सुखा पड़ता है इसलिये
 बैलकी जरूरत नहीं रहती, उसे बेचकर गऊ खरीदो
 और ध पीके गुजरान करो ।
 सावनमें करेखा फूला, नानी देख नवासा भूला
 नानी देख—नानीका धन देखकर ।
 सावनमें हुए सियार, भादोंमें आई घाढ़ ।
 "पैसी घाढ़ कभी नहीं देखी थी"—जब कोई कम
 उन्नका श्राद्धमी चूड़ोंकी सी घातें करे, तब क० ।
 महीने भरकी उप्रमें दूसरो बाढ़ हो कहाँसे देखता ।
 सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके ऊगे भाम । कहे
 घाघ सुन घाघनी, यरखा दैय उठान—(क०)
 श्रावण शुक्ला सप्तमीको यदि बदली फटेके सूर्य निकल
 आवे, तो वर्षाका अन्त समझो ।
 सावन साग, न भादों दही । क्यार करेला,
 कातिक मही ॥ अगहन जीरा, पूसे धना । माघे

मिसरी, फागुन चना ॥ चैते गुड़, बैसाखे तेल।
जेठे राई, बापाड़े घेल ॥ इन चारहसे बचे जो
भाई, ताके घरमें वैद न जाई—इन महीनोंमें यह
चीजें न खानी चाहिये ।

सावन सिवा उपास—हिन्दुओंमें श्रावण महीना
महादेवजीके व्रतके लिये पुनीत माना जाता है,
विशेषकर सोमवारको सभी व्रत करते हैं ।

सावन सोबे साँधरे, माह खुरैरी खाट, आपहि
वह मर जायँने, जो जेठ चलेगे घाट—सावनमें
सीलके कारण चटाईपर न सोवे, माघमें सरद्रीके
कारण खुरैरी खाटपर न सोवे और जेठमें गरमीके
कारण घाट न चले ।

सावन हरे न भादों खूबे—सदा एकती हासत रहने
पर क० ।

सास उधलिया, यह छिनलिया, सुसरा भाड़
चुकावे, फिर भी दूल्हा सास बहूको सीता सती
यतावे—अपने घरवालोंकी, विशेष कर छियोंकी कोई
बुराई नहीं किया चाहता ।

सासका ओढ़ना, बहूका बिछौना—माजकलकी
विपरीत चालपर कही जाती है क्योंकि सासका
दर्ज बहूसे ऊँचा है ।

सास, कोठेपरकी घास—(ज०) सासकी पेञ्चरी
पर क० ।

सास कोठे बहू चत्रूतरे—सास छिपके करे और बहू
खुलमखुला ।

सासको नहीं पायँचे, बहू चाहे तम्बू और सराँचे—
(ज०) पायँचे=पायजामा; सराँचे=परदा । दे०
“सासका ओढ़ना”

सास गई गाँव, बहू कहीं में क्या क्या खाँव—
(ज०) सासका डर तो रहा नहीं, मन चाहे सो
करे ।

सास भाँके टूँई टूँई बहू चली बैकुण्ठ—
(ज०) उस बहूको तानेसे कही जाती है, जो सास
को घरमें छोड़ कर आप तीर्थ यात्राको जाती है ।

सासड़ कारन वैद बुलाया, सौक कहै तेरा
धगड़ा आया—(ज०) सासके लिये वैद बुलाया
सौतिन कहती है तेरा बार आया । सौतिया बाह

पर क० ।

सासड़ साँसा मत करे, देख धुड़ेरा काम ।
धोड़ेको बहुता करे, देन लगे जय राम—
स्पष्ट ।

सासरे तेरे साग, माघे तेरे भाग, बापके तेरे
राज, तू बैठी बैठी भाँक—सासका कहना बहूके
प्रति जो अपने पिताके धनपर गर्व करे । हिन्दुओंमें
बापके धन पर लड़कीका कोई दावा नहीं होता ।

सास न नन्दी, आप ही अनन्दी—(ज०) न सास
है न नन्द, अकेली ही सखी है । जो सास और
नन्दसे दुख पाती है वही कहती है ।

सास पतोहू में हंसिया गायथ—स्पष्ट ।

सास बहूकी हुई लड़ाई, करै पड़ौसिन हाथापाई—
सास बहूकी हुई लड़ाई, सिरको फोड़ मरी हमसाई
दूसरेकी लड़ाईमें पड़ कर जब कोई अपनी हानि
करे, तब क० ।

सास धिन कैसी ससुराल, ठाम धिन कैसा माल
(ज०) स्पष्ट ।

सास भी रानी, बहू भी रानी, कौन भरे कुपें
का पानी—जहाँ दोनों ही ससुरार हों, वहाँ क० ।

सास मर गई अपनी अरबाह तोधेमें छोड़ गई—
(ज०) मरतेसमय एक बूढ़ी औरत अपने पतोहूको
डरानेके लिये ऐसा कह गई थी ।

कोई दूदी चीरत अपनी पतोहूको बहुत तंग किया
करती थी । मरते समय उसने पतोहूसे कहा कि जब
मैं मर जाऊँ, तब मेरी आत्माको तुम एक लौकीमें
बन्द कर रखना और उसीको अपनी सास समझ कर
सदैव परामर्श लेती रहना । उसके मर जाने पर भी
बहू रोज रोज लौकीके पास जाती और उससे सलाह
लेती थी । एक दिन जब बहू उसी तरह लौकीके पास
खड़ी होकर कुछ पूछ रही थी तबनेम कोई पत्नीकी
उसके पास आ पहुँचा और उसने लौकीको लेकर
जमीन पर पटक गोद फोड़ डाला । तभीसे बहू पतो
आनन्द पूर्वक तथा सतनतासे रहने लगी ।

सास मुई, बहू घेरा जाया, दा का पलटा यामें
आया—देखो “बाप मरा घर घेरा.....”
सास मोरी मरे, ससुर मोरा जीये, गई बहुरिया
के राज मये—सासके मर जानेसे पतोहू स्वतन्त्रता

पूर्वक दिन व्यतीत करती है।
 सासरा, सुख वासरा—(ज०) लड़कीको सखरालमें
 ही रहना अच्छा है। सखरालमें रहनेसे सखमिलता
 है (२) जो सखरालमें बहुत रहते हैं, उन्हें व्यंगसे क०।
 “सासरी सास मेरे लड़का हो तो मुझे जगा
 लीजिओ” “मैं तुझे क्या जगाऊंगी तू भापही सारे
 मुहल्लेको जगा लेगी”—यहने साससे प्रथमार्थ कहा,
 जिसका उत्तर सासने शेषार्थमें दिया। अर्थ स्पष्ट है।
 कहा सोख किय छिन दुख खानि, तबहु न सिखी सिखेहे बाणि
 लोग उकि बहु मंगल पंगेये, जगा कहि मोहि जगत जनेये
 जो० र० की०
 जाननेवाली कहती है कि जननेके समय मुझे जगा देना।
 सासरी सास तुझे पेटका दुख, पहिले चूल्हा
 ही याद आया—(ज०) स्पष्ट
 सासरे जानेवाली छिनाल नहीं कहलाती—
 उचित काम करनेपर निन्दा नहीं होती।
 सास लुका लुका, यहू युका युका—(ज०)
 लुका=छिपकर; युका=धुलाधुली देवो 'सासकोडे
 यहू चयूतरे।'।
 साससे तीड़, बहुसे गाता—(ज०) जो घरके
 मालिकसे नाता न लगा कर राहसे लगाता हो,
 उस पर क०।
 साससे वैर पड़ौसिनसे नाता—(ज०) पुराय
 थौरत पर क०।
 सास छोटी, यहू बड़ी—जब कोई पुरुष खवान
 लड़का थौर पतीहू रहते एक छोटी लड़कीसे शादी
 करता है, तब यह मसल लागू होती है।
 साहबका कुछ दोष नहीं है अमले-गड़बड़
 करते हैं—(१) मनुष्य अपनेही दोषोंसे दुःख पाता है।
 यदि ईश्वरकी आज्ञानुसार चले तो कभी दुख न
 हो। (२) मालिक तो देनेका हुक्म दे दे पर कर्म-
 चारी बाधा डाले, तब भी क०।
 साहके सवाये कमयड़तके दूने—(व्य०) जो
 सवाया करता है उसकी रकम बढ़ती है और जो
 दूना करता है उसकी रकम जाती है। कम सुनाफेमें
 बरकत बहुत होती है।
 साहबके दरवारमें, फमी काहुकी नाहिं। वन्द्या
 मौज न पावहीं, चूक चाकरी माहिं—ईश्वरके
 यहाँ किसी चीज की कमी नहीं यदि अपनेको न

मिले तो अपने ही कर्मोंका दोष समझना चाहिए।
 साहब मेरा वानियां, सहज करे व्यापार।
 विन डण्डी विन पालड़े, तोले जग संसार—
 ईश्वरकी न्यायपरता पर क०।
 साहूकारको किसान, बालकको मसान—
 (व्य०) साहूकारके लिये किसान पैसा ही कष्ट
 दायक है उसी मसान बालकके लिये, क्योंकि वे
 बहुत मुश्किलसे महाजनका रुपया चुकाते हैं।
 साहू बट्टे वह भी साह—(व्य०) जो दामके दाम
 पर अपना माल बेचता है, वह भी साहूकार है।
 बहुत दिनों तक मालको व्यर्थ रखनेसे खरीद दाम
 पर उसे बेच डालना अच्छा है।
 साहू बहे न जांय, गौं से जांय—स्पष्ट।
 इधर एक छोटी कहानी है—किसी समय एक साहूकार
 नदी में बहा जा रहा था। तैरना वह-बिलकुल नहीं
 जानता था, इसलिये सहायताके लिये चिन्ता करता।
 उसकी चिन्ताएट सुनकर एक मसखरेने जो नदी किनारे
 खड़ा था, उक्त मसल कहा। इसका तात्पर्य यह है कि
 बदखोर बिना सार्थके कोई काम नहीं करता।
 सिन्धु तैरके सरस्वतीमें डूबना—जो कठिन काम
 करके एक सामान्य काम करनेसे डरता हो, उस
 पर क०।
 सिवईश्यों विन ईद कैसी—(मु०) मुसलमान ईदके
 दिन सिवई जरूर खाते हैं।
 सिंहके वंशमें उपजा स्यार—जब धीरके वंशमें
 कायर जन्म ले, तब क०
 सिंह गवचन सुपुरुषवचन, कदलि फरे इक सार।
 तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़े न दूजी धार—
 देखो “तिरिया तेल.....”
 सिंह चढ़ी देवी मिले, गरुड़ चढ़े भगवान।
 वेल चढ़े शिवजी मिले, अड़े संचारे काम—
 स्पष्ट।
 सिंह पराये देशमें, नित मारे नित खाय—
 चोर उकैतोंको दूर देशमें ही चोरी उकैती फरती है।
 सिंह सांपसे हैत कर, भूतोंके गल लाग।
 रांगड़ उटे न बाज तो, फोस पचासे भाग—
 स्पष्ट। इन सबसे भलेही मिले पर रांगड़से दूर रहे।

सिंहसे सरवर करे सियार—जब कम जोर चल-
वानका मुकाबला करे, तब क० ।

सिंहासन छोड़ घूर पर बैठना—जब कोई ऊँचे
दरजेका आदमी नीचा काम करे, तब क० ।

चाँचे किये उपखान पुनो तत्रि राच सिंहसन बैठत घूरि
(रघुनाथ)

सिंखाये पूत दरवार नहीं चढ़ते—जो गवाहको
भूठीयांत सिला पढ़ा कर गवाही दिलानेके लिये
श्रदाखतमें ले जाता है, उसकी जीत नहीं होती ।

सिज्दे से गर वहिश्त मिले दूर कीजिये ।

दो जख्मी सही सिरका भुकाना नहीं अच्छा—
(हरिश्चन्द्र) थालसोको क० । जिही को भी क० ।

सिद्धको साधक पुजाते हैं—सहायता से काम
होता है ।

सिद्ध चिरक्त महा मुनि योगी, तैपि काम वश
भये वियोगी—काम किसीको नहीं छोड़ता ।

विश्वामित्र परागरः प्रभृतयः वातमूत्र पर्वाचना को वि को
सुख पकनं सुकनितं दृष्टं च मोक्षगता । (भट्ट हरि)

सिवाहरीके छत्तीस फून हैं—सिवाहीके काम
करनेमें ईई कलाओंकी जरूरत पड़ती है ।

सिपारसी घोड़ी इराकीको लात मारें—जब
कोई श्रयोम्य मनुष्य मालिककी शह पाकर किसी
उद्योग्य पुरुषका अपमान करे, तब क० ।

सिवाहीकी जोर हमेशा रांड—क्योंकि उसको
सदा लड़ाईमें हथेली पर प्राण रख कर लड़ना
पड़ता है ।

सिवाही की रोटी शिर बेचेकी—सिवाही अपना
सिर बेचकर जीविका निर्वाह करता है ।

सिवाहीको डाल रखनेकी जगह चाहिये—
फिर तो वह अपने हाथक जगह आप ही कर
लेगा ।

सिफ्त भी हो, मुफ्त भी हो, बड़ पनेका भी हो—
(व्य०) जो गाहक कम दाम देकर बढ़िया माल
परोदना चाहे, उसे व्यंगसे क० ।

सिफलेकी भौत माध—क्योंकि उस समय बहुत
जाड़ा पड़ता है और जड़ावतमें दाम बहुत खर्च
होता है ।

सिफारिश बिना रोजगार नहीं लगता—
(व्य०) बिना प्रशंसापत्रके नौकरी नहीं मिलती ।

सिय रघुवीर कि कानन योगू, धर्म प्रधान सत्य
कह लोगू—(तुलसी) स्पष्ट ।

सियारके मन्त्री कौया—छोड़ दहले हाड़ चाम
खाह ले मसवा—(भो०) जब कोई अच्छी चीज़

आप रख ले, और खराब चीज़ श्रौरिके लिये छोड़
दे, तब क० । अकशर के प्रधान मन्त्री टोडरमलने
जब कांगड़ा घाटी दखल की, तब उन्होंने अच्छी
अच्छी ज़मीन बादगाहके लिये रख छोड़ी और
खराब ज़मीन दूसरोंके हाथ बन्दोवस्त कर दी ।
ऐसा करनेके बाद उन्होंने उक्त मसल कही थी ।

सियाल कोटी, हराम घोटी—पंजाबके सियालकोट-
के लोगोंको व्यंगसे क० ।

सियाह करो या सफैद—इच्छानुसार अच्छे या बुरे
काम करने पर क० ।

सियाही वालोंकी गई, दिलकी आरजू न गई—
बूढ़े लम्पट पर क० ।

सिरका नहाया पाक—(मु०) (१) सबसे ऊँचे
हाकिम द्वारा फैसला छनाया जाता है, तब क० । (२)
सुसलमान नहानेके समय केवल सिर ही भिंगोते
हैं, इसलिये क० ।

सिरका पस्तीना पड़ीकी आना—जो कठिन परि-
श्रमकर अपनी जीविका निर्वाह करता है, उम
पर क० ।

सिरका पांच और पांचका सिर—उल्टीसोधी बात
करने पर क० ।

सिर गाड़ी पर पहिया करे तो रोटी मिलती है—
ऊ० दे० 'मिरका पसीना'

सिर गाला, मुंहवाला—जो बड़ा होकर भी लड़कों
जैसा काम करे, उसको क० । बुढ़ापा दूसरा लड़क-
पन है ।

सिर गैल सिरवाहा है—(१) जैसा सिर वैसी पगड़ी
चाहिये । (२) नेताके साथ ही जनता चलती है ।

निकुदिन तिया भेन पिच पागे,
दिन विदूँ चकुभावन लागी ।
बीभी लोग चलि चरगाए,
जै को चिर मैको सिखाए । (को०००१०)

सिर भाड़, मुंह पहाड़—भयानक शकलवालेको कहते हैं।

सिर तोड़ मेहनत, मुख तोड़ जवाब—सिर तोड़ परिश्रम करना और मुंह तोड़ जवाब देना अच्छा है।

सिर तो नहीं खुजाया है ? } जो आंदाजी व्य-

सिर तो नहीं फिरा है ? } र्थकी बातें करता

हो उसको कहते हैं। सिर खुजाना=मार खानेको इच्छा करना, सिर फिना=पागल होना।

सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा, परम धर्म यह नाथ हमारा—(तुलसी) किसीकी आज्ञापालन करनेके लिये कहते हैं।

सिर नकद नौकरी उधार—जब कोई किसीसे मुरत काम करा ले परन्तु उसका मेहनताना पीछे दे, तब क०।

सिर नहीं, या सिरोही नहीं—जब धीर युद्धमें शत्रुसे मरने या शत्रुको मारनेका संकल्प करता है, तब क०।

सिरपर आरे चल गये तौभी मदार ही मदार—(मु० ज०) जब कोई संकटमें पड़कर भी आलसी सा बैठा रहता और जीवनका कोई उपाय नहीं सोचता, तब क०।

सिरपर जूती, हाथमें रोटी—(मु० ज०) जो बहुत अपमान सहकर रोटी कमाता हो, उसको क०।

सिरपर पड़ी बजाये सिद्ध—दे० 'गले पड़ी'।

सिर बड़ा सरदारोंका, पैर बड़ा गँवारोंका— बुद्धिमानका सिर बड़ा और गँवारका पैर बड़ा होता है।

सिर मुड़ाके क्या घुटना मुड़ावेगा ?—जो कुछ कर चुका है, इससे अधिक क्या करेगा ?

सिर मुड़ाते ही थोले पड़े—जब किसी कामके प्रारम्भमें ही विघ्न पड़े, तब क०।

सिर मुड़ाये मुरदा हलका नहीं होता—अर्थ स्पष्ट है। अश्लीलताके लिये पाठ भेद किया गया है।

सामान्य सहारा देनेके कोई काम पूरा नहीं होता।

सिर मुड़ाया मला किया, बेलतले मत जाइयो।

बेल गिरेगा सिर फूटेगा, दही चूड़ा मत खाइयो— लड़कोंका मूढ़न होता है तब उनके साथी चिट्ठानेके लिये कहा करते हैं।

सिर मुड़े उस रांडका, जो खलमसे पहिले छाया

(ज०) पतिको बिना खिलाने स्त्रीको नहीं खाना चाहिये।

सिरमें चाल नहीं भालसे लड़ाई—बिना अपनी मजबूती किये बलवानका सामना करे, तब क०। देखो "छातीपर बाल नहीं"।

सिर सलामत तो पगड़ी पचास—सिर रहेगा तो पगड़ी बहुत मिल जायंगी, जैसे जड़ रहेगी तो पत्ते बहुत निकल आवेंगे, मूल रहेगा तो ब्याज बहुत आ जायगा, लड़का रहेगा तो बहुषु बहुत आ जायंगी इत्यादि।

सिर सहलावे, भेजा आवे—जो ऊपरसे मीठी बातें कहे और भीतर जड़ काटे, उसे क०।

सिर सिज्जुदेमें, मन यदियोंमें—(मु०) बगुला-भगतको क०।

सिरके उतरे बाल, गुमें जायें या मूतमें—जब त्यागी हुई चीज़ या मनुष्यके कुछ प्रयोजन न रहना हो, तब क०।

सिरसे कफ़न बांधे फिरते हैं—जो हथेलीपर जान लिये फिरे अथवा मरने मानेको तैयार हो, उसे क० सिरसे खाया भारी—वेजोड़ मामलेपर क०।

सिरिस सुमन किमि वेधहिं हीरा—(तुलसी) सिरिसके फूलकी गोंकसे हीरेमें छेद नहीं हो सकता,

सिरिसका फूल बहुत कोमल होता है। एक लड़के या छकुमार आदमीसे कठिन काम नहीं हो सकता।

सिरे ही की भेड़ कानी—दे० "विसमिन्हा ही गलत" सिरसकते गये, विलखते आये—वे मनसे काम करनेवाले नौकरको कहते हैं।

सिंहबन्दीके प्यादेका भागा पीछा बराबर— तीन आने रोजके आदमीका भूल भविष्यत दोनों बराबर हैं।

सौंका न समाय तहाँ मूसल घुसेड दे—जहाँ कुछभी कहनेकी गुंजाइश नहीं वहाँ बहुतसा कहनेपर क०। जब कोई बातको बहुत बढ़ा कर कहे तब भी क०।

शौरीकी चीपहरी बाजे, चिपकीकी अउपहरी।
बाहरका कोई आवे नाहीं, आँ सारे गहरी॥
साफ़ सफ़ाकर आगे राखे, जामे नाहीं गुसल।
शौरीके अहाँ सौंका समाये, चिपकीके तहाँ मूसल॥

जिह्वा शहरके बाहर चिथो नामकी एक भटियारिन थी जिसके यहाँ नगरके कुछे भाग बरस पीते थे और जब सुभरी उधरसे निकलते थे तब वध हुआ। लेकर सामने खड़ी होती थी। एक दिन उसने कहा कि बंदीके नामपर भी कुछ कह दो। तब उन्होंने यही ठकोसका कहा था। उस समय मादशाहके यहाँ चौपटरी नीवत बसती थी। मंग कभी इतनी गाड़ी बनती है कि प्रगंठामें लोग कहते हैं कि इसमें सौंके खड़ी रह सकती है पर इसके यहाँ इतनी गाड़ी बनती थी कि उसमें मूसल खड़ा हो जाय।

सौंके सड़पे तो लालाजीके संग गये अथ तो देखो और खाओ—कंजूसौंको क० जब किसी कृपणका सड़का उससे भी अधिक कृपण हो, तब क०। इसका निकास इस कदानीसे है :—किसी कंजूसने अपने घरमें यह नियम रक्खा था कि चौकी बरतनमें सौंके डुबानेसे भित्ता की निकले छतना दरपक बादमी ले लिया करे। जब वध नर गया तब उसकी खड़केन चौकी बरतनका सुँह बन्द करके उसपर सुदूर लगा दी और छत्ता मसल कड़ी। तापयं यह कि सौंके चाटना तो पिशाचिके साथ गया, अब इसे देखकर ही संतोष करो।

सौंके कटाके थलडोंमें मिलना—जब कोई बड़ी उन्नका आदमी लड़कोंकी सोहयत करे, तब क०।

सौंकेकी के हूक और अर्द्धका के रूख—(मा०) सौंकेका हुक क्या और रेंडका रूख क्या ? किसी कामके नहीं।

सौंका हम हित जानके, इन न करी कल्लु कान। छाती पै पैड़ा किया, ओछेकी पहिचान—जल कहता है कि मैंने इस काटको वृक्षके रूपमें सौंका और जब यह बड़ा और मजबूत हुआ तब मेरी ही छातीपर नाव और जहाज़ धनकर चलने लगा। वृक्षमत्ताके लिये कहते हैं।

सौंके उसको देनी अच्छी, जो तेरी शिक्षा माते सच्ची—जो तुम्हारी बात माने उसीको सलाह देनी चाहिये।

सौंके तो धाको दीजिये, जाको सौंके सुहाय। बंदरको क्या दीजिये, बयं का घर ही जाय—जो सीखने लायक हो उसीको सिखाना चाहिये। एक बघेने बंदरसे कहा, "मानस कैसे प्रायं पाव मानसकी ही काया।" आर मझीने बरपा बीती बयंका क्यों नहीं

काया"। जब बंदरने कहा, मुझे घर बनाना नहीं आता, तब बघेने उसे घोंसला बनाना सिखा दिया। जिसका फल यह हुआ कि बंदरने अपना घर बनानेके लिये बघेका घर तोड़ डाला और अपना भी न बना सका।

सौंके देत औरत को पाँड़ा, आप भूरे पापोंका भाँड़ा—दे० "पर उपदेश"

सौंके सीखे उसीको सिखाने जाय, तब क०।

सीधी सीधी छत पै चढ़ते हैं—शनेः शनेः काम करनेके लिये क०।

सीत दूध जिसने देसाई, चाको तो बैकुंड यहाँई—मा०) ईश्वर जिसे दूध दही देता है उसे यहीं बैकुंड है।

सीतल ताव सुगन्धकी, घट्टे न महिमा मूर। पीनस वारे जो तज्ये, सोरा जानि कपूर—

पीनसवाला जो कपूरको शोरा जानके छोड़ दे तो कपूरकी शीतलता और सुगन्ध नहीं घटती। पीनस एक नाकका रोग है। इसमें नाक बँध जाती है और रोगीको सुगन्ध दुर्गन्ध नहीं जान पड़ती। कोई भीमान गुणोंके गुणको न समझे, तब क०।

सीतलाका खाजा (वा थड़ा)—उस मनुष्यको कहते हैं जिसके सुँहमें शीतलाके दाग बहुत हों। खाजा=खुराक, थड़ा=स्थान।

सीतलाका पुजापा—निकम्मी चीज़को क०।
सीतलाका वाहन—गधेको क०।

सीधा घर खुदाका अदालतको कहते हैं, जहाँ जानमें किसीको रोक टोक नहीं।

सीधी उंगलियों की नहीं निकलता—जब सीधी राहसे काम न हो, तब क०। बिना बड़ाई किये रकम वसूल न हो, तब भी क०।

(१) तभी सखी सुधा मनुहार, कैलि करन टे बव थीहार
सुन्यो पढागो ज्यो जग बट, सीधी बंगुरो धीव न कटे।
(हाथ)। धी० १० कौ०)

(२) यमहीते सब निशत है, वन यम निशे न काहि।
सोधी बंगुरो धी भयो, कौं न निकमत माहि ॥ (हृद)

सीधी उंगलियों की निकले तो टेढ़ी कर्णों कीजे—
(हृद०) अगर आपसमें फैसला हो जाय तो थदास्त कर्णों जाय ?

सीधे सीधे काटिये बाँके तरह बचि जाय—

दे० “देह जानि शंका सब काहू”

सीस काटे बालकी रक्षा—जड़ काट कर बालियों—
की रक्षा करना असम्भव है।

सुई सुहागे से सदा, सीखो पर उपकार,
घूस मूसकी बात तुम, कमी न सीखो यार—
(बालमुकुन्द गुप्त) सुई और सोहागा जोड़नेवाले
हैं औ घूस मूस काटनेवाले।

सुकुमार बीवी चटाईका लहंगा— (च०) के मेल
काम पर क०।

सुख कहना जनसे, दुख कहना मनसे—
अपना दुःख किसीसे न कहे।

(1) रहि मन पर घर जायके, दुःख न कहिये रोय।
मान घटे रिपु बल बढ़े, नाट न लैई कोय ॥

(2) दोष नाहिं दोषतकी दोष कर्म आपनेकी
मन अपनेकी ब्यथा काहू सो न कहिये।” (दीनानाथ)

सुख कारन सागर तज्यो, भान विधायो अङ्ग।
मोती नर यूँ कंपियाँ, तू हूँसी और के संग—
सुखके कारन समुद्र अथात् अपना घर छोड़ा और
अपना शरीर छिद्रवाया, मोतीकी तरह पुरुष
कांपता है जब स्त्रीको दूसरेके साथ हँसते देखता
है। स्त्री के हँसनेसे बेसरका मोती हिलता है। मोती
और पुरुषका रूपक है।

सुखके वड़े योधा रखवाले हैं—सुख बहुत सुख-
किससे मिलता है।

सुखके साथ साथी हैं—सुखमें सभी अपने हो जाते
हैं। जब दुःखमें कोई धरन न ले, सब क०।

(1) दुःम हीं लाने जात खग, भावे जब फल होय।
संपत्तिके साथी सबे, विपदाके नहिं कोय। (मागरीदास)
(२) सब यह किछी साईकी सदा थो।
सुख सम्पत्तका हर कोई साथी ॥ (हाली)

सुखन गोई मुशकिल नहीं सुखन फहमी मुश-
किल है—वात कहनेसे उसका समझना कठिन है।

सुखन उन्हींपर डारिये जो हँस हँस राखे मान-
उन्हींसे माँगो जो तुम्हारा मान रखे।

जो मुशकिल भासान करी तो सुखसे बचन निकाल।
नहीं तो उपके रहें, आपसे फिर सुख सुख न डालें।
(सरवरनौर)

सुख वढ़ै मुडापा चढ़ै—सुख मिलनेसे ही आदमी
मोटा होता है।

सुख मानो तो सुख है, दुख मानो तो दुख है।
सच्चा सुखिया बोई है जो सुख माने ना दुख—
स्पष्ट।

सुखमेंःभाये करमचन्द. लगे मुडावन गंज—
जब कोई सुखी मनुष्य मूर्खतासे दुख पानेका काम
करे, तब क०।

सुखमें निद्रा दुखमें राम—सुख तो आरामसे कट
जाता है। पर दुःखमें ईश्वरकी याद आती है।

सुखमें पड़ी सभागी, भुसमें लोटन लागी—
जब कोई दुलारमें पड़ कर इतराने लगे, तब क०।

सुखमें घामा दुखमें राप दे० सुखमें निद्रा
सुख सम्पत्ति और औ । सब काहूपर होय।

झानी काटे जानसे, आर मूरख काटे रोय—
अच्छे और बुरे दिन सभोंपर पड़ते हैं, ज्ञानी उसे

सुखसे काटते और मूर्ख उसे दुःखसे बितते हैं।
दुनियाँमें चरमा ज ई बड़शाने मर गया।

दिल बंगियोसि औ कोई सकताके मर गया ॥
चाकिल था बड़ तो पकी भाके मर गया।

बेषक हाती पीटके हावे र गया ॥
सुख पाके मर गया बीड़ दु पाके मर गया।

जीता रजा न कोई हर एक पाके मर गया ॥ (नजीर)

सुखसे किया सनेह पड़ा दुख दूना—जो अधिक
सुख चाहते हैं उनको दूना दुःख होता है।

सुख पोवे कुम्हार जाकी चोर न लेवे मटिया—
ये क को क०।

इह । । रचा सम, रई काम नहिं दिदि।
ज्यों कुम्हार सोवे सुखो, चोर न मटिया लीदि ॥

सुख सोवे शोख और चोर न भाड़े ले—उ० दे०।
शोख एक जातिके भाट होते हैं जो पीरोंका बय
गाते फ़ितते हैं। यह बहुत ही गरीब होते हैं, इसलिये
इनके बरतन चुराने लायक नहीं होते।

सुख सोवे शोख, जिनके टट्टू न मेख—उ० दे०।
सुख सोवे होरू, जिनके गाय न गोहू—
उ० दे०।

सुखार दुहार आसमानी फरमानी हैं—(प० क०)
अनावृष्टि और अति वृष्टि ईश्वरके हाथ है।

सुगन्ध लगावें तो ऊम मरूँ अरु ऊम मरूँ
पहने तन सारी। हार चमेलीको भार सो
लागन, जानत हो तनको सुकुमारी—स्वयंव्रिता)

भूरी एकुमारता पर क-

सुघड़ बलैया सुसरा ले, बैल मांगि बहूको दे—
चालाक बहूको उसका सखर भी प्यार करता है।

सुघड़ सुघड़ हंस गई, फूड़ड़ोंको आया हाँसा—
(ज०) बुद्धिमान मनुष्य वेचल सुलझरा देता है,
परन्तु मर्ल बिलबिला कर हंस देते हैं।

सुत दारा अरु लक्ष्मी, पापीके भी होय। साधु-
समागम हरि-भजन, तुलसी दुर्लभ होय—
साधुओंकी संगति और हरि-भजन बड़ी कठिनाता-
से होता है।

सुता जो राखे चोरी पर, तो पगड़ी पत रख
मोरी पर — जो चोरीकी नीयत रखता है उसकी इज्जत
नहीं रहती।

सुधन विच गहना तो भूखों क्यों रहना—
(प०) स्पष्ट। दुमानी है।

सुध और छो फा चैर है, छो आघत सुध जाय,
घोही नर भरपूर है, जो सुध ना देत गँवाय—
(मार०) बही मनुष्य प्रयत्नशील है, जो लोभमें
भी अपनी बुद्धि नहीं खोता है।

सुध बुध ना खो आपनी, यात ले मेरी मान।
इस दुनियां रहना नहीं, मत ना हो अनजान—
(मार०) फ़कीरका कहना है।

सुध सू सुधरें कार सत्र, सुध विन होत
विगाड़। ऐसा सुध विन है मनुष, जैसा पत्थर
भाड़—(मार०) बिना किसी गुणका थादनी पत्थर
सरीखा है।

सुन कोई हज़ार कुछ सुनावे, कीजे पड़ो जो
समझमें आवे, फायरु हो तो कीजे न सुफलत,
आज़िज़ हो तो हारिये न हिममत, आता हो तो
हाथसे न दीजे, जाता हो तो उसका गम न
कीजे—स्पष्ट।

सुन खगेश अल को जग माहीं, प्रभुता पाय
जाहि मद् नाहीं—ऐसे आदमी कम हैं, जो विभव

पाकर घमंड न करें।

सुनत घात मृदु अन्त कठोरी, देन मनहु मधु
माँहुर घोरी—पहिले मोटा उनकर पीछे कठोर सुननेसे
बहुत दुःख होता है।

सुनते सुनते फान चहरे हो गये—जब एक ही
विषय बार बार कहा जाता है, तब क०।

सुन रे ढोल बहूके घोल किसीको चितावनी देने-
के लिये क०।

इस मसजिद का निकाश इस तरह है—कोई बूटी भीतर
अपने लड़केसे उसकी स्त्रीको जिहायत किया करती
थी। स्त्रीका चादचनन खराब था सही, किन्तु लड़के-
ने उसपर तनिक भी ध्यान न दिया। कुछ दिन बाद उस-
की स्त्री बीमार पड़ी। कुछ पुरोहितने आकर उस

स्त्रीसे कहा कि तुम्हारा अन्नित समय बीत रहा है, इस
निचे तुमने आश्रित जो भवराध किये हैं, उसी स्त्रीकार
कार भी। बुद्धिमान अच्छा मौजूआ जान अपने लड़केको एक
ढोलमें बिपा रक्खी जो रोगीके पास छो धरा हुआ था।

इधर स्त्री अपने समा किये हुए पापोंको एक एक करके
पुरोहितके सामने कह रही थी, उधर उसका मस उल्ल
मसल कहकर ढोल बजाती जाती थी, ताकि उसका
लड़का अपनी कुधटा छोके पापोंको खरु अपने कानोंसे
सुन ले।

सुन सुनके तेरी घात सहेली सोच हुआ मेरे
मनको। फरफे व्याह धरों नहीं रखते याबल
अपनी धी को—(ज०) स्पष्ट। इसलिये कि पोहरमें
जैसा हुलार होता है वैसा सधरालमें नहीं होता।

सुन सुन मोठी घोल गत, बैठ न बैरी पास।
दही भुलावे चावरे, छाप कधी फपास—
भूलकर भी बैरीको संगति न करनी चाहिये।

सुनहु पंचन सुत रहनि हमारी, जिमि देशनन
महँ जीम विचारी—(तुलसी) अयोधके पाटिकमें
सीताजी हनुमानजीते कहती हैं। जब कोई चारों
तरफसे शत्रुओंसे घिरा रहता है, तब क०।

सुनाड़ी वेचे फांत, अनाड़ी वेचे माँछ—(प०)
काँत=हड्डी, माँछ=मछली। दे० "ऐसे उल।"

सुनार अपनी माकी नयमेंसे भी चुराता है—
सुनार अपनी माको भी छगता है, दूसरेकी यात
ही क्या है।

सुनारको खटाई, और दर्ज़ीके बन्द—जब कोई सुनार और दर्ज़ीसे अपनी चीज़ मांगने जाता है, तब सुनार 'सब चीज़ तैयार हो गई केवल 'खटाई' बाकी है' और दर्ज़ी केवल 'बन्द' की कसर बतला कर गाहक को डाल देता है।

सुनि सुनि गीता फूटे कान, तऊ न उपज्यो रंचक ज्ञान—दे० 'फूले फूले न वेत'।

सुनिय सुधा देखिय गरल, विधि करतूत कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक; मानस सुकृत मराल स्पष्ट।

सुनिये सबकी, कीजिये मनकी—अगर दस आदमी दस तरहकी सम्मति दें, तो जिससे अपना हट साधन होता देखे, उसीको ग्रहण करें।

सुनिये दो तो कहिये एक—मनुष्यको चाहिये कि छने अधिक और कहे कम।

कहै एक जब गुन-लै इन्साब दो। कि-इकने कर्वा एक दो काल दो। (चौक)

सुनी सुनाई चातकी, गँठरी बाधे खूंट। वर-छिन की मार पड़ी, ककड़िनकी भई लूट—
जो किसी प्रकारकी छनी हुई बातोंको सची मान लेता है, चाहे वह सम्भव हो वा असम्भव, उसे क०।
(ककड़की चोरीमें धरतीकी मार-असम्भव है।)

सुधी न शीघ्रा, जीमें आया सो किया—
(सु०) जो किसी मज़हबका-पाबंद नहीं है, वह अपने इच्छानुसार सब कुछ करता है।

सुपना देख रहे मन गोय, अन्धका देखे अपना होय
(पू०) ऐसा लोगोंका विश्वास है कि जो सपना देखकर मनमें छिया रखता है वह सपनेमें जो घटना दूसरोंपर होते देखता है, उसपर भी उसका असर होता है।

सुपना है संसार—जगत् मिथ्या है। वेदान्तिओंका कहना है।

(१) उभा कहै मैं अनुभव अपना।

सत हरि भजन अथव सप सुपना ॥ (तुलसी)

(२) सपने होइ मिथ्यारि रूप रंक नाक पति होइ।

आये धर्मन लीम कहु तिनि अथव जय ओइ ॥

(तुलसी)

सुपनेकी सी माया जिसको अपनी बतलावे—
सम्पत्ति किसीके पास सब दिन नहीं रहती, वह सपनेकी माया सी है।

सुपनेकी सी संपत्ति झूठी—ऊ० दे०।

सुपनेमें राजा भये, दिनको वही हवाल—
देखो "चार दिनकी....."

निरखो सोवत ग़ाम सखि, कहे छलि ज़िमि धीर।

सुपनेमें राजा भये, जगि भये फकीर।

सुपनेमें स्वामी मिले, कर न सकी दो घात।
सोवत थी रोवत उठी, मलती रह गई हाथ—
स्पष्ट।

सुपुरदम व तू माया-ए-खे शरा, तू दानी हिसावे
कम-ओ-वेशरा—(फा०) मैंने अपनी चीज़ सपुर्व कर दी, उसकी भलाई बुराई समझना तुम्हारे अह्वार है। पुस्तककी भूमिकांमें लिखी जाती है।

सुफल होत मनकामना, तुलसी प्रेम प्रतीत।
अपनो पेपन लायके, तिरिया पूजत भीत—
(तुलसी) विश्वाससे ही फल होता है। पेपन, चावलका आटा और हलदीको पानीमें घोलकर बनाया जाता है, जिससे खिया दीवालमें चित्र कावृती हैं।

सुफेद बाल, जवानोका जवाल—बाल पकनेसे उमर ढल जाती है।

सुफेद बाल, मौतका पैगाम—स्पष्ट।

सुमिरनि करमें, सुरत न हरमें, कहां भेय यह कैसा है ?
ऊपरसे तो सिद्ध बन बैठा, भीतर पैसा पैसा है—स्पष्ट।

सुरतीला, सो फुरतीला—तीव्र बुद्धि या योग रखनेवाला मनुष्य बहुत चतुर होता है।

सुरनर मुनिकी है यह रीती, स्वास्थ्य लाग करहि सब प्रीती—(तुलसी) स्पष्ट।

सुरमा सब लगाते हैं, पर चितवन भीत भीत-सय ही काम करते हैं, परंतु काम करनेका तरीका सबका छुदा छुदा है।

सुरमें ईश्वर घसे—मानसे ईश्वर प्रसन्न रहते हैं।

सुरा सुरापी ना तजे, यदपि विकल गत हीय—

जिसको जो आदत पड़ गई है, वह लाख चेष्टा करने पर भी नहीं छुटती ।

सुवह होता है शाम होती है, उधर यूँ ही तमाम होती है—स्पष्ट ।

सुस्त मनुषका कोई न लागू फुरतीलेके सय ले भागू परिश्रमीको सभी चाहते हैं ।

सुस्ती घुरी रे बालके, याकूँ जीसे टार । रत्ती थोभा सुस्तको, लागे थोभ पहाड़—(ग्रा०) आल-

सोको सामान्य काम भी कठिन जान पड़ता है ।

सुहागनका पूत पिछवाड़े खेले हैं—सहागिनका

लड़का जब मर जाता है, तो उसे मालूम पड़ता है,

कि मेरा लड़का पिछवाड़े में खेल रहा है, अर्थात् उसे

फिर भी पुत्र उत्पन्न होनेकी उम्मीद रहती है । जो

आदमी रोजगारी है या जिसको आमदनी अच्छी

है, अगर उसका कुछ तुर्रसान हो जाय, तब क०,

क्योंकि वह अपना धारा पूरा कर लेगा ।

सुहागभाग अरज़ानी, चूल्हे भाग न घड़े पानी-

(मु० ज०) किसी गरीब या अभागके विवाहपर क० ।

सुहातेकी लात, न सुहातेकी बात—(१) जब

मिश्रकी गाली भी कोई सहे पर शत्रुकी साधारण

बात भी घुरी लगे, तब क० । (२) जहाँ कुछ मिल-

नेकी आया है, वहाँ कटवचन भी सह लेवें, पर जहाँ

प्राप्ति नहीं है, वहाँकी साधारण बातसे भी अग्रसक्त

हो, तब क० ।

सूँड फटे गनेस—मोटे आदमीको क० ।

सूँड, फतरनी, गज़, उंगलेटा, रखले सो दरज़ीका

टा—दरज़ीको ये चार चीज़ें अत्यन्त रखनी चाहिये ।

सूँड कहे में छेड़ूँ छेड़ूँ, पहिले छेद कराप—

जो अपना ऐव न देखे और दूसरोंका दोष निकाले,

उसपर क० ।

सूँडकाला हो गया—जब थोड़ी सो बात बहुत

बढ़ जाय, तब क० ।

सूँड नाफेसे सबको निकालता है—(१)जो किसी

के गुण-दोषका विचार नहीं करता, सबको एक ही

गिंगाहसे देखता है, उसे क० (२) होगियार आदमी

जो सबको एक ही रास्ते चलाने, उसे भी क० ।

घोर, सो घउजरघोर—घोरी करना घुरा है, चाहे

थोड़ी करे या बहुत ।

सूँड टूटी कुड़ी कसीदे हूटी—(पं०) दे० 'घोरने गरी' ।

सूँड न जाय तहां, फावड़ा घुसेड़ दे—जो थोड़ी

सी बातको बहुत बढ़ाके कहते हैं, उन्हें क० ।

सूँड भर छान मूसल भर अंधेर—न्याय थोड़ा

अन्याय बहुत ।

सूँडली मिरचइया तितैया तोरे उतनी—सूखनेपर

भी मिर्चकी कड़ाहट नहीं जाती । देखो "रस्सी

जल गई"....."

सूखा ढाक, बढईका बाप—ढाकका काठ सूखनेपर

बहुत कड़ा हो जाता है ।

सूखा साला वामन हो गया फूल फाल चुगत्ता

जब कोई निश्चय मनुष्य धनवान होकर मोटा ताना

हो जाय, तब क० । चुगत्ता=चुगताई=मुगल ।

सूखी चिनाई वरते हैं—सूखे मसालेसे भीत डटते

हैं । (१) घुरी रीतिसे व्यवसाय करनेपर क० । (२)

प्राज्ञोंको वा चौयोंको तानेकी तरह क०, क्योंकि

खाते समय वे पानी नहीं पीते, जिसमें ज्यादा

खाया जाय ।

सूखे धानों पानी पड़ा—जब कोई मनुष्य वा काम

बिगड़नेको हो और किसी तरहकी सहायता पाकर

उधर जाय, तब क० । जब किसीका धन लोप होनेको

हो, उस समय उसके घरमें लड़का पैदा हो जाय,

तब क० ।

(१) घर बागे चमखाम खिब, चडे रोम तिप दीच ।

कई उक्ति ज्यों बरसई, सूखे धाननि मैच ॥ (धानत पतिका)

(२) सूखत धान परा जनु पानी—(तुषनी)

सूखे माँ भड्डवेर घने हों, सम्मत माँ अनढेर घने

हों—(मा० क०) अन्न कम पैदा होता है, तो भड्डवेरी

बहुत फलती है ।

सूखे संख धजै दिन रात—दे० 'साली संख'

सूखे सरमें हस न जाय—सूखके पास गुणी नहीं

जाता ।

सूखे साधन कछे भादों—साधन सूखा जानेसे

भदई फलत अच्छी नहीं होती ।

सूची प्रवेशो मुसल प्रवेशा—(सं०) दे० 'सूई गजाय'

सूज सटका, फपड़ा फटाका—सूई घुसानेसे कपड़ा

फट जाता है। छोटे आइमीको क०।

सूत्री फूली जैसे घीका कृष्ण—(ज०) मोटी औरत-को क०।

सूत्रे नहीं और गुलेलका शौक—(च०) जिस कामके योग्य न हो, उसका शौक करे, तब क०, गुलेल कमानकी तरह होती है, जिससे छोटे जानवरोंका गिकार करनेके लिये गाली मारो जाती है।

सूत्रे न धिटारो चाँदसे 'राम राम'—(च०) विटोर (गाँवरका टोला) ताँ दिखाई न पड़े और घलेदूजका चाँद देखने।

सूतकी भाँटो और यूसुफकी खरीदारी—(च० मु०) थाड़ो सो पूँजीसे बहुत दामकी चीज खरीदा चाँद, तब क०।

ऐसा कहा जाता है कि जब यूसुफ गुलाम बनाकर भिच्छके बाजारमें बेचनेके लिये भाँट गये, तब एक बुद्धिया ने एक भाँटो मुनके बदलेमें उन्हें खरीदना चाहा था।

सूत्रके बिनीले हो गये—सब काम धिगड़ जानेपर क०। सूत्र दिया नहीं तार, कोरासे तकरार } बिना सूत्र न कपास फोलीसे लड़म लड़ा } कारण लड़ाई करनेपर क०।

दो जमींदार अपने गाँवसे कहींको चले जाते थे। रास्ते में उन्हें ३०/६० घोष अच्छा जमीनका टुकड़ा दिखाई दिया। उसमेंसे एकने कहा, भाई यदि यह जगह हमारे तुम्हारे हाथ खरी तो तुम क्या करो। उसने कहा, मैं तो उसमें बगीचा लगाऊँगा। परलने कहा, मैं तो उसमें अपनी गाँव भैंसे चराऊँगा। दूसरने जवाब दिया कि तुम चाँदें हुए माली चाँदें भला, मैं तो अपने बगीचेके पास तुम्हें न चरावे दूँगा। परलने कहा, इसमें तुम्हारा कुछ इजारा नहीं है, मैं अपनी जमीनमें जो चाँदें गाँवो करूँगा। गरज इसी तरह हुआ करके खरी दोनो धातापाई करने। इनकी भगइते देख बहुतसे राइगीर-जमा हो गये। उन्हेंने बीच बिधाव कर लड़नेका कारण पूछा, दोनोने अपनी अपनी बात कह सुनाई। इसपर एक मनुष्यने कहा, कि भाई तुम्हारी बड़ी मसल है कि सूत्र न कपास कीबीसे लड़म लड़ा।

सूत्रा सरप जगावेना, गाँवर पाँव लगावेना—स्पष्ट।

सूत्रेका मुँह कुत्ता चाँदें—बहुत सीधापन भी अच्छा नहीं।

न इतना हलका बन कि घटकर जाय भुके।

न इतना कड़वा बन कि जो चकड़े सो घके ॥

सूत्रा खेत फुलच्छना, हिरना ही चुंग जाय।

खेत विरांता घोयके, बीज अकारध जाय—(क०) जिस खेतकी रखवाली नहीं होती, उसे हरिन चर जाता है और पराये खेतमें खेती करनेसे लाभ नहीं होता।

सूत्रा खेत पहरुभां सोवे, कर्पो ना खेती ऊजड़ होवे—स्पष्ट।

सूत्रा घर चोरोंका राज—जिस घरकी रखवाली नहीं होती, उसीमें चोरी होता है।

सूत्रा घर मीड़ोंका राज—जाली घरमें ही बरं अपना छत्ता लगाते हैं।

सूत्रो शालासे मरखनी गाँ अच्छी—स्पष्ट।

सूत्रो सेजसे मरखना घेले अच्छा—(ज०) वैषण्यसे जराब स्वभाववाला पति अच्छा। विधवाओंका कहना है।

सूत्रे घरको पाहुनों, ज्यों आवे त्यों जाय—स्पष्ट।

सूत्रेमा मत चीज रख, ले जा चोर चकार, खाऊ है धन जीवका, सूत्रा और उजाड़—स्पष्ट।

सूत्रके फटके सूत्रमें नहीं रहते—जहाँकी चीज वहाँ चली जाती है। पराये लड़केको कसे ही दुसारे पालो पर बह अपना नहीं होता।

यात ए जवाहर जगत बीच जाहर है

सूत्रको चलारो कहीं सूत्रहीमें रहतो ॥ (च० प०)

सूत्रके वजायेसे ऊँट नहीं भागते—स्पष्ट।

ताकी बगदाय कूट भलख दिखानो कबो

सूत्रके यथावे कहीं ऊँट भागि जात है ॥ (च० प०)

सूत्र धोले तो धोले, चलनी भी धोले जिसमें बहत्तर छेद—जो खुद श्रवणुणोसे भरा रहता है, वह

किसीकी शिकायत नहीं कर सकता।

सूत्रकी धाती—सूत्र मनुष्यके जन्म किये हुए धनको क०।

सूत्रका माल अकारध जाय—सूत्रका धन निष्प्रयोजन ही व्यय हो जाता है।

सूत्रके घर कुत्ता जाय न जाने दे—धनवान कृष्णके लालची नौकरको क०। दे० "अपना कुत्ता बरजो"।

सूमित पूछे सूमसे, "काहे घदन मलीन-। का
गाँठीसे गिर पड़ा, का काहको दीन ?" "ना
गाँठीसे कुछ गिरा, ना काहको दीन ।" देते
देखा औरको, तातें घदन मलीन—स्पष्ट । सूम
आप तो कुछ किसीको देता ही नहीं, दूसरेको देते
देखकर भी उसे दुःख होता है ।

सूरज अस्त, और मजूर मस्त—इसलिये कि कामसे
छुटी मिली और दिन भरकी मजूरी पक गई ।

सूरजको क्या आरसी लेकर देखते हैं—तेजवान
पुरुष आप ही प्रकाशित होते हैं ।

दिन क' कहिय नाथ किमि' बौन्दे,
देखिय रवि कि दीप कर लीन्दे । (तुलसी)

सूरज धूल डालनेसे नहीं छिपता—तेजवान पुरुष
छाटे आदमियोंके छिपानेसे नहीं छिपते । अच्छा
आदमी बुराके बुरा कहनेसे बुरा नहीं होता ।

सूरजने भान उभारी, रैन घरको सिधारी—
सूर्य निकलनेसे रात चली जाती है ।

सूरज धैरी ग्रहण है, दीपक धैरी पीन । जोका
धैरी काल है, आयत रोके कौन—स्पष्ट ।

सूरत और सीरत—छन्दस्ता और गुण, दोनों होना
बहुत सुगुणित है ।

धीरनके हम गुणम है सूरत हुई तो का ।
सुखी, सुफुद भरीको सूरत हुई तो का ।
दे० "सोना धगन्ध"

सूरत चुड़ैलकी सी, मिजाज परियोंका सा—
(मु० ज०) बदसूरत औरतके अधिक शौकीन होने
पर क० ।

सूरत न शफल, भाड़मेंसे निकल—काले क्यूटे बद-
सूरत मनुष्यको क० ।

सूरतमें पेसे, सीरतमें पेसे—न देखनेमें ही अच्छे
न गुणमें ही । सब तरहसे तराच आदमी वा
चीतको क० ।

सूरत मेरे मित्रकी, मनमें रही समाय । ज्युं
मैंहदोके पातमें, लाली लखी न जाय—आन्तरिक
प्रेमपर कहेते हैं ।

सूरदासकी कारी कमरिया चढ़े न दूजो रंग—
काली कमली पर दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता । यह

सूरदासने अपने ऊपर जो भगवत-भजनका रंग चढ़ा
था उसके लिये कहा था । सूरदास खल कारी
कामरि चढ़े न दूजो रंग—जैसे काली बंखली पर
दूसरा रंग नहीं चढ़ता, उसी तरह दुष्टजन उपदेश
करने पर भी दुष्टता नहीं छोड़ते ।

सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आप ।
विद्यमान रण पाप रिषु, कापर करहिं प्रलाप—
(तुलसी) जो कर्मठ है वह काम करके दिखाता है
खाली मुहसे बकता नहीं ।

सूर सूर तुलसी शशी, उद्दगन केशवदास ।
अवके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहिं प्रकाश-
साय ।

सूरा काटे और विलमें घुस जाय—धीर मनुष्य
अपना रास्ता आप साफ़ कर लेता है ।

सूरा रणमें जायकर, लोहा करो निसंक । ना
मोहि चढ़े रंडापड़ो, ना तोहि चढ़े फलंक—
धीर सत्राणीका अपने पतिके प्रति उपदेश ।

सूरा सो पूरा—(१) सूरा सब कुछ कर सकता है ।
(२) अंधे बुद्धिमान होते हैं ।

सूलीपरकी रोटी खाता है—जो मनुष्य अपनी
जानको संकटमें डालकर जीवन निर्वाह करता है,
उसे क० । जैसे चोरी, दाका, लड़ाई वा और कठिन
कार्य जिसमें जान जोखिम हो ।

सूलीपर भी नौद आती है—नौदकी बड़ाईपर क० ।
याद मित्रगामें मेरी आंख खरो जाती है ।

योग मुच कहते हैं सुखी पै भी भौद खानी है ।

सूवा सेमल देखके, समो गंधाई सुद्धि । फूल
देखके रम रहे, फलको रही न मुद्धि—धोखेकी
टंठी पर क० ।

सूहा जोग सुहागका, अद्य कूप जोग है नीर ।
गुरु विद्याका जोग है, सोच समझ रे धीर—
स्पष्ट ।

सूहेकी रीति नहीं, मसरुकी तौफ़ीक नहीं—
(ज०) जो करने योग्य है, उसे करते नहीं, और
जो करने योग्य नहीं है उसपर तथोपयत्न चलती है ।
संतका माल हृदा निर्दयी—जो पाप सुश्रुमें
मिलती है, उसके सच करनेमें तरप नहीं होता ।

यह फ़ारसी मसल, "माले मुफ़्त दिले घेरहम" का अर्थवाद जान पड़ता है।

सैतका चूना दाढ़ाकी क़त्र—(५० ज०) मुफ़्तके मालसे अपना मतलब निकालने पर क०।

सैतकी गंगा हरामके गोते—जब मुफ़्तकी चीज़ मनमानी या फ़िज़ूल धर्च की जाती है, तब क०।

सैत सैतका गेहूँ घर घर पूजा—स्पष्ट।

सैदुर न लगावे तो भतारका मन कैसे रखे—(५०:ज०) स्पष्ट।

सैदुर टिकुली जरल, तब पेटोमें बज़र पड़ल—(५० ज०) घौड़की चीज़ न मिलेगी तो क्या पेटके लियेअन्न भी न मिलेगा। जब कोई खी कष्ट पाती तब क०।

सेजकी मखली भी बुरी—(ज०) खी अपनी सौतकी निस्यत कहती है।

सेज चढ़ते ही राँड़—विवाहके याद ही पतिके मर जाने पर क०। जीती याजो हारनेपर क०। जब कोई राजा वा अफ़सर लड़ाई जीतते ही मर जाय या किसीका बना बनाया काम बिगड़ जाय, तब भी क०।

सेठ क्या जाने सायुनका भाव—जो जिसका पात्र नहीं है, वह उसका हाल नहीं जानता। सेठोंका काम सराफ़ी करनेका है।

सेत सेत सब एकसे—अच्छे घुरेकी जय पहिचान न हो, तब क०।

जहाँ नहीं गुन वूफ़ तर्क, कैसी काम बिलास। खै व खै तु सब एकसे। करक कपूर कपास ॥

(दाँचब मायक । करक = धोला)
सेरकी हंडीमें सया सेर पड़ा और उफनी—छोटे दिमागवालेको कुछ कठिन काम देनेसे वह उकसाने लगता है। (२) छोटा आदमी उचितसे अधिक धन पानेसे इतराने लगता है।

छद्र नदी पस बलि उतराई, घोर धन जस खब बीराई (सुबही)

सेरको सया सेर—(१) अत्याचारीसे क०। तात्पर्य यह है, कि तुम्हें भी धवानेवाला घोर कोई है। (२) जो अपनेको बहुत चालाक समझता हो उससे भी अधिक चालाक जब उसे मिल जाय, तब क०।

एक चाँदाक मनुष्यने अपने किसी दोस्तसे कहा कि मैं सफ़रकी जाता हूँ, तुम अपनी बंगुडी मुझे दो तो मैं उसे अपने पास रखूँगा। जब उसे देख गा तब तुम्हें याद कदंगा। उसने जवाब दिया कि यदि मुझे याद रखना चाहते हो तो अपनी च गयीकी खोली देखकर याद करना कि फलाने दोस्तसे बंगुडी मांगी थी, उसने मुझे न दी।

सेरमें पसेरीका धोखा—(१) असम्भव बात पर क०। सेरमें पसेरीका धोखा नहीं हो सकता।

(२) बिलकुल नुक़सान होने पर वा इतना अधिक नुक़सान होनेपर क०, जितना होना असम्भव है।

सेरमें पूनो भी नहीं कतो है—अभी कुछ भी काम नहीं हुआ।

सेवकको न्यून भाग ही बहुत है—गरीबको थोड़ा सहारा भी बहुत है।

धर माधुर मो चरि भये, ददा तजो रस इष्ट।
न्यून भाग सेवक कष्टो, ज्यो दस च गुण मिष्ट ॥
(लो० १० को०)

मोअनके समय सेवकसे मालिकने कहा कि अब क्या कोड़े बहुत (न्यून भाग) कम भाग बच गया, उसपर सेवकने कहा यह न्यून भागही मेरे लिये दस च गुण मीठा है, चर्पातु बहुत मीठा है, उसी प्रकार पतिने जिस समय पिशाकी धरा (पकड़ा) उस समयको साधु-सुख तो चतुर्भुव कर लिया, उसी समयमें लोग चरि भये चर्पातु देख खिनेसे विघ्न हुए, इसलिये इतरख खेना छोड़ दिया, परन्तु पकड़नेका हो चानन्द सेवकके न्यून भागके पैसा बहुत माना।

सेवक शठ नृप रूपण कुनारी, कपटी मित्र शत्रु सम चारी—(तुलसी) स्पष्ट।

सेवक सुख चह मान मिखारी, व्यसनी धन शुभगति व्यभिचारी—असम्भव बात पर क०।

सेवक सोई जानिये, रहे विपतिमें संग। तन छाया ज्यों धूपमें, रहे साथ एक रंग—सेवक वही है जो विपतिमें साथ दे जैसे धूपमें शरीरकी छाया साथ नहीं छोड़ती।

सेवा ऐसी लाभ दे, ज्यों गाँडा दे रस।

सेवा की थी डोमने, हुए एक के दस—स्पष्ट।

सेवा करे सो मेवा पावे—सेवाका फल अच्छा होता है।

सैवै पक्षी सरस तह, निरस भये उड़ जायँ—

जब तक धन रहता है, तभी तक लोग अधिक संख्यामें घेरे रहते हैं। सब स्वार्थके साथी हैं।

हबं चोप फलं व्यजनि विंशा मृएकं सरा सारसा।

पुप्यं पयुं पितं व्यजनि मधुपा दग्धं वनात्सकं मया ॥

निद्रंभ्यं पुष्टयं व्यजनि गणिका भद्रं शिवं मन्निषः।

सर्वे कायं वयाञ्चनेभिरमते कस्यासि की वल्लभा (भट्ट हरि)

सोई बड़ो भगता जगमें, दिये कंटमें काठ

कपारमें माटी—आजकलके साधुओंपर क०।

सोंटा बल विन काम न आवे, बैरी छीन तुझे

गुदकावे—बिना बलके लाठी भी काम नहीं आती।

सोंटा हाता देहमें हांगा, उसने भेंटे सब कुछ

मांगा—(मा०) जिसके हाथमें लाठी और शरीरमें

बल है उसको मांगनेसे सब कुछ मिलता है।

सोंटे चिल अय तेरी वारी—जब सब तरहसे हारकर

अन्तिम उपाय अवलम्बन किया जाय, तब क०।

कि सी समय एक शिवचिह्नोने अपनी मांस कड़ा कि

ने कुछ दिनेके लिये विदेम जाक गा, म भी रासोंमें खाने

के लिये कुछ बना दी। उसकी माने चार रोटियां बना

दीं जिन्हें लेकर बच सफारमें गया। पहले सुकाम पर

एक पेड़के नीचे बैठ गया और रोटियां निकाल कर

कचने लगा, "एक खाक, दो खाक, तीन खाक,"

कि चारोंकी हो खा जाक।" उस पेड़पर बार परियां

रहती थीं, वे समझ गईं कि यह कीड़े बड़ा दैव है जो

हम चारोंकी खाया चाहता है। परियोंने उसके सामने

उपस्थित हो प्रार्थना की कि यदि बच हम लोगोंका

प्राण दान दे तो वे उसे एक बनोड़ी चीज देंगे। जब

शिवचिह्नो राजी हो गया, तो परियोंने उसे एक आदमी

कड़ाकी दी, और कहा कि इससे तुम जिनकी रोटियां

मांगोगे यह तुम्हें दोगी। शिवचिह्नो घर लौटने समय

एक सरायमें ठहरा, और भटियारसे उस कड़ाहीका

सब हाल कइ सुनाया। भटियारने चालाकीसे कड़ाही

बदन की। जब बच घर आया तो कड़ाही अपनी मांकी

देकर बोला कि इसकी आजमाइय करी—जब कड़ाही

च लहियर चढ़ाई गई और रोटियां मांगी गईं, तब कुछ

न मिला। इससे बच बहुत निराश हो गया। दूसरे दिन

उसने फिर चार रोटियां माग लीं उसी इच्छके नीचे बैठ

कर बड़ी बातें कहीं को पढ़िने देकी कही थीं। परियां

समझ गईं, कि इसे किरीने उग लिया है। अबकी बार
उन्होंने एक रसुकी और एक छोटा दिया। शिवचिह्नो
उसी लेकर उसी सरायमें आया, और रसुकीको जमीनमें
बिछाकर बोला कि सरकी बांध ले। जितने बड़ा मौजूद
थे सरकी रसुकीने बांध लिया। जब उसने चोटकी
जमीनमें पटकके कड़ा कि 'सोंटे चय अब तेरो भारी।'
इसपर छोटा सबको पीटने लगा। मारकी मयामे
पीड़ित हो जब भटियारने उसकी कड़ाही फेर दी तब
बच राजी खुशी अपने घर लौट आया।

सोश्रा सो सूका—दुमानी है (१) जो सोता है सो
खोता है। (२) कुंजड़ेका कहना है, जिस भाव सोश्रा
उसी भाव चूका है (दोनों सागके नाम हैं)

सोइ सयान जो परधन हारी, जो करु दम्भ
सो बड़ आचारी—कलियुगमें जो दूसरेका धन
हरण करता है, वही चतुर और जो दम्भ पाखंड
करता है, वही आचारी है।

सो घर सतधानाश जहां हो अतिबल नारी—
(गिरि०) जिस घरमें स्त्रीका ज़ोर अधिक होता
है, उस घरका नाश हो जाता है।

सोचके चलना मुसाफिर यह ठगोंका गांव है—
(१) संसारमें माया मोह खादि जो ठग हैं, उनसे
बचे रहना चाहिये। (२) संसारमें सभी अपने
स्वार्थके लिये दूसरेको ठगनेके लिये तत्पर रहते हैं।
अतएव खूब होखियारीसे रहना चाहिये।

होगियार बार जानी यह दस है ठगोंका,
यां टुक निगाइ च को और मात्र दोकी का। (मजीर)
दे० "श्रांस बची"

सोचना, जो मोचना—घिन्ता करनेसे मनको कष्ट
होता है।

सो जाये सुपनेमें प्राणी, धन दौलतको पाये।
जाग पड़े जैसेके तैसे, हाथ फछू नहिं भावे—
स्पष्ट।

सोतका पानी पाक—नालेका जल स्पष्ट एवं
पवित्र होता है।

सोता नाग जगाना—किसी ज़बरदस्तीमें देड़दांड
करने पर क०।

सोती थी पर फाता नहीं, जो फाता तो पांच पाय
घालसी मनुष्य पर ताना है।

मिलती है तब क० ।

सोह न राम प्रेम बिनु माना, कर्णधार-बिनु
जिमि जल्लयाना—(तुलसी) स्पष्ट ।

सोहनी बुधा और चटाईका लहँगा—(ज०) दे०
'शौकीन बुढ़िया...'

सोहयतंका असर है—जब किसीपर संगतका प्रभाव
पड़ता है, तब क० ।

आदँ जँ हो चस्तु हँ, वैसी ही मन होय ।

भासा और गिलोल काँ, कर ले देखो कौय ॥

(नागरीदास)

सो है दूल्ह संग बराता—(तुलसी) दे० "दूल्ह-
की गैल बरात" ।

सौ अज्ञान, न एक सुज्ञान—एक चतुर-मनुष्य
सैकड़ों मूखोंसे उत्तम है ।

सौ ऐयोंका एक ऐव नादारी है—पारीकी सैकड़ों
बुराहयोंसे बुरी है ।

सौकन गई, और धाँख-छोड़ गई—सौतके लज्जे-
को क० ।

सौकन झूनकी भी बुरी—सौत आटेकी भी बुरी
होती है ।

रसका विकास उस कहानीसे है जिसमें एक मनुष्यने
अपनी स्त्रीको कृदःनेके लिये आटेकी एक भाँच बना ली
है, और वह उसे रोज रोज अच्छे-अच्छे कपड़े
गहने पहिनाता था, और प्यार करता था ।

दे० 'काँटा बुरा करीलका'

सौ कठ्योंमें एक बगला भी नरेश है—जहाँपर सब
बुरे होते हैं, वहाँपर झलियाँका ही राज होता है ।

सौ कपूतसे एक सपूत भला—स्पष्ट ।

बर्मीकी गुणो पुनी न च मखों शवैरपि,
एकयत्नभीइन्नि न च ताराश्वैरपि । (चाणक्य)

सौ कालियोंका एक काला—बहुत कपटो, आद-
मीको क० ।

सौकी हानी, सहस्र बलानी—बात बढ़ाकर कहने
पर क० ।

सौके रहे सठ, आधे गये नठ, बाकी रहे तीस ।
दस देंगे दस दिला देंगे, दसका देना क्या ?—

(व्य०) जो कर्जदार अपना देना चुकानेमें थलसेट

हालता है, उसे क० । झूठा सचा बहाना करके रकम-
को बराबर कर देने पर क० ।

इसपर एक कहानी है :—दो भोज मिलकर चैरकी
निकली । जब वे दरवा किनारे पहुँचे तब एकने दूसरेसे

कहा कि भाई तुम यहाँ खड़े रहो तो मैं अर्धदोसै एक
गोता खगा लूँ । इतना कह बौस रुपये छसि सौप, कपड़े

किनारे पर रख, ज्योंही वह पानीमें पैठा, ज्योंही दूसरेने
खालाकौसे वह रुपये किसीके हाथ अपने घर भेज दिये ।

जब उसने पानीसे निकल, कपड़े पहिनकर अपने रुपये
मनि तो दूसरा बोला कि दिसाव सुन लो । अपने कहा-

अभी देते देर भी नहीं इतने, दिसाव कैसा ? गरजू दोनोंमें
तकरार होने लगी और सौ पचास आदमी घिर पाये ।

उनमेंसे एकने रुपयेवालेसे कहा कि मिथाँ क्यों भगड़गा
है, दिसाव जिस लिये नहीं सुन लेता । हार मान उसने

कहा अच्छा सुना दिसाव । वह बोला जिस वक्त चाँपने
गोता मारा, मैंने जाना कि डब गये । पाँच रुपये दे

सहारे घर खपर भेजो और निकले तब पाँच रुपयोकी
खैरातमें दिये । रहे पाँच सो मैंने अपने घर भेजे है,

उसका कुछ बँदेशा ही तो सुभसे समस्तुक लिखवा लो ।
यह धाधलपनेकी बात सुन वह बिचावा बोला, 'अच्छा
साधव भर पाये' ।

सौ फोसा और एक मसोसा बराबर है—

सौ गाली देना और एक गम खाना बराबर है ।

सौखके विवाह सनारोंके उजियाले—कोई काम
जब बड़े उत्साहसे तो किया जाये, पर उसमें काम

सब कंजूसीसे किया जाय, तब क० ।

सौ खोटोंका वह सरदार, जिलकी छाती एक
न धार—दे० 'कोते गर्दन—'

सौ गज पानीमें रहे मिटै न चकमक आग—
जन्मगत गुण वा दोष किसीका नहीं छूटता ।

सौ गज वारु और गज भर न फाड़—कहे
बहुत काम कुछ न करे, तब क० ।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ सोते न एक मचला
स्पष्ट ।

सौ गाड़ी न एक छकड़ा, सौ हरामजादे न एक
मगरा—सैकड़ों हरामजादोंसे बढ़कर एक मगरा होता

है । मगरा या घूना मनुष्य बहुत बुरा होता है ।
सौ गाथा सूया पड़े अंत बिलाई खाय—जब

किसी अच्छे आदमीकी बुरी गति होती है, तब क० ।

सौ गालियोंका एक गाला घनाया और उड़ा दिया।
गमखोर आदमी ऐसा कहते हैं।

सौ गुण्डा न एक मुछमुण्डा—(पं०) एक मुछ-
मुण्डा सैकड़ों गुण्डोंसे अधिक बदमाश होता है।

पंजाबी मूछ नहीं मुडाते। यह मसल उस वक्त बनी
थी, जब कर्जन फैशन नहीं चला था।

करजानने जनकर दिया मरदोंकी मस दीखिये,
फैशन बनाने थावरु चंदरेकी सच पूछ ली।

सच तो यह है इन्सानको योरपने हलका कर दिया,
इतनादा दादोस को और इनाहामें मूछ ली। (पकवर)

सौ गुलामों घर सूना—(मू० ज०) घरके स्वामीके
म रहने पर क०।

घर है यह इक औरतका नमूना।

सौ घर बाली और घर गुना ॥ (हानी)

सौ घड़े पानी पड़ गये—जय कोई बहुत गर्मिन्दा
होता है, तब क०।

देखति थप थनपम खान, भयो महा पसिब तन बाल।

कछी पखानों ज्यो रस भरे, मनो सौ घड़े पानी परे ॥

(खेद)

सौ चंडाल न एक कंगाल—कंगाल चण्डालसे भी
भी घुरा होता है।

चको भिन धनसंभय करो, सच गुन गुन हनुपरपर धरो।

तिह बिनबुद्धि किल सचकाल सौ चण्डाल न एक कंगाल

सौ चोट सुनारकी, एक चोट लुहारकी—
दे० 'हुट हुट सुनारकी'।

दो मनुष्य आपसमें मित्रता रखते थे। उनमेंसे एक बड़े

चंचल स्वभावका था। वह एकसर दूसरेकी देहता और

धीन धपपड़ किया करता था। एक दिन दूसरेने क्रोधमें

पाकर ऐसा लड्ड, नमार्यो कि उसका मिर फूट गया।

उसने कहा कि तूने यह क्या किया, जिसके जवाबमें

दूसरेने कहा क्या तूने यह मसन नहीं सुनो कि 'सौ

सुनारकी न एक लुहारकी'।

सौ चोर न एक उठाई गीरा—एक शतमार सौ
घोरोंसे अधिक इतरनाक है।

सौ जीवोंका एक घचांव—जहां एक कमानेवाला
और बहुत खाने वाले हों; वहां क०।

सौ जूते और हुक्केका पानी—किसीको लागती
देना हो, तब क०।

सौ ठकठका औरके, निकला खकला एक—

ठकठका=छनार, खकला=खत्री। छनार बहुतवालाक
होते हैं, परन्तु खत्री उससे सौगुने अधिक हैं।

सौ डण्ड न एक लिपटंत—मौ डण्ड करनेसे कुन्ती
सङ्गा शच्छा है।

सौ डंडी न एक बुन्देलखण्डो—बुन्देलखण्डो यड़े
ही बलवान होते हैं। सौ दण्डियोंकी बराबरी एक
बुन्देलखण्डो खत्री करता है।

सौतकी बात रसौत—सौतकी बात कहुवी
होती है।

सौतकी मूरति भी घुरी—देखो 'सौकन चून'

सौत जाय सौतका नाड़ा न जाय—(ज०)

सौत खली जाय, पर उसका पति न जाय—नाड़ा=
हजारबन्द।

सौत पर सौत और जलापा—(ज०) दुखपर दुख।

सौत घुरी है चूनकी थी साम्भेका काम—दे०
'कांदा घुरा'।

सौत भली सौतेला घुरा—(ज०) सौतेले भी सौतेला
सड़का घुरा होता है।

सौ दवा न एक हवा—सौ दवासे जो रोग शच्छा
नहीं होता है वह हवा बदलनेसे शच्छा हो
जाता है।

सौदा अच्छालाभका, और राजा अच्छा दायका
सौदा बही शच्छा है जिसमें मुनाफा हो और राजा
बही शच्छा है जिसका दवाव हो।

सौदा कर नफा होगा—शच्छा काम करो फल
मिलेगा।

सौदा थिक गया दूकान रद्द गई—जयानी निरुल
गई लुड्ड रह गया। रस निरुल गना फोरुट रह
गया। यह मन्त्र प्रायः घेरयाथों पर क०।

सौदा सौदाइयों घात नफेमें—(व्य०) सौदाका
सौदा और घात नफेमें। दूकानदार गाहक पयानेके
लिये जो तरह तरहकी घातें करता है, उस पर क०।

सौ दिन खोरका, एक दिन म्नाहका—जब
आदमी कई बार दोष करके बच जाता है, पर एक
बार एकडे जाने पर पूरा पूरा दण्ड पाता है, तब
ऐसा क०।

जागृते विषय नियं धाम, मारग सांकेतिकीं जितनाम
बोली श्लेष उक्त चरगाह, सो दिन धोरेतो एक दिन घाह

(अधोरा। लो० २० को०)

सौ दिह्नी उजड़ गई तौ भी सवालाख हाथी—
उजड़ जाने पर भी दिह्नीको शान बनो है। देखो
'खटा हाथी भो सो मगका'

सोम कहने हैं बना दिह्नी उजड़ कर लखनक,
कि कहीं यह टागु उस उमड़े हुए घरका प्रयाव।

सौ नकटोंमें एक नाकवाला नकू—जम ध्रच्छा
आदमी धुरोंके समाजमें जाता है, तब वह उनके
घोच नकू बन जाता है। नकू शब्द ग्लिष्ट है जिसका
अर्थ नाकवाला और बदनाम दोनों होता है।

सौ धानकी एक बात यह है—किसी बातका सार
कहने पर क०।

सौ धार तेरी तो एक चार मेरी—चोरकी क०।
क्योंकि अन्तमें एक दिन वह पकड़ा ही जायगा।

सौ वामन न एक खत्री—दिह्नीको से क०।

सो वैरी कटवाँ कहै, मस्तक लिखा सो होय
लेख लिखे सो घालके मेट न सकै कोय—नसीयका
लिखा नहीं मिटता।

विनिकर लिखा की मेटनदारा (मुन०)

सौ मड्डुये मरें तो एक चम्मच चोर पैदा हो—
क्योंकि यह बदचलन होता है। चम्मच चोर=चम्मच

दुरानेवाला, अंग्रेजोंका खानसामा वा सिद्धमतापर
सौ भागिनो विभूषण होना, विध्वंसन कहै
शृंगार नवीना—उल्टी रीत पर क०।

सौ रंडी मरें तो एक आया—आया=अंग्रेजोंके
यहांकी दाई, जो बदचलन होते हैं।

सौ मन सोना रत्ती हुकूमत—बड़ोंपर छोटीकी
हुकूमत होने पर क०।

सौ मारे और एक न गिने—निश्चये मनुष्यको क०।
तात्पर्य यह है कि यह किसी लायक नहीं केवल
पीटने लायक है।

सौ मारे और निन्तानवेसे भूल जाय—ऊ० दे०
अथांत मारता हो जाय हाथ बंद न होने पावे।

सौ मुंह हज़ार घातें—किसी विषयपर तरह तरहकी
अफ़सूहें उड़नेपर क०।

सौमें फूला, हज़ारमें फ़ाना, सचा लाखमें देखा

ताना—देखो 'कोतागदन दुम'.....

सौमें सती, लाखमें यती—सैकड़ों, खियोंमें एक
सती होती है और लाखों पुखियोंमें एक यती होता है।

सौ लगों तो क्या? हज़ार लगों तो क्या?—
(१) निलंज मनुष्यपर क०। (२) जो आदमी
कर्मपर कर्म लेता जाता है, उसपर क०।

सौ लठेत न एक पटेत—सौ लठोवालोंको एक
पटवाला हरा सकता है।

सौ सयाने एकमत—सब सयानोंको एक ही राय
होती है।

इस मसनका विकास इस कहानीसे है। बीरबन—इस
कहानीकी अकसर अकसरसे कड़ा करते थे। अकसरने
कहानीकी सचाई परखनेकी चाही। सुतरां बीरबनने
बादशाहके आशानुसार नगरसे बाहर एक पक्का कुण्ड
बनवाया। जाइकी एक अधरी रातको बीरबनने शहरके
सो सयानोंको कुण्डमें एक-एक घड़ा दूध डालनेकी आज्ञा
दी। प्रत्येक सयानेने सोचा "निश्चानवे घड़े दूधमें एक
घड़ा पानी अदृश्य निभ जायगा, अतएव मुझे दूध डालनेकी
आवश्यकता नहीं।" इस विचारका यह फल हुआ कि
प्रत्येक सयानेने कुण्डके पामशाली तालाबसे एक एक
घड़ा जल ही कुण्डमें डाला और उसमें एक बूंद भी दूध
न पड़ा। दूसरे दिन प्रातःकाल बीरबल अकसरके साथ
कुण्डपर गया और कण्डमें एक बूंद भी दूध न दिखाई
दिया। बादशाहके भेद पूरनेपर बीरबनने कहा,—
"हुजूर, सौ सयाने एक मत।"

इसी कइत उरिबोवम, सान, तु गावत त्पामी वृह तान।
कही कइउत धरि दिव्य मणि, ज्यो भी खाने एक मति ॥
(लो० २० को०)

सौ सौ धके खायें, तमाशा घुमके देखें—
तमाशेके शौकीन धके खानेकी शर्म नहीं करते।

स्वर्गसे उतरा, यदूलमें अटक—जब कोई बड़ा
कार्य अन्तमें धाकर अटक रहता है, तब क०।

स्वप्न—महलको देखहीं, रहैं भोपड़ी मांहि—
ऊंची आकांक्षा रखनेवालेको क०।

स्वप्नुर
जो स्वप्न
ते हैं,

(१) शक्यर कुल निवासः स्वर्गं तुल्यो नराणाम् ।
यदि भवति विवेकी पञ्चमः पट दिशामि
दधि मधु घृत लोभान् प्रासमेकं च तिष्ठेत्
स भवति खर तुल्यो मानसो मान होमः (उद्धमद् वायव्य)
(२) चकारे खलु संघारे स्वर्गं शक्यरे भेदिरम् ।
हरो हिमानये सति विपद्यते महेदधि ।

स्वांग घट्टन रात थोड़ी—जिन्दगी कम है और काम अधिक करना है ।

बलि बलि चक्रवर्ति राज्ञि सिंगार,
पिय छिन्नई मोहिं तनि विशार ।
भोग छक्ति सांघी दरनाह,
स्वांग बहुत पीर घीरी रात । (५०० र० कौ०)

स्वांग भी लाये तो फोटोका—किया भी तो गन्दाकाम । जब कोई मनुष्य घेमाऊ कोई बात कहे, या ऐसी बात कहे जो सननेवालोंको डुरी मालूम हो, तब क० ।

स्वाति वूँद यिन सधनमें स्वाती मरे पियास—
स्गानिमानो मानसहित ही जीवन ज्यतीत करते हैं ।

स्वाति वूँद सीपी मुरुम, कदली भयो कपूर ।
फारेके मुख विग्र भयो, संगतके गुण सूर—

हँडिया न डोई मुभा सारी रात खोई—बूधा परिश्रमपर क० ।

हँसगुन पाये, तेवर लाये—(पू०) जो कोई हँसके देता है उसे तेवरी बढ़ाके लेता है । कुतलको क० ।

हँसना जाय रोता भाय, रोता जाय हँसता भाय
अदालतपर क० ।

हँसता डाकुर हँसता चोर, इन दोनोंवा भाया
छोर—हँसनेमें डाकुरका रोव जाता रहता है और
वाँसनेसे चोर पकड़ा जाता है ।

हँसते, घर धसते—(१) हँसो मत्राक करते करते घर
धस जाता है अर्थात् विवाह हो जाता है । (२) हँसता घर ही बसता है । (३) हँसता घर ही कह देता है, कि लोग यहाँ धसते हैं ।

अति उपवासति निय दुःख-पाय, भूरी कछी सखी समुत्पाय
भोग छक्ति मुनमें नहिं लड़े, हँसते ही घर बघते कड़े ॥

(५०० र० कौ०)

स्वातिकी वूँद सीपीमें पड़नेसे मोती, कदलीमें कपूर और साँपके मुखमें विष हो जाती है । सुरदास कहते हैं यह संगतका गुण है ।

किसी समय दो मनुष्य आपसमें बहस कर रहे थे । एक कहता था कि मनुष्य अच्छे कृत्योंमें जन्म लेनेसे बड़ा होता है दूसरा कहता था कि सत्संगमें बैठनेसे । यह देख कर किसीने कहा कि तुम्हारा यह भगड़ा कभी न निपटेगा जबतक तुम भोग किसी महात्मासे इसका निर्वय न कराओगे । तब वे दोनों सुरदासजीके पास गये ।

उनको बताते सुन कर सुरदासजीने उक्त दोहा कहा था ।

स्वास स्वांसमें छुपण रट, स्वास बूधा मति खोय ।

ना जाने या स्वासका, येही अन्त न होय जिन्दगीका कुल ठिकाना नहीं न जाने कब स्वास निकल जाय, हमलिये कुण्डका नाम सदैव लेता रहे ।

स्वारथ न परमारथ—स्वार्थके कामपर क० । जिसमें न तो अपनाही लाभहोन दूसरेकाही उपकार हो ।

स्वारथ मीत स्वकल जग मांही, सपनेहु कोड परमारथ नाहीं—स्पष्ट ।

स्वारथके सब ही सपने, निरस्व रथे कोड नाहिं ।
नैसी बंदी सरम तह, निरस भये ल'क जाहिं । (इन्द्र)

ह

हँसते देर, न रोते देर—स्त्रियोंके लिये क० ।

हँसते हो, कुछ पड़ा पाया है—जब कोई आदमी बहुत हँसता है, तब क० ।

हँसना बालान, बसना चोर । फुपड़ कायथ, कुलका घोर । ये तीनों कुलको दुवानेवाले हैं ।

हँसा चलल भांग, कोऊ न संगे लाग—मर जानेपर कोई साथ नहीं जाता है ।

आखिरको तो बह हंस चलेला हो सिधारा । (नजीर)
हँसा तो सरवर गये भये काग परधान—
नीचे देखो ।

हँसा घे सो उड़ु गये, कागा भये दिवान—
जब किसी मनुजके स्थानपर दुर्जनका आधिपत्य हो जाय, तब क० ।

इसका निकास हम कहानीसे है—एक ब्राह्मण लोमवग किसी निंदकी गईने गया । उसने यह विचार था कि निंदने जिन मनुष्योंकी शारं बाला है, उनका धन वा

गइना बर्षा पड़ा होगा, सी उठा लाजंगा। सिंघने उसे देखने ही पकड़ लिया। उस समय सिंघका मन्त्री एक हंस था। उसने ब्राह्मणको अथय जान सिंघकी समझाया कि यह आपके पुरोहित हैं आप इनके यज्ञमान हैं इन्हें न मारिये। सिंघने ब्राह्मणको छोड़ दिया और बर्षापर जो माल पड़ा था, उसे ले जाने दिया। कुछ दिन बाद ब्राह्मण फिर उसी स्थानपर गया। उस समय एक कौशा सिंघका मन्त्री हो गया था। उसने ब्राह्मणकी मार डालनेकी सलाह दी। सिंघने हंसकी बात याद करके ब्राह्मणसे कहा, "हंसा ये सो उड़ गये, कागा भये दिवान। जाव विप्र घर आपने, सिंघ काकि जिनमान।"

हंसिये दूर पड़ौसी नाहिं } दुरवालोंसे हंसे, पर
हंसिये दूर पड़ौसी से ना } पड़ौसीसे न हंसे।

हंसी और फँसी—छी यदि हंसी तो समझो कि अब यह काब्रमें धरा गई। हंसना सम्मत्तिका लक्षण है।

हंसी पराई गुड़से मीठी—स्पष्ट
हंसीमें खँ सी—(१) बहुत हंसीसे विगाड़ हो जाता है। (२) बहुत हंसनेसे खांसी आती है।

हंसुआके इयाह खुरपाके गीत—(पू०) पेजोड़ यातपर क०।

हंसुआ चोख, न खुरपा भोथर—(प०) जब दोनों निकम्मे होते हैं, तब क०।

हंसुआ दूर कि पड़ौसिनकी नाक—(पू० ज०) न हंसुआ दूर है न पड़ौसनको नाक। पड़ौसियोंमें अक्षर भगड़ा हुआ करता है, इसलिये क०।

हंसे तो औरोंको, रोवे तो अपनेको—मनुष्य अपनेपर रोता है और दूसरोंपर हंसता है।

हंसे तो हंसिये, अड़े तो अड़िये—जो लैसा कर उसके साथ बैसा हो बचाव करना चाहिये।

हंसोड़की जोरू वेहया—जो थादमी बहुत हंसी मसखरी किया करता है उसकी श्री भी बेधर्म हो जाती है।

हक कर हलाल कर दिनमें सौबार कर—(मु०) स्पष्ट।

हक कहनेसे अहमक येज्ञार—मूर्ख मनुष्य सत्यसे चिक्ते हैं।

भारता है, उसपर अंगारे बरसते हैं।
हक ना पावे 'हताम'—दे० "बनिया देता ही नहीं"।

हक नाम अल्लाहका—(मु०) सत्य नाम परमात्माका है, हक हक है और नाहक नाहक—सत्य सत्य ही है और असत्य असत्य। जब किसीको समझाते हैं, तब ऐसा कहते हैं।

हकीमको फ़ारूसे लाज—जो जिसका पेशा है अंगार वह उसीसे शमनि, तब क०।

हग न सकें पेटको पीटें—स्वयं कार्य कर न सकें और दूसरोंको दोष दें, तब ऐसा क०।

हगा न घर रक्खा—दे० 'इधरके रहे न उधरके'।

इस कहानीका विकास इस प्रकारसे है—एक दिन किसी राजाने एक जाटसे तब बितक में चार मान ली और उसकी साथ प्रतिष्ठा की कि जो तुम मांगोने उसे मे दूंगा। इसपर जाटने कहा कि मैं तुम्हारे बिश्वेमें हूँ ना। राजा वचन दे चुके थे इससे लज्जत भ सके और लाचार होकर उन्हें यह बात माननी पड़ी। उस समय बलियोंकी एक युक्ति सूफी। उन्होंने जाटसे कहा कि बिलोनेमें इगना सही किन्तु पेशाव न करना। अंगार ऐसा करोमी तो तुम्हारा घर ज्वत् कर लिया जायगा। जाटने इस शर्तकी कुबूल कर लिया, किन्तु इगनेके पहिले पेशाव कर दिया। बड़ उसी समय पकड़ लिया गया और उसका घर ज्वत् न हो गया।

हगासे लड़केके नथने पहिचाने जाते हैं—(ज०) अरत मनुष्य मुँह देखनेसे ही पहिचाना जाता है।

हजका हज और यनिजका यनिज—(मु०) दे०, 'एक पंथ दो काज'। जो मुसलमान यात्री हजके वहाने मक़े जाते हैं और वहाँसे बहुत सी चीजें खरीद कर लाते हैं जिसमें उन्हें लाभ होता है, उन पर क०।

हजामत हो गई—ओ जानेपर क०।

हज़ार व्याफ़्तें हैं एक दिल लगानेसे—किसीसे प्रेम करनेपर हज़ारों तरहकी विपत्तियोंका सामना करना पड़ता है।

हज़ार इलाज, और एक परहेज—रोगीके लिये संयमसे रहना हज़ारों इलाज़से अच्छा है।

हज़ार जूतियां मांकू और एक न गिन—दे०

हज़ार जूतियां लगी और इज़त न गई—
निलामको क० ।

हज़ार दवा और एक दुआ—हज़ार दवा करनेसे
एक धार ईश्वरकी प्रार्थना करना अच्छा है । जब
दवासे रोग थाराम नहीं होता, तब क० ।

हज़ार परसका रेजा और नहीं नाम—(ज०)
जब कोई पुराना आदमी किसी काममें थनभिन्नता
प्रगट करता है, तब क० ।

हज़ार लाठी टूटी तौमी घरवारके वासन तोड़-
नेको बहुत है—बूढ़े कुत्ते पर क० ।

हज़ारों टांकी सहकर महादेव होते हैं—बिना कष्ट
उठाये मनुष्य ऊंचे दर्जेको नहीं पहुँचता ।
पुखंड होते हैं रक्षा ठीकरें खानेके बाद,
रंग लातो हैं चिना फावर पै पिप आनेके बाद ।

हज़ामका उस्त्या वही मेरे सिरपर चही तेरे
सिरपर—जब दोके साथ एक ही तरहका मताव होता
है, तब क० ।

हज़ामका टंका—कहीं नहीं जाता, चाहे जैसी
हज़ामत बनावे पैसा मिलेहोगा । नार्है जब विवाहका
सम्बन्ध ठीक करा देता है तब अपना नेग ले लेता
है, विवाह चाहें हो या न हो ।

हज़ामका लडुका पहिले उस्तादहीका सिर
मूँडता है—स्पष्ट । जब कोई सिपानिवालेहीको चुना
सगाने, तब क० ।

हज़ामके आगे सबका सिर झुकता है—
शरङ्गके सामने सबको सिर झुकाना पड़ता है ।

हठ न छूट-छूट्टु बरू देहा—जब मनुष्य किसी
कामको करनेके लिये जिद करता है, तब पैसा क० ।

हड्डी खाना आसान पर पंचाना मुश्किल—
पसप्लोरके लिये क० ।

हड्डी खाय उगले बहेड़ा—करें कुछ फल हो कुल,
तब क० ।

हड्ड लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—
जो यिना स्वर्च क्रिये काम निकालना चाहता है, उस
पर क० ।

हथोंकी गद्दा, दत्तोंसे न खुले—(पं०)बड़ा काम
कम परिश्रमसे नहीं होता है ।

हथों कीते दम्मड़े, सई लम्हड़ी व्याह—(पं०)
हाथमें पैसा हो तो सुत ब्याह हो सकता है ।

हथों लगावे पैरों बुम्हावे—दे० "बोरते कहे चोरी
करो....."

हथिया चले न पैयां, बैठे दे गुसेयां—(पं०)
आलसी मनुष्य पर क० ।

हथिया बरसे चित्रा मंडराय, घर बैठे किसान
रिरियाय—(क०) पैसा होनेसे खेती नहीं होती ।

हथिया बरसे तीन होत हैं, शकर, साली, माश ।
हथिया बरसे तीन जात हैं, तिहड़ी, कोदो, फासल—

(क०) स्पष्ट ।

हथियार हाथका—हाथका शख ही काम आता है ।
घटा साम लखि दई सुकान, चनौ लखि नखि ब्याडले बाम
यई प्रविह जगतमें गाय, मय्य सोई जो हाथके साथ ।

हथेलीका फफोला—कष्टदायक मनुष्यको क० ।

हथेली पर जान लिये फिरते हैं—जिले मरनेका दर
न हो, उसे क० ।

हथेली पर सरसों नहीं जमती—यात कहते ही
काम नहीं होता । जो काम करते ही सुत उसका
साम उठाया चाहें, उसे क० ।

जनों तोहि खति चातुर ब.म, मय ही मिलनै क्यौ घनसाम
कचो पहानी सुन्यो सुनारि, मरखों जमि हथे नी नाहि ।

हथेली पर सरसों जमाना भानमतीवालोंका काम है,
जो हाथ पर सरसों बोकर सुत पैड़ लगा देते हैं ।

हनतेको हनिये, पाप दोष नहीं गनिये—
जो किसीका प्राण लेता हो, उसे मारनेमें कोई पाप
नहीं ।

हनोज़ गाध घ खर रा न शिनाख्त—(फा०) यभी
तक गधे घोड़ेकी पहिचान नहीं हुई । जब किसी-
की उन्न जयादा हो जाय वा उसे काम करते बहुत
दिन हो जायें और कुल भी तजरवान हो, तब क० ।
गाव—बैल । खर—गधा ।

किसी सुनयक पहिसमें एक क म्कार रचता था । सुसका
गधा बड़ा मत्त था और बराबर रेंको करता था, जिससे
सुगल बहुत भा, खय रचना । यह रोज़ खदासे यही दुधा
संगता कि या बजाए इच गधीको गारत कर । इनपुकिन
सुगलकी बारबरदारीका बैल मार गया । तब सुगलने

कहा मुश्किल बनाना । चंद सल मुदाई कर दी, हमोज गाव बखर रा न गिना खत ।
हमोज दिल्ली दूरस्त—(फा०) उद्देश्य-सिद्धिमें देर है ।
दे० “अभी दिल्ली.....”

हमोज रोज अब्बल—जब उन्नतिकी आया रहती है, तब क० । अभी तो पहला ही दिन है ।

हम खुरमा ओ हम-सवाध—(फा० सु०) खानेका खाना और पुण्यका पुण्य । खुरमा अर्थात् दुहारा या खजर मुसलमानोंमें बहुत पवित्र गिना जाता है । हम चौड़े, बाजार सकरा—जो अपना बड़प्पन दिखाता और दूसरोंको छोटा समझता है, उसपर क० । अहंकारीका कहना है ।

हम तुम दोनों हैं महारानी, कौन किसीको देवे पानी—जहां दोनों ही सकुमार हों, वहां क० ।

हम ना जड़े उहि बैकुंठे जहवां चिलम तमाखू नाहिं—तमाखूके प्रेमी ऐसा कहते हैं ।

कान्हरदासजी यहर बागदा मुहल्ला ताजगंजक रघुनेवली बहुत अच्छे साथ हो गये हैं । एक दिन किसी देश-लयमें उनका गाना हुआ । जब गाने गाने उनका पैट फलने लगा तो उन्हें तमाखू की याद आई । मन्दिरमें तमाखू पीना निषेध है, यह जानकर उन्होंने यह भजन गाया—“हे कोई ऐसा मिव हमारा जो हुआ भर लावे । कोई खावे कोई पीवे कोई मज्जाइ-चढ़ावे । कान्हरदास कलियुगकी मंडिमां इधकी बुरा पतौवे ॥ हे कोई ..” भजन सुनकर लोगोंने समझा कि तमाखू बिनां बाबाजीका पैट फलता हैना, इसलिये वहाँपर उनको लिथि हुआ । खाया गया ।

हमने क्या गधे चुपाये हैं— जो बुद्धिमान हमने क्या घास खोदी है— } कहलानेका दवा करता है, वह कहता है ।

हम परदेशी पाहुने, आन किया विश्राम । भोर भये उठि जायेंगे, बसो तिवारा गाँव—स्पष्ट ।

हम प्याले, हम निचाले—एक साथ खानेवाले । कुरीबो रिश्तेदारको वा गाढ़े मित्रको क० ।

हम वासी उहि देखके, जाति वरण कुल नाहिं । शब्द मिलावा होत है, अंग मिलावा नाहिं—

साधुओंका कहना है ।

हम रोटीको नहीं खाते रोटी हमको खातो है— जो आदमी पारिवारिक चिन्तासे चिन्तित रहता है, वह कहता है ।

भोगान मुक्ता बयसिब मुक्ता, खियान तब बयसिब तमा । काली न यानी बयसिब याता, वषा न जोषां बयसिब जोषां (मज्हरि)

हम सांप नहीं हैं कि जिय चटकर मिट्टो— जब किसीको मजदूरी या खुराक नहीं मिलती है, तब क० ।

हमसे और चौसर—जब कोई अपनेसे बड़ेके साथ मज्जा करता है, तब यज्ञ कहता है ।

हमारा काम हो घीता, जहाँसे मैं चला रीता— मेरा कर्तव्य पूरा हो गया । अर्थ में संसारसे खाली हाथ जाता हूँ । रुद वा संतोपी मनुष्यका कहना है ।

हमारा घर जाय तो जाय पर तुम्हारा न जाय—

(१) परोपकारो मनुष्य अपनी हानि करके भी दूसरे को हानि पहुँचनेसे बचाता है । (२) जब कोई परोपकार दिखाते हुए अपना मतलब गाँठता है, तब उसे व्यंग्यसे क० ।

इसपर एक कहानी है—दिल्लीके दा कंगाल बाँके बाजारकी धेरकी निकली । उन्होंने रातमें एक खीनबे-बालीको सामने खीनचा रक धेर बैठे देवा । खीनचा मिठाईसे लंगलंग भरायो जिसे देट उनको मूँहमें पानी भर भायो । एकने खीनबे बालीसे कहा—तू कौसा बर-भूक है कि मिठाई सामने लिथे बैठा है और इसे खाता नहीं । यह बोला, भाई इसक खानेसे घर जाता है । यह दोनों लगे गपगप मिठाई खाने । उसने कहा कि तुम यह क्या करते हो, तो वे दोनों कहने लगे, “हमारा घर जाय तो जाय पर तेरा घर न जाने डरे ।” यह अपने कंधे पर पशुता और देखता ही रह गया ।

हमारी बिसमिह्लाह और हमसे ही छू—(मु०ज०) दे० “मेरी ही बिल्ली.....”

हमारे घर आवोगे तो क्या लावोगे ? तुम्हारे घर आवेंगे तो क्या बिलावोगे ?—हर हालत में अपना ही स्वार्थ देखने पर क० ।

हम्मामकी लुंगी जिसने चाहा बांध ली— जो चीज सर्वसाधारणके काम आये, उस पर कहते हैं । हम्माम=नहानेका घर ।

हम्मामके भीतर सब नंगे— “धोतीके भीतर...”

यात और मौत किसीके बसकी नहीं—जीना और मरना किसीके अख्तियारमें नहीं।

(१) हाँन साभ भोवन मरन जस अपमस विधि हाथं।

(तुलसी)

साई इयात पाये कजा से चली चली।

अपनी सुगो न पाये न अपना सुगो चली ॥ (जीक)

हरएक घातकी कुछ इतिहा भी है—सभी बस्तुएँ सीमाबद्ध हैं। जय कोई हड़ते इयादह घात वा काम करे, तब क०।

हर कमाले रा जवाले—(फा०) दे० “जो फलेगा सो भड्डेगा”

हर फसे मसलहते, छुश निको मीदानद—(फा०) प्रत्येक आदमी अपना ही अपना फायदा देखता है।

हरका माने; परका न माने—किसी (नये) को मना करनेसे मान जाता है, परन्तु जो परच जाता है वह नहीं मानता।

हरकारे ओ हरमदे—हरएक आदमीको अपना ही काम सुकता है।

हर कौरन लक्ष्मी नारायण—स्पष्ट। दे० “हर निघाले...”

हरले पितर तिलांजलि पाये—स्पष्ट।

हरगुन गावे धका पावे, सूतड़ हुलावे टका पावे आमकसकी दयापर कहा है। जहाँ गुणीका आदर नहीं होता और निर्गुणीका होता है, वहाँ क०।

हर जैसेको तैसा—(१) जो जैसा करता है वैसा ही फल पाता है। (२) जिसकी जैसी भावना रहती है ईश्वर उसे वैसा ही दिखाई देता है।

जाकी रची भावना न सी।

मम मूरत देखो तिन तेरी (तुलसी)

हरदी जरदी ना तजे खटरस तजे न आम। जो हरदी जरदी तजे तो औगुन तजे गुलाम—दे० ‘जो हरदी.....’

हर देगी चमचा—(मु०च०) अविश्वासी पतिपर क०।

हर निवाले बिसमिल्लाह—जो बानेको हर धक, तैयार रहता है, पर काम कुछ नहीं कर सकता, उसे क०।

हर फन मौला—जो मनुष्य सब काममें होयियार हो, उसे क०।

हरभूमिका राज—अन्यायी राज्यपर क०। हरभूमि इलाहाबादके निकट एक ग्राम है। वहाँका राजा यज्ञ अत्याचारी था।

हर रोज ईद नेस्त कि हलुआ खुर्व फसे—हर एक चीजके लिये समय है।

हर शय शयेवरात हैं हर रोज रोजे ईद—जो बहुत ठाठ बाटते रहता है, उसे क०।

हर सट्टे गुड़ मीठा—जब कोई हर बार अपनी जीत चाहता है, तब क०।

एक खँडका किसी बनिवैकी दूकानपर मोकर था। वह नित्य प्रति कटोरिमेंसे गुड़ चुराकर खाया करता था। एक दिन उस बनिवैने अनुभव किया कि गुड़ कोई चुराकर भक्षण खाता है। पोरको पकड़नेकी नीयतसे उसने गुड़के कटोरिकी जगह बिरोजेका कटोरि रख दिया। लडका गुड़ सभककर उसमेंसे बिरोजा निकालकर खा गया, जिससे उसका मुँह चिपक गया। गंधा बिरोजेमें सब बहुत हीवा है इसलिये बहुत हृत्किचसे उसके मुँहसे कटा। तब बनिवैने व्यंगसे उक्त मसल कही

हर साल जुलाव, हर माह फय। हर हप्त हम्माम हर रोज मय—(मु०) वर्षमें एक बार जुलाव, महीनेमें एक बार यमन, हफ्तेमें एकबार गर्म जलसे स्नान और नित्य थोड़ी सी शराय (दवाके तौरपर) पीना चाहिये। हकीमोंका कहना है।

हर हर गाओ, ढोल बजाओ—ईश्वर-भजन करो, आनन्द मनाओ।

हरामका थोल उठता है, हलालका झुक जाता है धसल जहाँ सजाते सिर झका लेते हैं, वहाँ कम धसल निर्भय होकर थोल उठता है।

हरामकी कमाई, हराममें गंवाई—अन्यायकी कमाई व्यर्थ ही खली जाती है।

हराम कोठेर चढके पुकारता है—बुरी बात किसी नहीं रहती, अपने आप प्रगट हो जाती है।

हराम खाना और शलगम—(मु०) अन्यायपर अन्याय किया जाय, तब क०।

हराम चालीस घर लेकर डूबता है—स्पष्ट।

हरामजादेकी रस्सी दराज है—बदमाशसे सभी

डरते हैं।

हरामजादसे खुदा भी डरता है—स्पष्ट।

हरिको भजे सो हरिका होय—जो ईश्वरकी उपासना करता है, वही उसे प्रिय होता है। दे० "जात पांत....."

हरिया हाथो हाकिम चोर, दोनोंके विगरे और न छोर—जंगली हाथी और चोर हाकिम सीमाबद्ध नहीं रहते।

हरि सेवा सोलह बरस, गुरु सेवा पल चार।
तौ भी नहीं बराबरी वेदों किया विचार—
गुस्तेवाका महात्म है।

हरी खेती गामिन गाय मुँह पड़े तब जानी जाय
(क०) जबतक गाय न बियाये और अन्न घरमें न
आये तबतक उसका क्या ठिकाना ? जब किसी
वातका पूरा निश्चय न हो, तब क०।

हरे रूखपर सय कोई घैठते हैं—धनी लोमोंका
साथ सभी देते हैं।

हरे शिष्य-धन शोक न हरई, सो गुरु घोर
नरकमें परई—स्पष्ट।

हर्दों न छोड़े जर्दी घुलघुल न छोड़े रंग—प्रकृति
नहीं बदलती।

हलकका न तालूका, यह माल मियां लालूका-
धुरी चीज़पर या अन्त्यायसे उपार्जन किये हुए
धनपर क०।

हलकके कौतवाल—उन लड़कोंको कहते हैं जो बिना
भोजनकी सामग्रीमेंसे कुछ लिये अपने माता-पिता
को भोजन नहीं करने देते।

हलक रोवे, जीभ टोवे—जब किसीको बहुत थोड़ी
चीज़ खानेको दी जाय, तब क०।

हलकसे निकली खलकमें पड़ी—बात मुँहसे
निकली और दुनियांमें फली। गुप्त बातके प्रगट
होनेपर क०।

हलके पिछाड़े उड़ उड़ जाय—(ज०) दे० 'धोये
कटक'

हल न सकूँ मेरे सौ बखरे—(ज०) आलसी मनुष्य
कहा करते हैं।

हलवाईकी जाई और सोवे साथ कसाई—

किसी उच्च कुलका मनुष्य अगर अपने कुलकी
रीतिके विरुद्ध नीचोंका साथ करता है, तब ऐसा
कहते हैं। योजाड़ बातपर भी क०। हलवाई हिन्दू
और ऊसाई मुसलमान होते हैं।

हलवाईकी दूकान और दादाजीकी फातिहा—

(मु०) जब कोई दूसरेके घरसे अपना काम करता
है, तब कहते हैं। मुफ्तका माल लुटानेपर भी क०।

हलवा खानेको मुँह चाहिये } (१) अच्छी वस्तु
हलवा खुरदनरा रूप वायद } की प्राप्तिके लिये
वैसा गुण चाहिये (२) हलवमें दाम बहुत लगता है।
हरएक आदमी नहीं खा सकता इसलिये भी क०।

हलवा पूरी चांदी खाय, पोता फेरने बीबी जाय
जब घरका काम तो मालिक करे और नोकर मौज
उड़ावे, तब क०।

हलवा पूरी बीबी खाय, पुड़ा पिटावन चांदी जाय
चांदीका कहना है—हलवा पूरी खानेके लिये तो
बीबी और पिटनेके लिये चांदी।

हलवाही चरवाहेको—जो जिसका काम न हो और
उसको यह काम दिया जाय, तब, ऐसा—कहते हैं।
चरवाहा हलवाही क्या जाने अर्थात् गड़रिया
किसानका काम नहीं कर सकता।

हलालमें हरकत, हराममें बरकत—जब सत्यवादी
मनुष्य दुःख पाते हैं और बुरे आराम पाते हैं, तब क०

हल्दी लगी न फिटकरी, पटाक यह भान पड़ी—
जब कोई काम सुप्रतम हो जाय, तब क०। हल्दी
फिटकरी कपड़ा रंगनेमें काम आती है।

हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—
जब मनुष्य बिना व्ययके अच्छा काम चाहता है,
तब ऐसा क०।

हवाका रुख देखना—समयकी गतिकी पहिचानना।

हवाके घोड़े दौड़ाना—जो मनुष्य अपने मनमें हवाई
महल बनाया करता है, उसके लिये क०। भठी गप्पे
हांकनेपर भी क०।

हवाके घोड़ेपर सवार हैं—जब कोई बिना तत्त्वकी
बात कहता है, तब क०। बहुत जल्दवाज़की भी क०।

हस्त भी नेस्त बराबर है—उसका जीना और मरना
मेरे लिये बराबर है।

हस्तीका क्या भरोसा ?—जिन्दगीका भरोसा क्या ?
हाँ करो, या ना करो—जब किसीसे कोई बात साफ़
कहलानी होती है, तब क०।

हांडीका भात छुपे, मुंहकी घात न छुपे—

(५०) भात हांडीमें छिप सकता है, मगर मुंहसे
निकली बात नहीं छिपती।

हांडी न डोई घरघर हमारी रसोई—फ़कीरोंका
कहना है।

एक साधु किसी बसोमें एक पेड़के नीचे आ उतरा और
इधर उधरसे सूखी लकड़ियाँ चुनचान कर धूमो लगा ही
और बाधुवर बिसाकर बैठ गया। दो बार राही
सुघाकिए भी उसके पास आ बैठे और हुका तमाखू पीने
लगे। उनमेंसे एक बीता, बाबाजी। दिन ठग गया, ठक
रसोई यानीकी फ़िरा भी सी करो। साधुने कफ़रा, बाबा
न हमारे यहाँ हांडी, न हमारे यहाँ डोई, घर घर ही
हमारी रसोई।

हांडी न डोई, मुआ सारी घात थोई—(ज०)
स्पष्ट।

हांडी न डोई, सब पन खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांडीमें अच्छत ना, चला समथो जेवें—(५०)

जब पासमें कुछ नहीं रहता है और दूसरोंको उसके
देनेके लिये कह खाता है, तब क०।

हांडीमें एक बावल टट्टोला जाता है—दे० “सारी
देगमें... ..”

हांडीमें होगा, सो डोईमें भाप ही आवेगा—
जो सममें होगा सो मुहसे निकलेगा।

हरष वदेन कल वधमवा पर भावद।

हांडेसे दांडा भला—बेकार धमनेसे क्रुद होकर
बैठना अच्छा।

हांडों थका, ब्यौदारों थका—(५०) बड़े आदमी-
को क०।

हाकिमकी अगाड़ी, और घोड़ेकी पिछाड़ी न
खड़ा हो—दोनोंमें हानि होनेका भय है।

हाकिमके आँख नहीं होती, फान होते हैं—

न्यायाधीश छनकर ही न्याय करते हैं, देखकर नहीं।

हाकिमके डपट और कौन्डके रपटका बिस्तने
बरा माना है—स्पष्ट।

हाकिमके तीन शहनाके नौ—हाकिमके तीन और
कामदारके नौ हिस्से होते हैं। हाकिमके पास जो
पहुंचता है उससे बहुत ज्यादा धमले फ़ैले खा
जाते हैं।

हाकिम टले पर हुक्म न टले—हाकिमका किया
फ़ैसला ही कायम रहता है। हाकिम बदल जाता
है, पर उसका हुक्म बहाल रहता है।

हाकिम, दो जाननेवालोंमें एक अनजान—
फ़रियादी और असामी दो ही सचा हाल जानते
हैं, तीसरा हाकिम कुछ नहीं जानता।

हाकिम महकूमको लड़ाई क्या—स्वामी और
अधीनस्थकी लड़ाई लड़ाई नहीं कहलाती।

हाकिमसे महकूम बड़ा जब मालिकसे भी मौकर
अधिक जरूरत दिखाने, तब क०।

मौलको साधन न छोड़ेंगे, खुदा जो बख़्श दे।

घर ही लीं गे पुलिसवाले सजा ही या न ही।

(५४५८)

हाकिम हारे, मुंहमें मारे—जब बड़ा आदमी धनु-
चित घात करनेपर लज्जित या निहत्तर हो जाता है,
पर बड़प्पनके कारण धमकाकर अपनी घात सभी
कर लेता है, तब क०। चलवागसे विवाद फरमा
धुया है।

हाकिमी गरमकी, हुकानदारो नरमकी, दलाली
वेशरमकी, शराफ़ी भरमकी, दौलत करमकी,
घात मरमकी, और आड़त घरमकी—स्पष्ट।

हाजिते मशशातह नेस्त रूप दिल-आराम रा—
(फा०) सौन्दर्यको सजावटकी ज़रूरत नहीं।

(१) नहीं सुहताज जो बरका जिसे खुशो सुदानी दो।

कि आखिर बदनुना लगता है देखो चांदको गहना ॥

(२) पहिर न मूलन कानकके कधि भाकत शिफ़ीत।

दरपनकेने मोरषे दीव दिखारै देत ॥ (निचारी)

हाज़िरको लुक्रमा गायबको तकयीर—जीतोंका
पालन करते हैं, मरोंके नाम खैरात करते हैं। अच्छे
मनुष्य पर क०।

हाज़िर मारे गाफ़िल रोये—जो अचरस पर रहता
है वह काम उलटा है और जो चक जाता है, वह
पातासा है।

इते हैं।

हरामजादेसे खुदा भी डरता है—स्पष्ट।

हरिको भजे सो हरिका होय—जो ईश्वरकी उपासना करता है, वही उसे प्रिय होता है। दे० “जात पांत.....”

हरिया हाथो हाकिम चोर, दोनोंके बिगरे शोर न छोरे—जंगली हाथी और चोर हाकिम सीमावद्ध नहीं रहते।

हरि सेवा सोलह घरस, गुरु सेवा पल चार।
नौ भी नहीं बराबरी वेदों किया विचार—
गुरुसेवाका महात्म है।

हरी खेती गाभिन गाय मुँह पड़े तब जानी जाय
(छ०) जबतक गाय न बियाये और अन्न घरमें न आवे तबतक उसका क्या ठिकाना ? जब किसी बातका पूरा निश्चय न हो, तब क०।

हरे रूखपर सब कोई बैठते हैं—धनी लोगोंका साथ सभी देते हैं।

हरे शिष्य-धन शोक न हरई, सो गुरु घोर नरकमें परई—स्पष्ट।

हर्दी न छोड़े जर्दी बुलबुल न छोड़े रंग—प्रकृति नहीं बदलती।

हलकुकान न तालुका, यह माल मिथां लालुका-
बुरी चीजपर या अन्यायसे उपार्जन किये हुए धनपर क०।

हलकुकै फोतवाल—उन लड़कोंको कहते हैं जो बिना भोजनकी सामग्रीमेंसे कुछ लिये अपने माता-पिता को भोजन नहीं करने देते।

हलकू रावे, जीम टोवे—जब किसीको बहुत थोड़ी चीज खानेको दी जाय, तब क०।

हलकूसे निकली खलकूमें पड़ी—बात मुहसे निकली और हुनियामें फँसी। गुप्त बातके प्रगट होनेपर क०।

हलके पिछोड़े उड़ उड़ जायँ—(ज०) दे० ‘थोथे कटक’

हल न सकूँ मेरे सौ बखरे—(ज०) आलसी मनुष्य कहा करते हैं।

हलवाईकी जाई और सोवे साथ कसाई—

किसी उच्च कुलका मनुष्य अगर अपने कुलकी रीतिके विपक्ष नीचोंका साथ करता है, तब ऐसा कहते हैं। बेजोड़ बातपर भी क०। हलवाई हिन्दू और कसाई मुसलमान होते हैं।

हलवाईकी दूकान और दादाजीकी फालिहा—

(मु०) जब कोई दूसरेके धनसे अपना काम करता है, तब कहते हैं। मुफ्तका माल छुदानेपर भी क०।

हलवा खानेको मुह चाहिये } (१) अच्छी वस्तु
हलवा खुरदरना रूप वायद } की प्राप्तिके लिये
बैसा गुण चाहिये (२) हलवेमें दाम बहुत लगता है।
हरणक आदमी नहीं खा सकता इसलिये भी क०।

हलवा पूरी बांदी खाय, पोता फेरने बीबी जाय
जब घरका काम तो मालिक करे और नौकर मौज उड़ावे, तब क०।

हलवा पूरी बीबी खाय, पुड़ा पिटावन बांदी जाय
बांदोका कहना है—हलवा पूरी खानेके लिये तो बीबी और पिटनेके लिये बांदी।

हलवाही चरवाहेको—जो जिसका काम न हो और उसको वह काम दिया जाय, तब, ऐसा—कहते हैं।
चरवाहा हलवाही क्या जाने अर्थात् गढ़रिया किसानका काम नहीं कर सकता।

हलालमें हरकत, हराममें धरकत—जब सत्यवादी मनुष्य दुःख पाते हैं और छूरे आराम पाते हैं, तब क०।

हल्दी लगीं न फिटकरी, पटाक यह भान पड़ी—
जब कोई काम मुफ्तमें हो जाय, तब क०। हल्दी फिटकरी कपड़ा रंगनेमें काम आती है।

हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवे—
जब मनुष्य बिना व्ययके अच्छा काम चाहता है, तब ऐसा क०।

हवाका रुख देखना—समयकी गतिको पहिचानना।
हवाके घोड़े दौड़ाना—जो मनुष्य अपने मनमें हवाई महल बनाया करता है, उसके लिये क०। भूकी गण्ये हांकनेपर भी क०।

हवाके घोड़ेपर सवार हैं—जब कोई बिना तत्वकी बात कहता है, तब क०। बहुत जल्दबाजीको भी क०।
हस्त ओ नेस्त बराबर है—उसका जीना और मरना मेरे लिये बराबर है।

हस्तीका क्या भरोसा ?—जिन्दगीका भरोसा क्या ?

हां करो, या ना करो—जब किसीसे कोई बात साफ़ कहलानी होती है, तब क०।

हांडीका भात छुपे, मुंहको यात न छुपे—

(पू०) भात हांडीमें छिप सकता है, मगर मुंहसे निकली बात नहीं छिपती।

हांडी न डोई घरघर हमारी रसोई—फ़कीरोंका कहना है।

एक साधू किसी बलीमें एक पेड़के नीचे श्रां चतरा और धर चधरसे सूखी लकड़ियां चुनवान कर धूमो लंगा रो और बाघम्बर विशाकर बँठ गया। दो चार राही साकार भी सचसे पास था बैठे और डुबा तमाखू पीने लगे। उनमेंसे एक बीगा, बाबाजी। दिन ठल गया, डक रसोई पानीकी फ़िक भी तो करो। साधुने कंफा, बाबा न हमारे यहाँ हाँसे, न हमारे यहाँ डोई, घर घर हो हमारे रसोई।

हांडी न डोई, मुया सारी बात खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांडी न डोई, सब पन खोई—(ज०) स्पष्ट।

हांडीमें अच्छत ना, चला समघा जेवें—(पू०)

जब पासमें कुछ नहीं रहता है और दूसरोंको उसके देनेके लिये कह भ्रता है, तब क०।

हांडीमें एक चावल टटोला जाता है—दे० “सारी देगमें...।”

हांडीमें होगा, सो डोईमें आप ही आवेगा—जो मनमें होगा सो मुझे निकलेगा।

हरव बदेम चल बचमवां घर बायद।

हांडिसे दांडा भला—बेकार धमनेसे क्रुद होकर पैटना अच्छा।

हांडों थका, न्यौहारों थका—(पू०) धूरे आदमीको क०।

हाकिमकी अगाड़ी, और घोड़ेकी पिछाड़ी न खड़ा हो—दोनोंमें हावि होनेका भय है।

हाकिमके आँख नहीं होती, फान होते हैं—

न्यायाधीश छनकर ही न्याय करते हैं, देखकर नहीं।

हाकिमके डपटें और फीचड़के रपटें का किस्तने

हाकिमके तीन शहनाके नौ—हाकिमके तीन और कामदारके नौ हिस्ते होते हैं। हाकिमके पास जो पहुंचता है उससे बहुत क्यादा धमले फ़ैले खा जाते हैं।

हाकिम टले पर हुकम न टले—हाकिमका किया फैसला ही कायम रहता है। हाकिम बदल जाता है, पर उसका हुकम बहाल रहता है।

हाकिम, दो जाननेवालोंमें एक अनजान—फ़रियादी और असाामी दो ही सचा हाल जानते हैं, तीसरा हाकिम कुछ नहीं जानता।

हाकिम महकूमको लड़ाई क्या—स्वामी और अधीनस्थकी लड़ाई लड़ाई नहीं कहलाती।

हाकिमसे महकूम बड़ा जब मालिकसे भी नौकर अधिक जबरई दिखाने, तब क०।

मौनको साधव न डोईमें खुदा को बख्य दे।

चेर ही से नै पुकिधवाले सजा को या न हो।

(अकधर)

हाकिम हारे, मुंहमें मारे—जब बड़ा आदमी अच्युचित बात करनेपर लजित या निरुत्तर हो जाता है, पर बड़प्पनके कारण धमकाकर अपनी बात सची कर लेता है, तब क०। बलवानसे विवाद करना घृया है।

हाकिमी गरमकी, डुकानद्वारो नरमकी, दलाली पेशरमकी, शराफ़ती भरमकी, दौलन करमकी, वात मरमकी, और आदृत धरमकी—स्पष्ट।

हाजिते मशयातह नेस्त रूप दिल-आराम रा—(फ०) सौन्दर्यको सजावटकी ज़रूरत नहीं।

(१) नहीं सुहवाज जे बरका जिसे खूबो सुदाने दी।

कि आखिर बटुना लगता है देखी चांदको गहना।

(२) वहिर न मूवन कनकके काहि भावत इहि रीत।

दरपनकेने मोरने दिह दिखारं दीत। (विद्यागी)

हाज़िरको लुक्रमा गायधको तफ़वीर—जीतोंका पालत करते हैं, मरोंके नाम खैरात करते हैं। अच्छे मनुष्य पर क०।

हाज़िर मारे गाफ़िल रोये—जो धवमर पर रहता है वह खाम उठता है और जो एक जाता है, वह एक जाता है।

हाज़िरमें हुज्जत नहीं ग़ैरकी तलाश नहीं—
जो चीज़ सामने है उसे देनेमें कोई हुज्जत नहीं और
जो नहीं है उसकी तलाश नहीं ।

हाज़िरके मेलेमें कोई ही—खानेके समय कोई आ
जाय । मुहर्रममें शीया लोग जो भोज देते हैं उसमें
सभी मज़हबके मुसलमान बुलाये जाते हैं ।

हाजी जो हज़ करते फिरें नामे खुदा कभी ना
लिया । दिलका कुफर टूटा नहीं मक़े गये तो
फया हुआ—दिलावटी धर्मात्मा वा बगुलाभगतको
क० ।

हाट भली न सीरकी, और संगत भली न घोरकी
साम्नेकी बूकान और खीका संग थच्छा नहीं ।

हाट हाट पुकारे वैसे, जैसा करे सो पावे तैसा
जो जैसा करता है, वह वैसे ही पाता है । वैसे एक
साधुका नाम है ।

हातमकी ग़ोरपर लात मारी—हातमसे बढकर दानी
हो गये । ब्यंगसे सूसको क० ।

हाथ कंगनको आरसी क्या ?— } प्रत्यन्तके लिये
हाथ देखनेको आरसी क्या ?— } प्रमाणाकी क्या
श्रावश्यकता ।

(१) भले भोर छठि पाये लाल,
लखि सोमा बिनु गुन घर मान ।
कई कह्यो छवि ज्यों मधि सहा,
कर कंकनको आरसि कहा ॥ (बघीरा)

(२) देखे दसा किन आपनी वू,
अप हाथके कंकनको कहा आरसी । (पद्माकर)

हाथ कसीदह, आसमान दीदह—(ज०) एक
कामको करते समय मनुष्य अपने ध्यानको दूसरी
ओर लगता है, तब क० ।

हाथ कसीदा चंचल दीदा—उ० दे० ।

हाथका चूहा बिलमें घेठा—हाथमें आया हुआ
काम जब बिगड़ जाता है, तब क० ।

हाथका दिया बाड़े आथ—दाग ही डालका काम
करता है थपान्त कठोसे बचता है ।

हाथका दिया साथ चलेगा—स्पष्ट ।

हाथका देना, और वैर बिसाना—(ब्य०) दे०
“बघार दीजे” ।

हाथका हथियार, पेटका आधार—दे० जिसको
लाठी.....

हाथको लकीरें नहीं मिटती—(१) होनहार होकर
ही रहती है । (२) रिस्तेदारी नहीं दृष्टी ।

कैसे मित्र तिय तजो पियार, जो मोहि मिली वेद बनसार
योग उछि ज्यो कहे सहेनी, मिटै न मीटे रेख सधेनी ॥
(अनुकूल नाथक)

हाथके संकल मुहके पियार—(पू० ज०) बनावटी
प्रेम पर क० ।

हाथ को हाथ नहीं सूखता—जब बहुत आंधकार
रहता है, तब क० ।

हाथ को हाथ पहिचानता है—(ब्य०) जिस
हाथसे लिया है उसीमें देंगे । जब कोई किसीके
बदलेमें तज़ाज़ा करे, तब क० ।

हाथ कौड़ी न घाज़ार लेखा—जिसके पास कुछ
भी न हो और उसका कोई पतवार भी न करे,
उसे क० ।

हाथ गोड़ लकड़ी, पेट बकरी— } जो दुबला
हाथ गोड़ सिरकी, पेट नदकोला — } आदमी
बहुत खाता हो, उसे क० ।

हाथ न गले, नाकमें प्याजके डले—(मु० ज०)
गहना न हाथमें कुछ है और न गलेमें, पर नाकमें
प्याजके डले हैं । वेहुदा गहना पहिनेने पर क० ।
जिसके पास असली चीज़ न हो और वह नकलीसे
अपनेको सजावे, तब भी क० ।

हाथ न मुट्टी, हलबलाती उठी—(ज०) जिसे
चीज़ लेनेका शौक़ तो हो, पर पास दाम न हो,
उसको क० ।

हाथ पांवकी काहिली मुहमें मूँछे जायँ—
आलसी आदमी को क० । यह मसल अशुद्ध जान
पड़ती है क्योंकि मूँछमें पांव नहीं लगाया जाता
इससे ‘हाथ पायके आलसी’ होना चाहिये । हाथ
पायके=हाथ डालनेके वा हाथ रहते हुए भी ।

हाथ पांच दीया सलाई, वात करनेको फ़ज़ल
इलाही—काम कुछ न हो सके, पर ज़वान खूब चले,
तब क० ।

हाथ पाँच बचाह्ये, मूँजीको टरकाह्ये—स्पष्ट ।
मूँजी=अन्न, सूम, सांप ।

हाथ बेचा है, कुछ जात नहीं बेची है—जब मालिक अपने नौकरको उसके अयोग्य काम करनेको कहता है, तब नौकर ऐसा कहता है।

हाथ भरेका भई लड़ेया, नौ गज्जकी है पूछ—जब छोटा आदमी बड़ी बड़ी वॉंगे हांकता है, तब क०।

हाथमें न गातमें, मैं धनवन्ती ज्ञातमें—(ज० पा०) न हाथमें पैसा न तब पै कपडा और मैं धनवन्ती हूँ और ज्ञातमें बड़ी हूँ। भठो कुलीनता दिखानेवालों को क०।

हाथमें लाना, पातमें खाना—(ज०) बहुत शरीर आदमी को क०।

हाथ लिया कांसा, तो रोटियों क्या सांसा—जब भीख ही मांगना हुआ, तब रोटियोंकी क्या कमी होगी।

हाथ सुमिरनी, पेट कतरनी—जो धर्मात्माका रूप धारण कर दूसरोंको ठगते हैं, उनको क०।

मुझमें चारवेडकी बातें, तब पर-धन पर-तियकी धारें। धनि बगुनाभक्तिकी कर्मने, हाथ सुमिरनी पेट कतरनी

हाथ सुमिरनी, बगल कतरनी, पड़े भागवत गीता रे। औरों को तो ध्यान यथायं, आप फिरे तू रीता रे—जो केवल दूसरोंको ही उपदेश करते हैं, आप तदनुसार नहीं चलते, उनको क०।

हाथ सूखा, फुकीर भूखा—जब किसी निर्धन मनुष्यके पास याचक था जाता है, तब ऐसा क०।

हाथ से मारे, भातसे न मारे—हाथसे भले ही मार ले, पर किसीकी रोजी न मारे। जब कोई किसी की जीविकामें खलल डाले, तब क०।

हाथी अपनी हथियाईपर आ जाय तो आदमी भुनगा है—अगर जबरदस्त अपनी जबरदस्ती दिखाने लगे तो सब फोगान हो जायँ।

हाथी आर्वे छोड़े जायँ, ऊंट बिचारे गोते खार्य—नष्ट जियोंसे क०।

हाथी का कंधा खाली नहीं रहता—उसपर महा-वत बैठता है।

हाथीका जग साथी, कीड़ी पाहन पीड़ी—(पा०) जबरदस्तके सभी साथी होते हैं, शरीरका

कोई नहीं। हाथीके सब साथी हैं और चींटीको सब पांवसे कुचल देते हैं।

हाथीका दांत, घोड़ेकी लान, मूँजीका चुङ्गल—इन तीनोंसे यचना चाहिये।

हाथीका दांत निधला जहां निकला—फिर भीतर नहीं जाता। जब कोई बदचलन हो जाय, तब क०। जब कोई बड़ेका बड़प्पन न रखकर सामना करने लगे, तब भी क०।

हाथीका पीर अंकुश—हाथी अंकुशसे ही दबता है।

हाथीका घोभ हाथी उठाता है—(१) बड़ोंका भार बड़े ही बरदायत करते हैं। (२) योग्य आदमीसे ही कठिन कार्य होता है।

बड़े बड़ेको विपतितें, निद्रचै लित उधारि।

ज्यों हाथी कौं कीम तें, हाथी लित निकारि ॥ (इन्द)

हाथीके खाये कैथ हो गये—भीतर ही भीतर खोल्ले हो गये। जब किसी मनुष्यका सब धन निकल जाय और जाते मालूम न पड़े, तब क०।

हाथी कैथ और खेल समूचा खा जाता है और समूचा ही हग देता है परन्तु उसका सब गुंडा हजम कर लेता है।

समायति यदा लक्ष्मी मारिकेन कलाभु वत्।

विनिर्गति यदा लक्ष्मी गम मुक्तकपित्त्य वत् ॥

हाथीके दांत खानेके और, दिखानेके और—जो आदमी कहता कुछ और करता कुछ है, उस पर क०।

(१) भ्रम न कर विनिचारमें, मछली प्यार मन कल।

देखतके भव खानके, ज्यों दन्तीके दन्त ॥ (सडनायक)

(२) बाएजके बाजु हैं सुनानीके पीर।

पीर थाप अपने पसलमें माने के पीर ॥

फवती है वसुधै धे ममथ हाथीकी।

खानेके हैं दांत और दिखानेके पीर ॥ (मंजूर)

हाथीके पांवमें सबका पांव समाय—बड़े आदमियोंके साथ छोटेको गुजर होती है।

(१) नमो नमो योगनसुखदेव, सकल देव आदिक त्रिदिशेव कष्टे पशानी ज्यों बुधि भोज, पत्नी खोज भादि मन खोज (२) एक भेबके चाररे, जाति वरन किप जात।

ज्यों हाथीके पांवमें सबको पांव समात। (इंद)

हाथीके पीर गढ़ा दागा जाय—जब बड़े आदमीके अपराधमें छोटेको दंड मिले, तब क०।

हाथीके मुंह आता है, चींटिके मुंह जाता है—

घनपर क० । आते सबको दीखता है, जाते किसीको नहीं दीखता ।

हाथीके साथ गाँड़े खाना—अपनेसे ज़बरदस्तका मुकाबिला करनेपर क० । हाथीको उख पकड़ों दिया जाय तो उससे छुड़ाना मुश्किल है ।

(१) अबधि वदी तुम निशि रंग लाल ।

अब नटिथी कौंसी बने बाल ॥

हाथी लखरी सुगम गहैवो ॥

पै प्रति कठिन है फेरि कुड़वो ॥

(२) अब व्याकुल कौं होत है बाल ।

रति मासो रंग गिरिपरखाल ॥

लोक उक्ति क्यो कहै समंग ।

ऊख च विरो हाथी संग ॥ (लो० १० को०)

हाथी घोड़े बहते जायँ गदहा कहे कितना पानी बड़े बड़े जिस कामको नहीं कर सकते, अंगर छोटा उसको करने जाय, तब क० ।

हाथी चढ़े कुत्ता काटे—दे० 'ऊट चढ़े—'

हाथी दलदलमें फँसा है—जब बड़ा आदमी कहीं बुरी तरहसे फँस जाता है, तब क० ।

हाथी निकल गया दुम रह गई—(१) जब किसी कामका बहुत अंग हो जाय और थोड़ा सा बाक़ो रह जाय, तब क० । (२) कामका बहुत भाग हो जाय और थोड़ेमें असमंजस रहे, तब क० ।

एक आदमी भूठ बहुत बोलता था । एक दिन उसको जोदने लड़ा, खुदाके बाकी भूठ बोलना छोड़ दो क्योंकि यह बहुत बुरा काम है । उसने कहा; तू दो चार रोटियाँ पका दे कि मैं पाँच सात कोसपर जाकर भूठको खोज पाऊँ । उस बिलकूने जल्द रोटियाँ पका दीं । वह बाहरसे खाकर घरमें चला आया और अपने जोदसे कहने लगा लो बीबी तुम्हारे कहनेसे मैं भूठको तो खोज पाया मगर एक हादिसा आजैस मुझपर हुआ । उसने पूछा क्या ? कहने लगा कि एक हाथीने मुझको रींदा; मैं एक पेड़को फुनगीपर जा बड़ा, वह हाथी भी चढ़ आया, फिर मैं नीचे उतर एक पधनेमें घुस; उसको टोंटीने बाहर निकला; वह हाथी भी उसमें घुसकर उस

राह निकला मगर उसको दुम अटक रही । यह सुनकर उसको जोदने कहा कि तुम तो रुबे दो लेकिन भूठका मुँह काना ।

हाथीपर चढ़के गधेपर क्या चढ़ना !—बड़ा काम करके छोटा काम क्या करना !

हाथी फिर गाँव गाँव, जिसका हाथी उसका नाम— लड़केको चाहे कोई रख ले परन्तु कहसविगा अपने बापका ।

हाथी फिर बजार, कुत्ता भूके हज़ार—बड़े आदमी काम किया करते हैं, नीच उसका विरोध करते रहते हैं ।

हाथी बेचके करत कोउ अंकुश हेतु विवाद— दे० 'तलवार तो दे दी—'

विक्रति करणि किमंयकुमे विवादः ।

यए उक्ति रामचन्द्रजीने लक्ष्मणसे कही है लख चन्हनि कहा था कि विभीषणको लंबा दे दी तो दे दी पर कोष न दीकिये ।

हाथी सूँड़ न हाथिहि भारी—अपना भार अपने को नहीं मालूम होता ।

हाथी हज़ार लटा तौमी संवा लाख टकेका— (१) बड़ा आदमी कितना हो गरीब हो जाय तौ भी साधारण आदमीसे अच्छा है । (२) मरा हाथी भी दाँत और हड्डीके लिये बहुत दाममें विक्रता है, इसलिये क० ।

हाथों मेंहदी पावों मेंहदी, अपने लच्छत औरों देदी (प०ज०) जो जैसा रहता है वह दूसरोंको भी वैसा ही बनाना चाहता है । मेंहदी लगाना सहागिनका काम है जब कोई विधवा लगावे तो उसे नष्ट समझना चाहिये, ऐस ही मौक़ेपर यह क० ।

हाथों हाथ बिक गया—(अ०) जो माल तुरत बिक जाय, उसपर क० ।

हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधिहाथ—(तुल०) ये सब चीजें परमात्माके हाथ हैं ।

हार जीत, किस्मतके हाथ—हानि लाभ भाग्यके अधीन है ।

हार जीत सधमें रहे, हारे नहिं दातार— परमात्माको छोड़कर सबलोग हारते जीतते हैं अर्थात् हानि लाभ उठाते हैं ।

हार मानी भगड़ा जीता—जो हार मान सेता है, यही भगड़ा जीता है । जहाँ दो अनुप्य विवाद

करते हैं, वहाँ क० । दोमेंसे एक भी अपनी जिद्द छोड़ दे तो भगड़ा मिट जाता है ।

हारमें हार न घरमें खेती नुकसानपर नुकसान पड़ने पर क० ।

हार, हाकिम ज़ामिन मांगे—मामला कमज़ोर रहने पर हाकिम ज़ामानत मांगता है ।

हारिले लकड़ी, पकड़ी सो पकड़ी—जिद्दोको क० ।

हारके हरनाम—जय मनुष्य धन अथवा शरीरसे विधिल होजाता है, तब ईश्वरकी उपासना सुकती है ।

हारें जुआरीको कच बल पड़ती है—हार जुआरी निश्चिन्त नहीं बैठ सकता ।

हारों भी हरावे, जीते भी हरावे—जो दोनों तरहसे अपनी ही जीत रखे, उसे क० ।

हारों भी हार, जीतों भी हार—(५०) अदालतके मुकद्दमों पर कहते हैं । दोबामो मुकद्दमोंमें देर बहुत लगती है और हतना खर्च पड़ता है कि जीतने पर भी नुकसान ही रहता है । (२) जयर्दस्तने मुकाबला पड़नेपर भी क० ।

एक सिपाही कुछ बामो लगाकर किछो बनिवेंके साथ चौपड़ खेल रहा था । धनिकाकन सिपाही पांच बी रुपये हार गया, तब उसने बनिवेंसे करब किया और कहने लगा कि क्यों साइजो यद्द सच-९ खिलने की इमें पांच बी रुपये जरूर देने पड़ते । बनिवेंने उसको मौयल विगड़ी दिखकर कहा, हाँ भाई सच कहते हो जरूरेशते हारे भी हार है और जीते भी हार है ।

हालका, न कालका, टुकड़ा रोटी, चमचा दाड़का (मु० ज०) जो आदमी किसी कामका न हो, उस पर क० ।

हालका न रोज़गारका—क० दे० ।

हाल गया, अहवाल गया, दिल्का ख्याल न गया सब बर्बाद हो गया तब भी घुरी आदत न छूटी ।

हालमें फाल, दहोमें मूलल—(व्य०) चलतीमें देव-यानी होना व्यर्थ है क्योंकि दहोके लिये मूसलकी आवश्यकता नहीं होती ।

हाली अच्छा हांगला, और बलदा अच्छा चांगला (कृषि०) हलवाहा अगर बेलको अच्छी तरहसे काँचता रहेगा तो बेल भी अच्छी तरह चलेगा ।

हालीका पेट सुहालीसे नहीं भरता—(क०) हलवाहाका पेट उहालीसे नहीं भरता है क्योंकि बीसे परिश्रमीके लिये अधिक भोजन चाहिये । उहाली छोटी मोयनदार (जस्ता) मट्टो होती है, जिसे नमकीन मट्टो भी कहते हैं ।

हासिदका मुँह काला—ईयां करना बहुत घुरा है ।

हाहा खातेको कोई नहीं मारता—विनय करने-पालेको कोई नहीं मारता ।

पहिजी रति कौनों रेहान, करी न रस बस नोदा बाल। भोग छकि तुम दर बिसागि, चेरत कौज न खावन मागि।

हाहा खाये वूड़े नहीं व्याहे जाते—(१) असंभव काम विनती करने पर भी सिद्ध नहीं होता । (२) वूड़े केवल मिनती करनेसे नहीं व्याहे जा सकते, हाँ यदि भरपूर खया खर्च करें तो भले ही उनका विवाह हो सकता है, जैसा कि आजकल होता है । इस मतलबसे यह जान पड़ता है कि थोड़े दिन पहले यह काम असंभव था परंतु अब उलम हो गया है ।

हिंदी न फ़ारसी, लालाजी बनारसी—जो कुछ पढ़ा लिखा नहीं रहता है उसको ब्यंगसे क० । बनारस संस्कृतके विद्वानोंके लिये मगधूर है ।

हिंदू सुसलमानका चोली दामनका साथ है—दोनोंका घनिष्ठ सम्बन्ध है । क्योंकि दोनों एक ही जगह रहते हैं ।

हिकमत-प-चीन, हुजजत-प-चंगला—चीना हिक-मती और बंगाली हुज्जती होते हैं ।

हिचकी, खाँसी, उबासी, यह रोग मांसी, छींक, पाद, डिकार, इनसे रोगसे शर-पहिलेतीन रोगके चिह्न हैं और पिछले आरोग्यताके ।

हिजराको नहि नारि सुहाई—हिजरे मनुष्यको खोले मतलब नहीं रहता । जिसको जिस वस्तुकी आवश्यकता नहीं पड़ती उसको वह वस्तु अच्छी नहीं लगती ।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः—(सं०) ऐसी बात जो हितकी भी हो और प्रिय भी हो दुर्लभ है ।

हित अनहित पशु पशुहुँ जाना, मानुष तन गुण धान निधाना—(बुलसी) अपना हित तो पशु पक्षी भी समझते हैं मनुष्यकी यात ही क्या है ।

हिमायतीकी घोड़ी चैराकीके लात मारे—
किसी बड़े आदमीके सहारेसे अपनेसे अधिक
शक्तिमानके साथ लड़ने पर क० । अथवा क्षमता
प्राप्त कारिन्दे प्रतिष्ठित मनुष्योंका भी अपमान कर
येते हैं, तब क० ।

हिम्मत मरदां मददे खुदा—(फा०) जो हिम्मत
करता है परमात्मा उसकी मदद करता है ।

हिरसका पेट खाली—ईर्ष्या करनेवाला सदा भूखा
रहता है ।

हिरी फिरी घल गई, जलयेके वक्त टल गई—
(मु०) जो लेनेके समय मौजूद रहे और देनेके
समय टल जाय, उसे क० ।

हिरे फिरे खेतमें को राह—सब कुछ देखता भालता
है मगर अपने बुरी धान नहीं छोड़ता । उजड़ू वा
मूँकेको क० ।

हिल न सकूँ मोरं तीन खंरा—काम नकरे हिस्सा
पूरा मांगे, तब क० । आलसियोंके प्रति क० ।

पतिमन हरे न-बसन बनावे, कड़े सौति घरमें नहिं आवे ।
लोग उक्ति ज्यों कड़े प्रबोन, उति नहिं सके भाग चड़े तीना
उठनेकी तो सामर्थ्य नहीं और भागसे तोनों चर्वात चर्षे
धर्म कामकी इच्छा करे । (लो० २० कौ०)

हिलाव न डुलाव, मुफ्के घैठे ही खिलाव—
जांगरचोर मनुष्यको क० ।

हिसके हिसके गैया विशाय, गैयाके बछवा मर-
मर जाय—ईर्ष्यासे काम करे किन्तु काम खराब हो
जाय, तब क० ।

हिसाय प-दोस्तां दर दिल—(फा०) मित्रोंका
हिसाय दिलमें रहता है ।

हिसाय जौ जौ, यखशिश सौ सौ—(व्य०)
हिसाय तिल तिलका करना चाहिये, इनाम चाहे
सौ दे दे ।

हिसाय ज्योंका त्यों, कुनवा डूबा फयो ?—
कप पढ़ना लिखना छत्रनाक है ।

इसका निहास इस तरह है—एक कायस्थ सपरिवार
बैल गाड़ीपर यात्रा कर रहा था । राहमें उसे एक नदी
मिली । नदीकी देखकर वह षट गाड़ीपरसे उतरा और
नदीके भिन्न भिन्न स्थानोंके जलको नापने लगा । चौथतमें
पानी गाड़ीके पहियेके चक्कर सावित हुआ । तब उसने

गाड़ीवानसे गाड़ीको नदीमें छोकर ले आनेके लिये कहा ।
जब गाड़ी अधिक पानीमें गई तब छत्र गई और साथ ही
साथ उस कायस्थका परिवार भी डूब गया । परिवार-
के डूब जानेपर उस कायस्थने पुनः हिसाव खगाया
और हिसाव ठीक पाया । इसपर उसने उपरोक्त मसल
कही ।

हिसाय नित नया—हिसाय रोज नया रखना चाहिये,
क्योंकि पुराना होनेसे वह भूल जाया करता है ।

हिसाय लेव कि वनियां डांडव—(भो०) हिसाय
लेते हो या धोंगाधोंगी करते हो । बनियां डांडव—
बनियोंका सा दण्ड देना । (१) बनियें बहुत सीधे
और बरपोक होते हैं उन्हें जो चाहो सो दण्ड दो ।
वह बिचारे बरदायत कर लेते हैं । (२) बनियें बहुत
चालाक होते हैं, वे जैसे बनता है उल्टा सोधा
हिसाय समझा कर टगा ही लेते हैं ।

हींग जाय पर वास न जाय—(१) मनुष्य मर भो
जाय तभी उसकी कीर्ति रह जाती है । (२) धन
सब स्वाहा हो जाय परन्तु बुरी आदत नहीं छूटती ।

हींग विकी और घोड़े खायँ—(१) हींग बहुत थोड़ी
विक्री है, ऐसा हलका रोजगार करके जो घोड़ा
पांघता है, उसे टोटा होता है । जब थोड़ी खासदनी
पर बहुत खर्च बांध ले, तब क० । (२) हींगके रोजगार
में इतना ज़यादा नफ़ा होता है कि चाहे तो घोड़े
बांध ले ।

हींग, लहसुनमें ना मिले धन कस्तूरी वास—
हींग और लहसुनकी दुर्गन्ध कष्ट और कस्तूरीसे
नहीं जाती ।

हींग हगतें हैं—धोमार पड़े हैं । जो अपने कमाँका
भोग भोगता तथा जो बहुत दुर्बल है, उसपर क० ।

हीजड़ेकी कमाई, मुडौनीमें गई—क्योंकि वह
अपनेको ज्ञानाना साबित करनेके लिये रोज रोज
हजामत बनवाता है ।

हीजड़ेके घर घंटा हुआ—जब कोई ऐसा काम करता
है जो उसके लिये असम्भव हो, तब क० ।

केवल धनमदके मतभार, विन गया विन बुद्धि विचार ।
अन अपने न प्रेम-पथ दुपा, किजहोके कलसकका दुबा ।

हीना घैरी जानकर, मत निहरे हो यार । फीड़ी
बढ़कर सू डूमा दे हाथीको मार—(मार०) शत्रुको

होया नहीं समझना चाहिये।
हीनी पुडिया छत्तौस रोग—घटिया दवाइते ३६
रोग पैदा होते हैं। सस्ती चीज विशेष कर हानि-
कारक ही होती है।

हीरा आश धरे नहीं, जौ लौं चढ़े न ज्ञान।
विद्यासे मांजे विना, बुद्धि गई नहिं ज्ञान—एपट।
हीरेकी क़द्र जौहरी जाने—गुणकी परीक्षा गुणी
ही कर सकता है।

क़द्र जौहर गाइ दानद यां विदानद जौहरी।

हीले रिज़क धराने मौत—हीलेते रोज़ी और बहा-
नेसे मौत होती है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर ही
रोज़ी देता है और वही मारता है रोग केवल
बहाना है।

हुई फ़ज़र, चुल्हेपर नज़र—संभरा होते ही खानेका
फ़िक्र होता है।

हुए तो जैसे न हुए तो जैसे—जो रहते हुए भी
धयने बुद्ध काम न ध्याये, उसे क०। जिससे धयनी
स्वाधं सिद्धि न हो उसका रहना और न रहना
दोनों एक सा है।

कबहु' न ईशकर कुच गई, कबहु' न रिशकर केग।

कैसे कंठा घर रङ्ग तैसी रङ्ग विदेश ॥

हुए फेरे, ज़ूमे मेरे—ब्याह हो गया, धय मेरे पर
चूमेगा। ब्याह होनेपर लड़कीपर ज़ोर नहीं रहता।
दे० “महल ब्याह मोर.....”

हुँडार चीन्हें बाहानका पूत—(५०) हुँडार माल-
शको भी मारनेसे धाज़ नहीं आता। दुष्ट मजानको
भी कष्ट देता है।

हुँडी आवे हुँडी जाय, सौ हुँडीको हुँडी खाय—
(व्य०) एक स्यया सैकड़ा ब्याज देना पड़े तो सौ
हुँडी लिखनेमें एक हुँडी गायब हो जाती है। जो
लोग हायकी हुँडी बहुत लिखते हैं, उन्हें क०।

हुकूमतकी घोड़ी छः पसेरी दाना—हाकिमकी
घोड़ी छः पसेरी दाना खाती है। वास्तवमें यह एक
पसेरी ही खाती है बाकी धोचवाले।

हुका अफ़ोमीका—एपट। अफ़ोमचोको हुक्का
बहुत मिय होता है।

हुक्का चार वक, अच्छा सोके, मुँह धोके,

खाके, नहाके और चार वक घुरा बांधीमें,
अँधेरेमें, भूकमें और धूपमें—एपट।

हुका पांव दौड़ीका—(१) किसीके यहां चलकर
जाओ तो हुका पीनेको मिले। मेहनत करने होते
खातिर होती है। (२) थगा लाने जाना पड़ता है।
हुक्का पानी वन्द है—जो जातिच्युत किया जाता
है, उसे क०।

हुक्का पोना उसका है, जो रखे तमाखू पास।
धुवां लपक कहवें उसे, जो तके पराई आस—
एपट।

हुक्का भर बड़ोंको दोजे, जय सुलगे तव धाप
भी पीजे—घिठाचारमें ऐसा ही होता है।

हुक्का यकदम, दो दम, सिहदम धाराद, न कि
मीरास-इ-जह ओ आम वाशद—(फा०) हुक्का एक
फूक, दो फूक या तीन फूक पीना चाहिये, उसे
थपनी मीरास वा वपौती न समझें। जहाँ चार
थादमी बैठे हों वहाँ पारी पारीसे सबको हुक्का
देना चाहिये, यह नहीं कि आप ही छड़ु क छड़ु क
पीने लगे, ऐसे ही मौक़ेपर क०।

हुक्का, सुका, हुक्कीनी गुजर और जाट। इनमें
अटक कहा, वाया जगन्नाथका भात—एपट। इन
चीज़ोंमें जाति भेद नहीं माना जाता।

हुक्का, हरका लाड़ला, राखे सबका मान।
भरी सभामें यों फिरे, ज्यों गोपिनमें कान्द—
हुक्केकी तारीफ़में क०।

हुक्का हुक्म खुदाका, चिलम वदियतका फूल।
पीयें मर्द खुदाके, धूरें नामाकूल—क० दे०।
हुक्केका मज़ा जिसने ज़मानेमें न जाना, घह
मर्द मुखन्नस हेम औरत न ज़ताना—हुक्का
पीनेवालोंका कहना है।

हुक्केकी मारी आग, चाक़ीका मारा गांव—
ये नहीं पनपते।

हुक्केसे हुक्मत गई, नेम गया सब छूट। पगड़ी
वेच तम्याकू लिया; गई दियेकी फूट—हुक्का
पीनेकी शुराई है।

हुक्म निशानी वदियतकी जो मांगे सो पाय—
हुक्मतसे सब बुद्ध मिल सकता है।

२००	१	११	याद	यदि
"	"	१८	पौरुष ध्यात्म	पौरुष मात्म
"	"	३०	वेसा	वैसा
२७१	"	१७	हुजर	हुज़र
"	"	१८	नींद	नींद
"	"	२०	उसकी	उसके
"	"	२४	जातो है	जाति है
२७१	२	२	(रंजर)	(रंज़र)
२७२	"	"	क्योकर	क्योंकर
"	"	१४	अपनी	अपनी
२७३	१	१०	क्या	क्या
"	२	६	तसा	तसा
२७४	१	८	करी	मली
"	"	३६	काम	काम
"	२	४	समझा	समझा
"	"	७	निन्दरता	निन्दुरता
२७५	२	२१	विपत्ति	विपिप्ति
२७६	"	२१	रंड़ी	रंढी
२७८	२	४६	गुजर	गूज़र
२७९	२	३	ट्ट	ट्ट
२८०	१	२७	जपमें	जूपमें
२८१	"	२६	य	यह
२८१	२	३१	दिया	दिया
२८२	१	२१	लडुआ	लडुआ
२८२	२	२०	वेहदा	वेहदा
२८३	२	१२	रोब	रोब
२८४	२	३३	रुपयोंने	रुपयोंने
२८५	१	६६	अधिक	अधिक
२८७	"	१६	वहीं	वहीं
२८८	१	१६	लडुमें	लडुमें
२८९	१	२८	कानन	कानन
"	१	३२	"	"
२९०	२	२८	मूल	मूल
२९४	२	११	टूटे	टूटे
"	२	२४	घेर	घेर
२९६	२	३८	बड़ोंका	बड़ोंका
३००	१	६	मसल	मसल
"	१	२०	नीयत	नीयत
३०१	१	३६	घरमेंको	घरमेंको

३०२	१	६	रज	राज
"	"	१०	होन है	होन है
"	२	२०	अधित	आधित
"	"	३२	पड़	पड़े
३०३	१	२२	देवताक	देवताकी
३०४	२	२७	भूदा	भूदा
"	"	२८	अन्तर री	अन्तर थां गुरी
"	"	३४	टे वध	भूटे बहु विधि
३०७	१	२८	ता	तो
"	२	१	वाले	बोले
३०८	"	७	लौटा	लौट
"	"	१६	कड़	कड़
"	"	१६	कों	क्यों
"	"	२१	एक	एक तूही
३०९	१	१८	संभुज	संभुज
३०९	"	१७	घरन्या	घरन्या
३१०	१	६	लटा	लूटा
"	"	१२	लट	लूट
"	"	२७	लटना	लूटना
"	२	२४	बरात	बारात
३११	१	१६	डामनी	डोमनी
३११	"	१०	ट्ट	ट्ट
३१४	१	२२	एक १ था	एक लुता था
३१४	"	३२	क	कि
३१४	२	६	मल	मूल
"	"	१६	मलको	मूलको
"	"	२८	बखयो	बखयी
३१६	१	१४	भूटे	भूटे
"	"	३६	साध	साध
३१७	"	१०	साध	साध
"	"	१६	"	"
"	२	८	भुजगमां	भुजगमां
३१८	२	१	सीपकी	सीप कि
"	"	२८	मागा	मांगिया
३१९	१	१०	गुडदी	गुडडी
३१९	२	२०	हस्तपु	हस्तेपु
३२०	१	२०	साध	साध
"	"	२६	"	"
"	२	३	"	"

२३४	२	१५	मुर्खता	मूर्खता	२	३	जाव	जावें		
२३५	१	१	स्त्रुदवा	खुदवा	१	१५	मोसी	मौसी		
"	"	५	अच्छवा	अच्छा	"	"	व्हा	व्हा		
२३६	२	६	शफल	शफल	"	२६	भट्टी	भूट्टी		
२३६	१	३८	दफला	दफल	१५४	१	अच्छुया	अच्छा		
२३७	१	१६	तने	तने	"	"	पटा	पेटा		
"	"	१३	सोते	सोते	"	"	सिद्धिभाव	सिद्धि है भाव		
"	"	१६	शयि	शय	"	"	जा	जो		
"	१	२३	उससे	उसे	२५५	१	२०	व्याहरी	व्याह हो	
२३६	१	३	मालुम	मालुम	"	"	२४	चक्रोत है	चक्रोती है	
"	२	२०	सलक	सलक	"	"		मुफलिस	मुफलिसी	
"	"	२१	खानि	खान	"	"	२०	धयमेवयतः	धयमेवयातः	
२३०	१	१३	मधुमिच्छन्ति	मधुमिच्छन्ति	२५६	१	३३	भत	भूत	
"	"	१४	गुणमिच्छन्ति	गुणमिच्छन्ति	"	१	२६	त चढ़ा धा	भूत चढ़ा धा	
"	"	१५	दाव	दांव	"	"	२	८	भराली	भारली
२३२	"	३०	रहती है	रहती है	२५०	१	१	चकत है	चकत है	
"	२	६	मुस्त	उस्त	"	२	३१	मास	मांस	
"	"	२०	फल फल	फल फल	"	"	३४	मास	मांस	
२३३	"	६	सन्दर	छन्दर	"	"	३४	मांसाहारीश्रीं	मांसाहारियों	
"	"	१२	सत्त ही	सत्तु ही	"	"	३६	माससे	मांससे	
२३४	१	१	पीठ	पीठ	२५५	१	३१	भट्टी	भूट्टी	
"	२	४	सोमी	सोमी	२५८	"	६	लीनपर	लोनपर	
"	"	५	महावत	महावट	"	"	२०	ट्ट	ट्ट	
२३५	"	४	भंस	भंस	२६०	१	२३	सिंघार	सिंघार	
२३६	"	१२	रहती है	रहती है	"	"	३५	खदा	खुदा	
"	"	३६	कोई	कोई	२६१	"	१४	ग	संग	
२३७	१	१०	छोट	छोटे	"	२	६	रहित	सहित	
"	"	३२	कज	कज	२६२	"	२२	तखले घाघ	तखलेका घाघ	
२६८	२	१३	स्वकीयन	स्वकीयन	"	२	२८	अन्तोष्टि	अन्त्योष्टि	
२४८	१	३३	भद	भेद	२६३	"	२३	हन	हानि	
"	"	३७	मुक	मुके	२६३	"	३०	इकट्टी	इकट्टी	
२५०	"	७	कमिस्तान	कमिस्तान	"	"	३१	दीङ्	दीङ्	
"	"	११	काम	काम	२६७	१	२३	जो	जो	
२५१	१	११	उत्तेजित	उत्तेजित	"	२	१५	माम	मालम	
"	"	३४	मुक्ति	मुक्ति	"	"	२३	मुकते	मुकते	
२६३	१	२८	जुगन	जुगन	२६७	"	११	दुरी	दुरी	
२६२	२	२५	बेटी	बेटी	२६८	१	१६	उमने	उमने	
२६३	१	३१	भट्टा	भूट्टा	"	१	२०	बिराह	बिराह	
"	"	९	सिने	सिने	२६६	३	२५	खटोने	खटोने	

२७०	१	११	याद	यदि
"	"	१८	पौरुष आत्म	पौरुष मात्म
"	"	३०	वेसा	वैसा
२७१	"	१७	हुजर	हुज़र
"	"	१८	नाँद	नींद
"	"	२०	उसकी	उसके
"	"	२४	जाती है	जाति है
२७१	२	२	(रंजर)	(रंज़र)
२७२	"	"	क्योकर	क्योंकर
"	"	१४	अबनी	अपनी
२७३	१	१०	डूया	क्या
"	२	६	तसा	तसा
२७४	१	८	करी	भली
"	"	२६	काम	काम
"	२	४	समधा	समभा
"	"	७	निप्पुता	निप्पुरता
२७५	२	२१	विपत्ति	विपिप्ति
२७६	"	२१	रंडी	रंडी
२७८	२	३५	गुजर	गूज़र
२७९	२	३	ट्ट	ट्ट
२८०	१	२७	जपुमें	जूपुमें
२८१	"	२६	य	यह
२८१	२	३१	दिया	दिया
२८२	१	२१	लडुआ	लडुआ
२८२	२	२०	बेहूदी	बेहूदा
२८३	२	१२	रोय	रोय
२८४	२	३३	पयोनि	पयोनि
२८५	१	३६	अधिक	अधिक
२८७	"	१६	महीं	महीं
२८८	१	१६	लडुमें	लडुमें
२८९	२	२८	कानन	कानन
"	१	३३	"	"
२९०	२	२८	मूल	मूल
२९४	२	११	ट्ट	ट्टे
"	२	२४	घेर	घेर
२९५	२	३८	बडोंका	बडोंका
३००	१	६	मसल	मसल
"	१	२०	नीयत	नीयत
३०१	१	३६	वरमेंको	वरमेंको

३०२	१	६	रज	राज
"	"	१०	होन है	होत है
"	२	२०	अधित	आधित
"	"	३२	पड	पड़े
३०३	१	२२	देवताक	देवताकी
३०४	२	२७	भडा	भूडा
"	"	२८	अन्तर री	अन्तर अंगुरी
"	"	३४	दे घध	भूटे बहु विधि
३०७	१	२८	ता	तो
"	२	१	बाले	बोले
३०८	"	७	लौटा	लौट
"	"	१६	कड	कडू
"	"	१६	कों	क्यों
"	"	२१	एक	एक तूही
३०९	१	१८	संशुज	संशुजू
३०९	"	१७	घरण्या	घरथा
३१०	१	६	लटा	लूटा
"	"	१२	लट	लूट
"	"	२७	लटना	लूटना
"	२	२४	बरात	बारात
३११	१	१६	डामनी	डोमनी
३११	"	२७	टट	टट
३१४	१	२२	एक ा था	एक कुत्ता था
३१४	"	३२	क	कि
३१४	२	५	मख	मूल
"	"	१६	मखको	मूलको
"	"	२८	बखबो	बखबी
३१६	१	१४	भूटे	भूटे
"	"	३६	साध	साध
३१७	"	१०	साध	साध
"	"	१६	"	"
"	२	८	भुजंगना	भुजंगाना
३१८	२	१	सीपकी	सीप कि
"	"	२८	मागा	मागिगा
३१९	१	२०	बुडडी	बुडडी
३१९	२	२०	हस्तपु	हस्तोपु
३२०	१	२०	साध	साध
"	"	२५	"	"
"	२	२	"	"

३२१	१	३३	रुगाद् भीता	रुगाद् भीता	३२६	१	१६	चकी	चकी
३२१	२	१६	देगमें	देगमें	३२६	२	३६	चकि	चुकि
३२२	१	१०	रुडा	रुडा	३२७	२	१०	सौगो	सौगो
३२३	१	१७	सायकी	सायका	३२७	३	१०	मुदके	मुदाके
३२३	२	७	करते ह	करते हैं	३२८	१	२६	डप	डूय
३२४	१	१४	तीध	तीर्थ	३२८	२	१६	यडाकर	यदाकर
३२४	२	२६	लोकी	लौकी	३२९	१	२०	डय	डूय
३२४	३	२०	ईश्वरकी	ईश्वरके	३२९	२	१७	अच्छवा	अच्छा
३२५	१	१५	डय	डूय	३३०	१	१५	अनपम	अनूपम
३२५	२	१५	सुर	सुरे	३३०	२	१५	चोरका	चोरको
३२६	१	१०	खिर	खिर	३३०	३	५	निलज	निलज
३२६	२	३५	किमीकी	किमीको	३३१	१	२५	हुजर	हुजर
३२७	१	३५	या सागे	याहें सागे	३३१	२	२६	मोचम	मोचन
३२७	२	३	सामने	सामने	३३१	३	१६	स्वरथ	स्वारथ
३२८	१	३४	यन	यिनु	३३२	१	१४	मे	में
३२८	२	४	तोड़	तोड़	३३४	१	१	सल	साल
३२८	३	१७	विधायो	विंधायो	३३४	२	४	भुक्त्रा	भुक्ता
३२८	४	१७	मूर्ख	मूर्ख	३३४	३	१७	जहाँस	जहाँसे
३२९	१	१६	उफाता	उफता	३३४	४	१३	कर्तव्य	कर्तव्य
३२९	२	२१	घय। के	घयराके	३३४	५	२३	इसक	इसको
३२९	३	१७	पे का	पेफिक	३३५	१	२८	चुराये	चुराये
३२९	४	२०	इद्रा	इद्रा तिया	३३५	२	२९	दवा	दावा
३२९	५	१	अरु	अरु	३३५	३	२६	हनने	हनने
३२९	६	२२	बीघ	बीघा	३३५	४	२०	छटा	छटा
३२९	७	११	कं	कहं	३३६	१	२३	भट्टी	भट्टी
३२९	८	१६	घरी	घरी	३३६	२	२८	घमनेसे	घमनेसे
३२९	९	१	खल	खल	३३६	३	२६	चक	चुक
३२९	१०	१	देखंगा	देखंगा	३३६	४	२८	गय	गय
३२९	११	२३	समयका	समयका	३३६	५	६	भट्टी	भट्टी
३२९	१२	२६	न्यून	न्यून	३३६	६	२०	बताव	बताव
३२९	१३	४	सरासारसा	सरासारसा	३३७	१	४	नाम	नाम
३२९	१४	५	यनान्तक	यनान्त	३३७	२	१६	किमंगहुयो	किमंगुयो
३२९	१५	४	पोला	पोला	३३७	३	२२	सच २	सचत
३२९	१६	४	पोला	पोला	३३७	४	२६	रोग मांसी	रोगकी मांसी

